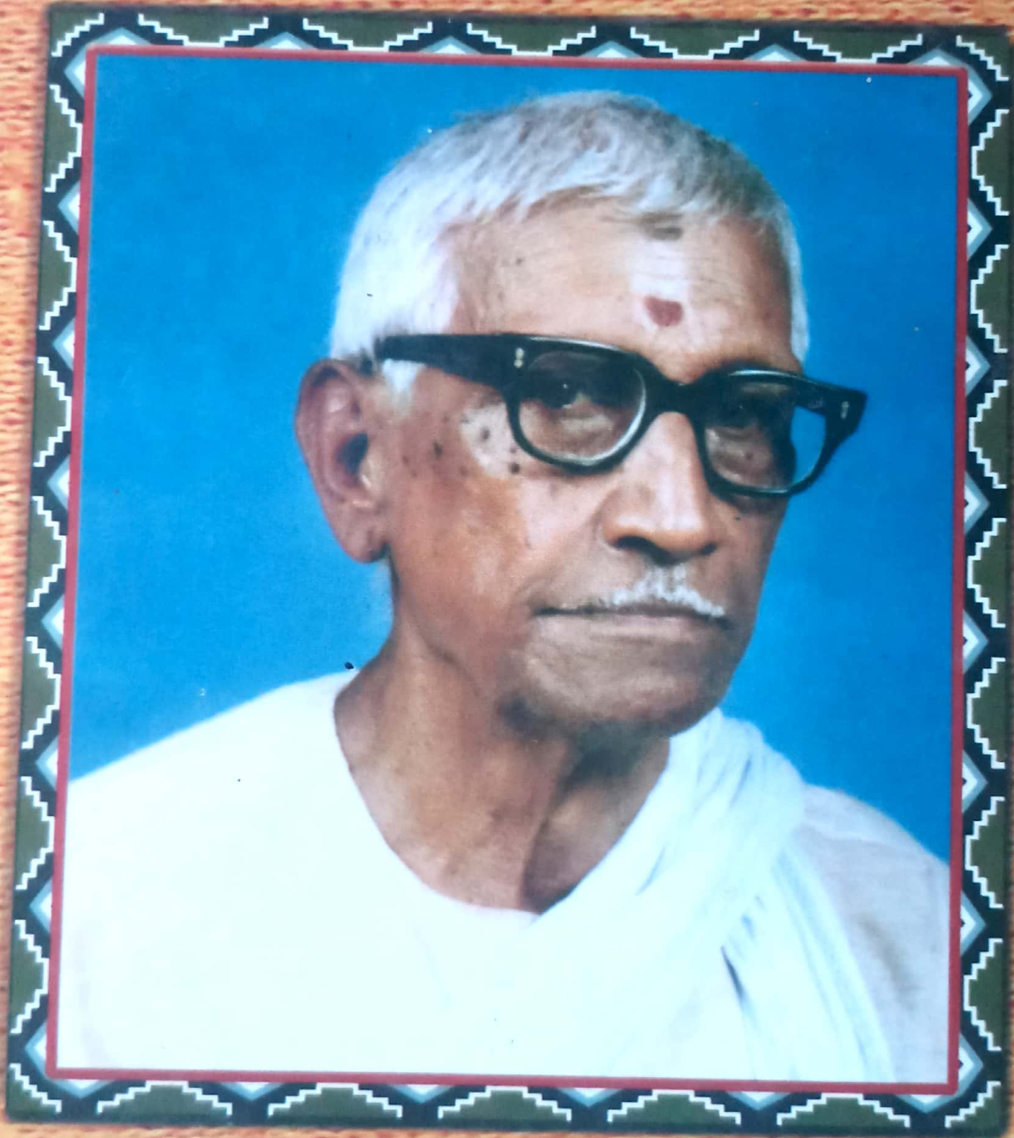
श्रीअमर - अर्चना

(श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रंथ)



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रंथ समिति
दरभंगा, बिहार

श्रीअमर - अर्चना

(श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ)

सम्पादक

डॉ० मदनेश्वर मिश्र ◆ डॉ० जयमन्त मिश्र

डॉ० सुरेश्वर झा

प्रकाशक

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

दरभंगा, बिहार

श्रीअमर - अर्चना

(श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ)

प्रकाशक

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति,
2/बी राजकुमारगंज, दरभंगा - 846004

प्रकाशन वर्ष : 2001 ई०

मूल्य : पाँचसय टाका (रु० 500/-)

पुस्तक प्राप्तिस्थान :
श्री शंभुनाथ मिश्र
आदित्य-सदन, मिश्र टोला
दरभंगा- 846004
दूरभाष- 23485

अक्षर संयोजन :
प्रभा कम्प्यूटर्स
टैगोर टाउन, इलाहाबाद
फोनः 467213

मुद्रक :
एकेडमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद
फोन : 500970

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन समिति, दरभंगा

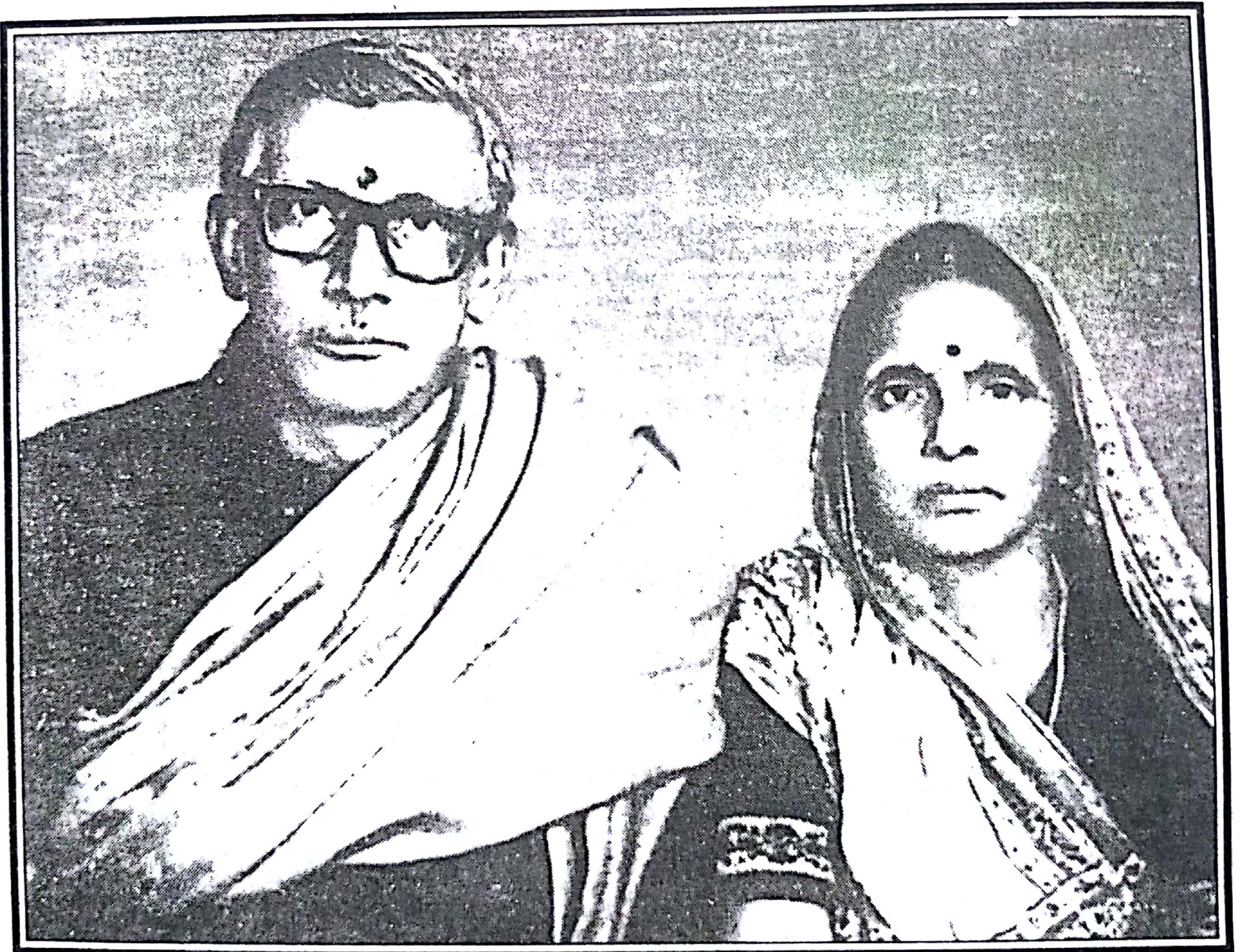
संरक्षक :
आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'
श्री उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'
श्री कामदेव झा

सदस्य :
श्री रमेन्द्रनारायण चौधरी
डॉ० रामदेव झा
डॉ० किशोरनाथ झा
डॉ० भीमनाथ झा
श्री अशोक कुमार ठाकुर
डॉ० जटेश्वर झा 'जटिल'
डॉ० इन्द्रमोहन लाल दास
डॉ० आर० के० 'रमण'
डॉ० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'
मो० अम्बर इमाम हाशमी
डॉ० सुरेश्वर झा - संयोजक

सहयोग :
डॉ० देवेन्द्र झा, मुजफ्फरपुर
डॉ० जगदीश मिश्र, सरिसबपाही
डॉ० विद्यानाथ झा 'विदित', दुमका
डॉ० योगानन्द झा, कविलपुर
डॉ० राजारामप्रसाद, कविलपुर



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'



अमरजी अपन पत्नीक संग

आयोजन - संयोजन

प० श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क लेल अभिनन्दन ग्रन्थक आयोजनक औचित्य पर किछु कहब हम व्यर्थ बुझैत छी। ई निर्विवाद रुपसँ कहल जा सकैत अछि जे अमरजी मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ लोकप्रिय बनेबामेआ ओकर अभिवृद्धि करबामे जतेक अधिक सफल भेलाह, से विरले दोसर भेटताह। अमरजीक मैथिली साहित्यकारक पुरान आ नव दुनू पीढ़ीक बीचमे प्रादुर्भाव भेलनि। गत 1946 इ. सँ कोनो मैथिलीक कविसम्मेलन अमरजीक अनुपस्थितिमे जमि नहि सकैत छल। हिनक हास्य-व्यंग्यक स्वर, कविता गयबाक कंठ आ बहुत आगू ओ वर्तमान कालक सामाजिक एवं राजनीतिक समस्यापर स्पष्ट अभिव्यक्ति कोनो दोसर कविमे नहि देखल जा सकल अछि। अमरजीक अभिनन्दन अमरजीक व्यक्तिक नहि अपितु मैथिली भाषा आ साहित्यक अभिनन्दन थिक। ई मैथिलीक प्रति जीवन-पर्यन्त समर्पित कार्यक लेल अभ्यर्थन थिका। हुनक सम्मानक आयोजन कऽ अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति अपनाकेँ कृत्यकृत्य अनुभव कए रहल अछि।

आचार्य श्रीसुरेन्द्र झा सुमनकेँ अभिनन्दन ग्रन्थक समर्पण भेलाक बाद ओहि अभिनन्दन समितिक अध्यक्ष स्वनामधन्य डॉ० मदनेश्वर मिश्र हमरा आदेश देलनि जे एहि कार्यक क्रम टुटबाक नहि चाही। हुनक स्पष्ट इशारा छलनि जे आब अमरजीक लेल अभिनन्दन-ग्रन्थ तैयार हेबाक चाही। हम ओहि आदेशकेँ शिरोधार्य कएल, बिना एहि कार्यक कठिनता पर विचार कएने।

दरभंगामे एक गोट मैथिली साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्था अछि- 'ऋचालोक'। संस्था ओना पुरान अछि, मुदा एमहर किछु वर्षसँ ओकर नवीनीकरण भेलैक तथा ओ सक्रिय भऽ उठल अछि। ओही संस्थाक तत्त्वावधानमे हम गत 12 मई, 1998 इ. केँ अमरजीक चौहत्तरिम जन्म-दिवसक अवसर पर लहेरियासराय स्थित खादी ग्रामोद्योग संघक केन्द्र भंडारक परिसर मे ओहि संस्थाक तत्कालीन मंत्री श्री हृदयनारायण चौधरीक सहयोगसँ एक गोट मैथिली साहित्यिक समारोहक आयोजन कएल। ओकर नाम देलियैक–''स्वतंत्रताक स्वर्ण जयन्तीक माझः मैथिली गीतक एक साँझ।'' ओहिमे मात्र मैथिलीक गीतकार लोकनि आमंत्रित छलाह। दरभंगाक बाहरसँ सेहो कतोक गीतकार लोकनि ओहि समारोहमे भाग लेलनि। स्व. शिवशंकर झा 'कान्त' अमरजीक समस्त साहित्यक रचना पर एक गोट लेखा-जोखा प्रस्तुत कएलनि। समारोहक अध्यक्षता श्री झिंगुर कुमर कएलनि आ ओकर उद्घाटन भेलैक आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क द्वारा। ओहीठाम हम एकर घोषणा कएलहुँ जे अमरजीकेँ आगाँ वर्ष हुनक पचहत्तरिम जन्म-दिवसक अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित कएल जयतनि। हम ओहि समयमे एक वर्षक समय एहि कार्यक सम्पादन लेल पर्याप्त बुझैत छलियैक। मुदा आलेख एकचित्र करबामे तथा आर्थिक ओरिआओनक लेल तीन वर्षक समय लागि जाएत से नहि बुझैत छलियैक।

गत् 17 जुलाई, 1998 इ. केँ ऋचालोक द्वारा आयोजित एक गोट बैसारमे 'श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति'क गठन भेलैक। हम ओहि समितिक संयोजकक रुपमे कार्य प्रारम्भ कएल।

आचार्य सुमनजी, डॉ० मदनेश्वर मिश्र तथा डॉ० जयमंत मिश्रक प्रेरणा, आशिर्वाद तथा सहयोगक बिना ई कार्य

संभव नहि छल। आर्थिक सहयोगक संग्रह करबामे डॉ० भीमनाथ झा, प्रो० जटेश्वर झा 'जटिल', इं. श्री अशोक कुमार ठाकुर, प्रो० जगदीश मिश्र, डॉ० देवेन्द्र झा, प्रो० राजाराम प्रसाद तथा श्री योगानन्द झा मुख्यरूपसँ परिश्रम कएलनि अछि। ग्रन्थक जे ई रूप भेल अछि ताहिलेल डॉ० किशोर नाथ झाक हमरालोकनि विशेष रूपसँ आभारी छी। सम्पादन कार्यमे डॉ० रामदेव झा आ डॉ० भीमनाथ झाक परिश्रमक जतेक अधिक चर्चा करी से थोड़ होएत। एहिकार्यमे प्रो० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'क सेहो सहयोग भेटल। डॉ० मदनेश्वर मिश्र आओर डॉ० जयमंत मिश्र जे सम्पादक बनबाक अपन स्वीकृति देलनि, आ जाहिसँ ई ग्रन्थ अधिक महत्वपूर्ण भेल, ताहिलेल अभिनन्दनग्रन्थ समिति हिनकालोकनिक प्रति आभारी रहत।

एक गोट भारी कचोटक अनुभव कऽ रहल छी जे हमरालोकनिक सहयोगी आ प्रिय मित्र स्व० डॉ० शिवशंकर झा 'कान्त' तथा अमरजीक भातिज अक्षर-पुरुष स्व. रमानाथ मिश्र 'मिहिर' एहि अवसर पर उपस्थित भऽ एहि ग्रन्थकेँ नहि देखि सकलाह। मुदा संतोष एतबे जे एहि दुनू गोटेक आलेख एहि ग्रन्थमे संकलित अछि।

अन्तमे समिति प्रयागक एकेडेमी प्रेसक व्यवस्थापक श्री सुरेन्द्रमणि त्रिपाठी तथा हुनक सहयोगी राजेश शर्मा आदि लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत अछि, जे समय पर ग्रन्थक मुद्रण ओ प्रकाशन कए समितिकेँ कृतार्थ कएलनि अछि। एहि सारस्वत अनुष्ठानक आचार्य, परामर्शदाता, रचनाकार तथा सहयोगीलोकनिक प्रति अभिनन्दन ग्रन्थ समिति कृतज्ञता ज्ञापित करैत अछि।

सुरेश्वर झा

2/बी० राजकुमारगंज, दरभंगा
6-6-2001

सम्पादकीय

जगज्जननी जानकीक जन्मसँ महिमान्वित, वैदुष्यक अमूल्य निधिसँ समृद्ध मिथिला आदिकालसँ सारस्वत वैभवमे विश्वविश्रुत रहल अछि। राजर्षिजनक ओ महर्षि गौतमद्वारा प्रवाहित विद्याक अजस्त्रधारा, विशाल कालक अन्तरालहुमे, कमला, त्रियुग्म, धेमुरा, वाग्मती, जीवछ, करेह आदि मे बहैत ओकर कछेर कैँ उर्वरित करैत रहल अछि, जाहिसँ मिथिला एखनहुँ गौरवान्वित अछि।

मिथिलाक एहि पाण्डित्य-परम्पराक श्रृङ्खलामे खोजपुर ग्रामवास्तव्य अवदन्त वंशीय प्रसिद्ध वैयाकरण मुक्तिनाथमिश्र आ विदुषी दाइजीक आत्मज प० चन्द्रनाथमिश्र अपन प्रतिभा, वैदुष्य, प्रत्युत्पन्नमतित्व आदि अलौकिक गुण-गरिमा सँ 'अमर' बनि विविध कालजयी कृति सँ सुविख्यात छथि।

शिष्ट जनक मनमे विशिष्ट व्यक्तिक जीवन-चरित जनबाक कुतूहल रहैत छैक। एहि कुतूहलक हल सामान्य जनश्रुतिक आधार पर ओतेक प्रभावकारी नहि होइत छैक, जतेक लिखित साहित्यक आधारपर होइत छैक। लिखित साहित्य भावी पीढ़ीक हेतु इतिहास भए जाइत छैक आ ओहि विशिष्ट व्यक्तिक चरित सँ एक आदर्शमार्गक निर्देश भेटैत छैक।

मैथिली साहित्य-रथी प० श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' जी मैथिली काव्यकेँ आलोकित कएनिहार ओ सुकृती थिकाह, जनिक सरस काव्य-कृतिसँ सहृदय-हृदय आह्लादित अछि, आलोचक वृन्द गद्‌गद अछि, काव्यकलाकार, कथाकार, पत्रकार अनुप्राणित अछि।

रससिद्ध कविवर 'अमरजी' वस्तुतः अपन बलेँ अमर छथि। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, मिथिला विभूति, मिथिला-गौरव आदि विभिन्न सम्मान सँ सभाजित प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर जी'क विद्वत्समाज द्वारा ई सारस्वत अभिनन्दन सर्वथा स्तुत्य एवं श्लाघ्य थिक। एहि प्रशंसनीय अनुष्ठानसँ समाज अपन वाग्जन्मक सफलता कैँ अक्षराङ्कित कएलक अछि तथा एक विशिष्ट व्यक्तिक जीवन चरित कैँ संकलित कए विशिष्ट साहित्यिक रचना कैँ संगृहीत कएलक अछि। एहि विशिष्ट सारस्वत दर्पण कैँ देखि परवर्ती समाज प्रतिविम्बित समुचित मार्गक अवलम्बन करबामे समर्थ होएत।

प्रस्तुत अभिनन्दन ग्रन्थ मे विषय तथा प्रसङ्गक अनुसार रचनाकेँ मुख्यतः पाँच वर्ग मे विभक्त कएलगेल अछि।

1. प्रथम-'काव्याञ्जलि एवं जीवन चर्या' मे श्री अमरजीक संवर्धना, मङ्गलकामना, श्रद्धा सुमार्चना आदिक दशटा अमलदल अछि तथा जीवन चर्या सम्बन्धी तीनगोट मनोहर किशलय विलसित अछि।

2. द्वितीयवर्गमे- संस्मरणात्मक तेरह लेख मे श्री अमरजीक जीवन-यात्राक भव्य आकर्षक चित्र अङ्कित अछि, जाहिमे हुनक विभिन्न रूप ओ कार्यकुशलताक आयाम निर्दिष्ट अछि।

3. कृति-विवेचनात्मक तृतीय वर्गमे श्री अमरजीक समस्त निजी साहित्यमर, आलोचक लोकनिक सूक्ष्म लोचनक दृष्टिएँ, चौंतीस लेख सँ प्रकाश पड़लअछि। जाहिमे-

''रविरपि यत्र न गच्छति गच्छति तत्रापि शक्तिमान् सुकविः कविरपि यत्र न गच्छति प्रविशत्यालोचकस्तत्र''

ई सदुक्तिचरितार्थ होइत अछि। एहि विशाल खण्डमे हिनक समग्र कृतिक विवेचन भेल अछि।

4. चतुर्थवर्गक तैइस गोट लेखमे मिथिलाक शास्त्रीय चिन्तन, आचार, व्यवहार, रङ्गमञ्च, वैवाहिक विधि-व्यवस्था, स्थापत्य, चित्रकला, हस्तकला, अरिपन, लोकगीत आदि विविध विषयक सही चित्रण कएल गेल अछि। एहि वर्गमे मिथिलाक इतिहास, राजनीतिक चेतना आदिक दिग्दर्शन सेहो होइत अछि।

5. पाचम वर्ग परिशिष्टमे श्री 'अमर' जीक चित्रावली, अभिनन्दन-प्रशस्ति, वंश-परिचय, श्रीअमर-रचनावली तथा सारस्वत-सहयोगीक सूची आदिक समावेश कएल गेल अछि।

एहितरहेँ प्रस्तुत अभिनन्दन ग्रन्थसँ श्री अमरजीक सभाजन ओ विविध विषयक श्लाघनीय संग्रह भेल अछि जे ग्रन्थक महत्ता तथा उपयोगिताकेँ सिद्ध करैत अछि।

कहबी छैक : ''श्रेयांसि बहुविघ्नानि'' मनोरथक अनुसार सभाजनक आयोजन नहि भए सकल तकर खेद रहितहुँ प्रसन्नता जे श्रद्धापूर्वक 'पत्रं पुष्पम्' सँ समर्चन करबा मे 'अभिनन्दन-ग्रन्थ-समिति' क सदस्य लोकनि संयोजक डॉ० सुरेश्वरझाक सत्प्रयासेँ सफल भेलाह।

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा सुमन जीक

''कला कलित कृति अमरनव चन्द्रनाथ मन आनि। विकसित कैरव विमलदल रस-मधुकर रुचि आनि॥''

एहि पद्यसँ श्री अमरजीक सभाजन करैत मङ्गल कामना-

जीयाच्चिरं सकुशलं बुध-चन्द्रनाथः।

इतिशम्

जयमन्त मिश्र

विषय-सूची

तृतीय-खण्ड : कृति-विवेचन

चतुर्थ-खण्ड : विविध

परिशिष्ट

प्रथम खण्ड

काव्याञ्जलि एवं जीवन चर्चा

ज्यौतिषाचार्य - **सीतारामझा**
(सम्मानितप्राध्यापक)
वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालय

निवासस्थान
अपारनाथमठ, वाराणसी

दिनांक ....

श्रीः

सभापति-मैथिली
काशीविद्वत्समितिद्वारा-

कवि-कुल-कमल कलानिधि श्री चन्द्रनाथमिश्रक सम्मान समयक
शुभाशीर्वचन।

जे सुरभारती-अमलकुल जननि सहज छथि
"चन्द्रनाथ" कवि अमर होथि
वाणी सेवक भूषण मानिकर कर
कमलपत्र ओ चमर होथि।
पुनि सकल रसिकजन मनसरसिजकर
सतत ललित छवि भ्रमर होथि
से रहथु चन्द्रकुल सहित किन्तु
बिसरथु नहि हमरा हेतु होथि॥

सीतारामझा।
२८.३.९९

श्रीअमर-संवर्धना

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

गणेशो मङ्गलं दद्यादादित्यः स्वास्थ्य मेधयेत्।
शक्तिः शक्तिं शिवं शम्भुर्भक्तिं विष्णुः प्रचोदयात्।।

ज्योतिरीश्वरक विद्यापतिहुक चन्द्र कविक जे छथि रुचिमान
वर्तमानमे भूत-भविष्यक प्रतिविम्बित प्रतिभा प्रतिमान

चन्द्रनाथ सँ अछि सनाथ मिथिला मैथिल-मैथिलीक शान
अभिनन्दनमे तनिक समर्पित भाव-सुमन सौरभ अवधान

गद्य-पद्य-अनवद्य भाव-भाषाक अद्यतन सुन्दर रूप
दृश्य-श्रव्य जत विधा विदित सुविधा सह सभ संगत अभिरूप

सभक समक्ष स्वतः प्रत्यक्ष, दीप लय की अर्चव रवि-रूप
कोन पुष्प सँ शरद-वसन्तक पूजन जे कुसुमाकर-भूप?

आशा-दिशा कयल निर्मल, युगचक्र चलाय दुर्मुखक अन्त
व्यंग्य-रंगसँ रंजित साहित्यक सरिताक प्रवाह अनन्त

मिश्रक मिश्री सँ बढ़ि-चढ़ि माधुर्य भरल अछि अविरल घोल
नव रत्नहुँ सँ जनिक मढ़ल साहित्यिक सद्‌बन्धुक नव टोल

कत अभिनन्दन, कत रुचि बन्दन, कत परितोष स्वतः जनि लभ्य
जनिकर व्यंग्य-वितान वितत तानल अछि ग्राम-नगर अति भव्य

दूर्वाक्षत दुइ अक्षरक, हमरहु अर्पित हंत।
युग-युग जीवथु अमर कवि, यश हो वितत दिगंत।।

जीयाच्चिरं सकुशलं बुध-चन्द्रनाथः

डॉ० श्री जयमन्त मिश्र

चन्द्रांशु-शीतल-सुधाऽऽप्लुत-भव्य-भालः
वामाङ्क-शैल तनुजाऽऽहित-मोद मालः।
गाङ्गामृत-प्रशमितोग्र-समस्त-कालः
चन्द्राननोऽवतु मुदा बुध-चन्द्रनाथम्।।1।।

सद्विप्रवंशजनितोज्ज्वल-कीर्ति-शाली,
विद्यावदात-गुण-गौरव-गीति-माली।
सारस्वते महित-कर्मणि युक्त-योगी
शारद्य-चन्द्र-यशसाऽमरतां दधाति।।2।।

प्रत्युत्पन्न-मतिर्वचस्सुचतुरो-
वाग्व्यङ्ग्य-क्रीडापरः,
सत्काव्यामृत-मन्थने सुनिपुणः
तत्सर्जने तत्परः।
विद्वन्मित्र-कथा-सुधा-सुकविता-
गोष्ठीषु लब्धास्पदः
त्वं चन्द्रामृत-वृष्टिकृद्-बुधवरो-
विज्ञैश्च सम्मानितः।।3।।

रसयति रसनां वाणी, विनय-विवेकौ च मानसे वसतः।
चित्ते सुमतेर्वासः, प्रतिभा न्यासश्च त्वय्येव।।4।।

विलसति नृत्यति भाषा, निश्छलवाचां चमत्कृतिश्चोक्तौ।
सहृदय-हृदयं व्यङ्ग्यं, व्यङ्ग्येऽपूर्वश्चमत्कारः।।5।।

कवि-नयनं ते पश्यति, लोके सूक्ष्मं सममसम रूपम्।
सुललित-शब्दार्थाभ्यां, वर्णयसि त्वं यथादृष्टम्।।6।।

शाश्वतिको न विरोधो, दृश्यस्त्वयि श्री-सरस्वती देव्योः।
संगममुभयोः काम्यं, दृष्ट्वा सन्तः प्रसीदन्ति।।7।।

योनन्द्यते बुध-जनै र्विविधैः सुपुष्पैः,
सारस्वतैश्चित्तहरैर्मनोज्ञैः।
शीतांशु-शेखर-कृपालवमादधानो-
जीयाच्छतं सकुशलं बुध-चन्द्रनाथः।।8।।

।। इतिसारस्वताभिनन्दनाष्टकेन सभाजयति।।

शुभाऽभिनन्दनम्

प० श्री गङ्गाधर मिश्र

(1)

ख्यातं यद्विपुलं यशः प्रतिदिशम् साहित्यसेवोद्भवम्
ग्रन्था येन विनिर्मिताः कतिपया लोकोपकारक्षमाः।
गद्यस्याऽस्ति सुलेखकस्सुविदितः पद्यस्य संसाधकः
सोऽयं मिश्रवरोऽमरो विजयताम् श्री चन्द्रनाथः कृती।।

(2)

मैत्रेयी यत्र नारी निजपति वचनाद् ब्रह्मविद्याऽधिगन्त्री
यस्मिन्नध्यात्मवादोऽजनि जनकपुरे यो जगज्जाड्यभास्वान्।
सीतादेव्यास्सुगाथाङ्कथयति च नदी वाग्वती यन्नगर्याम्
दर्भंगायाञ्च तस्याममर' कविवरः कीर्त्यते सर्वलोकैः।।

(3)

श्रीयाज्ञवल्क्य जनकाऽऽदि सुकीर्तिपुञ्जे
शिक्षा सुधा धवलिते मिथिला निकुञ्जे।
विद्यापतेर्ललित गीतमये प्रदेशे
ख्याताऽस्ति सा जनगणाऽऽदृत 'वीरकन्या'।।

(4)

सकलया कलया कलिता शुभा
'ऋतुप्रिया' जनमानसतोषिणी।
प्रकृति प्रेमपरा ध्वनि पूरिता
जनतया नतयाऽऽद्रियताम् सदा।।

(5)

पत्रकारित्व सद्वृत्तं मैथिल्या अस्ति सुन्दरम्।
मैथिलीरत्नहारोऽयमितिहासः प्रकीर्तितः।।

(6)

शब्दशास्त्रसुधासिन्धुस्साहित्यवनकेसरी।
मिश्रः श्री चन्द्रनाथोऽयं राजतां जनमानसे।।

(7)

विविधैश्च पुरस्कारैर्योऽसौ सम्मानितोऽभवत्।
तस्य धीर धुरीणस्य कीर्तिरस्त्यनपायिनी।।

(8)

'बिदागरी' ति विख्यातो यस्योपन्यास-पादपः।
प्राप्नुवन्ति बुधा यस्य भव्यम् सामाजिकं फलम्।।

(9)

अध्यापिताश्शिष्यगणास्सदैव यद्भाषणं भव्यमहो सभायाम्।
गौरीशपूजास्तुतिलग्नचेताः श्रीचन्द्रनाथोऽस्त्यधुना महात्मा।।

काव्याञ्जलिः

डॉ० श्री रामजी ठाकुर

1

पीत्वा स्वयमिह-गरलं,
सुधां प्रयच्छन् मुदाऽन्यलोकेभ्यः।
शिव इव जनहित कारी,
न केन बन्द्यः कविर्महान् लोके।।

2

मरु भूमौ रसधारां
प्रवाहयन्नेष शीतलां सुखदाम्।
विदित भगीरथकर्मा
कविरमरः स्तूयतां न केनात्र।।

3

सुखदुःखैर्मोहैरिह,
क्लिश्यतिभुवने विधातृसृष्टेऽस्मिन्।
मुक्तकरन्ननुवितरन्,
दिव्यानन्दं कविर्नवोवेधाः।।

4

उपलोपमञ्चचेतः
सरसवचोभिः सुकोमलं कुर्वन्।
करुणा सुधानुषिक्तं,
निखिल जनानामकृत्रिमोबन्धुः।।

5

चन्द्रः कोऽपिधराया-
मवतीर्णः किं शिवाय लोकानाम्।
सहृदय कुमुद विकासः,
कला प्रकाशोऽवलोक्यते यस्मात्।।

6

सुरगिरि सुविज्ञताया-
मपिभक्त्या मैथिली पदाम्भोजे।
कविता सुरभि प्रसूनैः
समर्चयन् तां सदा मुदं धत्ते।।

7

चन्दन चर्चित भालः
सहासवदनः प्रसन्नतां वर्षन्।
मिथिलाभाषा काव्ये,
हास्यं सम्पोषयन् नवो भासः।।

8

पश्यन्निसर्गशोभां
प्रतिभायोगात् समुज्ज्वलां विदधत्।
''ॠतुप्रिया'' मिह रम्या-
मुपाहर च्चैषमाधुरीमतुलाम्।।

9

जनता मानसपीडा
कुनीति जालं विभाव्य देशेऽस्मिन्।
सकरुणमनाः कविः किल,
विलपति मधुरं हरन् सताञ्चेतः।।

10

दीना नाथ कवीनां
सरनेव साहाय्यमाचरन् मनसा।
मिथिलागिरः सपर्य्यां
कुर्वन्नन्यैश्च कारयन् प्रथितः।।

11

कविता कवेर्मनोज्ञा,
सहृदय मुख पङ्कजेषुनृत्यन्ती।
कलयति कामपि सुषमां
सस्मितमास्वाद्यते हृदा विज्ञैः।।

12

'अमर'-कवेः पूजायां
पद्यैः सुमनोमिभिरञ्जली रचितः।
प्रीत्यासमर्पितोऽयं
भूयान् मोदस्य साधनं सुधियाम्।

जनकवि चन्द्रनाथ

श्री चन्द्रभानु सिंह

मंडन मिश्रक तोता ताकी लोलक बोल मखानी।
चर्चित जनकवि चंद्रनाथ केर चंदन-चरित बखानी।।
पुरी बनल पुर जकरा गरिमे सैह खोजपुर बस्ती।
सरस्वती कैँ तृप्ति भेटै छल जखन घटै छल रसती।।
शुभनमस्य मिथिला मे उतरल मुक्तिनाथ सन दिग्गज।
पत्नी छली 'दाइजी' जनिकर कीर्त्तिलता छवि मलयज।।
तइ गुरुकुल कैँ शब्द-सुमन ले' आरतिये सनमानी।।1।। चर्चित०

खोजपूर उत्तर-बिहार मे उत्तर जकर हिमालय।
व्यक्ति-व्यक्ति मिथिलाक भूमि मे एक-एक विद्यालय।।
मुक्तिनाथ जी मिश्र महाशय महिमा माटि जोगायल।
पत्नी जनिक छली महिलामणि आस-पड़ोस फुलायल।।
जनिक सुतैं भेल वंश उजागर पुरुष प्रवर गुणखानी।।2।। चर्चित०

जगदम्बा सन माय, तनय दू नेना बतहू गोदी।
जनमहिं सँ बड़ चुलबुल-चुलबुल हँसमुँह परम विनोदी।।
अंगना दूरा चौक बाधवन सभठाँ लगबथि फेरी।
कतौभेल अफस्याँत अहेरे ताकय कतहु बगेरी।।
सरस्वती देल अक्षर, अक्षत लोचन देल भवानी।।3।। चर्चित०

बाड़िक पटुआ स्वाद सवादल, दूभिक गद्दा पाँजल।
चैत बरहमासा मे बतहा फगुनी गमक समाहल।।
भेल निपत्ताकटहर मोंछी गाछी नगरक धांगल।
ठाढ़ि ललाम आमकेर लचि गेल फड़सब झोझिंनुकायल।।
दरभंगेमे खोजल खोजी गुरुकुल केर रजधानी।।4।। चर्चित०

जा किशोर छल ता बतहाके छारल दुःख परे पर।
कते दिनादुखिताह बिताओल पितामही के नैहर।।
ठाम छुड़ा पानिक परिवर्त्तन राखथि तनय नयन पर।
कमठ-अंड सन पिता विलोकथि जतय-ततय रहि तत्पर।।
चंद्रनाथ सन सुत पा जनकक देहरि बनल सुहानी।।5।। चर्चित०

गुरुपद-रति आचार्य बनौलक चंद्रनाथ भेल बतहा।
'लतारमेश्वर' कल्पलता जत शिक्षित बनल उमतहा।।
स्वयं माथ पर हाथ राखि गुरु देलन्हि मुक्तिक मुक्ता।
पदसेवक रहि जनिक अंत धरि कैल पिता ऋण चुकता।
पितृस्नेह सँ अमर-लता भेल 'हीरा' हृदयक रानी।।6।। चर्चित०

तइ देवी केर निष्ठा श्रद्धेँ आंगन भेल उजागर।
अल्पेमे पा चारिपदारथ तइ पर माइक आँचर।।
कुमरजीक समरथ सहकर्मी सरस्वती विद्यालय।
खेती गाड़ि ततहि सँ गढ़लनि निज भाषाक शिवालय।।
सजल-कंठ कोसी गंगामय अमर भेल युगवाणी।।7।। चर्चित०

कविवर अमरक भास गमागम बहलगीत दरभंगा।
बीछि-बीछि प्रतिभा प्रोत्साहल कथा कवित बहुरंगा।।
छोट-पैघ ले ऊँच अबौ क्यो खोलल जन-दरबाजा।
'तरुण-किशोर राष्ट्र केर धरमी, जे आबह से राजा।।
अमरकथा लिख! तखनहिँ बनतौ तोरो अमर पिहानी।।8।। चर्चित०

शब्दे सँ गुदगुदी लगाबथि गद्य पद्य केर नेता।
'लालकका' बनि दृश्यकाव्य देल आकृतिये अभिनेता।।
राष्ट्र मंच सँ पैब कलाधर दू दूटा खुशनामा।
शब्दक सबल सिपाही एखनहुँ तपितपि दुख सँ तामा।।
चौथोपनमे झेलए-आबए जे आफति-असमानी।।9।। चर्चित०

पंडित पिताक सेवा टहलेँ संस्कार द्विज माँजल।
बाबूजी व्युत्पन्न बुद्धि के भरि मिथिला मे बाजल।।
कासिक छाप भाल पर जिनका गिरा कंठ में माँजल।
तेजवंत प्रतिभाक धाहसँ बहि दरभंगा लागल।।
स्वयं सम्पदा जनिक पिताकेर कैल हुलसि अगवानी।।10।। चर्चित०

शब्द कोशसँ रतन कोड़िक मधु मिठास पद बोरल।
ललित पदावलि पचरंगी डोरी सँ पांती घोरल।।
अमर पंक्ति अमरेसन लागए गति खराद पर रोलल।
हास्य व्यंग्य पुट सँ टिपकारल वर्णाक्षर गचि जोड़ल।।
कविक शतायु हेतु प्रभु पद पर नमौं जोड़ि युगपाणी।।11।। चर्चित

बात व्याधि सँ बाधित रहितहुँ अक्षर-साधक भारी।
ठाकुर जी केँ पुजितहुँ नियमित शब्दक सिद्ध खेलाड़ी।।
श्रव्य-दृश्य आ गल्प निबंधक करथि सहज संपादन।
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक जे मूर्तिमंत अनुशासन।।
सुयश चंद्रकवि चंद्रचूड़ छवि चंद्रनाथ अभिमानी।।12।। चर्चित०

शम्भुनाथ 'मनु' पुत्र, पुत्रवधु सरल सुशील 'अपरना'।
चिरजीवी आदित्य विभूती पौत्रे रंजित अंगना।।
सुता योगमाया-सावित्री-कुलमणि पति-अनुकूला।
नैहर सासुर दुहुँ दिस मोदेँ अमरावति समतूला।।
अनुचर दुहुकुल मगन शिवाशिवशिव सेवा विस्तारी।।13।। चर्चित०

''अमर हमर छथि''

श्री प्रवासी साहित्यालंकार

अमर हमर छथि, हमर अमर छथि।।
कालगणक निःसीम व्योम पर भुवन भास्करे दीप्त प्रखरछथि,
छओ दशक केर काव्य साधना, एकमात्र उपलब्धि अमर छथि।।
साझी स्नेह स्वरूप सार्वजनिके जे अपने आठ पहर छथि
अनुखन कोशी कमला गावै अमर हमर छथि, हमर अमर छथि।।

लड़े-लड़े कहि जे शिशु कैँ दौड़ाबए लगला,
निशि-निशीथ मे मातृचरण गोहराबए लगला;
दिव्य भाव अभिभूत व्यक्तिकैँ मीत बनौलहि,
मात्सर्यें मधुऐल मैथिली गीत बनौलनि।।

देश, काल सँ पात्र गढ़ब हिनकर कौशल थिक,
गंगा पर विधु-बिम्ब कला झलमल झलमल थिक;
जीवन भरि जीवन्त हास्य केर चित्र-चितेरा,
आठो सिद्धिक बुद्धि विराटक लग में डेरा।।

वैयाकरण निविष्ट, शारदा अन्तः सलिला,
मंत्रोच्चारण काल अमर जी आखर पहिला;
शैली इष्ट विशिष्ट, शिष्ट आचार संहिता,
कलुष, कालिमा तीव्रालोकक भय प्रकम्पिता।।

बाट बनाबथि गाम-गाम मे सोझ डगर अछि,
तपस्याक अर्जित आनन पर तेज प्रखर अछि;
प्राञ्जल शैली भावभूमि नन्दनोद्यान सन;
वचने हिनक अकाट्य शुद्ध शास्त्रक प्रमाण सन।।

शिष्यक पैघ कतार अखिल भारत भरि व्यापित,
सर्वमान्य सिद्धान्त हिनक द्वारा संस्थापित;
छन्द-प्रबन्धक रसायनक वेत्ता एकसर छथि,
शाश्वत गीतक गायक मे नायक सस्वर छथि।।

लक्ष्यवेध मे तन्मय शर-सन्धान दक्ष छथि,
मैथिलीक साहित्य निशा (विधा) केर शुक्ल पक्ष छथि;
हिनक दिशा निर्देश करै भ्रम कुलक निवारण
नीलकण्ठ सन सुधा बाँटि हालाहल पारण।।

गंगाजल सन शुद्ध पदक लालित्य हिनक थिक,
सरस, सरल, सुमनक सुगन्ध साहित्य हिनक थिक;
तारा, ग्रह, नक्षत्र अनेको चमकै नभ पर-
जे देदीप्यमान अछि से आदित्य हिनक थिक।।

निर्धारित हिनकर पगडंडी लीक भेल अछि,
काव्यसाधनाविधि षड् दशक प्रतीक भेल अछि;
शब्द सटीक नियोजित ग्रिमहारक मनका सन,
अमर अमर छथि, करथि केओ कतबो शीर्षासन।।

मानथि किछु न असाध्य, न जानथि विधि बिडम्बना,
पूर्णचन्द्र सँ सजवथि सदन सपर्ण अंगना;
स्वाति-बुन्दसँमोती बनबथि श्वेत-सीप छथि,
धरित्रीक अनुरागक शुभ आकाशदीप छथि।।

जे आसेतु हिमालय मे विख्यात भेल छथि,
बहुआयामी विधा कला-निष्णात भेल छथि;
जनिकर दर्शन दिव्य सतत जे स्थितप्रज्ञ छथि,
प्रगति पंथ पर प्रहरी सृजनक विशेषज्ञ छथि।।

कर कमनीय कलाक तूलिका कल्पनाक छवि चित्र भेल अछि।
हृदय हिमाद्रि केर गिरि गह्वर, वृत्ति, चरित्र पवित्र भेल अछि।।

स्वार्थ मोक्ष नहि चाहथि वैतरणी मे नाव खेवैया,
दिग्भ्रम, कुण्ठा दूर करै जे अनकर लिऐ बलैया;
दूर्वाक्षत, तुलसी, प्रसून, मधु, दीप तथा चन्दन अछि।
अभिवन्दन दिव्याभ चरण केर कीर्तिक अभिनन्दन अछि।।

शब्द-पुष्प-श्रद्धा

डॉ० श्री विद्यानाथ झा 'विदित'

उनटो बिहाड़ि केर बीच, कुशल
भाषाक पाल, पहुँचौल तीर।
हिंसा-द्वेषहुकेँ, हँसी-खेल
बुझि, आगू बढ़इत गेला, धीर।।

कवि गोष्ठीक उखड़ैत भीड़
जिनका उठितहि हो संच-मंच।
शब्दक जादूसँ मंच मुग्ध
श्रोता-सागर में यश अनंत।।

जेहने कविता रसगर-कटगर
तेहने निबन्ध रचि मर्म भरल।
साहित्यक सबटा विधा-बाध
जिनकर रचनासँ भरल-पुरल।।

हास्यक रचना थिक देहमात्र
अन्तर मे अद्‌भुत व्यंग्य भरल।
हो विषय-वस्तु केहनो दुरूह
बस स्पर्श-मात्र सँ बनय सरल।।

से 'चन्द्रनाथ'शत शत जीबथु
जिनकर यश सहजहि भेल 'अमर'।
ई शब्द-पुष्प-श्रद्धा अर्पित
एहि अभिनन्दन केर अवसर पर।

साहित्य-गगन-नक्षत्र 'अमर'

डॉ० श्री आर० के० रमण

(1)

करक कर्म कर सँ सम्पादित कर्मनिष्ठ छथि कर्मवीर
मर्यादा अनुशासन शिष्टाचार सत्त्व छनि नीर-क्षीर
हास्य विलासी आस्य सतत जे मैथिलीक छथि पुरुष शिखर
वैह थिका अति सौम्य सुभग साहित्य-गगन-नक्षत्र 'अमर'

(2)

'उनटापाल' तरणि पर तानल 'विदागरी' पुनि 'वीरकन्या' केँ
'ऋतुप्रिया' केँ 'जलसमाधि' सँ छानल-आनल 'विभुधन्या केँ
'आशा दिशा' देखाय जन जनकेँ' गुदगुदी' लगाओल जे सस्वर
वैह थिका अति सौम्य सुभग साहित्य-गगन-नक्षत्र 'अमर'

(3)

'युगचक्र' घुमा नित त्राण कैल 'त्रिफला' खोआय मल बद्ध दूर
'म० म० मुरलीधर' 'मधुप' क गुंजन, मूनल अनेक जे त्रुटिक भूर
ओ 'चन्द्र' थिका शिव-भाल परक नहि छनि जनिका कोनो परतर
वैह थिका अति सौम्य सुभग साहित्य-गगन-नक्षत्र 'अमर'

(4)

आइ करै छी अभिनन्दन विधि अभिनन्दित पहिनहिँ प्रति पलमे
हृदय-प्राण-मनसँ अभिनन्दन नमन 'रमण' केर चरणोत्पल मे
प्रत्युत्पन्नमतित्व पसरल प्रतिभा पाण्डित्य पूर्ण छनि जनिक प्रखर
वैह थिका अति सौम्य सुभग साहित्य-गगन-नक्षत्र 'अमर'

‘हमर दादाजी’

श्री आदित्य भूषण मिश्र

सन् पचीस मे ‘चन्द्रोदय’ भेल संघक उदयक संगे
जाहि समय मे होइत छल हल्ला फसाद आ दंगे

पिता हिनक तेजस्वी पण्डित
विद्या-विनय सकल गुण-मण्डित
संस्कृत विषयक रहि आचार्य
पुनि बनलाह प्रधानाचार्य
दूर-दूर तक घूमय गेला हुनका संगे-संगे

ज्येष्ठक गुण सहजे अपनौलनि
अपनो प्रतिभा माँजि बनौलनि
सभा, मंच पर हँसा-हँसा कऽ
हास्य कविक ई पदवी पौलनि
यात्री जी भगिना, सुभद्र झा मामा दुहु बेढंगे

बहुतो पुरस्कार छनि भेटल
अपन लिखल पोथी, छनि गेंटल
भरि जीवन अध्यापन कयलनि
पूज्य पिता केर रस्ता धयलनि
सरस मधुर वाणी सँ सबकेँ रङलनि अपने रंगे

करथि दुलार तते दादाजी
दुनू भाइ केँ अछि आजादी
आशीर्वाद हिनक जँ पायब
सब उपदेश हिनक अपनायब
हम आदित्य विभूति पौत्र तँ थिकियनि हिनकर अंगे।

शनैः पर्वतलंघनम्

श्री रामदेव झा

प्ररोचना

पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क जीवन-वृत्त आधुनिक मैथिली भाषा, साहित्य ओ मिथिलाक सांस्कृतिक चर्याक इतिहासे कहल जा सकैत अछि। हिनक कौलिक, पारिवारिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक ओ सामाजिक सम्बन्ध ओ अनुबन्धक फलक ततेक विस्तृत, ततेक गम्भीर, ततेक प्रगाढ़ रहलनि अछि जे म०म० उमेशमिश्र आ राजपण्डित बलदेव मिश्र सन व्यक्तित्व सँ भैयारीक सम्बन्ध रहलनि, डॉ० सुभद्र झा सम्बन्धेँ माम छलथिन, तँ यात्री-नागार्जुन भागिन। कविवर सीताराम झा, बाबू भोलालालदास, पं० काशी कान्त मिश्र 'मधुप', आरसी प्रसाद सिंह, प्रो० हरिमोहन झा, कांचीनाथ झा 'किरण' सदृश महारथीक संग अग्रजअनुजक सम्बन्ध बनल रहलनि, तँ पण्डित रामकृष्ण झा 'किसुन' सँ फड़िछा नहि सकलनि जे 'बड़का भाइ' के, तेँ दुहू एक-दोसरा केँ 'बड़का भाइ' कहि सम्बोधित करैत रहलाह। ज्येष्ठक प्रति अजस्त्र श्रद्धा ओ समर्पण, समवयस्कक प्रति सौहृद्य ओ सहयोग, कनिष्ठक प्रति अजस्त्र स्नेह, वात्सल्य ओ प्रोत्साहनक निष्काम-निश्छल भाव ओ व्यवहार रहबाक कारणेँ बीसम शताब्दीक पाँचम सँ अन्तिम दशक धरिक मैथिली साहित्यक बड़ विरल साहित्यकार होयताह जनिक सम्पर्क-सम्बन्ध हिनकासँ नहि रहल होनि। एम्०एल० एकेडमी, लहरियासरायक मैथिलीक अध्यापकक रूप मे, नवरत्न गोष्ठी ओ विद्यापति गोष्ठीक सचिवक रूप मे, मैथिली साहित्य परिषद्क एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भक रूप मे, वैदेही, निर्माण आदि पत्रिकाक सम्पादक-रूप मे, मिथिलाक गाम-गाम ओ भारतक नगर-नगर मे मैथिलीसेवी संस्थाक स्थापना, विद्यापति-पर्वसमारोह ओ कवि सम्मेलन-आयोजनक प्रेरणा-दायकक-रूप मे बहुतो कवि-लेखकक सुषुप्त सर्जनात्मक प्रतिमा केँ ताकि, माँजि, खराजि साहित्य-मंचपर ठाढ़ करबाक श्रेय अमर जी केँ छनि। साहित्य-सर्जन, मैथिली भाषाक संवर्द्धन ओ सहस्त्रशः श्रद्धालु शिष्य-वर्गक सृष्टि हिनक समग्र जीवनक क्रिया-कलापक निष्कर्ष थिकनि।

पितृकुल

मैथिल ब्राह्मणक एक प्रतिष्ठित मूल अछि हरिअमय (हरिताम्र हरिआम्ब हरिअम्ब) जकर अनेक ग्राम अछि, यथा हरिअमय-सीवा, हरिअमय-मङरौना, हरिअमय-रखवारी, हरिअमय आही, हरिअमय-बलिराजपुर इत्यादि। एहिमे हरिअमय-रखवारी मूलक मैथिल ब्राह्मणक एक शाखा साम्प्रतिक मधुबनी जिलाक प्रसिद्ध गाम हरिपुर-डीहटोलमे उनैसम शताब्दी मे निवास करैत छल। ओहिमे एक गोट प्रतिष्ठित व्यक्ति छलाह भाइ मिश्र। कहल जाइछ जे ओ अपना ओहि ठामक चौपाड़िपर अध्यापन-वृत्ति कैरत छलाह। हुनका दुइ गोट बालक भेल छलथिन दुर्गानाथ मिश्र ओ आर्तिनाथ मिश्र। जेठ दुर्गानाथ मिश्रक विवाह भेलनि सागरपुर ब्रह्मोतरा। दुर्गानाथ मिश्रक बालक भेलथिन गिरिधारी मिश्र। गिरिधारी मिश्रकेँ भाग्य मे जेना दाम्पत्य सुख नहि लिखल छलनि। तीन-तीन गोट विवाह कयलो उत्तर अन्तमे विधुरे जीवन जिउबाक लेल अभिशप्त रहलाह।

गिरिधारी मिश्रक पहिल विवाह भेलनि लोहा-कपसीयाक्त निकटस्थ ग्राम नरही। ओहि पत्नी सँ सर्वप्रथम बालक क जन्म भेलनि जे प० मुक्तिनाथ मिश्र नाम सँ प्रख्यात भेलाह।

परन्तु ओहिपत्नीक आकस्मिक देहान्त भऽ गेलनि। तखन दोसर विवाह भेलनि मढ़िया। ओहो पत्नी एकटा बालकक जन्म दऽ दिवंगता भऽ गेलथिन। गिरिधारी मिश्रक तेसर विवाह भेलनि खोजपुर। एहि पत्नी मे एकटा बालक आ दू गोट कन्याक जन्म भेलनि।

पिता मुक्तिनाथ मिश्र

मातृहीन मुक्तिनाथमिश्रक आरम्भिक लालन-पालन पितृमातृक ब्रह्मोतरेमे भेलनि। पश्चात् हुनका खोजपुर आनल गेलनि। मुक्तिनाथमिश्र आरम्भिक शिक्षा सौराठक प्रसिद्ध विद्वान् म०म० राजनाथमिश्र प्रसिद्ध रज्जेमिश्र सँ प्राप्त कयलनि। मुक्तिनाथमिश्रक वैमात्रेय बहिनिक विवाह गजहरा निवासी म०म० प० जयदेव मिश्र सँ भेल छलनि। जयदेव मिश्रक एहि पत्नीक यद्यपि निस्सन्ततिक देहावसान भऽ गेलनि परन्तु जयदेव मिश्र अपन जीवन भरि मुक्तिनाथमिश्रक संग सार-बहिनोइक सम्बन्धक निर्वाह करैत रहलाह। हुनक पुत्र-पौत्रादि लोकनि ओहि पुरना सम्बन्ध कैं जीवन्त बनौने रहलथिन अछि।

प० जयदेवमिश्र अपना समयक दुर्द्धर्ष संस्कृत विद्वान् छलाह आ काशीमे रहि अध्यापन करैत छलाह। ओ अपन सार मुक्तिनाथमिश्र कैं काशी लऽ गेलथिन। मुक्तिनाथमिश्र ओतहि पं० जयदेवमिश्र सँ एवं अन्यहु विद्वान सँ व्याकरण शास्त्र मुख्यतः एवं अन्यान्यहु शास्त्रक शिक्षा ग्रहण कयलनि।

काशिअहिमे रहैत बहिनोइ आ गुरु प० जयदेव मिश्रक अनुमत्या महेश ठाकुरक अग्रज म०म० मेघठाकुरक वंशधर मध्य प्रदेशक रायपुर निवासी गम्भीरनाथ ठाकुरक कन्या सँ मुक्तिनाथ मिश्रक विवाह भेलनि। हिनका रायपुर मे एक गोट जिरात ओ सय विघा भूमि दऽ ओतहि बसि जयबाक आग्रह कयल गेलनि।

ओ रायपुर मे किछु समय बिताय अपन मातृक नरही अयलाह। माम लोकनिकैं मुक्तिनाथ मिश्रक रायपुर मे स्थायी रूप सँ बसिजायब पसिन्न नहि पड़लनि। ओ फेर रायपुर ने चल जाथि तैं माम लोकनि हुनक दोसर विवाह देशहिमे करा देबाक निश्चय कऽ सुगौनाक प० गोनौड़ झाक कन्या सँ विवाह करा देलथिन। संगहि खोजपुर (मधुबनी) मे ओ अपन स्थायी आवासक व्यवस्था कयलनि।

माता

मुक्तिनाथ मिश्रक द्वितीया पत्नी दाइजी पण्डिता आ पण्डिताइनि दुहू छलीह। लिखब-पढ़ब, पतड़ा देखब-बूझब, हिसाब-बाड़ीक जोड़-घटावक ज्ञान हुनका नीक जकाँ छलनि। धर्मपरायणा, बुद्धिमती एवं लूरि-व्यवहार मे सर्वथा कुशल छलीह। ओ सासुर आबि अपन घर-गुहस्थी निर्माण करऽ लगलीह। अत्यन्त आवेशपूर्वक जेठि सपत्नीक द्विरागमन करौलथिन जनिका पश्चात् सन्तान लोकनि 'बड़ी बाइ' कहल करथिन आ बड़ी बाइक देहावसान नैहरहिमे भऽ गेलनि। हुनका दुइ गोट कन्या भेलथिन जनिक विवाह क्रमशः नवानी ओ मधवा भेलनि आ जनिक सन्तान लोकनि यथास्थान जीवन यापन कऽ रहल छथिन। दाइ जी कैं जे सन्तान भेलथिन ताहिमे दुइ बालक-प० गणेशमिश्र ओ प० चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' तथा एक कन्या अन्नपूर्णा रहलथिन।

अध्यापक मुक्तिनाथ मिश्र

मुक्तिनाथ मिश्र पारिवारिक सुस्थिरताक संगहि 1902 इ० मे अपन पैतृक गाम हरिपुरक बख्शीटोल संस्कृत विद्यालय मे अध्यापक पद पर जीविका आरम्भ कयलनि। थोड़वहि दिन मे वेश यशस्वी भेलाह। 1907 इ० मे जखन दरभंगा मे महाराज रमेश्वरसिंह द्वारा रमेश्वर लता संस्कृत विद्यालयक स्थापना भेल तँ देशक विशिष्ट विद्वान लोकनिक ओहि संस्थान मे अध्यापकक पद पर नियुक्ति कयल जाय लागल। ओही क्रममे प० मुक्तिनाथ मिश्रहुक नियुक्ति ओहि विद्यालय मे भेलनि। पण्डित मिश्र अपन विशिष्ट शिष्य लोकनिक संग, जाहि मे बलदेवमिश्र (जे पाछाँ राजपण्डित भेलाह) सेहो छलाह, दरभंगा आबि गेलाह। एहि ठाम व्याकरणक अध्यापकक रूप मे कार्य करहु लगलाह तथा 1929 इ० मे रमेश्वरलता संस्कृत विद्यालयक प्रिन्सिपल बनाओल गेलाह। प्रिन्सिपल पद पर कुशलतापूर्वक कार्य करैत 1944 इ० मे सेवानिवृत्त भेलाह।

बूढ़ा गुरुजी

दरभंगा मे अध्यापन करैत प० मुक्तिनाथ मिश्र केँ शास्त्र-चिन्तन, शुद्ध निश्छल स्वभाव, धार्मिक मनोवृत्ति, यथोपलब्धहि मे अपूर्व सन्तोष आदि विशिष्ट गुणक कारणे विशेष प्रतिष्ठा आ सम्मान भेटैत रहलनि। महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक ज्येष्ठ कुमार कामेश्वर सिंह ओ कनिष्ठ कुमार विश्वेश्वर सिंहक अक्षरारम्भ मुक्तिनाथ मिश्रहिक द्वारा कराओल गेल छलनि। से पश्चात् ई 'बूढ़ा गुरुजी' रूपमे प्रख्यात भऽ गेलाह। हुनक शिष्यलोकनिमे राजपण्डित बलदेवमिश्र, प० त्रिलोक नाथमिश्र, प० रविनाथ ठाकुर इत्यादि मिथिलाक पाण्डित्य-परम्पराक अपना कालमे महान् स्तम्भक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। हिनकहु लोकनिक शिष्योपशिष्यक परम्परा वेश विस्तृत भेलनि। अतः प० मुक्ति नाथ मिश्र वास्तविक अर्थ मे 'बूढ़ा गुरुजी'क रूपमे आदृत-पूजित भेलाह।

राजप्रतिनिधि मुक्तिनाथ मिश्र

महाराज कामेश्वर सिंहक बूढ़ा गुरुजीक प्रति ततेक आस्था छलनिजे हुनका महाराज धरि जयबाक हेतु ककरहु अनुमति-निर्देशक प्रयोजन नहि रहैत छलनि। वास्तव मे प० मुक्तिनाथ मिश्र रमेश्वरलता महाविद्यालयक प्रिन्सिपले नहि, राजदरभंगाक आ विशेषतः महाराज कामेश्वर सिंहक राज प्रतिनिधि आ वैयक्तिक प्रतिनिधिक कर्त्तव्यक सेहो निर्वहण करैत छलाह। भारतक विभिन्न देशी नरेश ओ राजा-रजवाड़ा सँ जन्मोत्सव, उपनयन, विवाह, श्राद्ध, राज्याभिषेक एवं अन्य वृहत् अनुष्ठानक हेतु महाराज केँ आमन्त्रण अबैत छलनि तँ महाराजक प्रतिनिधित्व करबाक लेल खलीता ओ उपहार सहित पं० मुक्तिनाथ मिश्र केँ पठाओल जाइत छलनि। ओहि यात्राक क्रममेबहुतो बेर हुनका संग हुनक कनिष्ठ पुत्र चन्द्रनाथ मिश्र सेहो रहैत छलथिन। एहि तरहेँ चन्द्रनाथ मिश्र केँ कुचबिहार, हथुआ, रामनगर, रीवाँ, पटियाला, जयपुर इत्यादि स्थानक यात्रा, करबाक, राजसभाक गरिमा देखबाक अवसर बाल्यावस्थामे प्राप्त होइत रहलनि। भारतक विभिन्न भागक रीति-नीति, आचार-व्यवहार, भाषा-भेष, शासन-अनुशासन देखबाक, अनुभव करबाक जे अवसर भेटल छलनि से अवश्ये हिनक व्यक्तित्वक निर्माणमे परोक्ष वा अव्यक्त रूपसँ महत्त्वपूर्ण उपादानक रूपमे कार्य कयलक। पैतृक रिक्थक रूप मे चन्द्रनाथ मिश्र केँ एकटा महान् गरिमामय सारस्वत ओ राजस् पृष्ठ भूमि प्राप्त भेलनि से प्रायः अल्प साहित्यकार केँ भेटल होयतनि।

परिवार-व्यवस्था

प० मुक्तिनाथ मिश्र स्वयं दरभंगामे कार्य करथि। खोजपुरमे पत्नी दाइ जी घर-गृहस्थीक योग-क्षेममे लागल रहि सन्तान सभकेर समुचित लालन-पालन कयल करथि। मुक्तिनाथ मिश्र अवकाशक दिनमे गाम जाथि आ बहरिया काज सभक सम्पादनक व्यवस्था करथि। दरवज्जा पर बड़द, गाय, महींस एवं खेती-गृहस्थीक हेतु जन-बोनिहारक व्यवस्था करथि। बहुत पश्चात् आबि थोड़ेक-थोड़ेक अवधिक हेतु दरभंगहुमे परिवारकेँ राखल करथि। एहि रूपमे परिवारक गाड़ी अन्तर्वर्ती कतोकविघ्न-बाधाकेँ पार करैत चलैत रहलनि।

दाइजी गृहस्थीकेँ नीक जकाँ सम्हारि लेने छलथिन। क्रमहि अपन ओरियानी आ व्युत्पन्न स्वभावसँ खेत-पथार सेहो नीक जकाँ अरजि लेलथिन। दरबज्जा पर हर-बड़द, गाय-महीस सेहो राखऽ लागल छलीह। हर जोतबाक लेल ओ खेत-पथार, माल-जालक ताक-छेमक लेल एकटा स्थायी हरबाह केँ राखि लेलनि। ओ हरबाह चमार जातिक, कर्मठ, आज्ञाकारी ओ अत्यन्त विश्वस्त व्यक्ति छल। ओकर बेटा छलैक झिंगुरा। ओकरहु अपना ओहिठाम चरबाहक रूपमे राखि लेलनि।

प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जन्म

प० मुक्तिनाथ मिश्र ओ दाइजीक जीवन्त सन्तति मे कनिष्ठ पुत्र प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क जन्मतिथि विद्यालयीय अभिलेख ओ प्रमाण पत्र सभ मे अंकित छनि 2 मार्च 1925 इ०। परन्तु वास्तवमे हिनक जन्म खोजपुर मे 1925 इ० मे ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा कैँ भेल छलनि।

बतहूक बाल्यकाल

शैशव मे चारि वर्ष धरि हिनक बोले नहि फुटलनि। परन्तु स्वभाव मे अतिशय चंचलता ओ हठपनी रहनि। जाहि बातक हेतु हठ करऽ लागथि तैँ ओकरा कथमपि छोड़थि विसरथि नहि। तैं माय दुलार सँ हिनका बतहू कहऽ लगलथिन।

से बतहू कैँ जखन बोल फुटलनि तँ ओ अत्यन्त मुखर भऽ गेलाह। खेलौड़ि मे बेसी काल लागल रहऽ लगलाह। बतहू अपन महिंसिक चरबाह झिंगुराक संग भरि दिन खेल-धूप, टालि-गुल्ली आ सतरंज खेलाय मे मगन रहऽ लगलाह। नहि तँ, ओकरहि संग बाधे-वोने, गाछिए-बिरछीए बौआइत रहैत छलाह। पढ़बा-लिखबा दिस कनेको ध्यान नहि दैत छलाह। शिक्षाक क्रम स्थिर भैए ने पबैत छल। दाइ जीक लेल बतहूक स्वभाव कैँ नियन्त्रित करब ओ पढ़बा-लिखबा दिस ओकरा मोड़ब एकटा समस्या बनि गेलनि। एकटा पण्डित-पुत्रक हेतु अवश्ये ई बड़ पैघ चिन्ताक बात छल।

शिक्षोन्मुखी प्रवर्त्तन

अन्ततः निर्णय कयल गेल जे खोजपुरक खेलौड़ियाह प्रवृत्तिसँ बतहू कैँ हटाय, पढ़बा दिस प्रवृत्त करबाक लेल पितृमातृक नरही पठाओल जाइन। एकटा व्यक्तिक संग बतहू कैँ नरही पठाओल गेलनि जे ओही ठाम प्राथमिक विद्यालय मे पढ़ताह। मुदा बतहू दुइ-चारिए दिनक बाद एकसरे पैदले नरही सँ खोजपुर चल अयलाह।

फेर वैह खेल-धूप। वैह छिछिआयब-बौआयब।

प्रयत्न पूर्वक पुनः कय बेर नरही हुनका पठाओल जाइन आ जिद्दी स्वभावक रहने ओ पड़ा-पड़ा खोजपुर चल आबथि। अन्ततः हिनका घोड़ा पर चढ़ाय ज्येष्ठ भाइ गणेश मिश्र नरही पहुँचा अयलथिन।

एहि बेर बतहू कैँ बड़ आनि लगलनि। एहि बेर जे नरही गेलाह तँ तीन बरख धरि खोजपुर अयबाक नाम नहि लेलनि। कतेक बेर माय आवेश ओ आग्रह सँ गाम अयबाक समाद देलथिन तथापि बतहू गाम नहिए अयलाह।

आरम्भिक ओ उच्च शिक्षा

नरही मे पढ़बामे मोन स्थिर भेलनि। 1932 मे लोअर परीक्षा पास कयलनि आ लोहा अपर प्राइमरी में नामांकन भेलनि। ओहि ठाम हिनका तीन टाका मासिक स्टाइपेंड से हो भेटऽ लगलनि। ओही वर्ष पिताक संग दरभंगा अयलाह तँ दरभंगा आबि रोगग्रस्त भऽ गेलाह तैं गाम चल गेलाह। गाम आ दरभंगाक निरन्तर आबाजाही, बीच-बीच मे रोगक प्रकोप इत्यादि सँ हिनक अध्ययनक क्रमबद्धता स्थिर नहि भऽ पबैत छलनि। एहि क्रम मे दरभंगा मे विद्यालयक किरानी जटाघर झा सँ अंगरेजी भाषाक प्रारम्भिक पोथी फर्स्टबुक पढ़लनि तँ गाम मे लगमा वासी प० बच्चा झा सँ अमरकोष ओ लघुसिद्धान्त कौमुदी पढ़लनि।

1934 मे रोगग्रस्त भऽ गाममे छलाह तखने भूकम्प भेल आ हिनका सँ जेठ भाइ भवनाथक मृत्यु अठारहम वर्षक वयसमे भऽ गेलनि। छोट भाइ विन्ध्यनाथक सेहो देहान्त भऽ, गेल छलनि। एहि घटना सँ माता-पिता अत्यन्त शोकार्त भऽ गेलथिन। अतः प० मुक्तिनाथ मिश्र अपन कनिष्ठपुत्र बतहू कैँ अपनहि संग रखबाक निश्चय कयलनि।

परीक्षाक दृष्टिएँ पाठ पूर्ण नहि भेल छलनि, रोगाक्रान्त सेहो रहितहि छलाह, तथापि 1937 मे चन्द्रनाथ प्रथमा

परीक्षा मे बैसलाह आ उत्तीर्ण भेलाह। परन्तु अगिला वर्ष 1938 मे परीक्षाक समय मे पिताक संग हरद्वार चल गेलाह कुंभमे आ मध्यमा परीक्षा मे सम्मिलित नहि भऽ सकलाह। अग्रिम वर्ष 1939 मे प्रथम खण्ड, 4० मे द्वितीय आ 41 मे तृतीय खण्ड उत्तीर्ण भेलाह। 1944 मे पिता रमेश्वरलता संस्कृत विद्यालयक प्रधानाचार्यक पद सँ सेवानिवृत्त भऽगेलथिन। अतः किछु प्रतिकूल परिस्थितिक आयब स्वाभाविक छल। परन्तु 1945 मे व्याकरणक आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण होयबा धरि हिनका विद्यालय सँ तथा मैथिल महासभा दिस सँ नियमित छात्र वृत्ति भेटैत रहलनि। 1946 मे सांख्यक छात्र बनि गेलाह। सांख्यक अध्ययन तँ पूर्ण नहि कऽ सकलाह परन्तु 1946 मे साहित्यशास्त्रीक प्रथम खण्डक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह परन्तु अग्रिम वर्ष द्वितीय खण्डक परीक्षा मे बैसि नहि सकलाह। एकर कारण ई भेल जे ठीक परीक्षाक समयमे हिनक पिताक देहान्त भऽ गेलनि। तेँ आर्थिक संकटक परिस्थिति उत्पन्न भऽ गेलनि। एम्०एल० एकेडमी मे शिक्षक पद पर कार्य करैत 1953 मे प्राइवट सँ मैट्रिक परीक्षा से हो पास कयलनि।

विवाह ओ आजीविकाक अन्वेषण

हिनक विवाह छात्रावस्थहि मे 1941 मे बेलाग्राम निवासी पण्डित यदुवंश झाक कन्या हीरादेवी सँ भेलनि। पिताक सेवानिवृत्तिक पश्चात् भावी आर्थिक संकटक बोध होबऽ लागल छलनि संगहि परिवारक निर्वहण-भार हिनकहि उठाबक छलनि तकरहु उत्तरदायित्वक बोध छलनि। तेँ वृत्तिक अन्वेषण मे प्रयलशील रहऽ लगलाह। श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' स्वभावतः स्वाभिमानी रहलाह अछि आ स्वाभिमानक रक्षार्थ आर्थिक आत्मनिर्भरता अत्यन्त आवश्यक छल। से आयक स्रोतक अन्वेषण मे लागि गेलाह।

राज स्कूल मे तदर्थ अध्यापन

दरभंगाक राजहाइस्कूल मे संस्कृतक अध्यापक छलाह पण्डित रघुनाथझा। हुनका अपन पारिवारिक कार्य-सम्पादन हेतु दीर्घ अवधिक अवकाशक आवश्यकता छलनि, परन्तु विना स्थानापन्न शिक्षकक हुनका अवकाश भेटऽवला नहि छलनि। अत; रघुनाथ झा युवक चन्द्रनाथ मिश्र केँ अपना स्थान पर स्थापित कराय अवकाश लऽ गाम गेलाह। राज स्कूल मे यद्यपि ई किछुए समय कार्यरत रहलाह, मुदा प्रथम-प्रथम शिक्षक-रूप मे कार्य करबामे अत्यन्त प्रसन्नता भेल छलनि। एही अवधिमे हिनक कतिपय छात्र एहन छलथिन जे आगाँ साहित्य ओ समाज मे विशिष्ट स्थान प्राप्त कयलथिन। ताहि सबमे उल्लेखनीय छथि प्रसिद्ध चिकित्सक ओ मैथिलीक कथाकार डॉ० विश्वम्भर झा, कथाकार ललित, दिवानाथ मिश्र इत्यादि।

मुकुन्दी चौधरी हाइस्कूल मे नियुक्ति ओमुक्ति

राजस्कूलक सेवा-अवधि बड़ छोट छल। 1946 मे दरभंगाक मुकन्दी चौधरी हाइस्कूल मे संस्कृत शिक्षकक एक पद रिक्त भेल छल। ओहि पद पर चन्द्रनाथ मिश्रक नियुक्ति भेलनि। जुलाइ मास मे पद पर योगदान कयलनि। परन्तु ओहूठाम अढ़ाय मास सँ अधिक नहि रहि सकलाह आ त्यागपत्र दऽ मुक्त भऽ गेलाह। तकर कारण छलजे मिथिलाक केन्द्र दरभंगा मे विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु बहुत पूर्वहि सँ मांग होइत आबि रहल छल। 1946 मे मिथिलाक बुद्धिजीवी लोकनि मिथिला-विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु विशेष सक्रिय भऽ गेल छलाह। किछु विषयक वर्गक संचालन से हो आरम्भ कऽ देल गेल छल। भारतक प्रसिद्ध संस्था ओरियण्टल कान्फ्रेन्सक अधिवेशन ओही वर्ष नागपुर मे भऽ रहल छल। ओकर नियम छलैक जे ओकर अधिवेशन कोनो विश्वविद्यालये बजा सकैत छल। अतः प्रस्तावित मिथिला विश्वविद्यालय दिस सँ ओरियंटल कान्फ्रेन्सक अधिवेशनक आमन्त्रण देल जाय ओ तदर्थ दरभंगा सँ विद्वान लोकनिक एक डेलिगेशन नागपुर पठाओल जाय। ओहि डेलिगेशन मे म०म० डा उमेश मिश्र, प० रमानाथ झा, प०

ईशनाथ झा, प्रो० जयकान्त मिश्र ओ श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क चयन भेल। परन्तु भयंकर ज्वरसँ रुग्ण भऽ जयबाक कारणबश श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' नागपुर जयबा मे असमर्थ भऽ गेलाह। ओहि समय धरि चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली साहित्यक क्षेत्र मे अपन परिचिति स्थापित कऽ लेने छलाह। अत; श्री सुरेन्द्र झा सुमनक रिक्त स्थान पर हिनकहि नामक चयन भेल। ई मुकुन्दी चौधरी हाइस्कूलमे अवकाशक हेतु आवेदन कयलनि, परन्तु से अस्वीकृत भेला पर शिक्षक-पद सँ अविलम्ब त्यागपत्र दऽ नागपुर चल गेलाह। ओही डेलिगेशनक आमन्त्रण पर पश्चात् दरभंगा मे 1948 मे ओरियंटल कान्फ्रेन्सक विशाल आयोजन सम्भव भऽ सकल।

स्थायी आजीविका मैथिली अध्यापकक

चन्द्रनाथमिश्र केँ पुनः आजीविकाक समस्या घेरि लेलकनि। हिनक 'गुदगुदी' कविता-संग्रह प्रकाशित भऽ चुकल छलनि आ लोकप्रिय से हो भऽ चुकल छलनि। से गोटेक वर्ष धरि 'गुदगुदी' पोथीक विक्रय आर्थिक समस्याक किछु-किछु समाधान करैत रहलनि। 1947 मे एम्०एल्० एकेडेमी, लहेरियासरायमे मैथिली विषयक अध्यापनक हेतु एक अध्यापक-पदक स्वीकृति भेल छल। ओहि विद्यालयक प्रबन्ध-समिति मे छलाह पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र, पं० नागेश्वर मिश्र आ सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल (वकील) इत्यादि। ओ लोकनि हिनक साहित्यिक प्रतिभा सँ अत्यन्त प्रभावित छलाह। हुनक सभक सहमति सँ हिनक नियुक्ति एम्०एल० एकेडेमीक मैथिली अध्यापक पद पर कयल गेलनि। ताहि समय ई अ०भा० मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त मन्त्री छलाह। उच्चविद्यालय सबमे जतऽ मैथिलीक अध्यापन होइत छल, ततऽ मैथिली भाषी संस्कृत-पण्डित ई कार्य स्वेच्छा सँ करैत छलाह। दरभंगा जिलास्कूल मे पं० जीवनाथराय संस्कृतक अतिरिक्त मैथिली पढ़बैत रहलाह। परन्तु एम्०ल्० एकेडेमी मे सर्वप्रथम मैथिली विषयक अध्यापकक नियुक्ति भेल जाहि पद पर प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' 11 अगस्त 1947 केँ योगदान कयलनि। एहि पद पर निरन्तर साढ़े पैंतिस वर्ष धरि विद्यादान ओ मैथिली भाषा-साहित्यक विभिन्न उपादानक निर्माण करैत 31 मार्च 1983 मे सेवा निवृत्त भेलाह। सफल अध्यापक अनुशासन ओ प्रशासन क कड़ाइ सँ पालन कयनिहारक रूप मे विख्यात प्रधानाध्यापक श्री झिंगुर कुमर केँ जेना अपन मनोनुकूल सहायक शिक्षकक रूप मे भेटलथिन श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। से प्रधानाध्यापक महोदय हिनका 1948 मे विद्यालयक छात्रावासक अधीक्षक बनौलथिन। अधीक्षक-रूप मे ई छात्रावास केँ व्यवस्थित बनौलनि। अध्ययन, भोजन, विश्राम इत्यादिक सम्बन्ध मे पूर्ण अनुशासनक प्रवर्तन कयलनि। ओहि कालक एम्०एल्० एकेडेमीक छात्रावास मे रहनिहार अन्तेवासी लोकनि एखनहुँ ओहि कालक स्मृति केँ जोगौने छथि।

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' तँ छलाह मैथिलीक अध्यापक परन्तु हिन्दी ओ संस्कृत सेहो पढ़ावऽ पड़ैत छलनि। पढ़यबाक शैली ताहि रूपक जे छात्रक मानस-पटल पर विषय-वस्तु अनायासे खचित भऽ जाइत छल। एम्०एल्० एकेडेमी मे श्री अमरजीक अयलासँ अनायासे कवि-सम्मेलन, नाट्याभिनय एवं अन्यान्य सांस्कृतिक कार्यक्रम होमऽ लागल। ओहि सबमे छात्र लोकनिक अभिरुचि आ सहभागिता निरन्तर बढ़ैत गेल आ ओही छत्रच्छाया मे मैथिलीक प्रति छात्र लोकनिक जागरूकता बढ़ल। एम्०एल्० एकेडेमी मैथिलीक समर्पित कार्यकर्त्ता-निर्माणक एकटा अनिरूद्ध स्रोत बनि गेल श्री अमरजीक सहस्रो छात्र देशक विभिन्न भागमे, विभिन्न कार्यक्षेत्र मे रहैत मैथिलीक विकास मे योगदान कऽ रहल छथि।

वृत्ति-व्यत्ययक संभावना

अध्यापन-कालावधिमे श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' केँ बहुतो बेर द्वन्द्वात्मक परिस्थिति उत्पन्न होइत रहलनि। जेना कोनो दू गोट इस्पात-दण्ड टकराय तँ कोनो एक अथवा दूहूक टुटबाक संभावना रहैत छैक तेहन्ने सन। आ द्वन्द्व जँ परिणति पर पहुँचैत तँ श्री अमरक परवर्ती स्वरूप किछु भिन्न प्रकारक बनैत।

मिथिला-मिहिरक सम्पादक श्री सुरेन्द्र झा सुमन 1953 मे सी०एम्० कालेज मे मैथिलीक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह तँ सम्पादकक पदक परित्याग कउ देलनि। 1954 मे मिथिला-मिहिरक सम्पादकक पदक विज्ञापन बहरायल। श्रीचन्द्र नाथ मिश्र ओहि पदक हेतु आवेदन कयलनि। ओहि आवेदन पर विचार सेहो होमऽ लागल छल। परन्तु तकरा किछुमासकबाद मिथिला मिहिरक प्रकाशने बन्द भऽ गेल। ठीक ओही समयमे एम्०एल्० एकेडेमी मे श्री अमर जीक प्रशासनक संग तनाव बढ़ि गेलनि। विद्यालय छोड़ि देबाक मानसिकता भऽ गेलनि। ओहि कालमे जिला स्कूलक प्रधानाध्यापक छलाह प्रेमतोष रुद्र जे दरभंगा जिलाक शिक्षाधिकारी सेहो भेलाह। आ अमरजी सँ अत्यन्त प्रभावित रहथि। ओ अमर जी कैँ जिला-स्कूल लऽ जाय चाहैत छलाह। अमर जी एक तरहेँ स्वस्तियो दऽ देलथिन। एहि बातक आभास झिंगुर बाबूकेँ भेलनि। ओ गुणक पारखी छलाह, से कतबो रोष-तोष, होइतो ई सह्य नहि कऽ सकैत छलाह जे अमरजी सन व्यक्तित्व सँ हुनक स्कूल वंचित भऽ जाय। अतः ओ रूसल अमर जी कैँ जेना-तेना बौंसिलेलनि।

मिथिला-मिहिरक, संभावित सम्पादक

1960 इ० मे मिथिला-मिहिरक पुनः पटना सँ प्रकाशनक योजना बनल तँ ओकर पुरना फाइल बहार भेल। बूढ़ा गुरुजीक बालक अमरजीक सम्पादक-पदक हेतु आवेदन पूर्वहि सँ लागल छनि से सूचना महाराज कैँ देल गेल छलनि। तखन सुधांशु शेखर चौधरी सर्वथा वृत्तिहीन छलाह। अमर जी एकठाम जीविकापन्न छलाहे। अतः शेखर जी कैँ मिथिला मिहिरक सम्पादक पद पर नियुक्ति होइनि, अमर जी स्वयं अपन ई विचार सुमन जी, राजपण्डित बलदेव मिश्र ओ पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्रक समक्ष रखलनि। शेखरजीक नियुक्तिक रास्ता साफ भऽ गेलनि।

अमरजी एम्०एल्० एकेडेमीएमे रहि गेलाह।

राजनीतिक संभावना

1962 मे बिहार विधान-सभाक निर्वाचन होयबाक छल। दरभंगा जिला-जनसंघक प्रायः मंत्री छलाह सुन्दरलाल राजपाल। आ श्रीयुत सुमनजीक माध्यमसँ दरभंगा-नगर-विधानसभा क्षेत्रक प्रत्याशी बनि चुनाव लड़बाक लेल अमर जी कैँ पूर्णतः तैयार कऽ लेने छलाह। अमर जी अपन सहमति दऽ देलथिन परन्तु हिनका स्कूलसँ त्यागपत्र देबऽ पड़ितनि, अतः श्री सुमन जी स्वयं जनसंघ दिससँ उम्मेदवार बनलाह।

कन्यादान फिल्म मे

एकटा और घटना भेल 1964 मे। प्रो० हरिमोहन झाक प्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान' पर फिल्म बनयबाक तैयारी चलि रहल छल। ओहि फिल्ममे काज कयनिहार एकहु गोट अभिनेता मैथिली भाषी नहि छलाहा। हुनका लोकनि कैँ मैथिली संवादक प्रशिक्षण देबाक भार अमर जी कैँ देल गेलनि। फिल्म-निर्माण-क्रममे अमर जी कैँ बम्बइ जाय कतोक मास रहऽ पड़लनि। ओहि ठाम परिस्थिति एहन बनि गेल जे हिनका मैथिली संवादअनुवाद ओ प्रशिक्षणक संगहि लालककाक भूमिका से हो करऽ पड़लनि आ एहि रूप मे हुनका मैथिली फिल्मक पहिल मैथिली भाषी अभिनेता होयबाक श्रेय भेटलनि। परन्तु अपन विद्यालय मे ओहि हेतु संकट उपस्थित भऽ गेलनि। विद्यालय प्रबन्ध समिति बम्बइ-प्रवासक अवधि कैँ कोनहु प्रकारक अवकाश मानबाक विरुद्ध छल। सेवा खंडित अथवा समाप्त भऽ जयबाक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल। अमर जी अपनहुँ विद्यालय छोड़ि देबाक मन बना लेलनि। परन्तु पुनः प्रबन्ध समितिक सदस्य ओ अधिकारी लोकनि कैँ सद्विचार उत्पन्न भेलनि। विहित रूप सँ समाधान ताकि मामिला सोझराओल गेल। अमर जी फेर पूर्ववत विद्यालय मे रहि गेलाह। बादमे नैहर भेलमोर सासुर मैथिली फिल्म जकर दोसर नाम मेल 'ममता गाबयगीत' ओहूमे अपन सहयोग देलनि, मुदा भिन्न रूपमे।

जिला स्कूलक आग्रह

अमर जी जिला स्कूलमे जाय सरकारी सेवक बनि जैतथि तँ हुनक राजनीतिक व्यंग्यवाण भोथ भऽ जैतनि। सम्पादक बनलापर सम्पूर्ण पत्रकार बनि जैतथि तँ अपन सर्जन, संगठन-शक्ति ओ मैथिली माटिक आन्दोलन सँ दूर भऽ जैतथि। एलेक्शन लड़ि हारितथि वा जितितथि मुदा राजनीतिक क्षेत्रमे जाय फिट, अनफिट वा मिसफिट होइतथि से कहब कठिन। 'कन्यादान' फिल्म मे काजकरबाक विवादक कारणे विद्यालयक शिक्षक-पदसँ हटाओल जैतथि वा स्वयं पद-परित्याग करितथि, तँ फिल्ममे एकटा 'ब्रेक' भेटि गेल छलनि, तेँ फिल्मनगरीकेँ आश्रयण करितथि। परन्तु तखन हिनक एखन जे व्यक्तित्वक रूप बनि सकल, मैथिली भाषा ओ साहित्य केँ हिनका सँ अवदान रूप मे जे प्राप्त भऽ सकल, से प्रायः कथमपि नहि भऽ सकैत।

काव्य-प्रवृत्ति

काव्य-सृष्टिक आधार होइत अछि; प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास। प्रतिभा होइत अछि नित्य नवोन्मेपशालिनी, जे प्राक्तन संस्कार वशात् प्राप्त होइत अछि। प्रत्यह सहस्त्र गायत्रीक जप कयनिहार पिताक पुत्र श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' मे से छनि। बाल्यकाले मे भक्ति भावक गीत सब लयक संग गयबाक प्रवृत्ति छलनि। विशेषतः कवीश्वर चन्दाझाक नचारी ओ महेशवाणी गयबामे अभिरुचि छलनि। कवीश्वरक गीतक भनिता मे 'चन्द्र' पद देखि, अपन नाम-साम्य सँ जेना अपनहुँ पद-रचना करबाक सेहन्ता जाग्रत भेलनि। इहो किछु-किछु पद जोड़ऽ लगलाह। संगीतक प्रति सेहो रूझान भेलनि तँ मांगनि खवाससँ हरमुनियाँ बजायब सीखऽ लगलाह। ठेका, वंशी ओ पियानो बजायब सेहो सिखबाक प्रयास कयने छलाह। संगीतक प्रति रूझान हिनक गीत-रचनाक प्रवृत्ति मे विशेष सहायक भेलनि। पोद्दार रामावतार अरुणक एकटा काव्य-संग्रह पढ़बाक अवसर भेटलनि जे ओ पन्द्रह वर्षक वयस मे रचि कऽ प्रकाशित करौने छलाह। से देखि हिनकहु अपनामे आत्म विश्वास भेलनि जे हमहूँ एहि रूपक रचना कऽ सकैत छी। अतः इहो आठ पृष्ठक हिन्दी गीतक एक गोट संग्रह चन्द्रनाथ-पदावली' नाम सँ 1942 मे प्रकाशित करौलनि। विद्यालयमे छात्र लोकनिक मध्य समस्यापूर्तिक स्पर्द्धा चलैत छल जाहि मे इहो समस्या पूर्त्ति कयल करथि आ जे पद्य लिखथि तकर भनिता मे अथवा रचयिताक रूप मे 'चन्द्रनाथ' नामक प्रयोग कयल करथि। परन्तु ओहि समयमे एक गोट और संस्कृत विद्वान् छलाह चन्द्रनाथमिश्र जे कवियो छलाह। भ्रम उत्पन्न होयबाक स्थिति भऽ जाइत छल। हिनक मित्र मंडली मे एक गोट और कवि छलाह कामेश्वर झा 'कुसुम'। ओ अपनहि जकाँ हिनको नाममे 'अमल' उपनाम जोड़बाक विचार देल। आब ई कवि चन्द्रनाथ नहि अपितु कवि 'अमल' नामसँ अपन सहपाठी वर्ग मे जानल जाय लगलाह।

अदम्यकाव्य-सिसृक्षा

राज-दरभंगासँ साप्ताहिक पत्र मिथिला-मिहिरक नियमित प्रकाशन होइत छल जकर सम्पादक छलाह श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'। कविचन्द्रनाथ 'अमल' केँ सेहो स्पृहा छलनि जे हमरहु कविता पत्र-पत्रिका मे छपय। से सुमन जी बूढ़ा गुरुजीक कनिष्ठपुत्र चन्द्रनाथक एक गोट कविता 'मिथिला मिहिर' मे छापिदेलथिन। राज पंडित बलदेव मिश्र प० मुक्तिनाथ मिश्रक सम्बन्धेँ भातिज छलथिन आ हरिपुर विद्यालय सँ रमेश्वर लता विद्यालय मे संग-संग आयल सबसँ पुरान छात्रो। राजपण्डितक गरिमासँ मण्डित प० बलदेवमिश्र स्वाभाविक रूप सँ जेठ भाइ जकाँ चन्द्रनाथ मिश्र पर अभिभावकत्व रखैत छलथिन। हुनक भव्य व्यक्तित्वक समक्ष बहुत कमे व्यक्तिकेँ कल्ला अलगैत छलनि।

मिथिला-मिहिर मे हिनक एक गोट कविता, प्रायः पत्र-पत्रिका मे पहिले, प्रकाशित भेलनि। राजपण्डित बलदेवमिश्रक दृष्टिपथ पर ओ कविता अयलनि तँ ओ अग्निश्चवायुश्च भऽ गेलाह। ओ मिथिला-मिहिरक सम्पादक श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' पर तमसाइत कहलथिन जे-हिनक कविता नहि छपियनु। रजनी-सजनी मे लागि जयताह तँ पढ़नाइ-

लिखनाइ छूटि जयतनि। चन्द्रनाथ मिश्रकेँ ई बात बूझल नहि भेलनि। ओ अपने दोसर कविता मिथिला-मिहिर मे प्रकाशित करबाक लेल दऽ अयलथिन। मुदा सुमन जी ओकरा अपने लगमे रखने रहलाह आ बहुत दिन धरि टार-बहटार करैत रहलथिन। एहिसँ कवि चन्द्रनाथ क्षुब्ध भऽ गेलाह।

ओही समय मे पुस्तक भंडार, लहेरियासराय सँ 'बालक' नामक हिन्दी-बाल-मासिक पत्रिका बहराइत छल जे हिन्दी क्षेत्र मे बड़ प्रतिष्ठित मानल जाइत छल। ओकर सम्पादक छलाह ओहि कालक हिन्दी-मैथिलीक प्रतिष्ठित विद्वान-लेखक अच्युतानन्ददत्त। चन्द्रनाथमिश्र हुनका सँ भेट कऽ अपन कविता बालक मे प्रकाशनार्थ देलथिन। अच्युतानन्द दत्त ओ कविता अगिले अंक मे छापि देलथिन। से हो ओहि पृष्ठमे, जाहिमे कोनो प्रौढ़ लेखक रचना छपैत छल। चन्द्रनाथ मिश्र 'बालक'क ओ अंक लऽ कऽ सुमनजी कैँ जाय देखौलथिन एकटा अनुरोधक भाव सँ जे-अहाँ हमर कविता नहि छपलहुँ तैयो छपल की नहि! 'सुमन जी गुम्मे रहलाह।

सुमनजी अगिला अंक मे हिनक दोसर कविता पुनः छापि देलथिन। से देखि राजपण्डित जी पुनः सुमन जी कैँ अपन अप्रसन्नता देखौलथिन। सुमन जी हुनका कहलथिन जे-'एहि प्रतिभाक आवेग कैँ रोकल नहि जा सकैत अछि।'

ओ 'बालकमे छपल कविता कैँ देखबैत कहलथिन-'हम नहि छपबनि तँ अन्यत्र अपन रचना छपबाइए लेताह। अपने कतऽ कतऽ रोक लगयबनि। तेँ आब हिनका रोकल नहि जाइन।'

राजपण्डित जी तकरा पश्चात् हिनक काव्य-रचना मे बाधक नहि भेलथिन, प्रत्युत हिनक लोकप्रियता सँ आह्लादेक अनुभव करऽ लगलाह।

अमल सँ अमर

'अमल' सँ 'अमर' बनवाक घटना से हो हिनक कवि-जीवनक स्मरणीय हेतु बनि गेल अछि। प० मुक्तिनाथमिश्र प्रिन्सिपल पद सँ सेवानिवृत्त भेलाह तँ लोहना विद्यापीठक प्रिन्सिपल पं० त्रिलोकनाथ मिश्र रमेश्वरलता विद्यालयक प्रिन्सिपलक पदपर पदस्थापित भेलाह। हुनका संग लोहना विद्यालयक कतिपय छात्र सभ सेहो अयलाह। दरभंगाक विद्यालयक पुरना छात्र ओ नवागत छात्र मे वर्चस्वितास्थापनार्थ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या ओ द्वेष भाव चलऽ लागल। पुरना छात्रक नेतृत्व श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमल' करैत छलाह। हिनक निर्भीकता, मुखरता आ लोक प्रियताक़ समक्ष नवागत छात्र लोकनिक किछु चलि नहि पबैत छलनि। ओहि मे हिनक एक गोट मित्र कोटिक छात्र छलथिन। एकबेर अमलजी अपने अपन गाम खोजपुर चल गेल छलाह।

एही अवधि मे हिनक ओ सहपाठी हिनक आप्तबन्धु छीतन बाबूक नाम सँ सान्त्वनाक रूप मे ई शोक संवाद लिखि पठा देलथिन जे चन्द्रनाथ 'अमल' दिवंगत भऽ गेलाह। दरभंगा-स्थित परिवार, सर-सम्बन्धी, मित्र, हित-अपेक्षित शोक मग्न भऽ गेल। हाक्रोश पसरि गेल। ई जखन अयलाह, तँ जे देखनि तकरे अविश्वसनीय लगैक। ई दरभंगा ओ गाम जाय, अपन जीवित रहबाक प्रतीति कराय सबकेँ आश्वस्त कयलनि। ओही क्रम मे श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन' हिनक उपनाम 'अमल' कैँ बदलि 'अमर' कऽ देलथिन। एहि तरहेँ दिवंगत घोषित कवि 'अमल' सँ कवि 'अमर' क पुनर्जन्म भेल। एहि घटनाक वर्णन ई स्वयं 'मैत्री' शीर्षक कविता मे कयने छथि जे 'गुदगुदी' क प्रथम संस्करण मे संकलित अछि।

साहित्यमंच पर

1940 सँ 1947 क अवधि मे मैथिली मे मिथिला-मिहिरक अतिरिक्त आन कोनो पत्र-पत्रिका प्रकाशित नहि होइत छल। मैथिली लेखक गण कैँ, विशेषतः नव पीढ़ीक लेखक गण कैँ आत्म प्रकाशन ओ अपन परिचिति स्थापित

करबाक हेतु कोनो मंच नहि छल। क्वचित् कदाचित् साहित्यिक समारोह मे कवि सम्मेलनक आयोजन भेल करय। श्री अमर हास्यरसक काव्य-रचना विशेष करथि जे कविसम्मेलन मे खूब प्रशंसित भेल करय। अतः कविसम्मेलनक माध्यम सँ हिनक प्रसिद्धि चतुर्दिक पसरि गेलनि। 1946 मे हास्यरस सँ सराबोर चौदह गोट मैथिली कविताक संग्रह 'गुद्‌गुदी' नाम सँ छपलनि। ई पोथी मधुबनीक श्रीमहावीर प्रेस मे छपैत छल। ओही अवधि मे राजनगर मे 'मैथिल महासभा'क अधिवेशन छल। ओकर कवि सम्मेलन मे श्री अमरक काव्य पाठ भेलनि तँ लोक ओहि कविता सभक माङ करऽ लागल। ओही दिन प्रेस सँ 'गुद्‌गुदी' पोथी बहरायल छल जे लोक कैँ उपलब्ध कराओल जाय लागल। ओहि क्रममे दू सय पोथी हाथो-हाथ बिका गेल आ लोककैँ बोध भेलैकजे मैथिलीयोक पोथी रोचक भेला पर छोहक्का उड़ि सकैत छैक।

'गुद्‌गुदी' मे हास्यरसक मुखर प्रवाह अछि। परन्तु क्रमशः कवि मे व्यंग्यक तीक्ष्णताक समावेश होइत गेल। 1948 मे स्वदेश मे प्रकाशित 'युगचक्र' कविता कविहिक नहि अपितु मैथिलीक हास्य-व्यंग्यक क्षेत्र मे पूर्व सँ प्रतिष्ठित कविवर सीतारामझा ओ प्रो० हरिमोहन झाक श्रृंखलामे एकटा तेसर नाम सम्मिलित भऽ गेल श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

श्रीअमर अपना कैँ केवल हास्य-व्यंग्यक किंवा पद्य-रचनाहिक परिधि मे सीमिति नहि राखि ओकरा विस्तृत आयाम देलनि। एक दिस अपन काव्य में अनुभूतिशीलता, संवेदनात्मकता, वैचारिकता, प्राकृतिक सौन्दर्य कैँ अभिव्यंजित करऽ लगलाह तँ दोसर दिस मैथिली गद्यक विभिन्न विधा मे सेहो अपन लेखनी कैँ अग्रसर कयलनि। से ई प्रवृत्ति 'गुद्‌गुदी' क प्रथम प्रकाशन सँ पूर्वहि प्रादुर्भूत भऽ गेल छलनि। नवरत्न ग्रन्थमालाक प्रथम पुष्पक रूपमे प्रकाशित 'गुद्‌गुदी क आवरण पृष्ठ पर हिनक तीन गोट गद्य-रचनाक सूचना देल गेल अछि ——(1) चुटकी-हास्य रस सँ ओत प्रोत अमर कृत गल्प-संग्रह (ii) वीरकन्या-अमर कृत सामाजिक उपन्यास ओ (iii) विदागरी-अमर कृत सामाजिक उपन्यास। एहिमे 'वीरकन्या' ओं विदागरी 'उपन्यास प्रकाशित भेल। 'चुटकी' अत्यन्त लघुकथा वा मीनी-कथाक संकलन छल जकर किछु अंश पाक्षिक वैदेही मे 'गल्पक प्रपौत्र शीर्षक सँ छपल छल।

काव्य-क्षति

साहित्य स्त्रष्टाक हेतु सभ सँ पैघ सम्पत्ति होइत छनि हुनक कृति। धन-सम्पत्तिक विनाश वा चौर्य ओतेक दुखद वा पीड़ा-दायक नहि होइत छनि जतेक कोनो सर्जनात्मक कृतिक बिड़हा गेला पर होइत छनि। अमर जी कैँ दुइ बेर एहन स्थितिक भुक्तभोगी बनऽ पड़लनि।

अमरजी नीक कागतक पक्की जिल्द बन्हा कऽ एकटा बड़का आकारक कापी रखने छलाह जाहि मे आरम्भे सँ अपन रचित कविता सभ कैँ क्रम बद्ध रूपैँ लिखैत जाइत छलाह। ओहि मे मैथिली कविताक अतिरिक्त हिन्दी मे रचित गीत ओ कविता, उर्दूमे लिखल बहुतो शेर, रूबाई ओ गजल सब छलनि। ओहि मे सँ किछु कविता गुद्‌गुदी, युगचक्र ओ किछु हिन्दी-मैथिलीक पत्र पत्रिका मे प्रकाशित भऽ सकल छल। शेष कविसम्मेलनक मंच सभ पर तँ पढ़ल गेल छल मुदा छल अप्रकाशिते।

1954 इ० मे आरामे आयोजित शिक्षक सम्मेलन मे भाग लेबाक लेल अमर जी आ किसुन जी पटना मे रातुक गाड़ी पकड़लनि। बाट मे एक स्टेशन पर कोनो लुक्कड़ अमर जीक अटैची लऽ कऽ कूदि गेलनि। ई समाचार आर्यावर्त मे छपल छल जकर शीर्षकाशुद्धि 'अटाचा उड़ाला गया' केर चर्चा एखनो कयल करैत छथि। ओही अटैची मे अमर जी क हस्त लिखित कविताक संग्रह चल गेलनि। ओहि संग्रहक ओहने कविताक संकलन पुनः भऽ सकल जे कतहु मुद्रित भेल छल अथवा अपना स्मरण छलनि अथवा कवि-मित्र वा कविता-प्रेमीक स्मृति मे छल। बहुतो कविताक किछु चरण स्मृति पथ पर अबितो छलनि तँ ओकर पुनरवतरण तखने संभव होइत जँ प्रथम रचनाकालक मनः स्थिति मे जायब संभव भऽ सकैत।

अमर जी एक्टा दोसर कापी पोथी आकारक बनौलनि जाहि मे पुरना अप्रकाशित कविताक संगहि नव रचित कविता सब लीखि कऽ राखऽ लगलाह। कवि सम्मेलन मे यैह कापी संग लऽ जाथि। 1958 इ० मे मधुपजीक जन्म दिवस पर आश्विन पूर्णिमा कैं पंडौल मे कवि सम्मेलनक आयोजन छल। रामचरित्र पाण्डेय 'अणु' एकर संयोजक छलाह। कविसम्मेलन समाप्त भेला पर रातिए मे दरभंगा ओ निर्मली दिस गेनिहार कविलोकनि बैलगाड़ी सँ सकरी विदा भेलाह। बाट मे अमर जीक कविताक कापी ससरि कऽ खसि पड़लनि। दरभंगा मे आबि कविताक कापी हेड़यबाक अभिज्ञान भेलनि। अणुजी कैं एकर समाचार भेटलनि। ओ पंडौल हाट पर डिगडिगिया देऔलनि आ ओ कविताक कापी जकरा बाट मे भेटल छलैक से अणुजी लगमे सुरक्षित पहुँचा देलकनि। मुदा अगिला बेर एहन सौभाग्य नहि भऽ सकलनि।

तेसर बेर दुर्घटना भेल 1973 इ० मे पूर्णियामे। प्रायः विद्यापति पर्वक अवसर पर आयोजित कविसम्मेलन मे गेल छलाह ओतऽ हिनका लोकनिक आवास पर सँ दिनहिमे हिनक अटैची पार भऽ गेलनि जाहि मे हिनक कविताक कापी छलनि।

काव्य-क्षतिक सम्बन्ध मे ई अपने 'आशा-दिशाक भूमिका मे लिखने छथिः

'1973क जूनमे एक ठाम विद्यापति-पर्व मे सम्मिलित भेल छलहुँ। ओतय एक कृपालु श्रोता कैं हमर रचना बेसी प्रिय लगलनि। फलतः हजार टाकाक सम्पत्ति वला सूटकेश कैं छोड़ि सय-पचास टाकाक वस्तुवला हमर अटैची दिन-देखार आवास सँ चोरा कऽ लऽ गेलाह। ओहि मे मूल सम्पत्ति छल सम्पूर्ण कविताक कापी।'

'कविताक कापी हेड़यबाक ई दोसर घटना छल हमरा जीवन मे। पहिल बेर मे तँ शतावधि हिन्दी कविता ओ शतावधि उर्दू शेर सेहो संकलित छल। ओहि मे सँ किछुए रचना जे प्रकाशित छल से प्राप्त भऽ सकल, शेष सँ हाथ धोअऽ पड़ल। तेँ दोसर घटना बेसी चिन्तित कऽ देलक।'

एहि घटना सँ हिनक साहित्यिक क्षति तँ भेलनिएँ संगहि मैथिली साहित्यहुक कतोक अनमोल रत्न सदा सर्वदाक लेल विलुप्त भऽ गेल।

सम्पादन-प्रवृत्ति

छात्रावस्था मे विद्यालयक हस्तलिखित पत्रिका मे हिनक सक्रिय योगदान रहैत छल। बाद से ई क्रमशः पत्रकारिता सँ सेहो जुटैत गैलाह। आरम्भमे लहेरिया सराय सँ प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'पंचायती राज' सँ सम्पृक्त भेलाह। 195० मे पाक्षिक रूप मे आरब्ध 'वैदेही' पत्रिकाक प्रथम सम्पादक बनलाह। सम्पादक-रूपमे 'वैदेही' सँ सम्बन्ध कतोक बेर बनलनि आ टुटलनि। दोसर बेर 1954 मे वैदेहीक सम्पादन आरम्भ कयलनि। एहि खेपक हिनका द्वारा सम्पादित-प्रकाशित वैदेही मैथिलीक साहित्यिक पत्रिकाक एकटा मानक स्वरूप बनिगेल। एहि काल मे वैदेही मे प्रकाशित कतोक कविक अविस्मरणीय कविताक अतिरिक्त बहुशः गद्य रचना मैथिलीक मानक गद्य-रचनाक रूपमे विभिन्न संग्रह सबमे एखनहुँ घरि संकलित भऽ रहल अछि। 1954 हि मे लहेरियासरायसँ बाबू जानकी नन्दन सिंह द्वारा प्रकाशित 'निर्माण' साप्ताहिक सम्पादक बनलाह। निर्माण छल हिन्दीक पत्रिका। ई ओहि मे मिथिला मिहिरहिक सदृश मातृभाषा मैथिलीयो कैं स्थान दियौलनि। 1955 मे दरभंगा सँ प्रकाशित प्रथम मैथिली दैनिक 'स्वदेश' क सम्पादन-प्रबन्धन-वितरण मे तन-मन-धन सँ सम्बद्ध रहलाह। से 1983 मे जखन दोसर खेप दैनिक स्वदेशक प्रकाशन आरम्भ भेल तँ ताहूमे हिनक सक्रिय सहभागिता पूर्ववते रहलनि। 196० में 'इजोत' पत्रिकाक प्रकाशन मे हिनक महत्वपूर्ण योगदान रहलनि। 1964 मे पुनः वैदेहीक सम्पादक बनलाह आ प्रायः 1968 धरि सम्पादन करैत रहलाह। एहि खेप हिनक सम्पादन-सहयोगी रूप मे एहि पंक्तिक लेखक सेहो छलाह।

एहिसँ अतिरिक्त आनो कतोक पत्र-पत्रिकाक सम्पादन प्रकाशन मे हिनक महत्त्वपूर्ण योगदान रहलनि अछि। स्वसम्पादित ओ अन्यहु पत्र-पत्रिका सब मे निरन्तर हास्य व्यंग्यक स्तम्भ धर्मधकेलानन्द, बतहू मिसर ओ अन्यान्य छद्म

नाम सँ लिखैत रहलाह। ओहि सभक यदि संकलन तैयार कयल जाय तँ ओ कतोक खंड मे सम्भव भऽ सकत।

साहित्यिक संस्थाक संघटन-संचालन

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'कैं संगठन करबाक नैसर्गिक गुण विद्यमान रहलनि अछि। रमेश्वरलता संस्कृत विद्यालयक छात्र गणक नेतृत्व बराबरि करैत रहलाह। 1942 क राष्ट्रीय आन्दोलन मे छात्र-समुदाय कैं संग लय होस्टलक निकटवर्ती रेल लाइन पर जाय पटरी उखाड़बामे, तार तोड़बा मे अग्रणी भेल छलाह। विभिन्न दक्षिणपन्थी-वामपन्थी राजनीतिक दलक राजनीतिक सम्मेलन मे आनुषंगिक रूपें आयोजित कवि सम्मेलन मे निर्भीक-निस्संकोच भाग लैत रहलाह। गोटेक बेर प्रतिबन्धित राजनीतिक सम्मेलनक कविसम्मेलन मे काव्य पाठ करबाक कारणे अदालती कार्रवाइ मे से हो सानल गेलाह मुदा कोनो राजनीतिक दलक सदस्यता वा सक्रियता दिस कहियो उत्साहित नहि भेलाह। अवश्ये साहित्यिक, सांस्कृतिक ओ सामाजिक संस्था दिस निरन्तर रुझान रहलनि। ई अपने संघटन-शक्ति ओ नेतृत्व क्षमताक उपयोग साहित्य ओ मैथिली भाषा-साहित्यक संवर्द्धन मे एकान्त भाव सँ करैत रहलाह अछि।

नवरत्न गोष्ठी

छात्रावस्था मे एकटा संस्था बनौने छलाह नवरत्न कम्पनी। ओहिमे साहित्य, संगीत ओ कला मे अभिरुचि रखनिहार नवतूरक छात्र सब सदस्य रहैत छलाह जाहि मे नौ गोटे अत्यन्त सक्रिय छलाह। एकर क्रियाकलाप मे छल समय-समय पर भेनिहार बैसक सब मे नव-नव काव्य-रचनाक पाठ ओकर समालोचना तथा हस्तलिखित पत्रिकाक अंक-प्रस्तुति। यैह नवरत्न कम्पनी (एन्० आर० सी) पश्चात् नवरत्न गोष्ठीक रूप मे परिवर्त्तित भऽ गेल। एहि गोष्ठीक द्वारा बहुतो मैथिली पुस्तकक प्रकाशन होइत रहल अछि।

मैथिल महासभा

मैथिल महासभा एक समय मे अत्यन्त प्रमुख, जीवन्त ओ सक्रिय सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था छल। दरभंगा महाराज द्वारा संरक्षित-संपोषित एहि संस्थाक प्रत्येक वर्ष बड़े समारह पूर्वक अधिवेशन भेल करय। ओहि मे अमर जी अपन पिता प० मुक्तिनाथ मिश्रक संग गेल करथि। कवि रूप मे परिचिति स्थापित भेला पर अमर जी कैं मैथिल महासभाक अधिवेशन ओ ओकर कवि सम्मेलन मे आमन्त्रित भेनिहारक स्थायी सूची मे सम्मिलित कऽ लेल गेलनि। अतः महासभाक जे कोनो अधिवेशन होइत रहल ताहिमे अमर जी अवश्ये आहूत होइत रहलाह। एहने एकटा अधिवेशन 1959 मे अजमेर मे भेल छल जाहि मे बन्द भऽ गेल मिथिला मिहिर कैं पुनर्जीवित करबाक भूमिका प्रवासी मैथिल गणक सहयोग सँ तैयार कयलनि। ओकरहि परिणाम स्वरूप 1960 मे पटना सँ मिथिला मिहिरक पुनः प्रकाशन सम्पूर्ण रूपें मैथिली मे होअऽ लागल। आब मृत प्राय मैथिल महासभा कैं पुनर्जीवित करबामे लागल छथि।

मैथिली साहित्य परिषद्

मैथिली साहित्य परिषद् मैथिली भाषा-साहित्यक हेतु ऐतिहासिक महत्त्वक कार्य करैत रहल अछि। अमरजी परिषद्क क्रिया कलाप मे प्रायः 1946 सँ सक्रिय भेलाह। पहिने साधारण सदस्य, तखन सक्रिय सदस्य भेलाह। फेर विहित राशि प्रदान कऽ आजीवन सदस्य बनि गेलाह। 1948 मे 101=00 टाका परिषद् कैं दऽ संरक्षक सदस्य बनलाह। कार्यकारिणीक सदस्य, संयुक्त मन्त्री, प्रचार मन्त्री ओ प्रधान मन्त्रीक रूप मे परिषद सँ सम्बद्ध रहलाह, परिषद् कैं क्रियाशील एवं जीवन्त बनौने रहलाह। 1946 इ० वार्षिक अधिवेशन मे प्रो० परमाकान्त चौधरी प्रधान मन्त्री निर्वाचित भेलाह एवं प० शंकर मिश्र ओ श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' संयुक्त मन्त्री निर्वाचित भेलाह। मैथिली साहित्य परिषद् जकरा एहि अधिवेशन मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्' नामकरण कऽ देल गेल छलैक,

तकर नवीन कार्यकारिणीक स्वरूप कतोक व्यक्ति केँ पसिन्न नहि छलनि। ओ मिथिला-मिहिरक पारस्परिकी स्तम्भ मे मत व्यक्त कयलनि जे 'परिषद् आब डपोर शंख क पालाँ मे पड़ि गेल'। अपन मुखरताक लेल प्रसिद्ध अमरजी ओही स्तम्भ मे उत्तर देलथिन जे-ई तँ नीके भेल जे हड़ाशंखक पालाँ सँ परिषद् छूटि गेल एहि पर वेश प्रतिक्रिया भेल छल। बाबू भोला लाल दासक परिषद्क प्रधानमन्त्रीक पद सँ निवृत्त भेलाक पश्चात् परिषद्क क्रिया कलाप मे डॉ० सुभद्र झा विशेष सक्रिय रहैत छलाह। परन्तु उपर्युक्त अधिवेशन ओ डपोरशंख-हड़ाशंख विवादक अवधि मे विदेश चल गेल छलाह। विदेश सँ आपस अयला पर मिथिला-मिहिरक पारस्परिकी स्तम्भ देखाओल गेलनि। ओ एक दिन अमरजीक ओतऽ आबि अपन तामस व्यक्त करैत हिनक गट्टा पकड़ि युगचक्रक पैरोडीक रूप मे कहलथिन-

'भगिना मामा केँ ललकारि रहल अछि?'

अमरजी सुमनजीक प्रधानमन्त्रित्व काल मे प्रचार मन्त्री भेलाह। एहि अवधि मे मिथिला सँ बाहर कतोक स्थान मे मैथिली साहित्य परिषद्क शाखा स्थापित कराय परिषद् कार्य क्षेत्रे केँ व्यापक बनयबाक सफल प्रयास कयलनि।

1957 मे परिषद्क बहेड़ा अधिवेशन मे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' परिषद्क प्रधानमन्त्री निर्वाचित कयल गेलाह। ओही अधिवेशन में एहि पंक्तिक लेखक केँ संयुक्त मन्त्री निर्वाचित कयल गेल छल। 1957 सँ 1959 धरि प्रधानमन्त्रीक पदक उत्तरदायित्वक निर्वाह करैत अमरजी परिषद् केँ गतिशील बनौने रहलाह। हिनक प्रधान मन्त्रित्वक कालमे परिषद् अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य कयलक। सर्वाधिक काज ई भेल जे हिनकहि प्रधानमन्त्रित्व काल मे हिनकहि अथक प्रयत्न सँ दरभंगा नगरक दिग्घी पोखरिक पछबरिया मोहार पर सड़कक पछबारिपार मे सटले मैथिली साहित्य परिषद्क अपन भूमि अर्जित भऽ सकल जे एखनहुँ विद्यमान अछि। ओकरहि सन्निधि मे किछु और भूमि अर्जित कऽ ओहि पर परिषद्क अपन भव्य भवन बनयबाक एकटा महत्त्वाकांक्षी योजना छलनि, तदर्थ किछु सहृदय दाता सँ आश्वासनो प्राप्त कऽ लेने छलाह। परन्तु से पूर्ण करबामे बहुशः बाधकता भऽ गेलनि। हिनक प्रधानमन्त्रित्वक पश्चात् परिषद् क्रमशः शिथिले होइत चल गेल।

शिक्षक संघ

शिक्षक संघ सँ अमरजी सब दिन जुड़ल रहलाह। ओकर सांगठनिक क्रियाकलाप मे योग दान दैत रहलाह। जिला, राज्य एवं राष्ट्रिय स्तर सभक अधिवेशन मे सक्रिय रूप सँ सम्मिलित होइत रहलाह जतऽ हिनक कविताक संगहि हिनक विचारहु केँ गंभीरता पूर्वक सूनल ओ क्रियान्वित करबाक प्रयत्न कयल जाइत छल।

विद्यापति गोष्ठी

पाँचम-छठम दशक छल विगत शताब्दीक। एहि अवधि मे दरभंगा मे विद्यापति-गोष्ठी नामक साहित्यिक संस्था खूब क्रियाशील छल। मिथिला क्षेत्रक नवीन ओ पुरान पीढ़ीक साहित्यकार लोकनि सहभागी छलाह। ई संस्था साहित्य-सर्जन एवं ओकर प्रचार प्रसारक हेतु समर्पित छल। ई अपन नाम केँ सार्थकता प्रदान करबाक लेल, समाज मे महाकवि विद्यापतिक प्रति श्रद्धा ओ जागरुकता उत्पन्न करबाक लेल ने केवल शिक्षण-संस्थान, साहित्यिक संस्था, पुस्तकालय ओ ग्रामांचल मे विद्यापति स्मृतिपर्व मनयबाक उत्साह जगौलक अपितु विद्यापतिक जन्म भूमि विस्फी, सिद्धि भूमि भवानीपुर ओ समाधि भूमि बाजितपुर (विद्यापति नगर) क साहित्यिक यात्रा ओ ओतऽ विद्यापति-स्मृतिपर्वक आयोजन कऽ ओहि स्थल सभक ऐतिहासिक गरिमा प्रतिष्ठापित कयलक। एक तरहेँ 'विद्यापति सर्किट' क अवधारणा केँ साकार कयलक। ओहि विद्यापति गोष्ठीक अमरजी सर्वाधिक सक्रिय सदस्य ओ ऊर्जस्वल कार्यकर्ता छलाहे। पश्चात् 1951 मे गोष्ठीक प्रधानमन्त्रित्वक भार से हो हिनकहि पर दऽ देल गेलनि।

अमर जीक प्रधानमन्त्रित्व मे गोष्ठीक कार्यक्रममे विस्तार भेल। प्रत्येक मास नियमित रूप सँ विभिन्न स्थान पर चंक्रमण रीति सँ बैसक होमऽ लागल। एकर सदस्यता शुल्क छल प्रत्येक बैसक मे एकटा नवीन रचनाक पाठ करब। नवीन प्रतिभा केँ आगाँ आनि प्रोत्साहन ओ मार्ग दर्शन्न करब गोष्ठीक आवश्यक कर्त्तव्य बनि गेल। विद्यापति-गोष्ठीक मंच सँ उदित भेल कतेको नवीन प्रतिभा पश्चात् यशस्वी साहित्यकार क रूपमे प्रतिष्ठा अर्जित कयलनि। विद्यापति-गोष्ठीक मासिक बैसकक नियमित कार्यक्रम प्रायः 1965 धरि कोनहु ने कोनहु रूप मे चलैत रहल। अमरजीक प्रधानमन्त्रित्वकाल मे विद्यापति-गोष्ठी द्वारा अनेक पुस्तकक प्रकाशन कयल गेल अथवा प्रकाशन मे सहयोग मार्गदर्शन कयल गेल। अमर जी प्रधान मन्त्री पद पर रहैत ने केवल संस्था के जीवन्त ओ सक्रिय बनौने रहलाह अपितु 'विद्यापति के देश में' नामक एकटा एहन काव्य संकलन प्रकाशित करयबा मे सफल भेलाह जकर ऐतिहासिक महत्व अछि।

विद्यापति-गोष्ठीक आविर्भाव किएक आ कोना भेल तथा 'विद्यापति के देश में' केर की उद्देश्य ओ प्रयोजनीयता छल तकरहु विषयमे किछु स्पष्टीकरण अपेक्षित लगैत अछि।

दरभंगा मे - जनवरी, 1949 मे दरभंगा परिसरक हिन्दी-मैथिलीक कवि-लेखक गणक एक गोट संस्था स्थापित भेल 'विद्यापतिगोष्ठी'। एहि गोष्ठीक क्रिया-कलाप सँ दरभंगा सहित मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक परिवेश जीवन्त भऽ उठल। किछु समयक पश्चात् गोष्ठीक मन्त्रित्वक दायित्व श्री अमर जी पर अयलनि। एहि समय मे हिन्दी-मैथिलीक सम्बन्ध अत्यन्त द्वन्द्वात्मक छल। हिन्दीक तथाकथित समर्थक मैथिली केँ हिन्दीक बोली कहि कऽ अपमानित करबाक अवसर सँ चूकैत नहि छलाह तँ कट्टर मातृभाषा-मैथिली-प्रेमीगण राष्ट्रभाषा हिन्दीक विरोध करब अपन कर्त्तव्य बुझैत छलाह। अतः सौमनस्य उत्पन्न करबाक हेतु ओ मिथिलाक साहित्यिक प्रतिभा केँ उजागर करबाक उद्देश्य सँ एकटा एहन काव्य-संकलनक प्रकाशनक निश्चय भेल जाहि मे समस्त मिथिलाक नव-पुरान कविक ओ मिथिलाक घरती पर जनिक काव्य-प्रतिभाक विकास भेल तनिका लोकनिक हिन्दी-मैथिली मे रचित कविता संकलित कयल जाय। संकलनक नामकरण भेल विद्यापति के देश में'। सम्पादक मण्डल मे राखल गेलाह-आचार्य जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, पण्डित श्री सुरेन्द्र झा सुमन' ओ पण्डित श्री चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'। ई संग्रह वास्तव मे बीसम शताब्दीक पाँचम-छठम दशकक मिथिला ओ दरभंगाक साहित्यिक गतिशीलताक अमित अभिलेख बनि गेल अछि। एहि मे सतावन गोट कविक अठासी गोट कविता संकलित अछि। एहिमे छब्बिस गोट कविक एक-एक गोट मात्र हिन्दी कविता अछि, जखन कि एकतिस गोट कविक एक गोट हिन्दीक ओ एक गोट मैथिलीक कविता देल गेल अछि। मैथिली भागक शीर्षक अछि 'विद्यापतिक देश मे'। एहितरहेँ सहयोगीक रूप मे मैथिली कविक संख्या हिन्दीक अपेक्षा अधिक रहल।

एहि संकलनक प्रकाशन कविलोकनिक सहयोग-राशि सँ भेल छल तथापि अन्यत्रहु सँ सहयोग लेबऽ पड़ल छल। एहि ग्रन्थक निमित्त पत्राचार, राशिसंकलन, कविता-संकलन, सम्पादन, मुद्रण व्यवस्था, प्रूफ-संशोधन एवं विद्यापति-गोष्ठीक वृहत् अधिवेशन आयोजनक सकल दायित्वक निर्वहण अमर जी मात्र केँ करऽ पड़ल छलनि। एहितरहेँ अमर जी मिथिला ओ दरभंगाक साहित्यिक धुरी बनल रहलाह।

विद्यापति-गोष्ठीक क्रिया कलाप ओ 'विद्यापति के देश में' केर आयोजन-प्रकाशन सँ अमरजी ने केवल मैथिली-हिन्दीक तीव्र द्वन्द्व केँ शान्त करबा मे सफल भेलाह, अपितु इहो सिद्ध करबा मे कृतकार्य भेलाह जे विशुद्ध हिन्दी कवि-लेखक भनहि मैथिली केँ अवडेरने रहथु परन्तु मैथिलीक कवि-लेखक हिन्दीक प्रति कोनहु प्रकारक अवहेला-भाव बिना रखने, ओहू भाषा मे लीखि सकैत छथि आ लिखैत छथि।

विभिन्न संस्था सँ सम्बन्ध

ई अनेक राजकीय संस्थान सभक क्रिया-कलापमे सदस्यक रूपमे रहि अपन योगदान करैत रहलाह अछि। 1982

मे कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक सिनेटक सदस्य बनलाह। 1983 सँ 1992 धरि साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक मैथिली परामर्शी मण्डलक सदस्य रहलाह। 1988 मे मैथिली अकादेमी, पटनाक कार्य समितिक सदस्य बनलाह। 1993 मे आकाशवाणीक दरभंगा केन्द्रक कार्यक्रम-परामर्श दातृ-समितिक सदस्य बनलाह। बिहार सरकारक साहित्यकार-कलाकार कल्याण कोष समितिक से हो सदस्य छलाह।

दरभंगाक साहित्यिक संस्था संकल्प लोक, विद्यापति-सेवा संस्थान, ऋचालोक, संस्कार भारती इत्यादिक प्रेरणा-स्रोत ओ अभिभावक रूप मे मान्य छथिहे, दरभंगा सँ बाहरोक संस्थो सभ केँ संस्थापना-संचालन मे हिनक मार्गदर्शन भेटैत रहलैक अछि।

मैथिली आन्दोलनक न्युकिलयस- वास्तविकता ई अछि जे श्री अमरजी स्वयं एकटा संस्था बनल रहलाह अछि जनिका द्वारा मैथिली साहित्यक, मैथिली साहित्यकारक तथा मैथिलीक हेतु लड़निहार सैनिकक निर्माण ओ छोट-पैघ संस्था सभक निर्माण निरन्तर होइत रहल अछि। बीसम शताब्दीक तेसर सँ पाँचम दशक धरि दरभंगा नगर मे मैथिली भाषा-साहित्यक क्रिया-कलापक दुइ गोट केन्द्र सक्रिय छल लहेरिया सरायमे पुस्तक भण्डार ओ दरभंगा मे मिथिला-मिहिरक सम्पादक श्री सुरेन्द्रझा सुमनक आवास। परन्तु पाँचम दशकक मध्यमे रमेश्वरलता संस्कृत विद्यालयक छात्रावास मे आवासित एवं 1948 सँ लहेरिया सराय मे स्थायी रूप मे पद-स्थापित नव ऊर्जा उत्साह ओ नेतृत्व-क्षमता सँ आप्लावित श्री चन्द्रनाथमिश्र अमर तेसर केन्द्रक रूप मे मानल जाय लगलाह।

बाबू भोलालालदासक परिकल्पना छलनि जे विद्यालय, महाविद्यालयमे मैथिली भाषाक अध्यापन विधिवत् भेलासँ ने केवल जन-समाजमे जागरुकता बढ़त, अपितु मैथिलीक अधिकारक हेतु लड़निहार युवा पीढ़ीक जीवन्त सेना से हो ठाढ़ होयत। ओहि परिकल्पना केँ श्री अमरजी एम्०एल्० एकेडेमीक मैथिली अध्यापकक रूपमे साकार करैत रहलाह। ओही परिकल्पनाक अनुरूप चारि गोट और केन्द्र जाग्रत भेल–बहेड़ा मे प० कांशीकान्त मिश्र 'मधुप', सरिसब मे प० काञ्चीनाथ झा 'किरण', पण्डौल मे प० बच्चाठाकुर ओ सुपौल मे प० रामकृष्ण झा किसुन अपन अपन उच्च विद्यालय मे मैथिली छात्रक निर्माण मे सर्वात्मना लागल रहलाह। उपर्युक्त पाँचो महारथीक मध्य पारस्परिक समन्वय सँ हजारो-हजार छात्र मैथिली पढ़ि अपन-अपन कार्य क्षेत्र मे गेलो उत्तर मैथिलीक उत्थान मे योगदान देबऽ लगलाह आ औखन दऽ रहलाह अछि।

उपर्युल्लिखित महानुभाव सहित अन्यहुँ नव पुरान साहित्यकार लोकनि दरभंगा-लहेरिया सराय आबि अमर जी सँ विचार विमर्श कऽ मैथिलीक हेतु कार्य योजना तैयार कयल करथि। बीच बीच मे एहन-एहन साहित्यिक आयोजन भेल करय जाहि मे हुनका सबकेँ आमन्त्रित करबाक विचार-विमर्श हेतु अवसर प्राप्त करबाक चेष्टा अमर जी कयल करथि। एकरा अतिरिक्त पत्र द्वारा विचार, चिन्तन ओ कर्त्तव्यताक प्रसंग निरन्तर पारस्परिक आदान-प्रदान चलैत रहय। एहन वरिष्ठ, समवयस्क ओ कनिष्ठ साहित्यकारक हजारो पत्र हिनका अबैत रहलनि आ तकर समीचीन उत्तर दैत रहलथिन। उदाहरणार्थ एकटा पत्रक किछु अंश देखल जा सकैत अछि।

यात्री-पत्रावलीक एक पत्र

स्वतन्त्रता-प्राप्तिक दस दिन पश्चात् 25 अगस्त 1947 केँ दारा गंज, इलाहाबाद सँ छत्तिस वर्षक प्रौढ़-प्रतिष्ठित साहित्यकार (वैद्यनाथमिश्र) यात्री बाइस वर्षक युवक, रमेस्वरलता संस्कृत विद्यालयक छात्रावास मे निवास करैत श्रीअमर केँ लिखने छलथिन-

"————बाबू अमर, तों अपन मित्रमंडलीक समाचार अवश्य लिखैत रहिहैं, लिखल जाय, लिखब, लिखिहह, लिखि हें————एहू सँ बाढ़ि निकटताद्योतक एवं प्रियतम क्रियापदक कोनो कोटि जँ कहिओ हमरा भेटि गेल तँ तोरा आब सैह लिखबौक। सहाज नहि होउक तँ भङ घोटनाक हुराठ सँ हमर (अभाव मे फोटोक) थुथून सोझ कऽ दिहें।

श्रद्धेय श्री दुर्गाधर बाबूक एक पत्र आइ आएल अछि। 11अगस्तक लिखल थिकैन्ह। पन्द्रहे दिन मे किए पहुँचल? लगमे पोष्टकार्ड त अछि, लिफाफ नहि। से हुनका काल्हि वा परसू (चारिम दिन त अवश्ये) लिखबैन्हि, कहि दिहौन्हि।

भाषाक आधार पर सर्वत्र प्रान्त सभैक पृथक् निर्माण भेलैक अछि, अहू देश मे हेबे करतैक। मुदा हमरा लोकनिकैं एतन्निमित्त अधिकाधिक संघर्ष करैक पड़त। हिन्दी-भाषाभाषी लोकनिमे जे धनी व्यक्ति छथि ओ सभ पत्र-पत्रिकाक व्यवसायमे आब साहसपूर्वक अपन-अपन पैसा लगा रहलाह अछि मुदा अहाँक मिथिलामे क्यो दैनिक साप्ताहिक वा मासिक मैथिली-पत्रक हेतु टाका लगैबा ले उद्यत होइत छथि? खाली अहाँ लोकनि चिचिआइत ने रहू, जनिका हाथ मे शासन-सूत्र छैन्हि ओ लोकनि ई कहि कँ टारि देताह जे–दश-पांच ब्राह्मण हल्लामचा रहे हैं!! पहिने मिथिला विश्वविद्यालय भ लेत, मैथिली मे उच्च शिक्षाक पाठ्य ग्रन्थनिर्माण भ लेत, दश-पांच टा पत्र पत्रिकाक प्रसार भ जाएत तखन जा कँ शासक लोकनि कैं अहाँ हिलाडोला पैबैन्हि।''

एहन हजारो पत्र मे सँ जतबा नष्ट होयबा सँ बाँचिगेल अछि ताहू सबकैं जँ व्यवस्थित रूप मे संकलित ओ प्रकाशित कयल जाय तँ मिथिलाक सांस्कृतिक, साहित्यिक ओ मैथिली भाषा सम्बन्धी क्रिया कलाप ओ आनन्दोलनक नेपथ्य-कथा, ताहि मे श्री अमरक योगदान ओ स्थानक महत्त्वक आकलन भऽ सकत।

दैनिक स्वदेश

वास्तव मे हिनक व्यक्तित्वक सभ सँ पैघ विशेषता रहलनि अछि आत्मविश्वास, अपन संकल्पक हेतु प्रतिबद्धता, निश्चयक दृढ़ता आ मैथिली भाषा-ओ साहित्यक प्रति आत्मसमर्पण। गतशताब्दीक पाँचम-छठम दशक मे मैथिली मे दैनिक पत्रक प्रकाशनक नितान्त आवश्यकताक अनुभव कयल जा रहल छल। सुमन जी कैं अपन प्रेस आ सम्पादनक दीर्घ अनुभव छलनि। मुदा हुनका एकटा कर्मठ सहयोगीक अपेक्षा छलनि दैनिक बहार करबाक हेतु। अमर जी आगाँ बढ़लाह। 1955 क अगस्त-सितम्बरमे प० गिरीन्द्र मोहन मिश्रक आवास पर हुनकहि अध्यक्षता मे दैनिक पत्रक प्रकाशनक समस्या पर विचार करबाक लेल श्री अमर एकटा बैसकक आयोजन कयलनि। ओहि मे दरभंगा ओ दरभंगाक बाहरक प्रायः समस्त मैथिली साहित्यकार, विद्वान् ओ बुद्धिजीवी वर्ग प्रोफेसर, वकील, डाक्टर, पत्रकार सामाजिक कार्यकर्ता इत्यादि सम्मिलित भेलाह। सभक शंका एके गोट छल जे अर्थक व्यवस्था कोना होयत? डा० लक्ष्मण झा क आशंका छलनि जे कोनो पूजीपति एहि योजनाक पाछाँ अछि जकर नाम सुमनजी नहि खोलि रहल छथि। आनो कतोक गोटेक यैह आशय छलनि। किछु लोकक विचार छल जे महाराज साहेबक निकट एकटा शिष्टमण्डल जाय हुनका सँ मैथिली मे दैनिक पत्रक प्रकाशन हेतु निवेदन करय, परन्तु एहि प्रस्ताव पर बहुत उत्साह नहि देखल गेल। किछु विरोधोक स्वर उठल। अतन्तः प्रो० सुरेन्द्रनाथ झा (सी०एम्० कालेजक गणितक प्राध्यापक) एवं श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' स्थिति कैं स्पष्ट कयलनि जे मैथिली मे दैनिक 'स्वदेश' क प्रकाशनक योजना अछि जकर मुद्रण सुमन-जीक प्रेस मे होयत । सहयोगिताक आधार पर चलयबाक प्रयास होयत, हमरा लोकनि स्वयं अपन-अपन क्षेत्र मे पत्रक वितरण करब। एहि कार्य मे छात्र-समुदाय ओ मैथिली-प्रेमी लोकनिक सहयोग लेल जायत। इत्यादि।

ओहि बैसक मे कोनो निष्कर्ष तँ नहि बहरायल परन्तु नगर मे दैनिक स्वदेश चर्चाक विषय अवश्य बनि गेल। स्वदेशक प्रधान सम्पादक भेलाह श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' तथा सम्पादक मण्डल मे राखल गेलाह प्रो० धर्म प्रिय

लाल, प्रो० श्री कृष्ण मिश्र, कांचीनाथ झा 'किरण', प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ओ सूर्यकान्त ठाकुर। 1955 मे 9 अक्टूबर, आश्विन कृष्ण अष्टमी रवि कैँ एकर पहिल अंक प्रकाशित भेल। ई 27 दिसम्बर 1955 कैँ 65 म अंकक संग स्थगित भऽ गेल। यैह छल दैनिक स्वदेशक पहिल खेप। दोसर खेप 1983 मे प्रकाशित भेल।

अमर जी 'स्वदेश' क प्रति सर्वथा समर्पित रहलाह। स्वदेश जखन प्रकाशित होबऽ लागल तँ ई 'जयस्वदेश' क नारा चलौलनि आ स्वदेशक सहयोगी एवं पाठक सँ भेट भेला पर अभिवादनक हेतु 'प्रणाम' 'नमस्कार' क स्थान मे 'जयस्वदेश' कहबाक परिपाटी चलौलनि। एखनहुँ ओहि कालक स्वदेश प्रेमी सँ अमर जीक भेट भेला पर अभिवादन मे 'जय स्वदेश' प्रयुक्त कयल जाइत अछि।

स्वदेश गोष्ठी

दैनिक स्वदेशक प्रकाशनारम्भसँ दू-तीन सप्ताह पूर्व सँ दैनिक पत्रक हेतु समाचार-संकलन, सम्पादन, मुद्रण, वितरण इत्यादिक रिहर्सल चलऽ लागल। प्रतिदिन सायंकाल सुमनजीक कटहरबाड़ीवला निवास पर सम्पादक मण्डलक सदस्य, संवादी, सहयोगी लोकनि एकत्र भेल करथि जाहि मे सब व्यक्ति नियमित नहियो रहथि। परन्तु अमर जी कहियो व्यतिक्रम नहि होमऽ देथि। जाबत स्वदेश चलैत रहल ताबत एहि रूपक बैसाड़क नियमित रूपेँ चलब स्वाभाविके छल। परन्तु स्वदेशक स्थगित भैयो गेला पर सायंकालीन गोष्ठीक क्रम भंग नहि भेल से सुमन जी जखन अपन राजकुमारगंजवला नवीन आवास मे चल अयलाह, ततहु चलऽ लागल। एखन हुँ चलि रहल अछि। एहि मे अमर जी तखनहि अनुपस्थित रहैत छथि जखन नगर सँ बाहर गेल रहैत छथि; अन्यथा जाड़, गरमी, बरिसात सन केहनो परिस्थिति रहौ अमर जी ओतऽ पहुँचितहि छथि। यैह थिक स्वदेश-गोष्ठी। एहि मे बहुतो व्यक्ति अबैत रहलाह, जाइत रहलाह, नियमित रहलाह-अनियमित रहलाह, परन्तु अमरजी, विशेष परिस्थिति व्यतिरिक्त, नित्य उपस्थित रहितहि छथि।

तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु

सुमन-जयन्ती–संकल्प-निर्वाहक अनेक एहन घटना सब अछि जकर सम्बन्ध हिनक वैयक्तिक ओ पारिवारिक जीवन सँ छनि। परन्तु साहित्य-क्षेत्र मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनि गेल अछि मैथिली-साहित्य-मनीषी आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक प्रत्येक वर्ष जन्म-दिवसक अवसर पर साहित्यिक आयोजन करब।

श्री अमर जीक प्रयास सँ पहिलबेर जे जन्म-दिवस मनाओल गेल से एक तरहेँ अद्‌भुते कहल जा सकैत अछि। सुमनजी अपन जीवनक उनचासम वर्ष पूर्ण कऽ पचासम वर्ष मे प्रवेश करबा लेल छलाह। 1959 इ० मे आश्विन शुक्ल पंचमी कैँ हुनक पचासम जन्म-तिथि पड़ैत छलनि। विनम्र ओ संकोची स्वभावक सुमनजी अपन जन्म-दिवस मनयबाक सहमति कथमपि नहि दितऽथिन। अतः अमरजी हुनका विना उद्देश्यक जनतब देने साहित्यिक आयोजनक कार्यक्रम बनौलनि। दरभंगा, बहेड़ा, मधुबनी ओ अन्य स्थानक बुद्धिजीवी वर्ग, मैथिली प्रेमी ओ मैथिली-हिन्दीक कवि-लेखक गणकेँ सुमनजीक जन्म दिवस पर आयोजित साहित्यिक गोष्ठी मे सम्मिलित होयबाक निवेदन कयल गेलनि। आश्विन शुक्ल पंचमी कैँ मैथिल महासभाक बलभद्रपुर स्थित नवनिर्मित भवन मे सायंकाल ई गोष्ठी आरम्भ भेल। सुमनजी सेहो सोत्साह ओहि गोष्ठी मे उपस्थित भेलाह, यद्यपि ओ गोष्ठीक उद्देश्य सँ सर्वथा अनभिज्ञ छलाह। गोष्ठी मे आगत प्रत्येक जन सुमन जीक नामोच्चारण विना कयने, अन्य पुरुषक आदरार्थक सर्वनाम मात्रक प्रयोग करैत व्यंजना-वृत्तिक माध्यमे सुमन जीक प्रति अपन-अपन स्नेह, श्रद्धा, भक्ति ओ हुनक सेवाक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत गेलाह। अन्तमे प्रसिद्ध नृत्यविद् प० विश्वनाथ मिश्र 'साओन-भादव' पर आधृत अपन भाव-नृत्य प्रस्तुत कयलनि।

वक्ता लोकनिक उद्‌गार सँ सुमनजीकेँ क्रमशः गोष्ठीक लक्ष्यक किछु-किछु आभास होइत जाइत छलनि आ ओ पाछाँ घुसकैत जाइत छलाह। भाव-नृत्य सम्पन्न होइत-होइत ओ घुसकि कऽ हॉलक अग्नि कोण में सबसँ पाछाँ पहुँचि

गेल छलाह। ओहि अवसर पर विवशता मे अपन उद्गार व्यक्त करऽ पड़ल छलनि जाहिमे जेना साओन-भादव मे प्रतिपादित सकल काव्य रस समाहित छले, संगहि एक गोट अभिनव रसक प्रतिपादन से हो कयलनि।

अवश्ये सुमनजीक जन्म-दिवसक ओ पहिल आयोजन हुनक एकान्त साधनाक रुचि, स्तुति-निन्दा सँ उदासीन रहबाक प्रवृत्ति, संकोची प्रकृति, विनम्र स्वभावक विपरीत छलनि, तथापि श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' हुनक जन्म-दिवस प्रत्येक वर्ष मनबैत रहबाक जे संकल्प लेलनि से अब्याहत रूप सँ चलि रहल अछि। बीसम शताब्दीक अन्तिम वर्ष धरि सुमन जीक जन्म-दिवसक अवसर पर बेयालिस बेर आयोजन भेल अछि जाहिमे हुनक संवर्द्धना, जीवन ओ कृतिक चर्चाक संग हुनक दीर्घ जीवनक कामना कयल जाइत रहल अछि। एकर श्रेय अमरजी मात्र केँ छनि जे दृढ़ संकल्पक विना संभव नहि होइत।

यथा सुमन तथा मधुप

सुमनजीक प्रति जतेक श्रद्धा-भक्ति हिनका हृदयमे छनि ततबे श्रद्धाभक्ति कविचूड़ामणि काशीकान्तमिश्र 'मधुप' क प्रति से हो। मधुपो जी केँ हिनका प्रति अजस्र स्नेह, वात्सल्य ओ विश्वास रहैत छलनि। कोनो साहित्यिक कार्यक्रम ओ कविसम्मेलन मे जयबाक आग्रह होइत छलनि तँ ओ कहैत छलथिन-'जँ अमरजी चलताह तँ हमहूँ चलब।' मधुपजीक अनेको पोथीक प्रकाशन अमर जीक प्रयत्ने सम्भव भऽ सकल। 'राधा-विरह' महाकाव्य मधुप जीक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति मानल जाइत छनि, जकरा साहित्य अकादेमी-पुरस्कार से हो प्रदान कयल गेल। ई पोथी कोना प्रकाशित भऽ सकल ताहि हेतु अमर जी प्रयत्नशील भेलाह। लहेरियासरायक नवभारत प्रेस मे मुद्रण आरम्भ भेल। मधुपजी स्वयं तँ बहेड़ामे रहैत छलाह। अमरजी दरभंगा मे। अतः 'राधाविरह' क हेतु कागत प्रेसकेँ पहुँचायब, प्रेससँ नित्य प्रूफ आनि पढ़ि प्रेसकेँ पहुँचायब, जिल्द-बन्हाइक व्यवस्था इत्यादिक दायित्व निर्वाह अमरजी करैत रहलाह। 1954 मे मधुप जी केँ 'त्रिवेणी' नामक काव्य संग्रहक 'पाण्डुलिपि' पर केन्द्रीय सरकार शिक्षा मन्त्रणालयक पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि। कोनो मैथिली लेखक केँ सरकार दिससँ प्रदत्त ई प्रथम पुरस्कार छल। अमरजी प्रयत्न कऽ कऽ 'त्रिवेणी' क मुद्रण करबौलनि। ओहि समयमे ई 'निर्माण' साप्ताहिक क सम्पादक छलाह। से मधुपजी पर केन्द्रित 'निर्माण' क एकटा विशेषांक 'मधुप विशेषांक' प्रकाशित करौलनि जे मैथिली मे कोनो लेखक-विशेष पर प्रकाशित प्रथम विशेषांक थिक। सुमन जन्म-दिवस सदृश ई मधुपोजीक जयन्तीक आयोजन प्रति वर्ष करैत रहलाह। विभिन्न स्थानक विभिन्न साहित्यिक संस्था केँ प्रेरणा दऽ कऽ ई आयोजन होइत रहल। मधुपजीक देहावसानक पश्चात् ई निश्चय कयलनि जे आब हुनक जयन्ती नहि, प्रत्युत पुण्य दिवस मनाओल जाय। से एखनो हुनक गाम कोर्थु ओ अन्य स्थान पर पूस कृष्ण अमावस्या केँ पुण्य दिवस मनयबाक परिपाटी चलि रहल अछि।

अज्ञातक कृति

पुरान विस्मृत साहित्यकार अथवा नवीन अपरिचित लेखकक कृति केँ प्रकाशनक युक्ति धराय, मुद्रणक व्यवस्थाक भार अपना पर लय प्रकाश मे अनबाक सांस्थानिक कार्य अमर जी जीवन भरि करैत रहलाह अछि। प० बबुआजीझा 'अज्ञात' पुरान पीढ़ीक एकटा निविष्ट परन्तु विस्मृत कवि छलाह। हुनक रुक्मिणी-स्वयंवर महाकाव्यकेँ ई स्वयं सम्मार्जिते नहि कयल अपितु हिनकहि प्रयत्न ओ प्रबल अनुशंसाक आधार पर ओ मैथिली अकादेमी सँ प्रकाशितो भऽ सकल। हुनकहि दोसर महाकाव्य 'प्रतिज्ञा पाण्डव' मूलतः विशाल चम्पू काव्य छल। पहिल कृतिक प्रकाशन सँ उत्साहित भऽ अज्ञात जी अपन चम्पूकाव्यक पाण्डुलिपि अमरजीकेँ पढ़बाक लेल देलथिन। अमरजी ओ पाण्डुलिपि आद्यन्त पढ़ि विचार देलथिन जे ओहिमे गद्यभाग रहने ओकर आकार वृहत् भऽ जायत जकर मुद्रण अति

व्यय-साध्य भऽ जायत तें अन्तर्वर्त्ती गद्य कैं पद्यबद्ध कऽ देल जाय। अज्ञात जी तदनुरूपें संशोधन कऽ ओकरा पूर्णत; छन्दोबद्ध महाकाव्य-रूप प्रदान कयल जे हुनक मृत्यु सँ किछु समय पूर्व 'प्रतिज्ञा पाण्डव' महाकाव्यक रूप मे प्रकाशित भेल। कहबाक प्रयोजन नहि जे अज्ञात जीक दुनू कृति मैथिलीक गौरव-ग्रन्थक रूपमे प्रतिष्ठित अछि।

चाणक्यक उद्धार

एहू सँ महत्त्वपूर्ण अछि 'चाणक्य' महाकाव्य। मैथिली साहित्यक क्लासिक्सक रूपमे प्रख्यात एकटा सर्वथा अज्ञात कवि दीनानाथ पाठक 'बन्धु'क द्वारा रचित 'चाणक्य' महाकाव्य कैं प्रकाश मे अनबाक समस्त श्रेय श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कैं छनि। 1961 क दिसम्बर मासक प्रसिद्ध शीतलहरीक एक गोट राति मे एकटा सामान्य वेश-भूषाक व्यक्ति भेट करबाक लेल अयलथिन। ओ छलाह ओहि समयक मुंगेर जिलाक दुनही ग्राम निवासी, मिडिल स्कूलक शिक्षक दीनानाथ पाठक बन्धु। अमरजीसँ साक्षात् परिचय नहियो रहैत अपन परिचय दैत अयबाक उद्देश्य कहलथिन-सुनलहुँ जे अपने मातृभाषाक एकान्त सेवी छी तें हम चल अचलहुँ अपनेक दर्शनार्थ। हमहूँ टूटल फूटल शब्द मे एक ऐतिहासिक पुरुष पर एकटा काव्य लिखलहुँ अछि। अपने जखन समय दी, विछु अंश अपने कैं सुनाबी। जँ काजक होइक तँ ओकरा प्रकाश मे अनबाक युक्ति धरा देल जाय, नहि जँ प्रकाशित करबाक योग्य नहि होइक तँ निरर्थक ई राखि कोन फल?'

महाकाव्य सुनबाक निमन्त्रण सँ पहिने तँ अमर जी घबड़यलाइ। परन्तु दू-चारि गोट बानगीक पद्य सूनि ओहि काव्य मे निहित ओज गुण, उद्दाम राष्ट्रीय भावना, कल्पना, भाव, भाषा आ छन्द सँ अत्यन्त प्रभावित भेलाह। ई स्थिर चित्त सँ समग्र महाकाव्यक पाण्डुलिपि पढ़ि देबाक आश्वासन दऽ पाणुडुलिपि राखि जयबाक आग्रह कयलथिन।

बन्धु जी एहि विश्वासक संग अपन काव्यक पाण्डुलिपि अमरजीक लग राखि गेलाह जे-हम जाहि जनपद एवं परिवार मे जन्म लेने छी ओ जनपद एकर महत्त्व बूझि पाओत अथवा नहि आ ओ परिवार निकट भविष्य मे ताहि योग्य नहि भऽ पाओत जे एकर प्रकाशन कऽ सकय, किन्तु एहि ठाम रहला उत्तर निश्चित रूपें कहिओ ने कहिओ शुभ क्षण आबि सकैत छैक जखन ई मातृभाषा प्रेमी लोकनिक दृष्टिपथ पर आबि जयतनि।

एहि घटनाक दुइ वर्षक अम्यन्तरे कैन्सर रोग सँ बन्धुजीक असमयमे देहान्त भऽ गेलनि। बन्धुजीक मृत्यु-संवाद सँ मर्माहत अमर जी हुनक कृति कैं प्रकाशित करबायब अपन परम कर्त्तव्य बुझलनि। ई ओहि पाण्डुलिपि कैं परिमार्जित कऽ प्रकाशन योग्य बनौलनि। ओहि समयमे ई वैदेही क प्रधान सम्पादक छल्लाह। अतः वैदेहीक महाकाव्य-विशेषांक रूप मे 1965 इ० क जुलाइ-सितम्बर मे चाणक्य महाकाव्य नामसँ प्रकाशित करौलनि। पुनः मिथिला-प्रकाशन, लहेरियासराय संस्थापक स्व० सूर्यनारायण झा सँ आग्रह कऽ स्वतन्त्र ग्रन्थाकार से हो प्रकाशित करबौलनि ओ मैथिली-संसार एहि महान् कृतिक उपलब्धिक सुअवसर पाबि सकल। ई दोसर बात जे सर्वगुण सम्पन्न 'चाणक्य' महाकाव्य कैं एकटा दछिनाहा जयबारक कृति बूझि साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ वंचित कयल गेल।

किछु देखलः किछु सूनल

प० गिरीन्द्र मोहन मिश्र अपन चरम वयस मे अपन दीर्घ जीवनक बहुआयामी अनुभव कैं आत्म-संस्मरण क रूप मे ग्रथित कयलनि। स्वयं लिखबामे खूब समर्थ नहि रहि गेल छलाह। अतः प० उपेन्द्रझा 'विमल' श्रुति-लेखनक भार गछलथिन। प० मिश्र बाजल करथि आ विमल जी ओकरा लिखने जाथि। एहि रूपें ग्रन्थ तैयार भेल 'किछु देखल किछु सुनल'। आब ओकर वाचन कऽ पुनरुक्ति इत्यादि त्रुटिक सम्मार्जन पूर्वक मुद्रणक व्यवस्था करबाक छल। प० गिरीन्द्र मोहन मिश्र कैं बूढ़ा गुरुजीक बालक श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क प्रति पुत्रवत् वात्सल्य ओ हुनक प्रतिभाक प्रति अत्यन्त विश्वास छलनि। ओ अमरजीकैं बजाय कहलथिन जे हमरा इच्छा छल जे सुमन जी कैं एहि पोथीक सम्पादन-

मुद्रणक भार दियनि। मुदा हमरा लेल भनहि ओ बड़ छोट वयसक होथि मुदा अपना बयसें तँ भेलाह ओहो बूढ़े। रहितो छथि बड़ व्यस्त। दोसर क्यौ देखबा मे नहि अबैत छथि तेँ अहाँ एहि पोथीक प्रकाशनक भार ली।

अमर जी ओहि पोथीक वाचन कऽ जतऽ जे परिवर्त्तन क सुझाव देलथिन तकरा मिश्रजी अनुमोदित कयलथिन पोथीक नामक सम्बन्ध मे सुझाव देलथिन जे 'किछु देखल-सुनल' मे एकटा और 'किछु' जोड़ि देला सँ शीर्षक मे लयात्मकता ओ अर्थ व्यंजकता बढ़ि जयतैक। मिश्र जी खूब गहन चिन्तनक पश्चात् 'किछु देखल किछु सुनल' नाम कैं अनुमोदित कऽ देलथिन। नवभारत प्रेस, लहेरिया सराय मे पोथी मुद्रित होमऽ लागल। अमर जी ओहि पोथीक प्रूफ-संशोधन ओ मुद्रणक समस्त आनुषंगिक व्यवस्था स्वयं कऽ, कार्य कैं पूर्ण कयलनि। आगाँ, एहिपोथी कैं साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान कयल गेल।

शेखर कैं सहयोग

प्रसंग शेखरजीक हिन्दी नाटक 'तमासा' क। शेखरजी अर्थात् सुधांशु 'शेखर' चौधरी ओहि समय मे कोनो नियत आय-स्त्रोत सँ रहित विशुद्ध कलमजीवी छलाह। अर्थक स्त्रोत छलनि शब्द-कौशल। अमर जी कैं शेखर जी सँ घनिष्ठ मैत्री भाव छलनि, तेँ शेखर जीक आर्थिक संकटक प्रति विशेष सचिन्त रहैत छलाह। शेखरजी हिन्दी मे एकटा नाटक लिखने छलाह 'तमासा. ओहि अप्रकाशित नाटकक सर्व प्रथम मंचन अमरजीक निर्देशन मे एम्०एल्० एकेडेमी मे सरस्वती पूजाक अवसर पर भेल जहिमे एहि पंक्तिक लेखक 'मनोहर' नामक पात्रक भूमिका कयने छल। नाटक ततेक सफल भेल जे नगरहु मे कतोक ठाम एवं लग-पासक गाम सब मे पाण्डुलिपिएक आधार पर सफल मंचन होमऽ लागल। सफलताक एहि भूमिकाक विवरण दैत अमर जी पेपर-हाउस आ मिथिला-प्रकाशनक संस्थापक सूर्यनारायण झा कैं 'तमासा' नाटक प्रकाशित करबाक विचार देलथिन। 'तमासा' प्रकाशित भेल ओ अभिनयक हेतु उत्साही युवावृन्द मे लोकप्रिय सेहो भेल।

सूर्य नारायण झा छलाह सहृदय ओ साहित्यकारक प्रति सम्मान भाव रखनिहार। व्यवसायोक दृष्टि सँ अमर जीक परामर्श उपयोगी सिद्ध भेलनि। अतः ओही परामर्शक अनुरूप शेखर जीक दुइगोट और हिन्दी पोथी प्रकाशित करौलनि जाहि सँ शेखर जी कैं आर्थिक सहयोग भेटलनि।

अमर जीक वैयक्तिक प्रयत्न ओ श्रम सँ प्रकाशित एहि प्रकारक पुस्तक सभक जँ सूची बनाओल जाय तँ ओवेश दीर्घ भऽ जायत ताहि मे सन्देह नहि।

कवि विन्देश्वर

खगल साहित्यकार कैं कोन रूपें अमर जी सहायता करैत रहलाह तकर एकटा ज्वलन्त उदाहरण कवि विन्देश्वर छथि। मिश्रटोला निवासी शांकल द्वीपी कुलोद्भव विन्देश्वर मिश्र कौलिकतया वैद्य छलाह आ छलाह निरक्षर। किन्तु हुनका मे जन्मजात काव्य-प्रतिभा छलनि। आजीविकाक आधार मात्र छलनि आयुर्वेदिक चुटुक्काक छोट-छोट पुड़ियाक घूमि-घूमि कऽ विक्रय। तेँ आर्थिक विपन्नता सतत काल रहितहि छलनि। अमर जी समय-समय पर आर्थिक सहायता दैते छलथिन संगहि हुनका कवि सम्मेलनोक मंच पर जयबामे सहयोग दैत छलथिन जाहि सँ हुनका किछु आर्थिक लाभ भऽ जाइन। विन्देश्वर अपन मानस पटल पर काव्य-रचना करैत छलाह आ कविता पूर्ण भेला पर कोनो साक्षर व्यक्ति कैं कहि लिपिवद्ध करबबैत छलाह। से अमर जी विन्देश्वरक कतोक कविता कैं लिपिबद्ध कयने होयताह। 'विद्यापति के देश मे' संकलन हेतु विन्देश्वर एकटा कविता लिखबौलथिन अमरजीकैं। ओहि कविता मे चरणक संख्या विषम छलैक, एक चरणक अभाव। अमर जी ओहि मे एक चरण जोड़ि पूरा कऽ देलथिन। पाछाँ विन्देश्वर ओहि कविता कैं दोसर सँ पढ़बौलनि

तँ एकटा चरण अपन नहि बूझि पड़लनि तँ आबि कऽ अमरजीसँ झगड़ा करऽ लगलथिन-'अमर! तुम हमारा कविता मे एकठो पाँती काहे जोड़ दिये हो?' अमरजी हँसैत कहलथिन-कविता लिखाबऽ काल मे तों खूब भाङ पीने छलह तें अपन पाँती नहि मोन छह। ओ तोरे पाँती थिकह। जे बजलह से लीखि देलियह। हम किएक जोड़बह?

- ओ! सो बात है।' विन्देश्वर सन्तुष्ट भऽ गेलाह।

विन्देश्वरक छोट-छोट काव्य-पोथीक मुद्रणमे सहयोग दैत छलाह तथा अपन एवं अपन मित्र लोकनिक विद्यालय मे विन्देश्वरक द्वारा कविता-पाठ करबा पोथी बेचबा दैत छलथिन।

विन्देश्वर जखन स्वर्गीय भऽ गेलाह तँ अमर जी स्वयं हुनक संस्कार तथा श्राद्ध कर्मक लेल बेहड़ी माङि अर्थ-संचय कयने छलाह। हुनक मृत्युक पश्चात् हुनक विधवा पत्नीक खोज-खबरि लेबामे विस्मरण नहि भेलनि।

बन्धु-भाव

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क बन्धुत्वक भाव अत्यन्त गम्भीर ओ उदात्त रहलनि अछि। परिवारक सदस्य गण, सम्बधी वर्ग, सखा सहयोगी समुदाय ओ साहित्यिक मित्र लोकनिक बेर-बेगर्त्ता पर मन, तन आ यथाशक्ति अर्थ सँ सहायता अत्यन्त सहज भाव सँ करैत रहब हिनक स्वभावक अनिवार्य तत्त्व रहलनि अछि। कतोक मित्रक स्वर्गवासी भेलो उत्तर हुनक सन्तानक प्रति ओहने भाव-व्यवहार रखैत रहलाह अछि जेना अपना सन्तानक प्रति लोक कैं भेल करैत छैक।

श्रद्धा, सद्भाव, सहृदयता ओ उदारताक पात्रलोकनि मे कतोक विद्यमान छथि तँ बहुतो दिवंगत भऽ गेलाह परन्तु हिनक भाव मे कोनो परिवर्त्तन नहि भेलनि अछि।

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा सुमनक प्रति जे श्रद्धा भाव रहलनि अछि तकर द्योतक अछि नित्यप्रति हुनक सान्निध्य मे जायब ओ प्रत्येक वर्ष हुनक जन्म दिवसक आयोजन। हुनक जन्मदिन आश्विन शुक्ल पंचमी कैं हुनका निमित्त दुर्गा सप्तशतीक एक आवृत्ति पाठ फराक सँ करैत छथि। मधुपजीक प्रति सेहो एहने भाव छलनि। हिनक अत्यन्त प्रिय बालसखा छलथिन रमेश्वरलता विद्यालयक सामवेदक अध्यापक देवेन्द्रनाथ झा तथा छीतन बाबू, साहित्य-बन्धु छलथिन रामकृष्ण झा किसुन। ई सब दिवंगत भऽ गेलथिन। अतः आब अमर जी नित्यकृत्य मे जे तर्पण करैत छथि तँ पितृकुल ओ मातृकुलक तर्पणक पश्चात् मधुपजी, देवेन्द्र बाबू, छीतन बाबू, किसुनजी इत्यादि कैं नामोच्चारण पूर्वक सेहो तर्पण करैत छथि। ई नहि जे 'अबान्धवाः बान्धवा वा' मे सब कैं समाहित कऽ वस्त्रनिष्पीडित जल सँ तृप्त कऽ देल जाय। बन्धुवर्ग कैं एहि रूपें स्मरण कयनिहार बड़ विरल व्यक्ति भेटताह।

सम्बन्ध-अनुबन्ध

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क पैतृक, मातृक ओ अपन सम्बन्धक जे परिधि रहलनि अछि तकरा निरन्तर चिर नवीन बनौने रहलाह अछि। देयादक कोटि मे अयनिहार हरिपुर निवासी राजपण्डित बलदेव मिश्र, पं० कमलाकान्त मिश्र सँ सोदरवत् सम्बन्ध रहलनि। पितृमातृक सागर पुर सँ एखनहु नोत-पाता चलैत छनि। पिताक बहिनोइ म०म० जयदेव मिश्र कैं खोजपुर वाली पत्नी सँ कोनो सन्तान नहियो अछैत" पुत्र-पौत्रादि सँ पारिवारिक सम्बन्ध चलिए रहल छनि। हिनक माय चारि बहीन छलथिन। अन्य बहीनमे एकटा लोहा, दोसर चपाही ओ तेसर घोघरडीहा मे। तीनू ठामक मसियौत लोकनि सँ सोदरत्वक व्यवहार चलैत रहलनि अछि। पिताक एकटा वैमात्रेय भाइ छलथिन। हुनक पौत्र अध्यापक श्री प्रकाश चन्द्र मिश्र यद्यपि पितृमातृक चकौती ग्रामकवासी भऽ गेल छथिन परन्तु आब लक्ष्मीसागर मे आवास बना लेलासँ आत्मीयताक आदान-प्रदानक सौलम्य भऽ गेलनि अछि।

अभिधान ओ पारिवारिक परिधि

पिताक लेल चन्द्रनाथ भाय एवं परिवारक जेठ जनक हेतु बतहू, भाउजिक लेल पढुआ बाबू, अपन छात्रक बीच 'पंडित जी' ओ 'पंडीजी' सम्बोधन सँ आदृत, सम्बन्धेँ जेठ अभिभावक वर्गक लोक ओ वरिष्ठ गुरुभाइ लोकनिक द्वारा 'चन्द्रनाथ' नामे अभिहित, विद्वद्वर्ग मे पण्डित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' नामे परिचित, समवयस्क मित्र, साहित्यक समान धर्मा ओ साहित्य जगत मे श्री अमर अथवा अमरजी नाम सँ प्रख्यात एहि साहित्य पुरुषक आपकता पूर्ण आचार व्यवहारक कारणेँ पारिवारिक परिधि अत्यन्त विस्तृत ओ व्यापक रहलनि अछि। परन्तु पारिभाषिकताक सीमा मे सेहो छोट परिवार नहि रहलनि अछि।

स्वयं तीन बहीनि आ दू भाइ छलाह। जेठ बहीन जीवेश्वरी नवानी मे छलथिन जनिक कन्या, कन्याक सन्तान लोकनि छथिन। दोसर बहीन वागीश्वरी मधवा नेपालतराइ मे ओ तेसर अन्नपूर्णा ढंगा हरिपुर मे छलथिन। दुनू बहिनिमे भागिन ओ तनिक सन्तान लोकनि विद्यमान छथिन।

हिनक जेठ भाइ छलथिन लक्ष्मी नाथ मिश्र लोक मे प्रसिद्ध प० गणेश मिश्र जनिका ई ''बच्चा भाइ'' कहि कऽ सम्बोधित कयल करथिन। ओ एक्टा अनुभवी वैद्य छलथिन आ गामे रहल करथिन। दुहू भाइ मे जीवन भरि सौमनस्य बनल रहलनि। हुनक देहान्त 1989 मे भऽ गेलनि। भाउजि एखनो जीबैत छथिन। प० गणेश मिश्र कैँ दुइ कन्या शीतलि (सनहा) ओ गायत्री (श्याम सिद्धव) तथा दुइ बालक बचकुन अर्थात् रमानाथमिश्र 'मिहिर' ओ टुनटुन अर्थात् कलानाथ मिश्र। एहि सब भतीजा-भतीजीक प्रति सन्तानवत् वात्सल्य भाव रखैत रहलथिन अछि। परन्तु बचकुन हिनक विशेष स्नेहभाजन रहलथिन। बचकुनक आरम्भिक लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा ओ रुचि-प्रवृत्तिक निर्माण हिनकहि अभिभावकत्व मे भेलनि। विवाहक कतोक वर्षक पश्चात् जीविकापन्न भेला पर अपन परिवारक संग स्वतन्त्र आवास मे रहऽ लगलाह। किछु वर्षक बाद अपन पितृव्यक स्थायी आवास सँ किछुए दूर हटि हनुमाने गंज मे अपन मकान सेहो बना लेलनि।

मिहिरजी अपन पितृव्यक साहित्यिक उत्तराधिकारी रूप मे, मैथिली सेवी लेखकक रूप मे आ हास्य-व्यंग्य काव्यक लोक प्रिय कविक रूप से अपन एक विशेष छविक निर्माण कयलनि। दुर्भाग्यवश 1999 मे साठिम वर्षक अवस्था मे मिहिरजी दिवंगत भऽ गेलाह।

सासुर पक्ष मे सार लोकनि सब विद्यमान छथिन। सबसँ जेठसार श्री दिनेश चन्द्र झा स्वतन्त्रता-सेनानी होयबाक संग लेखक सेहो छथिन। एकटा दोसर सार श्री उमेश चन्द्र झा न्यायिक सेवा मे उच्च पदस्थ छथिन।

अमर जी जखन जीविकापन्न भेलाह तँ अपन परिवार कैँ अपना संग लहेरिया सरायमे राखऽ लगलाह। पहिने तँ विभिन्न स्थानमे किरायाक मकान मे रहैत छलाह। 1957 मे दरभंगाक मिश्रटोला महल्ला (हनुमान गंज) मे भूमि क्रय कऽ अपन आवास-निर्माण कऽ ओही मे स्थायी रूप सँ रहऽ लगलाह।

जखन अपन आवास मे अयलाह तँ परिवारक सदस्य मे छलथिन माय, पत्नी, दूटा कन्या आ भातिज बचकुन अर्थात् रमानाथ मिश्र 'मिहिर'। 1957 हिक पूस मास मे हिनकमाय स्वर्गीया भऽ गेलथिन। पत्नी हीरा देवी, जनिक सासुरक नाम दमयन्ती बहुरिया छनि, तनिका पर परिवारक आन्तरिक व्यवस्थाक सब भार पड़ि गेलनि। एखनहु रूग्णा रहितहु ओ एहि दायित्वक निर्वाह कऽ रहल छथिन। जेठिकन्या योगमाया जनिका दुलारसँ 'बाउ' ओ 'बसुली' नाम सँ सेहो संबोधित कयल जाइत छनि, से कबिलपुर मे छथिन। दोसर कन्या सावित्री बलभद्रपुर मे छथिन।

नवीन आवासमे अयलाक कतोक वर्ष पश्चात् सबसँ कनिष्ठ सन्तान मुन्नूजीक जन्म भेलनि। हिनक नामकरण भेलनि शम्भुनाथ मिश्र। शम्भुनाथ मिश्र स्टेट बैंक मे कार्यरत छथिन। हिनक विवाह कटैया ग्राम वासी, मधुबनी

आवासी अपर्णा सँ भेलनि जनिका सासुरक सम्बोधन शाम्भवी छनि। शम्भुनाथ मिश्र कैं दुइ बालक छथिन आदित्य ओ विभूति।

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमर कैं तीन सन्तान ओ तद्‌भव पौत्र, दौहित्र-दौहित्री त्यादिक सन्तति-सुख प्राप्त छनि।

रुचि-प्रवृत्ति ओ नियमानुशासन

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क बाल्यावस्था सँ परिचित व्यक्ति सभ हिनक जिद्दी ओ हठी स्वभावक चर्चा विशेष रूप सँ करैत रहलाह अछि। परन्तु ओ स्वभाव आगाँ चलि हिनक व्यक्तित्वक निर्माण मे आभ्यन्तरिक कारक-तत्त्व बनल। नित्यकृत्य, भोजन-छाजन, आचार-व्यवहार सब किछु नियम-काल-अनुशासन मे बान्हल रहऽ लगलनि, ओहि मे क्वचिते-कदाचित विचलनक संभावना रहैत छनि। अपन जीवन-शैली, दिनचर्चा, कार्य क्षेत्र मे कर्त्तव्य-निर्वाहक सम्बन्धमे सुनिश्चित विधि-निषेध, नीति-नियमक निर्धारण कऽ ओकर कठोरता सँ पालन करब हिनक प्रकृतिक अनिवार्य उपादान बनि गेल छनि। एकर अर्थ ई नहि जे सतत रूढ़े बनल रहलाह। अनेक बेर अनेक नियम मे परिवर्त्तनो करैत रहलाह समयक परिवर्त्तन शीलता ओ व्यावहारिकता कैं ध्यान मे राखि कऽ।

पान

आरम्भे सँ पान खयबाक अभ्यास छलनि। एहि हेतु डेरापर पान ओ पानक अन्य सामग्री सब पनवसना मे ओरिया कऽ राखल रहैत छलनि। नित्य पनबट्टी मे पन्द्रह-बीस खिल्ली पान लगाय संगहि स्कूल लऽ जाइत छलाह। पानक व्यवस्था हिनक माय अत्यन्त आवेश पूर्वक करैत छलथिन। 1957 मे मायक देहावसान भेलनि दरभंगहि मे। संस्कार यैह देलथिन। भरि काज पान खायब वर्जित रहलनि। काज सम्पन्न भेला पर डेरा मे पनवसनामे पान राखब छोड़ि देलनि। आब केवल तीन बेर मात्र पान खाय लगलाह–एक बेर स्कूल जाइत काल, दोसर बेर टिफिन मे, तेसर बेर स्कूल सँ अबैत काल। एहू लेल हिनक पानक दोकान निश्चित रहैत छलनि। पाछाँ पान खायब सर्वथा छोड़ि देल।

मौन ओ अनोना

एहिना जीवनक पूर्व भाग मे रवि दिन कैं अनोना आ मौन व्रत राखल करथि। शिक्षण वृत्ति मे अयलाक पश्चात् आ कवि-रूप मे प्रख्याति भेला पर एहि व्रत मे बाधा उपस्थित होमऽ लगलनि। जतेक सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक गोष्ठी ओ कविसम्मेलन होइक से रविए दिन कैं विशेष रूपें। एहि सबमे सम्मिलित होयबाक आमन्त्रण भेटितहि रहैत छलनि। एहि सब मे अनोना रखबाक व्रतक निर्वाह संभवो छल परन्तु एकटा लोकप्रिय कवि कैं रवि कैं मौनव्रत राखब कथमपि संभव नहि छल। अतः रविकैं अनोना ओ मौनव्रत-दुनू कैं स्थगित कऽ देलनि।

परिधान–एक बेर आगरा मे मैथिल महासभाक अधिवेशन भेलैक। ओहि मे प्रस्ताव भेलैक जे प्रत्येक मैथिल पाग धारण करथि। अमर जी ओहि प्रस्तावक अनुरूप धोती, कुर्त्ता ओ चद्दरिए जकाँ माथपर पाग से हो राखऽ लगलाह। प्रायः एक वर्ष धरि पाग नियमित रूप सँ पहिरैत रहलाह। साइकिल हिनक एक मात्र सवारी रहलनि अछि। पाग पहिरि साइकिल चलाबथि तँ माथपर पाग स्थिर नहि रहि पबैनि। उधिया गेल करैनि। प्रयोग मे असौकर्य जानि नित्य परिधानीय रूपमे पाग धारण करबाक संकल्प कैं छड़ि देबऽ पड़लनि।

समाचार-पत्र ओ रेडियो-समाचार

देश-विदेश ओ अपन समाज मे निरन्तर घटित होमऽ बला घटना ओ गतिविधिक अद्यतन सूचनाक प्रति ई सब दिन सँ संवेदनशील रहलाह अछि। अतः नित्य समाचार-पत्र पढ़ितहि छथि। संगहि रेडियो सँ प्रसारित समाचार केन्द्रीय ओ प्रादेशिक-उभय सुनब निर्बाध दिनचर्या मे सम्मिलित छनि। समाचार-प्रसारण काल मे आन कोनहु महत्त्व पूर्ण कार्य सँ अधिक महत्त्वपूर्ण रहैत छनि समाचार श्रवण। ओहि काल मे भेल कोनहु व्यवधान कैं ई सहन नहि कऽ पबैत छथि।

डायरी-लेखन

अमर जी नियमित रूप सँ डायरी लिखैत आबि रहलाह अछि जाहि मे प्रतिदिनक घटना ओ अनुभव कैँ लिपिबद्ध करैत छथि। अतः कोनहु वर्षक कोनहु तिथि कैँ भेल कोनहु घटनाक सत्यापन करबा मे असौकर्य नहि होइत छनि। फिल्म जगत मे कार्य करबाक अवधि मे बम्बइ (आब मुंबइ) मे लिखल गेल डायरी अत्यन्त साहित्यिक महत्त्वकसिद्ध भऽ सकैत अछि। एकर किछु अंश 'स्वाती' पत्रिका मे प्रकाशितो भेल छल।

पठित पुस्तक पर पाठकीय टिप्पणी

नियमित रूपेँ कोनो ने कोनो पुस्तक समय निकालि कऽ पढ़ब सहज स्वभाव रहलनि। कोनहु पोथी कीनैत छथि वा कोनो लेखक उपहार स्वरूप समर्पित करैत छथिन तँ अमरजी गम्भीरता पूर्वक आद्यन्त पढ़ि जाइत छथि। जतऽ जे अनुभव करैत छथि ततऽ अपन अनुभव-संकेत दैत जाइत छथि तथा पोथीक अन्त मे टिप्पणीक रूपमे अपन पाठकीय प्रतिक्रिया निरपेक्ष भाव सँ अंकित कऽ दैत छथि। मैथिली पुस्तक सभपर कयल गेल एहि टिप्पणी सब कैँ संकलित कऽ देल जाय तँ सूत्रात्मक साहित्यिक समीक्षाक एकटा विलक्षणे संग्रह तैयार भऽ सकैत अछि।

मनोरंजन

मनोरंजनक उद्देश्य सँ तीन गोट खेल मे अधिक रूचि रहलनि अछि—शतरंज, कैरम आ वॉलीवॉल। यात्रा करब, कविसम्मेलन मे जायब सदा नीक लगैत छनि। तेँ यात्रोपयोगी सरंजाम सब सरिआयले रहैत छनि।

काव्यं यशसे

साहित्य-सर्जनक सर्व प्रथम ओ सर्वोच्च प्रयोजन आचार्य लोकनि यश कैँ मानलनि अछि। काव्य-रचना सँ यश प्राप्त हो ई प्रत्येक कविक मानस जगत मे रहिते छनि। कवि श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' कैँ ई यश आरम्भे सँ प्राप्त होइत रहलनि अछि। अपन सुदीर्घ साहित्य-सर्जनावधि मे अपन प्रतिभा, साधना ओ श्रमक अवदान सँ मैथिली भाषाक कथा, उपन्यास, एकांकी, निबन्ध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तान्त, दैनन्दिनी, पत्रकारिता, अनुवाद, सम्पादन इत्यादि विधा कैँ संबलित-समृद्ध करैत रहलाह अछि परन्तु सर्वाधिक प्रशंसित, प्रतिष्ठित ओ लोकप्रिय छथि कविहिक रूपमे से मैथिलीए नहि, हिन्दिअहुक क्षेत्र मे कविक रूपमे हिनक स्थान सम्मान्य रहलनि अछि। मिथिलाक नगर ओ ग्रामाञ्चले नहि अपितु भारत भरिक कोनो एहन नगर विरले हयत जतऽ किछुओ मैथिली भाषी रहैत होथि आ कोनो मैथिली-आयोजन वा स्मृति-पर्वक आयोजन कयने होथि आ अमर जी ओहि मे सम्मान-पुरस्सर आमन्त्रित नहि भेल होथि। हिनका प्रति सम्मानक भाव देशवासी लोकनि मे कतेक रहलनि अछि से एही सँ प्रमाणित होइछ जे देशक विभिन्न भागक संस्था सभ द्वारा समय-समय पर अभिनन्दन पत्र, प्रशस्ति-पत्र, धोती, चद्दरि, पाग एवं अन्य उपहार सँ सम्मानित कयल जाइत रहलनि अछि।

'कविरत्न' उपाधि

वैदुष्यक क्षेत्र मे काशीक मान्यता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। 1969 इसवी मे 'काशी मे काशी विद्वज्जन समिति' संस्कृतमे पद्य-प्रशस्ति-पूर्वक 'कविरत्न' उपाधि सँ अलंकृत कयलकनि। एही अवसर पर कविवर सीताराम झा अपन सद्यः रचित पद्य द्वारा हिनक संवर्द्धना कयने छलथिन।

सम्मान-संवर्द्धन

वर्ष 1993 मे चेतना-समिति, पटना ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण प्रशस्ति सँ सम्मानित कयलकनि। 1999 इसवी मे धनबादक विद्यापति-समिति रजत-पत्र एवं प्रशस्ति पत्र सँ सम्मान कयलकनि। 1998 मे साहित्य अकादेमी नई दिल्ली हिनका पर केन्द्रित 'मीट दि ऑथर' (रचनाकार सँ भेट) कार्यक्रम आयोजित कयलक जाहि अवसर पर हिनक सचित्र नयनाभिराम परिचायिका सेहो प्रकाशित कयल गेल छल। बेगुसराय मे (तत्कालीन केन्द्रीय मन्त्री) श्रीमती कृष्णाशाही

द्वारा 'दिनकर जयन्तीक 1996 अवसर पर सम्मानित कयल गेलनि तँ मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग द्वारा से हो प्रतिष्ठार्पण कयल गेल छलनि। 13 नवम्बर 1994 मे संस्कार भारती द्वारा त्रयोदश राष्ट्रीयकला-साधकसंगमक अवसर पर तथा 22-9-2000 कैं संस्कृतवर्ष समारोहक अवसर पर सं० विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान कयल गेलनि।

पदक

अमरजी कैं विभिन्न समय, विभिन्न अवसर ओ विभिन्न व्यक्ति एवं संस्था सब द्वारा उत्तम कविताक उपलक्ष्य मे पदक प्रदान कयल जाइत रहलनि।

1946 ई० मे मधुबनी मे मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन भेल छल। अनेको युवा कवि एहि अवसर पद आयोजित कवि सम्मेलन मे कविता-पाठ कयने छलाह। एहि अवसर पर उत्तम कविताक हेतु कवि कैं पुरस्कृत करबाक योजना छल। एहिमे राकेश जी (कविवर सीताराम झा क पुत्र) कैं प्रथम पदक प्रदान कयल गेलनि तथा अमर जी कैं 'मन्त्री' कविताक द्वितीय पदक प्रदान कयल गेलनि।

1948 इ० मे कमतौलमे विकास सम्मेलनक आयोजन भेल छल। सम्मेलन मे तत्कालीन बिहार सरकारक मन्त्री प० विनोदानन्दझा मुख्य अतिथि रहथि। सम्मेलनक अवसर पर कविगोष्ठीक आयोजन छल। एहिमे अमर जी 'युगचक्र' शीर्षक कविताक पाठ कयलनि जे व्यंग्यक तीक्ष्णता ओ सरस हास्यक कारणे खूब पसिन्न कयल गेल। प० विनोदानन्द झा सेहो अपन विश्राम गृह सँ 'युगचक्र' कविताक पाठ कयनिहार कवि कैं बजाय आनय कहलथिन। शर्मा जी मंच पर आबि अमर जी कैं समाद कहलथिन जे 'मंत्री जी आप को बजाते हैं।'

अमर जी अपन स्वाभाविक श्लेष शैली मे उत्तर देलथिन-हम क्या ढोलक हैं जो मन्त्री जी बजाते हैं?

शर्मा जी तमतमाइत जा कऽ प० विनोदानन्द झा कैं कहलथिन। प० विनोदानन्द झा शर्मा जीक द्वारा कहल गेल अमरजीक उत्तर सूनि खूब हँसलाह आ पुनः अपने मंच पर आबि गेलाह आ फेर सँ 'युगचक्र' कविताक पाठ करबाक आग्रह कयलथिन। राजनीति पर कठोर व्यंग्यसँ सम्पुटित ई कविता सूनि प्रसन्नभऽ कऽ अमर जी कैं अपना दिससँ रजत पदक प्रदान कयलथिन।

अमर जी एकटा रंगकर्मी से हो रहलाह अछि। आरम्भिक जीवन मे नाट्यभिनयक आयोजन, निर्देशन ओ स्वयं अभिनयो करैत छलाह। 1954 मे अमरीकी विद्वान् डॉ० एडगर्टन ओ बिहारक तत्कालीन राज्यपाल आर०आर० दिवाकरक दरभंगा आगमनक अवसर पर हुनका लोकनिक स्वागत मे राजदरभंगाक नाट्यशाला मे हरिमोहन झा रचित 'अयाची मिश्र' नामक एकांकीक प्रदर्शन भेल छल। एहि मे अमर जी अयाचीमिश्रक भूमिका कयने छलाहा अमरजीक अभिनय अत्यन्त मर्मस्पर्शी ओ प्रभावी भेल छलनि। एहि हेतु वैदेही-समिति दिस सँ रजत पदक प्रदान कयल गेलनि।

1955 मे अखिल भारतीय मिथिला संघ, कलकत्ताक अधिवेशनक अवसर पर कविता-पाठक हेतु संघक प्रधानमन्त्री उदित नारायण झा द्वारा अमर जी कैं स्वर्ण पदक प्रदान कयल गेलनि। 1957 मे कविता-प्रतियोगिता अलीगढ़ मे आयोजित छल जाहि मे अमरजीक कविता से हो सम्मिलित छलनि। एकर उपलक्ष्य मे मैथिल संघ कलकत्ता दिस सँ रजत पदक तँ प्रदान कयले गेलनि, संगहि अखिल भारतीय मैथिल संघक तत्कालीन प्रधान मन्त्री वीरदत्त मिश्र (अलीगढ़) द्वारा से हो स्वर्णपदक प्रदान कयल गेलनि।

पुरस्कार

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कैं उत्कृष्ट साहित्य-सर्जनक हेतु अनेकशः पुरस्कार प्रदान कयल जाइत रहलनि अछि। 'ऋतुप्रिया' अमरजी प्रकृति-परकअत्यन्त मनोहारी काव्य-रचनाक संकलन थिकनि जाहिमे मिथिलाक माटि-पानि, रुचि-प्रकृतिक चित्ताकर्षक सुगन्धि सन्निहित अछि। एहि काव्यकृति पर हिनका हरिनन्दनसिंह-स्मारक-पुरस्कार प्रदान कयल गेल छलनि। समग्रसाहित्योपलब्धिक हेतु हिनकरा त्रिलोकनाथ-जयकलादेवी मैथिली साहित्य-पुरस्कार प्रदान

कयल गेल छलनि। 1998 मे बिहार सरकारक राजभाषा विभागद्वारा ताम्रपत्र सहित विद्यापति-पुरस्कार सँ सम्मानति कयल गेलनि।

एहि पुरस्कारक शृंखला मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ओ विशिष्ट अछि भारतक सर्वोच्च साहित्य-संस्था साहित्य-अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा अर्पित पुरस्कार, जकर स्पृहा भारतक कोनहु साहित्यकार कैँ होयब सहज ओ स्वाभाविक अछि।

हिनक सर्जनक मुख्य धारा कविताक रहलनि अछि, तथापि हिनक विशिष्ट ग्रन्थ 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' पर वर्ष 1983 इसबीक साहित्य-अकादेमी-पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि। प्रशस्ति मे श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कैँ मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्, कवि तथा उपन्यासाकारक विशेषण दैत पुरस्कृत ग्रन्थक विषयमे कहल गेल अछि-

> **''मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' कैँ विषयक प्रति सर्जनात्मक दृष्टिकोण, विशद अध्ययन, तथ्यक गम्भीर विश्लेषण तथा ललित शैलीक लेल मैथिली साहित्य कैँ एक अनुपम देन मानल गेल अछि।''**

श्री अमर एक सफ़ल अनुवादक रहलाह अछि आ अनेको विशिष्ट ग्रन्थक अनुवाद सफलता पूर्वक कऽ चुकल छथि। एहने अनूदित ग्रन्थ मे एकटा छनि 'परशुराम' उपनाम सँ प्रसिद्ध बंगलाक प्रसिद्ध कथाकार राजशेखर वसुक बंगला कथाक मैथिली अनुवाद 'परशुरामक बीछल-बेरायल कथा।' 1998 इसवी मे एहि ग्रन्थपर हिनका साहित्य अकादेमी-अनुवाद पुरस्कार से हो प्रदान कयल गेलनि। पुरस्कार प्रशस्ति मे कहल गेल अछि-

> **''राजशेखर वसु 'परशुरामक बीछल बाङ्ला कथा सभक श्री चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' द्वारा कयल गेल मैथिली अनुवाद 'परशुरामक बीछल-बेरायल कथा' मे मूल कथाक आत्मा सुरक्षित अछि। एहि उत्कृष्ट अनुवाद मे बाङ्ला प्रयोग क अर्थच्छवि ओ ओकर आस्वाद कैँ बनाओल राखल गेल अछि। मैथिली अनुवाद मे एकरा भारतीय कथा साहित्यक एक महत्व पूर्ण योगदान मानल गेल अछि।''**

साहित्य-जगत ओ साहित्यिक संस्था द्वारा प्रदान कयल गेल पदक पुरस्कार, उपाधि ओ सम्मानक अपन विशेष महत्त्व, विशिष्ट प्रतिष्ठा अछि। परन्तु पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कैँ ओहू सँ अधिक जे किछु प्राप्त भेलनि से अत्यन्त उदात्त अछि, गुरुतर अछि।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर दीर्घकाल धरि कर्त्तव्य निष्ठ, अनुशासन प्रिय, सफल अध्यापकक रूपमे कार्य करैत रहलाह। अतः सहयोगी अध्यापक, अभिभावक वृन्द एवं हजारो-हजार छात्र समुदायक आदर, सम्मान, श्रद्धा ओ भक्तिक पुरस्कार सँ पुरस्कृत होइत रहलाह अछि।

सहृदय साहित्यकारक रूपमे वरिष्ठ साहित्यकार लोकनिक स्नेह वात्सल्य, समवयस्क साहित्यकारक प्रेम-सौहार्द ओ कनिष्ठ साहित्यकारक आदर ओ निष्ठाक पुरस्कार प्राप्त रहलनि अछि।

मिथिलावासी, मैथिली भाषी असंख्य जनसमुदायक हृदय मे श्री अमरजीक हेतु जे अजस्त्र स्नेह आ प्रेम अछि, सामान्यहुजनमे हिनक लोकानुरंजक काव्य सुनबाक, पढ़बाक हुलास आ उत्साह देखल जाइछ, से बड़ अल्पे व्यक्ति कैँ प्राप्त करबाक सौभाग्य भेल होयतनि। ई लोक-सम्मान हिनक जीवनक अनुपम पुरस्कार थिकनि जे हिनका चिरजीवी बनौने रहतनि।

कीर्त्तिर्यस्य स जीवति।

●

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सँ साक्षात्कार

डॉ० जटेश्वरझा 'जटिल'
डॉ धीरेन्द्रनाथ मिश्र

मैथिली मनीषी आ सर्जकश्रेष्ठ पं० श्री अमरजीक बहुआयामी व्यक्तित्व एवं विविध दिशा व्यापी कृतित्व सँ मैथिल समाज सुपरिचिते अछि। एतय प्रस्तुत अछि हुनकहि मुहें हुनक यशस्वी जीवन आ कार्यक किछु उद्घाटित-अनुद्घाटित पक्ष-

प्रश्न- जाहि समय मे अपनेक शिक्षा-दीक्षा भेल, ताहि समय धरि आधुनिक शिक्षा-प्रणाली भारतवर्ष मे व्याप्त भए चुकल छल। मिथिलाक प्रबुद्ध वर्ग आधुनिक शिक्षा-प्रणालीक लाभ-हानि सँ पूर्ण परिचित छल। तखन परम्परागत संस्कृत-अध्ययन दिशि अपनेक झुकावक की कारण?

उत्तर- हम पाँच भाइ छलहुँ। सभ सँ जेठ भाइ स्व० मिहिरक पिता सुरसण्डक दण्डीक ब्रह्मचर्य आश्रम मे अध्ययन करैत छलाह, तिनका सँ छोट भवनाथ संस्कृत पढ़ैत छलाह दरभंगा मे। हमरा प्रारंभिक शिक्षाक लेल पिताक मातृक नरही (मधुबनी) पठाओल गेल। पिताक इच्छा छलनि हमरा अंग्रेजी पढ़यबाक। मुदा 1933 ई० मे छोट भाइ विन्ध्यनाथ ओ 1934 इ० मे दोसर भाइ भवनाथक मृत्यु भए गेलनि। हमरा सँ जेठ भाइक मृत्युक कारणें पिता उदासीन रहय लगलाह। 1936 इ० मे खोजपुर मे उपनयन भेल आ 'पेट मे पिल्ही सेहो भऽ गेल, तें बहुत दिन धरि गाम पर रहि गेलहुँ। गाम पर संस्कृत पाठशाला छल। अंग्रेजी पढ़बाक कोनो व्यवस्था नहि छल। तावत किछु पढू तें गोइमिसर लगमाक पंडित बच्चा झा सँ व्याकरण पढ़य लगलहुँ। एमहर बाबूजीक इच्छा छलनि अंग्रेजी स्कूल मे पढ़यबाक। संस्कृत पढ़बा मे प्रगति भऽ गेल छल। नवम्बर मास मे छात्र लोकनि कें परीक्षाक फार्म भरैत देखि हमरो फार्म भरबाक लौल भेल तँ हमहूँ फार्म भरल। 1937 इ० मार्चक प्रथमा परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलहुँ। तें हमरा संस्कृत मे शिक्षा होयबाक कारण परिस्थितिविशेष अछि।

प्रश्न- अध्ययन समाप्तिक पश्चात् अध्यापन-परिवेश मे प्रवेश करब रुचिक अनुकूल छल किंवा परिस्थितिकबाध्यता?

उत्तर- अध्ययन समाप्ति धरि पिता अवकाश ग्रहण केलनि। आर्चायक चतुर्थ खंड मे रही। 1944 इ० क नवम्बर-दिसम्बर मे पिता गाम चल गेलाह। फार्म भरि देने रहियैक। 1945 ई० मे आचार्य परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलहुँ। ओना हमरा आन्तरिक इच्छा छल जे लाइब्रेरियन होइ। तकर कारण ई—जे हमर अभिभावक बड़का भाइ अर्थात् राज पण्डित बलदेव मिश्र राज दरभंगाक लाइब्रेरी मे छलाह आ' आकर्षण छल जे लाइब्रेरी मे रहने रंग-विरंगक विविध विषयक पोथी सभ पढ़बाक लेल पर्याप्त मात्रा मे भेटत। जकरा लेल चेष्टा सेहो कयल। बाबू जगदीश नन्दन सिंहक पुस्तकालयक पुस्तकालयाध्यक्ष हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज' क देहान्तक उपरान्त हम हुनका ओहिठाम गेलहुँ। मधुबनी ड्योढ़ी सँ सम्बन्ध छल। कारण बाबू साहेब क्षेमधारी सिंह हमर पिताक शिष्य छलथिन। सम्बन्धक इएह कारण छल।

एना जगदीश नन्दन सिंह आश्वासन देलनि जे बहालीक बेर मे विचार करब। मुदा, प्रायः ओ स्थान रिक्ते रहि गेल। 1946 ई० मे मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन मे संयुक्त सचिवक लेल कंटेस्ट कयल आ' जीतल। तकरबाद 1947 इ० मे चैत्र पूर्णिमा कऽ पिताक देहान्त भऽ गेलनि। एहि दुइ वर्ष मे साहित्य शास्त्रीक परीक्षा देल प्रथम खण्ड पास कयल। इच्छा छल दरभंगा मे रहबाक। बाबूजीक पेंशन सँ दरभंगा मे रहबाक खर्च भेटैत छल। हुनक देहान्त सँ पूर्व 1946 इ० मे 'गुदगुदी' कविता संग्रहक प्रकाशन भेल जकरा बेचि छात्रावास मे रही। ओही समय मे मैथिली साहित्य परिषदक संविधान-संशोधनक प्रस्ताव भेल, जाहि मे तीन सदस्यीय समिति बनल। एहि मे पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र, डॉ० श्री जयकान्त मिश्र आ हम छलहुँ।

जयकान्त बाबू प्रयाग मे छलाह, मिसरजी कैं अवकाशक अभाव छलनि, तैं संविधानक संशोधनक सम्पूर्ण भार मिश्रजीक आदेश सँ हमरा देल गेल आ' हम ओकर प्रारूप तैयार कएल। ओहि प्रारूप कैं देखि मिसरजी प्रभावित भेलाह। ओही समय मे एम०एल० एकेडमी मे एक गोट एहन शिक्षकक आवश्यकता छलैक जे मैथिली-हिन्दी-संस्कृत पढ़ा सकथि। मिसरजी स्कूलक प्रबन्धकारिणी समितिक अध्यक्ष छलाह। नागेश्वर मिश्र प्रो० जयदेव मिश्र कैं कहलथिन जे तीनू विषय कैं पढ़यबाक लेल एक गोट क्षम शिक्षक चाही। ओहि समय मे हम परिषदक कार्य करैत छलहुँ। पिताक मृत्यु भऽ गेल छल। जीविकाविहीन छलहुँ। तैं प्रो० जयदेव मिश्र स्कूल आ परिषद् दुनूक लेल हमरा उपयुक्त बुझलनि। संयोग छल जे प्रबन्धकारिणी समितिक सचिव सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल हमरा पिताक शिष्य छलथिन, मिसरजी अध्यक्ष, दुनू अनुकूल तैं नियुक्ति भेल। मुदा आइ धरि नियुक्ति-पत्र नहि भेटल। शिक्षकक वृत्ति भेटि गेला सँ संतोष ओ प्रसन्नता भेल। कारण ई हमर कौलिक संस्कार छल।

प्रश्न- साहित्य-सर्जनक प्रेरणा अपने कैं कोन रूप मे प्राप्त भेल?

उत्तर - हमर धारणा अछि जे कवित्व प्रतिभा पूर्व जन्मार्जित संस्कार थीक। ओना साहित्य मे प्रवेशक कोनो परिवेश नहि छल। तथापि कवीश्वर चन्दाझाक 'चन्द्र पद्यावली' प्रकाशित भेल छलनि जकर शिवविषयक अनेक गीत पिताकैं संध्याकालीन पूजाक अवसर पर सुनबियनि। गीत गबिते-गबिते हमरा विश्वास भऽ गेल जे हमहूँ गीत लिखि सकैत छी। संस्कृत छात्रावास मे 'संस्कृत छात्र संघ'क नाम सँ छात्र संघक स्थापना कयने छलहुँ जाहि मे समस्यापूर्त्ति प्रत्येक मास संस्कृत आ मैथिली भाषा मे होइत छलैक। पहिल मासक बैसकक गद्य, पद्यक रचनाक चर्चा एवं समस्यापूर्त्ति सभकैं दोसर मास मे संस्कृत मैथिलीक हस्तलिखित बहारकरी। एहन पत्रिकाक प्रारंभ 1938 ई० सँ भेल जे 1941 ई० धरि मासिक रूप मे चलल। तैं चन्दा झाक 'चन्द्र पद्यावली' सैह मैथिली मे गीत-कविता रचना करबाक प्रेरणा प्रदान कयलक।

उद्‌बुद्ध भेलहुँ तँ पोद्दार रामावतार 'अरुण' क पहिल हिन्दी काव्य संग्रह 'अरुणिमा'क भूमिका मे केसरीजीक लिखित पंक्ति 'इस संकलन का कवि केवल अभी पन्द्रह वसन्त पार कर सका है'। ई देखि जे पन्द्रह वर्षक छैक आ पोथी, सेहो केसरीजीक भूमिका लिखल जे सी०एम० कालेज मे प्राध्यापक छथि। आत्मविश्वास कैं बल भेटल। सूरदासी भाषा-छन्द मे 1० टा गीत लिखि 1942 इ० मे 'चन्द्रनाथ पदावली'क नाम सँ प्रकाशित कराओल। मुदा ने ओकर एकोटा गीत स्मरण अछि, आ ने पदावलीक एको प्रति उपलब्ध अछि।

प्रश्न- साहित्य-जगत मे अपनेक उपनामक रोचक चर्चा अछि, एकर की इतिहास अछि?

उत्तर- चन्द्रनाथ मिश्र नामक एकटा आओरो छात्र छलाह लोहना विद्यापीठ मे। हमर पहिल कविता 'चश्मा 1941 इ० मे नवम्बरक 'मिथिलामिहिर' मे प्रकाशित भेल छल। लोहना विद्यापीठक समान नामधारी छात्र एहि कविताक पाठ अपना नाम पर कयल करथि। ई एकटा समस्या ठाढ़ भेल। विचारक क्रम मे आचार्य सुमन जीक ओहिठाम विचार भेल जो कोनो एकटा उपनाम राखि लेल जाय। एही विचार-विमर्शक क्रम मे छात्रसंघक सदस्य कामेश्वर झा 'कुसुम' तत्काल कहलनि जे 'अमल' राखि लेल जाय। ओहि दिन सँ हमर उपनाम 'अमल' भऽ गेल।

अवकाश प्राप्त कएलाक उपरान्त हमर पिताजी गाम चल गेलाह। पं० त्रिलोक नाथ मिश्रक नवीन ओ प्राचीन छात्र मे संघर्ष भऽ गेल। हम पिताजी सँ भेंट करबाक लेल गाम गेल छलहुँ। ओही समय मे एक छात्र द्वारा हमर मृत्युक अफवाहक प्रसारण कएल गेल। तैं हमर उपनाम 'अमल' लऽ कऽ फेर बाधा भेल। एहि बातक चर्चा आचार्य सुमनजीक आवास पर भेल, तँ हुनके विचारक अनुसार 'ल' क स्थान पर 'र' कऽ

देलगेल। ताहि दिन सँ हम 'अमल' सँ 'अमर' भऽ गेलहुँ।

प्रश्न- मैथिली-आन्दोलन मे अपनेक प्रवेश कोना भेल आ केहन सहभागिता रहल?

उत्तर- मैथिली आन्दोलनक मुख्य बिन्दु छल मैथिली पढ़बाक लेल छात्र तैयार करब। 1939 इ० मे मैथिली कैँ प्रवेशिका परीक्षाक ऐच्छिक विषय रूप मे मान्यता प्राप्त भेलैक। 1949 इ० मे मातृभाषाक रूप मे सेहो मान्यता प्राप्त भेलैक। तेँ आवश्यक छल जे विद्यालय मे जखन छात्र मैथिली विषय मे रुचि लेत आ पढ़त तखने कॉलेज मे सेहो मैथिली मे छात्र होयत। तेँ मैथिली मे छात्र तैयार करबाक लेल हम पूर्ण प्रयास सँ लगलहुँ आ' पूर्ण सफलता सेहो भेटल।

दोसर, ताहि समय मे मैथिली हिन्दीक बोली थीक तकर शास्त्रार्थ जहाँ-तहाँ होइत रहैत छल। एकरा लेल कोनो संस्था हो जे मैथिलीक समर्थक हो ताहि सम्बन्ध मे विचार-मंथन चलैत छल। ओहि समय सँ पूर्वे सँ कमला मेमोरियल लाइब्रेरी, जाहि मे प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक आवास छलनि, अनेक साहित्य प्रेमीक प्रतिदिन जुटान होइत छल आ साहित्यिक चर्चा चलैत छल।

एहि परिस्थिति ओ परिवेश कैँ अपन योजना (मैथिलीक पोषक संस्था) क लेल उपयुक्त बुझि, अवसर पाबि 1949 इ० मे एकान्त मे 'विद्यापति गोष्ठी' क प्रस्ताव प्रो० मिश्र सँ कयलियनि, जे सुनि ओ प्रसन्न भेलाह आ सहयोग देबाक वचन देलनि।

'विद्यापति गोष्ठी'क गठनक लेल पहिल बैसाड़ चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयक तत्कालीन प्राचार्य विश्वमोहन कुमार सिन्हाक अध्यक्षता मे भेल। एहि संस्थाक आजीवन अध्यक्षक रूप मे प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक चयन कयल गेल आ' सचिव भेलाह कामेश्वर सिंह 'मस्त'।

'विद्यापति गोष्ठी' क स्थापना सँ पूर्व मैथिली मे कवि-सम्मेलनक कोनो विशेष मंच नहि छल। मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनक कोनो निर्धारित समय नहि छल। मैथिल महासभाक अधिवेशन प्रत्येक वर्ष अवश्य होइत छल। ओहि मे कवि-सम्मेलन होइत छल मुदा विधि पुरौअलि मात्र। विद्यापति गोष्ठी स्थापनाक बाद सर्वप्रथम 1950 इ० मे बिस्फीक साहित्यिक तीर्थयात्रा कयलक। सिद्धि भूमि रहबाक कारणेँ 1951 इ० मे भवानीपुरक यात्रा कएलक। 1952 इ० मे विद्यापतिक समाधि भूमि बाजितपुरक यात्रा कएलक। हमरा जनैत एही तीनू भूमि मे विद्यापति कैँ जगौलाक बाद विद्यापति स्मृति पर्व जोर पकड़लक। ओना सर्वप्रथम 1929 इ० मे बाबू भोला लाल दास 'मिथिला' मासिक पत्र मे 'विद्यापति जयन्ती' मनयबाक अपील कयने छलाह। राजपण्डित बलदेव मिश्रक कथन छलनि जे पितरक स्मृति पर्व मनाओल जाइत अछि जयन्ती नहि। राजपण्डितजी आजीवन कार्तिक धवल त्रयोदशी कऽ स्मृति पर्व मनबैत रहलाह। किन्तु, जनता मे एकर प्रवेश नहि छल। 1954 इ० मे पटना मे 'चेतना समिति' क स्थापनाक संग एकर विस्तार होमय लागल। ओहि समय मे विद्यापति-स्मृति-पर्व जे विद्यापति -गोष्ठी सँ मनबैत छलहुँ ताहि मे कवि-सम्मेलन कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण रहैत छल। विद्यापति-गोष्ठी मे 'मस्त' क बाद सचिव भेलहुँ तेँ सभ मंच पर हमर उपस्थिति रहैत छल। हमरा सचिव भेलाक उपरान्त दरभंगा मे हिन्दीक प्रधानता देखि सहकारिताक आधार पर एक हिन्दी ओ मैथिलीक कविता-संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेल। 'विद्यापतिक देश मे' पहिल संग्रह भेल जाहि मे मैथिलीक कवि से हो हिन्दी मे कविता लिखलनि, मुदा हिन्दीक कोनो कवि मैथिली मे कविता नहि लिखलनि जे हुनक मैथिली विरोधी मनोदशाक सूचक छल। ई 'विद्यापतिक देश मे' क भूमिका मे चर्चा कयने छी।

जाहिठाम कवि-सम्मेलन होइत छल, सचिव रहबाक कारणेँ सभठाम हमर उपस्थिति होइत छल। हिन्दीक संग मैथिलीक कविताक पाठ सेहो करैत छलहुँ। परिणामस्वरूप दरभंगा मे हिन्दीक मंच समाप्तप्राय

भए गेल, जाकर श्रेय 'विद्यापति गोष्ठी' केँ छैक।

प्रश्न- मैथिली मे अपनेक प्रथम रचना कोन अछि? तकर प्रेरणास्त्रोत की?

उत्तर- मैथिली मे हमर प्रथम प्रकाशित रचना थीक 'चश्मा' जे 'मिथिलामिहिर' क 1941 इ० क नवम्बर मास मे प्रकाशित भेल। रचनाक कोनो प्रेरणास्त्रोत नहि होइछ।

प्रश्न- अपनेक कविताक दिशा बहुआयामी अछि, जाहि मे कोनो ने कोनो रूपेँ हास्यक पुट रहितहि अछि, तकर हेतु की?

उत्तर- सभ मे हास्यक पुट रहितहिँ अछि तकरा हम स्वीकार नहि करैत छी। परन्तु पहिल कविता 'चश्माक आत्मकथा? दोसर 'अल्हुआष्टक' तेसर 'मंत्री' ई सभ कविता कवि-सम्मेलनक मंच पर बहुत लोकप्रिय भेल छल तेँ लोक हमरा हास्य कविक रूप मे विशेष रूप सँ जानय लागल।

प्रश्न- मैथिली कवि-सम्मेलन मे अपनेक प्रवेशक की पृष्ठभूमि रहल अछि?

उत्तर- हिन्दी कवि-सम्मेलन मे सर्वप्रथम प्रवेश भेल हास्य कविक रूप मे ख्यात होयबाक कारणेँ। श्रोताक आग्रह पर हिन्दीयोक मंच पर मैथिली कविताक पाठ करय लगलहुँ। कवि-सम्मेलन मे प्रवेशक पृष्ठभूमि श्रोताक रुचि हमर प्रेरणाक कारण भेल।

प्रश्न- कवि- सम्मेलनक मंच पर अपनेक एक मात्र उपस्थिति कवि-सम्मेलनक सफलतासूचक बूझल जाय लागल। संगहि बाद मे मैथिली कवि-सम्मेलन कहला सँ अमरजी ध्यान पर आबि जाइत छथि, तकर की कारण?

उत्तर- एकर उत्तर देब आत्मप्रशंसा भऽ जायत जे उचित नहि। एकर निर्णायक श्रोता होइत छथि। एना, विषयवस्तु आ' उपस्थापन शैली, भाषाक सहज होयब लोकप्रियताक कारण होइत अछि।

प्रश्न- की मैथिली कवि-सम्मेलन केँ आन्दोलन मानल जा सकैछ? यदि हँ तँ कोना? की ई आन्दोलन सफल भेल?

उत्तर- मैथिली कवि-सम्मेलन आन्दोलनक रूप मे प्रारंभ भेल, जकर उद्देश्य छल मैथिली भाषी केँ अपन भाषाक प्रति आकृष्ट करब। कवि-सम्मेलनक एहि प्रयोग केँ सफल मानल जा सकैछ। सफल होयबाक सूचक इएह अछि जे एक दिवसीय सँ विद्यापति-स्मृति पर्व प्रारंभ भेल आ' आब वर्ष भरि मनाओल जाइत अछि, आ' मैथिली केँ विभिन्न क्षेत्र मे अधिकार प्राप्त भेल।

विद्यापति स्मृति केँ व्यापक बनएबा मे हमर शिक्षक वृत्ति पूर्ण सहायक भेल। कोनो आयोजन मे किछु ने किछु अर्थक प्रयोजन पड़िते छैक। अर्थसंग्रहक हेतु 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा', 'कातिक धवल त्रयोदशि जान' आदि पर कूपन छपबऽ लगलहुँ आ से एक आना दू आना मात्रक होइत छल जे छात्र समुदाय मे वितरित कऽ सहजता सँ धन-संग्रह भऽ जाइत छल।

एहि हेतु मुख्यतः चारि टा केन्द्र छल-एम्०एल्० एकेडमी, लहेरियासराय, दोसर बहेड़ा हाईस्कूल, तेसर सरिसब, चारिम सुपौल जतय क्रमशः मधुपजी, किरणजी आ किसुनजी सक्रिय रहि अपना क्षेत्र मे स्थान स्थान पर आयोजन करैत छलाह आ सबठाम कवि-सम्मेलन मुख्य आकर्षण रहैत छल। ओहि कूपन सभक नमूना एखनहु हमरा लग प्रमाणस्वरूप विद्यमान अछि।

प्रश्न- मैथिलीक विभिन्न संस्था सँ अपने स्थापना कालहि सँ सम्बद्ध रहलहुँ, ताहि मे अपनेक की योगदान रहल; आ 'मैथिली-आन्दोलन मे की ओहि सँ किछु बल भेटलैक?

उत्तर- 'मैथिली साहित्य परिषद्' प्रारंभ मे मैथिल महासभाक अंग छल। 193० इ० मे एकर अपन स्वतंत्र अस्तित्व भेलैक। हम मैथिली साहित्य-परिषद् सँ जुड़लहुँ 1944 इ० मे मनीगाछीक अधिवेशनक कवि-सम्मेलन मे। अगिला अधिवेशन 1946 इ० मे मधुबनी मेभेल जाहिठाम हम 'संयुक्त सचिव' निर्वाचित भेलहुँ। प्रधानमंत्री किरणजीक मंत्रिमंडल मे 1951 इ० मे 'प्रचार मंत्री'क रूप मे। 1954 इ० क परिषदक आगराक विशेष

अधिवेशन मे अनेक शाखाक स्थापना कयलहुँ। मैथिल महासभाक अधिवेशनक अवसर पर मै० सा० परिषदक विशेषाधिवेशन भेल करैक। अतः 1954 इ० मे मै० महासभा आगरा मे भेल रहैक। 1957 इ० मे बहेड़ाक अधिवेशन मे हमरे प्रधानमंत्री बनाओल गेल। मैथिली साहित्य परिषद कैं अपन भूमि हमरे प्रधानमंत्रित्त्वक काल मे भेलैक। परिषदक कवि-सम्मेलन मे जाहि कविता सभक पाठ भेल छल सभक प्रकाशन 'पद्य-प्रसून'क नाम सँ परिषदक द्वारा भेल जकर सम्पादन कयलहुँ। ओही अवधि मे परिषद् पत्रिकाक प्रारंभ भेल। एक गोट अंकक प्रकाशन हमरा कार्यकाल मे भेल। अर्थात् हमर दू वर्षक कार्यकाल मे एकटा अंकक प्रकाशन भए सकल। हमर मंत्रिमंडलक अवधि मे अध्यक्ष पं० हरिनाथ मिश्र छलाह। तकर बाद बाबू कृष्णनन्दन सिंह भेलाह। हिनक समय मे प्रधानमंत्री मनोनीत भेलाह। तकरबाद सँ परिषदक कार्य-कलाप मे शिथिलता अबैत गेल। 1946 इ० मे 25 रूपया दऽ कऽ आजीवन सदस्य, 100 टाकाक गुद्गुदी दऽ पोषक सदस्य आ नवीन संविधानक अनुसार 1000 टाका दऽ कऽ संरक्षक सदस्य सेहो भेलहुँ। परन्तु वर्त्तमान प्रधानमंत्रीक दृष्टि मे हम सामान्य सदस्य सेहो नहि छी।

नवरत्नगोष्ठी- छात्रावस्था मे हमरा लोकनि जाहि छात्र संघक स्थापना कयने छलहुँ, ओ छात्रावास अधीक्षक द्वारा ओकर दमन करबाक कारणें संघ छिन्न-भिन्न भऽ गेल। केवल नओ व्यक्ति रहि गेलहुँ तैं एकर नामकरण 'नवरत्नगोष्ठी' भेल; जाहि मे हम (अमरजी), मथुरानन्द चौधरी 'माथुर', उपेन्द्र नारायण झा, तंत्रनाथ मिश्र प्रसिद्ध छीतन मिश्र (राजपण्डित सँ सम्बद्ध), सदानन्द मिश्र (गिरीन्द्र मोहन मिश्र सँ सम्बद्ध), देवेन्द्र नाथ झा (सामवेदीजीक बालक, राजमाता धरि प्रवेश छलन्हि), कुशेश्वर झा 'कुमुद' (लालपुर), कामेश्वर झा 'कुसुम'; गोकुलानन्द चौधरी 'आनन्द' (माथुरजीक सोदर)-अध्यक्ष।

हम दरभंगा मे एकसरे साहित्यिक संस्थाक रूप मे 'नवरत्नगोष्ठी'क नाम सँ प्रकाशन आंरभ कएल। एकरा जीवित रखबाक लेल, जे साहित्यकार दरभंगा प्रेस, प्रूफफ संशोधन वा प्रेसक अन्य सुविधाक लेल अबैत छलाह तिनका सभक प्रकाशनक सभ भार स्वीकार कऽ लैत छलहुँ। मुदा, मूल्यक रूप मे प्रकाशकक रूप मे 'नवरत्नगोष्ठी' क नाम दैत छलहुँ।

मैथिल महासभा- कवि-सम्मेलनक मंच पर विशेष लोकप्रियता छल तैं मैथिली साहित्य परिषदक विशेषाधिवेशन मे राज दरभंगाक प्रतिनिधिक रूप मे हमरो गणना कयल गेल। आवागमनक व्यय-भार स्वागत समिति वहन करैत छल, सदस्यता-शुल्क राज दरभंगा दैत छल। हमर विशेष योगदान छल 1959 इ० क अजमेरक मैथिल महासभाक अधिवेशन मे, मिथिलामिहिर जे बन्द भऽ गेल छल, तकर पुनः प्रकाशन हो से प्रस्ताव उपस्थित करबा मे हमर प्रमुख भूमिका अछि, जकर उल्लेख मिसरजी अपन पोथी 'किछु देखलः किछु सुनल' मे कयने छथि।

प्रश्न- कोनो साहित्यक विकास मे पत्रकारिताक योगदान सर्वप्रमुख होइछ। अपने विभिन्न पत्र-पत्रिका सँ सम्बद्ध रहलहुँ। प्रत्येक मे अपनेक अवदान कोन रूप मे रहल, बेकछा कऽ कहल जाय।

उत्तर- 1948 इ० मे 'स्वदेश' क मासिक पत्रिकाक रूप मे प्रकाशन प्रारंभ भेल जे छओ अंक धरि चलल, जाहि मे हास्य-रचनाक रूप मे हमर कविता 'युगचक्र' क नाम सँ पाँच अंक मे प्रकाशित भेल। चारिम अंक मे हमर रचना सँ प्रभावित भऽ आरसी बाबूक व्यंग्य 'कवि कौतुक विस्तार करैये' क नाम सँ प्रकाशित अछि। दोसर 'वैदेही' क प्रकाशन 26 जनवरी 195० इ० मे सीतामढ़ी सँ पाक्षिक पत्रिकाक रूप मे भेल। एकर सम्पादन एवं स्तंभ-लेखनक लेल आग्रह कयलनि। तैं 5-6 वर्ष धरि सम्पादन आ स्तम्भ-लेखकक रूप मे सहयोग कयल। एहि पत्र मे रचना अत्यल्प मात्रा मे प्रकाशित अछि। स्तंभ-लेखनक शीर्षक छल 'गोनू झाक चौपाड़ि'।

पुनः 1954-55 इ० मे 'दैनिक-स्वदेश' क प्रकाशन प्रारंभ भेल जाहि मे समाचार-संकलन, प्रूफ

संशोधन, अंक वितरण सभ मे सहयोग कयल, छओ मास करीब हास्य-स्थायी स्तम्भक लेखन-उचित रामक डायरी, खोखाइ सिंहक खखास, कैलू कामतिक कूही आदि अनेक शीर्षक सँ कयल।

'निर्माण' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका मे 1955 इ० मे बाबू जानकी नन्दन सिंह सम्पादकक रूप मे कार्य करबाक आग्रह कयलनि। हमर शर्त छल जे, यदि चारियो पृष्ठ मातृभाषा मैथिलीक रहत तखने हम कार्य करब। जानकी बाबूक स्वीकृति भेटल। एहि मातृभाषाक पृष्ठ मे म०म० उमेश मिश्र एवं डा० अमर नाथ झाक भाषण छपल। हमर 'बतहू मिसर की बहक' हास्य-स्तम्भ आ सम्पादकीय रहैत छल हिन्दी मे।

1952 इ० मे श्री नारायण दास एम०पी भेला पर 'पंचायती राज' क नाम सँ हिन्दी साप्ताहिकक प्रारंभ कयलनि। आरंभ मे यात्रीजी रहथि व्यंग्य स्तम्भ लेखकक रूप मे। आर्यावर्त्तक कुलानन्द नन्दन कैं सम्पादक बनाओल गेल। तीन मास धरि यात्रीजी हास्य स्तम्भ लिखलनि। यात्रीजीक दरभंगा सँ चल गेलाक उपरान्त नन्दनजी बेचैन भऽ गेलाह। सम्पादकजीक आग्रह पर तखन हम 'चुम्मन चौधरीकी चिट्ठी' 'बतहू मिसर बलभद्रपुर' क नाम सँ लिखय लगलहुँ।

ओकर 'आशाओं की कलम से' शीर्षक सँ स्तम्भ छलैक। एहि स्तम्भक सम्पादकक रूप मे कार्य करबाक आकर्षणक कारण छल साहित्यिक प्रवृत्तिक छात्र कैं प्रोत्साहन प्रदान करबाक अवसर भेटबाक लोभ।

1982 इ० मे पुनः 'स्वदेश' कैं दैनिक रूप मे बहार करबाक विचार होमय लागल। एहि निमित्त मासक मास नियमित बैसाड़ होइत रहल। जखन प्रकाशन प्रारंभ भेल तखन फेर संवाद-संकलन आ' एक सए प्रतिक प्रतिदिन वितरण करैत छलहुँ। दीर्घ अवधि धरि लहेरियासरायक प्रतिष्ठित स्कूल मे अध्यापक छलहुँ, तैं सभ वर्गक लोक हमर छात्र छलाह। तैं वितरण आ स्थायी ग्राहक बनयबा मे सभ वर्गक सहयोग भेटल।

पटना सँ प्रकाशित 'मिथिलामिहिर' मे 6-7 वर्ष धरि 'धर्मधकेलानन्द' क नाम सँ 'धर्मधकेलानन्दक बलधिंगरो' शीर्षक व्यंग्य लिखलहुँ।

प्रश्न- अपने मूलतः कवि रूप मे ख्यात छियैक, परंच कविता सँ अधिक गद्यहिक रचना प्राप्त अछि, तकर की कारण?

उत्तर- कविता-पाठ जनसाधारणक बीच होइछ, तैं लोक मे कविक रूप मे परिचय रहब सर्वथा स्वाभाविक अछि। किन्तु लेखन मे पाठकक आवश्यकता होइछ। जकर संख्या मैथिली मे थोड़ अछि। दोसर, उपन्यास, कथा, हिन्दीक नाट्य-मंच पर मैथिलीयोक किछु हो, ई लोक रुचिक माँग देखि एकांकीक रचना कएल। पत्र-पत्रिकाक सम्पादन, हास्य-व्यंग्य हमर लोकप्रिय रहल तैं विभिन्न पत्र-पत्रिका मे स्थायी स्तम्भक लेखन कएल तैं गद्यक संख्या अधिक होयब स्वाभाविक।

प्रश्न- मिथिला-मैथिलीक विभिन्न समस्या सँ सम्बद्ध इतिहास-लेखन अपनेक रुचिक अनुरूप छल वा परिस्थितिक विवशता?

उत्तर-परिस्थितिक विवशता नहि छल। मुदा परिस्थिति उत्पन्न अवश्य भेल। प्रो० कृष्णकान्त मिश्र दोसर लेखक सम्मेलन कयलनि। ओहू समय मे 'वैदेही' क सम्पादन सेहो करैत छलहुँ। ओ (कृष्णकान्त मिश्र) मैथिली-आन्दोलन पर किछु लिखबाक आग्रह कयलनि। जे 'मैथिली आन्दोलन एक सर्वेक्षण' रूप मे पुस्तकाकार भेल। बाद मे ई पोथी आनर्स ओ एम०ए० छात्रक लेल उपादेय मानल जाय लागल।

1968 वा '69 इ० मे मैथिली साहित्य परिषदक सरिसबक अधिवेशनक अवसर पर स्मारिका प्रकाशित करबाक योजना छल। अधिवेशनक अवसर पर ई प्रस्ताव आयल जे मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास लिखल जाय। एहि कार्यक लेल क्रमशः रमानाथ बाबू, किरणजी, सुमनजी कैं आग्रह कयल गेलनि। किन्तु कोनो कारणवश ई लोकनि नहि लिखि सकलाह। तखन भवनाथ झा 'दीपक' स्वागत समिति दिशि सँ

हमरा लिखबाक आग्रह कयलनि। काज कठिन छल। मुदा हम जेना-तेना पूरा कयल। जकर प्रकाशन 1969 वा 7० इ० मे भेल। साहित्य परिषदक ई इतिहास 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' लेखन मे प्रेरणाक कार्य कयलक। मैथिली अकादमीक पहिल अध्यक्ष श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' सँ 'मैथिली आन्दोलन एक सर्वेक्षण' कैँ पुनः प्रकाशित करयबाक निवेदन कयलियनि। पोथी पढ़लाक बाद लिखलनि जे 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' किएक नहि लिखब? हमर इच्छा छल जे किछु रिसर्च कार्य करी। जकरा लेल संस्कृत विश्वविद्यालय मे आवेदन कयल, फीस सेहो जमा कयल। विषय छल–

'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' मे निदेशकक रूप मे चयन कयने छलहुँ आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' कैँ। किन्तु संस्कृत विश्वविद्यालयक रिसर्च बोर्ड द्वारा आचार्य सुमनजीक अतिरिक्त कोनो दोसर व्यक्ति कैँ निदेशकक रूप मे नाम देबाक लेल कहल गेल। दोसर व्यक्तिक निर्देशन मे ई कार्य नहि करय चाहैत छलहुँ। फीस जमा रहिये गेल। तावत अकादमीक आग्रह भेल आ हम ई कार्य पूरा कयल।

इतिहास-लेखन क्षेत्र मे हमर कार्य कयल छल, जे पुरुषोत्तम बाबू सचिव 'मैथिल महासभा' कैँ प्रेरित कयलकनि जे हमरा सँ इतिहास लिखाबथि। अनेक बेर महासभाक इतिहास लिखबाक आग्रह कयलनि। जे सामग्री प्राप्त भेल ताहि आधार पर लिखलहुँ। जकर प्रकाशन 1999 इ० मे भेल।

प्रश्न- दृश्य-काव्यक रचना ओ प्रयोग दुहू मे अपनेक सहभागिता अछि, की ई परिस्थितिक माँग छल अथवा स्वेच्छया?

उत्तर- एकरा परिस्थितियेक माँग कहबैक। कारण जे पहिने हिन्दी नाटकक मंच पर प्रहसन-एकांकी लिखबाक आवश्यकता अनुभव भेल। अपन लिखल एकांकी रहैत छल तैँ प्रदर्शन-काल मे निर्देशन मे रहय पड़ैत छल। जाहि सँ क्रमशः रुचि उत्पन्न होइत गेल। जखन छात्रावास-अधीक्षक छलहुँ तखन सरस्वती पूजाक अवसर पर स्कूल मे नाटकक मंचन कराबी। एहि अवधि मे छओ गोट नाटकक मंचन स्कूलक मंच सँ करओलहुँ। जखन मैथिलीक पहिल फिल्म 'नैहर भेल मोर सासुर' बनयबाक आयोजन भेल तँ एकर डायरेक्टर छलाह सी० परमानन्द आ फिनांसर महन्थ मदन मोहन दास। ई दुनू हमर छात्र रहि चुकल छलाह। एकर मुहूरत भेल छल हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना मे। एहि अवसर पर महन्थजी विशेष आग्रह सँ संग लऽ गेल छलाह। ओहि मे मुख्य भूमिका मे 'अजरा' मुहूरत काल मे, जे मैथिलीक उच्चारण कयलनि ताहि मे स्वराघात कैँ हम परिमार्जित कयलहुँ। ई देखि मदन मोहन दास सम्पूर्ण शूटिंग मे सहयोगक आग्रह कयलनि आ' हमरे अनुरोधे गर्मी छुट्टी मे एकर शूटिंग रखलनि। ई काज चलिये रहल छल ताही बीच मे 'कन्यादान' फिल्म बनयबाक योजना बनल। हरिमोहन बाबूक विशेष आग्रहेँ मैथिली भाषी अभिनेता-अभिनेत्री सभकैँ मैथिली सिखयबाक हेतु तथा पटकथा नबेन्दु घोषक अंग्रेजी मे छल, सम्वाद रेणुजीक हिन्दी मे, सम्वादक मैथिलीकरण लेल कन्यादान फिल्म सँ जुड़लहुँ।

एकटा बात कहि देब आवश्यक बुझैत छी जे ''नैहर भेल मोर सासुर' नाम अनर्गल बुझि पड़ल तैँ नाम 'ममता गायब गीत' रखबाक प्रस्ताव हम कयल, जाकरा मानि लेल गेल।

कन्यादान फिल्म मे पर्दा पर अयबाक सेहो एकटा घटना अछि। लाल ककाक भूमिका मे बिहारक ख्यातनामा अभिनेता रामायण तिवारी छलाह, जनिका मैथिलीक उच्चारण करब कठिन बुझि पड़ैत छलनि। परिणामतः हरिमोहन बाबूक दुराग्रह, फणि मजुमदारक आदेश आ रामायण तिवारीक प्रलोभन हमरा रजत पट पर उतरबाक हेतु बाध्य केलक।

प्रश्न- मैथिली कवि-सम्मेलनक मंच पर प्रारंभ मे 'जय-जय भैरवि' गायनक की पृष्ठभूमि अछि?

उत्तर- शुभ-कार्य मे मंगलाचरण होयबाक परम्परा रहल अछि। तैँ विद्यापतिक गोसाउनिक गीत एहि हेतु सभसँ

उपयुक्त मानल गेल आ' सभाक आरंभ मे 'जय-जय भैरवि' केर गायन होमय लागत।

हमर कार्य-काल मे तरुण कवि मायानन्द मिश्र मधुर कंठक कवि छलाह। तेँ एहि गीत केँ नव भास दऽ कऽ पहिले पहिल हमहीं हुनका सिखौलहुँ। ओही दिन सँ एहि गीतक ओ भास भऽ गेल। शेखरजी, विश्वनाथ मिश्र नर्त्तक सभ मिलि कऽ विद्यापतिक गीतक आधार पर भाव-नृत्यक प्रदर्शनक आरंभ सर्वप्रथम विद्यापति गोष्ठी प्रारंभ कयलक। 'जय-जय भैरवि' क आधार पर भाव-नृत्यक सर्वप्रथम प्रदर्शन विश्वनाथ मिश्रक द्वारा कयल गेल। पछाति 'विद्यापति बैले' गीत-नाटक प्रभाग द्वारा तैयार कएल गेल।

प्रश्न- पत्र-पत्रिकाक हास्य-व्यंग्य स्तम्भक नियमित लेखन अपनेक द्वारा किएक ओ तकर की प्रयोजन?

उत्तर- हमरा मे एहि प्रकारक लेखनक स्वाभाविक प्रवृत्ति अछि।

प्रश्न- अपनेक रचना 'स्वान्तः सुखाय' भेल अथवा सामाजिक परिवर्तनक हेतु?

उत्तर- किछु स्वान्तः सुखाय सेहो आ किछु सामाजिक परिवर्तनक लेल सेहो। एना हमर मान्यता अछि जे भक्ति भावना छोड़ि आन कोनो रचना स्वान्तः सुखाय नहि होइछ।

प्रश्न- अपने मैथिली साहित्य मे कवि रूप मे ख्यात छी। गद्यक विभिन्न विधा मे स्थापित भेलियैक, मुदा पत्रकारिताक इतिहास पर अपने केँ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेल। एहि सम्बन्ध मे अपनेक की कथन?

उत्तर- हमरा समय मे साहित्य अकादमीक पुरस्कार, दू वर्षक अभ्यन्तर प्रकाशित रचना पर भेटैत छलैक। जाहि मे साहित्यकारक समग्र व्यक्तित्व केँ ध्यान मे रखैत निर्णायक मंडल निर्णाय करैत छल। ओहि अवधि मे हमर इएह रचना छल, तेँ पुरस्कार एही पर भेटल।

प्रश्न- अपनेक अतुलित अवदानक पश्चात् अग्रिम योजना की?

उत्तर- आइ धरि योजनाबद्ध रूप मे कोनो कार्य नहि कयल –

'क्षृणादूर्ध्वं न जानामि विधाता किं विधास्यति?-तेँ कोनो योजनाक प्रारूप हम कोनो रूप मे नहि बनाओल। तखन कथा, कविता, एकांकी, निबंध आदि रचना पुस्तकाकार ग्रहण नहि कए सकल अछि तेँ कखानो-कखनो कऽ सोचैत छी जे स्थायित्व देबाक लेल एकरा सभक संग्रह कयल जाय। प्रश्न अछि प्रकाशन व्ययक।

प्रश्न- अपनेक दृष्टि मे मैथिलीक अष्टम अनुसूची मे अयबाक केहन संभावना?

उत्तर- ई विशुद्ध राजनीतिक प्रश्न बनि गेल अछि, तेँ निश्चित रूप सँ किछु कहब संभव नहि। तथापि वर्त्तमान चुनाव मे जेना जार्ज, नीतीश आ' स्वयं अटलजी आश्वासन देलनि अछि आ' गत चुनाव मे आजादजी, हुकुमदेवजी जीतिऽ गेला उत्तर मैथिली मे शपथ ग्रहण कयलनि, ई सभ देखि आशान्वित छी जे मैथिलीक सौभाग्य जागि जाइ।

प्रश्न- नवतूरक हेतु अपनेक किछु संदेश?

उत्तर- हम कोन जोगर छी जे नवतूर केँ किछु सन्देश दियनि। कहबी छैक 'कौआ सँ कौआ गेल्ह बुधियार', नवतूर केँ अग्रजक सन्देश अरघिते नहि छैन, तथापि जँ अहाँ आग्रह करैत छी तँ यैह जे साहित्य साधना थिकैक। धैर्यपूर्वक साधना निरत रहला पर समाज सँ मान्यता भेटिते छैक, प्रतिष्ठा भेटिते छैक। ताहि हेतु अधीर नहि भऽ साधनारत रहथि सएह हमर अनुरोध।

●

मैथिली साहित्य रथी श्री अमर जी

श्री अशोक कुमार ठाकुर

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक व्यक्तित्व बहुआयामी छनि। महान् संस्कृत पंडितक बालक, संस्कृतक छात्र, मातृभाषानुरागी, छात्रावस्थहिं सँ कविता-उपन्यास,-निबन्ध लेखन मे रत, मैथिली शिक्षकक रूप मे कार्यारम्भ आ आदिसँ यशस्वी शिक्षकक रूप मे ख्यात मैथिली साहित्यक सब विधा केँ अपन रचनात्मक योगदान सँ समृद्ध करैत, पत्रकारिता मे विशेष अभिरुचि-मातृभाषाक कतेको महत्त्वपूर्ण पत्रिका सभक सम्पादन आ पत्रिका-सभक संरक्षण, हास्य व्यंग्यकार कविक रूप मे ख्यात संगहि उपन्यासकार, कथाकार नाटककार आ इतिहासकारक रूप मे मैथिली जगत मे चर्चित, प्रकाशनक घोर अंधकार युग मे मैथिली पुस्तक सभक प्रकाशन सँ मातृभाषाक साहसिक सेवा करैत ई गीतकारक रूप मे से हो अपना केँ प्रतिष्ठित कयलनि।

अमर जी प्रसिद्धि पौलनि कविक रूप मे। वर्तमान शताब्दी क पाँचमे दशक सँ ओ हास्य-व्यंग्य कविक रूप मे प्रतिष्ठित छथि। गामे-गाम कवि गोष्ठीक आयोजन क' एतुक्का लोक केँ ई बात बुझौलनि जे तोहर भाषा कोनो भारतीय भाषा सँ पाछू नइ छौक। लोक मे चेतना जागल छल, तकरे फल छल जे मैथिली विद्यालय-महाविद्यालय सँ विश्व-विद्यालयक कक्षा धरि प्रवेश क' सकल। मन पाडू छठम-सातम-आठम दशकक आर०के० कॉलेज मधुबनी, सी०एम० कॉलेज दरभंगा आ अन्य सब कॉलेजक, ठट्ठ पड़ैत मैथिली कक्षा सब। ओहिमे हिनक प्रत्यक्ष आ परोक्ष सहभागिता छल से कोना बिसरल जा सकैए! आइ मैथिली पठन सँ एतुक्का छात्र-छात्राकेँ विमुख होइत देखि अमर जी चिन्तित भऽ जाइत छथि। कोनो नियमित पत्रिकाक प्रकाशन नहि होइए ताहि हेतु दुःखी भऽ' जाइत छथि। कोनो मैथिलीक नव-प्रकाशित पोथी देखि उल्लसित भऽ' जाइत छथि। हुनक मानब छनि जे मैथिली केँ क्यो गीड़ि नै सकैए। गीड़त कोना? जा धरि ई एतुक्का लोकक कंठ मे अछि, हृदय मे अछि ता एकर कियो किछु नइ बिगाड़ि सकैए।

हिनक कविता कविगोष्ठी मे खूब रूचि सँ सुनल जाइत रहल अछि। कोनो छोटका नगरक कवि सम्मेलन मे श्रोता गण कवि अमर जीक प्रतीक्षा मे बैसल रहैए अमर जी मंच पर ठाढ़ भेला आ ठहक्का शुरू भेल। हहारो पड़ऽ लागल। की मात्र हुनक काव्य रचना ठहक्का थिक? कथमपि नहि, ओहि सब मे युगक राजनीति, समाजनीति ओ अर्थनीति अभिव्यक्ति पौलक अछि, मुदा गंभीर बात केँ सहज सरस ओ व्यंग्योक्ति बना ई तेना लोकक सोझाँ रखैत छथि जे लोक अपनहि पर हँसक हेतु बाध्य भऽ' जाइए। हँसैत-हँसैत श्रोता कत्तहु अनुभव करैए जे कतेटा बात कहि देलनि।

अमर जी छात्रावस्थहि मे दू गोट उपन्यासक रचना क' अपन भाषाक एहि विधाक न्यों पुष्ट कयलनि। 44 इ० धरि मैथिली मे गनल-गुथल उपन्यासक रचना भेल छल। हिनक औपन्यासिक कृति ''वीर कन्या'' मे एक गोट युवकक सहायतार्थ शारदा नामक एकगोट युवती आगू बढ़ै छथि। शारदा ओकर सहायता नहि क' सकलथिन। सिपाही ओहि युवक केँ धऽ 'लेलकै। शारदा अपन पिताक संग काशी यात्रा मे रहथि। घटना ट्रेन मे घटल। शारदा केँ लंगट बैजू सँ पाला पड़ि गेलनि। ओ ओएह बैजू छल जे चिन्तामणि बाबू केँ ठकि हुनका पटना पठा देने रहैनि आ हुनका पुत्री चण्डिका केँ बेहोश कऽ देने रहनि। बाटमें ओहो अपन मुक्तिक हेतु पड़यलीह आ फेर 'बेहोश भऽ 'बाट पर खसि पड़ली। ससुर तीर्थाटन सँ घुरैत रहथिन ओएह हुनका उठाक' अनलथिन। युवक नरेन्द्र स्वतंत्रता संग्रामक काज मे लागल रहथि। हुनका केओ सूचित कयलकनि जे तीर्थाटन मे गेल हुनक पिताक ट्रेन दुर्घटना मे मृत्यु भऽ' गेलनि। ओ अपना केँ पापी बुझ' लगला। अनुताप मे जरैत रहथि। शारदाक बुद्धि आ साहस सँ बैजू सन कपटी-शातिर अपराधी पकड़ल गेल। शारदा केँ वीर कन्या कहि सकैत छी, मुदा चण्डिका सेहो आत्म रक्षार्थ संघर्ष कयने रहए। शारदा आ चण्डिका दुनू बैजूक चपेट मे अबैए। युवक नरेन्द्र सेहो दुनू कन्याक लग पहुँचैए। अन्त मे नरेन्द्र-शारदाक प्रयत्ने छूटि जाइए। शारदा आ

नरेन्द्रक विवाह पहिनहि तय रहैक।

वीर कन्या उपन्यासक कथा ओझरैल छैक। कथा मे निर्दिष्टकोनो विन्दु नइ छैक। पात्र सभक चरित्रक कनेको विकास नहि भऽ सकलै मुदा बैजू सन खलनायक ठाढ़ कयल गेल अछि, ई अपना मे प्रथम प्रयास मैथिली कथा साहित्य मे भेलेक। वीर कन्याक उपलब्धि बैजू थिक। नरेन्द्र बड़ दुर्बल पात्र अछि। भावुकता मे भसिआयल अछि ओ। चिन्तामणि बाबू खाली चिन्तेटा करब बुझैत छथि तँहिने बैजू एना 'क' ठकि लेलकनि। शारदाक चरित्र कने विकासक मार्ग पर छैक। शारदाक उक्ति ''समाजेक डर रखैत-रखैत आइ समस्त समाज मे अज्ञानताक महारोग-संक्रामक रोग पसरि गेल अछि। समाजक डर करब मूर्खता थिक।'' समाजक डरें नीकबात सेहो मान' मे लोक हिचकैए'' अमर जी अपन निश्चयक झलकी आरम्भिके रचना मे द' देलनि, तँहि ने समाज मे व्याप्त अज्ञानता पर सबदिन सभ विधा मे चोट करैत रहलाह अछि।

अमर जीक दोसर औपन्यासिक रचना थिक विदागरी। एकर रचना 1946 इ० मे भेल। विदागरी मे समाजक जाहि वर्गक चित्रण भेल अछि आ जे समस्या उठाओल गेल अछि ताहि सँ फराकभ'क' जैं किछु बात पर विचार कयल जाय तँ' से एहि उपन्यास हेतु आ मैथिली उपन्यास-साहित्य हेतु नीक कहल जा सकैए। वैवाहिक समस्या पर कतेक उपन्यास लिखल गेल अछि। एहू मे ओएह अछि। मुदा ताहि सँ भिन्न बात अछि तत्कालीन मानसिकता, मानवीय दुर्बलता। ज्योतिषी जी अपन बेटाक विवाह लीलाधरझाक बेटी सँ किछु सहयोग पयबाक आशा मे करैत छथि, मुदा लीलाधर सन लंगट आ धूर्त्त लोक हुनके सँ किछु लेबाक मनसूबा रखैत अछि। ज्योतिषी जीक आशा-आकांक्षा स्वाभाविक छनि मुदा लीलाधरक?

एही बांत पर आधारित अछि उपन्यास विदागरी। नव विचारक युवक कैं जँ ई विचार मन मे होइक जे ओकर पत्नी शिक्षिता होइक, ओकरा दू आखर लिख'-पढ़ 'अबैक त' ई कोनो अस्वाभाविक नहि कहल जायत। सासुर मे कोनो जमाय मान-सम्मानक आशा राखय, इहो नव बात नहि भेल, मुदा एहि सभक नहि होयब अस्वाभाविक छैक। गमइ वातावरणक निर्माण मे लेखक पूर्ण सफल भेल छथि। शिवानन्द-नारायणक वार्तालाप, ज्योतिषी जी लग हुनक बालक मुनचुनक विवाहक गप्प उठायब आ ओकरा परिणति धरि पहुँचएबा मे हुनका लोकनिक योगदान, पुनः बरियातीक सत्कार, भरिया कैं लीलाधर द्वारा घुरा देब, बेर-बेर अपमानित होयब आ लुखियाक सान्निध्य आदि घटना एकरा गति दैए आ अन्य पात्र सब एहि उपन्यासक उपजीव्य थिक। मुनचुन अपन पत्नी छायाक बाल्य सखी लुखियाक बड़ लग भ' जाइए जे विधिकरी कैं अखरियो जाइत छैक। कही तँ मुनचुन कैं सासुर मे ओएहटा एकटा लोक भेंटैत छैक जत' ओ खुजि क' मनक बात कहि सकैए। लुखिया अपन वैवाहिक जीवन सँ दुःखी अछि, कारण ओकर पति अधवयसू आ मूर्ख छैक। बेमेल विवाहक सेहो नमूना लुखियाक माध्यमे देखाओल गेल अछि। गूजन सन टिपिकल चरित्रक माध्यमे किछु हास्य आ गामक स्पष्ट चित्र उपस्थित भेल अछि। नौआ, भरिया आदिक माध्यमे समाजक सामाजिक सामञ्जस्य आ एक दोसरक निकटताक परिचय भेटैए।

उपन्यासक प्रमुख पात्र मुनचुन आ छायाक चरित्र विकसित नइ भ' सकलैए तथापि छाया अपन पतिक इच्छानुसार अक्षर ज्ञान हासिल क' लैए आ पतिक आदेशानुसार रातिए मे साइकिल पर चढ़ि पतिक संग सासुर चल अबैए। विदागरी जाहि दिनुक रचना थिक निश्चय ई आश्चर्यक बात छल। बेटीक बाप कैं हँसेरी लऽ समधियाना आबक हेतु उत्तेजित कयने छल। रचनाकार घटना क्रमे अपन निर्दिष्ट विन्दु पर पहुँचि जाइत छथि।

वरक पिता द्वारा कनियाँक पिता सँ टाका ऐंठब, ओकरा अपमानित करब आदि-आदिक खिस्सा लोक खूब सुनने अछि आ लिखलो गेल अछि। मुदा उनटा बात भेल एहि मे, कनियाँक पिता द्वारा वरक पिताक अपमान नव ढंगे कहल गेल। एकर समीक्षा मैथिली जगतक सुविख्यात व्यक्ति डॉ० सुरेश्वर झा द्वारा भेल छल, जाहि मे ओ इएह मत प्रकट

कयने रहथि। मैथिली उपन्यास विधाक हेतु दुःखद बात भेल जे अमर जी दुइए गोट उपन्यास लिखि एहि विधा सँ हँटि गेलाह। वीर कन्या आ विदागरी दुनू दुइए वर्षक अन्तराल मे लिखल गेल मुदा रचनाकारक क्रमिक विकास तैयो देखल जा सकैए। जत' वीर कन्या मे शिथिलता छैक ओतहि विदागरी मे गति आबि गेलैक। दुनू रचनाक पात्र योजना, ओकरा लोकनिक भाव, वार्तालाप, नाम आ विचरण भूमि, सब किछु एहन अछि जकरा विशुद्धगमइ कहल जा सकैए। गामक माटि-पानिक सुगंध दुनू रचना मे पाठक कैं भेटैत छैक। दुनू उपन्यासक नामकरण सार्थक अछि। 'बीर कन्या' अर्थात् किछु एहन गुण सँ युक्त ने साधारण ने असाधारण अछि। विदागरी जे कोनो वैवाहिक कार्यक्रमक अंतिम परिणति थिक, सेहो हिनक नायक नायिका क' 'क' देखा देलक अछि। कन्याक पहिलबेर सविधि सासुर जयबाक घटना कैं द्विरागमन कहल जाइछ। परन्तु एतऽ ओहि घटना कैं 'विदागरी' कहब सर्वथा सोद्देश्य अछि।

दुनू उपन्यास लोकगीत सन सरल आ ललित भाषा मे रचित अछि। वाक्य सभ वीणाक संस्वरित तंत्री जकाँ सरस छैक। शब्दक संयम सँ प्रयोग क' दुनू कैं काव्यात्मक रूप देल गेल अछि। प्रणय भावनाक उदय आ ओकर अभिव्यवित जे बेर-बेर दोहराओल गेल अछि ताहि सँ संगीतात्मक प्रभाव पड़ैत छैक। पात्रसब अपने गाम -घरक लोक सब बनि गेल अछि। अमर जीक अभिव्यक्तिक विशेषता जाहि मे हास्य आ व्यंग्य दूध-मिसरी जकाँ मिलल रहैए से सबतरि भेटैए-दुनू रचना मे। गाम-घरक प्रपंच आ ताहि मे ओझराइत सरल सहज लोकक सत्यान्वेषण रचनाक मुख्य लक्ष्य अछि। वीर कन्या बाट बनौलक, विदागरी मे छाया द्वारा पतिक क्रियात्मक सहयोग अभिव्यक्त भेल, दुनू मे मैथिल ललनाक आत्म विकासक स्पष्ट चित्र बनैए। उपन्यासक प्रमुख गुण मे सँ अछि यथार्थवाद। यथार्थक काल्पनिक चित्रण द्वारा उपन्यासकार लोकनि तत्कालीन समाजक एकटा एहन ठोस चित्र उपस्थित करैत छथि जे समाजशास्त्रीय अध्ययन हेतु उपयोगी भ' जाइत अछि। इतिहासकार लोकनि एहि दुनू कृतिक नामोल्लेख मात्र क' देलनि अछि, से उचित नहि बुझना जाइत अछि।

इतिहास बनब आ इतिहास लिखब अमर जीक स्वाभाविक प्रवृत्ति छनि। काल-बोध इतिहास लेखनक प्रथम शर्त थिक। काल-बोध जाहि रचनाकार कैं छैक तकरे दिशा-बोध होइ छैक। आ ओएह दिशा-बोध रचना मे स्थायित्व प्रदान करैए। अमर जी अपन एहि दृष्टिक परिचय सबकृति मे दैत आयल छथि। हिनक इतिहास-दृष्टिक प्रथम परिचय भेटैत अछि 1956 मे आयोजित प्रथम मैथिली लेखक सम्मेलनक अवसर पर प्रकाशित रचना-संग्रह नामक ग्रन्थ मे संकलित निबन्ध 'मैथिली एकांकीः वर्त्तमान दशक' सँ। ओहि निबन्ध मे अमर जी एक दशक मे रचित एकांकी सभक ऐतिहासिक विकास क्रम सँ विवेचन कयने छथि। बृहत् ओ व्यापक स्तर पर हिनक इतिहास लेखनक आरम्भ होइत अछि ''मैथिली आन्दोलनः एक सर्वेक्षण'' सँ। वैदेही पत्रिका मैथिलीक विकास मे कते टा स्थान रखैए से कहबाक आवश्यकता नहि। ओहि पत्रिकाक ई कते वर्ष धरि संपादन करैत रहलाह। वैदेही समिति 1962 इ० मे हुनक एहि पुस्तकक प्रकाशन कयलक। आन्दोलन शब्द एहि अर्थ मे व्यवहार भेल अछि जे ओ सब क्रिया-कलाप जे मैथिली भाषी लोकनि कैं आन्दोलित आ उद्वेलित कयलकनि जाहि सँ हुनका लोकनि कैं अपन मातृभाषक प्रति अनुराग जगलनि आ एकर विकासक मार्ग खुजैत गैल। ताही सबकैं रेखांकित करबाक एक गोट साहसिक आ सजग प्रयास थिक ई पोथी। कहियो राज दरभंगाक राज-काजक भाषा मैथिलीए छल, मुदा घटना क्रम एहन होइत गेल जे अपन घरो मे एकर स्थान नहि रहि गेलैक। पहिने हिन्दुस्तानी बाद मे हिन्दी ओत' आसीन भ' गेल आ ई पछुआ गेल। उनैसम शताब्दीक उत्तरार्ध सँ 196० इ० धरिक, अर्थात सयवर्षक एहि भाषाक विकास यात्राक वर्णन सहज रूपें एहि मे भेल अछि। एहि भाषाक विकास मे प्रवासी मैथिल विद्वान लोकनिक योगदान, प्रवास मे रहि संगठित भ' संस्था सभक स्थापना, भाषा-संस्कृतिक उन्नतिक हेतु पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आदि जते स्तुत्य प्रयास भेल, ताहि सभक प्रामाणिक एवं क्रमबद्ध वर्णन रचनाकार द्वारा भेल अछि।

अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार सँ एहि भाषा मे जे नव चेतना आयल तकर उल्लेख विस्तार सँ भेल अछि। विद्यापतिक बाद जे क्रम टूटि गेल छल से कवीश्वर चन्दा झा सँ पुनः प्रारम्भ भेल आ स्वतः स्फूर्त मैथिल लोकनि ई बूझ 'लगलाह जे अपन भाषाक प्रगति हम अपनहिं क' सकैत छी। अन्यान्य भाषा-भाषी सेहो एकर गम्भीर अध्ययन मे जुटि

गेलाह। मिथिलाक आर्थिक आ सामाजिक पृष्ठभूमि ता धरि तेहन नहि छल जे ई अपना पैर पर ठाढ़ भ' सकैत। सामाजिक संस्था मे मैथिल महासभा (1910 इ०) सेहो महत्वपूर्ण काज सब कयलक मुदा किछु जाति विशेषक ई सभा छल तैं अपेक्षित लाभ नहि भेटलैक। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कैं स्पष्ट क' जखन पोथी वर्तमान युग मे अबैत अछि तँ एकर भाषा आक्रामक भ' जाइत छैक। एकर मुख्य कारण लेखकक मैथिलीक हेतु प्रतिबद्धता, निष्ठा आ समर्पण भाव अछि। मैथिली साहित्य परिषद जकर संस्थापक बाबू भोलालाल दास आ शशिनाथ चौधरी रहथि, हुनका लोकनि द्वारा सम्पादित महत्वपूर्ण काज सबक विशद विवरण अछि।

चेतना समिति पटना, मैथिली-संघ, कलकत्ता, स्वदेश गोष्ठी दरभंगा, नवरत्न गोष्ठी आदि सामाजिक साहित्यिक संस्था सभक उल्लेखनीय योगदानक विस्तार सँ एहि मे वर्णन भेल अछि। हिन्दीक विरोधी एतुक्का लोक कहियो ने रहल अपितु मिथिलाक योगदान हिन्दीक विकास मे सदा सँ रहल, मुदा हिन्दीक कट्टर समर्थक लोकनि जे एकर जड़ि खोधैत-खोधैत एकरा म्रियमाण बना देलनि ताहू पर दमगर प्रहार भेल अछि। जनगणना मे दरभंगा मधुबनी सहरसा पूर्णियाँक लोकक मातृभाषा हिन्दी लिखा देल जाइत अछि, कतेटा अतत्तह भ' रहल अछि, ताहू पर प्रकाश देल गेल अछि। एतुक्का राजनेता लोकनि मैथिलीक नाम पर कोना कनडेरिए आँखिए देखि मुँह घुमा लैत छथि, तकरो फड़िछा क' कहल गेल अछि। मैथिलीक विकास मे अवरोधक तत्त्व सबकेँ ताकि-ताकि सभक समीक्षा विस्तार पूर्वक लेखक कयलनि अछि।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमरक अत्यन्त विशिष्ट ग्रन्थ थिकनि। मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक विकास नियमित ओ तीव्रगतिसँ भेवे ने कयल। जे कोनो पत्रिका चलल से अल्पायु भेल। एहन दशा मे मातृभाषानुरागी लोकनि ओहि अल्पायु, अप्रचारित क्षीण पत्रिका सब कैं आर जोगा क 'राख' लगलाह। ओ अल्पायु पत्रिका सब सेहो अपन भाषाक नीक सेवा कयलक। किछु पत्रिका दीर्घायु सेहो भेल, ओ सब एहि भाषा-साहित्यक निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान कयलक। आवश्यकता छल ओहि समग्र अल्पायु, दीर्घायु, दीन क्षीण पत्रिका सबकें एक संगे देखक। काज कोनो सुगम नहि छल। 1905 इ० सं 1979 धरि-पचहत्तरि वर्षक अन्तराल मे जते पत्रिका प्रकाशित भ' सकल, ताहि सभक समीक्षात्मक अध्ययनक आवश्यकता बुझलनि भारतीय पत्रकारिताक शीर्ष पुरुष श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार हुनके आग्रह पर अमर जी एहि भगीरथ प्रयास मे जुटि गेलाह। पचहत्तरि वर्षक छिड़िआयल-भुतिआयल दीन-क्षीण पत्रिका सभक खोज आ अध्ययन प्रारम्भ मेल। मैथिल हित साधन, मिथिला मोद, मिथिला, भारती, विभूति, साहित्य पत्र, वेदेही, मिथिलादर्शन स्वदेश (मासिक पत्रिका) मिथिला-मिहिर मिथिला (साप्ताहिक पत्रिका) मिथिला-मित्र मातृवाणी (पाक्षिक पत्रिका), अभिव्यंजना, मिथिला भारती (द्वैमासिक पत्रिका) मैथिली कविता, आहुति, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद पत्रिका, अभियान (त्रैमासिक पत्रिका), समन्वय, अक्षत, अनामा, अग्निपत्र (अनियतकालीन पत्रिका), अर्चना, फूलपात, आदि (नेपाल सँ प्रकाशित पत्रिका)-आदि जतेपत्र पत्रिका प्रकाशित भेल, सभक समीक्षात्मक विश्लेषण ओकरा सभक उद्देश्य मैथिली साहित्य मे ओकरा सभक योगदान, सामाजिक सरोकार, सामाजिक चेतना जागृत कर' मे ओकर सभक भूमिका आदि विभिन्न पक्ष पर वृहत् प्रकाश रचनाकार द्वारा 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' मे देल गेल अछि।

ई पोथी "अलबम" थिक मैथिली भाषा साहित्यक विकासक। जे कोनो पत्रिका प्रकाशित भेल ओकर उद्देश्य, रचनाक विशेषता, रचनाकार समुदाय, सभक बानगी एहि मे संरक्षित अछि। बीसम शताब्दीक प्रथम दशक मे मैथिली भाषाक स्वरूप केहन छल, क्रमशः दोसर, तेसर, चारिम पाँचम, छठम आ सातम दशक मे एकर भाषाक रूप भंगिमा कोना परिवर्तित होइत गेल, सबटा संरक्षित-सुरक्षित अछि एहिपोथी मे। एहि पोथीक समीक्षक लोकनि एहि मे उद्धरणक आधिक्य पर कटाक्ष करैत रहलाह अछि मुदा हमरा जनैत यैह थिक एकर वास्तविक उपलब्धि। आब ने ओ पत्रिका सब उपलब्ध अछि आने ओहि सभ पर आधिकारिक रूपे किछु कहनिहार केओ छथि, तेहन स्थिति मे एतबो देखक अवसर

एहीटा मे भेटैत अछि। कते ऐतिहासिक तथ्य कैँ एहि मे पुनःपरीक्षण कयल गेल अछि आ सही तथ्यक स्थापना भेल अछि। मैथिली पत्रकारिता पर सर्वप्रथम कलम उठौनिहार थिकाह पुलकित लालदास ''मधुर''। ओ मिथिला मोद क प्रसंग लिखैत छथि जे ''ई मैथिल ब्राह्मणक जातीय पत्र थिक मुदा-मिथिलास्थ कायस्थ, क्षत्रिय भूमिहार, वैश्य एवं अन्यान्य जातिक लोक सब सेहो एकर ग्राहक छथि।'' मोदयुग, मिहिर युग, वैदेही युग मैथिली पत्रिका मे विशिष्ट रहल अछि। ओहिसब पर मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे विशद व्याख्या भेल अछि। संगहि छोट-छोट पत्रिका सब जे दू-चारि अंक प्रकाशित भऽ कालक गाल मे समा गेल तकरो सभक चर्च-वर्च एहिमे नीक जकाँ भेल आ अपन स्पष्ट-वादिताक परिचय अमर जी सबतरि देलनि अछि, जेना आचार्य रमानाथझा द्वारा संपादित साहित्य पत्र कैँ पत्रिका मानक हेतु कदापि तैयार नहि छथि।

पत्रकारिताक इतिहास मैथिली हेतु नव तँ छले जे अन्य समृद्ध भारतीय भाषा मे सेहो कमे छल। अमर जी एकरा मिशन रूप मे लेने रहथि आ बादो मे एहि पोथीक प्रकाशनक उपरान्त मैथिली अकादमी पत्रिका मे ताधरिक प्रकाशित पत्र-पत्रिकाक अध्ययन से हो प्रकाशित भेल। पत्रकारिताक इतिहास पर हुनका साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान कयल गेल। लोकक धारणा-छाल जे अमर जी निश्चय कोनो कविता संग्रह पर पुरस्कृत कयल जयताह मुदा इतिहास पर पुरस्कार सुनि लोक आश्चर्यित भेल छल। लोकक धारणा जे बनौक मुदा अमरजी इतिहास लेखनक क्रम बढ़ौलनि आ से बढ़ितहि गेल।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद जकर स्थापना 1931 इ० मे भेल संभवतः प्रथमहि साहित्यिक संस्थाछल। ओ एहि भाषाक अभ्युदय हेतु अतुलनीय सेवा कयलक, तकर इतिहास लिखि अमर जी सिद्ध कऽ देलनि जे हुनकर इतिहास बोध कते प्रखर छनि। एहि परिषदक संयुक्त मन्त्री, प्रचार आ प्रधान मंत्री होयबाक सौभाग्य से हो हिनका प्राप्त भेलनि, स्वाभाविक छल जे परिषदक आदिकालक गति-विधिक सब सूचना एकत्र करथि। बाद मे सबक्रियाकलाप मे हिनकर सक्रिय सहयोग परिषद कैँ भेटलैक अतः ई इतिहास संक्षिप्त रहितो तथ्य परक अछि आ मैथिलीक नव-नव बात सबकैँ प्रकाश मे अनलक अछि। परिषदक संस्थापक बाबू भोलानाल दास, शशिनाथ चौधरी आदि महानुभाव लोकनिक सेवाक संग अन्य साहित्य सेवी लोकनिक वर्च पर्च एहिमे नीक जकाँ भेल अछि।

एकरे आगूक कड़ी थिक अखिल भारतीय मैथिल महासभाक इतिहास। मैथिल महासभा मात्र मैथिल ब्राह्मण कर्ण कायस्थक संस्था थिक, मुदा 1910 इ० मे स्थापित ई मिथिलाक एक मात्र सामाजिक संस्था थिक। ई संस्था महाराज रमेश्वर सिंह द्वारा स्थापित भेल आ ओ एकर आजीवन सभापति रहलाह। एहि संस्थाक मूल सिद्धान्तक वैचारिक रूपेँ अमर जी विरोधी रहथि तथापि एकर सदस्य बनल रहलाह। एकर जे कोनो अधिवेशन भेल ताहिमे सक्रिय सहयोग देलनि, एहि मृत प्राय संस्था मे एखनो जान फूकि पुनः नव विचार धारा दिस आनक प्रयास कयलनि आ क' रहल छथि। एहन संस्थाक इतिहास लिखब साहसिक निर्णय छल। ओ सेहोक' देखौलनि। मैथिल महासभा मिथिला मे शिक्षा प्रचार आ समाजक शीर्ष जाति मे व्याप्त कतेको सामाजिक कुरीति कैँ हँटयबाक काज सब कयलक, जकर असरि प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ मिथिला पर पड़ल से कोना बिसरल जा सकैए? एकर महत्वपूर्ण काज भेल छल प्रवासी मैथिल समुदाय कैँ जोड़ब। ताहि मे एकरा नीक सफलता भेटलैक। प्रवासी मैथिल लोकनिक द्वारा प्रवास मे रहि मिथिला मैथिली हेतु कयल गेल उपकार स्वर्णाक्षर मे अंकित अछि।

भविष्यक शेष सब पोथी-रचनाक बीजारोपण अमर जी मैथिली आन्दोलनः एक सर्वेक्षण लिखैत-लिखैत क' लेने रहथि। एहि सर्वेक्षणक कोण मे कनेके परिवर्तन क' देला पर एकटा नव चित्र ठाढ़ भऽ' जाइत अछि। अमर जीक कल्पना आ भाषा ओहि चित्र मे जीवनक संचार क' दैत अछि।

मैथिली अकादमी शीर्ष साहित्यिक पुरुष लोकनिक प्रामाणिक जीवन आ हुनका लोकनिक साहित्यिक अवदानक विश्लेषण चाहैत छल। शताब्दी पुरुष महामहोपाध्याय मुरलीधर झा-आधुनिक मैथिली गद्यक प्रणेताक जीवनी लिखक भार अमर जी कैँ भेटलनि। मिथिला मोद सन पत्रिकाक संपादक म०म० मुरलीधर झा जीक जीवनी प्रस्तुत क' देलनि। निर्भीक निष्पक्ष निर्णायक चरित्रक महामहोपाध्याय जीक जीवनी मैथिली इतिहासक अभिन्न अंग भ' गेल।

अमर जी द्वारा मोनोग्राफ लेखनक क्रम म०म० मुरलीधर झा सँजे आरम्भ भेल तकर आगूक कड़ी छल साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा 'भारतीय साहित्यक निर्माता ''श्रृंखला मे कवि चूड़ामणि पं० काशीकान्त मिश्र ''मधुपंक'' व्यक्तित्व एवं कृतित्वक आकलन। 1944 इ० सँ 1987 इ० धरि मैथिलीक अस्तित्व रक्षा तथा विकासक हेतु मधुप जीक संग डेग मे डेग मिला, कान्ह मे कान्ह मिला काज करबाक सुयोग भेटल रहनि अमर जी कैँ। स्वाभाविक छल जे हिनक लेखनी सँ निःसृत हुनक मोनोग्राफ आत्मीय होइतहुँ सत्य एवं तथ्य परक होइत। से भेल आ मधुपजी अपन रचनाक बलेँ जे स्थान बनौलनि, तकर पुष्टि एहि मे से हो भेल।

अमर जीक मोनोग्राफ लेखनक आगूक कड़ी मे चाणक्य महाकाव्यक प्रणेता दीनानाथ पाठक ''बन्धु'' छथि। कहि सकैत छी जे बिनु अमर जीक सत्प्रयासे ने चाणक्य महाकाव्य प्रकाश मे आबि पबितय आ ने ओकर प्रणेता। हिनकहि अनवरत प्रयासेँ ओ वैदेही पत्रिकाक विशेषांक मे प्रकाशित भऽ सकल ततः पर सूर्यनारायण झा द्वारा ई प्रकाशित भेल पुस्तकाकार आ दोसर संस्करण से हो बहरयलैक। अन्यथा चाणक्य महाकाव्य भूतकालक अन्हार मे हेड़ा गेल रहितय। 'बन्धु'क मोनोग्राफ लेखन मे से हो हिनक इतिहास बोधक परिचय भेटैत अछि।

कोनो रचनाकार एकटा नमहर काल खंडक प्रतिनिधित्व करैत अछि, ओहि काल खंड मे घटित घटना क्रम सँ रचनाकार कोना अप्रभावित रहत? सब बात कैँ समेटबाक क्षमता जनिका मे छनि सैह ने इतिहासकार बनि सकैत छथि। वर्तमान युगक विश्व विख्यात रचनाकार सलमान रूश्दीक मानब छनि जे साहित्यकारे असली इतिहासकार थिक। हुनके मे काल बोध-आत्मबोध आ दिशाबोध तीनू एक्के ठाम रहैत अछि।

कथाकारक रूप मे अमर जी कैँ ख्याति नहि भेटलनि, तकर एकटा कारण इहो भ' सकैए जे हुनका हेतु एहि रूप मे ख्यातिक आवश्यकतो ने छल। ओ विभिन्न रूप मे तते ख्याति अर्जित कऽ लेलनि जे कथाकारक रूप मे ख्याति नहिओ भेटलनि ताहिसँ कोनो अन्तर नहि पड़ैत छलैक। एतबाधरि सबकैँ बुझल छनि जे मिथिला मिहिर, वैदेही, कथा दिशा आदि पत्रिका सब मे हुनक कथा छपैत रहल, पाठक पढ़ैत रहलाह। अगस्त 1980 इ० मे कथा दिशा मे पुरान पीढ़ीक रचनाकार लोकनिक कथा सभ छपल छल। अमरजीक एक गोट कथा ''समद्विबाहु त्रिभुज'' सेहो ओहि अंक मे प्रकाशित भेल। एकटा छोट परिवारक ट्रेन यात्राक एक दृश्यक वर्णन क' कथाकार अमरजी आजुक पति-पत्नीक बीच वढ़ैत अधिकार आकांक्षा आ घटैत कर्तव्य बोधक परिचय देलनि अछि। परिवार संस्थाक स्थायित्व हेतु अधिकार सँ अधिक कर्तव्य महत्वपूर्ण होइछ। एहिकथाक भाषाक बानगी देखू ''मूतल पर सूतल रहलाक कारणेँ जखन तीतल ओछाओन शीतल लगलैक त' नेना चित्कार कर' लागल' एना, डिज्-ओन' मैथिलीए टा मे होइत छैक जे एतेक कथा लिखलो पर हिनका कथाकार नहि मानबनि। हिनक केवल नओ गोट कथाक संकलन 'जलसमाधि' नामसँ प्रकाशित भऽ सकल। हिनक समग्र कथाक संकलन एकत्रैव प्रकाशित भऽ सकय तँ ओ मैथिलीक कोनहु शीर्षकथाकार सँ भरिगरे रहत।

अमर जी कलाकार छथि, नाटककार छथि। मंच पर अभिनय सँ ल' रजत पट धरि अपन कलाक प्रदर्शन ओ कयने छथि। नाटकक प्रति हुनक आकर्षण तते छल जे छात्रावस्थहि मे अनर्घ राघव, संस्कृत नाटकक तीन अंक केर मैथिली मे अनुवाद क' लेलनि, मुदा ओ प्रकाशित नहिभऽ' सकल। स्कूल मे किशोर छात्र सबकैँल क' कतेको महत्वपूर्ण नाटकक

सफल मंचन निर्देशन ओ कयलनि। मैथिलीक प्रथम सिनेमा जे ''कन्यादान'' उपन्यास पर आधारित अछि आ एही नामे बनल, ताहि मे अमैथिली भाषी कलाकार लोकनिकेँ मैथिली संवाद शुद्ध रूपें बाजक प्रशिक्षण देबाक हेतु अमर जीकेँ बम्बइ बजाआल गेलनि। ओतऽ 'हुनका ''कन्यादान'' क एक गोट महत्वपूर्ण पात्र ''लालकका'' क अभिनय कर' पड़लनि। जे कन्यादान सिनेमा देखलनि सबकेँ सब सँ जीवन्त अभिनय हिनके बुझि पड़लनि।

मंचोपयोगी एकांकी नाटकक अभाव पूर्त्ति हेतु कहियोक' अमर जी एकांकी प्रहसनक रचना क' दैत रहथि। ओ सब रचना मैथिलीक एहि विधाक न्योँकेँ पुष्ट करैत गेल। दर्शक हिनक रचित प्रहसन देखि हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ' जाइत छल। एकांकी मात्र प्रहसनेटा नइ होइत छैक, ओइ मे कोनो नमहर समस्या मुखरित भ' जाइत अछि। अमर जी रचित एकांकी सभक शीर्षक देखला सँ ई बात स्वतः स्पष्ट भ' जाइत अछि। उदाहरणार्थ ''टोपी'' ''निरक्षरता निवारक पाठशाला'' ''आधुनिक पाठ्य प्रणाली'' ''श्रमदान'', ''मलरवि' ''बाइचान्स'', ''हाकिमक हाकिम,'' ''घरैया लूरि'', ''ब्रह्मस्थान'' आदि। प्रत्येक शीर्षक सँ कोनो-ने-कोनो नमहर सामाजिक सरोकार मुखरित होइत अछि।

हुनक ''ब्रह्मस्थान'' एकांकी मे समाजक दू टा वर्गक मनोदशा आ आर्थिक दशाक नीक चित्रण भेल अछि। ब्रह्मस्थान भलें पूज्य स्थान होइए। मुदा ओकर मूल मे जे भावना अंतर्निहित छैक तकरा स्पष्ट करैत नव दृष्टिकोण उपस्थित करबाक सार्थक प्रयास भेल अछि नाटककार द्वारा। धनक बलें मतबटोरि केओ मुखिया बनैए, केयो विधायक-मंत्री बनैए। घटनाक दृश्यक संग समायोजन आ पात्र सभक अंतर्मन केँ उघाड़िक राखिदेव' बला संवाद सँ हिनक नाट्य रचना सार्थक भऽ' जाइत अछि। सर्वाधिक आकर्षक अछि हिनक पात्रोचित भाषाक प्रयोग। जाहिवर्गक पात्र हो, ओकर अपने भाषा मे ओकर संवाद हिनक नाट्य रचनाकेँ जीवन्त आ जीवनक लग ल' जाइए।

अनुवादक प्रवृत्ति अमर जी मे प्रारम्भे सँ रहल। छात्रावस्था मे ई अनर्घ राघव संस्कृत नाटकक तीन अंकक अनुवाद क' देलनि। ''विद्यापति नीति तरंगिणी'' हिनक खूब लोकप्रिय भेल छल। ओहि मे विद्यापतिकृत पुरूष परीक्षाक नीति विषयक श्लोक सबकेँ बीछि, मैथिली पद्य एवं गद्य मे अनुवाद अछि। विद्यापतिक संस्कृत रचना हुनके देसिल बयना मे पढ़वाक अवसर लोक केँ भेटलैक। मराठीक महान साहित्यकार, उपन्यासकार हरिनारायण आप्टे पर साहित्य अकादेमीक मोनोग्राफक मैथिली अनुवाद, फेर बंगला साहित्यक स्तभ पुरुष एवं भारतीय उपन्यासक जनक बंकिम चन्द्र पर साहित्य अकादेमीक मोनोग्राफक अनुवाद कऽ' अमर जी सिद्ध क' देलनि जे ओ कहेन सिद्ध हस्त अनुवादक छथि। तँहि ने परशुरामक बीछल बेरायल कथा (बंगला कथाकारक) हिन्दी सँ अनुवाद पर साहित्य अकादमी अमर जीकेँ अनुवादो पुरस्कार सँ सम्मानित कयलकनि।

साहित्यिक संस्था सभक सम्मान अमर जी केँ भेटिते रहल छनि, ओकरा सब केँ गनायब त' ओ नमहर लिस्ट भऽ' जैत।

पत्रिकाक संपादन, पुस्तकक संपादन हुनका हेतु सबदिन सँ प्रिय काज रहल अछि। 1955 इ० मे प्रकाशित विद्यापतिके देश मे, 57 गोट मैथिली हिन्दी कविताक संकलन अछि। ई पोथी सिद्ध करैत अछि जे एतुक्का लोक हिन्दीक विरोधी कहियो ने रहल। ''विजय शंख'' दोसर सम्पादित पोथी चीनी आक्रमणक पृष्ठभूमि मे रचित वीर रसात्मक मैथिली कविताक संग्रह थिक जकर प्रकाशन 1963 इ० मे भेल छल। रैमागाम मे सम्पन्न कवि गोष्ठी मे जते कविता पाठ भेल छल सभक संकलन हिनके सम्पादकत्व मे प्रकाशित भेल छल। मैथिली अकादमीक प्रतिष्ठित पोथी कविता संग्रहक संग संपादक अमर जी रहथि। साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'स्वातंत्र्य स्वर' ऐतिहासिक महत्वक काज थिक। एहि मे स्वतंत्रताक हेतु भेल संघर्ष मे मैथिली कविताक योगदान कते रहल से स्पष्ट 'भेल अछि। संपादन कला थिक तकर परिचय हिनका द्वारा संपादित पोथी, पत्रिका सभ मे भटैत अछि। ओकर सभक सारगर्भित भूमिका, रचना सभक स्थान निर्धारण, भाषाक त्रुटि केँ सम्हारिदेव आदि कते विशेष बात सब अछि जे आइयो आकर्षित करैए।

अमर जीक नवीनतम सम्पादित थिकनि मैथिली मे लिखित बाल-किशोरोपयोगी कथा सभक संकलन 'कथा किसलय' जे साहित्य अकादेमी नई दिल्ली सँ प्रकाशित भेल।

एकर कथा सभ कोनहु भारतीय भाषाक समान धर्मा कथा सभक समकक्ष राखल जा सकैत अछि।

बालकथा लेखन, बाल साहित्य रचना, शिक्षोपयोगी पोथी सभक रचना आ संपादन मे अमर जी आदिए सँ रुचि देखौलनि अछि। साठि वर्ष सँ अधिक सँ ओ साहित्य साधना मे रत छथि आ बाबन-वर्ष सँ मैथिलीक शिक्षण मे छथि। आइयो ओ ओहिना क्रियाशील छथि एहि भाषाक समृद्धिक हेतु। मैथिली अकादमी पत्रिकाक जनवरी-फरवरी'89 अंक मे छओ गोट निबंध प्रकाशित भेल। छओ निबंध मे सँ पाँच गोट मैथिली कथा विकास पर दृष्टिपात करैत अछि आ निबंधकार लोकनि छथि जयकान्त मिश्र, मायानन्द मिश्र, रमाकान्त मिश्र, ललितेश मिश्र, नीताझा। एकमात्र निबंध एहि सँ हँटिक' अछि, मैथिली पत्रकारिताक इतिहासः अधुनातन परिप्रेक्ष्य। एकर निबंधकार छथि अमर जी। ई निबंध पत्रकारिताक इतिहासक एक्सटेन्शन थिक। ओ पोथी 1905 सँ 1979 इ० धरिक पत्र-पत्रिकाक विवरण-विश्लेषण करैए, आ ई 1980 सँ 1988 इ० धरिक नओ वर्षक पत्र-पत्रिकाक सूचना-विवरण आ विश्लेषण प्रस्तुत करैए।

ई निबन्ध चौबीस पृष्ठक अछि। पत्र-पत्रिकाकेँ चलऽ मे अवरोधक तत्त्व सबकेँ एहि मे नीक जकाँ ताकि क' पाठकक सोझाँ मे राखल गेल अछि। व्यावसायिक दृष्टिक अभाव केँ अमर जी एकर मुख्य अवरोधक मानै छथि जे सत्य अछि। आश्चर्य छैक जे 1980-88क अल्पअवधि मे छत्तीस गोट नव पत्र-पत्रिका प्रकाशित भेल। सभ सँ आश्चर्यक बात छल एहि अवधि मे दू गोट दैनिक पत्रक प्रकाशन आ राजधानी पटना सँ प्रकाशित हिन्दी दैनिक 'पाटलिपुत्र टाइम्स' मे एक पृष्ठ मैथिली हेतु देव।

आचार्य ''सुमन'' जी द्वारा अक्टूबर 1955 इ० सँ मैथिली दैनिक ''स्वदेशक'' प्रकाशन आरम्भ भेल। किछु दिनुक उपरान्त ओ बन्द से हो भऽ' गेल। ''स्वदेश'' पुनः पुनर्जीवित भेल 1981इ० पंद्रह अगस्त सँ। किछु दिन धरि जान पर खेपि क' ओकरा चलाओल गेल। जेना होइत रहलैक अछि पुनः ''स्वदेश'' बन्द भ' गेल। एकटा नाटकीय घटना क्रम मे 1907 सँ 1954 इ० धरि साप्ताहिक रूपेँ दरभंगा सँ, 1960 इ० सँ पटना सँ साप्ताहिक रूपेँ प्रकाशित मिथिला मिहिर अकस्मात् फरवरी 1984 इ० सँ दैनिक पत्रक रूप मे प्रकाशित होअ' लागल। मुदा ओकरो दुःखद अन्त भ' गेल। जहिना उदित भेल तहिना अस्तो भ' गेल। 'पाटलिपुत्र टाइम्स हिन्दी दैनिक मे एक पृष्ठ पर मैथिली रहैत छल ताहू सँ लोक आशान्वित भेल। मुदा लोकक आशा आकाश कुसुम सिद्ध भेल। अमर जीक निबन्ध-प्रबंध रचना से हो लालित्य सँ परिपूर्ण रहैए। सृजनात्मक साहित्यकार अमर जी निबन्धकारक रूपमे सेहो खूब ख्याति अर्जित कयलनि अछि। ''एकांकीः वर्तमान दशक'' आलोचना साहित्य जगत मे पर्याप्त चर्चित प्रशंसित भेल। अपन दृष्टिकोण केँ बड़ स्पष्टता सँ, तर्क सहित निबन्ध-प्रबन्ध मे रखै छथि, संदर्भ-बहुलता सँ ओकर प्रामाणिकता बढ़ैत छैक, हिनक भाषा लालित्य ओ उपस्थापन सँ ओ सृजनात्मक स्तर पर पहुँचि जाइत अछि। इतिहास मे सेहो रसक संचार होअ' लगैत अछि।

साहित्य रसिक, साहित्यकार लोकनिक आत्मीय घनिष्ठ, प्रेरक अमर जीक अभिनन्दन सम्पूर्ण मातृभाषानुरागीक अभिनन्दन थिक। प्रशंसक आलोचक आ छात्र सभक बीच ओ प्रिय छथि।

एहन साहित्य रथी अमर रहता अपन सेवा ओ कृतिक बलें। आचार्य सुमन जी अपन ''कवि-नवतिका'' मे अमर जी क परिचय एहिशब्द मे देने छथि

कला कलित कृति अमर नव चन्द्रनाथ मन मानि।
विकसित कैरव विमल दल रस-मधुकर रुचि आनि।।

''वस्तुतः यथार्थनामा चन्द्रक अमर रश्मि सँ मैथिलीक वर्तमान साहित्य सनाथ भेल अछि।''

द्वितीय खण्ड

संस्मरण

कलानाथ श्री चन्द्रनाथ

श्री गोविन्द चौधरी

भगवान द्वैपायनक सूक्ति–'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' साहित्यिक समस्त कोटिमे कविक उच्चतर स्थान प्रदान कयलक अछि। पुनः जाहि तीन विशिष्टताकेँ ई सूक्ति महिमा प्रदान करैत अछि ओ थीक मनीषी (मननशील), परिभूः (चतुर्दिकक मार्मिक द्रष्टा), स्वयम्भूः (स्वतःस्फूर्त)। एतदनुसार कविक सर्वोपरि गुण कहल गेल अछि, जे अन्य ककरो छाया मात्रोकेँ ग्रहण नहि कय त्वरित स्वतःस्फूर्त पद-विन्यास आ लालित्यसँ मण्डित स्वाभाविक सहजता सँ सुव्यक्त कय देथि ओ कहाबथि कवि।

दृष्टान्त रूपैं विद्यापति एवं पक्षधर मिश्र दुनूक वाग्विलास प्रस्तुत कयल जा सकैछ। राजा शिवसिंहक प्रेरणे विद्यापति एक भोज आयोजित कयलनि, जाहिमे तत्कालीन शतावधि पण्डित लोकनि निमंत्रित भेलाह। ताहिमे उद्भट् विद्वान एवं कवि पक्षधर मिश्र सम्मिलित भेलाह। परन्तु ओ ततेक क्षीणकाय (दुब्बर) एवं साधारण भेषमे आबि एक कोणमे जा बैसलाह जे नगण्य छलैक। किछु कालक बाद विद्यापतिकेँ ई दृष्टिगत भेलथिन तँ हुनका मर्मकेँ चोट लगलैनि। मैत्रीक भावेँ ओ झट पक्षधरक समीप जा कहि उठलाह– ''हे मित्र!

प्राघूणो घूणवत् कोणे सूक्ष्मत्वेनोपलक्ष्यते।''

तुरन्त पक्षधर दोसर चरणक आपूर्ति करैत कहि उठलाह– कोनो बात नहि।

''नहि स्थूलधियः पुंशः सूक्ष्मो दृष्टिः प्रजायते।।''

अर्थात्, अहाँ तेहन सूक्ष्म (दुब्बर-पातर) छी आ घून जकाँ कोणमे आबि बैसल छी जे दृष्टि नहि पड़ल। विद्यापतिक क्षमायाचना मार्मिक छल। परन्तु पक्षधरक त्वरित आपूर्ति परिहास कय उठल–''ई कोनो तेहन बात नहि। स्थूल बुद्धि पुरुषकेँ सूक्ष्मपर दृष्टि नहि जाइत छैक।''

एक कविक हार्दिक पश्चात्ताप जे कवितेमे उमड़ि उठल ओकर दोसर पाँतीक आपूर्ति ओहो छन्द-लयमे सत्य तथ्यकेँ यथावत रखैत दोसर कवि कहि देलनि तुरन्ते परिहासक पुट भरैत तेँ ई स्वतःस्फूर्तक विशिष्ट दृष्टान्त कहल जाइत अछि।

ई विशिष्टता युगल हम अमरजीमे आइ पचास-पचपन वर्षसँ देखैत आबि रहल छी। जे हिनक अनन्य अछि, त्वरित आ स्वतःस्फूर्त, ताहि शिखरपर हिनक स्वाभाविक कलाकेँ महिमामण्डित आरूढ़ करैत अछि जे हिनका अपन पूर्वजक उत्तराधिकारमे उपलब्ध कहल जाय।

प्रायः 1945-46 क कोनो मास। स्वनामधन्य डा. अमरनाथ झाजीक प्रेरणे एक मैथिली कविगोष्ठीक आयोजन राज दरभंगाक एक विशिष्ट कोठीमे भेल रहय जाहिमे हमर अमरजीसँ पहिल परिचय भेल रहय। चौदह-पन्द्रहक वहिक्रमक ई नवोदित कलानाथ ललाटमे पैघ ठोप-चानन, स्वच्छ परिधान धोती कुर्त्तापर एक रेशमी तौनीकेँ अपन काँख दऽ बामा कान्हपर लटका माथपर पाग, प्रफुल्ल-प्रसन्न वदन किशोर जखनहिं मंचपर कविता-पाठक आशयसँ आहूत भेलाह तँ रंगमंच-संचालक टीपि देलनि–''अमरजीक कविता-संकलन अछि 'गुदगुदी' आ कविताक शीर्षक अछि 'अल्हुआष्टक।' ताहिपर समस्त समवेत समुदाय खिलखिला उठल आ अमरनाथ बाबू उल्लसित चित्तें हिनकर प्रशंसा करैत कहलनि जे भलमनसाहतक प्रतीक एहि नवोदित कलाकारक भविष्य उज्वल अछि। हिनक ठेठ मैथिली शब्दक व्यवहार अपन पंक्ति सभमे विशिष्ट अछि।

ताहि दिनसँ अद्यपर्यन्त अमरजीक काव्यप्रतिभा विशिष्टताक संग अनन्य रहल अछि।

अद्यपर्य्यन्त हिनक एको पाँती एहन देखल-सुनल नहि अछि, जे कोनो अन्य कविक उच्छिष्ट किंवा छायाग्राहिणी हो। ठेठ मैथिली ग्रामीण भाषापर तँ हिनका पूर्णतः स्थापित स्वत्वाधिकारे अछि।

हम जखन 1983 (मार्च) सँ अपन व्यवसाय ओकालतिसँ संन्यास लेल आ विरक्त भय गाम बसलहुँ तँ एक दिन (कतिपय वर्षक बाद) हमरा नामे साहित्य अकादेमी दिल्लीसँ एक लिफाफ हस्तगत भेल। हमरो एक कविताकेँ कोनो विशेष संकलनमे सम्मिलित करबाक अनुमति माङल गेल छल। चकित-विस्मित हमरा अनुमान नहि भय सकल जे कोन माध्यमे ई कविता (1942 क अगस्तमे लिखल गेल) से दिल्ली जा जूमल। किछु दिन पश्चात् हमरो ओहि संकलनक एक प्रति साहित्य अकादेमीसँ प्राप्त भेल। पुनः किछुए दिन पश्चात् किछु टाका सेहो आयल। ओहि कविताकेँ पुनरावलोकन कयलहुँ तँ स्पष्ट भान भेल जे एहि कविताक कतिपय उत्कृष्ट पाँती हमर लेखनीक नहि थिक। परंच ओ किछु पाँती हमर अन्तर्मनकेँ एतेक उत्फुल्ल कय उठल जे अपन एहन सुगुप्त हितैषी कविबन्धुक जिज्ञासा करय लगलहुँ। पश्चात् ज्ञात भेल जे 'प्रदाने प्रच्छन्नम्' ई अमरजीक भलेमानुषी विशिष्टता थीक जकर चर्चा ई कहियो कथमपि हमरा किंवा अन्योक लग नहि कयलनि।

हिनक व्यंग्य-कटाक्षक उत्प्रेक्षा मधुपक मधुपानसँ कयल जा सकैत अछि जे ''पुष्पं पर्य्युशितां त्यजन्ति मधुपाः'' जाहि पुष्पक पटलपर कोनो एक मधुप मधुपानक हेतु बैसतैक तँ ओहि पुष्पक पटलपर दोसर मधुप कथमपि नहि बैसतैक। विधाता मधुपकेँ डँसक प्रशक्ति प्रदान कयने छथिन परन्तु जाहि फूलक पटलपर ओ बैसैत अछि, ओकर मधुपान करैत अछि, ओहिपर एक दाग (बिन्दु) पर्यन्त नहि उगैत छैक आ मक्षिका (माछी) केँ दंश नहि छैक, परंच ओ दुर्गन्ध भेलेपर बैसैत अछि।

नब्बे वर्षक आयुकेँ पार कय रहल छी। आब हमर स्मरणशक्ति हमर मस्तिष्ककेँ त्यागि रहल अछि, तथापि एकाध उद्धरणक लोभक संवरण नहि कय पाबि रहल छी।

''बिष्ठी लय दँतखिष्ठी जकरा, जोड़ा बड़द द्वारिपर तकरा
जकरा नहि नवान्न होइत छल, ओ अनका खरिहान दैत अछि
हमर कथा केयो कान दैत अछि।''

''नवका ओ टुटपुजिया नेता, सभ कोठी अजबारि रहल अछि
जगकेँ युग परतारि रहल अछि।''

वयसमे हमरासँ बीस वर्ष कनिष्ठ, परन्तु योग्यता एवं भाव-चित्रणमे हमरासँ बीस बड़ उत्कृष्ट एहि कलानाथ चन्द्रनाथकेँ अमरताक आशीष दैत हमर हृदय सगर्व कहि उठैत अछि जे–''उपमा अपन अहीं, नहि आन।''

●

अभिनन्दनीय मित्र श्रीअमरजी

श्री रामचरित्र पाण्डेय 'अणु'

आधुनिक भारतीय भाषा सभमे मैथिली भाषाक इतिहास, प्राचीनतम कहल जा सकैछ। एकर प्रगति निरन्तर होइत रहल अछि 'हँ ई कहि सकैत छी जे कोनो कालावधिमे प्रगति तीव्र रहल तऽ कोनो कालावधिमे मन्द किन्तु निरन्तरता अक्षुण्ण रहल। बीसम शताब्दीमे प्रगति तीव्र भऽ गेल'। एहि कालावधिमे साहित्यक विविध विधामे रचना होमय लागल। कथा, उपन्यास, एकांकी, नाटक, यात्रा वर्णन, संस्मरण, इतिहास, निबन्ध, जीवन वृत्त, आलोचना, समीक्षा आदि गद्य साहित्यकें समृद्ध करय लागल। क्षितिजक विस्तार, भाव, शैली, वाद, टेकनिक आदि अनेक क्षेत्रमे होमय लागल। नवीन-नवीन प्रयोग होमय लागल। कारण छल विश्वक विभिन्न भागक सम्पर्क, विभिन्न भाषाक विविध प्रकारक रचनासँ परिचय, जकर माध्यम मुख्यतया अंग्रेजी साहित्य रहल। तकर कारण रहल अंग्रेजी शासनक द्वारा शिक्षाक माध्यम अंग्रेजीकैं बना देब। जकर परिणाम नीक अधहलाह दुनू भेल। संस्कृतिक ह्रासो भेल आ दृष्टिकोणक विस्तारो भेल।

यदि बीसम शताब्दीकैं पूर्वार्ध आ उत्तरार्ध दू भागमे विभाजित कयल जाय तँ पूर्वार्ध मे मुन्सी रघुनन्दन दास, पं० चन्दा झा, पं. सीताराम झा प्रभृति अनेक मैथिली पुत्र मैथिली साहित्यकँ समृद्ध करय लगलाह। उत्तरार्ध मे पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' मिथिला-मिहिरक सम्पादकक रूपमे आ स्वयं एक प्रतिभावान कविक रूपमे एकरा उत्तरोत्तर समृद्ध करय लगलाह। पं. काशी कान्त मिश्र 'मधुप' पं. ईशनाथ झा, पं. रमानाथ झा, पं. काञ्चीनाथ झा 'किरण', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', पं. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (हिन्दीक नागार्जुन) पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदि अनेक व्यक्ति मैथिली साहित्यक चहुमुखी विकासमे दत्तचित्त सँ आ समर्पित भावसँ लागि गेलाह। दड़िभंगा केन्द्र स्थल छल। परन्तु पटना, काशी, कलकत्ता, प्रयाग आदि अनेक शहरसँ अनेक पत्र-पत्रिका प्रकाशित होमय लागल। लेखक रचना कारक बाढ़ि उमड़ि पड़ल। विद्यापति-पर्व गाम-गाममे आयोजित होमय लागल। श्रद्धेय किरण जी तऽ अपना क्षेत्रमे प्रतिमास विद्यापति पर्व मनाबय लगलाह। एकटा क्रान्ति आनि देलनि मैथिली साहित्यक विकासमे।

आब एहि विकासक हेतु श्री अमरजीक योगदानक किछु चर्चा अपना स्मरणक आधार पर करी। दरभंगा अमरजीक प्रधान कार्य क्षेत्र रहल। एतय ओ अनेक साहित्यकारक निर्माण केलनि। 'नवरत्न गोष्ठी' नामक एक गोट साहित्यिक संस्थाक स्थापना हिनकहिँ सत्प्रयाससँ भेल। मासे-मास गोष्ठी करथि नवीन-नवीन रचना कवि सब सुनबथि। कहानी, एकांकी, लेख आदिक रचना बढ़य लागल। कतोक साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित होमय लागल। प्रो० कृष्णकान्त मिश्र नियमित रूपसँ 'वैदेही'क प्रकाशन करथि। श्री अमर जीक योगदान दरभंगाक प्रत्येक साहित्यिक कार्य-कलापमे रहबे करनि। श्री अमरजी अनेक पोथीक प्रकाशनमे योगदान देलनि। कतोक पोथीक भूमिका लिखलनि। अनेक नाटकक मंचन करौलनि अपना निर्देशनमे। दरभंगाक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रायः प्रत्येक कार्य कलाप मे हिनक सक्रिय रूप रहल।

श्री अमरजी एहन कवि छथि जिनका प्रत्येक कवि सम्मेलनमे श्रोता बाध्य कऽ दैत छलनि दोहर-तेहरा कऽ कविता पाठ करबाक हेतु। हिनका कतेको बेर 'कहू कुशल' नामक कविता कहय पड़ल हेतनि। हँ, ई अवश्य जे जनताकैं सतत चेतबैत रहलथिन साकांक्ष रहबाक लेल– ''जगकैं युग परतारि रहल अछि।''

श्री अमरजी स्वाभाविक रूपमे एक विनोद प्रिय लोक रंजक कविक रूपमे विख्यात रहलाह। साहित्यक अनेक विधामे ई रचना कार्य कयलनि। जकर साक्षी एहि युगक प्रत्येक मैथिल अछि आ रहत। किन्तु हिनक शोध कार्य ''मैथिली पत्रकारिताक इतिहास'', वस्तुतः हिनका अमर बना देलक। साहित्यक इतिहास, पत्रकारिताक इतिहासक

बिना अपूर्ण छल। अतः ई कृति श्रम साध्य, श्लाध्य आ स्तुत्य अछि।

मातृभक्ति हिनक जे हमरा देखल अछि तकर उल्लेख प्रसंग-वसात करैत छी। घर सँ बाहर होथि तें जाबत धरि हिनकमाय जीवित रहलथिन बिना हुनका सभ बात जे कतय जाइत छी, कखन धरि धूरि आयब, बिना कहने आ चरण स्पर्श कऽ आदेश, आशीष प्राप्त कयने नहि बाहर होथि कारण जे मायक प्राण ''बतहू'' एं पर अँटकल रहनि।

श्री अमर जी एक सुशिक्षित, सुसंस्कृत, दक्ष, कर्त्तव्य निष्ठ, उत्तरदायी आ समयक पाबन्द लोक छथि। जे कार्य करब स्वीकार कऽ लेथि ओ ओकरा पूर्तिमे दत्त चित्त भऽ लागि जाथि। अनुशासन प्रिय तेहन जे झिंगुर बाबू सन अनुशासन प्रिय प्रधानाध्यापककेँ कहियो अवसर नहि देव कोनो शिकायतक। छात्रवृन्दमे तेहन प्रिय जे अपन समस्या हिनका समक्ष निः संकोच, ओ सभ राखथि आ हिनक सत्परामर्श सँ लाभान्वित होथि। हमरा देखल अछि जे कतोक छात्रकेँ अपना आवासस्थल मे आश्रय प्रदान करथि, हुनक कठिनता सूनथि आ ओकर समाधान करथि। मिथिलाक ई सुपुत्र मायक हृदय जुड़ा देल कारण यदि एहने औरो सभ पुत्र मिथिलाक भऽ जाथि तँ कोनो कारण नहि जे मिथिला भारत वर्षक वैह क्षेत्र पुनः नहि भऽ जायत जे जनक याज्ञवल्क्यक समयमे छल। मिथिलाक श्री अमरजी एक अभिनन्दनीय सुपुत्र छथि। ओ अमर भेल छथि अपन सेवासँ धन्य छथि, धन्य।

आदरणीय गुरु अमरजी

श्री राधानन्दन झा

ई जानि आत्मिक उल्लास भेल जे हिन्दी एवं मैथिलीक यशस्वी कवि एवं व्यंग्य विधाक शलाका पुरुष सुकवि श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क सारस्वत अवदानक लेल सत्कृत एवं समादृत करबाक उपलक्ष्यमे एक स्तरीय अभिनन्दन-ग्रन्थ अर्पण करबाक आयोजन कयल गेल अछि। वस्तुतः आयोजनक ई अभियान प्रशंसनीय अछि। कोनो सारस्वत पुरुषक अभिनन्दन समाजक सांस्कृतिक संचेतनाक उज्वल द्योतन अछि। श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' यावज्जीवन मैथिली एवं हिन्दी वाङ्मयक बहुपथीन अभिवृद्धिक लेल सम्पूर्ण शक्तिसँ सक्रिय छथि और हुनक भाषिक सेवासँ मैथिली एवं हिन्दी साहित्य गौरवान्वित भेल अछि।

विगत पचास वर्षसँ आदरणीय अमरजी सँ हमर रागात्मक अनुबन्ध उज्जीवित रहल अछि। हम हुनक सारस्वत संचेतनासँ विमुग्ध रहलहुँ अछि। अपन आदरणीय गुरुक एवं लोकचेतनाक जाग्रत कविक सारस्वत उत्कर्ष देखि आइ अतीव प्रसन्नता होइत अछि।

अनेक झंझावात एवं अवरोधक बीच समय-समयपर साहित्य जगतमे एहन प्रकाश-पुरुष अवतरित होइत छथि जनिक अवदान समाज, भाषा एवं साहित्यकेँ विभिन्न स्तरपर प्रसारित एवं पुरस्कृत करैत अछि। काव्य-सर्जनाक दृष्टि सँ मिथिलाक महत्ता, विशिष्टता और गरिमा अत्यन्त प्रशस्त, उदात्त, उज्ज्वल और विश्वविख्यात रहल अछि। प्रतिभाक जाहि लब्ध-वरपुत्रक अलौकिक लेखनीसँ एहि हास्यशोभना वसुधाकेँ काव्य-जगतमे ख्याति भेटल अछि ओहिमे अभिनन्दन-नायक पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क स्थान विशिष्ट अछि।

ई मैथिली एवं हिन्दीक प्राणवन्त और प्रतिभावन्त रचनाकार छथि। चन्द्रनाथसँ अभिप्राय अछि भगवान शिवक और सर्वोपरि मृत्युंजय शिवक। अतएव चन्द्रनाथ मिश्रक 'अमर' उपनाम सर्वथा सार्थक, समीचीन और सार-सिद्ध अछि।

कविता वस्तुतः कविक अन्तस्तलक समग्र अस्मिताक सम्पूर्ण सूक्ष्म अस्तित्वक अभिव्यक्ति थिक जे कवि सामाजिक जीवनक धरातलपर जतेक संघर्ष-मर्ष, प्रहार-प्रताड़न, तिरस्कार-बहिष्कार और गरलोपम कटुताक आस्वादन करैत छथि, ओकर हुनक कवितामे ओतेक ऊष्मा, तेजस्विता और लोस्पर्शिता रहैत छनि। कवि जन-जन-रंजन एवं युगक शिरोभूषण होइत छथि।

अमरजीक जीवन-संचरण कंटकाकीर्ण पथसँ बढ़ैत रहल अछि, ओ झंझावातमे प्रदीप बनल रहैत छथि और आगिमे कर्पूर बनैत बढ़ल गेलाह। अनेक अवरोध एवं पैशाचिक प्रतिकूलताक आघातसँ उत्पन्न दारुण व्यथा हुनक स्वरमे अनेकधा सम्मूर्त भेल छनि।

पीड़ा-प्रताड़नाक महासागर अन्तस्तलमे समाहित होइत अमरजी बाहरसँ संपूर्णतः निश्चिन्त-निर्द्वन्द्व, निम्र्लान और परितुष्ट प्रतीत होइत छथि, परंच हुनक जिह्वापर तरंगित हास और स्वरक माधुर्यक पाछाँ यंत्रणा और वेदनाक अमित ज्वाल प्रज्वलित होइत रहैत अछि।

विगत छौ दशकसँ अनवरत मैथिली एवं हिन्दीक काव्य-कुसुम अर्पित करबाक क्रममे एहि संकल्पशील सरस्वती-साधककेँ कतेक व्यवधान और विघ्नक सामना करय पड़ल हेतैनि, ई पता नहि। अमरजीक विस्तीर्ण काव्य-फलकपर जीवन और जगतक विभिन्न पक्ष अपन वैविध्य और वैषम्यक संग रूपायित होइत रहल अछि। हुनक विशिष्ट छवि आ कर्तृत्व-विम्ब एक रससिद्ध हास्यकविक रूपमे जनचित्तपर अंकित अछि। रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्दक

बहुविध सन्दर्भ और प्रयोग हुनक चमत्कारिणी कवितामे उद्घाटित भेल अछि, परंच विसंगति, बैरूप्य, अन्तर्विरोध और पाखण्डपर आधृत हुनक रचनाक वैलक्षण्य, दीप्ति, भंगिमा और छटा पुनर्पुनः आस्वाद्य और आत्मधार्य अछि। सामाजिक छल, आडम्बर, प्रपंचना अथवा अन्यथा प्रदर्शनकेँ अन्नावृत कय सत्य-शिव और सुन्दरक ओ उन्मुक्त आह्वान कयल।

हुनक हास्य हास, परिहास और वाग्विलासक जमघट नहि, अपितु ओ लोक-सत्यक उपस्थापन, धिक्कार-छिःकार और बहिष्कारक मांगलिक अनुष्ठान अछि। हुनक हास्य-कविता विमल-विस्तीर्ण दर्पण अछि, जाहिमे वर्तमानक विकृत, विदुषित, विकर्ष और विषम मुखमंडल अपन यथारूपतामे प्रतिविम्बित भेल अछि। हुनक रचना मे वज्र-गर्भित पुष्पप्रहार होइत गेल अछि और कमल-नीलसँ कृपाणक सृजन भेल अछि। हुनक एक-एक शब्द सुविन्यस्त, सक्षम, सतेज और अस्थान्तरणीय अछि। उत्तमोत्तम शब्दक उत्तमोत्तम क्रम-विधान, सशक्त अनुभूतिक सहज उच्छलन, विम्बात्मक चिन्तन और आवेग एवं कल्पनाक भाषा हिनक कवितामे जे छनि ओ अमर जीक काव्यकेँ शीर्षपर पहुँचा देने छनि।

हुनक हास्य-सृष्टिमे अंग्रेजीक विनोद, वक्रोक्ति, व्यंग्य और प्रत्युत्पन्नमतित्व सब एकाकृत भय गेल अछि। अमरजी शब्द-कवि और अर्थ-कविसँ श्रेष्ठ उक्ति-कवि और रस-कवि छथि। हुनक रचनाकृर्तत्वक संस्थापन, प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास त्रिवेणी तटपर भेल छनि और ओ निर्विवादतः प्रथम कोटिक सारस्वत कवि छथि। पल-पल-प्रफुल्ल, पल-पल विकस्वर, काल-जेता शब्द-साधक छथि श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

आइ हुनक अकलुष अभिनन्दनक रूपमे महानमस्या, महायशस्विनी एवं महीयसी मिथिला महीक श्रीमन्त इतिहास-रत्न प्रतिभा-पुरुषक अभिनन्दन करैत छी। आदरणीय अमरजी दिगदिगन्तकेँ हास-दृष्ट कयनिहार सहर्ष-सहास शताधिकायु होथि, ई हमर आन्तरिक शुभेषणा अछि।



हमर प्रिय अमरजी

प्रो० मदनेश्वर मिश्र

पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'सँ हमरा गत शताब्दीक छठम दशकमे सर्वप्रथम पूर्णिया जिला मैथिली साहित्य परिषदक तत्त्वावधानमे मनाओल गेल विद्यापति-स्मृति दिवसक अवसरपर भेट भेल। हम हुनक सादगी तथा हुनक अद्भुत कवित्व क्षमतासँ मुग्ध भ' गेलहुँ। पूर्णिया जिलाक कला भवनक मंचपर विद्यापति पर्व मनाओल गेल छल। आनो-आनो कवि एहि अवसरपर ओतय उपस्थित छलाह, मुदा अमरजी तँ ओहिमे देदीप्यमान छलाह। हमरहि लोकनि द्वारा विद्यापति पर्व समारोह पूर्णिमामे आयोजित कयल जाइत छल। हिनक कवित्व आ व्यक्तित्वसँ प्रभावित भ' हमरा लोकनि निश्चय कयल जे आब हमरा लोकनि प्रत्येक वर्ष विद्यापति पर्व मे अमरजीकेँ अवश्य आमंत्रित करब। हमरा स्मरण अछि जे हमरा लोकनिक प्रयाससँ अमरजी अनेक बेर पूर्णियाक श्रोताकेँ विद्यापति पर्वक अवसरपर मंत्रमुग्ध कयलनि। हिनक व्यक्तित्वसँ हम पूर्णियहि मे परिचित भेलहुँ।

1972 ई० मे हम मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक रूपमे दरभंगा अयलहुँ आ तखन सँ अमर जीसँ अनेक बेर भेट भेल अछि आ हुनकासँ परिचय प्रतिदिन गाढ़ भेल गेल अछि। 1975 ई० मे पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्रक 'किछु देखल, किछु सुनल' पर हुनका साहित्य अकादेमीक पुरस्कार भेटलनि आ हमरा एखनहुँ स्मरण अछि जे ओहि पोथीकेँ प्रेससँ निकालबामे अमरजीक हाथ छलनि। एक दिन ओहि पोथीकेँ हाथमे नेनहि ओ विश्वविद्यालय कार्यालय, मोहनपुर (ओहि समयमे मोहनपुरहिमे विश्वविद्यालय कार्यालय छलैक) आयल छलाह आ हमरा कहने छलाह जे ओ ओहि पोथीक 'प्रूफ' देखि रहल छथि। ओ हमरा इहो कहने छलाह जे ओहि वर्ष पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्रक पोथीपर अकादेमीक पुरस्कार भेटब लगभग निश्चित छलैक, कारण जे ओहि टक्करक दोसर पोथी हुनका देखवामे ओहि वर्ष नहि आयल छलनि। ओहि समयमे श्री नन्दजी सिंह दरभंगाक जिला शिक्षा पदाधिकारी छलाह आ हुनका अमरजी लेल विशेष आकर्षण छलनि। नन्दजी बाबू स्थान-स्थानपर साहित्यिक गोष्ठीमे स्वयं जाथि आ हुनक विशेष आकर्षण छलथिन अमरजी। बादमे हम सरकारसँ माँगिकेँ नन्दजी सिंहकेँ मिथिला विश्वविद्यालयक वित्त पदाधिकारी बनाओल। ओ एक सच्चरित्र आ सुघड़ व्यक्ति छलाह।

हमरा विशेष रूपेँ अमरजीक सादगी, सच्चरित्रता आ समयक पाबन्दी प्रभावित कयने अछि। अनेक साहित्यिक समारोहमे हिनका देखल अछि जे समयपर समारोह स्थलपर उपस्थित छथि। कतेक ठाम तँ समारोहक आयोजक लोकनिसँ पूर्वहि आबि अमरजी समयपर उपस्थित भेटलाह। हम नगरक एक साहित्यिक संस्था ऋचालोकक अध्यक्ष छी आ ओहि संस्थाक बैसकमे बेसी काल एहन स्थिति देखबामे अबैत अछि। अमरजी ओहि संस्थाक उपाध्यक्ष छथि। सदस्य लोकनि हुनकासँ समयक पावन्दीक पाठ सीखैत छथि। अमरजीक जन्मदिनक उत्सव मनाओल जाइत रहय। अमरजी स्वयं बजलाह जे नियमितताक पाठक गुरु ओ श्री झिंगुर कुमरकेँ मानैत छथि। श्री झिंगुर कुमर ओहि विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह जाहिमे अमरजी संस्कृत एवं मैथिलीक अध्यापक छलाह। श्री कुमर सेहो ओहि सभामे उपस्थित छलाह। ओ कहलथिन जे ई अमरजीक पैघत्व छनि जे ओ कहैत छथि जे समयक पावन्दी ओ हमरासँ सिखलनि। वस्तुतः समयक पाबन्दीक आत्माकेँ ओ अमरजीक सम्पर्कमे चिन्हलनि।

मधुबनी जिलाक खोजपुर ग्रामक ई निवासी छथि। ओना तँ आब ई दरभंगहिमे मिश्रटोलामे स्थायी रूपसँ रहि रहल छथि आ दरभंगा नगरक सांस्कृतिक जीवनकेँ सम्पन्नता द' रहल छथि। हिनक जन्म 1925 ई० मे भेल छनि अर्थात् हमरासँ किछुए वर्ष छोट छथि। ई दरभंगा स्थित नवरत्न गोष्ठीक संस्थापक सचिव छथि जकर स्थापना 1943 ई० मे भेल। ई 1945 ई० मे व्याकरणाचार्य परीक्षोत्तीर्ण भेलाह आ 1946 ई० मे साहित्यशास्त्रीक परीक्षामे उत्तीर्णता

प्राप्त कयलनि।

हिनक कविताक प्रथम पुस्तक अछि 'गुदगुदी' जे 1946 मे प्राकशित भेल। युगचक्र (1952), ऋतुप्रिया (1963), उनटा पाल (1972), आ आशा-दिशा (1975) हिनक अन्य कवितासंग्रह थिक। आशा-दिशाक भूमिका हमरे लिखल थिक। ओहि भूमिकाकेँ हम एतय हू-ब-हू उद्धृत करैत छी।

''आशा-दिशा मैथिलीक वरद्पुत्र श्री अमरजीक सशक्त लेखनीसँ निःसृत कतिपय मुक्तक काव्य-रचनाक संग्रह थिक। मिथिला, भारत आ मानवताक गौरव-रक्षा हेतु कवि समस्त समाजक आह्वान करैत छथि। शान्ति, अहिंसा, प्रेम आ पूजाक सूत्रसँ निर्मित मिथिला आ भारत भूमिक ज्ञानसम्मत परम्परा आ इतिहासक प्रति सम्मान आ आसक्ति रखितहुँ एहि युगक समस्या सभक प्रति कविक दृष्टि सर्वतोभावेन प्रगतिवादी छनि–यैह एहि संकलनमे सौन्दर्य स्थापित कयलक अछि। शांतिक रक्षालेल चिन्तित कवि दनुजताक दमन हेतु विशेष रूपसँ भारतपर चीनक आक्रमण आ बंगदेशीय समस्याक सन्दर्भमे निःसंकोच लिखैत छथि जे ''सृष्टिक समस्याक अन्तिम समाधान युद्ध मात्र होएत'' दिनानुदिन घटैत मानवमूल्य आ बढ़ैत विज्ञानक विभीषिकाकेँ देखि कविकेँ सृष्टिक नियन्तेकेँ काँके पठयबाक आवश्यकता बूझि पड़ैत छनि तऽ स्वाभाविके।

आशा अछि 'आशा-दिशा' त्रस्त समाजकेँ निर्माणक नवीन दिशा दर्शाओत आ मैथिलीक सुधी पाठक मध्य समादृत होयत। श्री अमरजीकेँ एहि कृति लेल अनेक साधुवाद।''

अमरजी बहुमुखी प्रतिभाक व्यक्ति छथि। ई उपन्यास, कथा आ समालोचनाक ग्रंथ सेहो लिखलनि। वीरकन्या(1950), बिदागरी (1963), जलसमाधि (1972) प्रकाशित भेल। महामहोपाध्याय मुरलीधर झा आ काशीकांत मिश्र 'मधुप' क्रमशः 1980 आ 1994 मे प्रकाशित भेल। साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा ई अपन ग्रन्थ 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, (1981) पर पुरस्कृत भेलाह।

अमरजीकेँ नाट्यकलासँ सेहो अभिरुचि छनि। प्रथम मैथिली फिल्म 'कन्यादान'मे ई अभिनय कयने छलाह जाहि फिल्मक निर्देशन फणिमजुमदार द्वारा भेल छल। कविता पाठ करबाक हिनक विशेष तर्ज अछि जे अत्यन्त रोचक छैक।

संस्कृत आ मैथिलीक पंडित भेलाक कारणेँ हिनक गद्यक भाषा अत्यन्त चुस्त आ स्पष्ट अछि। हिनक रचनामे मुहावरा आ कहावतक प्राचुर्य रहैत अछि।

अमरजी मात्र पत्रकारिताक इतिहासेटा नहि लिखने छथि, ई पत्रकारो रहल छथि। ई 'वैदेही' पाक्षिक पत्रक सम्पादन कयने छथि। बादमे जखन वैदेही मासिक भऽ गेल तँ बहुत वर्ष धरि ई ओकर सम्पादक रहलाह। ई मैथिली दैनिक पत्र 'स्वदेश'क संयुक्त संपादक छलाह। अमरजी सत्साहित्य ओकरहि कहैत छथिन जकरासँ पतितमे आशाक संचार होइत छैक आ जाहिसँ सर्वहारा आ पतित लोकनिमे सहानुभूतिक संचार होइत छैक। वस्तुतः वास्तविक साहित्य आत्मा केँ उन्मुख करैत अछि।

गद्य-पद्य, उपन्यास-लघुकथा, नाटक-एकांकी, निबंध, आलोचना, संस्मरण सब पर ई सफलतापूर्वक कलम उठौने छथि। ई वक्ता सेहो उत्तम कोटिक छथि। हिनक वाणीमे स्पष्टता छनि आ लोककेँ ई जे कहय चाहैत छथि से स्पष्ट रूपेँ संप्रेषित कय सकैत छथि।

सुमनजीक संयोजकत्वमे साहित्य अकादमी, दिल्ली मैथिली परामर्शी मंडलक हम, भीमनाथ बाबू आ अमरजी सदस्य छलहुँ आ संगहि दरभंगासँ दिल्ली जाइ-आबी। ओहि यात्राक क्रममे अमरजीक सरस गप्प-सप्प, हास-परिहास, व्यंग्य-विनोदसँ हमरा लोकनि खूब मनोरंजित होइत छलहुँ। अमरजी सभसँ, चाहे ओ पानक वेंडर हो अथवा चाहक,

मैथिलीएमे गप्प करैत छलाह। आ खूबीक बात ई जे सबकेँ ई प्रिय लगैत छलैक। एक बेर रातिमे हमरा लोकनि गाड़ीक वेंडरसँ रातुक भोजन मँगबयलहुँ। भोजन जखन हमरा लोकनि लग आयल तँ ओहिसँ पियाजुक तीव्र गंध उठैत छल। एहिपर सुमनजी आ अमरजी बेयराकेँ मैथिलीमे कहलथिन जे बिना पियाजुबला तरकारी नहि भेटतैक? ओ बेयरा बाजल जे अपने लोकनि मिथिलावासी छी। हमहुँ बरौनीक रहनिहार छी आ मिथिलावासिये छी। अच्छा, अपने लोकनिकेँ पियाजु बला तरकारी पसिन्न नहि अछि तँ हम स्वयं 'किचेनमे जाकक दोसर तरकारी बनाक' ल' अबैत छी। एतबो तँ हम अपने लोकनिक सेवा करी। किछु देरमे ओ दोसर तरकारी सब बनाक' अनलक आ हमरा लोकनि रुचि पूर्वक भोजन कयलहुँ। एहिना मनोविनोद करैत हमरा लोकनि अनेक बेर अकादेमीक बैसकमे भाग लेबा लेल जाइत रहलहुँ।

20 दिसम्बर 1998 केँ साहित्य अकादेमी द्वारा 'रचनाकारसँ भेँट' कार्यक्रम दरभंगामे आयोजित कयल गेल जाहिमे हम विशिष्ट अतिथिक रूपमे उपस्थित छलहुँ। एखन धरि ई सम्मान हिनकासँ पूर्व श्री सुमनजी एवं श्री व्यासजी मात्र एही दू गोटेकेँ प्राप्त भेल छनि। अमरजी केँ ई विशिष्ट सम्मानसँ हम प्रसन्न छलहुँ, सम्पूर्ण दरभंगाक साहित्य प्रेमी समाज प्रसन्न छल। ओहि अवसरपर साहित्य अकादेमी द्वारा हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वकेँ उजागर करयवाला विशिष्ट 'फोल्डर' वितरित कयल गेल।

अमरजीक जे गुणसभसँ हम प्रतिदिन प्रभावित होइत रहलहुँ अछि से थिक हिनक अनुशासन-प्रेम, समयक पाबन्दी, चारित्रिक बल आ मधुर भाषण।

हमरा ई कहबामे प्रसन्नता होइत अछि जे अमरजी अपन कुलगौरवक प्रति बड़ सचेष्ट छथि। एक दिन प्रसंगवश अमरजीकेँ हम कहलयनि जे हमर मूल 'हरिअम्मय' थिक। ओहो बजलाह जे हुनको मूल हरिअम्मये थिकनि। तकर बाद बजलाह जे माँ जानकीकेँ प्रणाम करैत छी ओ 'हरिअम्मये' कुलक व्यक्तिकेँ मिथिला विश्वविद्यालयक प्रथम कुलपति बनौलनि।

हम प्रभुसँ प्रार्थना करैत छी जे ई दीर्घायु होथि आ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ एहिना भरैत रहथि।



श्री अमरजी ओ मैथिली कविसम्मेलन

डॉ० मायानन्द मिश्र

1948 ई०क घटना थिक। पं० रामकृष्ण झा किसुन (माम)क आयुर्वेदिक इलाज मुंशी रघुनन्दन दासक सखबाड़मे, पं. महावीर मिश्रसँ चलि रहल छलनि। संगमे हमहीं छलियनि। अचानक एक दिन सान्ध्य गप-गोष्ठीक विषय बनि गेलैक दरभंगाक ऑरिऐंटल कान्फ्रेंस। विचार-विमर्श चल' लगलैक। यात्रा-ट्रेन, समय, घुमती आदि सब पर विस्तारसँ चर्च भेल चर्चाक एकटा विषय आरो छलैक-प्रवेशक लेल 'पास' केर व्यवस्था।

हम ओहि समय मे देहाती शहर सुपौल हाइ स्कूलक दशम वर्गक छात्र। दरभंगाक नाम सुनने छलिऐ, तैं देखबाक उत्सुकता तीव्र भ' उठल, मुदा ओरिऐंटल कान्फ्रेसक कोनो अर्थ नहि लागल तत्काल, तथापि जिज्ञासा जागल। गप्पक निष्कर्षक प्रति साकांक्ष भेलहुँ। 'पास'—व्यवस्था पर गप्प भटकि रहल छल। कि ता' वैद्यजी महावीर बाबूक अनुज पं० (प्रायः) यदुवीर मिश्र बाजि उठलाह—'मोन पड़ल, हमर एकटा संगी छथि तनिका सम्पादकजी सुमनजी सँ नीक परिचय छनि, ओहो तँ राजेक कर्मचारी छथि। अवश्ये पासक व्यवस्था भ' जेबाक चाही।'

यात्रा, उत्सुकता ओ आशंकाक संग प्रारम्भ भेल। पाँच यात्री छलहुँ। यथासमय मनीगाछी, दरभंगा स्टेशन, (प्रायः) कटहरबाड़ी बला सुमनजीक डेरा। मुदा ओहि बेर सुमनजीक दर्शन प्रायः नहि भेल। बाहरे मे बैसल छलहुँ, भीतर गेल छलाह वैह पं. यदुवीर बाबूक 'परिचित'। परिचित जी उल्लसित बहरायल छलाह जे पासक व्यवस्था भ' गेल। सब प्रसन्न छलाह मुदा हमरा प्रसन्नता सँ बेसी उत्सुकता छल। उत्सुकता छल दरभंगा देखबाक, ओरिऐंटल कान्फ्रेंस देखबाक आ सर्वोपरि विद्वान कवि लोकनिकें देखबाक। विद्वान कवि लोकनिक प्रति उत्सुकताक कारण छल साहित्य ओ साहित्यकारक प्रति रुचिबोध। आ' एहि रुचिबोधक कारण छल सन् 43-44 ई० मे किसुनजीक द्वारा सुपौल बजार मे स्थापित श्री मिथिला पुस्तकालयक स्थापना, जकर लाइब्रेरियन पछिला तीन चारि साल सँ हमहीं छलहुँ आ जाहि क्रममे प्रेमचंद शरतचन्द्र तथा बंकिम बाबू लोकनिक प्रायः अधिकांश (अनुवाद) किताब पढ़ि गेल छलहुँ।

अचानक चौंकि उठलहुँ राज कम्पाउंडक सभा-स्थल दिस जाइत-अबैत भीड़मे दुइ अद्भुत वेशक सौम्य भव्य व्यक्तित्वकेँ देखि कें। दुनू गोटा पैंट कोट पर पाग पहिरने छलाह, एक जन छोट आ' दोसर पैघ। आकर्षक दुनू। मामाकें आङुर देखा पुछलियनि। कहलनि – ओ छोटजन छथि म.म.डा. उमेश मिश्र आ' दोसर डा. अमरनाथ झा, दुनू मिथिलाक विभूति, महान विद्वान्। दुनूक नाम सुनल छल। भाषण तँ नहि सुनि सकलहुँ मुदा व्यक्तित्व-दर्शने सँ चमत्कृत रहि गेल छलहुँ। ओही अवसर पर माखनलाल चतुर्वेदी 'भारतीय आत्मा' जनिक 'पुष्पों की अभिलाषा' पढ़ल छल तथा डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी जीक दर्शन भेल छल, जनिक विद्वत्ताक प्रशंसा किसुनजी कयने छलाह। किन्तु जाहि किरणजी, सुमनजी, मधुपजी ओ अमरजीक प्रशंसा सखबारे सँ करैत आयल छलाह तनिका लोकनिक ने तँ दर्शन भ' सकल आ' ने कविसम्मेलन देखि-सूनि भेल। कतीकाल धरि सभास्थल पर रहलहुँ, कतेक दरभंगा देखि सकलहुँ ओ कोना घुमलहुँ, से सब किछु मोन नहि अछि मुदा ओहिना मोन अछि जे चलैत काल किसुनजी, एक जन सँ जे एक पृष्ठक छपल कविता बेचि रहल छलाह आ' जकर दाम मात्र एक अथवा दुइ पैसा छलैक–एक पाँज कीनि लेने छलाह। ट्रेन मे सब गोटा पढ़ैत गेलहुँ– ''हम प्रबुद्ध.....'' जकर नीचा मे नाम छलैक : श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

श्री अमरजीक दर्शन प्रथम-प्रथम भेल छल ओकरे घुरती वर्ष 1949 ई. मे एम.एल. एकेडमीक होस्टल केर सम्भवतः हुनक आवासकक्षमे सायंकाल। ओ तीन चारिटा छात्र कैं मैथिली पढ़ा रहल छलाह। हम किसुनजीक कोनो आवश्यक चिट्ठी ल'कें गेल छलहुँ। पता लगबैत-लगबैत ओतऽ धरि स्टेशन सँ पहुँचल छलहुँ। पत्र पढ़लनि। कातक चौकी पर बैसबाक संकेत केलनि। श्यामवर्ण, तिलकित भाल (प्रायः त्रिपुंडो) चश्मा-मंडित मुखमंडल तथा प्रखर

प्रभावशाली व्यक्तित्व ओ श्रद्धा उत्पन्न कर'बला गरिमामय शिक्षणक व्यग्रता-व्यस्तता। मैट्रिकमे हमरो विषय मैथिली छल। ध्यान सँ सुनय लगलहुँ। मैथिली मे लेखन वर्तनी शैली कोना चारि टा छैक आ ताहि मे सँ कोनो एक टाक प्रयोग सतर्कतापूर्वक परीक्षा मे होबक चाही–से ओही दिन सिखलहुँ। आइयो मोन अछि।

आइयो मोन अछि हुनक सतर्क दृष्टि। होस्टलमे एक 'वर्थ'क व्यवस्था, अपनहि सङे भोजन, भोजन मे आग्रह। भोरे पत्र द' एकटा छात्र द्वारा लहेरियासराय स्टेशन पहुँचबा देलनि। ओही दिन हुनका अपन दीक्षा-गुरु मानल। बाद मे साहित्य-गुरु सेहो भेलाह जखन सन् 1951 ई.क अंत मे भाङक लोटा क पांडुलिपि पढ़ि ओ संशोधित क' देलनि जे1952 ई. मे वैदेही प्रकाशन सँ छपल। सन् 1950 ई.क अगस्ते मे सी. एम. कालेज मे नामांकन भेल आ' चीनी गुदाम मे रह' लगलहुँ। प्रारम्भ मे श्री अमरजीक डेरा बेसी दिन लहेरियेसरायक विभिन्न स्थान मे रहलनि। ओही समय मे नवरत्न गोष्ठीक स्थापना, अनेक प्रकाशन। ओही काल मे 'विद्यापति के देश में' केर योजना, कालान्तर मे प्रकाशन।

ओहि समय मे अर्थात् 1950 ई० सँ 54 ई० धरि प्रायः नित्य दरभंगा सँ पैदले श्री अमरजीक डेरा पर पहुँचि जाइ सायंकाल कैँ। सायंकाल कैँ प्रायः नित्य नगरकवि लोकनिक जुटान, बीच-बीच मे विशिष्ट कवि-साहित्यकार लोकनिक आगमन, दर्शन-परिचय, भाङक विन्यासपूर्वक आयोजन, पानक डाली, सजाओल पान-सुपाड़ीक कतरा-जरदा दिलदारहुसेन आ' अंत मे घंटा दुइ घंटाक कविगोष्ठी। कविलोकनि प्रायः नित्य किछु-ने-किछु लीखथि आ' सुनबथि। बीच-बीच मे कमला मेमोरियल टाउन हाल, डिस्ट्रिक बोर्डक हाल अथवा आने स्थान सब पर विद्यापति जयंती ओ तुलसी जयंतीक विशेष आयोजन। केसरीजी, किरणजी, मधुपजी, श्री सुमनजी, बहेड़जी, दीपकजी, श्री इन्दुजी, मणिपद्मजी ओ समस्तीपुर सँ नन्दजी लोकनिक आगमन, झमटगर कवि-सम्मेलन।

कवि-सम्मेलनक 'आतंक' होइत छलाह श्री अमरजी। जाहि मंच पर पहुँचि जाइत छलाह ओहि मंचक जमब आ' सफलता निश्चित छल आ' जाहि पर नहि पहुँचि पाबथि ताहि ठाम अंत-अंत धरि हिनके 'खोज'। असलमे ई अपन समवयस्क ओ समसामयिक कविक लेल आतंक छलाह। हिनका बाद बहुतो कवि कैँ मंच पर 'जमबा' मे घोर कठिनता होइत छल, जकर अपवाद होइत छलाह मधुपजी ओ श्री सुमनजी। नवका वा अल्पवयस्क कवि पहिनहि अपन पार पुरा नेने छलाह, मंच पर पान कचरैत रहैत छलाह जाहि मे मुख्य रहैत छलाह अमरजीक नित्य सान्ध्यगोष्ठीक स्थायी सदस्य श्री सोमदेवजी, अमरेन्द्रजी, दीपकजी, इन्दुजी, सुन्दरझाशास्त्री, अनलजी, अष्ठानाजी तथा एहि पंक्तिक लेखक आदि। समस्तीपुर मे अरुणजी अधिक खन प्रयास करैत छलाह जे ओ अमरजी सँ पहिनहि कविता पढ़ि लेथि।

कविता पढ़ब आरम्भ करैत छलाह श्री अमरजी गम्भीर भावक कविता सँ। किन्तु शीघ्र हिनक श्रोता-प्रशंसक फरमाइस पर उतरि जाथि, पंडाल मे गलगुल होम' लगैत छल। आ' तखन पढ़ऽ लगैत छलाह गुदगुदी ओ युगचक्रक रचना सब एक-दू-तीन-चारि-पाँच। तखन जाक' लोकक छाँक पुरैत छल। क्रमशः कालांतर मे गुदगुदीक रचना जाहि मे हास्यक प्रधानता छल कम होइत गेल आ' युगचक्रक लोकप्रियता बढ़ैत गेल जाहि मे समसामयिक जीवन, समाज, व्यापारी तथा सर्वोपरि राजनीति ओ राजनेता पर कठोर प्रखर ओ मार्मिक व्यंग्य-प्रहार रहैत छल। साँझे सँ लोक अमर जी सँ एहन कविता सुनबाक लेल आकुल-व्याकुल रहैत छल। पता लगबैत छल लोक जे श्री अमरजी अयलाह कि नहि? अमरजी पहुँचैत छलाह कि घोल भ' जाइत छल। लोक गुनगुनब' लगैत छल–'जगकें युग परतारि रहल अछि ....'बनियाँ आ' टुटपुजिया नेता, सब कोठी अजबारि रहल अछि'.... 'हमर कथा के कान दैत अछि'। आदि-आदि।

असल मे कविसम्मेलन मे वीररस ओ हास्यरसक कविता अपेक्षाकृत अधिक मंच कैँ जमबैत अछि आ दर्शक-श्रोता कैँ पकड़ैत अछि। युगचक्र कैँ मैथिली मंच लगभग दुइ दशक सँ अधिक काल धरि समान रूप सँ पकड़ने रहल। जहिना संठी मे आगि पकड़ैत अछि तहिना युगचक्रक कविता कविसम्मलेनक पंडाल कैँ धक् द' पकड़ि लैत छल। तकर बाद मंच पकड़' लागल हुनक बादक कविता 'कहू कुशल।' पाछू एहू कविता लेल पंडाल उत्सुक रह' लागल जाहि मे

हास्य-स्थिति सँ अधिक गम्भीर मार्मिकता अछि। एकर अर्थ ई नहि जे श्री अमरजीक गम्भीर कविता लोक नहि सुनलक। सुनलक, गम्भीर पाठक पूर्ण रुचिबोधक संग सुनलक। सुनैत रहल। आशा-दिशा एही गम्भीर्य भावक कविता-संकलन थिक। किन्तु हास्य ओ व्यंग्य हरिमोहने बाबू जकाँ श्री अमरजीक काव्य-व्यक्तित्वक प्रधान अंग थिक जे हुनक अनेक कथा तथा एकांकी ओ रेडियोनाटक मे अछि। ई तत्त्व वीरकन्या नामक उपन्यास मे सेहो यत्रतत्र भेटि सकैछ। भेटैत अछि हिनक गम्भीर दृष्टि विभिन्न निबंध ओ आलोचना तथा शोधक सूक्ष्मता हिनक 'पत्रकारिताक इतिहास' मे जाहि पर साहित्य अकादेमीक पुरस्कार सेहो प्राप्त भेल। अस्तु।

कविसम्मेलनक सूचना निमंत्रण हमरा लोकनि कैँ श्री अमरेजीक माध्यम सँ भेटैत रहैत छल। श्री अमरजी सँ गप्प केलनि आ चल गेलाह आयोजक। आयोजन होइत रहैत छल मुजफ्फरपुर-समस्तीपुर सँ मधुबनी जयनगर धरि। एहि बीचक विभिन्न ग्रामांचलो मे। अवसर होइत छल तुलसी-विद्यापति जयंती, पुस्तकालय सभक स्थापना ओ वार्षिकोत्सव तथा विभिन्न संस्था सभक वैयक्तिक उत्साह। उत्साह रहैत छल जयनगरक श्री मस्कराजीक तथा समस्तीपुरक नन्दजीक विशेष रूप सँ साहित्यिक आयोजन ओ कविसम्मेलन सभक लेल। तेहने आगत-स्वागत, तेहने भोजन-भात आ'तेहने हार्दिकतापूर्ण कविसम्मेलन।

कविसम्मेलन होइत रहैत छल दरभंगा सँ कटिहार-पूर्णिया धरि तथा सहरसा-मधेपुरा सँ सुपौल धरि आ जकर मुख्य आयोजक रहैत छलाह किसुनजी, मुख्यतः सहरसा ओ सुपौलक। सुपौल मे कविसम्मेलन कतेक लोकप्रिय छल जे एहि ठाम एक बेर टिकट पर सेहो कविसम्मेलन भेल छल जे एकटा अद्‌भुत अविस्मरणीय इतिहास थिक। इतिहास बनौलनि किसुनजी जे सुपौलक राष्ट्रीय मेला मे सेहो कविसम्मेलन आयोजित कयलनि। चाहे हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो वा मैथिली साहित्य परिषद् अथवा शिक्षक संघ हो वा पत्रकार सम्मेलन, कविसम्मेलन अनिवार्य। आ' अनिवार्य होइत छलाह एहि कविसम्मेलनक अवसर पर श्री अमरजी। अमरजी जखन एक बेर अपन क्रम मे मंच पर माइक लग आबि जाइत छलाह तँ श्रोता जल्दी छोड़ैत नहि छलनि। एक-दू-तीन-चारि अनेक कविता लोक सुन' चाहय। अध्यक्ष-उद्‌घोषककैँ अनेक बेर बैसऽ पड़नि श्रोता समाजक 'इनकोर इनकोर' क हंगामा देखिक'। दरभंगा सँ मुजफ्फरपुर जयनगर धरि तथा दरभंगा सँ कटिहार सुपौल धरि अनेक बेर, अनेक मंच पर ई घटना घटल अछि। पूर्वांचलक ई घटना देखने छलाह मुख्यतः किरणजी, मधुपजी, मणिपद्‌मजी, किसुनजी तथा एहि पंक्तिक लेखक। पश्चिमांचल कविसम्मेलनक तँ अनेक साक्षी छथिहे, श्री सुमनजी, श्रीसोमदेवजी, श्री दीपकजी, श्री इन्दुजी, श्री रामचरित्र पांडेय तथा श्री चन्द्रभानु सिंहजी आ' मिसरटोलाक विन्देश्वर (निरक्षर) कवि आदि।

मुदा ई सब घटना थिक 1950 ई० सँ प्रायः 55-56 ई० धरिक। तकर बाद हम आबि गेलहुँ रेडियो। आ' रेडियो मे सेहो श्री अमरजी ओहिना वांछित। ओहिना अपेक्षित। ओहिना लोकप्रिय।

लोकप्रिय भेल तकर बाद अर्थात् 1954 ई०क स्थापित चेतना समिति पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व 57-58 ई० सँ मैथिली जगत मे जे वस्तुतः मैथिली आन्दोलनक एकमात्र सशक्त ओ अनिवार्य माध्यम छल। सन् 35-36 ई०क विद्यापति स्मृति-दिवस-सप्ताह-पक्ष 58-60 ई० धरि विद्यापति स्मृति पर्व बनि गेल जाहि मे भाषण ओ कविसम्मेलन मुख्य रूपेँ रहैत छल जकर क्रम 70-75 ई० धरि रहल। एकर पश्चात् विद्यापति स्मृति-पर्व बनि गेल विद्यापति पर्व समारोह जाहि मे किछु संस्था कैँ छोड़ि, भाषण ओ कविसम्मेलन क्रमशः गौण होइत गेल ओ सांस्कृतिक कार्यक्रमक प्रधानता ओ लोकप्रियता बढ़ैत गेल। विशेषतः दक्षिण बिहारक विद्यापति-समारोही संस्था सबमे। विद्यापति समारोह सामान्यतः दुइ दशक धरि बलुआ बीरपुर सँ बम्बइ धरि ओ दिल्ली-हरियाणा सँ गौहाटी धरि होइत रहल। श्री अमरजी 54-55 ई० सँ 85 ई० धरि प्रायः सबठाम पर्व समारोहमे जाइत रहलाह। सबठाम लोकप्रिय कवि तँ रहलाहे जे भाषण-काल मे मैथिली आन्दोलन पर विचारोत्तेजक भाषणो करैत रहलाह। अति आरम्भ मे मंचो संचालन, जे भार

पाछाँ 58-60 ई० सँ हमरा कपार पर पड़ल। श्री अमरजीक अनुपस्थिति मे पाछू मैथिली आन्दोलन पर भाषण सेहो हमरहि कंठ बन्हायल। पाछू तँ सांस्कृतिक कार्यक्रम कालमे अनेक ठाम मैथिली आन्दोलन पर आयोजकगणक इच्छाक प्रतिकूलो जबरदस्ती भाषणो देब्र आवश्यक मानलहुँ। लोक मंच-संचालनक विशेषताक कारण सूनि लैत छल, अपना कवि-सम्मेलनक अभाव मे किछु संतोष भ' जाइत छल। अस्तु।

श्री अमरजीकैं गणतंत्र दिवस पर, दिल्ली मे आयोजित राष्ट्रीय कविसम्मेलन मे सेहो कविता-पाठक गौरव प्राप्त भेल अछि। प्राप्त भेल अछि अपरिमित श्रद्धा ओ सम्मान समस्त मैथिली जगतक पाठक-श्रोता समाज सँ। सबटा देखल अछि। सबटा मोन पड़ि रहल अछि। मोन पड़ि रहल अछि पछिला तीस-पैंतीस वर्षक अनेक समारोही यात्रा, यात्राक अनेक संस्मरण। मोन पड़ैत अछि यात्राकालक श्री सुमनजीक साहित्यिक संस्मरण, किरणजीक मिथिला-मैथिलीक इतिहास-विश्लेषण, मधुपजीक कालिदाससँ बिहारी धरिक विशिष्ट श्लोक ओ दोहाक भाषाटीका वर्णन, मणिद्मजीक अपन उपन्यासक मौखिक पाठ, किसुनजीक उर्दूक विशेष 'शेर' व्याख्या, श्री अमरजीक प्रत्युत्पन्नमतित्वक अद्भुत हास-परिहास....हँसैत-हँसैत लोकक आँखिमे नोर आबि जाइत छलैक....अरे! ई की आँखिमे आबि गेल!

●

अमरजी : एक स्वयंसेवक

श्री समरेन्द्र नारायण चौधरी

किछु व्यक्ति पदेन महान् होइत छथि तँ किछुमे कोनो खास एकाध तेहन गुण वैशिष्ट्य रहैत अछि जाहि कारणे ओ महान् कोटिमे अंकित होइत छथि, मुदा किछु व्यक्तित्व एहनो होइत अछि जकरा संग ने पदक बात आ ने खास कोनो विशेष गुणक बात रहैत अछि, परञ्च सदाचारक कसौटी पर जखन व्यक्तित्व परखल जाइत अछि, जखन राष्ट्रीयताक आधार पर व्यक्तित्वक चिन्तन-मनन होइत अछि, जखन वैदिक शिक्षा–'सत्यंवद धर्मंचर' आदिक आधार पर व्यक्तित्वक विश्लेषण होइत अछि तँ ओ पर्याप्त अङ्क प्राप्त कऽ महानक कोटिमे आबि जाइत अछि। एही कोटिमे अबैत छथि हमर मान्यवर 'अमरजी'। अमरजी निरुपाधि महान् व्यक्तित्व छथि।

माँ मैथिलीक जे अन्यतम कविक पंक्ति अछि ओहिमे अमरजीक एक विशिष्ट स्थान अछि। कथालेखन, उपन्यासलेखन, समालोचना आदि लेखनोमे अपन मान्य स्थान बनौने छथि। अनुवादोक क्षेत्रमे छक्काक संग प्रवेश पूर्वक अधिकार जमा लेलनि अछि। साहित्य अकादेमीक दू-दूटा पुरस्कार प्राप्त कयने छथि। मिथिला मैथिलीक अभ्युत्थानक जे कोनो काज वा आन्दोलन चलल, सभमे हिनक विपुल योगदान रहल अछि। आ एही कारणेँ हिनक अभिनन्दनक ई आयोजनो विद्वत्वर्ग द्वारा भय रहल अछि। ई सर्वथा उचित तथा वाञ्छित। मुदा हमर चिन्तनक विषयवस्तु एहि सँ सर्वथा भिन्न। हम अमरजीक साहित्यकारक वाह्य रूपमे अन्तर्निहित निष्ठावान स्वयंसेवकक दर्शन करैत छी।

स्वयंसेवक एक पारिभाषिक शब्द थिक। एकर अर्थ होइछ ध्येय लेल समर्पित जीवन। स्वयंसेवक लेल किछु विधि-निषेधक बात कहल गेल अछि, आत्म-अनुशासनक अनुशंसा कयल गेल अछि। एहि अर्थ मे हम अमरजीक जीवन केँ एक स्वयंसेवकक जीवन मानैत छी।

ई बात ठीक जे अमरजी नित्यप्रति शाखा नाहि जाइत छथि, नित्य संघप्रार्थना नहि करैत छथि, मुदा जहाँ धरि हिन्दुत्व पर निष्ठाक प्रश्न अछि, कतहु कोनो प्रकारक 'कम्प्रोमाइज' नहि अछि। हिन्दुत्वक अर्थ एहि ठाम छुआछूत वा पूजापाठ नहि अछि। अपितु शुद्ध राष्ट्रीय अवधारणा, सांस्कृतिक राष्ट्रीयता, वैदिक राष्ट्रीयता ''माता भूमिः पुत्रोऽहंपृथिव्या''। ई धरती निर्जीव सत्ता नहि, चैतन्य जीवन्त शक्ति-सदार्द्रचित्तता। अखिल हिन्दू समाज एहि धरती-माताक औरस पुत्र। आ एक माताक पुत्र होयबाक कारणे अखिल हिन्दू समाज सोदर भ्राता आ भारतमाताक कोरमे सभ लेल समान स्थान–कोनो प्रकारक भेदभावक स्थान नहि।

स्वयंसेवक लेल जे किछु आवश्यक गुण कहल गेल अछि ओहिमे प्रथम स्थान अछि ध्येयवादिताक। अपन जीवन ने 'हम दो हमारे दो' लेल, ने ऐहिक सुखोपभोग लेल, अपितु एक ध्येयविशेष लेल समर्पित जीवन। अमरजी मे ई ध्येयवादिता प्रखर रूपमे विद्यमान अछि। राष्ट्रसेवा, मिथिला-मैथिलीक सेवा हिनक जीवनक अविच्छिन्न अंग भय गेल अछि। अमरजी सभ काज छोड़ि सकैत छथि, मुदा मैथिली माध्यमे समाजसेवा नहि। अमरजी जे कोनो काज करैत छथि से लेखन हो, भाषण-भूषण हो, वा अन्य कोनो उपक्रम हो, ओहिमे ई ध्येयवादिता स्पष्ट गोचर हैत। शरीर आ परिवार अछि तँ ओकर योगक्षेम लेल कार्य अनिवार्य भय जाइत अछि, मुदा बहुतो एहि नोन-रोटीमे मे उलझल रहि जाइत छथि जे अन्य काज लेल पलखतियेे नहि भेटैत छनि। मुदा, अमरजीक कर्मक सीमाक टाट एतबहि धरि सीमित वा संकुचित नहि अछि।

एकर अनुमोदनमे हम एकदम टटका उदाहरण प्रस्तुत करैत छी। अमरजी अपन चौबीस घंटाक समयकेँ मिनट-मिनट कऽ बँटने छथि आ सम्प्रति एकर बड़का अंश धर्मपत्नीक सेवार्थ लागि जाइत छनि। पत्नी बहुत अधिक अस्वस्थ छथिन तथापि अमरजी सुमनजीक 'प्राचेतस राजशास्त्रम्' नामक पुस्तकक प्रकाशनक जे बीड़ा उठौने छथि, ओहिमे

किंचितो शिथिलता वा व्यवधान नहि आबय दैत छथिन। हिनका लग प्रमादक स्थान नहि अछि। अमरजीक सभ कर्मभे, से नियमित हो किंवा नैमित्तिक, समयबद्धताक विचार रहैत अछि। अमरजी सभ कर्मकेँ पूजावत् तन-मन-बुद्धिपूर्वक पूरा करैत छथि।

आवश्यक गुणमे दोसर स्थान अबैत अछि इच्छाशक्तिक। इच्छाशक्तियेक कारण कोनो काजक संकल्पपूर्वक आरम्भ ओ ओकर निष्पादन होइत अछि। सरकारक निष्क्रियताक जखन आलोचना होइत अछि तखन इएह कहल जाइत अछि जे अमुक सरकारकेँ इच्छाशक्तिक अभाव अछि।

इच्छाशक्तिये नहि, प्रबल इच्छाशक्ति चाही। महाराज छत्रपति शिवाजीवला इच्छाशक्ति चाही। शिवाजी कोनो राजा नहि छलाह। हिनक पिता बीजापुर दरबारमे एक सरदार छलाह। ओहि समय दिल्ली पर दुर्दान्त औरंगजेबक राज छल। एहि विपरीत परिस्थितिमे शिवाजी महाराजमे हिन्दू पादपादशाहीक स्थापनाक इच्छाशक्ति जागृत भेल आ लाख प्रतिकूलताक रहितो शिवाजी अपन संकल्पकेँ पूरा कऽ देलनि।

अमरजीमे सेहो ई इच्छाशक्ति प्रबल रूपमे जागृत अछि। सुमनजीक अभिनन्दनग्रंथक प्रकाशनक निश्चय भेल। टाका बहुत यत्नपूर्वक जमा कयल गेल, पाण्डुलिपि प्रेस मे चल गेल आ सभ नष्ट भऽ गेल। मुदा, अमरजीमे जेँ ई इच्छाशक्ति जागृत छल तेँ फेर पाण्डुलिपि तैयार कराओल गेल, फेर टाकाक संचय भेल आ ग्रंथ छपि गेल ओ समय पर अभिनन्दन समारोह सेहो सम्पन्न भय गेल। एहि कार्यक सफलतामे प्रो० भीमनाथ झाजीक योगदान ओहिना स्तुत्य रहल जेना श्रीरामकार्यमे हनुमानजीक सहभाग-सहकार्य।

प्रत्येक मनुष्यमे एक अतीन्द्रीय शक्ति अन्तर्निहित रहैत अछि। ओ एही इच्छाशक्ति तथा तत्‌जन्य प्रयासक उपरान्त जागृत होइत अछि आ ओ जखन जागृत होइत अछि तखन असाध्यसँ असाध्य काज सहज मे सम्पादित भय जाइत अछि। तेँ इच्छाशक्तिसम्पन्न व्यक्ति यशस्वी होइत छथि। एही कारणेँ अमरजी जाहि कार्यक उत्तरदायित्व ग्रहण करैत छथि ओ काज अवश्य निष्पादित होइत अछि।

स्वयंसेवक जे कोनो कार्य करैत अछि ओ कर्त्तव्य बुद्धियेँ, अनासक्ति भावेँ। एकर अर्थ ई नहि जे ओ निष्काम भावेँ कर्म करैत अछि। अपितु ओकर भाव सकाम रहैत छैक। अन्तर एतबहि जे ओ फलाफलक कारणे अपन कर्त्तव्य-पथसँ विचलित नहि होइत अछि। अवरोध वा प्रतिकूलता पाबि ओ कर्त्तव्यविमूढ़ नहि होइत अछि, अपितु ओकर कर्म आओर आक्रामक भय जाइत छैक, बुद्धि आओर प्रखर भय जाइत छैक। करू वा मरू वला भाव जागि जाइत छैक।

अमरजीमे ई गुण सेहो बहुलांशमे साकार अछि। अमरजी जे कोनो काजक दायित्व लैत छथि ओकरा पाछाँ कर्त्तव्यबुद्धिये लागि जाइत छथि। ओ कोना पूरा होयत, ओहि लेल प्राणपन सँ भीड़ि जाइत छथि आ ओहि मे जँ अवरोध उत्पन्न कयल जाइत अछि तँ ई ओकरा 'चैलेंज' रूपमे लैत छथि आ ओकरा साध्य कइये कऽ विराम लैत छथि। बाधामे ने कर्तव्यच्युत होइत छथि आ ने सफलतासँ विपथगामी। सफलता-विफलता रौद-छाहरि थिक– वीरव्रती, दृढ़प्रतिज्ञ एहिसँ अपन कर्त्तव्य-पालनमे विचलित नहि होइत छथि।

शत्रु-मित्रक पहिचान सेहो आवश्यक गुण कहल गेल छैक। मित्रक जँ पहिचान नहि होयत तँ सहयोगीक सहयोगसँ वञ्चित रहि आयब आ एकसर तँ बृहस्पतियो झूठ। शत्रुक परिचय नहि होयत तँ डेगे-डेगे धोखा खायब। अमरजी मे हम देखैत छी जे इहो गुण उचित मात्रामे विद्यमान छनि। अमरजी नीक जकाँ जनैत छथि जे के हिनक मित्र छथि आ के शत्रुवत् भाव-विचार रखैत छथि। एहि परिचयक कारणे अमरजी कंटकाकीर्ण कर्ममार्गहुमे धोखा नहि खयलनि आ सफलताक सीढ़ी-दर-सीढ़ी पार करैत काफी आगू बढ़ि गेलाह अछि।

एहि संग एक आओर गुण अबैत छैक, ओ थिक किछु व्यक्तिक प्रति अनन्य श्रद्धा तथा किछु व्यक्ति केँ अपना

प्रति श्रद्धा-विश्वास। अमरजी मे इहो गुण स्पष्ट परिलक्षित होइछ। सुमनजी तथा झिंगुरबाबूक प्रति हिनक श्रद्धाभाव सर्वविदित अछि। झिंगुरबाबूक अनेक गुणकेँ अमरजी अपन जीवनमे अनूदित कयने छथि। हुनक व्यक्तित्वक अमरजी पर स्पष्ट छाप छनि। आ, सुमनजीक प्रति तँ श्रद्धाभावक संग-संग तज्जन्य वरेण्य व्यवहारो छनि। ''सद्विद्वान् उपसर्प्यतां प्रतिदिनं तद्पादुके सेव्यताम्'' आद्यशंकराचार्यजीक एहि कथनकेँ अमरजी अक्षरशः पालन करैत छथि। प्रत्येक संध्या नियमित रूपे सुमनजीक श्रीचरणमे माथ झुकबैत छथि तथा हिनक कुशलता लेल सदिखन सचेष्ट रहैत छथि। सुमनजीक इच्छाकेँ देवपितरक आदेश रूपमे अनुपालन करैत छथि। स्वदेश गोष्ठीक संध्यामिलनक अवसर पर जहिना अमरजी नतमस्तक होइत छथि तहिना भीमबाबू, रमाकान्तबाबू, मुरलीजी, ठाकुरजी आदि अमरजीक चरणमे प्रणाम ज्ञापित करैत छथि। श्रद्धाभावक ई आदान-प्रदान एहि संगममे अवगाहन कयनिहारेकेँ नहि, दर्शको केँ सन्मार्ग पर चलबाक अनुप्रेरणा प्रदान करैत अछि।

लोकसंग्रह स्वयंसेवकक आवश्यक गुण कहल जाइत अछि। जे जेतक लोकसंग्रहक क्षमता रखैत छथि ओ ओतेक प्रभावी व्यक्तित्व मानल जाइत छथि। सामाजिक प्रतिष्ठान लोके पर अवलम्बित रहैत अछि। उद्योग जगत मे जे स्थान पूजीक अछि, सामाजिक अनुष्ठानमे सैह स्थान लोकक अछि।

किछु खास प्रकारक व्यक्तित्व लग लोक जमा होइत अछि। लोक वकील लग जमा होइत अछि, मुदा मोकदमाबाज। लोक डाक्टर लग जमा होइत अछि, मुदा रोगी। लोक राजनेता लग जमा होइत अछि, मुदा चाटुकार। लोक कामिनी काञ्चन लग जमा होइत अछि। मुदा रागी लोभी। लोक विद्वान लग शिक्षक लग जमा होइत अछि आ से विद्या-अनुरागी, निर्दोष। अमरजी शिक्षक रहलाह अछि। हम विद्यार्थी रहल छियनि। हम देखने छियनि हिनक पाछाँ छात्रक हुजूम लागल रहैत छल। अमरजी लग लोक जमा होइत अछि ओ संख्येक दृष्टियेँ पर्याप्त नहि, गुणवत्तोक दृष्टिसँ उत्तम। कवि तथा विद्वानक रूपोमे हिनक 'फैन' कम नहि। अमरजी जाहि कोनो सभा सोसाइटीमे पहुँचि जाइत छथि, ओहि ठाम ई रानीमधुमाछी बनि जाइत छथि। अमरजी अपन हास्यव्यंग्य सँ लोकचित्त केँ सम्मोहित कऽ दैत छथि आ अपन शीलगुण सँ सम्माननीय स्थान प्राप्त कऽ लैत छथि।

स्वयंसेवकक एक विशेष गुण अनुशासन कहल गेल अछि। जे सम्बन्ध पूर्वमे तपस्वी साधक ओ ब्रह्मचर्य मध्य छल, सैह सम्बन्ध स्वयंसेवक ओ अनुशासन मध्य अछि। मुदा, एहि अनुशासनक अर्थ सैनिक अनुशासन नहि। सैनिक अनुशासनक माहात्म्यक रूपमे बखान कयल जाइत अछि, मुदा सैनिक अनुशासन तनक अनुशासन थिक, वाह्य शक्तिक अनुशासन थिक। एकर अनुशासन आज्ञापालन तक सीमित अछि। एहिमे मनक कोनहु स्थाने नहि छैक, आत्मिक अनुशासनक तँ छूतियो नहि। एकरा सत्य-शिवं-सुन्दरं सँ मतलवे नहि। सैनिक अनुशासनक एक बड़ विलक्षण संसार-प्रसिद्ध उदाहरण अछि। वाटरलूक युद्ध। एहिमे अंग्रेज सेना अपन नायकक आदेशक विरुद्ध कारबाइ कयलक आ एही कारणेँ ने मात्र अपन सभक प्राणरक्षा कय सकल अपितु विजयश्री प्राप्त कयलक, अपन देशकेँ निर्णायक विजय प्राप्त करौलक। मुदा ओहि सैन्यदलकेँ एकर को पारितोषिक भेटल? सभकेँ कोर्टमार्शल कऽ देल गेल, अनुशासनहीनताक आरोप पर। ई अनुशासन कदापि वरेण्य नहि, ई अनुशासित सैनिक एही कारणेँ सामाजिक स्तर पर हिंसक जीवक कोटिमे राखल जाइत छथि, आ तेँ बैरेक, तेँ घेरा, तैं पहरा पर पहरा, तेँ जनांकुल क्षेत्रसँ दूर एकान्त वन-प्रदेशमे आवास।

असल अनुशासन, आध्यात्मिक अनुशासन ओ थिक जाहिमे ने अन्य केओ आज्ञा प्रसारित करैत छैक ने अन्य द्वारा ओकर अनुपालनक बात होइत छैक। एहिमे अपन आत्माक निर्देशन पर अपन मन आज्ञा प्रसारित करैत छैक तथा ओकर अनुपालन अपन शरीर प्रसन्नचित्त भऽ करैत छैक।

एही कोटिमे अबैत अछि अमरजीक अनुशासन। अमरजीक अनुशासन कोनो वाह्यशक्ति द्वारा अनुप्रेषित

अनुशासन नहि, अपितु अपन अन्तर्हृदयक उपज थिक, आत्माक अनुशासन थिक। आ, तेँ एकर अनुपालनमे, भले ओ कठोर किएक नहि हो, कोनो कष्ट नहि, प्रमाद नहि, आनन्द, आत्मिक आनन्द।

अमरजीक पूरा जीवन अनुशासित जीवन अछि। हिनक प्रत्येक काजमे अनुशासन अछि। एकरे परिचायक थिक समयबद्धता। प्रत्येक काजक समय पर आ निश्चित रूपेँ अनुपालन आन्तरिक अनुशासनक बिना सम्भवे नहि अछि।

अमरजीकेँ सात बजे दूध अनबाक छनि, आठ बजे पूजा करबाक छनि, नओ बजे पाञ्चजन्य पढ़बाक छनि, दस बजे भेटक समय छनि तँ ठीक एहिना होयत, एहिमे राजादैव छोड़ि कोनो बाधा नहि होयत। गाड़ी पकड़बाक लेल जेना समयसारिणी देखबाक आवश्यकता होइत छैक, तहिना अमरजी सँ साक्षात्कार लेल हिनक समयसारिणीक ध्यान राखब आवश्यक। ई व्यवस्थित अनुशासित जीवनक परिचायक थिक।

एहि तरहेँ हम देखैत छी स्वयंसेवकक जे अनेक गुण, ताहि गुण वैशिष्ट्य सँ अमरजीक व्यक्तित्व पूर्णरूपेण मण्डित अछि। एही संग स्वयंसेवक केँ सदाचारी होयबाक चाही, उच्च विचार तथा ओकरा अपन जीवनमे अनूदित करबाक सत्प्रयास तथा सादा रहन-सहन। अहंकार नहि, मुदा स्वाभिमान।

संस्कृतिनिष्ठ राष्ट्रवादीकेँ जेना हिन्दू कहयबामे गौरवक अनुभव होइत छैक, तहिना स्वयंसेवककेँ स्वयंसेवक कहयबामे गौरवक आनन्द होइत छैक। माननीय श्री सुन्दर सिंह भण्डारीजीक (तत्कालीन राज्यपाल, बिहार) जखन राजद द्वारा व्यक्तिगत आलोचना होबऽ लागल, तखन एकर प्रत्युत्तर मे भण्डारीजी कहने छलाह–''मैं स्वयंसेवक हूँ तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक होने में मैं गौरव का अनुभव करता हूँ।''

अमरजीमे उच्च विचार ओ सादा जीवन प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर अछिए, संगहि स्वाभिमान सेहो पुरजोर अछि आ अछि स्वयंसेवक कहयबामे गौरवक अनुभव आ एही कारणे ठाम-ठाम हिनक आचरणमे कठोरताक सेहो दिग्दर्शन भऽ जाइत अछि। मुदा ई कठोरता नियमपालनक कठोरता थिक, अनुशासित जीवनक सहज प्रतिक्रिया थिक, परपीड़णनम् नहि। कुसियार ऊपरे सँ कठोर लगैत छैक, भीतर रससँ सराबोर।

अमरजी स्वयंसेवक छथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघक। संघक अर्थ होइछ चरित्रवान, निष्ठावान, ध्येयवादीक संघटन। संघ लेल राष्टे सर्वोपरि होइत अछि। संघ परमपिता परमेश्वरोक दर्शन राष्ट्रपिताहिक रूपमे करैत अछि। सरसंघचालक गुरुजी संघप्रार्थना छोड़ि अन्य प्रार्थना नहि करैत छलाह।

संघ हिन्दुत्व ओ राष्ट्रीयतामे फर्क नहि करैत अछि। हिन्दूक अर्थ सम्प्रदाय कदापि नहि। एही कारणे संघ राष्ट्रवादी मुसलमान केँ हिन्दू-मुसलमान कहैत अछि। जेना, सम्प्रदायनिरपेक्ष भावे, रूसक लेक रूसी, चीनक लोक चीनी, जापानक लोक जापानी कहबैत अछि, तहिना हिन्दुस्तानक सभजन, चाहे हुनक सम्प्रदाय जे हो, हिन्दू वा कोनो आने, भारतक लोक भारतीय अछि।

एहि अवधारणाकेँ अमरजी स्वीकार करैत छथि। अमरजी एहि बातकेँ मानैत छथि जे मुसलमान वा इशाक बन्धु अपन-अपन सम्प्रदायक प्रति श्रद्धा-विश्वास रखितो ओतबहि राष्ट्रीय छथि जतेक हिन्दू, जँ एहि भूमिक प्रति मातृभाव तथा एहि ठामक समाजक प्रति मातृभाव छनि। आ, ओ राष्ट्रीय छथि तँ हुनका हिनदू कहयबामे गौरवक अनुभव होयबाक चाही।

●

पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ओ मैथिली सिनेमा

डॉ० गोपालजी झा 'गोपेश'

आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकटा एहन व्यक्तित्वक रूपमे जानल जाइत छथि जनिका अपन मातृभाषाक अनन्य भक्त एवं समर्पित साधकक रूपमे प्रसिद्धि प्राप्त छनि। हाइ स्कूलमे मैथिली पढ़ओनिहार बहुतो पंडित ओ हेडपंडित भेल छथि, किन्तु जे सुयश एवं उत्कर्ष पं० कांचीनाथ झा 'किरण', पं० काशीकान्त मिश्र 'मधुप', पं० आद्यानाथ झा 'निरंकुश' तथा पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कैं प्राप्त भेलन्हि से बहुत कम गोटेकैं। हालहि एम० एल० एकेडमी, लहेरियासरायक स्वनामधन्य प्रधानाध्यापक श्री झिंगुर कुमर अपन निकटतम सम्बन्धीक ओतए एकटा वैवाहिक समारोहमे उपस्थित भेल रहथि। हमहूँ ओहिमे आमंत्रित छलहुँ। ओहि ठाम जखन हमरा हुनकासँ परिचय कराओल गेल, तँ ओ कहलन्हि–'गोपेशजी, आब 'सोनदाइक चिट्ठी' हरिअर-हरिअर कागत पर अबैत अछि कि नहि?'' हम हुनका मुहें ई सुनैत देरी तारतम्यमे पड़ि गेलहुँ आ कहलिअन्हि ''अपने कतए देखलिअइ ?'' कुमरजी (अमरजीक नाम लैत) जनओलन्हि–''पंडितजी हमर विद्यालय कैं मैथिलीमय कय देलन्हि। एहन कोनो पोथी आ पत्र-पत्रिका मैथिलीमे ओहि समयमे नहि छल जे हमरा स्कूलमे नहि अबैत हो।'' जे-से। फेर कहलन्हि–''ओ सिनेमा जाहिमे पंडितजी लालकाकाक रोल कएने छलाहे से फेर नहि अओतैक? अहूँ तँ अवैतनिक सलाहकारक रूपमे 'कन्यादान'-सिनेमासँ जुड़ल रही?'' हुनक जिज्ञासाकैं पूर्ति करैत हम कहलिऐन्हि–''आजुक तारीखमे सिने-विधा ततेक आगाँ चल गेल छैक जे ओहि संबंध मे आब लोक किछु सोचबो छोड़ि देलक। जखन नीकसँ नीक फिल्म कोनहु हॉलमे एक सप्ताह नहि चलि पबैत अछि, तखन श्वेत-श्याम मैथिली फिल्मकैं कोन सिनेमामालिक मंगएबाक जोखिम उठाओत। दोसर बात ई जे भाषा-प्रेमवश यदि कोनो हॉलवला मंगबहु चाहत, तँ से संभव नहि, एहिमे कतओक तकनीकी एवं कानूनी कठिनता छैक। संगहि, एकर प्रिंट राखल-राखल आब खराबो भ' गेल हेतइ।'' हमर उत्तरसँ कुमरजी संतुष्ट छलाह। एहि प्रकरण कैं एतहि समाप्त कऽ हम आगाँ बढ़ैत छी।

अमरजी आर्यावर्तमे बरोबरि किछु-ने-किछु लिखैत छलाह। 'सामाजिक प्रसंग' स्तम्भमे हमरहु लेखन निरन्तर जारी छल। कोनहु-ने-कोनहु विषय पर हमरा दूनू गोटेमे वैचारिक मतभेद होइतहुँ, आपकता एवं सामान्य शिष्टाचारमे कतहु चूक लक्षित नहि भेल। ओना राग-द्वेष एवं कटुता पहिनहुँ चलैत रहल अछि, किन्तु सम्प्रति जे गोलैसी आ कटुतापूर्ण स्थिति साहित्यक क्षेत्र मे (विशेषकऽ मैथिलीमे) देखल जाइछ, से संकीर्णताक पराकाष्ठा कहल जा सकैछ। ओना मैथिली आब ओ लगहरि गाए नहि रहि गेल अछि। लोकसेवाआयोगमे आ इन्टर स्तर मध्य वहिष्कृत भेला सन्तां छात्र लोकनिक संख्यामे सेहो आपेक्षिक ह्रास देखल जाइछ। आकाशवाणी आ' दूरदर्शन द्वारा सेहो उपेक्षाक भाव अछि। मात्र 'साहित्य अकादेमी' द्वारा मान्यता प्राप्तिक फलस्वरूप कोनो कृतिकार भनहि पुरस्कृत भए जाथु, मुदा मैथिलीक कल्याण तखनहि भ' सकतैक जखन पोथी किनबाक ओ जन-जनमे ओकरा पढ़बाक रुचि जाग्रत हेतैक।

पं० चन्द्रनाथ मिश्र एकान्त साहित्यसेवी छथि। हिनक रचना-धर्मिता मात्र काव्य-रचने धरि सीमित नहि अछि। मैथिली आन्दोलन कैं गति प्रदान करबाक दिशामे सेहो हिनक दृष्टिकोण फरिच्छ कहल जा सकैछ। जखन हम नयाटोलाक निकट काजीपुर महल्लामे रहैत छलहुँ, तँ नियमित रूपेँ मैथिली कविगोष्ठीक आयोजन हमरा ओतए होइत छल। तहिया मैथिलीक स्वतंत्र प्रोग्रामक व्यवस्था आकाशवाणीमे नहि छलैक। ग्रामीण लोकनिक कार्यक्रम चौपाल मध्य लोकभाषा कविगोष्ठी आयोजित होइत छलैक जाहिमे मैथिली, भोजपुरी आ मगहीक कवि लोकनि भाग लैत

छलाह। आकाशवाणी द्वारा आयोजित कविगोष्ठीमे सुमनजी, किरणजी, मधुपजी, चन्द्रभानु सिंह, आरसी बाबू प्रभृति मैथिलीक प्रतिनिधित्व कएल करथि। स्थानीय कविलोकनिमे व्यासजी, भवनाथजी, जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक', गोपालजी झा 'गोपेश', मायानन्द मिश्र आदिक सूची छल। पहिने इन्दुजी आ बाद मे मायानन्दजी आकाशवाणी सँ जुड़ि गेलाह। चेतना समितिक विद्यापति पर्वमे कविक रूपमे अमरजीक उपस्थिति अनिवार्य छल। श्रोता हिनक हास्य-व्यंग्यपरक काव्य-रचना सबसँ परिचित छलाह आ' कविसम्मेलन ततेक जमैत छलैक जे एक कविकेँ दू-दू टा रचना (कमसँ कम) पढ़ए पड़ैत छलन्हि। रवीन्द्रनाथ ठाकुरक आगमन बाद मे भेल आ' ई अपन गीतसँ मंचकेँ सम्हारबा मे कुशल बूझल जाइत रहथि। एहि क्रममे एहि बातक उल्लेख करब अप्रासंगिक नहि होएत जे 1993 ई० मे जे विद्यापति पर्वक आयोजन भेल छल ताहिमे तेसर दिनक उद्घाटन कएलन्हि डॉ० नागेन्द्र झा आओर मुख्य अतिथि छलाह पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। विचारगोष्ठीक अध्यक्षता सेहो ओएह (अमरजी) कएलन्हि। जे-से। ई तँ भेल पूर्व-पीठिका। आब मैथिली सिनेमाक क्षेत्रमे अमरजीक योगदानक प्रसंग चर्च करए चाहब।

यत्र-तत्र बहुत दिनसँ गप्प भऽ रहल छल जे यदि मैथिलीमे चलचित्रक निर्माण हो तँ भाषा-साहित्यक उन्नयनक दिशामे प्रभावी डेग हेतैक। तहिआ श्वेत-श्याम फिल्म बनएबामे लगभग (कमसँ कम) पाँच-छओ लाख टाकाक व्यय होइत छलैक। कोनो फाइनेन्सर आंचलिकं वा क्षेत्रीय भाषामे फिल्म निर्माणक जोखिम तखनहि उठाओत जखन ओकरा राज्य सरकार टैक्स माफ कऽ देतैक। हम आ पं० रूपनारायण ठाकुर दुनू गोटे वीणा सिनेमा पहुँचलहुँ आ' ओकर प्रोप्राइटर हीरा बाबू (वीरेन्द्र कुमार सिन्हा) सँ अनुरोध कएल जे प्रोफेसर हरिमोहन झाक प्रसिद्ध मैथिली उपन्यास 'कन्यादान एवं द्विरागमन'क आधार पर यदि फिल्म बनाओल जाए तँ एहि दिशामे अहाँक योगदान कहिओ विस्मृत नहि होएत। हुनक पिता बाबू गजेन्द्र नारायण सिंह (शुंभा ड्योढ़ीक मालिक) सेहो ओहि समयमे पटनामे उपस्थित छलथिन्ह। हीरा बाबू एहि लेल सोचबाक हेतु किछु समय मंगलनि। हम आ रूप बाबू दूनू गोटे बेरि-बेरि वीणा सिनेमा आ हुनक राजेन्द्रनगर निवास पर जा कए हुनका स्मारित करैत छलिअन्हि। ओहि दिन गजेन्द्र बाबू संयोगसँ डेरा पर उपस्थित छलथिन। ओ हमरासँ पूर्वपरिचित रहथि। हुनक दरबार नीक जकाँ करए पड़ल। हरिमोहन बाबूक 'कन्यादान' उपन्यासक लोकप्रियतासँ ओ पूर्ण परिचित छलाह। हुनक अनुकूल 'मूड' देखिकऽ हीरा बाबू स्वीकृतिक मोहर लगा देलन्हि। एहि प्रकारेँ 'आभाचित्रम्, पटना'क सौजन्यसँ मैथिलीक प्रथम फिल्म 'कन्यादान'क कन्ट्रैक्ट साइन भेल– 1963 ई०क अन्तमे वा 1964 ई०क प्रारम्भमे। निर्देशक फणि मजूमदार, पटकथा लेखक नवेन्दु घोष, संवाद लेखक फणीश्वरनाथ रेणु, निर्माता एस० एच० मुंशी आओर फाइनेन्सर हीरा बाबू (वीरेन्द्र कुमार सिन्हा) हमर काजीपुर स्थित निवास 'गोपाल कुटीर' पर पहुँचलाह। हुनका लोकनिक अएबाक सूचना पहिनहि प्रो० हरिमोहन झा जी सँ हमरा भेटि चुकल छल, तेँ हम मकान मालिकसँ ओकर ड्राइंगरूम लऽकऽ ओहिमे हुनका लोकनिक स्वागत सत्कारक व्यवस्था कएने छलहुँ। हीरा बाबू कहलन्हि–'डाइरेक्टरक इच्छानुसार नवेन्दु घोष 'कनफ्लिक्ट' उत्पन्न करबा लेल एकटा साइड हीरोक समावेश कए देलन्हि अछि। एकरा हरिमोहन बाबूसँ 'एप्रूव' करएबाक भार अहीँ पर अछि। हरिमोहन बाबूसँ पहिनहि हमरा ई संकेत भेटि गेल छल जे नवेन्दु घोषकेँ सिनीरिओ एवं पटकथा लेखनक जे भार देल गेल अछि, एहिमे हमरा किछु एहन चालि बूझि पड़ि रहल अछि जे हमर लेखकीय प्रतिष्ठा कतहु माटि मे नहि मिलि जाए। ताहि पर हम कहलिअन्हि–''स्क्रीन प्ले वा पटकथा लेखन नितांत कमर्शियल होइत छैक। आइ धरि जतेक फिल्म-निर्माण भेलैक अछि, मूलकथा किछु-ने-किछु प्रभावित भेवे केलैक, तथापि यदि मूल उपन्यासक उद्देश्य अक्षुण्ण रहि जाइत छैक, तँ कोनो हर्ज नहि।''

नवेन्दु घोष पटकथा लेखनमे अनिल नामक एकटा युवक कैँ एहि रूपमे उभारने छलाह जे सम्बन्धमे तँ बुच्ची दाइक भाइ लगैत छलैक, किन्तु हाव-भावसँ कथानायक सी० सी० मिश्र कैँ ओ प्रतिद्वन्द्वी (राइवल) बुझि पड़ैत छलन्हि। अन्तमे जखन भेद फुजैत अछि तँ बुझू ओही युवक द्वारा बुच्ची दाइक प्रेमीक स्वांग रचब सी०सी० मिश्र कैँ छकएबाक एकटा योजना सिद्ध होइछ। नवेन्दु घोष, फणिदा, हीरा बाबू आ एस० एच० मुंशीकैँ हम स्पष्ट कहलिअन्हि– मुदा हरिमोहन बाबू कथाक एहन मोड़कैँ कोना अनुमोदन करताह? एहि विषय पर बेस माथापच्ची भेल। अगत्या, हम फाइनेन्सर हीरा बाबू कैँ सुझाओ देलिअन्हि–''माछ-भातक इन्तजाम करू–पलइ तरल आ रोहूक मूड़ा अवश्य रहए। खएबा काल हरिमोहन बाबूक एप्रूवल दिअएबाक चेष्टा कएल जाएत।''

हमर अनुमान ठीके छल। माछ-भातक सरंजाम कएल गेल। शुम्भा डेओढ़ी सँ जुआएल अधमोन्ना रोहु मङबाओल गेल छल। जखन सोझाँमे आएल तँ हीरा बाबू गाप चलाए देलन्हि। नवेन्दु बाबू सीनिरियोक विश्लेषण करैत मूल बिन्दु पर पहुँचलाह। हरिमोहन बाबू जखन माछक तरल पेटी सुआदए लगलाह तँ हम मूलकथा मे पटकथा लेखक द्वारा परिवर्तित सन्दर्भकैँ खोंइचा छोड़ा कए स्पष्ट कए देल। हरिमोहन बाबू अपन स्वीकृति दैत कहलथिन्ह– ''अरे, ई सब तँ टेकनिकल मैटर छैक। डाइरेक्टर, प्रोड्यूसर, डिस्ट्रीव्यूटर, फाइनेन्सर एवं सीनिरिओ राइटर जे किछु परिवर्तन करए चाहथि, हम कतहु बाधक नहि बनबन्हि।

हीरा बाबू हुनकासँ कन्ट्रैक्ट भरएबाक प्रस्ताव रखलन्हि। हरिमोहन बाबूक उत्तर छल–''भोजनक बाद अगिला प्रक्रिया शुरू कएल जाए। जे अनुबन्ध करएबाक हो, कराए लेब। मुदा लेखक कैँ 'सगुन' मे किछु भेटि जएबाक चाही।'' भोजनक क्रममे हरिमोहन बाबू भनसियाक तारीफक पूल बन्हैत कहलथिन्ह–''सुनैत छी हीरा बाबू, जखन फिल्म रिलीज होएत तखनहु एही भनसियाकैँ रखबन्हि।'' एवम् प्रकारेँ एतप्रसंग हरिमोहन बाबूक अनुमोदन प्राप्त भेल।

हीरा बाबू एकटा लिफाफ हरिमोहन बाबूक सोझाँ बढ़ाए देलथिन्ह। हरिमोहन बाबू ओकरा जेबी मे राखि लेलन्हि। 'सगुन'क रूपमे ओहि लिफाफ मे हुनका की भेटलन्हि, तकर खुलासा हरिमोहन बाबू नहि कहलन्हि। हमरहु पूछब उचित नहि बूझि पड़ल। डाइरेक्टर फणि मजूमदार कैँ फाइनेन्सर दिससँ पहिनाहि 'सगुन' भेटि चुकल छलन्हि। आओर ककरा की भेटलैक, से नहि कहि सकैत छी। हमरा टा हरिमोहन बाबू प्रोत्साहनक फुहारा दैत कहलन्हि – 'अहाँ सनक मैथिलीसेवी कोनो दोसर युवक नहि बुझि पड़ैए। सिनेमाक यूनिट मेसँ डाइरेक्टर, प्रोड्यूसर तथा फोटोग्राफर चन्दूभाइ लोकेशन शूटिंग मे जएताए। हीरा बाबू सेहो अहाँक संगहि रहताह। दू-चारि दिनक 'कैजुअल लीव' लेलासँ काज चलि जाएत। अहाँक रहला सँ पात्रक चयन मे सुविधा होएत। लाल काकाक भूमिका लेल सेहो कोनो उपयुक्त व्यक्तिकैँ ध्यानमे राखए पड़त। यदि अहाँ तैआर होइतहुँ तँ बड़ नीक छल।'' हुनक अभिप्राय बुझबामे हमरा भांगठ नहि भेल। तथापि हम कहलिअन्हि-हमरा संगे किछु व्यक्तिगत कठिनता अछि, इनडोर शूटिंगमे बम्बइ जएबा लेल।

अन्ततः लोकेशन केर साइट सेलेक्शन एवं शूटिंगमे जएबाक निर्णय करहि पड़ल। हमर श्रीमतीजी तहिया मगध महिला कालेजमे बी० ए० क छात्रा छलीह। कॉलेज फूजल छलन्हि, तेँ विचार भेल जे हम एकसरे चल जाइ। ध्यानमे आएल जे मधुबनीक मोख्तार साहेब आ' मैथिली प्रहसन 'छीक' केर रचयिता हरीशजी 'लाल काका'क भूमिकामे खूब रहताह, मुदा ओ तैआर होएताह ताहि संबंधमे तारतम्य मोन मे बनले छल। जे-से। पं० चन्द्रनाथ मिश्रजी 'अमर' सेहो प्राग्रता सूची मे रहथि। हुनकहु संबंधमे ई शंका बनल छलए जे कतोक कारणवश ओ बम्बइ जएबा लेल प्रस्तुत होएताह कि नहि। कतोक विधि-निषेधक कारणे हुनका स्कूलसँ अनुमति भेटि सकतन्हि, ताहू लेल सशंकित छलहुँ। जे-से। एहि विषय पर कतोक मंथन कएलाक बाद पहिने दरभंगा पहुँचलहुँ। ओतए फ्रेश होइत-होइत लगभग दू बाजि गेल छल।

पहिने हम सकुरी पंडौल होइत मधुबनी पहुँचि पं० हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'क खोज कएल। पता लागल जे ओ मधुबनीमे उपलब्ध नहि छथि आ' दोसर बात जे तीन-चारि मास लेल बम्बइ जएबाक हेतु ओ अपन प्रैक्टिस नहि छोड़ताह। तखन लालकाकाक रोल श्री अमरजी कैँ देबाक प्रसंग डाइरेक्टर एवं फाइनेन्सर मे विचार भेल। हमर सुझाओ छल जे अमरजीकैँ एहि लेल राजी करबा लए हरिमोहन बाबूक चिट्ठी वा हुनकासँ सम्पर्क करबाक संवाद लऽ लेल जाए तँ बढ़िआँ। आओर भेवो कएल सएह। हरिमोहन बाबूक अनुरोध पर अमरजी लाल काकाक भूमिकाक निर्वाह करबा लेल एवं कन्यादान फिल्मकैं भाषा-संस्कृतिक दृष्टि सँ देखबा-सुनबा लेल राजी भऽ गेलाह। 'आउटडोर' शूटिंग कैं देखबा-सुनबाक भार हमरा भेटल। हम टा सुच्चा 'अवैतनिक' रूपेँ योगदान करबाक निर्णय कएल। भाषा-संस्कृतिक उत्थान लेल यदि घरोक आँटा गील करए पड़ए तँ ताहि लेल हम सदिखन प्रस्तुत रहैत छी। जेँ अपन दृष्टिकोण कैं आइ-धरि कमर्शियल नहि बनाओल तेँ बहुतो ठाम लोककैं हमरा सङ 'एड्जस्टमेंट' उकरू एवं अप्रीतिकर बूझि पड़ैत छैक, मुदा हमरा एहीसँ सन्तोष भेटैत अछि।

'लोकेशन' केर चयन लेल यूनिटक किछु गोटेक संग हम अपन सासुर दुलारपुर (सकरी जंकशनक निकट) पहुँचलहुँ। हमर श्वसुर पं० फणीन्द्र नारायण चौधरी द्वारा 'फणिदा' (निर्देशक), एस० एच० मुंशी (निर्माता) एवं फाइनेंसर हीरा बाबूक शानदार स्वागत कएल गेल। ओ कहलथिन्ह जे तन, मन आ' धनसँ हमरा बुते जतेक सहायता होएत, से करबासँ हम पाछाँ नहि रहब। 'फणिदा' तथा 'चन्दू भाइ' अंगना जा कए ओहि कोठलीक फोटोग्राफ लेलन्हि, जाहि मे हमर 'कोबर' बनल छल। फणिदा वैवाहिक विधि-व्यवहारक संबंधमे हमर श्वसुरक निकट सम्बन्धी पं० बलदेवझा एवं पं० रामदेव झा (तत्कालीन शिक्षक) सँ सविस्तर वार्तालाप कएलन्हि। विधि-व्यवहार मे (कतहु पारम्परिक दृष्टिएँ) त्रुटि नहि हो, तेँ विन्ध्यनाथ ठाकुरक माए सँ सेहो समुचित परामर्श लऽ लेल गेल। दुर्गास्थान मोकरमपुरसँ बरिआती प्रस्थान करए से सर्वसम्मति सँ निर्णय भेल। ओ काफी प्रशस्त स्थान छैक-तेँ डाइरेक्टर ओकरा चयन कएलन्हि। ओहू ठामक फोटोग्राफी भेल। तत्पश्चात् सकुरीक डाक्टरक घरकैं देखलाक बाद चयन कएल गेल जतए झारखंडीनाथ तार पढ़बए गेल रहथि। सकरी जं०, दहौराक कलमबाग, सौराठसभा आदि स्थान जा' जा' कए देखल गेल आ' सिक्वेन्सक अनुसार चयन एवं फोटोग्राफी केर काज सम्पादित भेल।

पुनः बादमे यूनिटक संग हमरो आउटडोर शूटिंगमे जाए पड़ल। मोकरमपुर दुर्गास्थानसँ जे बरिआती चलल, ताहि संग ढोल-पिपहीक सेहो व्यवस्था छल। बरिआतीक आगाँ-आगाँ हमर श्वसुरजी (मिर्जइ पागमे), पंडित बलदेवझा, श्री गोपीरमण चौधरी, ठकुरबाड़ीक पुजेगरी सीताराम आओर बहुतो गोटे छलाह जनिका हम नहि चिन्हैत छलिअन्हि। केओ एक गोटे लूंगी पहिरिकऽ बरिआतीमे सम्मिलित भेलाह, किन्तु हुनका धोती-कुर्ता मे अएबाक निर्देश भेटल। बरियातीक संख्या सए-डेढ़ सए सँ उपरे रहल होएत। तमाशा देखनिहारक क्लोज-अप सेहो लेल गेल। लगभग चारि-पाँच टा भरियाक संग पं० रामदेव झा छलाह। भारमे चूड़ा, केरा, भरल कस्तारा दही आ' माछक व्योँत स्वयं हमर श्वसुरजी कएने रहथि। चंगेरामे मधुर मिष्ठान्न, (खाजा, ठकुआ, पिरुकिया) एवं अरबा चाउर सेहो छल। एहि सब व्यवस्था लेल फाइनेन्सरसँ कोनो द्रव्य नहि लेल गेल छल। क्लोजअप केर फोटोग्राफी मे भारक सरंजाम देखल जा सकैत अछि। तत्पश्चात् सकरी जं० पर जे शूटिंग भेल ताहिमे सी० सी० मिश्र रेवतीरमण केर वार्तालापबला सिक्वेंस अछि। तरुण बोस (रेवती रमण) आ सी० सी० मिश्र (गोपाल)क संवादक फिल्मीकरण जखन भए रहल छल तखन हमहूँ उपस्थित छलहुँ–मैथिली शब्दक उच्चारणमे बेरि-बेरि अभ्यास करओने छलिऐक, तइओ गलती भए जएबाक कारणे 'रिटेक' भए जाइत छलैक। एक-एक प्रकरण केर शूटिंग मे 2-3 घंटा लागि जाइक। फाइनेंसर चिंतित छलाह जे

पहिने हम सकुरी पंडौल होइत मधुबनी पहुँचि पं० हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'क खोज कएल। पता लागल जे ओ मधुबनीमे उपलब्ध नहि छथि आ' दोसर बात जे तीन-चारि मास लेल बम्बइ जएबाक हेतु ओ अपन प्रैक्टिस नहि छोड़ताह। तखन लालकाकाक रोल श्री अमरजी कैँ देबाक प्रसंग डाइरेक्टर एवं फाइनेन्सर मे विचार भेल। हमर सुझाओ छल जे अमरजीकैँ एहि लेल राजी करबा लए हरिमोहन बाबूक चिट्ठी वा हुनकासँ सम्पर्क करबाक संवाद लऽ लेल जाए तँ बढ़िआँ। आओर भेवो कएल सएह। हरिमोहन बाबूक अनुरोध पर अमरजी लाल काकाक भूमिकाक निर्वाह करबा लेल एवं कन्यादान फिल्मकैँ भाषा-संस्कृतिक दृष्टि सँ देखबा-सुनबा लेल राजी भऽ गेलाह। 'आउटडोर' शूटिंग कैँ देखबा-सुनबाक भार हमरा भेटल। हम टा सुच्चा 'अवैतनिक' रूपेँ योगदान करबाक निर्णय कएल। भाषा-संस्कृतिक उत्थान लेल यदि घरोक आँटा गील करए पड़ए तँ ताहि लेल हम सदिखन प्रस्तुत रहैत छी। जेँ अपन दृष्टिकोण कैँ आइ-धरि कमर्शियल नहि बनाओल तेँ बहुतो ठाम लोककैँ हमरा सङ 'एडजस्टमेंट' उकरू एवं अप्रीतिकर बूझि पड़ैत छैक, मुदा हमरा एहीसँ सन्तोष भेटैत अछि।

'लोकेशन' केर चयन लेल यूनिटक किछु गोटेक संग हम अपन सासुर दुलारपुर (सकरी जंकशनक निकट) पहुँचलहुँ। हमर श्वसुर पं० फणीन्द्र नारायण चौधरी द्वारा 'फणिदा' (निर्देशक), एस० एच० मुंशी (निर्माता) एवं फाइनेंसर हीरा बाबूक शानदार स्वागत कएल गेल। ओ कहलथिन्ह जे तन, मन आ' धनसँ हमरा बुते जतेक सहायता होएत, से करबासँ हम पाछाँ नहि रहब। 'फणिदा' तथा 'चन्दू भाइ' अंगना जा कए ओहि कोठलीक फोटोग्राफ लेलन्हि, जाहि मे हमर 'कोबर' बनल छल। फणिदा वैवाहिक विधि-व्यवहारक संबंधमे हमर श्वसुरक निकट सम्बन्धी पं० बलदेवझा एवं पं० रामदेव झा (तत्कालीन शिक्षक) सँ सविस्तर वार्तालाप कएलन्हि। विधि-व्यवहार मे (कतहु पारम्परिक दृष्टिएँ) त्रुटि नहि हो, तेँ विन्ध्यनाथ ठाकुरक माए सँ सेहो समुचित परामर्श लऽ लेल गेल। दुर्गास्थान मोकरमपुरसँ बरिआती प्रस्थान करए से सर्वसम्मति सँ निर्णय भेल। ओ काफी प्रशस्त स्थान छैक-तेँ डाइरेक्टर ओकरा चयन कएलन्हि। ओहू ठामक फोटोग्राफी भेल। तत्पश्चात् सकुरीक डाक्टरक घरकैँ देखलाक बाद चयन कएल गेल जतए झारखंडीनाथ तार पढ़बए गेल रहथि। सकरी जं०, दहौराक कलमबाग, सौराठसभा आदि स्थान जा' जा' कए देखल गेल आ' सिक्वेन्सक अनुसार चयन एवं फोटोग्राफी केर काज सम्पादित भेल।

पुनः बादमे यूनिटक संग हमरो आउटडोर शूटिंगमे जाए पड़ल। मोकरमपुर दुर्गास्थानसँ जे बरिआती चलल, ताहि संग ढोल-पिपहीक सेहो व्यवस्था छल। बरिआतीक आगाँ-आगाँ हमर श्वसुरजी (मिर्जइ पागमे), पंडित बलदेवझा, श्री गोपीरमण चौधरी, ठकुरबाड़ीक पुजेगरी सीताराम आओर बहुतो गोटे छलाह जनिका हम नहि चिन्हैत छलिअन्हि। केओ एक गोटे लूंगी पहिरिकऽ बरिआतीमे सम्मिलित भेलाह, किन्तु हुनका धोती-कुर्ता मे अएबाक निर्देश भेटल। बरियातीक संख्या सए-डेढ़ सए सँ उपरे रहल होएत। तमाशा देखनिहारक क्लोज-अप सेहो लेल गेल। लगभग चारि-पाँच टा भरियाक संग पं० रामदेव झा छलाह। भारमे चूड़ा, केरा, भरल कस्तारा दही आ' माछक व्योंत स्वयं हमर श्वसुरजी कएने रहथि। चंगेरामे मधुर मिष्ठान्न, (खाजा, ठकुआ, पिरुकिया) एवं अरबा चाउर सेहो छल। एहि सब व्यवस्था लेल फाइनेन्सरसँ कोनो द्रव्य नहि लेल गेल छल। क्लोजअप केर फोटोग्राफी मे भारक सरंजाम देखल जा सकैत अछि। तत्पश्चात् सकरी जं० पर जे शूटिंग भेल ताहिमे सी० सी० मिश्र रेवतीरमण केर वार्तालापबला सिक्वेंस अछि। तरुण बोस (रेवती रमण) आ सी० सी० मिश्र (गोपाल)क संवादक फिल्मीकरण जखन भए रहल छल तखन हमहूँ उपस्थित छलहुँ–मैथिली शब्दक उच्चारणमे बेरि-बेरि अभ्यास करओने छलिऐक, तइओ गलती भए जएबाक कारणे 'रिटेक' भए जाइत छलैक। एक-एक प्रकरण केर शूटिंग मे 2-3 घंटा लागि जाइक। फाइनेंसर चिंतित छलाह जे

प्रगति बड़ 'स्लो' जा रहल अछि, मुदा हम स्पष्ट कहलिअन्हि, यावत सब ठीक-ठाक नहि होएत, 'फाइनल' करबाक ग्रीन सिग्नल कोना भेटत? एवम् प्रकारे सुकरीक डाकदरक ओतए झारखंडीनाथ (ब्रजकिशोर) कोना तार पढ़बए गेलाह ताहि प्रकरणक फिल्मीकरण भेल। शूटिंग देखबा लेल तमाशा देखनिहारक काफी भीड़ होइतहुँ, अनियंत्रित नहि छल। सेक्युरिटीमे मात्र दू-चारि टा लाठीधारी पुलिस कांस्टेबुलक व्यवस्था रहए। आजुक परिस्थितिमे बिनु टाइट सेक्युरिटीक कतहु सूटिंग कार्य संभव नहि अछि। सौराठ आ दहौराक कलमबागमे जे शूटिंग भेल, ताहिमे एक ठाम पं० बलदेव झाक सङ अमरजी सेहो छथि। दूहू गोटे मे विवाहक प्रसंग गप्प भऽ रहल अछि।

दहौरामे एक ठाम आउटडोर शूटिंगमे फिल्मक नायिका लतासिन्हाक क्लोज-अप बड़ बढ़िआँ भेल। लहेरियासरायक 'मीरा होटल'मे यूनिटक लोक संगे हमहूँ अँटकल छलहुँ-ओहीठाम डाइरेक्टर एवं प्रोड्यूसरक सोझाँ हम मैथिली डाइलॉग केर हुनका अभ्यास करबिअन्हि। एहिमे सन्देह नहि जे एकटा बम्बइया हिरोइन होइतहुँ ओ मैथिलीक 'इन्टोनेशन' एवं 'एक्सेंट'कैँ नीक जकाँ पिक-अप कए लेथि। एक दिन शूटिंग केर क्रममे ओ हमरा सँ मिथिलाक 'लोक-भोजन' खोआएबाक आग्रह कएलन्हि। हम दुलारपुर सँ पचास साठि टा 'मरुआक रोटी' ओ गरचुन्नी माछक तीमन केर व्यवस्था कए यूनिटक लोककैँ समवेत रूपेँ खोआए देल। आन गोटे तँ एक-आध टुकड़ी खएलक, मुदा लतासिन्हा दूटा रोटी खा गेलीह। गरचुन्नी माछ आ मरुआक रोटी मैथिलानीक प्रिय भोजन थिक-भरिसक एही भावनासँ प्रेरित भए ओ किछु बेसी उत्साह देखौलन्हि। परन्तु एकर परिणाम नीक नेहि भेल। सम्पूर्ण दरिभंगामे बिजुरिक करेंट जकाँ ई खबरि पसरि गेल जे कन्यादान फिल्मक नायिका माछ-मरुआ रोठी खएबाक कारणे कब्ज सँ पीड़ित भए गेलि छथि। एक तँ दू-तीन दिन सँ बुनछेक नहि होएबाक कराणे शूटिंग ओहिना बन्द छल-मुदा एहि कारणे दू दिन आओर बन्द भए गेल। डायरेक्टर महोदय हमरा कहय लगलाह–'गोपेशजी, मरुआ रोटी नहीं देनी चाहिए थी।' हम कहलिऐन्हि–''मिथिला का लोकभोजन तो यही है, फिर मैं क्या करता?'' कब्जियतक शिकार तँ आओरो गोटे भेलाह, मुदा डाक्टरी उपचार हिनकहिटा भेल। डाक्टरी उपचार सँ ठीक होएबामे बिलम्ब होइत देखि हम 'सनाए पत्ती'क प्रयोगक सुझाओ देलिअन्हि। एकटा बैद्यजीक सुझाओ सेहो वएह छलन्हि। अन्ततोगत्वा, ओ कब्जसँ त्राण पओलन्हि। एहि फिल्ममे 'चांद उस्मानी' बड़का गामबालीक भूमिकाक निर्वाह कएने रहथि। संगहि कोनहु सिक्वेंसमे 'टुनटुन'क अदाकारी दर्शक लोकनिकैँ हँसबैत-हँसबैत लोट-पोट कऽ दैत अछि।

इनडोर शूटिंग लेल अमरजीकैँ बम्बइ पठाओल गेल। ओहि ठाम कोनो नीक होटलमे हुनक रहबाक व्यवस्था कएल गेल। ओहि ठाम हुनका की सुविधा-असुविधा छलन्हि ताहि प्रसंग ओ स्वयं कहताह। मुदा हमरा जे रिपोर्ट भेटैत छल ताहि अनुसारेँ हुनका हेतु भोजनादिक अनुकूल व्यवस्था छल। तमाकू-सुपारी भेटैत छलन्हि वा नहि, से वएह कहताह। एहि फिल्मक म्यूजिक डाइरेक्टर छलीह श्रीमती बिन्ध्यवासिनी देवी। एक-दू टा विद्यापतिक गीतक चयन कएल गेल छल। नायिका द्वारा ई गीत गबैत देखाओल गेल अछि–'सखि हे हमर दुखक नहि ओर'। भरिसक एकर स्वर अछि सुमन कल्याणपुरक। दोसर गायिका चन्दानी मुखर्जी छथि। पुष्पारानी चौधरी एवं विन्ध्यवासिनी देवी द्वारा किछु गीत गाओल गेल अछि। लगनी बेस उतरल अछि, किन्तु आन गीत सबमे मगही गीतक प्रभाव लक्षित होइछ। 'भौजी' (मगही) सिनेमाक गीत आ 'कन्यादान' (मैथिली)क गीतमे बड़ कम अन्तर बूझि पड़ैछ। सिद्धान्त रूपमे डाइरेक्टर-फाइनेन्सर एवं प्रोड्यूसर मध्य एहि संबंधमे जे किछु निर्णय कएल गेल-ताहिमे अमरजी की कए सकैत छलाह। यदि हरिमोहन बाबू पूर्वहि सब किछु पर थ्रेडवेयर डिस्कशन कऽ लितथि, तँ अमरजीक काज बहुत हल्लुक भऽ जइतन्हि। मुदा कोनो फिल्ममे एक व्यक्तिकैँ फिल्मक विविध पक्ष लेल उत्तरदायी नहि बूझल जा सकैछ। प्रत्येक व्यक्ति अपना-

अपना भूमिकाक प्रति स्वयं जवाबदेह होइछ। एक व्यक्ति दोसराक सीमामे दखल नहि दैत छैक। यदि केओ ई कहए जे अमरजीक रहैत कन्यादानक गीत दूरि भ' गेलैक, तँ अनुचित होएत।

अमरजी बम्बइमे इनडोर शूटिंग केर क्रममे एहि लेल पूर्णतः प्रयासरत छलाह जे कतहु कोनो बात एहन नहि फिल्ममे देखाओल जाए जे मैथिल, मिथिला ओ मैथिलीक्र प्रतिकूल सिद्ध होइक। संगहि–मैथिल संस्कृतिक प्रतिकूल कोनो संदेश समाजमे प्रचारित नहि होइक, तदर्थ ओ सचेष्ट रहलाह। सुनैत छी जे स्टूडियोमे 'लाल काका'कँ हुक्का पिबैत देखएबाक प्रयास कएल गेल छल। अमरजी डटि कए एकर विरोध कएलन्हि आ' कहलथिन्ह जे ई बात चलए बला नहि अछि। यदि केओ दोसर गोटे रहैत तँ बम्बइया माहौलमे एकरा नहि रोकि सकैत छल। मुदा अमरजी रोकबाक साहस कएलन्हि आ सफल भेलाह।

एहि फिल्मक संग एकटा बात आओर ई भेलैक जे बम्बइया लोक यूनिटमे बेसी आबि गेल आ फाइनेंसर हुनके लोकनिक जूति-बुद्धि सँ सब काज करैत चल गेलाह। बुझि पड़ए जे ओ सब लूटि रहल अछि, आ फाइनेंसर सबहक फरमाइश कँ पूरा करबा लेल तैआर छथि। हम परोक्षरूपेँ गजेन्द्र बाबू कँ संकेत देनहु छलिअन्हि जे यूनिटक लोकमे ततेक होशियार लोक सब जमा भऽ गेल अछि जे ओ दरभंगिया कँ बिहारी बुद्धू बुझैत अछि। एहि संदर्भमे एकटा रोचक प्रसंगक उल्लेख करब एहि ठाम समीचीन बुझना जाइछ। आउटडोर शूटिंग केर क्रममे जेनाकि हम पहिने उल्लेख कएल, हमहूँ मीरा होटल लहेरियासरायमे अँटकल छलहुँ, मुदा चाय-नाश्ता आ' भोजन बेसी काल अपन सार स्व० सच्चिदानन्द चौधरीक ओतए करी। हुनक डेरा मीरा होटलक निकट छल। ओहि समयमे ओ लहेरियासराय मे कोषागार पदाधिकारीक रूपमे पदस्थापित छलाह। यूनिटक किछु लोक एतेक क्षुद्र प्रकृतिक छल जे हमरा नाम पर ऑर्डर दऽकऽ खान-पानक सामग्री मंगबा लिअए। ई रहस्य हम तखन बुझलहुँ जखन हमरा नाम पर अंग्रेजी शराबक एकटा बोतल एक गोटे मंगाए लेलक। हमर परिचित जे केओ रहथि सभकँ बूझल छलन्हि जे हम 'टी-टोटलर' छी–आइ धरि भांगोक रसास्वादन नहि कएल, तखन अंग्रेजी शराबक तँ प्रश्ने नहि। अन्तमे हम हीरा बाबूकँ कहलिअन्हि–एहि माहौलमे हमरासँ अपने की उमेद रखैत छी? यदि हरिमोहन बाबूक हित एहिमे सम्बद्ध नहि रहैत तँ हम सब किछु छोड़ि कऽ चल जैतहुँ। जे व्यक्ति ई काज कएने छल, तकर नाम प्रकट करब हम एतए उचित नहि बुझैत छी। तहिए हमरा सिनेमा संसारक लोकसँ आ' ओकर क्रिया-कलापसँ जेना एकटा घृणा उत्पन्न भए गेल।

अमरजीसँ एहि सब प्रसंगमे कहिओ हमरा गप्प नहि भेल अछि। यदि प्रसंगवश गप्प होएत तँ अवश्य पुछबन्हि जे अहूँकँ कहिओ एहन-एहन बम्बइया धूर्तसँ मोकाबिला भेल छल। प्रसंग फिल्मी दुनियाँक अछि, तेँ एहि संस्मरणात्मक लेख मे एकर उल्लेख करबाक आइ अवसर भेटल।

पुनः फेर बम्बइ चलू। बुच्चीदाइ कँ प्रगतिशील बनएबाक क्रममे पाश्चात्य नाच-गान एवं क्रीड़ा इत्यादिक जे दृश्यावली सीनीरियोक सिक्वेंस मे देरवाओल गेल अछि, तकरा अमरजी नहि रोकि सकैत छलाह-कारण जे टोटल दृश्य-दर्शनक प्रसंग हरिमोहन बाबूक सहमति भेटि चुकल छल। यदि ओहिमे किछु काट-छाँट करबाक सुझाओ देल जइतैक तँ सबकँ अनोन-बिसनोन लगितैक, तेँ फिल्मक दुर्बल पक्ष पर अमरजीकँ सेहो आँखि मूनए पड़लिन्ह। फिल्ममे हिन्दी डायलॉग बहुत-बेसी अछि। डाइरेक्टर एवं प्रोड्यूसर दिससँ फाइनेंसर कँ आश्वस्त कएल गेलन्हि जे एकरा मे कोनो काट-छाँट नहि हो, अन्यथा फिल्मकँ फ्लॉप होएबाक बेसी संभावना।

जे-से। जहाँ धरि अमरजीक अपन भूमिकाक प्रश्न अछि, ओ लालकाकाक भूमिका पूर्ण उत्तरदायित्वक संग

निर्वाह कएलन्हि। खासकऽ द्विरागमन कालक दृश्य ततेक करुण एवं हृदयविदारक अछि जे केओ देखले पर कहि सकैछ। वीणामे जखन एकर प्रीमियर शो भेल तँ एकसँ एक स्थानीय बुद्धिजीवी एवं पत्रकार मुक्तकंठ सँ प्रशंसा कएलन्हि। हमरहु अनेक ठामसँ पत्र आएल।

ओहि समयमे स्व० विद्याकर कविजी बिहार सरकारक एकटा दमदार केबिनेट स्तरक मंत्री छलाह। हुनका माध्यम सँ सरकार द्वारा एकर टैक्स सेहो माफ कराओल गेल। हम दावीक संग कहि सकैत छी जे एहिंमे घाटा नहि लागल आओर लागतसँ बेसी पाइ उपर भए गेल। किनका की भेटलन्हि से तँ सम्बद्ध कलाकार कहताह मुदा हम एतेक अवश्य कहब जे ई फिल्म अन्य मैथिली फिल्मक लेल विराट सम्भावनाक द्वार फोलि देलक। परञ्च दुःखक संग कहए पड़ि रहल अछि जे मिथिलांचलक उन्नयनक दिशामे कोनो दोसर गोटे एहि दिशामे प्रभावी कदम नहि उठओलक। भोजपुरीमे एहि हेतुएँ बेसी फिल्म निर्मित भेल जे फिल्म मे बेसी गोटे भोजपुरी क्षेत्रक स्थापित कलाकार वा निर्माता छथि। मिथिला-क्षेत्रक अन्तर्गत केओ एहि कार्य कैँ जोखिम भरल साहस बुझैत छथि। श्री उदित नारायण फिल्म जगतक स्थापित हस्ती छथि; मनीषा कोइराला कोइराला परिवारक होएबाक कारणे मैथिलीमे फिल्म बना सकैत छथि-मुदा हुनका लेकनिसँ केओ समुचित माध्यमे सम्पर्क करए तखनहि किछु भ' सकैछ। श्री प्रकाश झा वर्तमान मे एहन हस्ती छथि जे मैथिली मे अनेकहु टी. वी. सीरियल एवं फिल्म बना सकैत छथि। खट्टर ककाक तरंग' सँ मैथिलीक सीरियल बनाओल जाए तँ लोकप्रिय होएत। तहिना यदि यात्रीजीक 'बलचनमा'क आधार पर स्वतंत्र रूपेँ फिल्म बनाओल जाए तँ आजुक सामाजिक न्यायक संदर्भमे एकटा सफल फिल्म सिद्ध होएत। सुनैत छी जे आनन्द मिश्र नामक एक युवक एहि दिशामे प्रयत्नशील छथि। ओना अनेक टी.वी. सीरियलक शूटिंग सेहो चलि रहल अछि। अमरजी सन त्यागी आ' मैथिलीसेवीक योगदान होएत तँ कोनो भारी बात नहि। मुदा आब तँ नीकसँ नीक फिल्म एक सप्ताह नहि चलैत अछि। मैथिलीमे फिल्मक अपेक्षा यदि टी. वी. सीरियल बनाओल जाए तँ अभिनन्दनीय डेग होएत।

●

विलक्षण प्रतिभापुरुष श्री अमरजी

श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी

एहन देखना जाइछ जे मिथिलांचल मे ख्यातिप्राप्त साहित्यकार लोकनि अपन नाम सँ विशेष उपनामे सँ प्रख्यात एवं सम्बोधित होइत छथि—यथा श्रीसुमनजी, मधुपजी, यात्रीजी, किरणजी, मणिपद्मजी आदि। एही कोटिमे अबैत छथि श्री अमरजी।

अमरजी सम्बोधन सँ तात्पर्य होइछ मिश्रटोला, दरभंगाक हालनिवासी शिक्षक, साहित्यकार, कवि श्री चन्द्रनाथ मिश्र, जनिका विद्वत्ता आ प्रतिभा विरासति मे भेटलनि। हिनक पिता स्व. पं. मुक्तिनाथ मिश्र अपना समयक प्रकाण्ड विद्वान रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयक प्राचार्य छलाह। श्री अमरजी अपन पिताक विद्वत्ताक मर्यादा अपन साहित्यिक प्रतिभा द्वारा करैत रहलाह अछि। अंग्रेजी मे कहबियो छैक–Worthy son of a worthy father यथार्थतः श्री अमरजी एकर उदाहरण छथि।

श्री अमरजी अपन प्रारम्भिक जीवन एक सफल मैथिलीक शिक्षकक रूप मे प्रारम्भ कैल आ हिनक प्रतिभा विभिन्न दिशा मे प्रस्फुटित भेल—साहित्य-सर्जन, साहित्यकारक निर्माण, मातृभाषा मैथिली आन्दोलन मे उत्प्रेरण, कवि सम्मेलनक माध्यम सँ देश भरि मे मैथिलीक प्रचार आ एहि तरहेँ मातृभाषाक दिशा मे हिनक गति मे समानता देखल जाइछ।

श्रीअमरजी पहिल व्यक्ति छथि, जनिक नियुक्ति मैथिली शिक्षकक रूप मे पहिले-पहिल लहेरियासरायक सरस्वती स्कूल मे भेल, जाहि ठाम अपन दीर्घसेवा काल मे असंख्य छात्रकेँ अपन मातृभाषाक प्रति अनुरागक संचार कैल। अपन छात्र समुदायक बीच अपन विशिष्ट स्थान बनाओल।

ई एहन ख्यातिप्राप्त सफल शिक्षक एवं साहित्यकार छथि जनिक चिरचिंतन आ साधना सँ मातृभाषा मैथिली धन्य अछि। आधुनिक काल मे हिनक हास्य-विनोद सँ पूर्ण कविता देशक कोन-कोन मे मैथिलीभाषीकेँ सर्वाधिक अनुप्राणित करैत अछि।

हास्य-व्यंग्यक क्षेत्र मे जाहिरूपे स्व. प्रो० हरिमोहन झाजी शब्दक माध्यम सँ हास्यसम्राटक रूप मे प्रख्यात रहलाह, तही रूपेँ श्री अमरजीक हास्य-व्यंग्य सम्बन्धी कविता ख्याति प्राप्त कयलक। गुदगुदी हिनक हास्य-व्यंग्यक प्रारम्भिक रचना अछि, आ युगचक्रक प्रकाशन सँ तँ ई हास्य-व्यंग्यक शीर्षस्थ कविक रूप मे ख्याति पौलनि।

हम कोनो साहित्यकार नहि, किन्तु कहबी छैक–'रटन्त विद्या, लपटंत जोर, नहि किछु तँ थोड़बो थोड़।' एहि ठाम हमरा हेतु 'रटन्त'क स्थान पर 'सत्संग' शब्द विशेष उपयुक्त हैत। एहि तबहक सुअवसर भेटबाक एकमात्र कारण हमर ग्रंथालय प्रकाशनक स्वामित्व जाहिठाम सँ निरंतर चारि दशक तक मातृभाषाक सेवाकाल में मैथिलि में विभिन्न विधाक लगभग 125 मैथिली पुस्तकक प्रकाशन कैल गेल आ एहि क्रम मे मिथिलांचलक साहित्यकार लोकनि सँ सम्पर्क स्थापित भेल, जाहि सँ मातृभाषाक विशिष्ट पुस्तक प्रकाशनक माध्यम सँ साहित्य अकादेमी दिल्लीमे मैथिली केँ स्थान भेटऽमे एक सहयोगी हेबाक सुअवसर भेटल। एहि तरहेँ मातृभाषाक सेवाक अवधि मे अनेको ख्यातिप्राप्त साहित्यकारक सामीप्य भेटबाक सुअवसर भेटल, जाहिमे प्रमुख ईहो छथि।

विश्वविद्यालय एवं उच्चविद्यालयक पाठ्यक्रम मे मैथिली केँ स्थान भेटि चुकल छल, किन्तु पाठ्यपुस्तकक अभाव मे छात्रक समस्याक समाधानक उद्देश्य सँ 1953 ई० मे ग्रंथालय प्रकाशनक स्थापना कैल गेल। प्रकाशनकार्य में उत्साहवर्द्धक सहयोग अनेको साहित्यकार लोकनिक भेटल, जाहि मे प्रमुख छलाह अमरजी। एहि रूपेँ हुनका सँ

सम्पर्क बढ़ैत गेल।

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'इजोत'क प्रकाशन प्रारम्भ कैल गेल, जकर सम्पादक मण्डलक एक प्रमुख सदस्य इहो छलाह। मैथिली पुस्तकक प्रकाशन क्रम मे हुनक जमाय डा. श्री रामदेव झाक किछु पुस्तक प्रकाशित कैल गेल, जाहिमे कथासंग्रह–'एक खीरा तीन फाँक' प्रमुख अछि। क्रमशः हुनक भातिज रमानाथ मिश्र 'मिहिर' क नियुक्ति ग्रंथालय मे 1958 ई० मे कैल गेल जे बाद मे प्रकाशन विभागक व्यवस्थापक पद पर वर्षो कार्यरत रहलाह। एहि तरहें पारिवारिक सम्बन्ध मे प्रगाढ़ता बढ़ैत गेल।

प्रो० हरिमोहन झा मिथिलांचल क तत्कालीन सामाजिक एवं वैवाहिक कुरीतिक सम्बन्ध मे कन्यादान एवं द्विरागमन लघुउपन्यास लिखल जकर प्रकाशन पुस्तक भंडार, लहेरियासराय द्वारा भेल, जे हास्य-व्यंग्य सँ परिपूर्ण रहबाक कारणें, पाठक द्वारा समादृत भेल। तत्पश्चात् डा० शैलेन्द्र मोहन झा मधुश्रावणी उपन्यासक रचना कैल। श्री अमरजी एही क्रम मे विदागरी उपन्यास लिखल जे ग्रंथालय द्वारा प्रकाशित भेल, जाहि सँ श्री अमरजी एक उपन्यासकारक रूप मे ख्याति प्राप्त कैल।

1964 ई० मे मिथिला सांस्कृतिक पृष्ठिभूमि पर महाकवि विद्यापतिक पुण्यस्मृति मे विद्यापति दैनन्दिनीक प्रकाशन प्रारम्भ कैल गेल जे बहुत उपयोगी हेबाक कारणें समादृत भेल, जकर बहुप्रशंसक छलाह श्री अमरजी। 10-12 वर्ष धरि ओकर प्रकाशन होइत रहल। ओ ओही दैनन्दिनीक उपयोग करैत रहलाह।

बिहार सरकार द्वारा 1953 ई० मे मातृभाषाक माध्यम सँ प्राथमिक शिक्षा हो, से स्वीकृति भेल छल, किन्तु पाठ्यपुस्तकक अभाव मे ई कार्य अवरुद्ध छल। देवनारायण बाबू एवं श्री अमरजीक उत्साहवर्द्धक आग्रह एवं निर्देशन पर प्रथम वर्ग सँ पंचम वर्ग तकक पाठ्यक्रमक आधार पर मैथिली पुस्तक प्रकाशित कैल गेल। 1959 ई० मे बिहार सरकारक तत्कालीन शिक्षामंत्री कुमार गंगानन्द सिंह जे नवादा आयल छलाह, एहि प्रकाशित पाठ्यपुस्तकक स्वीकृति हेतु एक डेलीकोट हुनका सँ ओतम मेट कयने छल, जकर प्रमुख छलाह श्री अमरजी।

मिथिलांचलक सांस्कृतिक गौरवमय इतिहास रहितहुँ चिरअभिलषित एक मैथिलीक दैनिक पत्रक अभाव खटकैत छल जे राष्ट्रीय स्तर पर मैथिलीक मान्यताक हेतु अवरोधक छल आ जकर मुख्य कारण छल आर्थिक एवं भावनाक अभाव। दुस्साहसपूर्ण कार्य प्रारम्भ करक साहस ककरो मे नहि देखना जाइत छल। अन्तमे 1981 ई० मे मिथिलाक दधीचि श्रद्धेय सुमनजी मिथिला प्रेस, राजकुमारगंज सँ दैनिक स्वदेशक प्रकाशनक पुनः बीड़ा उठाओल आ एहि रूपें दैनिक स्वदेशक प्रकाशन प्रारम्भ भेल, जकर सम्बल छलाह हुनक छोट भाइ भूपेन्द्र बाबू आ मुख्य सहयोगी छलाह श्री अमरजी। एहन देखना जाइछ जे मैथिलीक पत्र-पत्रिका अल्पायु हेबाक हेतु अभिशापित अछि आ एहि अभिशाप सँ दैनिक स्वदेशो नहिं बाँचि सकल आ अर्थाभावमे क्रमिक बन्द भय गेल, से बन्दे रहल।

दैनिक स्वदेशक वितरणक सम्बन्ध मे एक विलक्षण संस्मरण अछि जे श्री अमरजीक मातृभाषाक प्रति श्रद्धा आ हुनक निष्ठाक परिचायक अछि।

लहेरियासरायमे स्वदेशक ग्राहक लोकनिकेँ अखबार नित्यप्रति पहुँचेबाक जिम्मेदारी श्री अमरजी स्वयं अपने लेने छलाह। श्री गोपालजीझा अभियन्ताक डेरा लहेरियासराय मे सरस्वती स्कूलक समीपे छलनि, जाहिठाम श्री अमरजी निर्धारित समय पर दैनिक स्वदेश स्वयं पहुँचौबैत छलाह। गोपालजी बाबूकेँ जानक उत्कंण्ठा छलनि जे एहन कोन हौकर (वितरक) अछि जे प्रतिदिन ठीक निर्धारित समय पर अखबार बिना कोनो मूल्यक राखि जाइत अछि। ओहि वितरककेँ देखक हेतु हुनका उत्सुकता छल जाहि हेतु ओ एक दिन पूर्ण तत्पर छलाह। एतबे मे देखैत छथि एक सुसंस्कृत

व्यक्ति ठीक समय पर पहुँचि अखबार दय आपस भय रहलाह अछि। श्री गोपालजीबाबू हुनका रोकि हुनक परिचय पुछल। श्री अमरजीक परिचय जानि श्री गोपालजी बाबू हुनक मातृभाषाक प्रति अपार सेवाभाव एवं कर्मठता सँ भावविभोर भय गेलाह आ तुरन्त स्वदेशक संचालन मे अपन सहयोग राशि एक हजार एक अमरजी कैँ दय, हुनका प्रति पुनः आभार प्रकट करैत भूरि-भूरि प्रशंसा कैल।

षटरस प्रधान मिथिलांचल मे हास्य-व्यंग्यक प्रधानता आछि। जे साहित्यकार अपन रचनामे एहि रसकैं प्रधानता देल ओ पाठकक बीच अत्यन्त लोकप्रिय रचनाकार मानल जाइत छथि। गद्यसाहित्यमे प्रो० हरिमोहन झाजी एवं पद्य साहित्यमे कविवर सीताराम झा एवं श्री अमरजी हास्य-व्यंग्यक प्रधानताक कारणेँ लोकप्रिय साहित्यकार मानल जाइत छथि। हम हिनक प्रत्युत्पन्नमतित्व (wit) सँ बहुत प्रभावित छी जाहि हेतु ओ बहुत चर्चित छथि। एहू प्रसंगमे एक रोचक चर्चा अछि।

संध्याक समयमे श्रद्धेय सुमनजीक ओइठाम सांध्यगोष्ठी सँ लौटबाक काल हमरा लोकनि बहुत दूर तक संगे अबैत छी। रास्ता मे समवयस्क हेबाक कारणेँ सब तरहक हास्य-विनोदक गप्प होइत रहैत अछि। गप्पक क्रम मे एक दिन कहलनि जे ओ एक बेर पटनाक यात्रा बस सँ कयने छलाह। बस में बड़ भीड़-भाड़ रहैक। कल्याणपुरक आस-पास तीन-चारि उद्दण्ड नवयुवक बस मे सवार भय ठेलम ठेला प्रारम्भ कैल, जाहिसँ ओ बहुत कष्ट मे छलाह। तँ हुनका ई जानक उत्कंठा छलनि जे ई उद्दण्ड लोकनि कहाँ तक यात्रा करत? उत्सुकता सँ हुनका लोकनि कैँ पुछल जे ओलोकनि कहाँ तक यात्रामे सहभागी रहताह? ओहिमे सँ एक जे सबसँ दवंग छल, अकड़िकऽ जवाब देलकनि–''हम लोग मुसरी घरारी जायेंगे।'' आ संगहि हिनको सँ प्रश्न कैल आप कहाँ जायेंगे? अमरजीक झटित जवाब छल–''मैं बिलड़ा बथान जाऊंगा।'' एहि ठोका जवाबसँ ओसब दंग रहि गेल, कारण मूस आ बिलाड़क केहने सम्बन्ध होइत छैक सर्वविदत अछि। आब हुनका लोकनिक गति छल–नंगड़ी सुटकन्त जात खड़ही।

श्री अमरजीक हास्य-व्यंग्य-चर्चाक संग हुनक देवेन्द्र भाइक चर्चा आवश्यक, अन्यथा ओ अपूर्ण रहि जायत। श्री अमरजीक देवेन्द्र भाइ हास्य-विनोदक स्वयं एक प्रतिस्वरूप छलाह, हुनका सम्बन्धमे बराबरि श्री अमरजी किछु ने किछु विलक्षण संस्मरणक चर्चा करैत रहैत छथि। चर्चाक क्रममे हुनका प्रसंग मे कहलनि जे ओ आ देवेन्द्र भाइ शुरूहेसँ सहपाठी छलाह दुनू गोटे मे हास्य-विनोद समानताक कारणेँ बहुत घनिष्ठता छलनि। हुनका सम्बन्धमे अनेको रोचक संस्मरणमे सँ एहिठाम एक उद्धृत कैल जाइछ।

एकादशीव्रतक दिन छल। देवेन्द्र भाइक पिता सामवेदी गुरुजी एकादशी कयने छलाह। संध्या समयक फलाहारक हेतु एक हत्था पाकल केरा राखि अपन नित्यकर्म पर चल गेलाह। हुनक अनुपस्थितिमे एक बोतू हुनका डेरा मे कतउ सँ आबि अपन कबाइत करय लागल। देवेन्द्र भाइ बुझलनि जे बोतू भगवान उपासल छथि, ओहो फलाहारक हेतु आयल छथि। ओ हत्थो भरि पाकल केरा कैँ सोहि एक-एक कऽ सब केरा बोतू भगवान कैँ संतुष्ट रूपेँ फलाहार कराय देल। संध्या समय जखन सामवेदी गुरुजी फलाहार करक वास्ते बैसला तँ देखल जे फलाहारक सामान मे केरा नहि छल। चर्चा करैत देवेन्द्र भाइ केराक सब खोइचा अपन पिताक समक्ष राखि देल, आ विनम्रतापूर्वक कहल बोतू भगवान आयल छलाह। हुनको एकादशी छलनि। बहुत भूखल छलाह तँ सब केरा कैँ सोहि हुनका फलाहार सन्तुष्टपूर्वक कराय देल। सामवेदी गुरुजी अपन पुत्रक एहि तरहक उत्तर सुनि सन्न भय गेलाह, किन्तु अपन बालकक एहि तरह दार्शनिक भावना जे भगवान प्रत्येक जीव-जन्तु मे विराजमान छथि सँ जतबे प्रसन्न भेलाह ततबे हुनक एहि तरहक शुद्धताक हेतु हुनक भविष्यक हेतु चिन्तित देखना गेलाह।

देवेन्द्र भाइक सम्बन्ध मे एहेन अनेको रोचक संस्मरण हुनका संग सुरक्षित अछि जे यदाकदा हुनका द्वारा

सुअवसर पर चर्चा कैल जाइछ। श्री अमरजी सँ आग्रह जे हास्य-व्यंग्य सम्बन्धी सभ संस्मरण केँ एक ग्रंथक रूप देथि जे मैथिली साहित्यक एक अपूर्व ग्रंथ होयत।

वर्षोक हुनक सान्निध्य मे हम जे किछु हुनका देखल तकर हमर उपर्युक्त संस्मरण पृष्ठभूमि थीक।

अन्तमे हुनक भेष-भूषा मे एकरूपता, एक कठोर अनुशासनप्रिय शिक्षकक व्यक्तित्व, क्षण-क्षण समयक उपयोगिताक पालन केनिहार, स्वावलम्बी, मितव्ययी, कुटुम्बपालक, मिथिला-मैथिलीक उन्नयनार्थ अनेको संस्थाक निर्माणमे सहयोगी, अनेको साहित्यिक संस्थाक पदाधिकारीक रूप मे कार्यरत, मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहास हुनक प्रतिभाक जीवैत-जागैत प्रमाण—साहित्य अकादेमी एवं बिहार राजभाषा द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित, मैथिलीक प्रथम सिनेमा कन्यादान मे लाल काकाक रूप मे प्रख्यात कलाकार, हुनक हास्य-व्यंग्यक प्रारम्भिक रचना गुदगुदी आ युगचक्रक प्रकाशनोपरान्त श्री अमरजी हास्य-व्यंग्यक शीर्षस्थ कविक रूप मे ख्यातिप्राप्तकर्ता। यथार्थतः हुनक सब विलक्षणता अनुकरणीय अछि, ओ स्वयंमे एक संस्था छथि, गागर मे सागर छथि आ हुनका प्रति What not क प्रयोग कैल जाय तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि। हास्य-व्यंग्यक विलक्षण रचनाकारक रूप मे मैथिली साहित्यक इतिहासमे श्री अमरजी युग-युगान्त तक चर्चित एवं अमर रहताह, एहि विश्वासक संग हुनका प्रति अपन स्नेहांजलि अर्पित करैत हुनक स्वस्थ दीर्घजीवनक कामना करैत छी।

●

अमरजी : एक आदर्श अध्यापक

श्री जगदीश प्रसाद कर्ण

चित्रं बटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्याः गुरुर्युवा।
गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्याः छिन्नसंशयाः।।

आश्चर्य जे वटवृक्षक नीचाँ जे गुरु बैसल छथि से तँ छथि युवा, मुदा हुनक शिष्य लोकनि छथि वृद्ध। गुरुक व्याख्यान मौनमे चलि रहल छनि आ ओहीसँ शिष्य लोकनिक संशयक समाधान भऽ रहल छनि।

ई आचार्य शंकर रचित दक्षिणामूर्ति स्तोत्रक वचन थीक जे एहि दिव्य तथ्यकेँ रेखांकित करैत अछि जे तेजस्वी गुरुक सान्निध्य मात्रसँ शिष्यकेँ ज्ञान प्राप्त भऽ सकैत छनि जँ शिष्य होथि जिज्ञासु–श्रद्धाशील आ गुरु प्रखर तेजपुंज। हमरा बुझने श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' शिक्षकक रूपमे किछु एहने रोल अदा कैलनि। जैं हमरा हुनका संगहि विद्यालयमे अध्यापनकार्य करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल, ई हम अपन अनुभूत सत्य कहि रहल छी, कोनो प्रशंसा मात्र नहि।

''एतय ज्वाइन कैलहुँ अछि तँ टकुआ टान रहय पड़त,''

एहि शब्देँ चेतबैत ओ हमरा एम. एल. एकेडमी लहेरियासरायमे शिक्षक भऽ कऽ ज्वाइन करबाक दिन प्रथम घंटी बजितहिँ स्वागत केने रहथि। मधुर मुस्कान रेखा रहनि मुखमंडल पर मुदा विद्यालयक प्रधानाध्यापक श्री झिंगुर कुमर? ओ तँ तखनहि हमरा पर आक्रोश करैत गरजल छलाह–''देखू जगदीश बाबू, देरी किए भऽ गेल? प्रथम घंटी बजबाक पाँच मिनट पूर्वे अहाँकेँ एतय उपस्थित रहबाक अछि।'' बात एतबे भेल रहैक जे ओम्हर पहिल घंटी टनटना रहल छल आ हम दछिनबारी कोन परक गेटसँ विद्यालय कम्पाउंडमे पैर देनहि छलहुँ। आफिस धरि (जतऽ ओ विशेष काल ठाढ़ रहल करथि, चारू दिस नजरि फिरबैत) पहुँचैत-पहुँचैत एक-दू मिनट लागल हो, एतबे विलम्ब आ ताहि पर एहन गर्जन! बात ई रहैक जे ओ शिक्षको पर किछु ओहिना शासन करथि जेना ओहो छात्रे हो। सर्वत्र नियम-अनुशासन कायम रहय से भीषण धुन हुनका पर सवार रहनि। तैं रौनक आ शिक्षणमे एम. एल. एकेडमी ताहि दिन कोनो कालेजोक नाक-कान काटैक।

एहन प्रधानक अधीन अमरजी कार्य करथि ई एक विशेष बात छल। ओ हमरा तँ कहि देलनि 'टकुआ टान' रहबा ले; जाहि हेतु प्रथमे एहन गर्जना सुनलहुँ आ आगुओ कतेक टेन्शनसँ गुजरलहुँ, मुदा अमरजी सदा एकरस, कोनो टेन्शन नहि, ई अजगुत बात।

कतऽ मिश्रटोला दड़िभंगा आ कतऽ ई विद्यालय लहेरियासरायमे, मुदा आबऽमे कहियो कथी ले' देरी वा कठिनता हेतैन! नियमित, दक्ष, पूजा कालक चानन-विभूतिसँ मण्डित ललाट, किन्तु विद्यालयक प्रधाने जकाँ विद्यालय आ विद्यार्थी लोकनिक जेना अविच्छिन्न अंगे होथि। तैं कहियो प्रधानाध्यापकक कोनो टोन वा वक्र दृष्टिये हुनका पर हेतनि? नहि। एहन शिक्षक-विभूति सभक ऊपर शासन करथि श्री झिंगुर कुमर। ओ समयो छल पढ़बाक आ पढ़ेबाक। समस्त वातावरण विद्यार्जनक भावनासँ भरल। छात्र खूब जिज्ञासु। जँ क्यो उपद्रवी वा टास्क पूरा नहि केनिहार तँ तड़ातड़ि शिक्षकक छड़ीक वर्षा तकरा पर। मुदा अमरजीक वर्ग मे भरिसके तकर अवसर आयल हो, कारण हुनक तँ छात्र सभ पहिनहिसँ स्वागत मे प्रतीक्षा करैत रहैत छल। की बात छलैक जे अमरजी एतेक छात्रप्रिय-लोकप्रिय छलाह? वैह बात जे दक्षिणामूर्ति स्तोत्रमे आचार्य शंकर कहलनि, से प्रकारान्तरेँ हुनका पर घटित होइत छल।

'टकुआ टान' हुनक शब्दहिक प्रयोग देखू। यद्यपि ऊपरसँ ई अत्यन्त सरल ठेठ भाषा बूझि पड़त, परन्तु ओहि

अवसरक प्रसंग कतेक अभिव्यञ्जनापूर्ण जे यावत्काल झिंगुर कुमरजीक अधीन कार्य कैलहुँ सर्वत्र सभखन विद्यालय परिसरमे ई शब्द चरितार्थ होइत अनुभव कैलहुँ–हम सभ क्यौ। ई गुण भाषाक सघन सूक्ष्म शक्ति जननिहार अमरजी छोड़ि आर ककरामे भऽ सकैत छल? एहिमे जोड़ि दियौक हुनक उच्च कोटिक हास्यगुण तँ ई भऽ जायत ठेठ जोड़ अभिव्यञ्जना जोड़ उच्चकोटिक हास्यगुण सबहिक त्रिवेणी। छात्रसँ लऽ शिक्षक, प्रधानाध्यापक आ सर्वसाधारण सभ क्यो एहि त्रिवेणीमे स्नान करैत छल। भाषाक एहन चमत्कार विचक्षणताक संस्कार ओ छात्रगणमे नीचासँ, जड़िसँ, आरोपित-विकसित करैत छलाह से ओकरा हेतु निश्चित रूपें विरल वरदान सिद्ध होइत छल।

विद्यालयप्रधानक उत्तरदायित्व माथ पर रहने ओ कोना तकर निर्वाह करितथि से तँ अनुमानक अन्तर्गत मुदा अध्यापक की जे प्राध्यापक पर्यन्तक सर्वशक्ति-वैदुष्य रखितहुँ ओ प्रो० अमर्त्य सेन जकाँ सामान्य शिक्षकक जे वृत्ति अपनौलनि ताहिसँ हुनक महानता आर महान भेल। ओ कतिपय प्रधानक अधीन कार्य करितो अपना व्यक्तित्व चरित्रमे अपन विशिष्टता प्रदर्शित कैलनि। प्रधानाध्यापक वा प्राचार्यकैँ अनेको प्रकारक गुण चाही, मुदा अमरजीमे विद्याक संग आत्मविश्वाससंयुक्त जे विनयशीलता से हुनका की प्रधान की अधीन सर्वत्र श्रेष्ठ बनबैत छल। जँ विद्या आ विनय ठीक हो तँ सहजहि पात्रता, धन, धर्म आ सम्यक् सुख तकर अनुगमन करैत छैक। ओ मुदा ताहि सँ आगू कतोक सुख-सुविधाकैँ कात राखि भाषा आ साहित्यानुरागमे आन्दोलनी त्याग-तपस्याक ज्वाल जरौलनि। ओ कोनो विश्वविद्यालयमे प्राध्यापक वा विभागाध्यक्ष किए नहि भऽ सकै छलाह, मुदा हुनका दृष्टि मे अपना हाथमे जे कोनो काज आयल हो तकरा सुचारु रूपेण निष्पादन करब यैह उच्च साधना छल। बिनु शिक्षक प्रशिक्षणक ओ स्वयं ज्ञान आ अनुभवसँ परिपक्व छलाह। तेँ आइ हुनक छात्र ओ शिष्य लोकनि देशसँ विदेश धरि हुनक तेजसँ तेजस्वी भऽ मानू हुनक कृति आ कीर्तिक ध्वजा फहराय रहल अछि। असलमे सभ शिक्षक अन्ततः मात्र शिक्षक, मुदा ई तँ बहुआयामी, वामनमे विराट व्यक्तित्व नेने एकहि संग अद्भुत कवि, कथाकार, साहित्यकार, सर्वत्र जीवनक यथार्थद्रष्टा, वक्ता, आन्दोलनकर्त्ता, विद्या शास्त्रादिक मंथन केनिहार। तेँ विद्यालयक शिक्षक-मालामे जँ हिनका सुमेरु कहल जाय तऽ कोनो अतिशयोक्ति नहि।

शिक्षकक हेतु स्वयं विद्वान होयब पर्याप्त नहि, अपितु अपन ज्ञान आ वैदुष्यक अंशकैँ छात्रक मानस-मस्तिष्कमे हस्तान्तरित करबाक क्षमता-पटुता होयब आवश्यक। समस्त शिक्षक प्रशिक्षणक यैह केन्द्रबिन्दु आ उद्देश्य। शिक्षक रूपमे अमरजी कोना अपन ज्ञानकैँ छात्र मे हस्तान्तरित-सम्प्रेषित कैलनि ई तँ आइ हुनक छात्र जे वयस्क विविध क्षेत्रमे अपन योग्यता-विशेषता प्रदर्शित कऽ रहल अछि सैह बता रहल अछि। हुनक शिष्य जे भाषाक विषयमे हुनक सम्प्रेषणशक्ति सँ विकसित-पुष्ट भेल तँ आनो-आनो विषयमे एकरा द्वारा ज्ञानार्जन करबाक प्रेरणा आ कौशल ग्रहण करबामे सफल भेल।

ट्यूशनः समस्त शिक्षक समुदायक बीच एकर बहुप्रचलित रूप शिक्षा-क्षेत्रक विषम दोष कहल जायत। से अमरजी कहियो नै कैल, कारण ओ वर्गहिमे छात्रक समस्याक समाधान करबाक अभ्यासी। ओना विशुद्ध ज्ञानार्जन करबाक प्रयासमे छात्रकैँ सदैव सर्वत्र उपलब्ध रहथि। हमहु तकर पक्षपाती। ओ छात्रगणक आवश्यकताकैँ ध्यानमे राखि कतिपय छोट-पैघ पुस्तक बहार कैलनि, कोनो कुंजी टाइपक नहि, मूल ज्ञानवर्धक, अभावपूरक आ उपयोगी पुस्तक यथा मैथिली मोहाबिराक पुस्तक इत्यादि। संगहि विद्यार्थीकैँ स्वयं प्रयत्न द्वारा ज्ञानार्जन-विद्यार्जन करबाक प्रेरणादऽ ओ शिक्षाक मूल तत्त्व आ मर्मकैँ खूब बूझलनि। अमरजी आशिक्षाक दोकानदारी–ई दुहू दू ध्रुव।

शिक्षा आ चरित्र : आइ जे चरित्रविहीन शिक्षा देल जा रहल अछि से ई घोर विषम समस्या उत्पन्न करैत अछि जे मनुष्यकैँ मात्र एक भौतिक वस्तु बूझि ओकरा फैक्ट्रीकेर उत्पाद सामग्रिये जकाँ विद्यालय रूपी फैक्ट्रीमे अंधाधुंध तैयार कैल जा रहल अछि जे पुनः फैक्ट्रीसँ निकलि बहुविध प्रदूषण, भ्रष्टाचार, सभ्यता-संस्कृतिक विनाश आर ने जानि

कोन-कोन ने बुराइक प्रसार करैत अछि। कतबो ज्ञान-विज्ञानक प्रचार-प्रसार हो, यावत् ओकर सदुपयोग करबाक ज्ञान तदुपरि नहि हो ओ शून्ये नहि नकारात्मक ज्ञान वा अज्ञानेक एक और रूप भऽकऽ रहि जाइत अछि। ई चरित्रक तेजे थीक जे आत्मविवेक आ आत्मज्ञान कैं उद्‌बुद्ध कऽ ज्ञानक सदुपयोग करबाक ज्ञान-दृष्टि प्रदान करैत अछि आ मानव जीवनकैं सार्थक करैत अछि। से चरित्रक तेज (सच्चरित्रता) शब्दसँ अधिक आचरण द्वारा प्रकट भऽ प्रत्यक्षसँ अधिक अप्रत्यक्ष प्रभावसँ एक दोसराकैं प्रबल रूपें प्रभावित करैत अछि। यैह अछि एहि लेख केर आदिमे उद्धृत दक्षिणामूर्ति स्तोत्रमे चित्रित गुरुकेर चमत्कारक इदमित्थम्। तैं सम्पूर्ण शिक्षा प्रणालीकैं छात्रक चरित्र-विकाससँ जोड़य पड़त से शिक्षके केर अन्यतम कर्त्तव्य, नहि तँ जीवनसँ सत्य-धर्म-नैतिकताक लोप भेने मानवता विलुप्त भऽ जायत, जे वास्तवमे भऽ रहल अछि। एहि परिप्रेक्ष्यमे अमरजीक एतबे अवदान जे जे क्यो हुनका सान्निध्यमे जतेक अधिक आयल से ततेक अधिक अपन निजी आ सार्वजनिक जीवनमे (जे वस्तुतः एके समग्र थीक, खंड नहि) अन्तर्वाह्य शुचितासँ सम्पन्न भऽ 'पुत्रात् शिष्यात् पराजयमिच्छेत्' कैं चरितार्थ कऽ रहल अछि।

एतावता ई कहबाक आवश्यकता नहि जे श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अध्यापक पंक्तिमे एक एहन नाम से प्राचीन गुरुकुलक स्मरण करबैत तकरा आधुनिकसँ जोड़निहार आ अपन उदाहरणसँ शिक्षण परम्पराकैं समृद्ध एवं अग्रगामी बनौनिहार एक ज्योतिस्तम्भ अछि। तैं हम हुनक अभिनन्दन करैत छी आ कामना करैत छी जे ओ एहि दू सहस्राब्दक आगुओ हमरा लोकनिक बीच रहि अपन विशाल जीवन्त क्रिया-कलापक इतिवृत्तसँ आगुओ इतिहास गढ़बाक प्रेरणा दैत रहथु। आशा करैत छी जे विद्यालयसँ विदाइ लेबाक अवसर पर तथि 5-4-1983 कैं हम जे हुनका निम्नलिखित पंक्तियैं श्रद्धा-सुमन अर्पित कैल सेहो हुनका संगे अमरता प्राप्त करतः

मधु मरीच ओ भंग-गंग केर
मिश्रित जे हो रंगे
पाग-राग चानन-विभूति शुचि
उत्तरीय केर ढंगे
हास्य-काव्य-अर्चना अधर-उर
– प्राण त्रिविध नित संगे
'चन्द्र' 'नाथ' केर 'मिश्र' स्वयं जे
वाचक 'अमर' प्रसंगे
एक पुष्प ई मात्र किन्तु अछि
भावक गूथल माला
सरस-विकल भऽ हास-अश्रुसँ
कम्पित अछि ई शाला
की ई क्षण? जनु अंत एक केर
करय, अपर आरंभे
छी जैं अमर, अनन्त पथिक छी,
अहिंक विनम्र सुदम्भे



काकाजी

रमानाथ मिश्र 'मिहिर'

काकाजी माने पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', धर्मधकेलानन्द, वैदेही, स्वदेश, पंचायती राज, उदय, निर्माण, मिथिला मिहिर, मिथिला ज्योति, इजोत, कहबाक अभिप्राय ई जे हिन्दी मैथिली मे गंभीर ओ हास्यरसक कविता कथा सँ निबन्ध एकांकी धरि, स्तम्भलेखन सँ सम्पादन धरि जीवन भरि करैत, अपना सँ श्रेष्ठ एवं नवतूरक साहित्यिकक रचनाक सम्पादन, प्रकाशन, लेखनमे प्रोत्साहन ओ सहयोग करैत, शिष्य-उपशिष्य सँ सम्मानित छथि, स्वाभिमानक प्रतिमूर्ति, जनिक छत्रच्छाया मे कतेको रचनाकार प्रौढ़ भेलाह आ साहित्य-सृजनमे प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि, औखन किछु-ने-किछु लिखैत रहैत छथि।

बतहू हिनक पारिवारिक नाम थिकनि। हिनका हमर पितामही ओ हमर पिता कहैत छलथिन, निर्माणक हास्य-व्यंग्य रचना बलामे 'बतहू मिसर की बहक' लिखल करथि।

ई अपना माइक कतेक पैघ आज्ञाकारी छलाह जकर एकटा उदाहरण हमरा देखल अछि। तखनुका घटना थिक जखन कि आठ नओ वर्षक बेटी भऽ गेल छलथिन। प्रातःकालीन स्कूल चलैत छलैक। ई स्कूल सँ अयलाह तँ माय कहलथिन–''केस छटौलहुँ अछि?'' पसेना सँ पूरा कपड़ा भीजल छलनि। किरायाक मकानमे रहैत छलाह। ई गरदनि पर हाथ रखैत कहलथिन, ''बड़ी-टाटा भऽ गेल छलैक, छोट करबा देलिऐक अछि। मुदा बाबीक मोन नहि मानलकनि। काकाजी तुरंत साइकिल उठा बाजार जाय पूरा माथक केश कटाकय अयलाह आ स्नान कयलनि, तखन भोजन कयलनि। एही सँ हिनक मातृभक्तिक उदाहरण देखल जा सकैत अछि। दोसर घटना अछि ई जे जनिकर सबसँ बेसी भय हिनका होइत छलनि ओ छलाह राजपण्डित बलदेव मिश्र। ओ एक बेर हमरा पितामहकेँ आबि कहलथिन, ''गुरु, ई भीख मङताह, किएक तँ पढ़ि-लीखि सकताह, से विश्वास नहि अछि, किएक तँ ई अपनेक ततेक दुलार पबैत छथि!'' बाबा उत्तर दैत कहलथिन–''अहाँ हमरा सँ पढ़िकऽ राजपण्डित भऽ गेलहुँ आ हमर सन्तान भीख मङताह? ई बात भविष्य मे हमरा लगमे नहि बाजब।''

नागपुरमे ओरियेन्टल कॉनफ्रेंस छलैक। राजस्कूलमे एकटा शिक्षकक स्थान पर हिनक नियुक्ति भेल छलनि। ई ओहि अधिवेशनमे जयबाक लेल छुट्टी मङलथिन, मुदा प्रधानाध्यापक छुट्टी देबासँ असमर्थता देखौलथिन। ई नौकरीक मोह छोड़ि त्यागपत्र दय नागपुर चल गेलाह। पुनः ओहि ठामसँ घुरिकय अयलाक बाद, सरस्वती स्कूलमे सरस्वती पूजा छलैक। ओहि अवसर पर कविसम्मेलनमे ई आमंत्रित छलाह। श्री सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल सेक्रेट्री छलाह। स्कूलक प्रधानाध्यापक बाबू जे० कुमर (श्री झिंगुर कुमर) मात्र चश्मा लगौने छलाह आ ओही समयमे हिनक हास्य रचना 'चश्मा' छपल छलनि, जकर पहिल पंक्ति छलैक–''आँखिक परम शृंगार छी हम, नाक पर चढ़ि कान दुहु धेनिहार छी हम।'' बाबू जे० कुमर सन गंभीर व्यक्तिक ठोर पर हँसी आबि गेलनि। ओ स्कूलक सेक्रेट्री श्री सुरेन्द्र बाबू केँ पुछलथिन–'ई युवक के थिकाह?' सुरेन्द्र बाबू हमरा पितामहक परिचय दैत कहलथिन जे पं० मुक्तिनाथ मिश्र प्रिंसपल रमेश्वरलता संस्कृत कालेजक बालक थिकाह। बाबू जे० कुमर कहलथिन–''की ई हमरा स्कूलमे काज करताह?'' आ हिनक नियुक्ति श्री नित्यानन्द प्रसादक स्थान पर हिन्दी पढ़यबाक हेतु भऽ गेलनि। तहियासँ अवकाशग्रहण धरि सरस्वती स्कूलमे हिन्दी, मैथिली, संस्कृत शिक्षकक रूपमे कार्य करैत रहलाह। बादमे मुख्यतः ई मैथिली शिक्षकक रूपमे अवकाश ग्रहण कयलनि। हिनक छात्र राजनीति, साहित्य, अभियन्ता, कुशल चिकित्सक, प्राध्यापक सँ लय प्राचार्य धरिक पद पर रहैत अयलाह अछि आ औखन छथिन।

हमर साहित्य-सृजनक प्रेरणास्त्रोत पितातुल्य ककेजी थिकाह, जे पुत्रवत् स्नेह औखन दय रहलाह अछि।

पारिवारिक कोनो गंभीर समस्या अबैछ वा कोनो व्यथा-कथा होइत अछि तँ ओ संकेत करैत रहैत छथि। कतबो कष्ट मे रहताह, मुदा जँ क्यो निवासस्थान पर आबि जाइत छथिन, तनिक उचित आदर-सत्कारमे कनियो ककरो कोनो त्रुटि नहि करैत छथिन।

हमर माय हिनकर भाउज छथिन, मुदा हुनका ई मातृवत् सम्मान दऽ रहल छथिन। औखन जँ हमर माय हिनका किछु कहैत छथिन तँ ई बौक भऽ जाइत छथि।

बेगूसरायमे कविसम्मेलन छलैक। ओहिमे हमर हास्यरचना श्रोताकेँ नीक लगलैक। काकाजी अध्यक्षता करैत छलाह। उठि कऽ कहलथिन, ''मंच मिहिरक थिकनि। हम हिनका आशीर्वाद दैत छिअनि। हम अपन संतान-तुल्य भातिज सँ परास्त भेलहुँ।''

हमर तूरक मैथिली लिखनिहार सब हिनका काकाजी कहैत छथिन। ई कुशल शिक्षक, अभिभावक, गृहस्थक रूपमे नियमबद्ध जीवन बितौनिहार प्राचीन ओ नवीन दुनूक प्रतिमूर्ति छथि।

जहिया ई फिल्म मे गेल छलाह, प्रधानाध्यापक छुट्टी देब स्वीकार नहि कयलथिन। ई नौकरीक चिन्ता छोड़ि मैथिलीक पहिल फिल्म 'कन्यादान'मे काज करक लेल बम्बइ चल गेलाह।

मैथिली-लेखनमे शैली लय विरोध भेल छलैक। तीन-चारि गोट शैली मैथिलीमे चलल—पं० रमानाथ झाक शैली 'कएल' 'पठाओल', वैद्यनाथमिश्र यात्रीक शैली 'तरउनी', 'चउधरि' आदि, मुदा हिनक शैली सर्वमान्य भेलनि, जाहिमे 'पठौल', 'तरौनी' 'कैल' 'चौधरी' जे एखन बेसी प्रचलित अछि। बेसी रचनाकार एही शैलीमे एखन लीखि रहलाह अछि।

●

हमरा जेना मोन पड़ैत अछि.....!

डॉ० महेन्द्र

'जगकेँ युग परतारि रहल अछि
एमहर ओमहर के तकैत अछि
अपने हाथ सुतारि रहल अछि....'

ई कविता आ' एहि कविताक सङ आरो बहुत रास कविता ढालो भाइक मुहेँ कतोक ठाम कतोक बेर सुनने रही जहिया हम विलियम्स बहुद्देशीय विद्यालय, सुपौलक कनीय वर्गक छात्र छलहुँ। आदरणीय किसुनजी एही विद्यालयमे साहित्यक शिक्षक। मैथिलीमे 'आत्मनेपद' आ' हिन्दीमे 'आओ गाएँ'क कवि तथा तत्कालीन आर्यावर्त्तक 'निज संवाददाता'। ढालो भाइ किसुनजीक साहित्यिक प्रेरणापुत्र आ' रघुझा गबैयाक स्कूलक सचढ़ छात्र।..... से हम पाँच-सात विद्यार्थी भूखल नेरू जकाँ विद्यालय परिसरसँ गांधी मैदान धरि ढालो भाइक प्रतीक्षा करी आ' जखन भेटथि तँ हमरा लोकनि चारू दिससँ लुधकि जइयनि आ' ततेक मनौती करियनि जे पघिलि, कविताक सस्वर गायन प्रारंभ क' देथि।.... तखन कविता पर कविता....।' एहि कविताक गायनक क्रम गांधीमैदान सँ आरंभ होअय आ' धर्मशाला..... अस्पताल चौक... गुदड़ी हाट.... मिथिला पुस्तकालय होइत विजय बाबू डॉक्टर साहेबक घर धरि अनवरत चलैत रहैक।.... विजय बाबू घर धरि अबैत-अबैत करीब पचीस-तीस विद्यार्थी सङ भऽ जाइत रहिऐक। छात्रश्रोताक एहि संख्याकेँ देखि ढोलो भाइ खूब प्रसन्न भऽ जाथि। नित्तः नहि तँ सप्ताहमे तीन-चारि दिन निश्चिते एहन क्रम चलैक...। ढोलो भाइक गायनमे तल्लीनता छलनि, ओज छलनि आ छलनि लोककेँ आकर्षित करबाक अवगति....। ओ बीच-बीचमे जोर दैत....कविताक पंक्ति सभकेँ 'रिपीट' करैत कहथि... 'ऐ पंक्तिकेँ सुनह आ' ओ शुरू भऽ जाथि.....

पकड़ि बेङ कैँ आइ फतिङ्गा
सहजाहि लाभ कराबय गङ्गा
बनबिलाड़िकेँ रंगमंच पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि......

.........एक दिन अवसर ताकि ढालो भाइकेँ एहि कविताक कवि आ कविता-संग्रहक मादे पुछने रहियनि तँ ओ कहने रहथि—अरे, हिनका नहि जनै छियनि—अमरजी!.... पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'....मिसर टोला, दरभंगा..... एम.एल. एकेडमीक सम्मानित शिक्षक..... साहित्यक निष्णात साधक.... विलक्षण व्यक्तित्व आ' विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न लोक.... हरिमोहन बाबूक बाद जँ कविसम्मेलनक मंच पर किनको कविताक बेर-बेर माङ होइत छलनि तँ ओहिमे अमरजी सर्वोपरि......। तकर कारण थिकै हिनक अभिव्यक्तिक सहजताक सोझाँमे ठाढ़ भेल हास्यक हाँजक हाँज शब्दानुराग। वर्त्तमान समाजक खुजल-फूजल मनोदशा आ' मानवीय मूल्यमे आयल ह्रासक सत्यापित बानगी।....एकटा गप्प कहि दै' छियह जे प्रजातंत्र कोनो राष्ट्रक लेल अधलाह नहि थिकै, अधलाह थिकै प्रजातांत्रिक व्यवस्थाक विरुद्ध काज करब अथवा काज करबाक छूट देब। एतबे नहि, राष्ट्रीय मर्यादाकेँ बिसरि वैयक्तिक स्वार्थ-धर्मक लत्तीकेँ आलन देब।...... 'अहा'! ढालो भाइ बीच्चहिमे चिहुँकि उठला आ कहलनि—ऐ पंक्तिकेँ देखहक आ देखहक जे ऐ मे कतेक तीक्षण व्यंग्य छैक—

उठत नियंत्रण भारतवर्षक

सुनलक बात जखन ई हर्षक
बनियाँ आ टुटपुजिया नेता
सब कोठी अजबारि रहल अछि
एमहर ओमहर के तकैत अछि
अपने हाथ सुतारि रहल अछि.....

एहि कविताक पाठक बाद ढालो भाइ खूब जोर सँ हँसथि। हमरा लोकनि शिष्टतावश जे मुस्की धरि सीमित रही, ढालो भाइकेँ हँसैत देखि, भभाक' हँसि दी। फेर ठहक्का....ठहक्का पर ठहक्का......वाह......वाह....

स्थिति जखन शान्त भेलैक तँ पुस्तकक संबंधमे पुछला पर ओ कहने रहथि–ई थिकै 'युगचक्र'..... अमरजीक युगचक्र.... विश्वक सबसँ छोट पुस्तिका 'युगचक्र'..... माने खिद्दी पुस्तिका 'युगचक्र'..... मुदा देखन मे छोटन लगे घाव करे गंभीर... उचित स्थान पर कड़गर चोटक अस्त्र 'युगचक्र'....।

ढालो भाइक कंठ बेस सधल। उच्चारण खूब स्पष्ट आ वर्णानुसार। मूल रूपसँ संस्कृत'वेस्ड' छात्र। लघुकौमुदी आ' अमरकोश घोंकल। किसुनजीक पट्ट शिष्य। कालान्तरमे मैथिलीक चर्चित आलोचक। प्रमाणपत्रीय नाम–रामानुग्रह झा। आब स्व० रामानुग्रह झा....।

रामानुग्रह भाइक मुहेँ तकर बाद यदाकदा युगचक्रक सस्वर पाठ सुनबाक अवसर भेटैत रहल। अवसर भेटैत रहल कहियो उदयचन्द्रक गोलामे तँ कहियो राधे मिसरक निवास पर..... कहियो अनन्त साहुक दोकान पर रसगुल्ला खाइत अमरजीक 'उनटा कऽ हाथ चटै छथि सब' कविता पढ़ैत देखलियनि तँ कहियो अपना टोलक विजय बाबू, इन्द्रानन्द बाबू आ' जगदीश बाबूक ओतय युगचक्रकेँ बेचैत देखलियनि..........

छलै न जकरा घऽर घड़ारी
से कहबै अद्दि आइ भड़ारी
जे परती तकने फिरैत छल
से अनका खरिहान दैत अछि।......

आइ बुझै छी जे रामानुग्रह भाइ भाँट नहि रहथि आ ने अमरेजी हुनका उत्प्रेरित कयने होइथिन अपना क्षेत्रमे युगचक्रक कविता सभक प्रचार-प्रसारक लेल....। ओ तँ संवेदनशील मातृभाषानुरागी रहथि। जनिका देखल छलनि द्वितीय विश्वयुद्धक परिणाम.... भीजल छलनि 1942 ई०क क्रान्ति आ' लहुलुहान भारतक लुल्हुआमे पड़ल अंग्रेजक बेड़ी सँ बरी होयबाक लेल लोकक कछमछाहटि..... देशक स्वतंत्रता..... आ' पहिल-पहिल विभाजनक दंश सँ आहत हिन्दुस्तानक आत्माक व्यथा..... हुनका अनुभवल छलनि...... भीजल छलनि। तेँ नहि सोहाइत छलनि अपनहि देशक लोकक द्वारा लाकेकेँ लुटबाक प्रवृत्ति....... व्यावसायिक आ राजनीतिक स्तर पर समाजक दोहन......। अमरजीक युगचक्रक कवितामे एहि प्रवृत्तिक विरोधक ओ सभटा सामग्री छलैक जकर सस्वर पाठ कऽ समाजमे रामानुग्रह भाइ पुनर्जागरणक काज करैत छलाह आ' अमरजीक कहल गप्पकेँ बेर-बेर कहैत छलाह–

ककरो उपवन छै मजरि रहल, अनके रक्तेँ सब दिन सींचल
ककरो अन्तर छै पजरि रहल, भूखल शिशु दिस मन छै खींचल
बाजह नवयुगक विधातागण! जग जा कए ककर चरण गहतै'।
ककरो क्यो सफल कोना कहतै।....

1964 ई० मे सहरसाक दुर्गास्थानमे आयोजित विद्यापति पर्व समारोह अति विशिष्ट छलैक। सौंसे मिथिलाक कवि, लेखक ओ विद्वानक पदार्पण आयोजनमे चारि चान लगा देने छलैक। हम तहिया सहरसा कॉलेज, सहरसामे बी० ए० प्रथम खण्डक छात्र रही। स्कूली 'स्टेज'मे सुपौलक साहित्यिक चेतना सँ परिचय भऽ गेल छल। भरिसक तेँ मिथिला मिहिरक नेना-भुटकाक चौपाड़िमे हमर कथा-कविताक प्रकाशन हमरा अपन सङी तुरियामे महत्त्वपूर्ण बना देने छल आ' आजुक नवका लेखक जकाँ गौरवे आन्हर बनल रही। मुदा से एखन स्मरण अबैत अछि तँ लाज होइत अछि। कारण........

लेखकगण 'क' 'ख' लिखि फानथि, अपनाकेँ युगगुरु कऽ मानथि

तुक पर थुक दय कविता कहि-कहि, बुलि-बुलि कवि ज्ञान छँटै छथि सब

उनटा कऽ हाथ चटै छथि सब।.....

.......हँ तँ 1964 ई०क विद्यापति पर्व समारोहक अन्तिम सत्र कविसम्मेलनक छलैक जे भरि राति चलैत रहलैक। एहि सत्रमे हरिमोहन बाबूक 'ढाला झा', मधुपजीक 'घसल अठन्नी', अमरजीक युगचक्र, मायानन्द मिश्रक 'नभ आङनमे पवनक रथ पर' आ' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'चलू चलू बहिना....' समुपस्थित श्रोताकेँ सभ रसक स्वादसँ आप्यायित करैत रहलैक। एहि सत्र मे अमरजी 'मैन ऑफ द मैच' भेल रहथि से ओहिना मोन अछि। युगचक्रक एक-एकटा कविता सामाजिक संचेतनाक भूमिसँ सटल श्रोताक संवेदनीयताकेँ झंकृत करैत रहलैक। श्रोता अपना पर आ' कि व्यवस्था पर हँसैत रहल– से नेना रहबाक दुआरेँ बूझि नहि सकलिऐक ठीक-ठीक। कवि-मंचक संचालन स्वयं किसुनजी क' रहल छलाह आ' अमरजीकेँ अनबाक क्रममे ओ कहने रहथि–'भारतकेँ स्वतंत्र भेना आइ सतरह वर्ष भेल अछि। स्वतंत्रताक बाद स्वतंत्र भारतक नागरिकक एतबे आ यैह अवधारणा बनलैक जे देश अपन, सरकार अपन, सरकारमे शामिल प्रतिनिधि अपन आ' व्यवस्था अपन...तेँ जतऽ जकरा जे सुतरय ओतय ओतेक सुतारल जाय। लोक अपनाकेँ केन्द्रमे राखि, मात्र अपना लेल, अपन परिवारक लेल आ अपन स्वजनक लेल जतेक हँसोथय चाहलक हँसोथय लागल। राष्ट्रधर्म आ' राष्ट्रीय मर्यादा स्वतंत्रताक विद्रूपित अर्थ-व्यवहारक दुआरेँ गौण होइत गेल। गौण होइत गेल सामाजिक-सांस्कृतिक चेतनाक वैभवशाली परम्परा......। अमरजी केँ एहन स्थिति नहि नीक लगलनि आ' समाजक एहने-एहने राष्ट्रवादी लोकक जे समाजक शोषणमे सहभागी बनि व्यक्तिगत स्वार्थमे आकंठ डूबल रहथि ताहि पर अपन नान्हिटा पुस्तक 'युगचक्र' दर्पणमे ओहन-ओहनक अपन आकृति-दर्शनक हेतु सत्यक सत्यकेँ व्यंजित करैत हास्यमय भाषामे हुनके प्रस्तुत कयने छथि से सुनल जाय.......। युगचक्रक सुदर्शन चक्रसँ समाजकेँ विकृत कयनिहार लोकक चरित्रकेँ उघार करबाक हेतु प्रतिबद्ध.... स्वनामधन्य पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'.....।

किसुनजी उद्घोषणा कऽकऽ बैसि गेलाह। क्षणकालक लेल वातावरणमे नीरवता पसरि गेल। मंचपर बैसल कविगणक आँखि एके बेर अमरजी पर जाकऽ टिकि गेलनि..... आ' सहरसाक दुर्गास्थानक भव्य मंच पर अमरजी ठाढ़ भेलाह तँ मंचक सोझाँमे कलमछ बैसल संवेदनशील श्रोताक भीड़क थपड़ी कोरसमे वातावरणक बीत-बीतकेँ झंकृत कऽ देलकैक। अमरजी ससरिकऽ माइक लग अयलाह तँ ललाट परक सिनुरक ठोप दमकलनि। सुव्यवस्थित प्रकाशसँ चश्माक दुनू शीशा चमकलनि। नहुँ-नहुँ बहैत बसातसँ रेशमी चद्दरि आ' रेशमी कुरता आन्दोलित भेलनि आ आन्दोलित भेलनि हुनक भंगिमा आ' ओ कहलनि–'स्वाधीनता प्राप्तिसँ पहिने भारतीय जनमानसमे सुखद-स्वरूपक एक कल्पना छलैक, मुदा स्वाधीनता भेटलाक बाद ताहि दिस देश मुड़ल जे दिशा वर्तमान दुर्गतिमे देशकेँ आनिकऽ ठाढ़ कऽ देने अछि।

आजुक असहनीय दुःस्थितिक संकेत युगचक्रक आरंभे मे ध्वनित भेल अछि..... युगचक्रक माध्यमसँ नवीन

भारतमे प्रवेश करैत राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ नैतिक विकृतिकेँ लक्ष्य बना जे व्यंग्यचित्र उरेहल गेल तकर किछु बानगी अपने सन जाग्रत श्रोताक सोझाँ प्रस्तुत अछि..... आ' तकर बाद 'जगकेँ युग परतारि रहल अछि', 'पहुँचलनि गूड़ केहुनी धरि', 'आन्हर छथि भगवान कहौ के', 'कहबै ककरा के पतिआओत', 'उनटे तेरह चास करै छथि', आदि कविता कतेक काल धरि सुनौलनि तकर थाह ने अमरेजीकेँ रहलनि आ ने श्रोते केँ रहल। थाह रहलनि खाली संरक्षक जटाशंकर चौधरी आ कोषाध्यक्ष दिगम्बर झाकेँ जनिका मुँह पर थकानक स्पष्ट रेखा रहितो ओ सभटा थकान अमरजीक कविताक संग उड़िया गेलनि। ओहि दिन हमरो लागल जे शहरमे जे कहियो नहि हँसैत छल ओ हँसल, जे कहियो नहि जगैत छल ओ जागल आ' जकरा प्रशंसा करबाक अभ्यास नहि छलैक ओहो अमरजीक कविताक प्रशंसा करैत नहि थाकल। हम...! हम जे अमरजीक कविता सुनि रहल छलहुँ से सुनल रहितो ओकर प्रभाव आनन्दित कऽ देलक। एहि आनन्दकेँ घनीभूत करऽबला हास्यरस भरि राति बरिसैत रहलैक आ' श्रोता ओहिमे भीजैत क कविता रहल–

'सब अलच्छ अवतार लेलक अछि, रुच्छ छुच्छ संसार देलक अछि
अपन बेगर्तें युग अछि आन्हर, परतच्छक परमान कहओ के
आन्हर छथि भगवान कहओ के।'

आइ जखन पाछाँ तकैत छी तँ लगैत अछि जेना ओ कविता सभ आइयो प्रासंगिक अछि आ कहियो पुरान नहि होयत।

1968-69 ई० सँ हम मिथिला मिहिरक नेना-भुटकाक चौपाड़ि सँ फराक किछु छटगर कविता, गीत, कथा लिखब आरंभ कयलहुँ आ शनैः शनैः साहित्य आ' साहित्यिक मंच पर चिन्हार होमय लगलहुँ। पटनामे रहबाक दुआरे बहुत रास साहित्यिक सम्पर्क भेल। सम्पर्क होइत रहल मिथिला मिहिर, आर्यावर्त्त, आकाशवाणीक समाङ सभ सँ जे हमरा मैथिली मंचसँ सम्पर्क मे सहयोग देलनि।

1971 ई० मे सहरसा कॉलेजमे नियुक्ति सँ मायानन्द बाबूक स्नेह आ' धीर बाबूक मैत्री भेटल आ ओतहिसँ हमर विधिवत् मंचजीवन आरंभ भेल। ओहि समयमे मैथिली मंच कार्यक्रमक सङ सङ आन्दोलनक उद्देश्ये बेसी सँ बेसी ठाम आयोजित होइत छलैक। एहि आन्दोलनी मंच पर विशेष रूपसँ सुमनजी, हरिमोहन बाबू, किरणजी, अमरजी, मायानन्दजी, मिहिरजी, सोमदेवजी आदि कवि ओ वक्ता आहूत होइत रहथि आ' संगहि कविसम्मलेन आ' सांस्कृतिक कार्यक्रमक लेल रवीन्द्र-महेन्द्र आ' धीर-महेन्द्र सेहो नोंतल जाइत रहथि। मुदा कवितामे अमरजीक प्रभाव ओहिना रहनि। तेँ सबतरि सुनल जाइत रहल हुनक युगचक्रक कविताक संग ओही मिजाजक आन-आन कविता जाहिमे अमरजी अपन एहि उद्घोषकेँ पुष्ट करैत रहलाह–

बाओ युग युगचक्रक चक्कर,
अँटकत नहि ई चलत निरंतर?

आ से ई चक्कर अनवरत चलैत रहल। अमरजी मर्यादा-विरुद्ध मानवक आचरण पर चोट करैत रहलाह। भौतिक सुखक लगातार बढ़ैत लिप्साक दुआरेँ आङन-घरमे सेहो परिवर्तन आबय लागल। सैद्धान्तिक शिक्षा व्यावहारिक शिक्षा सँ ततेक दूर भऽ गेल जे परिवारमे सासु-ससुर, पुतहुक व्यवहार सँ क्षुब्ध रहय लागल आ' तेँ अमरजीकेँ ई कविता लिखऽ पड़लनि–

जय जय भैरवि ससुर भयाउनि सासु सताउनि देवी।
पति छथि पशुपति तैं तकइत छी अबितहि सूटक जेबी।
झन झन झनन बजै अछि चूड़ी हन हन पट पट ढोरे
चिर कुमारिके! माथ न झाँपिअ टेल्ह करिअ नहि कोरे
थर थर कँपइत रहइछ डर सँ नौकर ओ चपरासी
ननदि दियादिनि कय न सकै छथि लगमे आबि उकासी..... आदि।

अमरजीक ई 'पैरोडी' खूब चर्चित भेलनि। यद्यपि स्त्रीगण समाजमे कुनमुनाहटि भेलै' अवश्य, मुदा ओहन परम्परावादी सासु-ससुर अमरजीक एहि कवितासँ थोड़ेक आश्वस्तो भेलाह.... परंच कवि कतहुसँ आश्वस्त नहि भऽ आवेदन-निवेदनक भाषाक प्रयोग कऽ गायब आरंभ कयलनि–

विद्यापति कवि जीवित रहितथि, करितथि नहि अनुमानो
सहज कुमति वरदायिनि छी तैं, मङ्तिथि नहि वरदानो
बतहू कवि कर जोड़ि कहै छथि, भाभट अपन सम्हारू
फ्रेंडक सिनेमा जा कय, दुनू कुलकैं तारू

अमरजीक एकटा आओर पैरोडी 'शिव ई बाना छोडू औ' पहिल-पहिल हम लेडी स्टीफेंसनक परिसरमे चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोहक कविसम्मेलनमे सुनने रही। भारतक प्रजातंत्र स्वाधीनताक अर्थ जाहि रूपमे बुझलक ओ कोनो राजतंत्रीय व्यवस्थाक दुर्गुण यथा परिवारवाद ऐय्याशीपन आ' स्वार्थपरता सँ कनियों कम नहि रहल। जनताक द्वारा चुनल प्रतिनिधि खाहे ओ केन्द्रक सांसद होथु अथवा राज्यक विधायक, चुनावक बाद जनताक दुख-दर्द सँ फराक जनता सँ संग्रह कयल राजस्व सँ गुलछर्रा उड़बय लागल आ' अपन 'वोट बैंक'क लेल कुत्सित राजनीतिक चौपड़ि खेलय लागल। राजनीतिमे अपराधीक वर्चस्व बढ़य लगलैक आ कालान्तर मे जाहि नेताकैं अपराधी मदति करैत छलैक ओ स्वयं राजनेता बनि समाज मे आतंकक वातावरणक निर्माण कऽ देलक। अमरजी एहि बदलैत व्यवस्था सँ मर्माहत भऽ लिखलनि–

सक्रिय रहि कऽ राजनीतिमे जनसम्पर्क बढ़ाउ
अपने भाषण खूब करू, जनताकैं काज़ अढ़ाउ
पुरनका धारा मोड़ू औ....
बेचू बूढ़ बड़द लऽ ट्रैक्टर परती तोड़ू औ
× × ×
भूत-प्रेत-बैताले 'वोटर', देत अहीं कैं वोट
अस्सी नमरक खद्धड़ पहिरू, फेकू फाड़ि लङोट
भाङ चिन्नी सङ घोरू औ.......

ई दुनू 'पैरोडी' मंच आ' मंचसँ फराक अपन हास्य चेतनाक दुआरैं चर्चित भेल आ' व्यंग्य सँ जनमानसकैं चमत्कृत करैत रहल। 1974 ई० मे युगचक्र सँ कनियें पैघ, सतहत्तरि पृष्ठक 'उनटा पाल' कविता-संग्रह प्रकाशित भेल। 'उनटा पाल'मे 1949 ई० धरिक युगचक्रहुक कविता सभ संकलित भेल। 1950 क बाद यदाकदा एहि प्रकारक जे' रचना होइत गेल से भिन्न-भिन्न शीर्षक सँ प्रकाशित 'उनटा पाल'क उपलब्धि भेल। एहिमे 'बगुला बैसकमे बिनु गेलैं'

'देखहक हौ गांधी बाबा', 'आब लोक बुझलक पी० एल० चारि सय अस्सी', 'शिव ई बाना छोड़ू औ' 'अल्पमतक बहुमतक सोहारी', 'इण्डिकेट सिण्डिकेट', 'प्रजावर्गकैं पड़ल प्रयोजन', 'अफसर सबकैं पड़ल प्रयोजन', 'लुच्चा सबकैं पड़ल प्रयोजन', 'आइ छात्रकैं पड़ल प्रयोजन', 'देखू दिल्लीक रंग', 'देखू दिल्लीक ताव', 'बाबाक भरोसें जे कयलनि फौदारी' आ' 'उनटा पाल' कविता संकलित अछि।

1981 ई० मे कर्णपुरक मध्यविद्यालयमे विद्यापति पर्व समारोह आयोजित भेल छलैक। कर्णपुर सुपौल सँ दक्षिण पढ़ल-लिखल लोकक गाम। ओकील आ प्रोफेसरक गाम। नेता आ मंत्रीक गाम। एहि गाममे विद्यापति पर्वक आयोजन कयने रहथि प्रो० कुलानन्द झा। मंचक संचालन करैत मायानन्दजी एहि गामकैं कर्णपुर नहि कर्णफूल कहने रहथि। आयोजन शानदार छलैक। दरभंगासँ आयल रहथि सुमनजी, अमरजी आ मिहिरजी। अमरजी ओतय प्रयोजन 'सीरीज'क सभटा कविता पढ़लनि। प्रजावर्गक प्रयोजनकैं बुनैत अपन रचनामे अमरजी कहलनि—

अपनामे अपनैती चाही, भदै' अगहनी चैती चाही
दूध-दूध आ पानि-पानि लय, गामेमे पंचैती चाही।
× × ×
हृदय पवित्र पड़ोसी चाही, संयत कमला कोसी चाही
देहक नापैं वस्त्रक संगहि पेटक नापैं चाही भोजन।
प्रजावर्गकैं यैह प्रयोजन।

'अफसरक प्रयोजन' पर सांसद चन्द्रकिशोर पाठक ठहक्का मारि हँसल रहथि। हुनका सङे टुटपुजिया नेता सभ अपन नेताकैं हँसैत देखि खूब हँसल। कविताक पंक्ति छलै—

नित्य बाइली आना चाही, रोज सिनेमा जाना चाही
भोज-भातमे कचरमकूटक हेतु कतहु चाही आयोजन
अफसर सभकैं यैह प्रयोजन।

कर्णपुरक आयोजन स्मरणीय भेल छलैक। भोजनकाल गामक सम्पन्नताक प्रशंसा करैत अमरजीकैं कहलियनि ककाजी, एहि गामक लोक बाटियेमे दालि खाइत छथि। अमरजी चोट्टहि जवाब देलनि—किए' थारीमे भूर भऽ गेल छनि की....? खेनिहारक सङ खोअयनिहारो हँसल रहथि अमरजीक एहि टिप्पणी पर।

कर्णपुरक आयोजनक किछुए दिनक पश्चात् जोगबनीमे विद्यापति पर्व समारोहक आयोजन पहिल-पहिल भेल छलैक। ता हमरा लोकनि धीर-महेन्द्र-जयराम 'तिजोड़ी' भ' गेल रही। ओहि कार्यक्रममे यद्यपि अमरजी नहि आयल रहथि मुदा हुनक कविता जयरामजी दुआरें सौंसे जोगबनी बजारमे चर्चित भ'गेल छलै—

अरसल परसल थारी चाही, काज ने कोनो भारी चाही
सीट-साट आ' फीट-फाट लय, सबटा माल उधारी चाही
(लुच्चा सभकैं पड़ल प्रयोजन)

1967-68 मे सबसँ पहिने बिहारेमे संविद सरकारक क्रम आरंभ भेलैक। कृष्णवल्लभ सहायक कांग्रेसी सरकारक पतनक पश्चात् महामाया प्रसाद सिंहक सरकार कतोक पार्टीक समर्थनें आरंभ भेल छलैक। छात्र आन्दोलन

सँ जनमल एहि सरकारक संबल छात्रे भेलैक। तेँ महामाया बाबू अपन आराध्यकेँ 'जिगर के टुकड़े' कहि संबोधित करैत अपन अल्पमतक सरकारक संरक्षकक सम्मान करैत छलाह। एहन परिवर्तित राजनीतिक परिदृश्यमे स्वार्थपूर्ण, कपटपूर्ण आ' प्रपंचपूर्ण राजनीतिकेँ अत्यधिक बल भेटलैक। एहि बलसँ समाजकेँ की भेटलैक, अल्पमतक लोक बहुमतक सोहारी कोना पकौलनि तकर खोइँचा छोड़बैत अमरजी ओहि समयमे लिखने रहथि–

पाँच-सात दल जँ मिलि गेला, भेल गुरू सब, रहल ने चेला
लागल अछि अफसर केर मेला, गुड़कय नहि सरकारी ठेला
अल्पमतक बहुमतक सोहारी, बेलि रहल छथि सत्ताधारी।......

1970 ई० धरि राजनीति मे आयल परिवर्त्तनक प्रभाव सबसँ अधिक विद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय शिक्षा आ परीक्षा पर पड़ल। 'जिगरके टुकड़े'क शिक्षाक प्रति पारम्परिक निष्ठामे अत्यधिक ह्रास देखबामे आयल। फलतः सरकार कदाचारयुक्त परीक्षा नहि सम्हारि सकल आ' परीक्षामे नकलक अधिकार छात्रकेँ स्वतः भेटि गेलैक। एहि क्रमपातकेँ देखैत अमरजी छात्रक मानसिकताकेँ पढ़ैत लिखलनि–

आँखिक आन्हर वीक्षक चाही, परम उदार परीक्षक चाही
प्रथमश्रेणी प्राप्त करै लय, तीर्थ भ्रमण लय हो संयोजन
आइ छात्रकेँ पड़ल प्रयोजन।.......

1947 ई०मे देश स्वतंत्र भेल आ' 1948 ई०मे युगचक्रक लेल अमरजीकेँ पहिल कविता 'जगकेँ युग परतारि रहल अछि' लिखऽ पड़लनि। लिखऽ पड़लनि–'मालिक हाथी अपन गमौलक/महथवार अधिकार जमौलक/बगड़ा झपटल बाजक ऊपर/पदसँ पकड़ि उतारि रहल अछि'।... एके वर्षमे एहन त्वरित परिवर्त्तन किएक भेल? स्वतंत्र भारतक स्वतंत्र नागरिक स्वाधीनताक मदिरासँ मत्त अपन भारतीय मर्यादाकेँ एतेक जल्दी सूली पर किएक चढ़ा देलक? नवीन भारतमे प्रवेश करिते भारतीय राजनीति, समाज, संस्कृति ओ नैतिकतामे एहन कोन 'काल' लागल जे ओकर मूलभूत स्वरूपेमे ग्रहण लागि गेल? उत्तर अछि 'युगचक्र'। एकरा पढ़ू आ उत्तर पाबि जाउ। युगचक्रक प्रसिद्ध सभटा कविता-क्रम जकरा अमरजी मंचक माध्यमे लोककेँ, एहि प्रकारक देशक रुग्णता सँ उबरबाक हेतु सुनौलनि आ' से अनवरत सुनबैत रहलाह। मुदा की परिवर्त्तन भेल?..... ई प्रश्न ओहिना, अविकाल ठाढ़ अछि जकर निष्कर्षमे कवि मूल तत्वकेँ उरेहैत लिखलनि–

भोगवाद कोनो समाजकेँ चिबा जाइ छै,
अपन कुकर्मे अपने गर्दनि दबा जाइ छै।
भोगवाद सौंसे समाजमे, वस्त्र फोलिक' नाचि रहल अछि।
भोगवाद अन्तरक आगिकेँ आओर फूकिक' आँचि रहल अछि।....

मुदा ई के बुझत? गाँधी आ' बलिदानीक रक्तसँ सिंचित–संचित स्वतंत्र भारत रूपी नाह पर टाङल पाल जेना उनटे टङा गेल छैक। एहि उनटा पालकेँ सुनटा के करत, तकर प्रतीक्षा सबकेँ छैक। भरिसक कवियोकेँ..........।

●

श्री अमरजी : एक अमर व्यक्तित्व

श्री सीताराम झा

श्री अमरजी मैथिली साहित्याकाशक एक दीप्तिमान नक्षत्र छथि जे अपन आभासँ सम्पूर्ण मिथिला-महीकेँ आलोकित कऽ रहल छथि। जहिना नाम तहिना व्यक्तित्व। जहिना नाम तहिना कृतित्व। हिनक व्यक्तित्व एवं कृतित्व अमर अछि आ अमर रहत। हम मैथिलीक विद्वान लोकनिसँ सम्पर्क करैत आ मिथिलाञ्चलक विभिन्न क्षेत्रक भ्रमण करैत अगस्त 1984 मे दरभंगा अयलहुँ। ओहि समय महारानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयमे मैथिली साहित्य परिषदक बैसार छलैक। हम सेहो गेलहुँ आ एक कोनमे बैसि साहित्यिक वार्तालाप सुनऽ लगलहुँ। हम ओहि ठाम एक अपरिचित व्यक्ति छलहुँ। सभहिकेँ हमरा विषयमे जनबाक जिज्ञासा भेल। हम कहिलियनि– हमर नाम सीताराम झा भेल आ उत्तर प्रदेशक इटावा जिलाक रहनिहार छी। मैथिली सिखबाक उद्देश्यसँ मिथिला-भ्रमण कऽ रहल छी। श्रीमान् सुमन जी ओहि बैसारक अध्यक्षता कऽ रहल छलाह। ओ हमर बड़ प्रशंसा कयलनि। ओहि समय एक व्यक्ति हमर निकट अयलाह जनिक मुख पर मुस्कान छलनि। कुर्ता-धोती परिधान छलनि। मुदा एक विशेषता छलनि। एक नमहर गमछा जकरा हम दुपट्टा सेहो कहि सकैत छी हुनकर पाछू बन्हल रहैक आ ओकर दूनू कोन हुनकर कान्हपर छलैक। ओ हमरा विषयमे बेसी जानकारी कयलनि आ स्वयं आगरा, फिरोजाबाद, अजमेर आदि नगरक प्रवासी लोकनिक विषयमे पूछऽ लगलाह। हमरा बड़ आश्चर्य भेल। ओ कहलनि जे हम हुनका लोकनिसँ व्यक्तिगत रूपें परिचित छी। हमर नाम श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' भेल आ एहि दरभंगाक मिश्रटोलामे रहैत छी। ई सुनि हमरा एतेक प्रसन्नता भेल आ ई भान होमऽ लागल जे हम कोनो प्रवासी बन्धुसँ गप्प कऽ रहल छी। वाणीमे कोमलता, मधुरता, सहजता आ आकर्षण छलनि। ओ हमराकेँ अपन डेरा पर चलबाक आग्रह कयलनि। हम हुनका संग गेलहुँ। रातिमे ओ हमराकेँ आगरा आ पश्चिमी उत्तर प्रदेशमे जे महासभाक अधिवेशन आदि भेल छल, ओकर विषयमे जानकारी देलनि जे हमरा स्वयं ज्ञात नहि छल। जिज्ञासावश हम हुनकासँ ओहि विषयमे बहुत बातक जानकारी प्राप्त कयलहुँ। एहि तरहेँ एतेक प्रगाढ़ता बढ़ि गेल जे हम हुनका 'भइया' शब्दसँ सम्बोधित करऽ लगलहुँ। भिनसर हम अपन मैथिली पोथी 'भारत-विभूतिः विद्यापति'क पाण्डुलिपि देखओलियनि आ कहलियनि जे हम अपनेक सम्मति चाहैत छी। ओ पाण्डुलिपि देखलनि आ अपन सम्मति लिखलनि। एतबे नहि, ओ हमरा अपन जमाय डा० श्री रामदेव झा जीक ओहि ठाम सेहो लऽ गेलाह, परिचय करओलनि आ सम्मति लिखओलनि। श्री अमर जीक लिखल सम्मति हमरा लेल एक धरोहर थिक जकरा हम उद्धृत कऽ रहल छी।

''बन्धुवर श्री सीताराम झा जी अपन प्रथमे दर्शनमे अपन प्रतिभा ओ लगनशीलता सँ अपना दिस आकृष्ट कय लेलनि। विद्या ओ विद्यापतिक प्रति हिनक अनुराग देखि मुग्ध भय गेलहुँ।

एक प्रवासी होइतहु जाहि तत्परताक संग मैथिली भाषा सीखि महाकवि विद्यापतिक ग्रन्थ सभक अनुशीलन कयलनि अछि ओ अपन विचार लिखित रूपमे उपस्थित कयलनि अछि से प्रशंसनीये नहि, अनुकरणीय सेहो कहल जा सकैछ।

स्थालीपुलाक न्यायसँ हिनक लिखल एहि ग्रन्थक अवलोकन करबाक सुअवसर भेटल। निःसंकोच कहल जा सकैछ जे एहि ग्रन्थकेँ पढ़लासँ विद्यापतिक व्यक्तित्व ओ साहित्यक प्रारम्भिक सम्पूर्ण परिचय पाठककेँ प्राप्त भय जयतनि।

एहि पवित्र कार्यक हेतु हम हृदयसँ झाजीक संवर्धना करैत आशा करैत छी जे विद्यापति साहित्यक पिपासु एकर समादर अवश्य करताह।''

चलबा काल ओ हमरा उपहारस्वरूप किछु पोथी देलनि। तत्पश्चात् हुनकासँ हमर पत्राचार होमऽ लागल जे एखनहुँ चलि रहल अछि। आइ दरभंगा हमरा लेल एक तीर्थस्थलक समान अछि। हम समय-समय पर ओतऽ जाइत रहैत छी आ एक राति हुनक डेरा पर अवश्य व्यतीत करैत छी। जखन हम अबैत छी, हुनक द्वारा लिखल किछु पोथी हमरा अवश्य देल जाइछ जे हमर छोटछिन अलमारीक शोभा बढ़ा रहल अछि जाहि ठाम हमर सभ पोथी रहैत अछि।

हुनका हमरा प्रति एतेक लगाव छनि जे एहि बातसँ प्रतीत होइछ। हुनक पुत्र श्री शम्भुनाथ मिश्र एकटा पोथी 'मैथिलीक दधीचिः बाबू भोलालाल दास' लिखलनि अछि। ओहि पोथीकेँ सेहो ओ हमरा देवऔलनि। हिनक लिखल पोथी 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' जे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित तथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत छैक, बड़ उपादेय साबित भेल अछि। कारण, हम पश्चिमी उत्तर प्रदेशक प्रवासी मैथिल छी आ उपर्युक्त पोथीमे किछु एहन पत्रिकाक वर्णन भेटैछ जे एम्हरहि बहार होइत रहैक जेना 'मैथिलहितसाधन' जयपुर, 'मैथिलबन्धु' अज़मेर, 'मैथिल प्रभा' मथुरा, 'मैथिल प्रभाकर' अलीगढ़, 'मैथिल युवक' अजमेर, 'जीवन प्रभा' आगरा आ झाँसी, 'मिथिला भूमि' मैनपुरी, 'मिथिला आलोक' फिरोजाबाद। आइ हम एहि सभ पत्र-पत्रिकाक विषयमे पढ़ि गर्वक अनुभव करैत छी। जँ ई पोथी नहि रहितैक तँ हम सभ एहि जानकारीसँ वंचित रहि जैतहुँ। परमादरणीय श्रीमान् श्री सुमनजीक अभिनन्दनग्रन्थ समारोहमे हमरहु बजाओल गेल छल। बजबाक अवसर सेहो देल गेल छल। ओ रातियो हिनकहि डेरा पर व्यतीत भेल। पत्राचार होइत अछि। हमरा हिनक संग एतेक आत्मीयता भऽ गेल अछि जे पत्राचार औपचारिक नहि भऽ पारिवारिक भऽ गेल अछि। हम अपन दुःख-सुख लिखैत छी, ओ अपन।

श्री अमरजीकेँ हम मिथिलावासी आ प्रवासीक मध्य एक सेतु मानैत छी। प्रवासी लोकनिकेँ मिथिलासँ जुड़बामे हिनक बड़ योगदान छनि। एहि महान् पुरुषकेँ हमर शत-शत नमन। ईश्वरसँ प्रार्थना अछि जे ओ दीर्घायु होथि।

●

अमरः हास्य-विनोद

प्रो० मन मोहन झा

हमर दृष्टिमे एहन कम लोक छथि जनिक साहित्येक अनुरूप व्यक्तिगत जीवन सेहो रहैत अछि। अपन साहित्यसँ जेना ओ हास्यक रसधारमे पाठककेँ उब-डुब करबैत छथि तहिना अपन जीवनहुमे विनोदक गुलछर्रा उड़बैत रहैत छथि। जनिक संग तेहने रुचिगर होइछ जेहन एकांतहुमे गुदगुदाबय बला हुनक साहित्य। जनिकर कृतित्व ओ व्यक्तित्व तेहन मिज्फर रहैत अछि....... दुनू तेना एकाकार भ' जाइत आछि, जे लगैछ दुनू एक दोसराक लेल बनल होअय। हमरा नजरि मे प्रो० हरिमोहन झा आ श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एहन साहित्यकार छथि जे हास्यरसकेँ ओढ़ने नहि छथि ओकरा अपन अंकमे समेटने छथि...... तेना-सन जे ओ हृदयक स्पंदन भ' गेल अछि। जनिक सामान्यो गप्पमे हास्य ओ वाक्पटुताक तेहन भरमार रहैछ जे श्रोता हँसैत-हँसैत लोट-पोट भ' जाय मुदा अघा नहि सकैछ। जनिकर वाक्चातुर्य ओ प्रत्युत्पन्नमतित्व तहिना चमत्कृत करैत अछि जेना हुनकर साहित्य। आ तैं भरिसक दुनू गोटामे आत्मीयता सेहो छल। अनेको पत्रसँ ध्वनित होइछ जे बाबूजी सतत हुनक खोज-पुछारि करैत रहथिन। एकटा पोस्टकार्ड तँ एहनो भेटैछ जाहिमे बाबूजी सम्बोधन आ पता संग एकाध पंक्ति स्वयं लीखि क' देने रहथिन, संभवतः एहि दुआरे जे एना कतहु बिसरा ने जाइन्ह। बैंत बला कुरसी पर बैसबा सँ रोकि देने रहथिन जैं ओहि मे उड़ीस छै, बेसी काल बैसय नहि देत। अमरजी सेहो वैह भाव बनौने छलथिन–'ई दास जतय रहत ततय ओ दास कतय?'

दुहूक सरस वार्ताक आनंद उठाबहि बला जानि सकैत छल। अमर जीक कथन जे मैथिलीक आयोजक लोकनिक जोश स्प्रीट जकाँ उड़ि जाइत छनि आ ताहि पर बाबूजीक व्याख्या जे तैं स्प्रीट केँ 'मैथिलेटेड' वा 'मिथिलेटेड' कहल जाइत छै मद्रासीएट नहि, की दुनूक व्यंग्य साहित्यक परिचायक नहि थीक? हुनकर सभक साधारणो बोल-चाल सँ श्रोता केँ अलंकार-शिक्षा भेटैत छल। दुनू गोटाक गप्पक आनंद कहियो काल उठयबाक सुअवसर ओ सौभाग्य हमरो भेटल छल।

एक बेर अमरजी डेरा पर अयलथिन तँ बहादुर (नोकर) सँ पुछलथिन–'हमको पहचानते हो न? कहो अमर जी आये हैं। बहादुर जा बाबूजी केँ गोंगियाइत कहलकनि–'मरजी आये हैं।' ओ नहि बुझि सकलथिन। बहरयलथिन तँ अमरजी। कहलथिन–'बहदुरा 'अ'केँ खा गेल। अमरजी कहलथिन–'मरजी ओकर। अमरजी केँ मरजीए बनाक' छोड़ि देलक। ओ तँ किछु आरो बना सकैत छल।'

'अमरजी मे गोनू झा बला हाजिर-जवाबी भेटैछ। हमर जेठ भाइ (रमन जी)क बरिआत मे अमरजी सेहो रहथि। एगोट हमर मित्र वैष्णव छलाह। भोजन काल मे जा ओ मना करितथि ता माछक एकटा खंड पात पर खसि पड़लनि। दोसर पात बदलबाक उपक्रम केँ रोकैत ओ कहलथिन जे 'खाली माछ टा हटा दियौ, हम एही मे खा लेब।' ताहि पर अमरजी टीपलथिन–'बेश नव छथि।'

एक बेर, कहाँदन, कवि-सम्मेलन सँ पहिने पूरी-तरकारी जलखइ करैत रहथि। आलू-परोड़क तरकारी मे परोड़ नामहिटाक रहै। दू-तीन बेर परसनो लेलनि तँ आलू मात्र भेटलनि। दोकानदार कवि लोकनिक वार्तालाप सँ पहिनहि अकछायल छल, परोड़ मँगला पर स्पष्ट मनाक' देलकनि–'अब ना मिली।' अमरजी केँ रहल नइँ गेलनि। सहज भाव सँ कहलथिन–'हेयौ, दू आलू मध्य एकटा परोड़क व्यवस्था तँ भगवानहु कयने छथिन....।' आगाँक गप्प ढहक्कामे विलीन भ' गेलैक।

तहिना एक बेर सहरसा जाइत रहथि विद्यापति जयंतीक कार्यक्रम मे। गाड़ी आयल। सभ हड़बड़ा क' चढ़ि गेलाह, पाछाँ मायानन्दजी दौड़ैत अयलाह–'काकाजी ई त मेल अछि।' अमरजी बजलाह–'से आब मेल होअय कि

फिमेल, जखन चढ़ि गेलियन्हि त आब उतरबन्हि नइं। अहूँ चढ़ि जाउ।'

दरभंगा मे 'कन्यादान' सिनेमा लागल छलैक। लाल ककाक भूमिका मे अमर जी कैं देखबाक लोकक बड़ उत्कंठा रहै। एकमात्र मैथिल मैथिलीभाषी आ ताहू पर दरभंगाक सर्वपरिचित..... स्वाभाविके छल। केओ पुछलकनि–'जँ फेर मैथिलीक सिनेमा बनतै तँ अहाँ कैं बजाओत?' अमरजी छुटैत कहलथिन–'से कोनो हम ढोल छी जे हमरा बजाओत?'

'साहित्यकार संग भेट'क कार्यक्रम मे केओ पुछलथिन जे 'अपने हरफनमौला छी....सभ विधामे रचना कयल अछि किंतु सभसँ बेशी की रुचैत अछि–कथा कि कविता?''

अमरजी जवाब देलथिन–'हमरा सभ रुचैत अछि। कथा सँ बेशी कविता प्रिय लगैत अछि। नहि रुचैत अछि तँ स्वच्छंद कविता। छंद-मात्रा रहित काव्य भइये नहि सकैत अछि। काव्य नहि ओ भेल वाक्य।'

तहिना एगोटे प्रश्न कयलथिन्ह–'मृत्युक समय अहाँकैं केहन बुझायत?' ई विहुँसैत चट् द' कहलथिन–'हमरा की बुझायत? जे ल' जयताह से ने बुझताह!'

साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटला पर केओ पुछलकन्हि जे 'केहन लागि रहल अछि?'

अमरजीक उत्तर छल–'प्रसन्नता एतबे जे आब किछु गोटे पोथी पढ़ताह।'

साँझमे अमरजी सुरेश्वर बाबूक ओहिठाम साइकिल लगा श्रद्धेय सुमन जीक ओहिठाम जाइत रहथि। ई नित्यक क्रम छलन्हि। शुरूमे सुरेश्वरबाबू साइकिल मे ताला लगा देबाक गप्प कहने रहथिन ज़ाहि पर अमरजी कहलथिन्ह–'एकहत्थू छै, दोसर चढ़िये नहि सकैछ।' सुरेश्वर बाबू बजलाह–'चढ़िक' नहि तँ केओ गुड़काइयो क' त' ल' जा सकैत अछि?' अमरजी निश्चिन्ततापूर्वक कहलथिन–'गुड़काबय लेल ओकरा हमर साइकिले भेटतै?'

एक बीच हिंदी मे जैनेन्द्र जीक पत्नी बनाम प्रेमिकाक बहस चलल रहै। ताही बीच केओ अमरजी सँ पुछलकन्हि–'पत्नी ओ प्रेमिका मे की अंतर छै?' अमरजी तुरंत उत्तर देलथिन–'जे नोरनगर आ नमकीन मे छै।'

'अमर' ओ हास्य-विनोद– दुनू एक दोसराक पर्याय बनि गेल अछि। अमरजीक संगहि हास्य-व्यंग्य छिटकैत-छिड़िआइत रहैत अछि आ इएह हास्य-विनोद हुनका अमर बनौतन्हि।

●

स्वदेशगोष्ठी आ अमरजी

डॉ० भीमनाथ झा

आचार्य श्री सुमनजी 1948 मे 'स्वदेश' मासिक बहार कयलनि। से साहित्यिक मानदण्डक शिखरकेँ छुवितहुँ आर्थिक दण्डक प्रहारसँ नचार भऽ छौ अंकक बादे बन्द भऽ गेल। किन्तु, जेना रणभूमिमे आहत सैनिक स्वस्थ होइते संग्राममे फेरसँ जुझि जयबाक उन्माद देखबैछ, तहिना इहो आर्थिक मारिसँ सम्हरिते फेर 'स्वदेश'क डंकापर चोट देलनि। संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक समावेशक हेतु दैनिक पत्रक अनिवार्यताक पूर्त्यर्थ उत्साहसमर्थ सुमनजी फेर 1955 मे मैदानमे कुदि पड़लाह। दैनिक पत्रक किलापर मैथिलीक झंडा फहरयबा लेल 'स्वदेश'क पताका कऽ कूच कऽ गेलाह। कूच तँ कऽ गेलाह दैनिक 'स्वदेश'क सेनापति सुमनजी, मुदा 'दैनिक' पर फतह लेल तँ सैनिकक विशाल वाहिनी चाही। से हिनका लग सैनिक? मुट्ठी भरि, एकदम मुट्ठी भरि, गनल-गुथल पाँच-छौ टा–भूपेन्द्र बाबू, प्रो० धर्मप्रिय लाल, डॉ० सूर्यकान्त ठाकुर, अमरजी, रामदेवजी, राजेश्वर ठाकुर प्रभृति। एक ईर घाट, दोसर वीर घाट। स्वदेशक सम्पादक कटहरबाड़ीमे, अमरजी बेता लग, रामदेवजी गामपर कविलपुर। छाया जकाँ भूपेन्द्र बाबू मात्र। सुमनजीक संग भूपेन्द्र बाबू राति-दिन एक कयने रहथि। अमरजी स्कूल कयलाक बाद यथासंभव योगदान देथि। भोरे-भोर हॉकर बनि दुआरिए दुआरि पत्र बिलहथि। रामदेव बाबू सेहो। मुदा, सैनिककेँ परामर्शक पलखति कतऽ, व्यूहरचनाक योजना कोना? आ सेनापति नितान्त एकसर। योजना बनायब, लोक जुटायब, चिन्तन करब, सभ दिस रहब–एकसर असंभव। तथापि, एतबा तँ भेल जे 'दैनिक'क किलापर मैथिलीयोक झंडा फहरा गेल। मुदा, लाठीसँ तोपक सामना कती काल धरि कयल जा सकैछ? फल जैह होयबाक सैह भेलैक– किछु मासक बादे स्वदेशो स्मृतिशेष भऽ गेल।

एहि बेर अर्थक आघात किछु अधिके पड़लनि, तेँ श्री सुमनजीकेँ होश अयबामे समय किछु बेसी लगलनि। बीचमे दिशो कने बदलि गेलनि। साहित्यिक रस तँ रहलनि, किन्तु रंग राजनीतिक चढ़ि गेलनि। एम०एल०ए० भेलाह, एम०पी० भेलाह। फेर ताहि सभसँ निवृत्त भेलाह। ओम्हरसँ निवृत्त भेलाह कि फेर एम्हर प्रवृत्त भऽ गेलाह। 'स्वदेश'क उन्माद तेबारा जोर मारलकनि। किन्तु, एक बेर नहि, दू-दूर बेर पाकल छलाह। घाव तँ चोखा गेल छलनि, मुदा दाग तँ छलनिहेँ।

1980 इसवी। श्री सुमनजी कोनो दिन शुभ मुहूर्तमे श्री अमरजी लग 'स्वदेश'क चर्चा चला देलनि। हम रहितहुँ तँ तखने हतोत्साहित करितियनि, मुदा अमरजी सेहो हारि मानऽवला नहि। चट समर्थन कऽ देलथिन। सुमनजी जखन दू-दू बेर एकसरे धऽ तनने रहथि, तखन एहि बेर तँ धक्का देबा लेल अमरजी सन धुनक पक्का, कर्मठताक पहाड़, सद्गुणागार सहयोगी-सहायक बनि सम्पूर्णतः संग छलथिन। ततःपर अपन संघर्ष-अग्निमे दमकैत स्वर्ण जकाँ चमकैत व्यावहारिक अनुभव।

यैह 'व्यावहारिक अनुभव' एहि दुनू मैथिली उन्नायककेँ उताहुल धावक जकाँ हुहुआकऽ दौड़बासँ रोकलकनि, दू खेप खसबाक आहि मन पाड़लकनि। सुमनजी तँ चोटायल छलाहे, दुनू जन विचारलनि–किएक ने धऽ तनबासँ पहिने किछु दिन संध्याकाल दुनू गोटे बैसी, आनो गोटेकेँ बजाय, सद्भावना जुटाय, विभिन्न पक्षपर दक्षतासँ विचार-मंथन चलाय, चिन्तन-मनन कयल जाय? तखन एहिमे जुमल जाय। 'स्वदेश'क सनेस कोना तैयार हो?–चिक्कस चीनी घी

चाही, साँच चङेरा जारनि चाही, भड़ार चाही, भरिया चाही, बटखर्चा चाही, बिलहनिहार चाही, बिलौकी चाही, तकर हिसाब चाही। प्रश्न छल, एतेक 'चाही'क उगाही हो कोना?

बैसाड़ी शुरू भेल। बेहिसाब समस्या, तकर तार्किक समाधान! ताहि लेल समाङक जुटान आ चिन्तन-अभियान। एकसूत्री विचार, 'स्वदेश' कोना हो बहार, कोना पकड़त बजार?

सुमनजी आ अमरजी दू जन तँ छलाहे, आनो सुजन आकृष्ट भेलाह। सुमनजी गाछ तँ भूपेन्द्र बाबू (हुनक अनुज) छाया, पत्रक मुद्रक-प्रकाशक-रूपमे सभसँ पैघ पाया। रमणी बाबू, नूनू बाबू, मिहिरजी, कहियो काल रामदेव बाबू, जे कखनो आबि जाइत छलाह, नियत कालमे जुटऽ लगलाह। आनो लोक अबैत रहलाह, बढ़ैत रहलाह—क्यो सर्वदा, क्यो यदाकदा। नियमितता कायम भेल आ अनायास भऽ गेल गोष्ठीक जन्म।

गोष्ठी कथी लेल?—दैनिक स्वदेशक पुनः प्रकाशन लेल, ताहीपर चिन्तन-मथन लेल—तेँ स्वदेशगोष्ठी। बाजाप्ता नामकरण एकर नहि भेलैक कहियो, मुदा गोष्ठीक ई नाम जे पहिले-पहिल उच्चरित भेल होयत, से हमरा लगैत अछि, अमरेजीक मुँहसँ भेल होयत।

स्वदेशगोष्ठीक प्राण सुमनजी, वाणी अमरजी।

सन् 1981 मे पत्र-प्रकाशनसँ पूर्व, गोटेक वर्षसँ ऊपरे लगातर गोष्ठी बैसल—सुमनजीक दलानपर, ओसारा पर, कोठलीमे। ऋतुपरिवर्तनक आघातसँ अविचलित पावसक झमझमौआ वर्षा हो कि शिशिरक कड़कड़ौआ ठंढ, गर्मीमे माछीक भनभनी हो कि वसन्तमे मच्छरक डंक, अमरजी नियत समयपर हाजिर। जुटथि आनो, मुदा ई तँ अवस्से। 'स्वदेश' कोना छपय? साइज की? स्तम्भ कोन सभ? समाचार-संकलन कोना हो? ग्राहकताक प्रकार कतेक? अभियान कोना? उपाय की?— यावन्तो विषय आबय आ ओहिपर चिन्तन चलय। विचार क्रमशः आकार ग्रहण करऽ लागल। प्रयोगांक— से दू-चारि अंक धरि, तखन प्रवेशांक— सेहो तहिना, ततःपर आदर्शांक— तद्वते। तदनन्तर नियमित अंक बहराय लागल। स्वदेश चलैत रहल, गोष्ठियो जमैत रहल।

अमरजीक जीवन घड़ीक सुइपर संचालित। जतबा बजे जे काज निर्धारित अछि, ततबे बजे से काज होयत—एक मिनट आगाँ-पाछाँ नहि। अमरजी दूध लेल छौ बजे भोरे विदा होइत छथि—ओ विदा भेलाह, अहाँ घड़ी मिला लियऽ। स्कूल साढ़े दस बजे पहुँचैत छथि। हुनक साइकिल पहुँचल कि घंटी बाजल। स्वदेशगोष्ठीक समय साढ़े पाँच बजे सायं। ओ अयलाह कि बुझि जाउ, ठीक साढ़े पाँच बाजि गेल, घड़ी देखबाक काज नहि।

ओ आबथि आ संगमे किछु समाचार लाबथि, किछु नव ग्राहक-शुल्क आनथि, किछु आजीवन ग्राहकक सूत्र ठेकानथि। हुनक अयबाक प्रतीक्षा गोष्ठीकेँ एहू लेल होइक जे ओ औताह तँ माथ तनावमुक्त होयत, मन हल्लुक होयत, थोड़ेक हँसि लेब आ फेर काजमे जुटि जायब।

1982क नवम्बरमे हम सी०एम० कालेजमे मैथिलीक व्याख्याता बनि दरभंगा आबि गेलहुँ तँ पहिले दिन गुरुवर सुमनजीक दर्शन करऽ गेलियनि। कहलनि— संध्याकाल आयब तँ एक्के ठाम सभसँ भेट भऽ जायत। पहुँचलहुँ। सर्वश्री अमरजी, रमणी बाबू, रामदेव बाबू, मिहिरजी, डॉ० श्रीकृष्णमिश्रजी, आरो किछु उत्साही नवयुवक छलाह। एक्के ठाम नौ-दस गोटेसँ भेट भऽ गेल। प्रेसक कने-मने अनुभव रहलासँ हमरा अयलापर श्री सुमनजी आ श्री अमरजीकेँ विशेष आह्लाद देखलियनि। किन्तु, ओहि दुनू गोटेकेँ अपनहिँ ततेक विशाल अनुभव-सिन्धु छलनि, जकर आगाँ हमर

अनुभव-कूप बिनु उड़ाहले रहि गेल। हुनका लोकनिकेँ हमर अनुभवसँ की भेटितैनि, मुदा हमरा धरि महासागरे भेटि गेल। फलतः हम गोष्ठीक रेगुलर सदस्य बनि गेलहुँ। किछुए दिनमे बुझबामे आयल जे एहि गोष्ठीक चारि कोटिक सदस्य छथि। महारेगुलरमे अमरजी, रेगुलरमे रमणी बाबू, नूनू बाबू, मिहिरजी, बादमे हमहूँ, रेगुलर-कैजुअलमे रामदेव बाबू, योगानन्द जी, डॉ० विद्यानाथ झा, मुरलीधरजी, रामदेव बाबूक बालक ललनजी। कैजुअलमे कतेको गोटे।

'स्वदेश'क एक स्तम्भ अमरजी लिखऽ लगलाह, जाहिमे विभिन्न जातिक भाषाक, ओकर अपन जे निजता छैक, सौरभ छैक, तकर बाखूबी दिग्दर्शन होइत छलैक, संगहि मैथिलीक विभिन्न बोलीक निखरल रूप समक्ष अबैत छलैक। हमरा छगुनता लागय आ सभकेँ लगैक अमरजीक एहि प्रतिभापर जे कोना कोनो खास जातिक भाषाक बारीकीकेँ ओ बेरा दैत छथिन?

तिरासीक अन्त होइत-होइत 'स्वदेश'क गाड़ी ठमकि गेल। भेलैक ई जे पटनाक चेतना समितिक मंचसँ डॉ० जगन्नाथ मिश्र मैथिली दैनिक पत्रक प्रकाशनक संकल्प लेलनि। ताहि लेल जनतासँ सहयोगक याचना कयलनि। धराधरि वचन आबऽ लागल आ घोषित होबऽ लागल। ई भिन्न कथा जे ओ घोषिते भऽकऽ रहि गेल। तावत् पटनाक मिथिला मिहिरकेँ दैनिक होयबाक घोषणा कयल गेलैक। मैथिली दैनिक चलैत रहबाक सुमनजीक संकल्प ओहू तरहेँ पूरा होइत छलनि। तेँ, धन-श्रम-जनशक्तिक निरन्तर होइत ह्रासकेँ देखैत अमरजीक अनुरोधेँ सुमनजी 'स्वदेश'केँ मिथिला मिहिरमे मनसा एकाकार कऽ देलनि।

'स्वदेश' तँ बन्द भऽ गेलैक, मुदा स्वदेशगोष्ठी बन्द नहि भेलैक। ओ अनवरत चलैत रहलैक अछि। आइयो चलि रहल अछि।

पहिने एकर केन्द्रबिन्दु 'स्वदेश' रहैक, आब स्वभाषा छैक, स्वसाहित्य छैक, स्वभूमि छैक, स्वराष्ट्र छैक।

स्वदेशगोष्ठी आइयो चलैत अछि ओहिना, ओत्तहि, ओही समयमे, ओही त्वरामे, ओहिना जीवन्त, ओहिना स्फूर्तिवन्त! किएक ने हो? ओकर 'प्राण' आइयो ओहिना छथि, ओकर 'वाणी' रंचमात्रो मन्द नहि भेलाह अछि। किछु अधिष्ठाता-सदस्य एखनो छथि, किछु उठि गेलाह, किछु शिथिल पड़ि गेलाह। बीच-बीचमे नव-नव अबैत रहलाह, जमैत रहलाह, जाइत रहलाह। महारेगुलर अमरजी आइयो महारेगुलर छथि। आन सभ श्रेणी अछि तँ ओहिना, मुदा ओकर सदस्य अदलैत-बदलैत रहल छथि। जे पहिने रेगुलर छलाह, जेना चौधरीजी (रमणीबाबू), से रेगुलर-कैजुअल भऽ गेलाह अछि। नूनू बाबू दरभंगा छोड़ि चुकलाह अछि। जे पहिने रेगुलर-कैजुअल छलाह जेना रामदेव बाबू, ओ गेस्ट कैजुअल भऽ गेलाह अछि। मुरलीधरजी, योगानन्दजी नितान्त कैजुअल भऽ गेल छथि। विद्यानाथजी विसरिए देलनि। नवागन्तुक लोकनिक संख्या बढ़ल। ओसभ पहिने कैजुअली शुरू कयलनि–जेना प्रो० रमाकान्त मिश्र, जे बादमे रेगुलर-कैजुअल भेलाह, रेगुलर भेलाह, फेर कैजुअल भऽ गेलाह, आब गेस्ट-कैजुअल भऽ गेलाह अछि। प्रो० सुरेश्वरझा– कैजुअलसँ रेगुलर-कैजुअल, फेर रेगुलर भऽ गेलाह, जे आइयो छथि। कविवर अज्ञातजी, जे वयसमे सुमनोजीसँ जेठ छलथिन, नित्य आबथि जा कनियोँ अयबा जोग रहथि। इं० अशोक कुमार ठाकुर पहिने रेगुलर-कैजुअल भेलाह, आब रेगुलर छथि। डॉ० आर० के० रमण जतबा दिन दरभंगा छलाह, रेगुलर छलाह, एखनो अबैत छथि तँ एतऽ अबिते छथि। उमेशचन्द्रझा रिटायरमेंटक बाद दरभंगा अयलाह तँ एहि ठामक रेगुलर भऽ गेलाह, आब रेगुलर-कैजुअल छथि। डॉ० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' मधेपुरसँ दरभंगा अबितहिँ एहि ठामक रेगुलर सदस्य बनि गेलाह आ बनले छथि। पूर्णेन्दु चौधरी जा दरभंगामे पोस्टेड छलाह, ता एहि ठाम कैजुअल, फेर रेगुलर-कैजुअल छलाह। डॉ०

जटेश्वर झा 'जटिल' दरभंगा अयलाह तँ कैजुअल भेलाह, अमरजीक डेरामे गेलाह तँ रेगुलर भऽ गेलाह। से छथिए। फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' आ हरिश्चन्द्र 'हरित' कैजुअलसँ शुरू कयलनि आ आब रेगुलर-कैजुअल छथि।

'स्वदेश' बन्द भेलाक बादो स्वदेशगोष्ठीक निरन्तरता बनल रहल, तकर श्रेय अमरजीकेँ। अमरजी दू कारणेँ एकरा जारी रखने होयताह। एक तँ सुमनजीक प्रतिदिन सान्निध्य-लाभसँ उपकृत होयबा लेल, दोसर स्वदेश बन्द भऽ गेलाक बाद सुमनजीकेँ शारीरिक-आर्थिक-मानसिक झमारसँ उबरबामे संग पुरबा लेल। विद्यालयसँ अवकाश-प्राप्तिक बाद विद्यालये जकाँ एकरो मानि लेलनि। अन्तर एतबे जे विद्यालयमे रवि-रवि अवकाशो, एतऽ रवि-सोम एके रङ। आन लोकनि जे गोष्ठीकेँ जारी रखलनि, तकरो दू कारण। एक तँ सुमनजी सन मनीषीक सान्निध्य-सुख लेल, दोसर– अमरजीक हास्यक बरखामे नहयबाक आनन्द-लाभ लेल। भरि दिनका झमारल लोक सांध्यगोष्ठीक प्रतीक्षा एहि लेल करय आ एखनो करैत अछि जे अमरजीसँ कोनो चुटुक्का सुनि ठहक्का लगा मनकेँ हल्लुक करत। अमरजी आबथि आ ठहक्का नहि लागय, से कोना संभव? श्री ब्रजेन्द्र बाबूक माय (श्री सुमनजीक पत्नी) गोष्ठीसँ फराके सभ दिन कोठलिएमे रहैत छलीह। मुदा, अमरजी शहरमे नहि रहबाक कारणेँ जाहि दिन नहि आबथि, से ओ बुझि जाथिन। सुमनजी पुछलथिन– अहाँ कोना बुझलिऐ से? कहलथिन– आइ हहारो कहाँ पड़लै?

अमरजीक हास्य-व्यंग्य साहित्यसँ तँ पूर्वपरिचित रही, हिनक सरस भाषणो सुनने रही, किन्तु हिनक मोहक संभाषण, क्षण-क्षण हास्यक स्फुरण, विलक्षण प्रत्युत्पन्नमतित्व, कोनो गपपर लगले सटीक दृष्टान्त प्रस्तुत कऽ देबाक अद्भुत कला, प्रसंगसंगत पूर्व घटनाकेँ पुनः जीवन्त बना देबाक अपूर्व क्षमतासँ हमरा सहित कतेको गोटे अपरिचिते रहि जाइत जँ स्वदेशगोष्ठीमे अवर्यातक सौभाग्य नहि पबैत।

एहि युगक दू महान् हास्यरसाचार्य छथि– व्यंग्यसम्राट प्रो० हरिमोहन झा तथा हास्यावतार पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। हमरा दुनू मनीषीक निकट सम्पर्कक सौभाग्य– दुनूक हास्य-पकमान भरि इच्छा खयनिहार, दुनूक रंगीन गप्प-शरबत भरि-भरि छाक पिनिहार, दुनूक अन्तरंग गोष्ठीमे वर्षक वर्ष बैसनिहार। दुनूक तुलना नहि करैत छी, उचितो नहि थिक आ हमरा सामर्थ्यो नहि तकर। अमरजी हरिमोहन बाबूकेँ गुरुजन मानैत, हरिमोहन बाबू अमरजीकेँ हास्यक बेजोड़ स्रष्टा कहैत। हमर हरिमोहन बाबूक परिवारमे जखन अन्तरंगता बढ़ल तँ ओ छियासठि वर्षक भऽ गेल रहथि। अमरजीक अंगित जहिया भेलहुँ तँ ई जीवनक सताबनम सीढ़ी पर छलाह। अर्थात्, हरिमोहन बाबू अपन सर्वोत्तम दौड़केँ समाप्त कऽ लेने छलाह, पूर्ण विश्राममे छलाह। अमरजी रिटायर नहि भेल छलाह। सर्वोत्तम दौड़ हिनको पूरा भऽ गेल छलनि, मुदा ओकर घाम सुखायल नहि छलनि। दुनूक सान्निध्यमे अपन-अपन सुख– चिरकाल धरि गुदगुदबऽवला, एकान्तोमे लोटपोट करऽवला।

रूप-रंगमे तँ सहजहिं जे दुनूक स्वभावोमे साम्य देखलियनि। दुनू सौम्य। दुनूकेँ नाकपर तामस, मुदा नाकपरक माछी जकाँ लगले फुर्र। तामस अनकापर नहि, अपने घरमे। आ, लगले रस-परिवर्तन। घरसँ तमसायल बहरयला, अहाँकेँ देखलनि कि छोड़ि देलनि कोनो फुलझड़ी। मुट्ठीक सक्कत हरिमोहनो बाबूकेँ कहल जाइत छलनि, अमरोजीकेँ कहल जाइत छनि की नहि, से नहि कहब, मुदा एतबा तँ अवश्य कहब, भोगल कहब जे कहियो हरिमोहन बाबूक ओतऽसँ खालिए मुहें नहि अयलहुँ, से दिनमे चारि बेर गेलहुँ तँ चारू बेर किछु-ने-किछु अबस्से, नहि किछु तँ अपना ले' राखल फले। तहिना अमरोजीक ओहि ठाम। कतबो हड़बड़ीमे रहताह, आखिर चाह धरि भेले ताकय।

चाह स्वदेशगोष्ठीक अविभाज्य अंग थिक। सुमनजीक ओहि ठामक चाहक खिस्सा पहिनहुँ सुनल छल। मधुपजी

एक बेर कहने रहथि– बुझलहुँ, सुमनजीसँ बड़ी काल गप्प कऽकऽ जखन विदा होबऽ लागी तँ कहथि–एक घोंट चाह पीबि लियऽ। ओ चाह दऽ कहि देथिन आ फेर गप्प जारी। ओम्हर होबऽ लागल चाहक ओरियान– चीनी-पत्तीक जुटान, आँचक सरंजाम। अर्तात्, आधा घंटा आर। फेर मधुपजी जोड़थि– असलमे सुमनजीक हृदयमे रहैत छलनि जे ई थोड़े काल आर रहथि। काजक अगुताइ नहि देखबियनि, तेँ चाहक व्याज।

स्वदेशोगोष्ठीक दैनिक समापन चाहसँ होयब अनिवार्य। आ, चाह बनौनिहार के? तँ भूपेन्द्र बाबू, जे अपनहुँ सत्तरि-पचहत्तरि वर्षक बूढ़। पिनिहार के? तँ हमरा सन आ हमरोसँ कम वयसक युवक सेहो। देह सिहिर जाय, मुदा उपाय की? सुमनजीक आग्रह अटल। अमरजी शुरूहेमे व्यवस्था देलथिन– चाह पिबि स्वयं कप अखारी। सदस्य लोकनि लगले शिरोधार्य कयलनि। ट्रेमे चाहक संग एक लोटा जलो आबि गेल करय। नवागन्तुक, जनिका ई व्यवस्था बूझल नहि, ओहिना राखि दैत छलथिन तँ सुमनजी हुनका समक्षे अपनहिँसँ लऽ अखारि देथिन। मुदा, अमरजी पिनिहारेसँ अखरबाबथि। जाहि दिन अमरजी नहि आबथि, सुमनजी कहथि– आइ अखारब आवश्यक नहि, ओहिना राखि दियौक। आइ अमरजी नहि छथि। मुदा, अमरजीक परोक्षोमे अमरजीक एहि व्यवस्थाक पालन आइ धरि भऽ रहल अछि। आइ भूपेन्द्र बाबू नहि रहलाह, मुदा कम-सँ-कम चाह पीबाक काल ओ मन पड़ितहिँ छथि, किएक तँ ओहो बाजथि– आइ अमरजी नहि छथिन, छोड़ि देल जाय। ओहि दिन चौधरीजी सभसँ प्रसन्न होथि।

स्वदेशगोष्ठीक आब कोनो एजेंडा नहि छैक, 'स्वदेश' बन्द भऽ गेलाक बाद कहियो नहि रहलैक। गप्पक चक्र मुख्यतः साहित्यिक-सामाजिक धूरीपर नचैत छैक। ओना, कोनो विषय वर्जित नहि, मुदा मर्यादाक सीमाक भीतरे। एहि बीस वर्षमे सुमनजी आ अमरजी जे लिखलनि, छोट कि पैघ, तकर पहिल पाठ स्वदेशगोष्ठीमे कयलनि। 'आइ ई पास करयबाक अछि'–कहि सुमनजी, आ अमरजी सेहो, सद्यःरचित गद्य-पद्यक पाठ करथि, एखनो करैत छथि। सुमनजी आ अमरजी सन साहित्य-महारथीक रचनाक पहिल श्रोता होयब कतबड़ गौरवक विषय थिकैक, से अनुभव करबाक थिक। एहन सैकड़ो गौरवक क्षण स्वदेशगोष्ठीक सदस्य लोकनि सहजहिँ उपलब्ध कयने छथि। आनो सदस्य जे लिखथि, ओतऽ सुनबथि आ हुनकालोकनिक परामर्शसँ कृतार्थ होथि। हमर कतोको पित्तरिपर ओतऽ सोनाक पानि चढ़ाओल गेल अछि। इहो लेख ओतहि पास भेल अछि। आ संयोग देखू, ओही दिन अमरजीपर सुमनजी सेहो कविता लिखलनि, जकर पहिल द्रष्टा-श्रोता स्वदेशगोष्ठीक सदस्य भेलाह।

गोष्ठीक सन्निध्यक फलस्वरूप अनेको सुप्त प्रतिभा जागल, कली फुलायल, फूल आर अधिक भकरार भेल, मैथिलीक फुलबारी बेसिए गमगमा उठल। रमाकान्त बाबू राजकमलक सान्निध्य छुटलाक बाद मैथिलीकेँ विसरि देने छलाह, से गोष्ठीमे अवर्यातसँ फेर एहिमे जुटि गेलाह, तीव्र वेगेँ। एम्हर, निरन्तरता गोष्ठियोमे कम भेलनि तँ लेखनमे सेहो। सुरेश्वर बाबू किछु कथा आ स्वतंत्रता आन्दोलनमे मिथिलाक योगदान पर पोथी तैयार कयने रहथि, एहि गोष्ठीमे अयलाह आ लगभग दर्जन भरि पोथीक लेखक-अनुवादक-संपादक भऽ गेलाह, मैथिली साहित्य-संसारमे व्याप्त भऽ गेलाह। उमेश बाबू चतुर्भाषिक शब्दकोशे लिखि छपा लेलनि। अशोक बाबू कथा, समीक्षाक अतिरिक्त 'निशान्त' नामक दीर्घ उपन्यासे लिखि लेलनि। हमरो सन आलसीसँ जैह किछु भऽ सकल, ताहिमे एकरो श्रेय अछिए।

साहित्य-जगतमे एहि गोष्ठीक ख्याति दरभंगासँ बाहरो पसरि गेल अछि। अनतहुसँ जे साहित्यकार लोकनि अबैत छथि, जनिका सुमनजीसँ भेटक इच्छा रहैत छनि, संध्येकाल ओतऽ अयबाक कार्यक्रम बनबैत छथि। इष्ट जे एके ठाम बहुतो बन्धुसँ भेट भऽ जयतनि। व्यासजी, जयकान्त बाबू, गोविन्द बाबू, मायानन्द बाबू, राजमोहनजी, चन्द्रभानु सिंह, मार्कण्डेय प्रवासी, मोहन भारद्वाज, अशोकजी, उपेन्द्र दोषी, डॉ० बुद्धिनाथमिश्र, सीताराम झा (कानपुर) आ आन

अनेको गोटे स्वदेशगोष्ठीक सहभागी भेल छथि। मधुपजी, किरणजी, आरसी बाबू, योगा बाबू, मणिपद्मजी, सुन्दर झा शास्त्री (जनकपुर) एवं अन्यो कतिपय साहित्यकार जहिया-जहिया दरभंगा आबथि, ओतऽ जयबे करथि। वयोवृद्ध चतुर्भुज राय अन्त धरि ओतऽ अबैत रहलाह। दरभंगोक लोककेँ ओकर आकर्षण। श्रीकृष्ण बाबू, शैलेन्द्र बाबू, देवनारायण बाबू यदाकदा ओतऽ पहुँचल करथि। जयमन्त बाबू, मदनेश्वर बाबू, पुरुषोत्तम बाबू, रत्नेश्वर बाबू, प्रदीपजी प्रभृति एखनहुँ कखनो टघरि जाइत छथि।

सोझ आँखिए देखनिहार समूहक बीच एकाध टा बंकिम दृष्टी सेहो रहिते छथि। कहियो जिलेबी गाछक छाहरिमे जमऽवला एहि गोष्ठीपर अनर्गल आक्षेप कऽ क्यो अपन मनकेँ तीते कऽ लैत छथि तँ ताहि महानुभावक विषयमे कहले की जाय? षटरसमे तँ अलबत्ता तीतो-कषायक सत्ता छैके।

गोष्ठीमे किन्तु नवरसक नव-नव फुहारा छुटैत रहल अछि, जाहिमे शान्तक प्रशस्तता तथा अमरजी लऽकऽ हास्यक वर्चास्विता विद्यमान रहल अछि। तखन, कथंकदाच वीर-रौद्र रसक बाँकी झाँकी सेहो निकलि जाइत छैक। से नहि भेलैक तँ मैथिल की भेलहुँ? मुदा, ओ तँ झाँकी रहैत छैक– आयल कि लगले निकलि गेल। गोष्ठीक स्वाभाविक रस शान्त आ हास्ये रहैत छैक, भाव– प्रेम-स्नेह-वात्सल्येक।

आइ बीस वर्षसँ अनवरत चलि रहल एहि सांध्य स्वदेशगोष्ठीक नैरन्तर्यक कारण छथि अमरजी। एकाध बेर जँ ई उखड़्हु लागल तँ तकरा गाड़िकऽ रखनिहार यैह भेलाह। हिनक हास्यक लिहकोरे लेबा लेल किछु लोक एम्हर अबैत छथि। हिनक वाणीमे हास्यक हजारा गेना जेना हँसि रहल हो! कहियो ई मौलाइत नहि अछि। एकर जय टा दल झड़ैत छैक ततबा पत्ती फेर उगि जाइत छैक। तेहन अमृतक रस अछि हिनक हृदयमे! ताही सिंचनसँ स्वदेशगोष्ठी जीवन्त भऽ उठैत अछि– आइयो, एखनो। किएक ने हो! सुमनजी, ओकर 'प्राण', आइयो छथिहे; अमरजी, ओकर 'वाणी', अविराम अमृतक वर्षा कैए रहल छथि।

●

हमर मामाजी

श्री जगदानन्दमिश्र

हम ने लेखक ने साहित्यकार, परन्तु एक एहेन कर्मठ ओ जीवन्त साहित्यकारक भागिन होयवाक ओ हुनके सान्निध्य मे मात्रा बारह वर्षक अवस्था सँ रहि विध्याध्यन करबाक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल अछि। जखन हमरा ज्ञात भेल जे मिथिलाक विवेकी जो बुद्धिजिवी वर्ग हुनक सम्मान मे एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करबाक आयोजन कय रहल छथि, तखन हमरो लौल भेल जे हमहूँ श्रद्धा सुमनक रूप मे एहि ग्रन्थक हेतु किछु समर्पित करी। हिनकर जे मातृभाषा सेवा जो साहित्य सर्जना रहलन्हि अछि ताहि प्रसंग विद्वान, लेखक, समीक्षक अपन-अपन विचार ओ उद्गार व्यक्त करताह, हमतँ एहि परिवारक अंग छी तेँ हिनक अन्तरंग जीवनक एक दूटा विशेष विषयक उल्लेख करब समीचीन बुझलहुँ, जाहिसँ सामान्य लोक पूर्णतः अनभिज्ञ नहि रहलाह अछि।

प्रथमतः हिनक पारिवारिक एवं शैक्षणिक स्थिति हमर नाना स्व० पं० मुक्तिनाथ मिश्र जिनका महान तपस्वी एवं ऋषि कहवा मे कनिको संकोच करबाक आवश्यकता नहि बुझना जाइछ, मिथिलाक कोनो एहेन गाँव प्रायः नहि, जाहि गाँव मे हुनक दू चारि शिष्य परिवार नहि हो, हुनक जे विद्वत्ता कर्मठता एवं उदारता छल जकर वर्णन करब बहुत आवश्यक एहि हेतु नहि बुझना जाइछ जे सूर्यक प्रकाश कैँ प्रकाशमान करबाक प्रयोजन नहि। जाहि पिताक पूर्ण उत्तराधिकारी भेलाह हमर मामा पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र ''अमरजी'' हुनकहि जकाँ अपन उपार्जनक अंश यथासंभव अपनहि निजी परिवार मे नहि लगा समस्त अपन परिवारक क्षेत्राक सहायता करवा सँ कतहु संकुचित नहि रहि सकलाह अछि, हमर नानाजीक दू विवाह छलन्हि, जाहि दूनू पक्ष मे सन्तान, किन्तु हमर मामाजी कैँ सहोदर ओ वैमात्रेयक अनुभव कखनो नहि बुझना गेलन्हि। हम तऽ अपना विषय मे की कही से बुझना नहि जाइछ, हमरा तऽ हमर अपन पिता स्मरण नहि छथि, मुदा हमरा लेल पिताक कर्त्तव्यक दायित्व, अभिभावक, संकट मे प्रत्येक पल के सहायक कर्त्तव्यपालन, शिक्षा एवं अनुशासनक पाठ पढेवाक गुरु एक शब्दें यैह कहि सकैत छी जो कतहु सँ थाकल ठेहिआयल एहि तपस्वीक लग आबि विश्रामक अनुभव करैत छी,तैं हम तऽ जन्म जन्मान्तरोक उपरान्त हिनक ऋण सँ मुक्ति पावि सकब की नहि, तकर कल्पना नहि?

मुदा ई मामा हमरे लेल से बात नहि, हिनक ई भावना समस्त परिजनक हेतु अछि, ई एखनहुँ अपन वैमात्रेय वहिनक सन्तानक सन्तानोक लेल सतत कल्याण दिस सभ तरहक त्याग करवा सँ वंचित नहि रहि पबैव छथि, ई उदारता प्रायः भेटब दुर्लभ जँका बुझना जाइछ।

शिक्षाक सम्बन्धे हमरा जानकारी अनुसारे हिनका परिवार मे पूर्व सँ लऽ एखन धरि निः अक्षर एको सदस्य नहि देखना जाइछ, हमर नानी से हो पढ़लि लिखलि छलीह, हुनका देखैत छलहुँ स्त्रीधर्मशिक्षा एवं अन्य अन्य धर्मशास्त्रक पठन पाठन करैत छलीह, पारिवारक समस्त हिसाब किताब रखैत छलीह। पतिव्रता ओ केहेन छलीह जे हमरा स्मरण अछि जे हमरा नानाजीक स्वर्गवास भेलाक उपरान्त, ओ हुनक चरण पखारि ओ रखलनि, जाहि चरणामृतक पान ओ जीवन पर्यन्त कयल जकर फल देखवा मे आयल जे हम एतहि रही ज्ञानपूर्वक हुनक मृत्यु भेलनि। हमर माय एवं मौसी लोकनि सेहो शिक्षा सँ वंचित नहि छलीह, ओहो लोकनि समयानुसार शिक्षित छलीह। मामाजीक दू कन्या जे दूनू एम. ए. पी एच. डी. कयने छथिन्ह, एक मात्र बालक पाथर पर दूभि जकाँ भेलथिन्ह तऽ कुलदीपक सैह भेलथिन्ह। ओहो एम. ए. कय सम्प्रति भा० स्टेट बैंक में कार्यरत छथिन्ह। विवाह दानक लेन-देन मे कतवा विरोधी से श्री मुन्नूजीक विवाह मे अनुभव कयल। टाकावला कन्यागत कैँ अपना लग वैसऽतक नहि देलन्हि, आ जतय मोन मानि गेलनि ओहि कन्यागत कैँ हमरहि द्वारा बजाय बिना कोनो लेन-देन क बेटाक विवाह करौलन्हि। एतवे नहि साल भरिक पावनि तिहार

मे समधि सँ सम्पर्क रखैत रहलाह जे हुनका कोनो आर्थिक संकट तऽ नहि आ से यदि तऽ तकरापूर्ति करबा हेतु सेहो तत्पर। ई उदाहरण एखनहु दुर्लभ। मुदा भगवानक कृपा जे पुतहु सेहो एम०ए०क संग सुशीला एवं कुशल गृहणीक संग कर्त्तव्य परायण भेटलथिन्ह।

मामाजीक प्रथम कन्या डा० श्रीमती योगमाया झा जे जमाय डा० श्री रामदेव झा अवकास प्राप्त प्राचार्य जिनक परिचय हमरा सनक अकिंचन की दऽ सकैत अछि, ओ तऽ एक शब्द मे यैह कहल जा सकैछ जे ''को नहि जानत है जग मे। कन्या परिवारक कठिन दायित्व के कर्मठतापूर्वक निर्वाह करैत व्यस्ततम जीवनक उपरान्तो यदा कदा मैथिली साहित्यक सेवा मे लागलि रहैत छथि। हुनक तीन बालक एवं तीन कन्या अर्थात् मामाजीक दौहित्र आ दौहित्री प्रथम बालक श्री कृष्णदेव झा जे एम० एस० सी० कय प्रशासनिक सेवा कें ठोकरबैत कौलिक संस्कारवश शिक्षादान करवाक निमित्त शिक्षक पद पर कार्यरत छथि। दोसर वालक श्री शंकर देव झा जे एम. ए. कय पत्रकार छथि। तेसर बालक श्री विजयदेव झा ''राजू'' जे अंग्रेजी सँ एम. ए. कय विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा तैयारी मे लागल छथि। प्रथम कन्या (मामाजीक दौहित्री) श्रीमती ममता एम० ए० कय बिहार सरकार मे प्र० महिला वि० पदा०क पद पर कार्यरत छथि। दोसर कन्या श्रीमती कविता झा एम. ए.क संग संग संगीत शास्त्र मे एम. ए. एवं चित्रकला मे पूर्ण दक्षता प्राप्त कयने छथि। तेसर कन्या सुश्री विद्याकुमारी एम. ए. कय सम्प्रति पुस्तकाय विज्ञान मे अध्ययनरत छथि।

मामाजीक दोसर कन्या डा० श्रीमती सावित्री झा एम० ए० कयने छथि, जमाय श्री महेन्द्र झा भा० स्टेट बैंक मे शाखा प्रबंधक के पद पर कार्यरत छथि। शरीर सँ अस्वस्थ रहितहुँ यदा कदा श्रीमती सावित्री सेहो किछु ने किछु लिखवा दिस अग्रसर रहैत छथि।

मामाजीक दू पौत्र चि० श्री आदित्य एवं चि० श्री विभूति ओना एखन जनमि पृथ्वी पर ठाढ़े भेलाह अछि, मुदा हुनका लोकनिक विलक्षण संस्कार ओ प्रतिभा देखि बुझना जाइछ जे भविष्यमे ई दूनू बालक अपन कौलिक परम्परा कें आरो उजगार करताह एहि प्रकाशपुँजक मध्य अपना कें एक कात मे टिमटिमाइत भगजोगनी जँका अपनाकें भाग्यशाली एवं गौरवान्वित बुझि रहल छी, आ विधाता सँ प्रार्थना करैत छी जे एहेन विद्वान, कर्मठ, कर्मयोगी, दयावान, तपस्वीक सान्निध्य जन्म-जन्मान्तर विधाता देथि, जे कहियो ने कहियो हमरो उद्धार होयवे करय। संगहि ईश्वर सँ हमर इहो प्रार्थना जे एहि जन्म मे अन्त तक हमरा हिनक सान्निध्य प्राप्त भेल रहय।

हम पहिनहि कहि चुकल छी जे ने हम लेखक ने विद्वान आ ने साहित्यकार तैं जे कोनो प्रकारक हमरा सँ त्रुटि भेल हो तदर्थ क्षमा प्रार्थी छी।

●

तृतीय खण्ड

कृति-विवेचन

पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क समग्र साहित्यपर एक दृष्टि

(स्व०) डा० शिवशंकर झा 'कान्त'

आधुनिक मैथिली साहित्यक सजग साहित्यकार पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सतावन वर्ष (1941 ई०)सँ क्रमिक रूपमे रचना करबामे, ओकर विवेचन ओ परिशीलनमे, अनुवाद ओ सम्पादनमे संलग्न छथि। साहित्यक प्रायः कोनो विधा एहन नहि अछि जाहिमे हिनक रचना उपलब्ध नहि हो। तेँ ई कहब जे श्री अमर जी कविक रूपमे सफल छथि अथवा कथाकारक रूपमे, विवेचक अथवा एकांकीकारक रूपमे, अनुवादक अथवा निबन्धकारक रूपमे–विमर्श करय पड़त। जहिना हिनक व्यक्तित्व बहुमुखी अछि तहिना हिनक लेखन बहुआयामी अछि। हिनक कविताक मुख्य गुण हास्य ओ व्यंग्य अछि। समसामयिक विषयक चुनाव कऽ ओकरहि अपन रचनाक आधार बनाय श्री अमरजी सभठाम आकर्षणक केन्द्र बनल रहलाह। व्यापक रूपमे ई कवि मानल जाइत छथि। किन्तु हिनक अन्य विधाक रचना सभ सेहो हिनक कवितासँ थोड़ महत्त्वपूर्ण नहि अछि। अनुवादक, समीक्षक तथा अनुसन्धित्सुक रूपमे सेहो ई पूर्ण सफल कहल जयताह। हिनका 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' नामक रचना पर साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत कयल गेलनि।

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क जन्म ज्येष्ठ कृष्ण पड़ीव 1925 ई० मे भेल। अपन विद्वान पिता पं० मुक्तिनाथ मिश्रहिक बाट पर चलैत ई संस्कृत शिक्षा ग्रहण कयल ओ व्याकरणमे आचार्य कऽ 1947 ई० सँ एम० एल० एकेडमीमे शिक्षक-रूपमे नियुक्त भेलाह एवं लोकप्रिय भेलाह। हिनक छात्र समूह मे सँ बहुतो पैघ-पैघ पद पर आसीन छथि। ई नोकरीसँ 1983 ई०मे अवकाश ग्रहण कऽ दरभंगामे स्थायी रूपमे रहैत छथि एवं साहित्य-साधनामे लागल रहैत छथि। प्रारंभहिसँ साहित्य रचना, मैथिली विकासक हेतु विविध प्रकारक कार्य, पुस्तकक सम्पादन, सभाक आयोजन ओ अनेकानेक कार्यक दायित्वक निर्वाह सेहो करैत रहलाह अछि। हिनक मुख्य प्रेरक छथिन्ह आचार्य सुमन जी, जनिक सन्निध्य हिनका एखनहु प्राप्त छनि, ओ हिनक जीवनक आदर्श साहित्यकार छथि। श्री अमर जी स्वाध्यायसँ मैथिलीक प्राचीन ओ अर्वाचीन साहित्यक प्रचुर ज्ञान अर्जित कयलनि आ श्री सुमन जीक प्रेरणासँ मैथिलीमे हास्य-व्यंग्यक कविताक रचना कयलनि। हिनक प्रतिभाक विकास विभिन्न दिशामे भेल अछि। साहित्य सर्जन, साहित्यकारक निर्माण, मैथिली आन्दोलनक उत्प्रेरण, कविसम्मेलनक माध्यमसँ देश भरिमे मैथिलीक प्रचार-प्रसार दिस हिनक गति प्रायः समान अछि। मैथिलीक प्रचार-प्रसार लेल जे काज आवश्यक बुझलनि से ई कयलनि। रंगमंच आ रजतपट पर, दुनू ठाम ई अभिनय सेहो कयने छथि। आचार्य सुमन जी हिनक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्बन्धमे लिखैत छथि- ''गद्य, पद्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, लघुकथा, व्यंग्य–विनोद, निबन्ध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण–साहित्य शतदलक प्रत्येक दल पर अमर जीक रमणीयता सुरभित भेटत। जहिना लेखन तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन, तहिना प्रचारण-प्रसारण, जहिना शोध-संधान तहिना संग्रह-संकलन, प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतुल्य अछि'' तथा अपन परिवेश, समाज, साहित्य आदिक संग अपन सम्बन्ध विकसित करैत स्वयं श्री अमरजीक वक्तव्य ध्यातव्य–''मूल उद्देश्यक पूर्तिमे कखनहुँ कविताक रचना करए पड़ल, कखनहुँ कथा लिखए पड़ल तँ कखनहुँ निबन्ध, कखनहुँ उपन्यास लिखए पड़ल तँ कखनहुँ लोकगीत, कखनहुँ अभिनेताक रूपमे मंच पर उतरए पड़ल आ नृत्यक हेतु गीतक धुनि सभ खिखबए पड़ल, नव-नव प्रतिभाकेँ प्रोत्साहित करबाक हेतु पत्र-पत्रिकाक सम्पादन करए पड़ल तँ कखनहुँ पुस्तकक, आकाशवाणी सँ कविता पढ़लहुँ तँ कखनहुँ साहित्यिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक मंच सँ। एहि प्रकरणमे ने कांग्रेसक मंच बुझल ने कम्युनिष्टक, ने स्वतंत्र पार्टीक ने जनसंघक, ने प्रजासमाजवादीक ने समाजवादीक जे जतै आह्वान कएलनि ततए उपस्थित होइत रहलहुँ, कखनहुँ स्वागतगान, अभिनन्दनपत्र सेहो लिखलहुँ।'' अर्थात् तहिया मैथिलीसेवीक हेतु साहित्य रचना ओ प्रचार करब आवश्यक छल ओ ताहि सभ कार्यमे श्री अमर जीक योगदान रहल

अछि। तेँ ई मैथिली सेवक ओ साहित्यसर्जक-रूपमे लोकप्रिय छथि, आदरणीय छथि। हिनक रचनामे भावक तीक्ष्णता अछि ओ व्यक्तित्वमे विनोद ओ गांभीर्यक समन्वय। पढ़ब ओ लिखैत रहब हिनक स्वभाव अछि जे हिनक साहित्यिक रचनाक विपुलतासँ सेहो बोधव्य।

एखन धरि हिनक साहित्यिक रचना एहि रूपक अछि–

कविता– गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल, आशा-दिशा, ऋतुप्रिया, विविध गीत, अमर संगीत।

कथासंग्रह– जलसमाधि।

उपन्यास– वीर कन्या, विदागरी।

निबन्ध– मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण, मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास।

समालोचना-शोध– मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहास।

एकांकी– समाधान, प्रतिनिधि एकांकी (सम्पादन)

जीवनी– म० म० मुरलीधर झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', दीनानाथ पाठक 'बन्धु'।

अनुवाद– एच० एन० आप्टे, बंकिमचन्द्र चटर्जी, परशुरामक बीछल-बेरायल कथा।

विविध– त्रिफला, मुहावरा ओ लोकोक्ति।

सम्पादन– कविवर जीवनझा रचनावली, श्री सुमन साहित्य सौरभ, कविता-संग्रह, विद्यापतिक देशमे, स्वातंत्र्य स्वर, विद्यापति सूक्ति तरंगिणी, विद्यापति नीति तरंगिणी, पद्य-प्रसून, लोचन, कथा-किसलय, ललित स्मृति-ग्रंथ आदि।

एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाक सम्पादन सेहो अमरजी कयने छथि जाहिमे एसगर ओ अन्यो विद्वानक संग हिनक सम्पादन अछि।

हिनक सम्पादित पत्र अछि– निर्माण (हिन्दी)। एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे अनेक स्तम्भक लेखकक रूपमे सेहो ख्यात रहलाह।

श्री अमरजी कविक रूपमे सर्वाधिक सफल मानल जाइत छथि। ओना हिनक अन्यो विधाक रचना सभमे जीवन ओ जगतक तात्विक समन्वयक विश्लेषण भेल अछि तथा हिनक समालोचनामे साहित्यिक विविध रचनाक समीक्षा जीवन्त भाषामे कयल गेल अछि। किन्तु, हिनक कविता जे श्री अमर जीकेँ सर्वाधिक लोकप्रिय बनओलक तकर आधार ई बनाओल हास्य ओ व्यंग्यकेँ। हास्य ओ व्यंग्य जीवनक सर्वाधिक आकर्षक तत्त्व अछि जे बिनु आयासहि प्राप्त होइछ ओ जकर बिना जीवन नीरस ओ सारहीन बुझि पड़ैछ। तीक्ष्ण शब्दयोजना ओ तत्क्षण होबयवला घटनामे एकर सृष्टि ओ विनोद एकर परिणाम होइछ। तेँ मनुष्य हास्यक संग व्यंग्यक माध्यमे सतत संबद्ध रहैत अछि। ई जीवनक गतिशीलताक प्रेरणा तथा जीवन्तताक प्रस्तुति थीक। तेँ जनिका बेसी फुराइत छनि, तुरन्त उत्तर देबाक सामर्थ्य रहैत छनि–से प्रायः हास्य-व्यंग्यकेँ अपन रचनाक आधार बनबिते छथि। लोकप्रियताक ई आधार आ आकर्षणक ई प्रणेता होइछ। श्री अमरजीक कविताक हास्य हृदयकेँ स्पन्दित करयवला होइछ, मस्तिष्ककेँ झंकृत ओ मनकेँ आप्यायित करयवला होइछ। बीछल शब्दक आकर्षण अनेरे लोककेँ अपना दिशि आकृष्ट करैत अछि। तेँ श्री अमरजी हास्य-व्यंग्यक कविक रूपमे लोकप्रिय छथि। ई मंचक कवि छथि युगसापेक्ष, घटनासापेक्ष ओ परिवर्त्तनसापेक्ष, हिनक कवितामे लोट-पोट कऽ देबाक क्षमता एतेक दूर धरि जे हँसैत-हँसैत आँखसँ पानि पर्यन्त बहराय जाय, पेटमे बग्घा लागि जाय धरिक क्षमता रहैत अछि। प्रत्युत्पन्नमतित्व हिनक स्वाभाविक गुण अछि। गुदगुदी, युगचक्र ओ उनटा पाल एहि तीनू संग्रहमे बेसी कविता परिवर्तित वातावरणक व्यंग्याश्रित आकलन थीक जाहिमे हास्य अपन स्वाभाविक गुणक संग वर्त्तमान देखबामे अबैत अछि–

विष्ठी ले' दँतखिष्ठी जकरा
जोड़ा बड़द द्वारि पर तकरा
घरक निकलुआ राजनीति-सागर मे
गुड़कान दैत अछि।

तकर कारण अछि राजनीति, जतय–

पकड़ि बेङकेँ आइ फतिंगा
सहजहि लाभ कराबए गंगा
बनबिलाड़केँ रंगमंच पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि।

आ एहि समयमे लेखक-साहित्यकारक की गति अछि– - -

पत्रकार बनि बहुतो कवि
आ लेखककेँ टिटकारि रहल अछि।

एहन वातावरणमे, सामाजिक, राजनीतिक परिवर्त्तनक क्रममे के की बनओलक–

लुरिगर सभ भरि मोन उठौलक
किछु रखलक, किछु भार पठौलक
जे मकैक नेढ़ा तकैत छल
से सभ ऊँच मचान दैत अछि।

श्री अमरजीक कविताक हास्य ओ व्यंग्य पूर्णतः प्रभावकारी होइछ।

हिनक कविताक दोसर रूपमे अछि गांभीर्यक प्रकाशन। ई गांभीर्य हिनक 'ऋतुप्रिया' ओ 'आशा-दिशा' मे बेसी भेटैत अछि। किन्तु एहू पुस्तक सभमे हास्यक छटा अपन मर्यादित सीमामे बान्हल आनन्दक समुचित सृष्टि करितहि अछि। आन्तरिक सौन्दर्यसँ पूर्ण ई कवितासभ कोनहु साहित्यक दमगर पूजी अछि–

सत्य अहिंसा फलाहार कए
कहुना खेपि लिअ ई साल

तथा –

गाम गाममे मुखिया सुखिया
ब्लौक-ब्लौकमे बी० डी० ओ०
जनताकेँ बैसक नहि भेटए
नार पोआर बीडीओ।

प्रकृतिक सुन्दर स्वरूप किन्तु ओहिसँ पहिने ओकर भयाओन रूप–एहि दुनूक समन्वय प्रस्तुत पद्यमे–

गरजि तरजि वरजि रहल
सिरजि रहल नवल सृष्टि
दिगदिगन्त फेकि रहल
पावस निज कुपित दृष्टि
मनहि मनहि उमकि रहल खेतमे जजाति रे।

मनसूबा बन्हने समाजक रखबार ओ महाजनक मनक प्रसन्नता व्यंग्यक माध्यमे चकचकाइत एहि पाँतीमे देखू–

मनहि महाजन जोड़ि रहल छथि
तरि तिलकोड़ा तोड़ि रहल छथि
नरक जाए हित अपनहि हाथेँ
बड़का खत्ता कोड़ि रहल छथि
लेब सबैया उतरत ड्योढ़ा
बौआ मुँह मे टूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस।

श्री अमर जीक उपन्यास ओ एकांकीमे जीवनक सत्यताकेँ अक्षुण्ण राखि मोहक शब्दसँ ओकरा वेष्टित करबाक प्रयास भेल अछि। हास्यक पुट, व्यंग्यक चमत्कार भेटैत एतहु अछि किन्तु हिनक 'जल-समाधि', 'वीर-कन्या' अथवा 'विदागरी'मे समाजमे प्रति दिनक चलनि अपना स्वाभाविक रूपमे वर्णित अछि। 'जल-समाधि'क कथामे जीवन, संघर्ष, कटुता, तिक्तता ओ आडम्बरपूर्ण शिष्टाचार सभक चर्चा भेल अछि। श्री अमरजीक कथाकार यथार्थक संग कखनहुँ छोड़ए लेल तत्पर नहि अछि। तेँ सामाजिक दायित्वक बोझ लेखकीय दायित्व बनि हिनक सम्पूर्ण कथामे भरिपोख स्थान पबैत अछि। तेँ डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक हिनक कथाक प्रति कथन बेसी युक्तिगर बूझि पड़ैत अछि– ''अमर जी अपनाकेँ एहि अतिवादसँ मुक्त रखने छथि तथा जीवनक जे यथार्थ अछि तकर अन्वेषणक क्रममे वास्तविक कथासर्जनमे संलग्न छथि। वास्तविक कथाक अवस्थिति वस्तुतः अतिरंजना ओ छद्म सँ पृथक जीवनक यथार्थमे निहित अछि।''......

कथाक सत्यकेँ इतिहासक सत्यसँ विशेष व्यापक ओ सार्थक कहल गेल अछि। श्री अमरजीक कथासभ एहि तथ्यकेँ चरितार्थ करैछ। हिनक कथासभमे पात्र ओ वातावरण तथा घटनाक्रमक सामंजस्य देखयमे अबैत अछि।

श्री अमरजीक उपन्यास 'वीर कन्या' ओ 'विदागरी' मैथिल समाजक दर्पण थिक जाहिमे व्यक्ति अपन स्थितिक अनुमान सहजहि कऽ सकैत अछि। केहनो परिस्थितिमे श्री अमरजीक उपस्थापन शैली ओ शिल्प-विधान अपन सामाजिक गतिकेँ विसरि नहि सकैत अछि। ई उपन्यास सभ तकरो उदाहरण अछि। धर्मप्राण मिथिला क्षेत्रमे व्यक्ति पर विश्वास ओ निष्ठा व्यक्त करब सामान्य लोकक स्वभाव होइछ किन्तु फरेबी लोक एहि निष्ठाकेँ कोना अपन व्यवहारसँ खंडित करैत अछि– एकर कथानक से उदाहरण प्रस्तुत करैछ। चरित्रक विकासक प्रति ने उपन्यासकार बेसी साकांक्ष छथि आ ने कथाक्रममे ओकर आवश्यकताक अनुभव होइछ तेँ पित्तेँ आँट भेलो पर कोनो चरित्र अपन विवशताक प्रति बेसी संवेदना प्रगट नहि करैत अछि। हिनक उपन्यास सभमे सामाजिक उद्‌बोधनक, विकासक प्रेरणाक एवं आह्वानक स्वर अनुगुंजित अछि। कथावस्तु, चरित्र ओ शैलीक समान रूप दर्शित, लक्षित ओ बोधित अछि। सामाजिक व्यावहारिकताक अनुकूल स्वरूप सेहो एहिमे देखएमे अबैत अछि। ओ तेँ एहि उपन्यास सभक व्याप्ति सामाजिक ओ लौकिक अछि से कहल जायत।

हिनक एकांकी-संग्रह 'समाधान' मे ओहि स्वरकेँ मुखरित कयल गेल अछि जे स्वतंत्र देशक परिवर्त्तनक मानसिकताकेँ उजागर करैत अछि। कथोपकथनमे समीचीनता छोट-छोट वाक्यक प्रयाससँ आयल अछि। वैयक्तिक चिंतनक मूलमे सामाजिक ओ राष्ट्रीय चेतनाक प्रचार-प्रसार उत्स जकाँ स्थिर भेल देखयमे अबैत अछि। वर्णन सामान्य किन्तु प्रयोग हृदयग्राही बुझि पड़ैत अछि। इएह कारण अछि जे हिनक एकांकी सभमे श्रमदान, घरैया लुरि, बाइचान्स इत्यादि अपन कथावस्तु, प्रस्तुतीकरण, भाव-विलास ओ चरित्र-विकासक दृष्टिएँ सफल कहल जा सकैत अछि। हिनक एकांकी सभमे आदर्शसँ बेसी व्यावहारिकताक स्वरूप बेसी उजागर भेल अछि। मंचोपयोगी ई एकांकी सभ समाजक

विकासक मार्गकैं प्रशस्त कयनिहार अछि।

श्री अमरजी समीक्षात्मक ओ अनुसंधानात्मक किछु निबन्ध एवं तीनि गोट विशिष्ट पुस्तक मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण, मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास एवं मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहासक रचना कयने छथि। अनुसंधानकर्त्ताक रूपमे हिनक 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास'' विशिष्ट रचना अछि। जाहि आधार पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1983 ई० मे देल गेल। हिनक ई रचना मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहास कैं क्रमबद्ध रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। 1905 ई०सँ० 1969 इ० धारिक प्रकाशित विविध दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक ओ अनियतकालीन पत्र सभक सम्बन्धमे जाहि निपुणताक संग ई अपन विचार प्रस्तुत कयल, निश्चये ओकर विशेष महत्त्व अछि। मैथिलीक पत्रिका सभ चाहे ओ मासिक हो वा पाक्षिक, रहल अछि अल्पजीवी। ताहि सभक विषयमे सम्पूर्ण जानकारी मात्र एही पुस्तकक माध्यमसँ प्राप्त होइत अछि। एहि पोथीमे सतासी गोट छोट-पैघ पत्रक सम्बन्धमे समग्र जानकारी एकत्र कयल गेल अछि। एहि ग्रंथमे ओहि समस्त पत्रक विशेषता, सम्पादक-सम्पादन, विषय-निवेश, ओकर सामयिक महत्त्व तथा ओहि माध्यमे प्रकाशमे आबयवला विविध विद्वान, साहित्यकारक परिचय तथा भाषा-साहित्यक विकासक क्रममे ओहि पत्रविशेषक विशेषता ओ महत्त्वक प्रतिपादन सेहो भेल अछि। वस्तुतः श्री अमरजी प्रारंभहिसँ मैथिलीक साहित्यरचना, आन्दोलन ओ अन्य विविध विकासात्मक कार्यसँ सम्बद्ध रहलाह तैं हुनका उपर्युक्त विषयक बेसी जानकारी स्वाभाविक रूपमे भेलनि। जाहि साहित्यमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक इतिहास करीब तिरानवे वर्षक भेल ओ जाहिमे बेसी पत्र, एकाधकैं छोड़ि अल्पजीबिये भेल, तकर समग्रतासे विवरण मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे सुरक्षित अछि। वस्तुतः ई पुस्तक मैथिलीक विकास, रचना-प्रक्रिया, सामाजिक साहित्यिक चिन्तनक ओहन दस्तावेज अछि जे आबयवला समयक हेतु सेहो प्रेरणाक काज करैत रहत। हिनक एहि प्रकारक लेखनक मुख्य विशेषता थिक भाषाक सबलता ओ स्पष्टता।

श्री अमरजीक सम्पादित अनेको पत्र-पत्रिका ओ ग्रन्थ अछि। कतहु तँ ई स्वतंत्र रूपें ओ कतहु किनकहु संगहि विविध प्रकारक सम्पादनमे सहयोग देल अछि। एकर अतिरिक्त हिनक अनूदित ग्रंथ सेहो अछि जाहिमे मूल भाषाक तथ्यकैं सुरक्षित राखि ठेठ ओ सुसंस्कृत शैलीमे भाव प्रकाशन कयल गेल अछि। श्री अमरजी अनेको ग्रंथक भूमिका सेहो लिखने छथि जाहिमे ओहि ग्रंथक प्रति हिनक दृष्टिकोण, ओकर रचनामे कवि लेखकक सफलताक संग साहित्यमे ओकर महत्त्व पर सेहो प्रकाश देल गेल अछि। ई भूमिका सभ समीक्षात्मक निबंध सेहो भऽ सकैत अछि। श्री अमर जी आचार्य सुमनजीसँ प्रेरणा ग्रहण कयलनि अछि एवं कवीश्वर चन्दा झा ओ कविवर सीताराम झासँ प्रभावित बूझि पड़ैत छथि। हिनक हम आजुक अवसर पर एहि रूपें सम्बर्द्धना करैत छीः–

सुमन प्रवसित अमरहि प्रवर्द्धित
मैथिलीक मंदिरो व्यवस्थित।
आइ पुजारीक देखि व्यवस्था
खन-खन ओहि टोलक दिशि
जतए 'मिश्र अमर'हिक व्यवस्था।
तैं मिलि कय होइ सयल
अमर दीर्घजीवी रहथु
मैथिलीक विस्तार प्रयल।।

●

मैथिलीक लोकप्रिय कवि श्री अमर

डॉ० सुरेश्वर झा

हमरा ई कहबामे कोनो अतिशयोक्तिक भय नहि होइत अछि जे श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली साहित्यमे सबसँ अधिक लोकप्रिय कवि ओ रचनाकार रहलाह अछि। हिनक साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी छनि। यद्यपि ई मुख्य रूपसँ कवि छथि, परञ्च साहित्यक कोनो विधा एहेन नहि अछि जाहिमे ओ अपन लेखनी नहि चलौने होथि! कविता, कथा, उपन्यास, एकांकी, निबन्ध, समीक्षा, इतिहास, अनुवाद, संकलन एवं सम्पादन सभठाम अमरजीक जीवन्त लेखनी सँ मैथिली साहित्य विकसित ओ संवर्धित भेल अछि। अमरजी एक पत्रकारक रूपमे सेहो विख्यात छथि। नाट्यविधा आ मैथिली फिल्मसँ सेहो सम्बद्ध रहलाह। मैथिली भाषा ओ साहित्यक कोनो आन्दोलन आरंभ सँ अद्यावधि एहेन नहि भेल होयत जाहिमे अमरजी अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ नहि भेल होथि। ई मैथिली साहित्यकारक प्राचीन पीढ़ी तथा नवीन पीढ़ीक बीचक प्रतिनिधि साहित्यकार छथि। संस्कृत व्याकरण, साहित्य ओ काव्यशास्त्रक गंभीर अध्येता रहितहुँ एहि पृष्ठभूमिक अपन पूर्ववर्ती अन्य समकालीन मैथिलीक रचनाकार लोकनिक सदृश हिनक भाषा दुरूह, संप्रेषणीयताक अभावसँ ग्रस्त, बोझिल तथा तत्सम शब्दावलीसँ बेष्टित नहि छनि। हिनका रचनामे ठेठ मैथिली शब्दक प्रयोग छनि आ ओ प्रसादगुणसँ सम्पन्न छनि। इएह कारण थिक जे अमरजी पाठक तथा श्रोताक बीच एतेक अधिक लोकप्रिय भेलाह। 1946 इ० सँ अद्यावधि मैथिलीक कोनो कविसम्मेलन अमरजीक अनुपस्थितिमे जमि नहि सकल। यदि मैथिलीक कोनो कविसम्मेलनमे मंच पर अमरजी नहि छथि तँ मानू जे ओतय श्रोताकेँ एक पैघ अभाव खटकय लगैत छैक।

एहि सम्बन्धमे एक घटनाक वर्णन करब आवश्यक बुझैत छी। गत 1994 इ०क 17सँ 20 सितम्बर, चारि दिनक एक गोट अखिल भारतीय साहित्यकारक संगोष्ठी केरलक 'अलुवा' मे समुद्रक कातमे ओतयक एक साहित्यिक संस्था 'सुरभि' आयोजित कयने छल। ओहि समयमे हम साहित्य अकादेमी नई दिल्लीक मैथिलीक प्रतिनिधि स्वरूप सदस्य रही। मैथिली भाषासँ छौ गोट साहित्यकार आमंत्रित छलाह जाहिमे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डॉ० देवकान्त झा, डॉ० रामदेव झा, प्रो० उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' आ एहि पंक्तिक लेखक रहथि। ओहिमे एक दिन अखिल भारतीय स्तरक बाइस गोट भाषाक कविसम्मेलन सेहो आयोजित भेलैक। प्रत्येक भाषा सँ एक गोट कविकेँ कविता पाठ करबाक रहनि। कविताक अंग्रेजी अनुवाद सेहो प्रस्तुत करबाक छलैक। हमरा लोकनि अमरजीकेँ कविक रूपमे 'कहू कुशल' कविता पढ़बाक विचार देलियनि। अंगरेजी अनुवाद जखन अमरजी पाठ करैत छलाह तँ केयो ध्यान नहि देलक। मुदा जखन 'कहू कुशल' कविता अमरजी सस्वर पढ़य लगलाह तँ समुद्रक कातमे बैसल विशाल श्रोता मंत्रमुग्ध भऽ उठल। ओतेक पुरान कविता लगैत अछि जेना आजुक समस्याकेँ पूर्णरूपेण ध्यानमे रखि लिखल गेल हो। किछु पंक्ति उद्धृत करबाक लोभ संवरण नहि कऽ पाबि रहल छी;–

''जकरासँ जेम्हरे भेट होइछ
से सब पुछैत अछि–'कहू कुशल!'
बुझना जाइत अछि जेना–
एहि युगसँ ई स्वयम् अपरिचित हो।
एकरा करेजमे नहि लगैत छै' युगक धाह?
एकरा न खबरि छै आइ मानवक द्वारेँ मानव अछि तबाह?
ई नहि जनैछ जे पाखण्डीक हृदय होइत छै केहन स्याह,

नहि एकर कान सुनि सकलै अछि
जग-विध्वंसक विस्फोट सदृश
सद्यःस्फुलिंग सन तेज
करोड़ो पद-दलितक करुणार्द्र आह?
एखनउ धरि जीवन-पथक गरल कण्ठक नीचाँ नहि जा सकलै
एखनउ धरि एकरा हृदय कुहरमे मानवता न समा सकलै,
चलिते-चलिते पिच्छड़ पथ पर
प्रायः कहियो ई नहि हूसल,
तैं ने पुछैत अछि कहू कुशल?

जखन अमरजी कविता पढ़ि मंचसँ नीचाँ उतरलाह तँ आगाँ मे बैसल समस्त विभिन्न भाषाक कविलोकनि ठाढ़ भऽ कऽ हिनक स्वागत केलथिन। लागल जेना सभ केयो हिनके टा कविता बुझलथिन।

हम सर्वप्रथम अमरजीकेँ कविता पाठ करैत राजनगर (मधुबनी) मैथिल महासभाक अधिवेशनक अवसर पर 1946 इ० मे देखने रहियनि। ओहि अवसर पर हिनक प्रथम कविता संग्रह 'गुदगुदी' प्रकाशित भेल छलनि तथा ओहिठाम ओ पोथी छुहुक्का उड़ि गेलैक। ओहि समयमे हम मधुबनीक सूड़ी उच्च विद्यालयक दशम वर्गक छात्र रही। ओहिठाम अमरजी अपन 'ओकील' नामक कविता पढ़ने छलाह।

अमरजीक पोथीक रूपमे पाँच गोट कविता-संग्रह प्रकाशित छनि–गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल, ऋतुप्रिया आ आशा-दिशा। 'वीर-कन्या' ओ 'विदागरी' उपन्यास, 'जल समाधि' कथासंग्रह, 'समाधान' प्रहसन, 'त्रिफला' विविध, 'मैथिली आन्दोलन एक सर्वेक्षण' निबन्ध, 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' 'अ०भा० मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास, तथा 'मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहास' इतिहास छनि। श्री अमरजी अपन प्रारंभिक समयमे हिन्दीमे सेहो कविता ओ निबन्ध लिखैत छलाह। हिन्दी गीतक एक संग्रह 'अमर संगीत' नामसँ प्रकाशित छनि। अमरजीक अनुवाद साहित्यमे 'विद्यापति नीति तरांगणी', 'विद्यापति सूक्ति तरंगिणी' तथा साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित 'परशुरामक बीछल बेरायल कथा', 'हरि नारायण आप्टे' तथा 'बंकिम चन्द्र चटर्जी' सम्मिलित छनि। निबन्ध साहित्यमे मैथिली अकादमी, पटना सँ प्रकाशित मिथिला विभूति म०म० मुरलीधर झा छनि तथा साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक भारतीय साहित्य निर्माता सिरीजमे 'काशीकान्त मिश्र मधुप' तथा 'दीनानाथ पाठक बन्धु' प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त भारतीय स्वतंत्रता संग्रामकालीन लिखित कविताक एक गोट मैथिली काव्य संकलन 'स्वातन्त्र्य स्वर' साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित भेल छनि। बालसाहित्यमे 'कथा-किसलय' सेहो साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित छनि।

अमरजीक साहित्यमे वीररसक कविता 'विजय शंख' तथा मैथिलीमे छौ गोट प्रमुख एकांकी 'प्रतिनिधि एकांकी' नामसँ सम्पादित छनि।

कविकर्मक सफलता एहि बातमे नहि छैक जे ओ कतेक लिखने छथि, अपितु एहिमे जे ओ की लिखने छथि तथा लिखैत छथि। कविक सृजनक चरम परिणतिक संदर्भमे विचारणीय ई अछि जे कवि कोन विम्बकेँ कोन रूपमे लोकहितक लेल समुपस्थित कयने छथि।

कवि अमरक विशिष्ट प्रतिभाक व्यापक रूप हिनक प्रथम कवितासंग्रह 'गुदगुदी' मे देखल जा सकैत अछि। कवि हमरा लोकनिक हृदयतंत्रीकेँ झंकृत करबाक प्रयास करैत कहैत छथि;–

''विजये! विजय शंख हम फूँकी।''

एहि संग्रहक 'अल्हुआष्टक' कविता अमरजीक बहुत लोकप्रिय भेलनि। मैथिली साहित्यमे अमरजीक मुख्य स्वर हास्य ओ व्यंग्य मानल गेलनि अछि। एहि कवितामे कवि कहैत छथि;–

''पतिराखन अल्हुआ नाम हमर।
अछि नाम अधिक बदनाम हमर।।
बड़का घूरक ओ भुंभुर आगि,
घोंसिआय दैत छल हृदय दागि।
भरि राति चटाबय शीत जागि,
सब बापपुतें परिवार लागि।।
खीचड़ छल कोमल चाम हमर।
पतिराखन अल्हुआ नाम हमर।।''

एही तरहें अमरजी सम्पादक सभ पर निस्सन चोट करैत कहैत छथि;–

''हम सम्पादक हम सम्पादक।
चुट्टासँ पकड़ि-पकड़ि लाबी
हम यत्र तत्र जे किछु पाबी।
फल्लाँक उदय फल्लाँक मरण
नित ढेर लगाबी संवादक।।
हम सम्पादक ।।''

स्वाधीनता प्राप्तिसँ पूर्व भारतीय जनताक मनमे सुखद स्वरूपक एक कल्पना छलैक। मुदा ओकर बाद जनताक मोहभंग भऽ गेलैक। ओकर सभ टा लालसाक पूर्णतया लोप भऽ गेलैक। देशक वर्तमान दुर्गति मे ठाढ़ लोककेँ कवि देखि रहल छथि। स्वार्थक अन्हार मे प्रकाशक किरण कतौ नहि भेटैछ। एहि असहनीय दुःस्थितिक संकेत कवि अपन 'युगचक्र' मे करैत छथि;–

''जगकेँ युग परतारि रहल अछि।
एमहर ओमहर के तकैत अछि,
अपने हाथ सुतारि रहल अछि।''

अमरजी स्वयं लिखैत छथि– ''युगचक्रक माध्यमसँ नवीन भारतमे प्रवेश करैत राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ नैतिक विकृतिकेँ लक्ष्य बना जे व्यंग्यचित्र उरेहल गेल, भिन्न-भिन्न रूपमे आइधरि से क्रम चलिते रहल अछि। आरंभ मे सर्जनक गति तीव्र छल तें एक साँचमे ढरल बुझना जाइत अछि।

वस्तुतः ओ चक्कर चलिये रहल अछि।''

दोसर कविता ''ई अजगुत कोन पुरने सबटा रंग छै'' मे कवि कहैत छथि;–

''नव निर्माणक हूलिमालिमे,
घोड़ा-फर्जीकेर चालिमे,
भेद न किछुओ मानक चाही
हलुआ-पूरी भात-दालिमे
रंग आइ संसार भरिक बदरंग छै।''

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद जनता ओकर अर्थे ठीकसँ नहि बुझलक आ किछु पयबाक लेल हूलिमालिमे दिग्भ्रमित भऽ उठल। एहिमे नेता ओ जनता सबहक दोष छैक। कवि 'उनटा पाल' मे कहैत छथि–

''भोगवाद सौंसे समाजमे
वस्त्र फोलिकऽ नाचि रहल अछि,
भोगवाद अन्तरक आगिमे
और फूकि कय आँचि रहल अछि,
....
आइ विवेक हमर पौरुषकेँ
चढ़ा चाँच पर जाँचि रहल अछि
....
ई समाज दिग्भ्रान्त
परम उत्फाल बनल अछि,
देशक नौकामे ई
उनटे पाल तनल अछि।''

आइसँ चौथाइ शताब्दीसँ पूर्व सृजित ई कविता देशक वर्तमान स्थितिकेँ फरिछयने अछि। कवि अमर युगद्रष्टा छथि। हुनक पुरानसँ पुरान कवितामे आजुक संदर्भ ओहिना झलकैत अछि जेना ओहि समय मे जहिया ओकर रचना भेल छल। समाज, राजनीति तथा परिवेशक विषयमे हिनक जे सिद्धांत आ चिंतन छनि से शाश्वत छनि। बहुराष्ट्रीय अर्थनीति, उदारवाद, खुलल बाजारनीति एवं उपभोक्तावादी संस्कृतिक पराभवसँ जाहि तरहेँ वर्तमान समाज ग्रसित भऽ गेल अछि, तकर अनुमान कविकेँ बहुत पूर्वे भऽ गेल छलनि। असलमे कवि अमर मात्र हास्य आ व्यंग्यक कवि नहि छथि। हुनक हास्यक अंतर्गत तीक्ष्ण राजनीतिक चिंतन गुंफित रहैत छनि। अमरजी वर्तमान राजनीतिक सिद्धांत ओ व्यवहार, विभिन्न राजनीतिक दलक अनैतिक एवं सिद्धांतहीन क्रिया-कलापक गंभीर अध्येता छथि आ हुनक समस्त काव्यमे राजनीतिक विचार प्रच्छन्न रूपसँ पाओल जाइत छनि। द्वितीय विश्वयुद्धक समाप्ति पर जे आर्थिक एवं राजनीतिक समस्यासँ देश जूझि रहल छल, ताही समयसँ श्रीअमरक कवि सक्रिय भऽ गेल छल।

'ऋतु-प्रिया'क कवि श्री अमरक ऋतुवर्णन प्राकृतिक सौंदर्य, ऋतुपरिवर्तन तथा ओकर बदलैत सुवाससँ मह-मह करैत छनि। संस्कृत साहित्यमे कवि लोकनिक द्वारा ऋतुवर्णनक एक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। संस्कृत साहित्यमे जे षड़ऋतुक वर्णन पाओल जाइत अछि, ताहि परम्पराकेँ आगू बढ़बैत मैथिलीक कवि ओ गीतकार 'बरहमासा'क वर्णन लिखबाक परम्परा बनौलनि। अमरजी अपन एहि काव्य-कृतिमे बारह मासक ऋतुक वर्णन कयने छथि। वर्षक छौ गोट ऋतुमे विभाजित करबाक परिपाटी पसन्द नहि छनि। जाहि दू-दू मास पर ऋतुक परिवर्तन स्थिर कयल गेल अछि से असलमे होइत नहि छैक। तेँ बारहो मासक एहि सम्बन्धमे विचार करब आवश्यक छैक। कवि अमर स्वयं कहैत छथि–

''साओन-भादव वर्षा, आसिन-कातिक शरद, अगहन-पूस हेमन्त, माघ-फागुन शिशिर, चैत-बैशाख वसन्त तथा जेठ-अषाढ़ ग्रीष्म–ई विभाजन एखन युक्ति-युक्त प्रतीत नहि होइत अछि।...... साधारणतः हमरा बुझि पड़ैत अछि जे ऋतु सभ अपन निर्धारित समयसँ किछु पहिनहि प्रारंभ भऽ जाइत अछि। कोनो ऋतुक लक्षण किछु सप्ताहे धरि भेटैत अछि।''

आषाढ़ कवितामे कवि कहैत छथि;–

''कालिदासक विरहिणी
दिन गनथु आङुर पर निरंतर
कृषक कामिनि केर अन्तरमे
मुदित शतदल फुलायल
नील कमलक गाँथि माला साजि नव आषाढ़ आयल।''

भादव मासक सूर्यभगवानक पराभव पर कवि कहैत छथि–

''कुहरि उठइ छथि जा कय दिनकर
अस्ताचल पर साँझमे
चोर जकाँ घोंसिऐल रहइ छथि
दिन भरि मेघक माँझमे।''

आसिन कवितामे कविक छन्द ईशनाथ झाक 'माला'क स्मरण करबैत अछि जे स्वयं वर्ड्सवर्थक 'लूसी ग्रे' सँ प्रभावित भऽ 'कृषक-कन्या' लिखने छथि। जेना–

''अति मन्द-मन्द बहि रहल पवन
पवनक गति पर
हरिअर हरिअर
मृदु शस्य राशि अछि झूमि रहल
झुकि-झुकि धरणिक पद चूमि रहल।''

'ऋतुप्रिया'क प्राकृतिक सौन्दर्यक प्रति आसक्ति, अभिभूत ओ संवेदनशीलतासँ हँटि 'आशा-दिशा' मे कविक व्यक्तित्वक एक गोट नव रूप प्रभासमान भेल अछि। 'आशा-दिशा'मे कविक पूर्व काव्य-प्रवृत्तिक समन्वय अछि अवश्य, परन्तु ओ मुख्य धारा नहि रहिकऽ आनुषंगिक धारा बनि गेल अछि। 'आशा-दिशा'क मुख्य स्वर अछि मानवमूल्यक संरक्षण-संस्थापन, चिंतनक गांभीर्य, वैचारिक प्रौढ़ता। जीवनक प्रति आस्था तथा आशा ओ विश्वासक दिशा-संकेत। एही सभ गुणक कारणे आधुनिक मैथिली काव्यमे 'आशा-दिशा'क विशिष्ट स्थान छैक।

यद्यपि अमरजीकेँ 1983 इ० मे 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' पर साहित्य अकादेमीक पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेलनि, मुदा हम हिनक समस्त साहित्यमे 'आशा-दिशा'केँ 'मैगनम ओपस' मानैत छियनि। 'आशा दिशा' मे कवि नव पीढ़ीकेँ स्वर्णिम पथ पर अग्रसर हेबाक लेल आह्वान करैत छथि। ओकर अंधकारपूर्ण जीवनमे ज्योति जगयबाक ओ संकल्पक संग विश्वास जगयबाक प्रयास करैत छथि।

कवि कहैत छथि–

''हम युग-युगसँ निर्माण-पथक अश्रांत पथिक
हमरा अन्तरमे रहल अटल विश्वास सदा,
हम रोकि प्रभंजनकेँ दी अपना भुजबलसँ
संकल्प हमर दृढ़ देखि खसय मूर्छित विपदा।''

कवि पुनः 'मनु-संतान' कवितामे कहैत छथि;–

''अंतरिक्षसँ पार गगनपर,
चन्द्रलोक, नक्षत्रलोक धरि

अपन सफल अभियान
करय नित नूतन मनु संतान।''

नवकविता किंवा कुकविता पर अमरजीक चोट बहुत सटीक छनि। एहि तरहक विचार विश्वक प्रायः सभ भाषाक कविताक सम्बन्धमे ओकर समीक्षक लोकनि रखैत छथि। अमरजीक पंक्ति एना छनि;–

''सम्प्रति तँ कविताकेर अङ्ग-अङ्ग चीरि फाड़ि,
डाक्टरेट पयबामे लागल छथि अनुसन्धाता,
मम्मटसँ अम्मट घोरबा रहला प्रेमसँ
दण्डी छथि दण्डित आ विश्वनाथ?
ज्ञानवापी मध्य कूदि भीतरसँ टुक टुक तकैत छथि।''

'अपन-अपन विश्वास' कवितामे अमरजी 'धर्म' ओ 'समता'क परिभाषाकेँ फरिछबैत छथि। बीसम शताब्दी मे एहि दू गोट शब्द पर सभसँ अधिक भ्रम उत्पन्न भेल अछि तथा ओहि लेल युद्ध, संघर्ष एवं विध्वंसक नग्न-नृत्य हमरा लोकनि देखल अछि। कवि कहैत छथि–

''धर्मक अर्थ थिकै अनुशासन, शासन थिकै व्यवस्था
तकरे यदि पालन नहि होयत, विगड़त स्वतः अवस्था,
समता थिक अस्वाभाविक, तँ व्यर्थ तकर आवास
सिंहक भोजन मांस, पशुक भोजन होइत छै घास।''

अमरजी 'नवयुगक स्वर' गबैत कहैत छथि;–

''नूतन स्वरमे नवयुगक गीत
के गावि रहल अछि, कान दिऔ,
अपना भाषामे मधुर भाव,
की आबि रहल अछि ध्यान दिऔ।''

कवि अमरक जे जीवनक प्रति आशा ओ विश्वास छनि आ आगू बढ़बाक जे दृढ़ संकल्प छनि तथा समस्त विपदा पर विजय प्राप्त करबाक लेल पथ पर अग्रसर हेबाक जे आवाहन करैत छथि ताहिसँ एहि देशक नव पीढ़ीकेँ अनन्त कालधरि प्रेरणा भेटैत रहतनि।

अंतमे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कथनसँ हम एहि संक्षिप्त समीक्षात्मक निबन्धकेँ समाप्त करय चाहैत छी– ''गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, उपन्यास-लघुकथा, व्यंग्य-विनोद, निबंध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण साहित्य शतदलक प्रत्येक दल पर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत।''



युगप्रतिनिधि कवि श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

डॉ० अमरनाथ झा

पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' वर्तमान मैथिली काव्यक एकटा प्रमुख प्रतिनिधि कवि थिकाह। द्वितीय विश्वमहायुद्ध, रूस ओ चीन देशक साम्यवादी क्रान्ति तथा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनक पश्चात् मैथिली काव्य रचनाक क्षेत्रमे जाहि प्रकारक प्रवाह सब अबैत रहल अछि, तथा राजनीतिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक क्षेत्र सबमे जाहि-जाहि प्रकारक बिहाड़ि सब बहैत रहल अछि, तकर सबटाक परिचय श्री अमरजीक काव्यरचना सबकेँ पढ़ला पर कोनो-ने-कोनो रूप मे अवश्य भेटि जाइत अछि।

पुनः ई बुझि लेब आवश्यक अछि जे श्री अमर जी मूलतः हास्य-व्यंग्यकार कवि छथि, आ गम्भीर सँ गम्भीर विषयक वर्णनमे हास्यक रसास्वाद करबैत रहबामे असाधारण रूपेँ सक्षम छथि। हिनक हास्य केवल मनोरंजन हेतु नहि, अपितु किछु उद्देश्य-गर्भित रहैत अछि। ध्यातव्य थिक जे कविजी संस्कृतक विद्वान् छथि आ संस्कृतक प्रतिष्ठित अध्यापकक पुत्र होएबाक गौरव प्राप्त छैन्हि, तेँ हिनक बौद्धिकता संस्कृत वाङ्मयहि सँ विशेष अनुप्राणित रहलैन्हि अछि। किन्तु वर्तमान परिवेशक राजनीतिक, सामाजिक ओ अन्यान्यहु गतिविधि दिस सेहो ई पूर्ण संवेदनशील रहैत रहलाह अछि। एही सब परिस्थितिमे हिनक कवि-हृदयमे जखन जेहन भाव उत्पन्न होइत रहल अछि, तकर सबहिक अभिव्यक्ति हिनक कविता सबमे बड़ चमत्कारपूर्ण शैलीमे भेल अछि।

दरभंगा ओ लहेरियासराय मैथिली साहित्यक विकास-प्रक्रियाक सर्वप्रमुख केन्द्र रहल अछि, आ ताही बीचमे रहबाक अवसरसँ लाभान्वित भए ई मैथिली काव्यसाधना ओ मिथिला-मैथिली सम्बन्धी आन्दोलनक मुख्यधार सँ सदा सम्पृक्त रहलाह अछि।

जाहि समय अमरजी छात्रावस्थहिमे रहथि ताही समयमे, 1942 ई०क स्वतन्त्रता आन्दोलन भेल छल आ तकर थोड़बे समयक पश्चात् पूर्वी भारतमे विशेषतः बंगाल प्रान्तमे भीषण अकाल पड़ल छल। द्वितीय विश्वमहायुद्ध, आ स्वतन्त्रता आन्दोलनक झमारल स्थितिमे भीषण अन्नसंकट उपस्थित भेलैं, सामान्य लोकक कोन कथा, सुखी-सम्पन्न कहओनिहार घरहु सबमे अन्नक अभाव भए गेल छल, आ ताहि स्थितिमे अल्हुआ टा किछु सुलभतापूर्वक प्राप्य छलैक। जाहि अल्हुआ केँ लोक गरीब-गुरबाक खाद्यपदार्थ बुझि हेय दृष्टिएँ देखैत रहैत छल सएह अल्हुआ ओहि समयमे लोकक प्राणाधार भए गेल छल, धनिको लोक सब अल्हुआ खाए लागल छल मुदा अपन घरक परम्परागत प्रतिष्ठाक ध्यान राखि देखार रूपेँ अल्हुआ खएबामे लाजक अनुभव करैत छल तेँ चोराएकँ खाइत छल। एही विडम्बना पर हास्यव्यंग्यपूर्ण कविता 'अल्हुआष्टक' लिखि श्री अमरजी काव्यरचनाक्षेत्र मे प्रवेश कएलैन्हि। एहि अल्हुआष्टकक किछु आरम्भिक पंक्ति देखल जाए—

पतिराखन अल्हुआ नाम हमर
अछि नाम अधिक बदनाम हमर
उपजल घर-घरमे फटक बन्द
सब वस्तु शहर भरि भेल मन्द
कुदि पड़लहुँ सम्मुख सकरकन्द
तेँ पाबि रहल आराम शहर
पतिराखन अल्हुआ नाम हमर। (गुदगुदी सँ)

'पतिराखन' शब्दक अर्थ अछि 'प्रतिष्ठारक्षक' अर्थात् धन्य अल्हुआ जे गरीबसँ धनिक धरि, प्रत्येक स्तरक लोकक प्राण आ प्रतिष्ठाक रक्षा भए सकल। अमरजी अपन प्रारम्भिके जीवनकालमे तात्कालिक अन्नसंकटक स्थितिमे अल्हुआक उपयोगिता पर एहि प्रकारक हास्यपूर्ण कविता लिखिकैं अपन काव्यप्रतिभाक आभास कराए देने रहथि।

पुनश्च द्वितीय विश्वमहायुद्धक आणविक अस्त्रप्रयोगक दुष्परिणाम स्वरूप बहुतो रास रोग सबहिक प्रसार होअए लागल छल, आ' मिथिलहु मे 'कलिकलि' नामक चर्मरोगक प्रसार बड़ व्यापक ओ भीषण रूपमे भेल छल। नेनासँ लएकैं बूढ़ धरि, अधिकांश लोक एहि 'कलिकलि' सँ ग्रस्त भएकैं भरिभरि राति देह कुड़िअबैत कष्टपीड़ित रहैत छल, आ' तकरहु वर्णन व्याजस्तुति रूपमे करैत अमरजी लिखलैन्हि जे धन्य ई 'कलिकलि' देवी जे समग्र राति लोक जागल रहैत अछि आ चोरिक भयसँ मुक्त रहैत अछि, अर्तात् चोरकैं चोरि करबाक अवसर नहि भेटैत छैक संगहि अन्य समस्त दुःख एहि कलिकलिक आगाँमे नगण्य भए जाइत अछि, यथा–

हे देवि, धन्य
सुखदा जगमे के एहन अन्य
निद्रारि, चोररिपु, जागरणा
करबामे सब दुख छथि अगण्य।
....
जन रहय मस्त
अपनेक सुयश रवि हो न अस्त
सब महग जगतमे भेल वस्तु
अपने दुखहारिणि, रही सस्त।। (गुदगुदी)

ई व्यंग्य जे 'कलिकलिक प्रभावसँ चोरिक भय लुप्त भए गेल अछि (किएक तँ भरि राति देह कुड़िअबैत-कुड़िअबैत लोकक जागल रहबाक कारण चोरकैं साहस नहि होइत छैक जे लोकक घरमे चोरि करबाक हेतु प्रवेश करत) आ' तैं कलिकलि देवी आराध्या थिकीहि', वस्तुतः बड़ मार्मिक अछि, संगहि हास्योत्पादक अछि। चोर-चुहार आ' रोग एहि दूनूक भयसँ आतंकित लोकक कष्ट कतेक हृदयद्रावक भए गेल रहैक, संगहि महगी सेहो अत्यधिक बढ़ि गेल रहैक, ताहि सबटाक व्यंग्य जेहन हास्यपूर्वक व्यंजित कएल गेल अछि, ताहिसँ हिनक काव्यप्रतिभा आरम्भिके अवस्थामे निखरि गेल छल से प्रमाणित अछि।

जाहि समयमे अमरजी काव्यरचना क्षेत्रमे प्रवेश कए रहल छलाह, ताहि समयमे वृद्ध विवाह ओ अनमेल विवाहक घटना सब समाजमे घटित होइत रहैत छल, मुदा नवयुवक वृन्दमे तकर विरोध करबाक चेतना जागए लागल छल। अमरजी सेहो एकटा ताहि प्रकारक विवाह करबाक हेतु आतुर ''बुढ़बा कका'' क विवाहक असफल आयोजनक हास्यपूर्ण वर्णन लिखिकैं अपन सामाजिक चेतनाक आभास देने छथि। बुढ़वा काका खेत भरना राखि रुपैयाक प्रबन्ध कएलैन्हि आ' बासठिम वर्षक अवस्थामे विवाहक उद्देश्य सँ सौराठ सभागाछी पहुँचलाह, मुदा नवयुवक सबहिक प्रपञ्चक परिणामस्वरूप विवाह तँ नहिएँ भए सकलैन्हि, संगमे जे रुपैया रहैन्हि सेहो सब केओ छीनि-झपटि लेलकैन्हि आ तखनुक हुनक स्थितिक वर्णन पढ़ल जाए–

लुलुआएल सन, विधुआएल सन
मुखरा छल काँचे बाँसक ओ

चोटकलहा पोर सुखाएल सन
मूँहक मुद्रा बदलैत रहल
काँचे तेतरिक खटमिट्टी सन।। (गुदगुदी)

हिनक प्रारम्भिक कविता रचना सबहिक प्रथम संकलन 'गुदगुदी' नामसँ 1353 सालमे रामनवमी दिन (तद्नुसार1946 ई०मे) नवरत्नगोष्ठी दरभंगा द्वारा प्रकाशित भेल छल आ उपर्युक्त कविता सब ताहीमे संकलित अछि। तावत धरि यद्यपि स्वराज्य प्राप्त नहि भेल छल, किन्तु स्वायत्त शासन विधानक सूत्रपात भए गेल छल, बृटिश शासित भारतक प्रत्येक प्रान्तमे विधायिका सभा आ मन्त्रिपरिषद्क गठन होअए लागल छल मुदा ताहि प्रकारक प्रयोग सफल नहि भए सकल छल। ओही अवधिमे अमरजी 'मन्त्री' शीर्षक एकटा एहन व्यंग्यपूर्ण कविता लिखने रहथि जे पढ़ला पर एहि बातक विस्मय होइत अछि जे विगत दू-एक दशकमे राज्य सरकारक मन्त्री लोकनिक विषयमे जाहि प्रकारक चर्चा सब श्रुतिगोचर होइत रहल अछि तकर पूर्वाभास ओही समयमे हिनका कोना भेटि गेल रहैन्हि! राजनीतिक विद्वान् समीक्षक लोकनि स्पष्ट संकेत करैत रहैत छथि जे भारतक शासन व्यवस्थामे वर्तमान कालमे जाहि प्रकारक भ्रष्टाचार सब दृष्टिगोचर भए रहल अछि, तकर सबहिक सूत्रपात कोनो ने कोनो रूपमे ओही समय भए गेल छल जखन देशमे स्वराज्य प्राप्तिक प्रस्ताव कार्यान्वित होअए लागल छल। अतः ई मानए पड़ैत अछि जे 'मन्त्री'क आचरण-वर्णन कएनिहार एहि कविक असाधारण सूक्ष्मदृष्टि, स्पष्टवादिता एवं निर्भीकता ओही समय जगजिआर भए रहल छल, जाहि समय ई काव्यरचनाक्षेत्रमे प्रवेश कए रहल छलाह।

भारतमे स्वराज्यप्राप्तिक संग-संग जाहि प्रकारक सामाजिक परिवर्तन सब होअए लागल तकर वर्णनमे हास्यव्यंग्यपूर्ण मुक्तक कविता सबहिक एकटा छोटछीन, किन्तु मर्मस्पर्शी संकलन 'युगचक्र' नामसँ प्रकाशित छैन्हि जकर एकटा मुक्तक दृष्टान्त रूपमे देखल जाए–

पकड़ि बेङकेँ आइ फतिंगा
सहजहिँ लाभ कराबए गंगा।।

एहि ठाम 'बेङ' ओ 'फतिंगा' शब्दक प्रयोग लाक्षणिक अर्थमे कएल गेल अछि। देखबामे अबैत अछि जे फतिंगाक अपेक्षा बेङ विशेष बलशाली जीव थिक जे फतिंगा सबकेँ खाए-खाए केँ जिबैत अछि। मुदा परिवर्तित परिस्थितिक वर्णन करैत कवि लिखने छथि जे आइ स्थिति उनटा भए गेल अछि, फतिंगा सएह बेङकेँ मारि-मारिकेँ खाए रहल अछि। मारि-मारिकेँ खाए लेबाक कार्यक हेतु कविजी 'गंगालाभ कराएब' पदक जेहन प्रयोग कएलैन्हि अछि सेहो बड़ गूढ़ व्यंग्यपूर्ण अछि। लोकक धार्मिक मान्यता अछि जे गंगा तट पर मृत्यु भेलेँ स्वर्ग भेटैत छैक तेँ प्रस्तुत प्रसंगमे फतिंगा द्वारा बेङक भक्षण भेला पर बेङकेँ गंगालाभ अर्थात् स्वर्गप्राप्ति भए जाइत अछि से कहिकेँ कवि एहि गूढ़ भावक ध्वनि कराए रहल छथि जे 'सर्वहारा' कहओनिहार लोकसब आब ओहि विशालकाय धनिक लोक सबहिक संहार करए लगलाह अछि जकर भयसँ पूर्वमे ओ सब स्वयं आतंकित रहैत छलाह, संगहिँ इहो व्यंग्य कएल गेल अछि जे सर्वहारा वर्ग द्वारा धनिक लोकक संहार वा दमन ओहने पुण्यकार्य मानल जाए लागल अछि जेना ककरो गंगा नदीमे डुबाएकेँ 'सद्गति' दिअएबाक 'पुण्यकार्य' कएल गेल होअए। मुइल बेङक मांस खाए-खाएकेँ फतिंगा सब स्वयं अपन-अपन पेट भरैत अछि किन्तु जँ ई प्रचार कएल जाए जे फतिंगा बेङकेँ गंगालाभ कराए केँ स्वर्ग पठओलक अछि तँ तेहने प्रचार एहिँ बातक कएल जाए रहल अछि जे 'सर्वहारा वर्ग द्वारा पुंजीपति लोकनिकेँ मुक्ति-प्रदान कएल जाइत अछि। एहि प्रसंग ध्यान देबाक विषय ई अछि जे साम्यवादी क्रान्तिक परिणामस्वरूप विशालकाय लोक सबकेँ ताकि-ताकि लोककल्याणक नाम पर ओकर सबहिक सर्वस्वहरण वा संहार कएल जाए लागल, मुदा ताहि प्रकारेँ संचित धनक

उपयोग लोककल्याणक हेतु कम भेल, नवका नेता लोकनि स्वयं अपन-अपन पेट भरबाक हेतु तकर बेसी उपयोग कएलैन्हि वा कए रहल छथि, आ' तकर गूढ़ ध्वनि उपर्युक्त मुक्तक द्वारा कएल गेल अछि।

देशमे स्वतन्त्र शासन व्यवस्था स्थापित भेल तथा संविधान द्वारा समाजवादी व्यवस्थाकेँ विशेष मान्यता प्रदान कएल गेलहुँ पर लोककेँ जेहन सुखी जीवनक भरोस देल गेल रहैक से अप्राप्य रहलैक। बहुत अंशमे स्थिति बदतर भए गेलैक, शान्ति ओ सुरक्षा आओरो बेसी अनिश्चित भए गेलैक, समाजमे पारस्परिक वैमनस्य ओ द्रोह बढ़ैत गेल, तथा नैतिकताक स्तरमे ह्रास अबैत गेल। एहि विडम्बना सबहिक वर्णन श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' जाहि हास्यपूर्ण शैलीमे अभिव्यंजित कएने छथि तकर किछु दृष्टान्त देखल जाए–

नैतिकता केर ह्रासक चर्चा
सभा समितिमे होइ छै एहिना
लसकल गोटी लाल होइत हो
नहि ताकी पुनि बामा दहिना
घड़ुछा लटकल देखि झोंझमे
सत्ता केर लगाबी लग्गी
होइत रहओ पेट्रोल महग
हम अपन चलायब पुरने बग्गी।। (आशा दिशा सँ)

× × ×

सड़क महग पुल बनतै पाछाँ
पहिने पास कराय लिअऽ बिल
फूसि बजै छी? नीक करै छी
एहने लोक कहाबय काबिल।
लय कय सत्यक नाम फूसि
बजला सँ कोनो दोष न होइ छै
कहिते छै बैमान लोक तैं
बुधियरबाकेँ रोष न होइ छै।।

× × ×

हम सब जेहिमे जन्म लेल अछि
ताहि युगक किछु चित्र देखि ली
जे कहबथि राष्ट्रक निर्माता
तनिक पवित्र चरित्र देखि ली
नवता केर उज्ज्वल प्रकाशमे
आइ विवेकक श्राद्ध अनुष्ठित
दय गरदनिञा आइ ज्ञानकेँ
आसन पर विज्ञान प्रतिष्ठित।

घोषित कएल जाइत अछि जे प्राचीन रूढ़िक नाश भेलहि पर सुखमय नवीन युगक आविर्भाव सम्भव अछि, किन्तु वर्तमान समयक नवतावादी नवयुवक लोकनिक स्वभाव ओ प्रवृत्ति देखि कविकेँ बड़ निराशा भए रहल छैन्हि आ तकर वर्णन जेहन व्यंग्यपूर्ण भाषामे कएने छथि सेहो देखल जाए–

सावधान! हमरा सँ हटले रहू
थिकहुँ हम सब नवतुरिया
घोरि देब हम हवा पानिमे
चुप्पेचाप जहर केर पुड़िया
अछि जिजीविषा मुदा युयुत्सा
अन्तर्मनमे मारि करैए
कुण्ठा ओ सन्त्रासग्रस्त छी
बुद्धि हमर बपहारि कटै'ए।।

कविकेँ अनुभव भए रहल छैन्हि जे नवतुरिया अर्थात् नवयुवक लोकनि विश्वबन्धुत्वक भाव बिसरि अहंकार ओ परद्रोहक पथ पर अग्रसर भए रहल अछि, विज्ञान द्वारा उपलब्ध शक्तिक उपयोग कएकेँ अनकर सर्वनाश करबामे उद्यत रहैत अछि तथा बुद्धिभ्रंशक स्थितिमे पड़ि कुण्ठित भए रहल अछि। एहन नवयुवक लोकनिसँ लोककल्याणक की आशा कएल जाए सकैत अछि? तथाकथित प्रगतिशील नवयुवक लोकनिक चरित्र देखि श्री अमरजी आक्रोश व्यक्त करैत छथि जे–

दया-कृपा-करुणा ई सब किछु
जड़ल पुरातन थिक परम्परा
प्रगतिशीलता केर नाम पर
आइ मनुजता रहल थरथरा।।

एहि सब प्रकारक विषमताक स्थितिअहुमे कविक अन्तस्तलमे आशाक किरण लुप्त नहि होइत अछि, हिनका विश्वास छैन्हि जे एहि वैषम्य सबहिक शमन अवश्यम्भावी अछि। जेना दावानलक शमन भेला पर पुनः नवपल्लव ओ पुष्पक शोभा-विस्तार होइतहि अछि, तहिना समाजमे पुनः सद्भाव ओ सदाचारक प्रसार होएबे करत से हिनक विश्वास अछि। 'संकल्प' शीर्षक कवितामे एही विश्वासकेँ व्यक्त करैत कविक उद्गार अछि जे–

सर्जन सुन्दर संसार करब
जीवन वनमे दावानल रूपी दानवदल संहार करब।
वसुधा पर वसु ओ सुधा केर वर्षा हम मूसलधार करब।

कवि श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क कविता सबसँ ई बात निश्चित रूपसँ अवगत भए जाइत अछि जे ई मूलतः हास्य रसिक रहबाक संग-संग आस्थावादी छथि, आस्तिक छथि, हिनक विश्वास छैन्हि जे परोपकार ओ पारस्परिक सद्भावहि द्वारा देश आ समाज सुखी भए सकैत अछि, आ' वर्गसंघर्ष जन्य पारस्परिक कटुताक प्रसार कएलासँ लोक सुखी नहि रहि सकैत अछि।

●

कविवर श्री अमरजीक काव्यकृतिमे हास्यव्यंग्यक चमत्कार

डॉ० रामजी ठाकुर

उपनिषद्‌मे ब्रह्म रसमय मानल गेल अछि आ भारतीय काव्यशास्त्रमे रस ब्रह्ममय। रसक आनन्दमयता वस्तुतः ब्रह्मानन्दक शाब्दिक अभिव्यक्ति थीक। एहि तरहेँ काव्य एवं दर्शनक लक्ष्यमे कोनो भेद नहि, भेद अछि तँ केवल दुनूक सरणि वा साधनामे। अध्यात्मशास्त्रक अनुसार वासनाक विनाश भेला पर शाश्वत आनन्दक उपलब्धि संभव भए सकैछ। किन्तु कवि कलाकार वासनाक समुचित-ललित अभिव्यंजनासँ आनन्दोपलब्धिक प्रयासमे लागल रहैत छथि। एक बुद्धिक प्रकर्षमे लक्ष्यप्राप्ति मानैत छथि तँ दोसर हृदयक उत्कर्षमे आनन्दक अनुसन्धान करैत छथि। निर्विवादरूपेँ आनन्दे मानवजीवनक चरम परम उद्देश्य सिद्ध होइछ।

शब्दसाधनामे कुशल कविक अलोकसामान्य प्रतिभाक संस्पर्श पाबि रतिहासादि मनोविकार अभिव्यक्त भए रसक आख्या प्राप्त करैछ। भारतीय आचार्यक चरम काव्यशास्त्रीय चिन्तन एवं सर्वसम्मत सिद्धान्त रस मानल गेल अछि, जे काव्यक आत्मा, जीवन वा प्राण कहबैछ। आचार्य भरतक अनुसार नाट्यात्मक काव्यक समस्त व्यापार रसेकेँ केन्द्र बना कए प्रवृत्त होइछ–''नहि रसादृते कश्चित् पदार्थः प्रतीयते।''

प्रारंभमे रसक संख्या आठ वा नव मानल गेल जाहिमे क्रमानुसार हास्यक दोसर स्थान निर्धारित भेल अछि। मानव जीवन मे हासक अपन विशिष्ट स्थान अछि। मनुष्य दुःखावेगसँ कनैछ आ हर्षावेग मे हँसैछ। मानव मनसँ नैराश्य विषादक कालिमाकेँ साफ करबामे हासक अविस्मरणीय योगदान अछि।

हासक गणना सुखात्मक भावमे कएल जाइछ। आचार्य भरत हासक उत्पत्ति शृंगारसँ स्वीकार कएने छथि– ''शृंगाराज्जायते हासः।'' शृंगार सँ हास्यक उत्पत्तिक आधार पर ओकर सुखात्मकता मात्रक पुष्टि भए सकैछ, ओहिसँ ओकर उत्पत्तिक युक्तियुक्त समाधान संभव नहि। आचार्य भरतो एकर स्पष्टीकरण नहि कएने छथि। हँ, एतबा सत्य जे प्रेमोल्लासमे प्रेमीक अधर पर हँसीक फूल फुलाएल दृष्टिगोचर होइछ।– 'लज्जा नम्रमुखी प्रियेण हसता बालाचिरं चुम्बिता। (अमरुशतक, उद्धृत साहित्यदर्पण) ताहिसँ मात्र शृंगारमे हासक सञ्चारिता सिद्ध कएल जा सकैछ।

स्व० कविवर किरण जी अपन 'हास्य रसक आलम्बन' नामक निबन्धमे आधुनिक मानसविदक मतानुसार हास्यकेँ द्वेषमूल स्वीकार कएने छथि आ निष्कर्षतः प्रबुद्ध मानवतावादी समाजक संरचना भेला पर ओकर अस्तित्व विलोपक संभावना व्यक्त कएने छथि। प्रस्तुत पंक्तिक लेखक द्वारा 'महावैयाकरण दीनबन्धुझा स्मृतिग्रन्थ'मे एहि मतक विनीत निराकरण कएल गेल अछि।

संस्कृत साहित्यक सुपरिचित चिन्तक आचार्य क्षेमेन्द्र हास्यक उत्पत्तिमे निदान अनौचित्य केँ मानल अछि। भारतीय काव्यशास्त्री सौन्दर्यबोध वा कलाजन्य आनन्दानुभूतिमे औचित्यकेँ सर्वाधिक महत्त्व देल अछि। आचार्य आनन्दवर्धनक कथन अछि जे औचित्य विन्यासेमे रसक रहस्य राखल अछि–'औचित्योपनिबन्धस्तु रसस्योपनिषत्परा।' आ, एहि सम्बन्धमे क्षेमेन्द्रक स्पष्ट मन्तव्य अछि– रससिद्ध काव्यक स्थायी जीवन औचित्ये थीक–'औचित्य रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।' औचित्य केवल काव्यक क्षेत्रे टामे नहि, प्रत्युत कला मात्रक क्षेत्रमे आवश्यक तत्त्व रूपेँ मान्यता प्राप्त कएने अछि। एकर विपरीत अनौचित्य कलात्मक आनन्दमे सर्वाधिक व्याघात उत्पन्न करैछ। गुण हो वा अलंकार समुचित प्रयोगेसँ सौन्दर्य सम्पादनमे सहायक होइछ। अनुचित उपयोग भेला पर ओ उपहासेक कारण बनैछ।

जँ गरामे डँरकस, डाँरमे हार कोनो सुन्दरी धारण करए तँ ओकरा देखि लोक हँसबे करतैक। जहिना अनुचित प्रयोगेँ अलंकार उपहासास्पद होइछ, तहिना आन्तरिक करुणा शौर्यादि गुणो अनुचित रूपेँ प्रयुक्त भए कुरूप वा विकृत

बनि हासक निदान बनैछ।–'कण्ठे मेखलया नितम्ब फलके तारेण हारेण वा, पाणौ नूपुर बन्धनेन चरणे केयूर पाशेन वा। शौर्येण प्रणते, रिपौकरुणया नायान्तिके हास्यता मौचित्येन विना रुचिं प्रकुरुते नालंकृतिर्नोगुणाः।।'' (औचित्य विचारचर्चा) शरणागतमे शौर्य एवं शत्रुमे दया प्रशंसनीय नहि उपसहनीय मानल जाइछ।

हास्यरसक आलम्बन एवं उद्दीपन विभावक वर्णन करैत आचार्य विश्वनाथ कहलनि अछि– ''विकृताकार वाक् चेष्टं यमालोक्य हसेज्जनः। तममालम्बनंप्रारुस्तच्चेष्टोदीपनं मतम्।।'' (सा०द०परि० 3/215) विकृत आकृति वाणी एवं चेष्टा हासक कारण थीक। वस्तुतः अनौचित्ये विकृति थीक। तैं अनौचित्यक रसीकरण हास्यरस थीक। काव्यक क्षेत्रमे आबि सुन्दर, असुन्दर, क्षुद्र एवं उदार सब प्रकारक वस्तु कविक प्रतिभाक संयोग पाबि आनन्दक सृष्टि करैछ। काव्य समुचित आचार-शिक्षाकैं सुन्दर साधन मानल गेल अछि जेना शब्दज्ञान भेला पर अपशब्दोक ज्ञान सहजहि भए जाइत छैक, तहिना औचित्यबोध सँ अनौचित्यबोध भए जाइत छैक। अनौचित्यक उपहास समाजमे ओकर निराकरणक दिशामे उचित प्रयास मानल जाइछ।

सफल एवं कुशल कवि, कलाकार समाजमे व्याप्त अनुचित विकृत आचार-विचार कैं देखि ओकर कुशलतापूर्वक उद्घाटन कए सहृदय हृदयमे आनन्दक उद्बोधनक संग, ओकरा दूर करबा लए ओकरा पर तीव्र प्रहार करैछ। अनौचित्य पर हँसि एवं हँसाए समाजकैं विकृतिमुक्त करबामे स्तुत्य प्रयास करैछ।

रसविशेषक जन्मान्तरीय प्रबल संस्कारक बल पर कोनो कवि विशिष्ट रसक सफल मनोरम अभिव्यंजनामे ख्याति पबैछ। संस्कृत साहित्यमे कविकुलगुरु कालिदासक विदग्ध सरस्वती जेना शृंगारसक वर्णनामे प्रसिद्धि प्राप्त कएने अछि, तेना वीररौद्रवीभत्सक वर्णनामे नहि।

मैथिली साहित्याकाशमे कविवर अमरजीक चन्द्रोज्वल प्रतिभा हास्यरसक सफल अभिव्यंजनाक कारणें समधिक प्रशंसित भेल अछि। समाजमे पसरल सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक विकृति, कुरूपताकैं अपन सहज विलक्षण प्रतिभाक संस्पर्श सँ अनावृत कए सहृदय हृदयमे 'गुदगुदी' लगाए लोटपोट करबामे ओ अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कएने छथि।

प्रस्तुत निबन्धमे 'गुदगुदी'क कतिपय कविताक सन्दर्भमे कविवर अमरजीक हास्यव्यङ्ग्यक चमत्कार पर किछु प्रकाश देबाक विनम्र प्रयास कएल जाइछ।

मैथिल समाजमे वृद्धविवाहक कुप्रथा बहुत दिन धरि प्रचलित रहल। एतए प्रबल पुरुष समाज विशेषतः ब्राह्मण समाज अपन आध्यात्मिक ज्ञान-सम्पदा विहीन भए ऊपरसँ नारीपूजाक गप्प कहि अपन सौसज्य एवं धार्मिकताक परिचय दैत रहल आ अन्तरमे वार्धक्यकैं विसरि अपन कामुकताक ज्वालाकैं शान्त करबालेल धर्म, जाति, श्रेणी मिथ्याभिमानसँ ग्रस्त भय अबला नारीक शोषणमे लिप्त रहल। वरक वरणीय गुणक उपेक्षा कए कुल, पाँजिक बलिवेदीपर अबोध कन्याक बलिदान कए कन्यापिता गौरवान्वित होइत छलाह। कोनो कुलीन वृद्ध जँ विवाहक इच्छा व्यक्त करैत छलाह तँ शीघ्रे समाजक तथाकथित दलाल लोकनि हुनक एहि इच्छापूर्तिमे अपन तत्परता देखाए हुनका कृतार्थ करबामे लागि जाइत छलाह। मिथिलामे बद्धमूल अही सामाजिक कुरीति कुनीति पर हास्यपूर्ण–तीव्र प्रहार कएल अछि कविवर अमरजी अपन 'बुढ़बा कका' शीर्षक कवितामे।

बासठि वर्षक अदन्त बुढ़बा कका, जनिका मँड़सटका मात्र सुविधापूर्ण भोजन छल, कामुकताक उद्दाम-उमंग सँ तरंगित भए अपन 'सूटकेस'मे शहरकैं समेटि कतिपय दलालक संग सौराठक सभागाछी, अज्ञातयौवना बालाक क्रय करवा लए बिदा होइत छथि। 'शारदा एक्ट' हुनक आशा-बातीकैं उसका दैत छन्हि। कारण 'शारदा एक्ट समाचार सूनि बहुतो धर्मभीरु कन्याक पिता, पातित्यसँ अपनाकैं बचएवा लेल अपन पञ्चवर्षा कन्याकैं कतहु फेकबा लेल आतुर भए गेल रहथि।

अपना गट्टिक संगतुरियाक संग जाजिम मसनद लए ललका धोती पर मैल पाग पहिरि बुढ़बा कका सभागाछी चललाह तँ उत्साहसँ, किन्तु मार्गहिमे नवयुग चेतनाक प्रतीक दशटा नङरा छौंड़ा हुनक सकाम यात्रामे विघ्नक सूचना दैत कचकचाएब आरंभ करैछ आ अन्तमे हुनक दोपटोकेँ फाड़ि दैछ। आ अन्तमे लेन-देनक भीषण झमेलमे, जखन छाता सँ प्रहार प्रतिप्रहारक मनोरंजक दृश्य उपस्थित भेल, एक उचक्का बूढ़क बटुआ पार कए दैछ, छातायुद्धमे चित्ते खसल बूढ़केँ जखन बटुआ-विलोपक बोध होइत छन्हि, तखन बाप! बाप! चचियाइत बुढ़बा कका मनमे सुखद हास्यक सृष्टि करैत छथि। संगहि सहृदय पाठक निःसहाय, आहत कुरीतिकेँ छटपटाइत देखि सन्तोषसुख प्राप्त करैत छथि।

तीव्र निराशाक आघातसँ बूढ़क मुखमुद्रा 'काँचे बाँसक चोटकलहा सुखाएल पोर भए गेल। कविक शब्दें–

''लुलुआएल सन, विधुआएल सन,
मुखड़ा छल काँचे बाँसक ओ,
चोटकलहा पोर सुखाएल सन।।''

निराश, विषाद एवं दैन्यक मूर्त्ति बूढ़क प्रतिक्षण परिवर्तित मुखमुद्राक अनुरूप चित्र प्रस्तुत करैत कवि लिखैत छथि–

''खन सिट्ठी खन दलिपिट्ठी सन,
मूँहक मुद्रा बदलैत रहल,
काँचे तेतरिक खटमिट्ठी सन।''

प्रकृत कवितामे देशकालानुकूल समुचित हास्यरसक आलम्बनक चयन भेल अछि–विकृत मनोवृत्तिक बूढ़ा। कामातुर दशनविहीन वृद्धक कुरूपता वा विकृतिकेँ लाल धोती पर मैल पाग' सहजहि साकार कए दैछ। एक दिस यदि पाठक सामाजिक विकृतिक सरस व्यंजनासँ लोटपोट होइछ, तँ दोसर दिस कविक विकृत रूढ़ि पर निर्मम प्रहारक रहस्य सँ सन्तुष्ट। एहि हास्यकवितामे 'दशटा नङटा छौंड़ा'' नवयुगक प्रबुद्ध एवं सामाजिक कुरीतिक प्रतिरोधक चेतनाक प्रतिनिधित्व करैछ। सभागाछीमे बूढ़क चितंगे खसब, प्राचीन विकृत, कुरूप सामाजिक परम्पराक पतन दिस स्पष्ट इंगित करैछ। कविताक हास्यानुकूल सहज सरल पदयोजना–सहज सुन्दर अलंकारक प्रयोग कविक अभीष्ट रसाभिव्यंजनामे पूर्ण क्षम भेल अछि।

जहिना विकृत शरीर, वाणी, वेष आ चेष्टा हास्यक आलम्बन बनैछ, तहिना विकृत अनुचित सामाजिक सांस्कृतिक प्रथा, लोकप्रवृत्ति सेहो ओकर आलम्बन भए सकैछ। कविवर अमरजी अपन प्रातिभचक्षुसँ देशमे स्वाधीनताक पश्चात् सर्वत्र व्याप्त बहुविध विकृतक अवलोकन कए ओकरा सहजता एवं सुन्दरताक संग सफल अभिव्यक्ति देबामे पूर्ण कुशलताक परिचय प्रस्तुत कएल अछि।

देशक सर्वोच्च संस्था सरकारमे प्रतिष्ठित पद पर आसीन मंत्री जनकल्याण एवं देशहितक उपेक्षा कए स्वार्थ दम्मः अहंकारसँ प्रेरित भए जनविरोधी देशविकासवाधक कार्यकलापमे लिप्त रहैत छथि। अपन अहंकारक पोषणमे महान् षडयन्त्री बनि गौरवक अनुभव कए रहल छथि। जनकल्याणार्थ संचित चन्दा राशिसँ अपन जेबी भरि संस्थाकेँ फाँसी पर लटका दैत छथि–''चन्दासँ जेबी भरि संस्थाकेँ

फाँसी पर हम लटका दी।''

ओ ऊपरसँ बेल जेकाँ चिक्कन–साफ-सुथरा बुझना जाइत छथि, किन्तु हुनक असली रहस्य हुनक भीतर मे गुप्त राखल अछि–भरिपेट लस्सा आ कण्ठमे अटकल आँठी' 'मंत्री' शीर्षक कवितामे कवि आधुनिक तथाकथित नेता

लोकनिक वास्तविक चरित्रकेँ उद्घाटित कए राखि देल अछि। नेताक नवीन स्वरूपकेँ हृदयंगम कए सहृदय पाठकक अधर पर स्मितरेखालए एतादृश नेताकेँ संशय, अविश्वासक दृष्टिसँ देखबा लेल विवश भए जाइछ।

अहिना देशकोशक वास्तविक स्थितिक दिग्दर्शन छोड़ि ''बकवाद'क आचार्य बनल सम्पादक, अपन समाजक गर्दनिपर चढ़ल शासनक विषम व्याधि भेल 'एडवोकेट', भावी युगक कर्णधार सए दू सए युवकक भाग्यविधाता भए ऐंठी दैत तथाकथित प्रोफेसर जे समाजमे मूर्धन्य पद पर आसीन भए गौरवक अनुभव कए रहल छथि, हास्यक आलम्बनक संगेसंग अनास्था, अविश्वास, घृणा, उपेक्षा आदि भावशबलताक सम्बल सेहो बनि जाइत छथि। देश एवं समाजमे प्रतिष्ठित आदरणीय मंत्री, सम्पादक, वकील एवं प्रोफेसरक आन्तरिक विकृत दूषित मनोवृत्तिक असल परिचय पाबि सहृदय भावक अधरपर मधुर हासच्छटाक संग सहसा देशक चारित्रिक पतनक बोध सँ दुःख-क्षोभसँ भरि जाइछ। कविवर अमरजी समाजमे पसरल अनीति कुरीतिक विकृतिक चहटगर चटनी बनाए प्रस्तुत कएल अछि, जाहिमे विविध रसक आस्वाद छैक। कविवर गुद्गुदी लगाए हँसएबाक पश्चात् सहृदय पाठक केँ विकृति अनौचित्यसँ मुक्तिक मधुर प्रेरणा सेहो दए रहल छथि।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात् देशमे व्याप्त अव्यवस्था, उत्कट लोभ, अधीरता, असन्तोष, धक्का-मुक्की, छीना, झपटीक विकृत लोकप्रवृत्तिकेँ हास्यक आलम्बन बनाए निर्मित काव्यरचना 'युगचक्र'मे कविक हास्य व्यंजना एवं युगप्रवृत्तिक विरूप परिवर्तनक व्यंजना संग-संग भेल अछि। जे शासनक शीर्षस्थ पद पर बैसल छथि, तनिक तँ गप्पे छोड़ू, एखन समाजमे छोटको टुपपुजियो-नेता एवं ओकर वरद्हस्तक अभय छायामे बैसल छोटको-छोटको बनियाँ अपन-अपन घर भरबाक पाछू लागल अछि, अपन बुद्धिकौशल–चलाकीसँ दुर्बल, अज्ञान जनक वंचनामे लागल अछि। कहल जाइछ जे समाजकेँ 'मात्स्यन्याय'सँ मुक्त रखवा लेल पूर्वमे शासनक संरचना भेल रहए। संविभाग परम धर्म कहल गेल अछि–संविभागः परोधर्मः (म.भारत) किन्तु 'स्वराज्य' मे ओकर ठीक उनटा रूप–विकृत रूप देखबामे अबैछ। कविक शब्दमे–'बनिञा आ टुटपुजिया नेता, अपने हाथ सुतारि रहल अछि।'

स्वराज्यमे सुखशान्तिक सपना देखने छल लोक, किन्तु आइ वर्गविद्रोह, प्रतिहिंसाक धधरा पसरल देखि, कवि अपन कौशलसँ हास-प्रसादक संग क्षोभ एवं आश्चर्यक भाव सेहो जगा रहलाह। ओ एखन देखि रहलाह अछि–पूर्वशोषक शक्तिक पराभव आ शोषित शक्तिक संघटनाक प्रबलता। आइ वेंगकेँ छोटका फतिंगा संगठित भऽ गंगालाभ करा रहल अछि। विपरीत लक्षणाक वैचित्रीक संग अतिशयोक्ति सुषमासँ मंडित कविवर अमरजीक ''पकड़ि बेंगकें आइ फतिंगा, सहजहि लाभ कराबए गंगा।'' पाँती वस्तुतः वक्रोक्तिपूर्ण भेल अछि जाहिमे युगचेता 'अमर कवि' सहृदय पाठकेँ हँसा-खेला कऽ स्वाधीन भारतमे पसरल एवं पसरैत सामाजिक राजनीतिक विरूप विकृतिसँ सतर्क-सचेत होएबाक मधुर सन्देश सेहो दए रहल छथि–''जगकेँ युग परतारि रहल अछि।'' संक्षेपमे कविवर अमरजी कविराज बनि, कविताक सरस मधुर स्वादु गोली बाँटि सामाजिक विकृति-व्याधिसँ जनमानसकेँ सचेत कए, क्षुब्ध बनाए, समाजक स्तुत्य सेवाक यशोभागी बनल छथि।

●

अमरजीक पद्य-रचनामे काव्यतत्त्व

डॉ० देवकान्त झा

''वक्रोक्तिश्च रसोक्तिश्च स्वभावोक्तिश्च वाङ्मयम्''।– भोजराजक ई मन्तव्य अमरजीमे साकार अछि। युगचेतनाक अमर हस्ताक्षर श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मे सहजोक्ति, वक्रोक्ति ओ रसोक्तिक त्रिवेणी लहराइत अछि। बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न रहितो अमरज़ी मूलतः कवि आ गीतकार छथि। आधुनिक मैथिली साहित्यक महान मुक्तककारक रूपमे ई प्रतिष्ठित छथि। मैथिली काव्यमे ई हास्यक निविष्ट रसावतारी कवि छथि। सीताराम झाक सहज शिष्ट हास्यसँ ई प्रेरित भेल छथि। हरिमोहन झा, तन्त्रनाथ झा ओ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क संग हिनक तुलनात्मक संदर्भ जोड़ल जा सकैए। रसवादी ओ ध्वनिवादी परम्परामे दीक्षित अमरजी रससिद्ध, भावसिद्ध ओ युगसिद्ध नवयुगक कवि छथि। परम्पराबद्ध रहितो परम्परामुक्त, प्रसिद्ध प्रस्थानक अनुगमन करितो युगसत्यक महान प्रतिष्ठाता, प्राचीन रहितो चिरनवीन, पण्डित रहितो उदाराशय, बद्धमूल रहितो निर्बन्ध तथा अध्यात्मवादी रहितो वस्तुवादी वा प्रगतिवादी छथि। हिनक व्यक्तित्वमे समन्वयक विराट् आयाम अछि। मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक ओ अमर सेनानी छथि। साहित्येक निर्माता नहि, साहित्यकारोक निर्माता छथि। वादक कठघरासँ मुक्त मैथिलीक प्रगति ओ विकासक निर्विवाद कवि छथि। निजता-अस्मिता, पटुता-पारदर्शिता, आह्लाद-आत्मीयता, हास-परिहास ओ व्यंग्य-वक्रोक्ति हिनक प्रसन्न व्यक्तित्वक वैलक्षण्य थिक। महाकाव्य ओ खण्डकाव्य छाड़ि साहित्यक यावन्तो विधामे ई अपन नवनवोन्मेषशालिनी नैसर्गिक प्रतिभाक विलास प्रदर्शित कयलनि अछि।

आधुनिक मैथिली मुक्तक साहित्यक महान पुरोधा अमरजी जनमानसक हृदयमे बसैत छथि। प्रियता, मनोहारिता ओ समसामयिकता केर शिखर पर विराजमान ई एक जनवादी कवि छथि। हिनक मुक्तक-रचनाकेँ सुविधाक लेल चारि भागमे बाँटल जा सकैए–गीतमूलक, व्यंग्यमूलक, प्रगीतमूलक आओर कथामूलक। गुदगुदी आ विविध गीत गीतमूलक अछि। युगचक्र ओ उनटा पाल व्यंग्यमूलक थिक। आशादिशा विशुद्ध प्रगीतकाव्य थिक। परम्परा आ प्रयोगक सम्मिलित प्रगीतात्मक छवि ऋतुप्रियामे देखार अछि। राष्ट्रनिर्माता आ चाही एहन रघुनन्दन आदि कथामूलक पद्यकथा अछि। संक्षेपमे अमरजीक कृतित्व पर दृष्टिपात करब यथोचित थिक।

मुक्त हास्य आ मधुर व्यंग्यसँ सराबोर **गुदगुदी** (1946) चौदह कविताक एक सुन्दर संकलन थिक। मनोरंजन प्रधान शुद्ध हास्य ओ संशोधन मूलक व्यंग्ययुक्त मिश्र हास्यक द्विविध रूप एतय बड़ रमनगर अछि। शुद्ध हास्यक बानगी जेनाः–

'बाबू भैया' अपनाय लेल,
मिसरी दूधक सहयोग देल।
सौभाग्यक तेँ अछि उदय भेल,
मनमस्त हमर बस झूमि गेल।।
बड़का घर हमर दलानक घर।
पतिराखन अल्हुआ नाम हमर।।

अल्हुआक एहि अतिशयोक्तिपूर्ण विचित्र आत्मकथामे 'हास' स्थायीक मधुर समुद्रेक अछि। एतय अल्हुआ आलम्बन तथा ओकर सौभाग्य-प्रदर्शक क्रिया-कलाप उद्दीपन विभाव थिक। मोनक मस्ती, झुमब-गायब अनुभाव थिक। मद, गर्व, हर्ष आदि सञ्चारी थिक। 'बाबू भैया' आश्रय थिकाह। तेँ विभावादिसँ परिपुष्ट 'हास' स्थायी,

हास्यक रसदशाकेँ पाबि सहृदय-समाजकेँ आनन्दमुग्ध कय रहल अछि।

पुनः हासक चाशनीमे बोरल व्यंग्यमिश्रित मिश्र हास्य जेना–

तेँ की विवाह नहि हैत? वाह!
से की कहैत छी? आगि देखौने
कत्तहु नहि नमरैक लाह?
....
बजला बूढ़ा–बुड़िलोल घटक–
नौ सै लेताह
हम छी बताह
आ' की ऐलहुँ अछि गाछीमे
करबा लै हम पहिले बिआह।।
....
एमहर तकलनि
ओमहर तकलनि
गाछीकेँ कणा कणा तकलन्हि
जेबी तकलन्हि, पेटी तकलन्हि।।
सब छल अवाक
सब छल फराक
अन्तिममे बूढ़ा बाप बाप कहि
मारल कसि कै डबल हाक।।

एतय वृद्ध वा अनमेल विवाहपर दमगर चोट कसल गेल अछि। दुलहाक रूपमे लाल धोती, पाग-डोपटामे सजल-धजल बुढ़ाक विकृत रूप, विचित्र वेषभूषा, विकृत वाणी ओ विकृत व्यवहार हासक आलम्बन थिक तथा घटक-पँजियार, मान-मनौती, दाव-पेँच, लेन-देन ओ छिन्ना-झपटी आदि उद्दीपन विभाव थिक। अहंकार, उत्साह-उल्लास, रुदन-क्रन्दन आदि अनुभाव थिक। आवेग, जड़ता, गर्व, अमर्ष, उन्माद आदि सञ्चारी थिक। सभागाछीक लोक आश्रय थिकाह। तेँ विभावादिसँ संवलित 'हास' सम्पूर्ण दर्शक-मण्डलीकेँ हँसीसँ लहालोट कय रहल अछि। काकु-कथन अपूर्व चमत्काराधायक अछि। भोजराजक रसोक्ति ओ उत्तमकाव्यक ई उत्कृष्ट उदाहरण थिक। मधुक पुटपाकसँ व्यंग्य रसायन बनि निशानापर बजरैत अछि।

विविध गीत (1988) अठारह गोट गीतक मधुरतम संकलन थिक। लगनी, उदासी, डहकन, लोकगीत, नृत्यगीत, गजल, विडम्बनागीत, स्वागतगीत, शृंगारगीत, युगलगीत, नव नचारी ओ महेशवाणी गीतक लघु चित्राधार एतय देखिते बनैछ। प्राचीनताक सौरभ देखबाक हो वा नवीनताक उन्मेष–दुहू एतय देखार अछि। प्राचीन भासपर लगनीक ई नव रूप दर्शनीय अछि–

लहरय घन कुन्तल माला,
नभ पर चढ़ि पावस बाला
लय बाढ़नि सतबढ़ना सबकेँ झाँटय रे की।
परुँको ने धान भेलै'
मडुए परिधान भेलै'
एहू बेरूक दिनकर दिन भरि डाँटय रे की!
रोपल गब कानि रहल छै'
चरुओ ने पानि बचल छै'
कापय कृषकक कोंढ़ कि धरती फाटय रे की।

प्रकृतिक प्रकोपसँ उत्पन्न अकालक ई दारुण दृश्य बड़ हृदय-विदारक अछि। रौद्रक पेटसँ बहरायल करुण रसक अभिव्यञ्जना एतय बड़ सटीक बैसैत अछि। क्रोध आ शोकक भावसन्धिक ई सुन्दर उदाहरण थिक। अनुप्रासक छवि-छटा ओ स्वभावोक्तिक सहज वेधकता दुःख-द्वन्द्वक संसार उधेसि दैत अछि। ''लय बाढ़नि सतबढ़ना सबकेँ झाँटय रे की'', ''एहू बेरूक दिनकर डाँटय रे की'', ''कापय कृषकक कोंढ़ की धरती फाटय रे की''– एहि तीनू पद्यमे उत्प्रेक्षाक चमत्कार अतिशय मुग्धकारी अछि। सतबढ़नासँ झाँटबमे पावसनटीक प्रचण्ड कोप तथा दिनकरक प्रचण्ड धाहीमे सौंसे संसारकेँ सुड्डाह कय देबाक कठोर दण्डविधान अछि। कृषकक कोंढ़ काँपब आ धरतीक फाटब करुणाक तलस्पर्शिता अछि। तेँ भावसन्धि, रसध्वनि ओ अलंकार ध्वनिक काव्यसौन्दर्य एतय सहृदयहृदयगम्य थिक।

नव नचारीमे हास्य-व्यंग्यक सुन्दर संयोग अछि। शिवक व्याजसँ एतय बगुला भगत बनल आजुक राजनेतापर मधुर व्यंग्य-बाण कसल गेल अछि–

शिव! ई बाना छोडू औ,
बेचू बूढ़ बड़द, लय ट्रैक्टर परती तोडू औ।
....
सक्रिय रहि कय राजनीतिमे जन-सम्पर्क बढ़ाउ,
अपने भाषण खूब करू, जनताकेँ काज अढ़ाउ,
पुरनका धारा मोडू औ।

शिवक व्याजसँ एतय आजुक राजनेतापर चोट कयल गेल अछि। व्याजस्तुति अलंकारक चमत्कार अछि। अपरिपक्व कार्य-योजना, दुष्ट क्रियान्वयन आ व्यवस्थाक कपटनाटक व्यंग्यार्थ अछि। वाच्य विधि रूप अछि आ व्यंग्य निषेध रूप।

मनोरंजन, संशोधन ओ चरित्र-निर्माण एहि हास्य रसक उद्देश्य थिक। नवयुगक विडम्बना ओ विसंगतिकेँ देखार करैत कान्तासम्मित सरसोपदेशक ई मार्मिक अंश एतय देखल जा सकैए–

रंग जमुनिञा, मुँह टुनमुनिञा,
देखलहुँ जे आँखि निड़ारि कनिञा,

सत्ते कहै छी अहाँ जे अयलहुँ
अङनामे अयलै बिहाड़ि कनिञा।।

....

छोटका बुचनू, बड़का भैया,
एके गाछक दू खपलोइया,
अहाँ सुलच्छनि चाहि रहल छी, तकरे दी पहिने ओदारि कनिञा।

....

हम सब बुझलहुँ लिखलि-पढ़लि छी,
मुदा अहाँ तँ चानि चढ़लि छी,
बोल ओल सन बाजी, क्यौ नेबो सकय नहि गारि कनिञा।

ननदि-भाउजिक एहि नोंक-झोंकमे नवयुगक शब्दचित्र ठाढ़ कय देल गेल अछि। आजुक कविताक दू पक्ष बड़ प्रबल अछि–अर्थग्रहण आओर बिम्बग्रहण। अर्थबोधमे स्वच्छ-सुलभ पारदर्शिता अछि। रूप-रंग, भाव-भंगी ओ उक्तिवैचित्र्यमे अपूर्व कौशल अछि। बिहाड़ि आनब, खपलोइयाक ओदारब, चानि चढ़ब आ ओलक बोलमे मानसबिम्बक सम्मूर्तन आ रूपायन अछि। विरोधमूलक अलंकारक सौन्दर्य एतय बड़ आकर्षक बनल अछि। कनिञाकेँ घरमे पैर रखिते विरोधक बीजारोपण, घरक मर्यादाक उल्लंघन आ कटुताक प्रदर्शन युगधर्म थिक। ओलसन कबकब बोलमे उपमाकौशल तँ आम बात थिक; मुदा ''क्यौ नेबो सकय नहि गारि कनिञा''मे सम्पूर्ण चमत्कार निहित अछि। 'एहन मातल हथिनी जे कोनो महतवारक आँकुश नहि मानय'–कनिञाक प्रकरणमे व्यंग्यार्थ थिक। वाक्य वा प्रकरण वक्रताक ई सटीक उदाहरण थिक-शिक्षित रहितो मर्यादा तोड़ब आ मूर्ख वा झगराउ बनबामे विरोधमूलक असंगति अलंकारक चटकार अछि। सानुप्रासता तथा प्रसाद-माधुर्य गुणक गौरव पूरा वातावरणकेँ गीतमय बना रहल अछि।

युगचक्र (1952) स्वातन्त्र्योत्तर भारतक सफलतम व्यंग्यचित्र थिक। युगचक्रक पहिल फेरा वा प्रथम कविता स्वदेशक प्रथमांक जनवरी 1948 मे प्रकाशित भेल छल जाहिमे क्रान्तिक लहरि आ निर्माणक व्याकुलता अछि। स्वतन्त्रतासँ लोकक बड़-बड़ लालसा जोड़ल रहैक। नव-नव सपनाक संसार लोक जोगौने छल। मुदा नेताक धुमसाही आ राजनीति-पिशाची सत्ताक तेहन ने उन्माद ओ भोगक उद्दाम लालसाक बजार पसारि देलक जे गाँधीक सुराजक सपना धराशायी भए गेल–

देखहक हौ गान्धी बाबा तोरो स्वराजमे
लाखो करै' छह काँहि काँहि हो!

जन-जीवनक गह-गहमे राजनीति दूबि जकाँ पैसि गेल। नेतालोकनि मटोमाट बनि सब हड़पि लेलनि। तेँ युगक विषमता-विसंगति पर तीव्र कशाघात करैत युगचक्र अपना समयमे प्रियताक शिखरपर रहल अछि। नौ चित्रक ई चित्रात्मक प्रदर्शनी धृतराष्ट्री व्यवस्थापर चलन्त संजयी गीतभाष्य थिक। पुनः युगचक्रक नवो गीतकेँ मिला 1974 मे 'उनटा पाल' नामेँ चौबीस गीतक संकलन प्रकाशित भेल। विविध रूप आ बहुरंगी छवि लेने ई युगक सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक ओ सांस्कृतिक विकृति-वैषम्यकेँ रेखांकित करैत अछि। सजग सांस्कृतिक चेतना, प्रबल वैचारिक क्रान्ति आ राष्ट्रिय अस्मिताक भास्वर स्वर एहिमे सुनल जा सकैए। प्रतिपल-प्रतिक्षण बदलैत परिदृश्यक ई विराट चित्राधार थिक। उनटा पाल अराजकता, मूल्यहीनता आ देश-दुर्दशाक सजीव प्रतीक थिक। एहि पालकेँ सुनटाए राष्ट्र-

निर्माण लेल कवि अपस्याँत छथि–

नचइत अछि कपारपर
पाथर अछि पड़ि गेल
सेहन्ताकेर पथारपर,
काक डकै' अछि, पहिने
पढ़ू एकर ई भाषा
आइ करक अछि निर्धारित
नीतिक परिभाषा,
ई समाज दिग्भ्रान्त
परम उत्फाल बनल अछि,
देशक नौकामे ई उनटे पाल तनल अछि।

राष्ट्ररूपी नौकाकेँ डुबाबक लेल उनटा पाल तनल अछि। माथपर विपत्तिरूपी पहाड़क नाचब, शत्रु-प्रहाररूपी पाथरक चोट बजरब तथा लालसारूपी पथार पर अमंगलरूपी काकक डकब अन्तिम चेतौनी (Alarming call) थिक। चेतू, नहि तँ डूबब अनिवार्य अछि। शीर्षकक सार्थकताक संग प्रतीक-योजना दर्शनीय थिक। रूपक अलंकारक अन्विति आ व्यंग्यार्थक विच्छित्ति उत्कर्षाधायक अछि।

पुनः युगक सजीव झाँकी एतय अंवलोकनीय अछि–

अल्पमतक बहुमतक सोहारी
बेलि रहल छथि सत्ताधारी,
नऽव नोथारी, भरि भरि थारी
पाबथि राजनीति व्यापारी
हाकिमकेँ बङला चौचारी,
मङनी जीप अनेर सवारी,
किन्तु कर्मचारीक लचारी
जनता गाबओ बैसि नचारी।
....
रंग-विरंगक एमेले अछि,
गाम-गाममे हूलेले अछि,
पगहा-पड़रू सहित पानिमे
ई महींस निश्चय गेले अछि,
दलबदलू सब सोचि रहल छथि
अदलि-बदलि दल हाथ सुतारी।

एतय सोहारी बेलब, नऽव नोथारी भरि भरि थारी ओ चौचारी बङलामे जे प्रपञ्च, विलासिता आओर कर्तव्यहीनताक ध्वनि अछि से सहृदय-हृदयगम्य थिक; मुदा ''जनता गाबओ बैसि नचारी''मे विषमालंकारक जे चमत्कारजनकताक उत्कर्ष अछि से वचोभंगिमामे चारि चान लगा दैत अछि। 'एमेले, हुलेले' आदिमे जे अनुप्रासक झमक आ 'रंग-विरंग, गाम-गाम' आदिमे जे यमकक दमक अछि से तँ सामान्य वैशिष्ट्य; मुदा ''पगहा-पड़रू सहित पानिमे ई महींस निश्चय गेले अछि'' मे जे वक्रोक्तिक छवि-छटा अछि से बड़ सौन्दर्याधायक थिक। भोजराजक वक्रोक्ति, रसोक्ति आ स्वभावोक्ति एतय एकाकार बनि नीर-क्षीर न्यायसँ संकर अलंकारक सम्मिलित सुषमा-सौरभ पसारि दैत अछि। कतहु रसभंग वा अनौचित्यक स्थिति नहि अछि।

प्रस्तुत पद्यमे हास्यरसक सुन्दर अवतारणा अछि। हासक पात्र थिकाह राजनेता वा एमेले लोकनि। आलम्बन रूप एहि सत्ताधारीक कपटनाटक, वणिज-व्यवसाय, भोग्य सामग्री, भ्रष्ट प्रशासन, गिरिगिट जकाँ रंग बदलब आ पाइ हसोथब आदि उद्दीपन विभाव थिक। लोकक खिलखिलाहटि, दाँत देखायब, भ्रू-भंग आ हाथ-पैर पटकब अनुभाव थिक। हर्ष, औत्सुक्य, अवहित्था, अमर्ष आदि संचारी थिक। श्रोता वा पाठक आश्रय थिकाह। तेँ विभावसँ विभाव्यमान, अनुभावसँ अनुभाव्यमान ओ संचारीसँ संचार्यमान 'हास' स्थायी रस-परिपाककेँ पाबि रहल अछि। हास्यक ई तिमन व्यंग्यक लौंगिया मेरचाइसँ छौंकल अछि। तेँ ई मिश्र वा जटिल हास्यरसक उदाहरण थिक।

ऋतुप्रिया (1963) प्रकृति-सौन्दर्य ओ ऋतुवैभवक काव्य थिक। कालिदासक ऋतुसंहार ओ सुमनजीक साओन भादवक तर्जपर ई मिथिलाक आञ्चलिक सौरभक संसार पसारैत अछि। मासक वर्णनमे सहज चित्रणक अपूर्व निखार अछि। प्रकृति-पर्यवेक्षणक क्रमहि मिथिलाक गाम-घर, बाध-बोन; विध-बेबहार ओ कलम-गाछीक मधुर दिग्दर्शन अछि। सतरह गीतक ई संकलन अपन निजता-अस्मिता, व्यंग्य-विनोद, वर्णन-कौशल, सूक्ष्मदृष्टिता, चित्रण-क्षमता ओ मनोरमतामे अपूर्व अछि। लोकजीवन ओ लोकसंस्कृतिक ई मूर्त चित्राधार थिक। संवेदनशील हृदयक ई मधुरतम उद्गार थिक। बारहो मासक प्रकृति-चित्र एकर विशेषता थिक। स्थालीपुलाक न्यायसँ किछु अंश देखल जा सकैए। पूस मासक हर्ष-अवसादक ई दुरंगी दृश्य कतेक सजीव अछि–

पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस
हरखैँ मुदा बियाहि लेल अछि
दू-दू टा बहु मूस
सोनक रङमे बाध रङल छल
सकल गृहस्थक मोन टङल छल
मनक कल्पना कोबर घर सन
रंग-विरंगैं रङल-ढङल छल

उपमा–कौशल आ सहजसिद्ध अलंकारक अभिनिवेश एतय काव्य-सुषमामे चारि चान लगबैत अछि–

दिवस सुटुकि बनला दोहा सन
रातुक पेट बढ़ल कोहा सन
उदयाचलपर रविक दीप्त मुख
लगइछ छनि धीपल लोहा सन
रातुक पलड़ा लऽत भेल आ
दिवसक पलड़ा झूस

जाड़क घानि लोकक दुःखदायक 'पूसकेँ 'पापी' कहब समीचीन। ई सुन्दर काकूक्ति थिक। धानसँ भरल अपन बीहड़ि देखि मूसक दू-दू टा बहु बिआहब (प्रसिद्ध लोकप्रवादक विनियोग) हास्यपूर्ण कौतूहलक विधायक थिक। ''सोनक रङमे रङल-ढङल छल'' प्रकृति-सौन्दर्य ओ हर्षोल्लासक मार्मिक दृश्यावली थिक। ''मनक कल्पना कोबर घर सन''–वाग्वैदग्ध्यक चमत्कार थिक। एहिसँ संयोग श्रृंगार आ रति वा प्रेमभावक रमणीय अभिव्यंजना होइछ। ''दिवस सुटुकि बनला दोहा सन–'' मे उपमा–कौशलक अपूर्व निखार अछि। ''दिवस-दोहा, पेट-कोहा, रविनुख-धीपल लोहा' मे पूर्णोपमाक विलक्षण शोभा अछि। अन्तिम अंशमे व्यतिरेकक छटा अछि जे दिनापेक्षया रातिकेँ भारी बनबैछ। प्रेम-हास, हर्ष-विषाद, दुःख-दैन्य आदि नाना भावक मिश्रण एतय भावशबलताकेर घी-खिच्चरि तैयार करैत अछि जे पूसक प्रिय पदार्थ थिक।

मनभावन साओनक रूपचित्रणमे रसराज श्रृंगारक अपूर्व भावविलास अछि–

आयल मास सोहाओन
साजल जलधर माला
तनने मेघक घोघ, गगनसँ
बिहुँसथि बिजुरी बाला

एतय ध्वनि-साम्य ओ पद-साम्यमे जे सांगीतिक झंकार अछि से प्रेम-साम्राज्यक पदार्पणक विजयोल्लास थिक। सुन्दर समागमक एहि सुमधुर घड़ीमे मेघक वन्दनवार सजायब कालौचित्य थिक; मुदा मेघक घोघ काढ़ने आकाशसँ मुग्धा कन्या बिजलौकाक मधुमुस्की छिड़ियबामे चमत्कारक पराकाष्ठा अछि। एतय 'रति'केर उत्कर्षक अनुरूप हर्ष, रोमाञ्च, संकोच, अवहित्था आदि मिश्रित भावक (भावसन्धिक) समुद्रेक अछि। रूपक ओ समासोक्तिक माध्यमसँ यौवनवती भावनामयी मुग्धाक समागम-लालसा ओ प्रणय-निमन्त्रण ध्वनित अछि। सहृदय सामाजिक आश्रय छथि। सुन्दर साओन मास आ रसमय परिवेश उद्दीपन अछि। नायिका बिजुरी आलम्बन थिकीह। नायिकाक मधुर मुस्की छोड़ब अनुभाव थिक। तैं रसदशाक सब उपकरण जुमि गेल अछि जे नायकक सौभाग्यक द्योतक थिक। प्रोषितपतिकाक व्यथा-कथामे वियोगक धाही भदवारिमे देखिते बनैछ–

जनिक पिया परदेशी से धनि
बैसल छथि मन मारि रे!
धह धह भीतर कौंढ़ जरइ छनि
बाहर अछि भदवारि रे!

एतय उद्दीपन रूपमे प्रकृतिक चित्रण अतिशय रसोत्कर्षक अछि। क्षुब्ध हृदयक करुण भावक तलस्पर्शी चित्र अछिः

झक झक सौंसे बाध करय
आ' लुकझुक खेतक आरि रे!
चकमक चानी पीटि देलक अछि
अबितहिँ ई भदवारि रे!

बाढ़िक दारुण प्रकोप दुःख-दैन्यक अम्बार लगा देलक अछि। हरियथ रीक संसार देखिते-देखिते पानिमे बिला

गेल। रौद्रक पेटसँ एतय करुणाक धार फुटैत अछि। क्रोध आ शोकक भावसन्धि रसावर्जक अछि। स्थिति-वैषम्यक शिल्प आकर्षक अछि।

मेघ कामरूप थिक–इच्छानुसार ओ अपन रूप बदलि सकैए। जखन साओन-भादवक मेघ पर्वताकार बनि जाइछ तखन ओकर उत्साह अकास ठेकि जाइत अछि–

पर्वत सन आकार बना घन
दमसि दमसि दमसाबय
दिगदिगन्तमे दिग्गज-दलकेँ
तमकि तमकि तमसाबय

क्रोध आ उत्साहक ई सुन्दर भावसन्धि थिक। मेघक उत्साह आइ देखिते बनैछ। घनघोर गर्जन-तर्जन, मुसलाधार बरखा आ कारी भुजंग रातिमे ठनकाक ठनकब आ रहि-रहि बिजलौकाक चमकब शत्रु-दलकेँ दलमलित कय रहल अछि। दशो दिशाक गजराजक चिङ्घारमे रौद्रक कुशल प्रदर्शन अछि। रौद्र वीरक मित्ररस थिक। तेँ दूध-मिसरीक ई घोल रसोत्कर्षक अछि।

कान्तासम्मितत्वक शैलीमे एतय महाजनीक गोरखधन्धापर दमगर चोट कयल गेल अछि–

मनहिँ महाजन जोड़ि रहल छथि
तरि तिलकोड़ा तोड़ि रहल छथि
नरक जाय हित अपनहिँ हाथेँ
बड़का खत्ता कोड़ि रहल छथि
लेब सवैया, उतरत ड्यौढ़ा
बौआ मुँहमे टूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

महाजनक मनोमोदक कचरब आ तिलकोड़ा तोड़ब, महाजनी वृत्तिक सफल व्यंग्यचित्र थिक। स्वभावोक्तिक सहज सौन्दर्य तँ चित्ताकर्षक अछिए; ''बौआ मुँहमे टूस''मे जे काकूक्ति ओ व्यंग्य-विच्छित्ति अछि से अनुगम्य थिक। ''पुत्रक प्रति मोहान्ध महाजन देवता एहन जघन्य कर्म नहि करथि''–ई ध्वन्यर्थ उत्कर्षक अछि। वीभत्स रसक स्थायी 'जुगुप्सा' भावक प्रदर्शनमे चरित्रोत्कर्षक सन्धान अछि।

'ऋतुप्रिया'क अध्ययन सिद्ध करैत अछि जे कविता रसात्मक अनुभूति थिक ओ अभिव्यञ्जना अभिव्यक्ति-सौन्दर्यक मूलधार। अमरजी विशुद्ध रसवादी ओ ध्वनिवादी परम्पराक अधिष्ठाता छथि; मुदा हुनक काव्य लोकज़ीवनक उपेक्षा नहि करैत अछि। लोक आ शास्त्रक यैह मणिकांचन संयोग हुनक सफलताक आधार थिक। लोकाराधन ओ संशोधन एकर उद्देश्य थिक। ऋतुचक्रक शास्त्रीय ओ बारहमासाक लौकिक परम्पराकेँ मिझरा मिथिलाक माटिपानिपर ऋतुप्रिया एक अभिनव मौलिक प्रयोग थिक।

शिल्प ओ कथ्य दुनू दृष्टिएँ आशा दिशा अमरजीक सृजनयात्राकेँ एक क्रान्तिकारी मोड़ दैत अछि। किछु गोटेक आक्षेप रहलनि जे हास्यक चटपटी चाशनीमे बोरल अमरजीक व्यंग्य अपन गंभीर प्रभावसँ चुकि जाइत अछि। व्यंग्यमे जे छिलमिलाहटि वा तीक्ष्ण वेधकता चाही से हँसीक फुहारमे कदाचित् कपूर जकाँ उड़ि जाइत अछि। आजुक हास्यमे

जे कुटिलता चाही जाहिमे दाँतक खिलखिलाहटि नहि, मस्तिष्कक वक्र स्मिति मुखर होइछ से प्रायः अमरजीक गढ़ नहि थिक। व्यंग्य आधुनिक कविताक केन्द्रीय स्वर थिक। बौद्धिकता एकर प्राण, वैज्ञानिकता आधार आ विद्रोह उग्र तेवर थिक। बहुत रास मार्क्स-फ्रायड एहिमे रचि-बसि गेल छथि, कीर्केगार्द हर्बर्टरीड घर बसौने छथि आ इलियट-रिचार्ड्स आँकुश लगौने छथि। अमरजीमे परम्परा ओ आधुनिकता तथा नव-पुरानक अपूर्व समन्वय अछि। ओ परम्पराकेँ उघैत नहि छथि, नव-नव प्रयोग द्वारा ओकरा युगक साँच पर ढालैत छथि जे विकास आ प्रगतिक दिशा-निर्देश करैत अछि। अतीतकेँ वर्तमानमे देखबाक इतिहासबोध हुनकामे छन्हि। लोकरुचिक आधार पर समसामयिकताक बोध छन्हि, तटस्थता ओ परम्पराक युगबोध छन्हि आ छन्हि बिम्बग्राहिता आओर सम्प्रेषणीयताक विपुल सामर्थ्य। तेँ अमरजी एज़रा पाउण्ड, टी. एस इलियट ओ आइ.ए. रिचार्ड्सक बहुत निकट छथि।

आशादिशा (1975) हताश-उदास ओ दुःखदग्ध मानव-समाजकेँ आशा-विश्वास आ निर्माणक नव दृष्टि तथा अभिनव दिशा प्रदान करैछ। सरल धारासँ निकलि ई गहन-गंभीर दिशाक संकेत करैत अछि। एहिमे किछु वायवीय नहि, सामाजिक यथार्थ ओ स्वस्थ जीवन-दर्शनसँ सबकिछु सम्पृक्त अछि। मानव-मूल्यक प्रतिष्ठा, वैचारिक प्रौढ़ता आ जीवनक प्रति तीव्र आस्था एकर गाढ़ निजता थिक। पैंतालीस कविताक जोरदार संकलन 'आशादिशा' अमरजीक काव्य-यात्राक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि थिक जतय गंभीर ओ उदात्त जीवनशैलीक सहज उन्मीलन अछि। अमरजीक प्रखर व्यक्तित्वक ई मुखर दस्तावेज थिक।

आशादिशामे व्यंग्यक स्वर तीक्ष्णतर भए गेल अछि–

शासन बेरोक, अनुशासनविहीन लोक,
भारतीय संस्कृति शीर्षासन करैत अछि
रासन पर जाहि ठाम जनता जीबैत रहय
भाषण पर ताहि ठाम उचिते मरैत अछि,
वासन हो पैघ आ सिंहासन दुरुस्त रहय
ताही लय डारि पात सभ दल धरैत अछि,
फाँटि पर चढ़ैत कते गोटी उफाँटि मुइल
सुधुआ पछड़ैत तथा बुधुआ ससरैत अछि।

भारतीय राजनीति आ प्रशासनिक व्यवस्थाक एतय कच्चा चिट्ठा उधेसि देल गेल अछि। सामाजिक अराजकता, सांस्कृतिक प्रदूषण आ नेतानगरीक सब तामझाम आ कपटनाटक एतय देखार अछि। संस्कृतिक शीर्षासन करब, शासनक बेरोकटोक चलब, जनताक रासनपर जियब आ भाषण पर मरब, सुफाँटि गोटीक उफाँटि बनब तथा सुधुआक पछड़ब आ बुधुआक ससरबमे विरोध-वैषम्यक कलात्मक प्रदर्शन अछि। विरोधाभासक चमत्कार आकर्षक अछि। अराजक वा नाममात्रक सरकारमे विरोधक परिहार अछि। 'पैघ वासन' भ्रष्टाचारक सटीक बिम्ब थिक। शीर्षासन-उनटा ठाढ़ हैब अपसंस्कृतिक उपयुक्त मानसचित्र अछि। उफाँटि-सुफाँटि गोटीमे मानवतन्त्रक दानवतन्त्रमे परिणति चित्रित अछि। 'वासन हो पैघ आ सिंहासन दुरुस्त रहय' मे व्यंग्य-वक्रोक्तिक चरम उत्कर्ष अछि। ई अंश आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्रीक प्रसिद्ध पंक्तिक संस्मृति जगबैत अछि– ''जनता धरती पर रोती
नभ में ऊँचा मञ्च खड़ा है।''

अस्तित्ववादी चिन्तनधाराक व्यक्तिवादी प्रवृत्तिक स्वेच्छाचारितापर चोट करैत कविक तर्कशक्ति द्रष्टव्य थिक–

साहित्य मुदा व्यक्तिक बलपर नहि चलि सकैछ,
छाहरि तर जनमल घास ओलरि नहि बढ़ि सकैछ,
ओकरा चाही सौंसे समाज-सूर्यक आतप
पवनक आलिंगन
जलक मधुर संस्पर्श तथा वसुधाक कोर,
षड् ऋतुक फराके छौबो रस।
अपना रुचिसँ भानस बनाय,
भरि गाम नोति जँ खोआ देबै'
तँ सुयशक बदला अयश होयत।
तेँ जँ समाजकेँ परसबाक किछु इच्छा हो
तँ अपना रुचिकेँ दाबि,
अहाँ जन-रुचिसँ परिचय प्राप्त करू।''

अर्थग्रहणमे पूर्ण पारदर्शिता अछि। कार्य-कारण भावक प्रक्रिया चिन्तनकेँ ठोस आधार दैत अछि। तर्कसंगत अनुमान एकर विशेषता थिक। रौद-बसात, माटि-पाइन ओ ऋतु-सम्पर्क घासक पौधक विकासक कारक थिक। तेँ बिनु कारण-समुदायक कार्यक कल्पनामे विभावना अलंकारक चमत्कार अछि। तहिना सुयशक कारण जन-रुचि थिक आ अपयशक कारण आत्मरुचि विहित कारणक उपेक्षा कय कार्यक कल्पना मूर्खताधायक थिक। तेँ व्यक्तिवादी आत्मरतिक तिलाञ्जलि दय समाजवादक धरातल पर आबथि–ई व्यंग्यार्थ सहज ग्राह्य थिक।

नवतावादी पर परम्पराक विखण्डनक तेहन ने भूत सवार छनि जो ओलोकनि सम्पूर्ण सांस्कृतिक सम्पदाक तण्डुलध्वंस करबामे जुमल छथि। अमरजी परम्पराक अन्धानुकरण नहि चाहैत छथि। मुदा हुनका भारी कचोट छन्हि जे लोक आँखि मुनि हरियरो गाछी मे आगि लगा रहल अछि–

कविता बेचारी मारलि गेलि अनचोके
मारलि गेलि कविता आ मरि गेलि कविता तँ
कवियोक जान छुटल पिङ्गल उनटयबासँ।
सम्प्रति तँ कविताकेर अङ्ग-अङ्ग चीरि-फाड़ि,
डाक्टरेट पयबामे लागल छथि अनुसन्धाता,
मम्मटसँ अम्मट घोरबा रहला प्रेमसँ,
दण्डी छथि दण्डित आ विश्वनाथ?
ज्ञानवापी मध्य कूदि भीतर सँ टुकटुक तकैत छथि।

कविताक मृत्युक वाच्यतामे पुनर्नवता आ पुनर्जागरणक मधुर संदेश अछि। कविताक शल्य-चिकित्सासँ पुनःप्रतिष्ठा ध्वनित अछि। छन्द-बन्धक निर्बन्धता–'अहो रूपम् अहो ध्वनिः' केर अपकविताक बाट फोलि देलक अछि। काव्यप्रकाश, काव्यादर्श ओ साहित्यदर्पण सन ग्रन्थकेँ बिनु बुझनहि-सुझनहि छुट्टी करब हास्यक रसाभास थिक। ''मम्मटसँ अम्मट - - - - - - टुकटुक तकैत छथि''– व्यंग्य-वक्रोक्तिक चरम उत्कर्ष थिक। एहि आक्रामकतासँ

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथक ज्ञानवापीक शरणमे बाँचब, ओकर उपयोगिताक उद्घोषक थिक। इनार-पोखरि-नदीक बदलामे काशीस्थित ज्ञानबापीमे विश्वनाथक कूदि जयबाक उक्ति कतेक गम्भीर अर्थ समेटने अछि से गहन चिन्तने सँ बोधगम्य होयत।

कविक जीवन-दर्शनकेँ एतय पढ़ल जा सकैए–

हम बुझैत छी–बिनु आदर्शें व्यर्थ मनुष्यक जीवन
दण्ड-भेदसँ भय न सकै' अछि शान्ति पथक अवलम्बन
हम बुझैत छी–भोग रोग थिक, योगे त्याग सिखाबय,
त्यागे थिक ओ तत्त्व मुनुजकेँ अमृतक स्वाद चिखाबय
हम बुझैत छी परमार्थेसँ मनुज मनुजता पाबय।

सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय अस्मिता, युवा-प्रबोध, मानववाद, आञ्चलिक सौरभ ओ मातृभाषानुरागिता आदि आशादिशाक बहुमुखी आयाम अछि। कवि घोर आशावादी छथि। तिमिराच्छन्न आकाशमे हुनका भोरुकवाक लाली सुझैत छन्हि। गान्धीजीक ग्रामराज्य, रामराज्य वा कल्याणराज्यक प्रति उद्‌बोधनक ई स्वर कतेक हृदयग्राही अछि–

सुनह हे समाज!
घुरह गामे दिस, भारतकेर आत्माकेँ
शुद्ध ओ प्रबुद्ध रूप पयबा लय
एखनहु विशाल हृदयवान लोक गामहिमे भेटथुन
ई नगर शुद्ध तुच्छताक मूर्ति थिक।

''कहू कुशल'' एहि संकलनक सर्वश्रेष्ठ कविता थिक जतय सामाजिक जीवनक त्रासदी ओ सम्बन्धवादक विडम्बना (ऑयरनी) पर तीव्र कशाघात कयल गेल अछि। कुशल-मंगल पुछबाक छुच्छ औपचारिकता कविक संवेदनशील हृदयमे आगि लेसि दैत अछि–

ई जीवन थिक बड़का जहाज,
जकरा ओइपार लगयबामे कोइला-पानिक पड़तैक काज
अन्हर-बिहाड़िमे संग देत
से सम्मुख अछि आन्हर समाज
स्वार्थक ज्वाला धुधुआय रहल तँ ककर पुछारी के करतै,
अपनासँ छुट्टी छैके ने ओ आनक हाथ-कोना धरतै'
जनिका मुट्ठीमे सत्ता छनि
तनिका कर शोभित छनि मूसल,
ओ नहि पुछैत छथि कहू कुशल,
जकरासँ जेम्हरे भेट होइछ
से सब पुछैत अछि कहू कुशल।

अर्थ स्फुट अछि। 'ई जीवन थिक बड़का जहाज'–बड़ ध्वन्यात्मक अछि। ई जन-जीवनक जटिलताकेँ प्रतिध्वनित करैछ। 'मूसल' आ 'कुशल'मे व्यंग्य-वैषम्यक यथार्थ अन्विति अछि। कुशल पुछबाक औपचारिकताक निर्वाह घावपर नोन छिटब थिक। घायल हृदय की बाजत? लोकक संवेदनाक धार सुखा गेल छैक, धूरा की फाँकत? उपचारक ऊखरिमे मूसलक चोट बजरैत छैक। तेँ के सहत कुशलक ऊखरिमे मूसलक एहन प्रहार? चुप रहू, अडेजि लियह ई नीतिवचन–

रहिमन या मन की व्यथा मन ही राखो गोय।
पुछि इठलैहें लोग सब बाँटि न लैहें कोय।।

कतेक मर्मव्यथा अछि? केहन तलस्पर्शी अछि व्यंग्यार्थ?

काव्यक द्विविध पक्ष अछि–कला पक्ष ओ भाव पक्ष। एकरा हम प्रकारान्तरसँ अनुभूति ओ अभिव्यक्ति कहैत छियैक। अनुभूतिपक्षमे रस, ध्वनि, गुण, रीति, अलंकार, औचित्य आदिकेँ लेल जाइछ। अमरजी रसवादी परम्पराक समर्थ हस्ताक्षर छथि। हास्यरसक तँ ई प्रतिष्ठित आचार्ये छथि। स्रक् सूत्रन्यायसँ आनो रसक मिश्रणमे ई सिद्धहस्त छथि। कतहु विरोध वा अनौचित्यक अकाण्ड प्रथन वा विच्छेद नहि अछि। दूध-मिसरीक घोल जकाँ हास्यमे व्यंग्य मिझरायल रहैछ। तेँ बहुशः व्यंग्यक वेधकता विनोदक सौरभमे बिला जाइत अछि। 'रसे सारः चमत्कारः'–केर अनुरूप अमरजी शुद्ध चमत्कारवादी छथि। 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्'– हिनक कलापक्ष वा भावपक्षमे प्राण फुकि दैत अछि। शब्द-शक्ति ओ अर्थशक्तिक विलक्षण तारतम्य हिनकामे देखिते बनैछ। 'वक्रोक्तिः प्रसिद्धाभिधानव्यतिरेकिणी विचित्रैवाभिधा' केर अनुरूप हिनक अभिधा प्रसिद्ध कथनसँ भिन्न विचित्र प्रकारक कथन थिक। कविक अपूर्व काव्य-कौशलसँ एतय विलक्षण चारुता वा चमत्कारक अभिव्यक्ति होइछ। 'वक्रोक्तिः वैदग्ध्यभङ्गीभणितिः'–काव्यशिल्पक मूलमे अछि। काव्यार्थ एहन हो जाहिमे चित्त रमण करय, लोकोत्तर आनन्दसँ अभिभूत भए जाय–ई 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' अमरजीक गढ़ थिक। रसवाद ओ ध्वनिवाद हिनक रचनाक सार थिक। एतय आबि सब प्रस्थान विरत भए जाइत अछि। ''न भावहीनोऽस्ति रसो न भावो रसवर्जितः''–एहि दृष्टिसँ अमरजीमे रस, भाव, रसाभास, भावाभास, भावशान्ति, भावशबलता, व्यभिचारीक उत्कर्ष, सात्त्विक भावक उदय आदि देखल जा सकैए। हिनक रचना समुदायमे रूपतत्त्व, वस्तुतत्त्व ओ विचारतत्त्वक समन्वय अछि। रसतत्त्व, भावतत्त्व, कल्पनातत्त्व, बुद्धितत्त्व आ शैलीतत्त्वक सुन्दर समाहार अछि। बिम्बग्रहण ओ अर्थग्रहणमे ई अनूप छथि।

अन्ततः दू शब्द अमरजीक भाषा पर कहब जरूरी थिक। बेन जॉनसन कहैत छथि–''मनुष्यकेँ सबसँ बेसी ओकर भाषा प्रस्तुत करैछ। बाजू, जाहिसँ हम अहाँकेँ चीन्हि सकी।'' भाषा अभिव्यक्तिक सर्वोच्च माध्यम थिक। लोककेँ सबसँ बाढ़ि यैह प्रदर्शित करैत छैक। अमरजीक भाषा ठेठ मैथिलीक ठाठ अछि। ई अपन सहज-स्वच्छन्द संवेगमे सीताराम झाक समकक्ष अछि; मुदा अपन शिल्पकौशल, रंग-टीप-आ व्यंग्य-वक्रोक्तिमे ओ बहुत आगाँ निकलि जाइत अछि। शब्द-अर्थक सहितत्व, वाग्वैदग्ध्य, चित्रमयता, भावाभिव्यञ्जना ओ वचोभंगिमा हिनक निजी वैशिष्ट्य थिक। कविता शैलीक ओ चमत्कार थिक जे अर्थकेँ संप्रेषित करय। शब्द हिनक मानसक ओ छायाचित्र थिक जे सम्पूर्ण पारदर्शिताक संग अर्थक अमिट छाप छोड़ैत अछि। सहज दीप्ति, उन्मुक्त प्रवाह आ तीव्र संवेग लेने हिनक चलैत-फिरैत भाषा भावक बजैत-भुकैत चित्र थिक। गीत हिनक कविताक भावात्मक सार थिक आ कविता राग ओ लयक चरम उद्‌गार। छन्दमुक्त रहितो हिनक कविता लयात्मक आछि– तुक छोड़ितो रागात्मक अछि। अमरजी जखन सहज रहैत छथि तखने ओ सर्वोत्तम लगैत छथि। आशादिशाक बहुतो कविता चिन्तनशील प्रतिक्रियामे कृत्रिम ओ अनभुआर लगैत अछि। निसर्गसिद्ध हिनक शब्द घण्टाध्वनि जकाँ कानमे पड़िते देरी अर्थकेँ प्रतिध्वनित करैत रहैछ। जहिना सुखायल लकड़ीमे चारू कात आगि देखिते-देखिते लहरि जाइछ तहिना हिनक व्यञ्जक शब्द अर्थबोध तक्षण करा दैत अछि। तेँ प्रसाद गुण अमरजीक कविताक सर्वस्व थिक। अनुप्रास-यमक हिनक सृजन-यात्राक पग-पगमे मधुर ध्वन्यात्मकतनाक संचार करैत अछि। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा, वक्रोक्ति, समासोक्ति,

व्याजस्तुति आदि हिनक प्रिय अलंकार थिक। लोकोक्ति, मोहावरा, व्यंग्योक्ति (ऑयरनी) ओ गाम-घरक शब्द हिनक भाषामे अपूर्व बाँकपन आ तेवर लबैत अछि। तैं सरस्वतीकण्ठाभरणक ई वक्तव्य काव्यचेतनाक महान पुरोधा श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' केर काव्यरचनाक सार थिकः–

वक्रोक्तिश्च रसोक्तिश्च स्वभावोक्तिश्च वाङ्मयम्।
सर्वासु ग्राहिणीं तासु रसोक्तिं प्रतिजानते।।

कविता वाणीक विलास नहि, युगजीवनक सजीव दर्पण थिक। अमरजी सन चतुर शिल्पी आ युगचेता बोद्धा कलाकार कोनो साहित्यकेँ बड़ भागसँ भेटैत छैक। संसार परिवर्तनशील थिक। तैं सृष्टिक चक्का कोना जाम रहत–

बाजओ जग युग-चक्रक चक्कर
अँटकत नहि, ई चलत निरन्तर

युगचक्र आ उनटा पालक प्रासंगिकता एखनो बनले अछि। धृतराष्ट्री व्यवस्थाकेँ जाहि सञ्जयक आँखिए अमरजी देखलनि अछि से हुनका अमर बनयबाक लेल अलम् अछि। राम-रावण आ कौरव-पाण्डवक युद्ध होइत रहल अछि, होइत रहत। राजनेताक पैशाची वंचकतापर मानवताक चोट बजरिते रहतः–

पदलोलुप सब लोक भेल अछि,
निस्सन जे छल फौंक भेल अछि
त्यागक मन्त्र सिखाबय अनका
आ अपने घुसकान दैत अछि

....

विष्ठी लय दतखिष्टी जकरा,
जोड़ा बड़द द्वारिपर तकरा,
घरक निकलुआ राजनीति
सागरमे सब बुड़कान दैत अछि।
हमर कथा केओ कान दैत अछि। (युगचक्र)

उनटा पालमे युग-चक्रक गति तीव्रतर आ प्रश्न-काकुक धार तीक्ष्णतर भए जाइछ–

जनता की, जनता थिक गोबर,
नेता लोकनि सजाबथु कोबर,
दुर्लभ सकल वस्तु सुलभे अछि
रहय टैंटमे केवल दोबड़,
सरकारी गाड़ी भय गेल उटंग छै।'
ई अजगुत कोन पुरनके सबटा रंग छै।।'

विडम्बना-विसंगतिक ई व्यंग्य-चित्र आजुक लेल आर संदर्भित अछि। सामाजिक प्रबोध, सांस्कृतिक जागरण आ राष्ट्र-निर्माणक पथपर अग्रसर युगसत्यक महान उन्नायक श्री अमरक विद्रोह आ प्रगतिक ई स्वरभंगिमा अमर रहत।

●

अमरजीक काव्यमे हास्य

डॉ० जगदीश मिश्र

प्रायः 1980 ई०क वसन्तक समय छल। कटिहार हाइ स्कूलक प्राङ्गणमे विद्यापति-पर्व आयोजित रहैक। पूर्णियाँसँ श्रद्धेय डॉ० मदनेश्वर मिश्र, डॉ० विश्वेश्वर मिश्र ओ हमहुँ ओहि आयोजनमे सम्मिलित भेल रही। विचार-गोष्ठीक बाद सायंकाल कवि-सम्मेलनक कार्यक्रम प्रारम्भ भेल रहए। कवि-सम्मेलनक अध्यक्षता कए रहल छलाह प्रख्यात कवि पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। किछु काँच किछु पाकल कविताक रसास्वादन किछु काल धरि तँ नागर श्रोता लोकनि धैर्य धारण कए कएलैन्हि किन्तु शीघ्रे हुनका लोकनिक धैर्यक बान्ह टूटि गेल। नव कविताक अति बौद्धिकताक कारणेँ वा श्रोता लोकनिक अरसिकताक कारणेँ कहू ओ लोकनि काव्य-श्रवणसँ विमुख भए मन्द स्वरेँ परस्पर वार्तालापमे डूबि जाइत गेलाह। विशाल पण्डालमे जनसमूहक कनफुसकी अविराम चलिए रहल छल। एकटा अद्‌भुत हास्यास्पद दृश्य समुपस्थित छल। किन्तु तखनहिँ दृश्य परिवर्त्तित भेल। समस्त पण्डाल वाक्‌शून्य, स्तब्ध भए उठल। श्रद्धेय अमरजीक मुखसँ निःसृत ई बोल ''ड्रेन पाइप ठढ़मुत्ता चाही'' कर्णगोचर होइतहिँ समस्त पण्डाल ठहाकासँ गुंजित भए उठल, भलहि आचार्य लोकनि एकरा ''अपहसित वा अतिहसित'' कहथु। आ, आधा घण्टा धरि श्रोतालोकनि हास्यरसक धारमे निमज्जित होइत रहलाह। प्रायः संस्कृत साहित्य शास्त्रक सभ आचार्य जन-मन-रंजनकेँ काव्यक एक प्रमुख लक्ष्य मानैत रहलाह अछि। ओ एहि दृष्टिएँ हम तँ कहब जे श्रद्धेय अमरजीक काव्यसँ जतेक लोक आह्लादित-उल्लसित भेल अछि ततेक मैथिलीक आधुनिक कालक विरले कविक रचनासँ भेल होएत ओ एकर एकमात्र श्रेय अछि हिनक हास्य रसक काव्यकेँ।

मैथिली कविताक क्षेत्रमे 'हास्य'क चित्रण दू ढंगेँ कएल गेल अछि–प्रथम आचार्य भरत द्वारा उक्त 'विभावानुभावसंचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः' केर शास्त्रीय ढंग पर तथा दोसर स्वतन्त्र रूपेँ वर्ण्यविषयक विद्रूप वर्णन द्वारा हास्यक सृष्टि कए। हास्यक वर्णन शास्त्रीय ढंगेँ मैथिलीक मुक्तक काव्यमे थोड़ भेल अछि। कारण स्पष्ट अछि। मुक्तकक छोट कलेवरमे विभाव अनुभाव ओ संचारीभावक संयोग विरले भए पबैछ। ठाम-ठाम विभाव, अनुभाव ओ संचारीभावमे सँ कोनो एके वा दू तेना उपन्यस्त रहैछ जे एकहु सँ रसक प्रतीति भए जाइत छैक। साहित्य-शास्त्रमे हास्यरसक प्रसङ्ग कहल गेल अछि जे–

''विकृताऽऽकारवाक्‌चेष्टं यमालोक्य हसेज्जनः
तदत्राऽऽलम्बनं प्रोक्तं तच्चेष्टोद्दीपनम्मतम्।
अनुभावोऽक्षिसङ्कोच-वचन स्मेरतादिकः
निद्राऽलस्याऽवहित्थाद्या अत्रस्युर्व्यभिचारिणः।।''

कोनहुँ व्यक्तिक विकृत आकार, वेष वा वाणी सँ हृदयमे जे भाव जाग्रत होइछ से 'हास' कहबैछ ओ इएह हास विभावादिक संयोग भेलासँ 'हास्यरस'क रूपमे सहृदयसंवेद्य होइछ। 'हास' एकर स्थायी भाव तथा पाठक श्रोता वा दर्शक कँ आश्रय मानल जाए सकैछ। विकृत आकार, वेष ओ वाणी बला व्यक्ति आलम्बन तथा आलम्बनक चेष्टा उद्दीपन होइछ। आँखिक सङ्कोच, ठोर पटपटाएब ओ दाँत देखाएब अनुभाव ओ आलस्य, हर्ष, चपलता आदि संचारी भाव थिक। आब सर्वप्रथम पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क काव्यसँ हास्य रसक एक गोट उदाहरण देखल जाए–

''उठत नियन्त्रण भारत वर्षक
सुनलक बात जखन ई हर्षक
बनिञा आ' टुटपुजिया नेता
सब कोठी अजबाड़ि रहल अछि''।

एतए आलम्बन थिकाह टुटपुजिया नेता ओ बनिञा, नियन्त्रण उठबाक कथा उद्दीपन, कोठी खाली करब अनुभाव तथा हर्ष ओ चपलता संचारी भाव थिक। ऊपर वर्णित विभावादिसँ पुष्ट स्थायी भाव 'हास' हास्य रसक रूपमे ध्वनित होइछ। स्थालीपुलाक न्याय सँ अमरजीक काव्यमे हास्य रसक परिपाक एहिना ऊह्य थिक।

आइ सँ छौ दशक पूर्व प. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे एक कविक रूपमे प्रवेश कएने छलाह। सर्वप्रथम 'चश्मा' शीर्षक हिनक रचना मिथिला-मिहिरमे 1941 ई०मे प्रकाशित भेल छल। हिनक प्रथम कविता-संग्रह 'गुदगुदी' सन् 1353 सालमे नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा द्वारा प्रकाशित भेल रहए। प्रकाशित होइतहिँ ई पोथी ततेक ने लोकप्रिय भेल जे अमर जी हास्य रसक लब्ध-प्रतिष्ठ कविक आसन पर तहिए आसीन भए गेलाह। एहि संग्रहमे पन्द्रह गोट कविता अछि जाहिमेसँ अधिकांश हास्य रसहिक थिक। विख्या बनल 'बुढ़बाक कका'कैँ आलम्बन बनाए अमरजी जे हास्य रसक सृष्टि कएल अछि से सहृदय संवेद्य अछि। देखल जाए–

शुद्धक समय समीप अएलापर 'बुढ़बाक कका'क धैर्यक बान्ह टूटि जाइत छैन्हि–

'अंतर आकुल, बाहर आकुल
आकुल रोमावलि, स्वेदक कण–
बन-बन मुखपर, भ्रूपर आकुल''।

मुदा शारदा-एक्टक कारणेँ हुनक अभिलाषा पर तुषारपात होइत देखि टोल-पड़ोसक लोक हुनका सँ रुपैआ झीटए चाहैत छल। हुनका आश्वासन दैत छलैन्हि–

''तेँ की विवाह, नहि हैत? वाह!
से की कहैत छी? आगि देखौने
कत्तहु नहि नमरैक लाह?''

बुढ़बाक कका सजि-धजिकए सौराठक सभा-गाछी पहुँचलाह। चारिम विवाहक लेल उताहुल एहि बूढ़ वर सँ जखन नौ सए रुपैआक माङ कएल गेलैन्हि तँ ओ बिगड़ि एहि प्रस्तावकेँ अस्वीकार कए देलथिन्ह। एही बात पर झगड़ा ओ पछाति छत्ताक संघर्ष प्रारम्भ भए गेल। बूढ़ाकेँ सुझितो कम छलैन्हि ओ केओ उचक्का बूढ़ाक बटुआ पार कए देलकैन्हि। तत्पश्चात्–

''एमहर तकलन्हि
ओमहर तकलन्हि
गाछीकेँ कणा-कणा तकलन्हि
जेबी तकलन्हि, पेटी तकलन्हि।
सब छल अवाक
सब छल फराक
अन्तिम बूढ़ा बाप बाप कहि
मारल कसि कए डबल हाक।''

बूढ़ाक मनोदशाक विलक्षण वर्णन एहि रूपेँ कएल गेल अछि–

''लुलुआएल सन
विधुआएल सन,
मुखड़ा छल काँचे बाँसक ओ
चोटकलहा पोर सुखाएल सन''।

तथा–

''खन सिट्ठी, खन
दलिपिट्ठी सन,
मूँहक मुद्रा बदलैत रहल
काँचे तेतरिक खटमिट्ठी सन''।

एहिमे विभावादि सँ पुष्ट स्थायीभाव 'हास' हास्यरसक रूपमे ध्वनित भेल अछि जे सहृदय सम्बेद्य अछि। ध्यातव्य जे वाणी ओ अंग आदिक विकार जन्य चित्तक विकास हास कहबैछ।

वर्ण्य विषयक विद्रूप वर्णनक द्वारा हास्यक सृष्टि करबामे प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सिद्धहस्त छथि। किन्तु हिनक हास्यक रचनामे कतहु तिक्तता नहि, सर्वत्र रसिकता वा विनोदप्रियतेक दर्शन होइछ। प्रोफेसर साहेबक वर्णनमे 'हास्य' केहन अछि से द्रष्टव्य थिक–''कसिकए मेहनति दू मास करी,
तँ मूर्खताक जड़ि नाश करी।
कलिकलि, वा हौहटिकैँ जहिना
जड़िसँ निर्मूल करए 'सलफर'।
हम प्रोफेसर।।

सम्पादक जीक प्रसङ्ग कविक उक्ति-भंगिमाकैँ देखल जाए–

''साहित्य पढ़ल किछु कमे बेस
व्याकरणके तँऽ अछि मात्र लेश
आबथि तथापि पहिने हमरे
लग ग्रन्थकार ओ अनुवादक।
हम सम्पादक।।''

संस्कृतक अध्यायकक मनोभाव एहि रूपेँ व्यक्त भेल अछि–

''हम 'अइउण ऋऌक्' रटल जखन,
कप्पार दरिद्रा सटल तखन।
दश वर्ष परिश्रम कएला पर-
दश टका भेटए ई फल पापक।
हम अध्यापक।।''

एडवोकेट साहेबक परिचय अमरजी एहि रूपेँ करबैत छथि–

''ओकील हाय! मोकील बिना
कोकिलक संग छी कूकि रहल।
चातक बनि स्वाती बुन्द टका पर
ध्यान गाड़ि, छी झूकि रहल।।''

एहिना 'अल्हुआष्टक', 'कलिकलि', 'मोँछ', 'कंसारमे बी.ए.' आदि कविताक हास्यक आह्लादसँ पाठक वर्ग आइ धरि आह्लादित होइत रहलाह अछि। एहि सबमे विषयक विद्रूप वर्णन द्वारा हास्यक सृष्टि कएल गेल अछि।

'युगचक्र' अमरजीक दोसर कविता संग्रह थिक जकर प्रकाशन 1952 ई० मे दरभङ्गा सँ भेल छल। एहिमे नओ गोट फेरा (कविता) अछि। आकार मे लघुकाय ई संग्रह गुणवत्ताक प्रकारमे अद्भुत अछि, विलक्षण अछि। जेहने एहिमे भाव-पक्ष वा वर्ण्य-विषय विलक्षण छैक तेहने कला-पक्ष वा अभिव्यञ्जना-कौशल चमत्कारक छैक।

आचार्य मम्मट काव्यक वर्गीकरण करैत कहल अछि जे—

''इदमुत्तम मतिशायिनी व्यङ्गे वाच्याध्वनिर्बुधैः कथितः
एतादृशि गुणीभूत व्यङ्गंव्यङ्ग्येतु मध्यमम्
शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरम् स्मृतम्''।

ओ एहि कसौटी पर युगचक्रक कविता सबकेँ 'उत्तम काव्य' कहल जाए सकैछ। कारण एहिमे ध्वन्यात्मकता, रसात्मकता, अलंकारक चारुता ओ भाषाक प्रासादिकता तँ छैके, सङ्गहिँ समाजकेँ आदर्शोन्मुख बनएबाक भव्य निदर्शन सेहो दृष्टिगोचर होइछ जे सत्साहित्यक प्रमुख लक्ष्य होइछ।

सामाजिक यथार्थक एहि विलक्षण चित्रमे अंकित हास्यकेँ देखल जाए—

''पकड़ि बेङकेँ आइ फतिंगा
सहजहिँ लाभ कराबै गंगा
बनबिलाड़केँ रंग-मंच पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि।
जगकेँ युग परतारि रहल अछि।।'' तथा—
''छन्हि लगि रहल सभकेँ संचर
रस्तहिँ भेलाह बहुतो पंचर
बिन सुलेसनहिँ हड़बड़ हड़बड़
बिनु तकनहिँ छिद्र सटै छथि सब।''

परतन्त्रताक तिमिराच्छन्न क्षितिजपर स्वतन्त्रता-सूर्यक रश्मिराशिक आलोक पसरितहिँ बरिसाती बेङ जकाँ स्वयंभू राजनेता लोकनिक आविर्भाव भेल। एहने राजनेता लोकनिक विद्रूप वर्णनक द्वारा हास्यक सृष्टि युगचक्रक पाँचम फेरामे कएल गेल अछि। किन्तु एहिमे हास्यक संगहिँ मार्मिक व्यङ्ग्य सेहो निहित अछि। देखल जाए—

''हमर कथा क्यौ कान दैत अछि!
जे खोपड़ी छरबा न सकइ छल
से सब आइ मकान दैत अछि।''
'जकर सुखैल छलैक'छि भोटी
जे तकैत छल गूड़ा-रोटी
सेहो सब अपना कुकूरकेँ
जलखइमे पकमान दैत अछि।''
''जे मकैक नेढ़ा तकैत छल
से सब ऊँच मचान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि।''

''विष्ठी लै दँत-खिष्ठी जकरा
जोड़ा बड़द द्वारि पर तकरा
घरक निकलुआ राजनीति
सागरमे सब बुड़कान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि?''

महादेवकें आलम्बन बनाए हास्यक सृष्टि करबाक परम्परा मैथिली साहित्यमे बड़ प्राचीन अछि। हुनक वस्त्राभूषण, भोजनभात ओ गृहस्थी आदिकें विभावादि बनाए कविलोकनि हास्य रसक बहुतो रचना कएने छथि। एही परम्परामे श्रद्धेय अमरजीक निम्नलिखित पंक्तिकें देखल जाए जाहिमे कविक मौलिकताक दर्शन होइछ–

''आके धुधुर खाथु ने बैसल
तनिको पेट दरिद्रा पैसल
महादेव छथि बज्र बूढ़
जग जनिका अढरन-ढरन बुझइ छल
घोंटिघाँटि तनिको लै राखू
अच्छत फूल निंघास करइ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि।''

प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' विनोदी स्वभावक कवि छथि ओ तें जखन गम्भीरो विषय पर रचना करए लगैत छथि तँ हिनक विनोदप्रियता अनायासे परिलक्षित भए उठैछ। देखल जाए ई पंक्ति–

''पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस
हरखें मुदा बिआहि लेलक अछि
दू दू टा बहु मूस।''

तथा– ''थिका सब दिनक घाघ तों
जे मरहन्ना अगहन पौलक
ढन ढन तकर बखारी
जाड़ें कपइछ कौंढ़, ताहि पर
ई पुरिबा फौदारी?'' एवं–
''डिहवारक खूर बिना पुजने पीड़ाक पहाड़ कोना ढहतइ?''

प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक 'उनटा पाल' मे तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित हास्यक ततेक रचना अछि जकर चर्चा एतए विस्तार भयें नहि कएल अछि।

●

अमरजीक काव्यमे सामाजिक चेतना

डा० नीता झा

पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आधुनिक मैथिली साहित्यक एक एहन हस्ताक्षर छथि जे मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक अभ्युदयमे आइ साठि वर्षसँ अनवरत लागल छथि। तेँ एतबा दिनमे जतय कतहु मिथिलाक गौरवक चर्चा भेल, मैथिलक उत्कर्ष पर विचार भेल अथवा मैथिली साहित्य सर्जन-सम्बर्द्धनक अवसर आयल, अमरजीक उपस्थिति अनिवार्य।

जहिआ अमरजी रचनाशील भेलाह, एहि ठाम स्वतंत्रता आन्दोलन जोर पकड़ने छल। आ, तकर बाद दिन प्रतिदिन राजनीतिक जागरण, शासकीय अस्थिरता, आर्थिक संकट, धार्मिक असहिष्णुता, सामाजिक मान्यतामे परिवर्तन, रौदी, दाही, गरीबी, बेरोजगारी, महगी, बैमानी आ घुसखोरी–कहबाक तात्पर्य जे सम्पूर्ण सामाजिक राजनीतिक आर्थिक ओ सांस्कृतिक परिवर्तनक अमरजी प्रत्यक्ष द्रष्टा छथि। एहि सभ स्थितिक चित्रण एक टा भोक्ता जकाँ अपन काव्यमे कयलनि अछि।

अमरजी आधुनिक मैथिली साहित्यक सभ विधाक सशक्त आ सफल स्तम्भ छथि, मुदा एक पण्डित परिवारक युवक अमरजी सर्वप्रथम कविते लऽ कऽ मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयने छलाह। ओसभ कविता हास्य आ व्यङ्ग्यसँ पूर्ण छल। हिनक ओ कविता सभ पाठक आ श्रोताक मन-मस्तिष्क पर तेहन गहन प्रभाव छोड़लक जे ई लगले प्रथम कोटिक लोकप्रिय कवि भय गेलाह। हिनक ओहि कविता सभक स्वरूप हास्य तँ अवश्य छैक, परन्तु से बहिरंग थिकैक। ओकर सभक अन्तरंग स्वरूप व्यङ्ग्य थिकैक ओहि सभ कविताक शब्द योजना आ भाषा अवश्ये हास्य उद्वेजक छैक, मुदा ओकर अर्थमे जे गंभीरता आ भावमे जे तीक्ष्णता छैक, से सामाजिक विरूपता पर आघात करैत छैक। सामान्य जनक मनोभावक संवाहक बनि अमरजी जनचेतनाक कवि सामाजिक चेतनाक कविरूपमे स्थापित भेलाह।

हिनक पहिल कविता-संकलन 'गुदगुदी' थिक, जे व्यंग्य-गर्भित हास्य रसक कविताक रूपमे घोषित भेल छल। मुदा, आधारभूत वर्ण्यवस्तुक रूपमे वर्णित भेल छल भूख, बैमानी, अन्याय, सामाजिक वैषम्य, मिथ्याचार, घूस आ सभागाछीक विकृति सन-सन विषय। ओ समाजकेँ ने बिठुआ कटलनि आ ने तँ थापर-मुक्का मारलनि। केवल गुदगुदी लगा देलथिन जाहिसँ बलात् हास्य प्रकट भऽ जाय। हँसबाक स्थिति नहि छल, तेँ गुदगुदी लगयबाक प्रयोजन भेल जाहिसँ हास्यक कारणभूत वस्तुक विसंगति दिस समाजक ध्यान केन्द्रित भए सकए।

लोककेँ भूख सहन नहि होइत छैक। ओहि हेतु लोक सभकिछु बेचि लैत अछि। अकालमे भूखक ज्वाला सँ दग्ध होइत लाखो मिथिलावासी जनकेँ अल्हुआ प्राणरक्षक साधन बनि गेल छल जे खेतक उपजा ओ खाद्य पदार्थक रूपमे सभसँ हीन मानल जाइत छल। अतः ओकर उक्ति छलैक–

''पति राखन अल्हुआ नाम हमर
अछि नाम अधिक बदनाम हमर''
''सम्मुख कुदि पड़लहुँ सकरकन्द
तेँ पाबि रहल आराम शहर।''

तहिआ अल्हुआ निम्न आय वर्गक लोकक मुख्य आहार छल। भूख मेटाओल जाइछ अन्नसँ, परन्तु तहिआ केवल अल्हुआ आधार रहैक। भूखक संकटक समाधान अल्हुआ कयलक। 'पति राखन अल्हुआ' एखन फलाहारक

वस्तु भऽ गेल अछि।

परिवार-समाजमे कलह सभ दिनसँ होइत रहल अछि। तकर निदानो सामाजिक स्तर पर होइत रहैक। पश्चात् अपराधक निर्णय आ तकर दण्डविधान बनल। तकर निष्पादन हेतु कोर्ट-कचहरी, ओकील न्यायाधीशक व्यवस्था भेल। तकरा देखि कवीश्वर कहने रहथि–

''न्यायक भवन कचहरी नाम
सभ अन्याय भरल तेहि ठाम।''

अमरजी एहि कचहरीक चित्र ओकर महत्त्वपूर्ण अंग ओकीलक माध्यमसँ प्रस्तुत कयलनि। व्यञ्जनामे क्हल गेल सामाजिक स्थिति एहूमे सजीव अछि। समाजमे आनो आन बातक प्रचार-प्रसार बड़ तीव्रतासँ भेल छल। ओहिमे किछु हितकर आ किछु अहितकर–

''की जनै छिऐ, की बुझै छिऐ,
हमहूँ सभ तँ दिन राति कका,
अखबारे टाकँ धुनै छिऐ
जँ देतै खबरि तँ जेबै ससरि,
हाकिमक हाथ दस-बीस टका दय,
ओकरे लगमे जेबै नमरि।''

एहिमे समाचार बुझबाक चेतना, अखबार पढ़बाक लुतुक नीक संकेतक संवाहक अछि तँ हाकिम पर्यन्तमे दस-बीस टकाक घूसक चलनि अहितकर। 'ससरब' आ 'नमरब' बहुत व्यापक अछि। एकाधिक बात तथ्यक खुलासा करैत अछि। एतादृश सामाजिक परिवर्त्तनक सूचना अमरजी अपन कविताक माध्यमसँ देब प्रारम्भ कयने छथि। ओहि समय धरि ई सभ विषय साहित्यमे धुरझार नहि आयल छल। आयलो छल तँ एहन हृदयग्राही रूपमे नहि छल। तेँ हिनक कविता सभकेँ एकटा नव रूपक सामाजिक चेतनाक कविता मानल गेल छलैक।

समयक गतिक संग सामाजिक परिवर्तनक चित्र 'युगचक्र' थिक।

''जगकेँ युग परतारि रहल अछि। एमहर ओमहर के तकैत अछि अपने हाथ सुतारि रहल अछि।'' युगचक्रक मूल धर्म व्यक्तिनिष्ठ भऽ गेल अछि। आन दिस देखबाक, ओकरा विषयमे सोचबाक, किछु करबाक पलखति ककरो नहि छैक। सभ अपन स्वार्थमे, अपन हितसाधनमे निमग्न अछि। आर्थिक विकास भेलैक। गरीबोकेँ किछु उसास भेलैक। एहि स्थितिकेँ अमरजी एना व्यक्त कयलनि– ''बिष्ठी लए दतखिष्ठी जकरा, जोड़ा बड़द द्वारि पर तकरा।'' पहिने गरीबी अर्द्धनग्न लोकसँ बूझल जाइत छल। आब से स्थिति नहि अछि। तकर कारण अमरजीक दृष्टिमे श्रमशक्ति ओ कृषकवृत्ति अछि। एहि बातकेँ भारतक पूर्व प्रधानमंत्री स्व० लाल बहादुर शास्त्री 'जय जवान जय किसान'क नारा दऽ कऽ स्वीकार कयने रहथिन। तकर महत्ताकेँ जन-जन धरि पहुँचओने रहथिन। सामाजिक स्थितिमे जनशक्तिक वर्चस्वकेँ महत्त्वपूर्ण मानलनि अमरजी– ''पकड़ि बेंगकेँ आइ फतिंगा, सहजहि लाभ कराबय गंगा।'' सामन्ती व्यवस्थाक प्रतीक बेंग सम्पूर्ण जलाशयमे उन्मुक्त बिहार करैत अछि। फतिंगा सन दुर्बल जनसमाज सामूहिक शक्तिक बल पर ओकर दुर्दशा कय रहल अछि। आगाँ और कहैत छथि–

''बनबिलाड़िकेँ आइ मंच पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि।''

सम्प्रति समाजमे क्षण-प्रतिक्षण जे घटित भऽ रहल अछि तकरा प्रत्यक्ष अमरजी बहुत पूर्वहि विशेष दृष्टिसँ देखि लेने रहथि आ अमरजीक ओ व्यक्तिचेतना एखन सामाजिक चेतनाक स्वरूप लऽ कऽ सर्वत्र व्याप्त अछि।

एहि दुनू काव्यसंकलनसँ भिन्न 'ऋतुप्रिया' छैक। ओना थिक ई बारहमासा, मुदा, एहिमे सामाजिक चेतनाक जे भाव प्रकट भेल अछि से हिनक पूर्वक कविता सभसँ भिन्ने नहि अछि, बल्कि हिनका बहुत ऊपर उठाय देने अछि। आचार्य रमानाथ झा कहने छथि–

''प्रकृति सम्बन्धी कविताक मध्यहु 'पूस' शीर्षक रचनामे अमरजीक वास्तविक प्रतिभा स्फुट भए उठल अछि आओर यत्र-तत्र वक्रोक्तिमूलक हास्य-व्यंग्यक अपूर्व योजना भेल अछि।.... यद्यपि अमरजीक स्थायी यशक आधार हास्य व्यंग्य मूलक रचना सभ अवश्य थिक किन्तु अन्य प्रकारक हिनक रचना हिनक काव्य-प्रवृत्तिक नित-नूतन विकासक सूचना दैत अछि।''

कविक दृष्टिमे सेहो यैह कविता सर्वश्रेष्ठ थिक। कारण, 'मीट द' औथर' अवसर पर प्रिय कविताक रूपमे एकरे पाठ कयने छलाह।

'आशा-दिशा' अमरजीक एहन कविताक संकलन छनि जाहिमे ओ पूर्ण आशावादी छथि। यैह कारण थिक जे एकर नाम आशामूलक रखलनि। आशा दिस अग्रसर हिनक एहि काव्यसंकलनमे मिथिलाक गौरव, देशक स्थिति, युवावर्गमे उत्साहक प्रयोजन आदिक आह्वान अछि–

''शान्तिक रक्षा लेल चिन्तित कवि दनुजताक दमन हेतु विशेष रूपसँ भारत पर चीनक आक्रमण आ बंग देशीय समस्याक सन्दर्भमे निःसंकोच लिखैत छथि जे ''सृष्टिक समस्याक अन्तिम समाधान युद्ध मात्र होएत'' दिनानुदिन घटैत मानव मूल्य आ बढ़ैत विज्ञानक विभीषिकाकेँ देखि कविकेँ सृष्टिक नियन्तेकेँ काँके पठयबाक आवश्यकता बुझि पड़ैत छैन्ह तँ स्वाभाविके।''

(मदनेश्वर मिश्र, आशा-दिशा क 'दू शब्द')

अमरजी हास्य-व्यंग्यक कवि रूपमे ख्यात छथि। स्वयं ऋतुप्रियाक भूमिकामे कहने छथि जे– 'हास्य ओ व्यंग्य हमर मुख्य धारा भेल।' गम्भीरतासँ देखल जाय तँ स्वतंत्र भारतमे होइत सामाजिक परिवर्त्तनक चित्र उपस्थित कयने छथि जाहिमे एहि ठामक सामाजिक चेतना अधिक स्पष्ट अछि। सामाजिक चेतनाक स्वरूपकेँ व्यापक अर्थे ग्रहण कय, समष्टि रूपमे देखल जयबाक थिक–

''जे परपीड़ा नहि जानि सकय,
अनका दुखमे नहि कानि सकय,
दम्भे मातल, अपना सुखलय
अन्यायक बल पर फानि सकय,
तकरा पर कठिन कृपाण उठा कय निश्चय
लाल कपार करब।''

यद्यपि अमरजीक सामाजिक चेतनाक आधार मिथिला अछि मुदा, वस्तुतः तकरा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे ग्रहण करबाक चाही। अमरजीक काव्य व्यष्टिपरकसँ बहुत ऊपर उठि चुकल अछि। समष्टिक पर्याय थिक अमरजीक काव्य।

●

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' : किछु रचनाक चर्चा

श्रीमती डॉ नीरजा रेणु

कविवर अमरजीक काव्यरचना हुनक जीवनक साधन थिकनि। एकरा हम हुनकर जीवनक साधना नहि कहि साधन एहि हेतु कहैत छी जे रचना करब हुनक संस्कारमे बसल छनि– आ, अपन जन्मजात संस्कार कें छोड़ि जहिना लोक नहि रहि सकैत अछि तहिना कविवर अमरजी बिनु लिखने वा पढ़ने रहिए ने सकैत छथि। कोनो घटनाकेँ, सामाजिक बिडम्बनाकेँ वा जीवनक विसङ्गतिकेँ देखि आदरणीय अमरजीक हृदय उद्वेलित होइत रहल अछि, जकरा ई अपन कविता, कथा, नाटक आदि रचनाक माध्यमेँ रूपायित करैत रहलाह। एखन, हिनकर किछु एहेन रचनाक चर्चा हम करब जाहिमे समाजक तथाकथित प्रतिष्ठित व्यक्तिक आडम्बरकेँ कवि विनोदपूर्ण ढंगसँ उद्घाटित करैत छथि।

'गुद्‌गुदी' मे प्रकाशित 'बुढ़बाक काका' मे एकटा बूढ़क पाँचम विवाह करबाक सेहन्ताक हास्यास्पद स्थिति वर्णित अछि।

बासठि बरखक बूढ़ाकेँ विवाहक उत्साह देखू–

मनमे उमंग
मनमे तरंग
मन पर अन मन मनहर सन मन।
किछु चढ़ा देल नूतने रंग।।
अन्तर आकुल,
बाहर व्याकुल,
आकुलि रोमावलि, स्वेदक कण–
बन बन मुख पर भ्रू पर आकुल।।

बुढ़बाक कका बड़ आतुर छथि, विवाह लेल। मुदा हुनका शंका होइत छनि जे 'शारदा एक्ट' एहि विवाह मे बाधक बनत। हुनकर मोनमे ई डर हुनकर इष्ट अपेक्षित भरि दैत छथिन जे एतेक बूढ़ भऽ कें जे कम वयसक कन्या सँ विवाह करब तँ सरकार अहाँ कें दंडित करत। बूढ़ा बहुत दुखी भऽ जाइत छथि–

''परिवार हमर,
संसार हमर,
सब उजड़ि गेल जौं सत्य थीक
शारदा एक्ट कप्पार हमर।।''

बूढ़ा बहुत रास बाधाकेँ मनहिँ मन निराकरण करैत सभागाछी धरि चल जाइत छथि। ओ ई सोचि लैत छथि जे पुलिसवलाकेँ किछु घूस दए एहि घटनाक प्रति चुप्पी धरा देबैक। मुदा, किछु अगत्ती छौंड़ा 'काका'क पछोड़ जे मधुबनियेँ सँ धरैत अछि से हुनकर बटुआ उड़ाइए कए दम्म लैत अछि। बूढ़ाक मनोरथ विफल भए जाइत छनि। बूढ़ाक विफलताक वर्णन करैत कविवर हुनकर विद्रूपता एवं कुंठित मनोवृत्ति कैं केहेन सहज अभिव्यक्ति देलनि से देखू–

खन सिट्ठी, खन
दलिपिट्ठी सन,
मूँहक मुद्रा बदलैत रहल
काँचे तेतरिक खटमिट्ठी सन।।

ठेंठ भाषामे विनोदपूर्ण उपमा कविवरक विलक्षण रचनाक परिचय दैत अछि। संगहि एहि प्रंकारक भाषा पाठककेँ अपना दिए आकृष्ट करबाक अद्‌भुत सामर्थ्य रखैत अछि।

विभिन्न वर्गक व्यक्तिक मनःस्थिति एवं व्यवहारकेँ कवि निकट सँ देखि वर्णित करैत छथि।

'अध्यापक' शीर्षक कवितामे एकटा अध्यापक उचितो सम्मान नै पाबि सकैत छथि, तकर विवरण देखू–

हम अध्यापक छी अध्यापक
हम मटोमाट हम बड़ व्यापक।।
हम ''अइ उण ऋलृक'' रटल जखन,
कप्पार दरिद्रा सटल तखन।
दश वर्ष परिश्रम कैला पर
दश टका भेटै ई फल पापक।।
हम अध्यापक।।

तहिना छात्रवर्ग सँ ओहि गुणी एवं परिश्रमी गुरुकेँ केहेन प्रतिक्रिया भेटैत छनि, सेहो रोचकता सँ देखाओल गेल अछि–

कारक बड़का भयकारक अछि,
तद्धित तँ हृदय-विदारक अछि।

कोनो शिक्षक खूब परिश्रम कए छात्रकेँ बुझएवाले' उद्यत होइत छथि, मुदा छात्रवर्गक उदासीनता देखि शिक्षक दुखी भ'.जाइत छथि।

सटीक वर्णन तथा नवीन उपमाक प्रयोग अमर जीक लेखनीक विलक्षणता थिकनि–

कसिकै मेहनति दू मास करी
तँ मूर्खताक जड़ि नाश करी।
कलिकलि वा हौहटिकें जहिना
जड़िसँ निर्मूल करै 'सलफर'।
हम प्रोफेसर।।

उक्त उपमामे नवीन प्रयोगक संग कविक चिकित्साशास्त्रक ज्ञाता होएबाक परिचय भेटैत अछि। सलफर औषधक नाम छिऐक, जे कलिकलि हौहटिमे प्रयुक्त होइत छैक। एहि प्रकारक उपमाक प्रयोग दुर्लभ अछि।

सहज आ ठेठ भाषा कविक उक्तिकेँ मनोरंजक बना दैत अछि–

असल बात पर जौं दी ध्यान
तँ दोषी नहि बनले आन
सभक मूल उजरा अङरेज
तकरा सँ राखू परहेज।।
टाङ उठा आ टेकि कपार
गंगा बहती उनटे धार।।

एहि तरहें कथ्य स्पष्ट अछि, कोनो 'वाद' वा शिल्पक चमत्कारमे लेपटाएल, अकछकटौन वाक्य-विन्यास अमरजीकैं कखनो पसिन नहि छनि।

अपन एही वैशिष्ट्यक कारणें अमरजी एकटा पैघ श्रोता पाठक समुदाय बनौलनि। साधारण पाठक लेल अमर जीक सभ विधाक रचना रोचक होइत गेल, आ जे एक दिन कविवर अमरजीक नामें विख्यात भेलाह, से कथाकार अमरजी सँ भिन्न नहि रहि सकलाह।

अमरजीक दुइए कथाक चर्चा हम एत' करैत छियनि। एकटा 'जलसमाधि' नामक कथा-संग्रहमे प्रकाशित 'जाड़ा फेनो अओतै' तथा दोसर कहियो मिथिला मिहिरमे प्रकाशित 'छी हम बड़ सावधान लोक।'

'जाड़ा फेनो अओतै' चिकरैत एकटा भिखारि लेखककेँ ट्रेनमे भेटलनि। यावत लेखक सोचथि जे एहेन अप्रचलित वाक्य (विशेष कऽ भिखारिक हेतु) जे बाजि रहल अछि से के थिक, तावत् ओ भिखारि कोनो स्टेशन पर उतरि गेल रहैक। पश्चात् ओ बुझलनि–बहुत दिनक प्रतीक्षाक उपरान्त जे ओ लेखकक परिचित, गामक एकटा ट्रेन ड्राइवर छल जकर दूटा बालक ओकरे द्वारा चलाओल जाइत ट्रेनक चपेटमे आबि मरि गेलैक। विक्षिप्त पिता, कनैत कनैत आन्हर भऽ गेल हेतै, जकर जीवनक कारुण्य, गतिशीलता 'जाड़ा फेनो अओतै'–एहि छोट सन वाक्यमे समाहित छलैक। कथाक कारुण्य एकटा अविस्मरणीय छाप पाठकक हृदयपर अंकित करैत छैक।

ई तँ एकटा करुण कथाक चर्चा भेल। अमरजीक अधिकतर कथा हास्य-विनोद सँ पूर्ण रहैत अछि। एकटा सफल शिक्षक जकाँ, विनोदपूर्ण कथ्यसँ उपदेश सेहो ओहि संग लेखक दैत छथि।

'छी हम बड़ सावधान लोक'मे ट्रेनमे यात्रा करैत एकटा दम्पतिक झगड़ा वर्णित अछि। दूनू व्यक्ति एक दोसरा पर दोष थोपैत रास्ताक समय काटि लैत छथि, मुदा जखन ट्रेनसँ उतरैत छथि तँ एक दोसराक भरोसे सामान छोड़ि स्टेशन पर उतरि जाइत छथि। ट्रेन चल' लगैत अछि, आगाँ बढ़ि जाइत अछि, तखन दूनू व्यक्तिकें होश होइत छनि जे 'जा, सामान तँ ट्रेनेमे छूटि गेल।'

एहि प्रकार अनेक मनोरञ्जक एवं उपदेशप्रद कथा श्री अमरजीक प्रकाशित होइत रहलनि। हम हुनका प्रति अपन अभिवन्दन व्यक्त करैत छी।

●

समर्पित साहित्य-साधक

श्री उमेशचन्द्र झा

तपस्वी वैह छथि जे अपन इष्टक एकान्त आराधना मे एकाग्रचित्त सँ सदिखन लीन रहथि। जेना भक्तक इष्ट भगवान छथि तहिना अक्षर-पुरुषक इष्ट अक्षर-उपासना होइछ। तेँ ओहि अक्षर-पुरुष कँ अक्षर-उपासनाक सफलताक अनुपातहि मे साहित्य-सम्मान भेटैछ। कुशल साहित्यकारक भावना मे चिन्तन आ कल्पनाक अजस्त्र स्रोत रहैछ। एखन सत्यनिष्ठ आ सफल साहित्य-साधकक संख्या सीमित अछि। एहि मे विशिष्ट रचना-कौशल आ समर्पण-भावना अपेक्षित अछि। साहित्यिक दर्पण मे समाजक सही स्वरूप प्रतिबिंबित होइछ। साहित्ये टा समाज-सुधार आनि आमूल परिवर्तन कऽ सकैछ।

मैथिली साहित्य-जगतक राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित आ समादृत पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एहने एक प्रख्यात साहित्यकार छथि। हिनक सम्पर्क मे अयबाक सौभाग्य हमरा तीन दशक पहिनहि भेटल। तहिया सँ एहि विद्वानक आत्मीयताक गंगा मे अवगाहन करबाक बहुत सुयोग भेटल अछि। हिनक साहित्यिक जीवन-यात्रा अत्यन्त रोचक अछि। श्री अमरजी विद्यार्थी जीवनहि सँ साहित्य-सेवा मे जुटि गेलाह। अपन माता-पिता सँ कौलिकता मे भेटल धार्मिक संस्कृति कँ एखनहु धरि अपनौने छथि। अध्ययन कालहि सँ हिनका रचना-क्षमताक संगहि साहित्यिक अभिरुचि जागृत भेल। विद्यार्थी जीवनहि सँ हिनका मे कवित्व शक्ति सेहो प्रस्फुटित भेल।

साहित्य मे रसक पुट आवश्यक अछि। सत्ते कहल गेल अछि 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'। जेना लवण भोजन कँ स्वादिष्ट बनबैछ तहिना साहित्य मे रसक पुट सँ रचना रोचक आ आकर्षक होइछ। श्री अमरजी प्रख्यात साहित्य रसिक छथि। हास्य-रस सँ भरल हिनक कविता पाठक कँ मुग्ध कऽ दैछ। मनुष्यक जीवन मे संयोग-वियोग, ईर्ष्या-विषाद, लोभ-मोह आ स्नेहक अनुभव समाजे सँ होइछ। ओहि परिस्थिति सँ सीदित-स्पन्दित भय कवि सुन्दर ढंग सँ साहित्य मे आत्माक भाव अभिव्यक्त करैत छथि। हिनक रचना मे हास्य-व्यंग्यक पुट रहिते टा छनि। हास्यरसक कविता लिखि मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि करबा मे एहि कविक योगदान चिरस्मरणीय रहत।

श्री अमरजीक कविता-लेखन आ कविता पाठ दिनानुदिन लोकप्रिय होइत गेल। एकैस बरखक वयस मे हिनक 'गुदगुदी' प्रकाशित भेल, जे जनमानस कँ प्रभावित कयलक। एकर उद्देश्य समाज मे व्याप्त कलुषित भावना कँ त्यागि सद्भावनाक संचार करबाक थीक। कवि हास्य-व्यंग्यक पुट दय दूषित सामाजिक परिस्थिति मे आमूल परिवर्तन आनय चाहैत छथि। अंगरेज कवि जॉन ड्राइडौन जकाँ समाज मे वैचारिक क्रान्ति दिस जनमानस कें सावधान करैछ आ संगहि जागरूकता आ क्रियाशीलता उत्पन्न करबाक लेल प्रेरणा दैछ। कतहु-कतहु कविताक पाँती मधुर आ सुगन्धित फल-फूल जकाँ मन कँ मुग्ध कऽ दैछ। कवि-गोष्ठी, कवि-सम्मेलन आ अन्य साहित्यिक आयोजनक अवसर पर सामाजिक चेतना आ सामाजिक दायित्व कँ जनताक समक्ष रखबामे ई सक्षम छथि। एहि शब्द-शिल्पी कँ कविताक रचना मे शब्द-क्रीड़ा करबाक सहज कौशल प्राप्त छनि। रचना-क्षमता सँ सम्पन्न हिनक लेखनी नदीक निर्मल अनन्त धारा जकाँ चलिते रहैत छनि।

मैथिली साहित्यक समर्थ साधक श्री अमरजी मैथिली भाषाक विकासक लेल अधिकसँ अधिक समय दैत छथि। मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगाक पुरान संस्था सँ ई आरम्भहि सँ जुड़ल छथि। नवरत्न गोष्ठी द्वारा प्रकाशित हिनक रचना 'मैथिली साहित्य परिषदक संक्षिप्त इतिहास' मे परिषदक कार्यकलापक आद्योपान्त वर्णन कयल गेल अछि। मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक लेल ई पुस्तक उपयोगी सिद्ध भेल अछि। लगभग दू बरख धरि श्री अमर जी एहि संस्थाक प्रधान मन्त्रीक पद पर आसीन रहलाह। मैथिली संस्कृति आ परम्परा मे हिनका अटूट विश्वास छनि। मातृभाषाक अनुरागी आ जीवन्त पुरुष श्री अमरजी अपन रचना 'विविध गीत' मे मैथिल समाज मे प्रचलित महेशवाणी, उदासी, नचारी, लगनी आ लोकगीतक संकलन कयलनि अछि। लोकगीत साहित्यक एक प्रमुख अंग

मानल गेल अछि किएक तँ एकर सम्बन्ध गामक लोक सँ रहैछ। एहि मे हृदयक उद्‌गार प्रगट होइछ, गामक खेत-पथार पोखरि-झाँखरि आ वन-उपवन मे लोकगीत सुनि कय मन मयूर जकाँ नाचि उठैछ। पावनि-तिहारक अवसर पर लोकगीत सुनि मन प्रसन्न भय जाइछ।

बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्री अमरजी कवि, लेखक, उपन्यासकारक संगहि सफल पत्रकार सेहो छथि। हिनक सूक्ष्म दृष्टि मैथिली पत्रकारिताक दिस अध्ययन कालहि सँ जुड़ल छल। मैथिली पत्र-पत्रिकाक सफल सम्पादन समर्पित भावना सँ करैत अबैत छथि। 'वैदेही क सम्पादन बहुत बरख धरि कयलनि। तखन मैथिलीक एक साप्ताहिक पत्रिका 'निर्माण'क सम्पादन कार्य मे जुटि गेलाह। तदुपरान्त पूर्व सांसद आ त्रिभाषाक प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'जीक सौजन्य सँ एकमात्र दैनिक पत्र 'स्वदेश'क प्रकाशन आरम्भ भेल। मैथिलीक एहि लोकप्रिय प्रथम दैनिक पत्रक सम्पादनमे आदि सँ अन्तधरि श्री अमरजी निर्भीकता सँ योगदान दैत रहलाह। एहि प्रकारेँ पत्रकारिताक दिस हिनक अभिरुचि दिनानुदिन बढ़ैत गेल। एहि विषयक हिनका गहन अनुभव भऽ गेलनि। फलतः 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' लिखलनि,जे पुरस्कृतो भेल।

विद्यार्थी जीवन कालहि मे श्री अमरजीक लिखल दू टा उपन्यास 'वीर कन्या' आ 'विदागरी' प्रकाशित भेल अछि। प्रोफेसर हरिमोहन बाबू द्वारा लिखल उपन्यास 'कन्यादान' आ 'दुरागमन' पहिनहि प्रकाशित भऽ चुकल छल। दुरागमनक उपरान्त सासुर सँ नैहर जयबाक लेल विदागरी होइछ। एकर पूर्ति सन् 1971 ईसवी मे 'विदागरी'क प्रकाशन सँ भऽ गेल। एहिमे कल्पनाक आधार पर समाजक यथावत् चित्रण कयल गेल अछि। एहि मे लेखकक अनुभूति कथनाक कैँ अनुरंजित करैत अछि। उपन्यासकार हास्य-व्यंग्यक पुट दय उपन्यास कैँ रोचक बनौलनि अछि। उपन्यासक पात्र सब मानवीय दुर्बलता सँ ग्रसित छथि। एखनहु धरि मैथिल समाज मे कुरीति आ अन्ध-विश्वासक प्राबल्य बनल अछि। लेखक गामक जनता मे व्याप्त विषमता कैँ हँटयबा लेल पात्रक माध्यम सँ उपयुक्त उपदेश देलनि अछि। एखन मैथिल समाज मे मुनचुन सन पुरुष आ छाया सन नारीक आवश्यकता अछि जे समाज मे क्रान्ति आनि ओकर दिशा बदलि दैक।

बहुआयामी प्रतिभा सँ दीप्त श्री अमरजी सफल समीक्षक आ अनुवादकक रूप मे सेहो ख्याति अर्जित कयने छथि। मिथिला आ मैथिलीक आन्दोलन मे हिनक भूमिका सक्रिय रहल अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहर कैँ सुरक्षित रखबा लेल प्रयत्नशील रहैत छथि। हिनक सांस्कृतिक आ साहित्यिक दक्षता सँ प्रभावित भय दिनांक 20 दिसम्बर, 1998 कैँ साहित्य अकादमी, दिल्लीक सौजन्य सँ हिनका पर 'मीट द ऑथर' क आयोजन दरभंगा मे कयल गेल छल। विद्वानक मण्डली, पत्रकार आ गण्यमान्य लोकनि एहि अवसर पर आमंत्रित छलाह। बहुत हर्षोल्लासक बीच अमरजी कैँ मैथिली साहित्यक अमूल्य आ सराहनीय योगदानक लेल एहि शुभ अवसर पर सम्मानित कयल गेल। एहि यशस्वी कविक राजकीय सम्मान सँ मिथिलावासी गौरवान्वित भेलाह।

श्री अमरजीक आवास पर जखन हमरा जयबाक सुयोग भेटल तखन हुनक स्वाध्याय-कक्ष मे देखल जे कर्मयोगी जकाँ हिनक सारस्वत कर्म चलिते रहैत छल। आपकताक संग गप्प करब हिनक असाधारण गुण छनि। साधारण घटना कैँ असाधारण ढंग सँ कहबाक हिनक विशेषता छनि। पारिवारिक उलझन मे रहितहुँ बुझना जाइछ जे ई पवनपुत्र हनुमान जकाँ मिथिलांचलक विकासक लेल यैह व्रत लेने होथि–

'राम काज किन्हें बिना मोहिं कहाँ विश्राम'।

शील आ विनयक प्रतिमूर्ति श्री अमरजीक साहित्यिक व्यक्तित्व फड़ैत-फुलाइत रहय जाहि सँ माँ मैथिलीक भण्डार हिनक अमूल्य योगदान सँ भरैत रहय, यैह थीक हमर कामना। साहित्यक एहि तपस्वीक प्रति हम अपन कृतज्ञता प्रकट करैत छी।

●

अमरजीक आशा-दिशा

डॉ. प्रभाकर पाठक

हिन्दी साहित्य मे जेना जयशंकर प्रसाद अपन प्रशस्त ललाट आ ज्योतिर्मय व्यक्तित्व सँ लाखो-लाखक भीड़ मे चिन्हा जाइत छलाह तहिना मैथिली साहित्य मे पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन पारम्परिक पांडित्यपूर्ण वेश-भूषा, स्फीत मुस्कान आ सदिखन ज्ञानक दान लेल प्रस्तुत रहबाक अपन स्वभाव आ अपन कवित्वमय वाणी-विधान सँ मैथिली-मंदिर मे अपन अलगे पहिचान बनयबा मे समर्थे नहि, सशक्तो छथि। ककरो सँ भेट मे अपन व्यक्तित्वक छाप छोड़बा मे ई कवि लियोटाल्सटाय जकाँ सम्मोहक व्यक्तित्व रखैत छथि जनिका संबंध मे मैक्सिम गोर्की कहने छथि, ''हम जखन-जखन टाल्सटॉय सँ भेट केलौं, हुनका समीप गेलौं, तखन-तखन हमरा कखनो ई नहि बुझबा मे आयल जे हम कोनो एहन व्यक्तित्वक समक्ष छी जे हमरा झाँपि लैत छथि, मुदा हमरा ई बुझबा मे अवश्य आयल जे हमर व्यक्तित्व हुनकर निकटता सँ आओरो प्रतिभासिते भऽ उठल।'' कोनो व्यक्ति अमरजीक निकट मे जखने अबैत छथि, ओ अपन सभटा दुःख-सुख, चिन्ता-फिकिर, किंवा समस्त सांसारिक व्यापार, हुनकर कुशल-क्षेम पुछबाक ढंग मे, सभ किछु न्योछावर कऽ दैत छथि।

'आशा-दिशा' मे कवि-परिचय लिखबाक प्रसंगे कविवर सुमनजी अमरजीक संबंध मे अपन उद्‌गार एहि तरहेँ व्यक्त करैत छथि – ''जतबे कलम चलित-वलित ततबे वचनहु ललित-कलित, यद्‌वत्‌ सभा-सम्मेलनक मंच तद्‌वत्‌ रूपचित्रक रंगमंच। यथैव परिचर्चा, विद्‌वत्‌-गोष्ठी तथैव गामघरक गप्प-गोष्ठी, जहिना पत्र-पत्रिकाक स्तंभ कालम तहिना कथालापक प्रसर अवसर-सबतरि ई तेजस्वी साहित्यिक व्यक्तित्व प्रखर-भास्वर।''

आशावाद हमर भारतीय मनीषा आ चिन्तनक मूल धारा अछि। एहन कोनो कवि कदाचिते भेटताह जे अपन कृति मे एकर स्थान नहि देने हेताह। विशेषतः भारतीय काव्यक मूल उत्स तँ आशावादे अछि। वाल्मीकि रामायण सँ लऽकऽ दिनकरक कुरुक्षेत्र धरि ई आशावाद अपन सार्थकता जीवन्त रखने अछि। पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क काव्यकृति 'आशा-दिशा' सेहो हमरा एहि भारतीय काव्ययात्रा-पंथक एकगोट मीलक पाथर बुझना जाइत अछि। जखन आशाक प्रकाश भेटत, तखन दिशा सेहो निर्धारित होयत। आशा अछि करुआरि आ दिशा अछि नदी। कहबाक तात्पर्य ई जे 'आशा-दिशा' दूनू एक गोट यात्राक संकेत अछि, पुकार अछि, आह्वान अछि, अछि उद्‌बोधन आ प्रेरणा। कवि अपन कृति मे अपन सशक्त लेखनी सँ जहिना मिथिलाक गौरवक जयगान कएने छथि, तहिना धर्मभूमि आ कर्मभूमि मिथिला मे शक्तिपूजाक प्राथमिकता सिद्ध करैत 'कशल स्थापन' सेहो कयने छथि आ तकर बाद 'विजय दिवस' मनबैत 'नवमुंडक माला' गाँथि 'पर्वतक शिखरकेँ तोड़ि' 'अभियान', पर प्रस्थान कयने छथि –

''अभियान करक अछि आइ-शक्ति संचय हित
अभियान हमर सतपथ पर दृढ़ निश्चय हित
दानवता कें निर्मूल करय भूतल सँ
अभियान हमर ई निज शक्तिक परिचय हित।''

'आशा-दिशा' केँ हम एकगोट एहन गुलदस्ता कहबाक लोभ संवरण नहि कऽ सकब जाहिमे कतेको तरहक रंग समाहित अछि। 'जयगण भारत' एहि पोथीक पहिल कविता अछि। एहि कविताक स्वर निश्चित रूपेँ अमरजीक अछि, मुदा शब्द पर जेना रवीन्द्रनाथक भाव हावी छनि। एहि कविता मे इहो स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे कवि, सघनतम अंधकार – जे अज्ञान आ स्वार्थक अछि; ताहि सँ जूझऽ लेल प्राण-पण सँ तैयार छथि आ भावी पीढ़ी केँ आशान्वित कऽ रहल छथि –

बदलि रहल अछि जगतक कण-कण बदलत सभ परिभाषा।
जय स्वतंत्रते ! गर्जन-ध्वनि सुनि भागल मनक निराशा।।

कवि जग मे युद्धक ज्वाला नहि पजारय चाहैत छथि। हिनक ई स्वर बहुत दूर धरि दिनकरक कुरुक्षेत्रक स्वरक सन्निकट अछि। असल बात तँ ई थिक जे कविक एहि पोथीक चौबालीस गोट कविता मे युद्ध, अभियान आ शान्तिक भावनासँ संचालित प्रायः आधा कविता तँ एहन अबस्से अछि जाहि सँ ई बुझना जाइछ जे कवि कोनो कारणेँ युद्धक भय सँ दग्ध अथवा आशंका सँ गस्त एहि विश्वक परित्राण लेल आशा-दिशाक संधान मे लागल छथि। जहिना पोथी मे ई कविता अपन प्रथम स्थान धयने अछि, तहिना अहू बात मे शंका नहि जे अप्पन ध्वनि-रनि मे सेहो अपूर्व अछि। बुझना जाइछ जेना पूजाक थार मे आरतीक दीप बारि शब्दक झाँझर पहीरि कवि स्वातंत्र्यभारती चंडीक समक्ष नृत्य कऽ रहल होथि, आ हुनकर प्रत्येक चरण-निक्षेप पर माता आशीर्वाद लेल झकझोरल जाइत होथि–

जय स्वतंत्रते मुक्तिदायिनी जनजन मन मे जागू।
रणचंडी छथि हाथ जोड़ि कय ठाढ़ि अहींकेर आगू।।
जन्मत जनमत नमत आहिंक लग बड़बड़ भाग्यविधाता।
जय स्वतंत्रते शान्तिदायिनी गाबथि भारतमाता।।

'जन्मत-जनमत' शब्द मे कवि एकहि संग छेकानुप्रासक हाँस आओर यमकक गमक केँ निखारने छथि जे अत्यधिक रमणीय अछि। कविक 'मिथिला गौरव' कविता बुझना जाइछ जेना दिनकरक एहि पंक्तिक जवाब मे ललकारपूर्ण स्वर मे अभिव्यक्त भेल होअय –

पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी।

देखल जाय अमरजीक मिथिलाक रस–ज्योति –

ठाम-ठाम उद्यान रसालक
कदलीवन प्रति गृहक समीप।
गाम-गाम डिहवार थान पर
जरइत रहइछ संध्यादीप।।

'पन्द्रह अगस्त' कविता मे कवि ई जनौने छथि जे हुनकर सरस्वती शतधा प्रवाहित छथिन। ई चरणबद्ध, तुकान्त, छन्दोबद्ध कविता लिखबा मे जहिना समर्थ छथि तहिना मुक्तोछन्दक बानगी, खानगिए अछि। निरालाजी मुक्तछन्दक प्रयोगक समर्थन लेल 'परिमल' क भूमिका मे वैदिक मंत्रक आ छन्दक उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि। मुक्तछन्द ओएह टा लिखि सकैत छथि जनिका मे वेदक ज्ञान होअय। दूर्वाक्षतक मंत्र जे नीक जकाँ एक साँस मे स्वरोच्चार आ दीर्घ-प्लुत संगे पढ़ि सकैत अछि, ओएह मुक्त कविताक पाठक ठाठ प्रस्तुत कऽ सकैत अछि। 'पन्द्रह अगस्त' कविता सोड़हो आना वैदिक छन्द मे निबद्ध आछि। जनिकर साँस बीचहि मे टूटि जाएत ओ एहि कविताक आनन्द नहि उठा सकैत छथि। अद्‌भुत लिखने छथि अमरजी ई कविता ! प्रतीत होइत अछि जेना गंगा कल-कल छल-छल, गंगोत्तरी सँ निकलि, गंगासागर दिस प्रयाण केने होथि, कतौ टूट नहि, कतौ चूक नहि, कतौ भंग नहि, शब्दक संग रणरंग मचबैत अंग-अंग मे फुरेरी जगा दैत अछि ई कविता। देखू–

''निर्मल नभ पर
श्यामल-श्यामल मेघक टिक्कर
दहलय लागल
अन्यायी चारू दिस जागल''

विनोबा भावे किसान आ मजदूर कैं धरतीक शेषनाग कहने छथि। अमरजीक कविता 'कर्षक मण्डल' एहि भाव कैं चरितार्थ करैत अछि। 'कर्षक मण्डल' शीर्षक सेहो अपूर्व, आकर्षक। धरतीकैं खींचयवाला तँ विष्णु वाराहवतारे टा भऽ सकैछ। अमरजी कहैत छथि –

हम ताही धरतीकेर पुत्र जे सभदिन सभकिछु छथि सहैत।
धनधान्य पूर्ण भंडार जनिक अछि आठ पहर भरले रहैत।।

'प्रेम : एक परिभाषा', 'कविताक मृत्यु', 'तुलसीक प्रति' आ 'कहू कुशल' कविता कहबाक लेल मुक्तछन्द मे अछि मुदा तेहन अजगुत बंद बहुत कम कविक अर्दवान मे होएत। खीचि-खीचिकऽ आ तानि-तानिकऽ शब्द सबकैं जेना स्थान देल गेल हो। हमरा ई कहबा मे कोनो अतिशयोक्ति नहि बुझना जाइत अछि जे अमरजी छन्दोबद्धता आ मुक्तछन्दक सरोवर आ कमलवनक एहन अन्तर्मदावस्थ गजराज छथि जे निधोख भऽकऽ ताहि मे पइसल, बइसल किल्लोल करैत छथि। 'सुधिक हिलकोर' नवगीतक स्वाद, शब्द आ राग सभ दैत अछि। देश हमर, मनुसंतान आदि गीत हिन्दीक कवि गिरिजा कुमार माथुरक स्मरण करबैत अछि, ओत्तहि, 'स्लिप ऑफ पेन' मुक्तिबोधक व्यंग्य आ अर्थगर्भत्वक छटा प्रस्तुत करैत अछि।

सरिपहुँ 'आशा-दिशा' एक गोट एहन अजगुत पेटारी अछि जकरा जेना-जेना खोलू, एक-सँ-एक अपूर्व उपायन भेटत। कतौ वीर तँ कतौ श्रृंगार, कतौ हास्य तँ कतौ करुण, कतौ रौद्र तँ कतौ वीभत्स, कतौ अद्भुत तँ कतौ शान्त रसक अद्भुत विच्छित्ति ई मुक्तकक पोथी दैत अछि। विवेक, श्राद्ध, व्यवस्था, प्रगतिशीलता, बुधिआरी, नैतिकता आदि कविता तँ बिन्दु मे सिन्धु समाहित कयने अछि, जकरा लेल रहीमक कथन छनि –

दीरघ दोहा अरथ के थोड़े आखर माहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली सिमटि कूदि कढ़ि जाहिं।।

'आशा-दिशा' अमरजीक अमर काव्यकृति थिक। ई बुद्धितत्त्व, कल्पनातत्व आ रागात्मक तत्व-तीनू सँ समन्वित। ई भाषा, छन्द, अलंकार, अभिव्यक्ति, कल्पना-सृष्टि, वस्तु-विन्यास-सभदिश सँ माँजल थिक। हिन्दी साहित्यक द्विवेदी युगक आदर्शक कोड़ मे छायावादक किलकारी भरैत भारतीक प्रगतिवादी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान पर प्रयोगवादी धार थिक। वैदिक बोधक वाटिका मे यथार्थक मनुहार थिक, अतीतक आँजुर मे वर्त्तमानक उपहार थिक, विस्मृतिक उद्बोधन आ स्मृतिक श्रृंगार थिक; ई युद्धक प्रबुद्धता आ शान्तिक सार थिक। किंबहुना, आशा-दिशाक सभ कविता 'क्षणे-क्षणे यन्नवता मुपैति' सँ 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः' क शुचि रुचिर कसौटी थिक।

●

ऋतुप्रियाक भाव-सौन्दर्य

डॉ० कृष्णचन्द्रझा 'मयंक'

'ऋतुप्रिया' पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क सफलतम काव्यकृति थिक जाहिमे कविक सहजाख्य प्रतिभाक प्राकट्य भेल अछि। अपूर्व वस्तुक निर्माणमे क्षम वृत्तिक आख्य प्रज्ञा थिक। प्रज्ञाक नवनवोन्मेषशालिता प्रतिभा-रूपेँ अभिहित होइछ। प्रतिभाक प्रयोक्ता कवि कहबैछ। प्रतिभाक कारणे कवि अनुभूतिक समस्त क्षेत्रकेँ परिव्याप्त करैत अछि एवं रस-सरिताक प्रवाह-भुग्नताकेँ प्रकट करैत अछि। ओहि कलवाहिनीमे अलंकारादिक वीचि-तरंगक प्रादुर्भाव होइत अछि। स्वयमेवागता कविक कविता–वनिताक सौन्दर्यसँ सहृदयक चित्तक आकर्षण स्वतः होइत अछि – ''कविता वनिता चैव स्वयमेवागता वरम्।''

पं० 'अमर' संस्कृत साहित्यक नदीष्ण विद्वान् छथि, मैथिली साहित्यक कुशल अध्येता छथि, तेँ हिनक कवितामे कविकुलगुरु कालिदासक वाणी-विलासक सौन्दर्य एवं कविकोकिल विद्यापतिक भाव-साधनाक लालित्यक दर्शन भऽ जाइछ। कोमलकान्त पदावलीक प्रयोक्ता जयदेव एवं गोविन्ददासक काव्यसाधनाक प्रति आस्थावान् कवि अमरजीक ऋतुप्रिया नामक काव्यक पदविन्यास अतीव आह्लादकारी अछि।

ऋतु प्रकृति-सुन्दरीक सौन्दर्यक वैविध्यकेँ प्रकट करैत अछि। श्रुति कहैत अछि जे जखन ग्रहण योग्य पूर्ण परमात्माक संग विद्वान् लोकनि मानस यज्ञकेँ विस्तृत करैत छथि तँ एहि यज्ञमे वसन्त आज्य (घृत), ग्रीष्म इन्धन एवं शरत् हवि बनि जाइत अछि –

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत्।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। (ऋ०, पुरुषसूक्त –१५)

वैदिक वाङ्मयमे 'ऋतवः पितरः' नामक उक्ति भेटैत अछि। ऋतुकेँ पितर कहल गेल अछि। ऋत्विक लोकनि वैदिक मंत्रसँ 'कव्य' द्वारा पितरक आराधना करैत छथि। निरुक्तकार यास्क ऋत्विकक व्युत्पत्ति 'ऋतुयाजीभवति'क रूपमे सिद्ध करैत छथि। अर्थात् ऋत्विक् कोटिक पुरोहित ऋतुक अनुसार यज्ञ करबैत छथि। आग्यपा, सोमपा, ऊष्मापा, बर्हिषद् आदि पितर लोकनिक ऋतु-अनुकूल आराधना होइत अछि। तैत्तिरीय श्रुति मे कहल गेल अछि जे ऋतुक निन्दा नहि करी। ई व्रत थिक – 'ऋतून् न निन्देत्। तद्व्रतम्।'

पुनश्च महाभारतमे एहि संसार केँ महामोहमय कटाह (कड़ाह) कहल गेल अछि। सूर्य अग्नि अछि। अहोरात्र इंधन अछि। मास एवं ऋतु दर्वी अर्थात् दाबि-करछुल अछि। ओहि दर्वीकेँ काल चला कय प्राणीकेँ पका रहल अछि

अस्मिन् महामोहमये कटाहे सूर्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन।
मासर्तुदर्वी परिघट्टनेन भूतानि कालः पचतीति वार्ता।

एहि प्रकारेँ ऋतुक वैविध्य आध्यात्मिक साधना एवं काव्यसाधनाक प्रेरक अछि। महाकवि कालिदास 'ऋतु संहार' नामक काव्यरचना कयलनि, जाहिमे ग्रीष्मादि ऋतुक मनोज्ञ वर्णन भेल अछि। अमरजी ऋतुप्रिया काव्यक रचना द्वारा बारहो मासक ऋतुगत वैशिष्ट्यकेँ प्रकट करैत छछि।

ऋतुप्रिया नामकरण अतीव आह्लादकारी अछि। प्रियाक सौन्दर्य प्रभावशाली होइत अछि। जीवनमे ओकर प्रभावक शाश्वतता अक्षुण्ण अछि। कविक ई ऋतुप्रिया नामक कृति भाव-प्रस्तुतिक दृष्टिसँ सहृदयपर शाश्वत प्रभाव छोड़ैत अछि।

कृतिक प्रथम कविताक शीर्षक आषाढ़ थिक। कालिदासक यक्ष आषाढ़क प्रथम दिवसमे पर्वतक चोटीपर निहुरल मेघकेँ देखैत अछि – 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्'। तत्पश्चात् ओकर विरहानल प्रदीप्त भऽ जाइत अछि एवं कादम्बिनी (मेघ) कैं अपन अलका-निवासिनी प्रियतमाक प्रति दौत्यकर्म हेतु प्रेरित करैत अछि। अमरजी लिखैत छथि –

आइ उत्सुक प्राण-दीपक स्नेहसँ आकुल बनल अछि
यक्षिणी अलकापुरी मे,यक्ष-मन संकुल बनल अछि
कालिदासक विरहिणी दिन गनथु आङ्गुरपर निरन्तर
कृषक कामिनिकेर अन्तरमे मुदित शतदल फुलायल

कालिदास मेघदूतमे कृषक-कामिनीक विषयमे लिखैत छथि –

त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः।

विरही यक्ष मेघसँ कहैत अछि जे कृषिकार्यक फल अहींक अधीन अछि, एहि उमंगसँ भ्रूविलाससँ नीक जकाँ अभिज्ञ ग्रामवधूटी अपन प्रेमभरल लोचनसँ अहाँक पान करतीह। मैथिल कवि विद्यापति विरहावस्था वर्णनक क्रममे आषाढ़क प्रथम अछारक वर्णन करैत छथि –

प्रथम छार अषाढ़ पाओल अबहुँ गगन गँभीर।
दिवस रइनि कइसे री मनमोहन बिनु जाय।।

कविक उक्ति अछि जे ग्रीष्मसँ सन्तप्त धरणी धैर्यसँ तपस्या कयलनि, तेँ वृष्टिक आगमन भेल एवं आर्द्राक प्रसादेँ कमलिनी, भ्रमरी एवं कृषकक मनमे प्रसन्नताक संचार भेल –

कमलिनी-वनमे मुदित भ्रमरी मधुर वीणा बजाबय।
आर्द्र थल आर्द्रा-प्रसादेँ कृषक मेघ मलार गाबय।।

'साओन' शीर्षक कवितामे कवि विद्युतक मानवीकरण करैत ओहि बालाक मेघक घोघसँ गगन मध्य उत्पन्न हास्यक वर्णन कयलनि अछि –

आयल साओन मास सोहाओन, साजल जलधर माला।
तनने मेघक घोघ, गगनसँ विहुँसथि बिजुरी बाला।।

विद्यापति कहैत छथि – 'आओल साओन बरिस भाओन घन सोहाओन वारि'। कवि कालिन्दीतटपर हरित कदम्बक पाँतीक सौन्दर्यक स्मरण करैत छथि जकर कन्दुक-कुसुमक चतुर्दिश भ्रमर गुनगुन करैत अछि। घनश्याम कृष्णक छवि मधुप सदृश श्याम अछि एवं घनमाला सेहो श्यामल अछि। तेँ भ्रमवश विरहिणी व्रजबाला लोकनि अश्रुक धारमे भसिआय लगलीह–

घनश्यामक छवि श्याम मधुप आ ई श्यामल घनमाला।
देखि भ्रमहि नोरेँ भसिआइलि सब विरहिनि ब्रजवाला।।

एहि पंक्तिक अवलोकनसँ जयदेवकृत गीतगोविन्दक अष्टपदीक एहि छन्दक स्मरण भऽ जाइत अछि जाहिमे विरहिणी श्रीमती राधिका जलधर एवं अंधकारकेँ कृष्ण जानि भ्रमवश आलिंगनबद्ध करय चाहैत छथि –

श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम्।
हरिरुपगति इति तिमिरानल्पम्।।

'भादव' नामक कवितामे कवि भादवक धारासंपातक मनोज्ञ वर्णन करैत छथि। विद्यापतिक कथन छनि–

आबय भादो बेगर माधो काहि कहु एहि दूख।
निडर डर-डर डाक डाहुक छुटय मदन बनूख।।

अमरजी सेहो विरहिणीक दशाक वर्णन करैत लिखैत छथि –

जनिक पिया परदेशी से धनि बैसलि छथि मन मारि रे।
धह-धह भीतर कौंढ़ जरइ छनि, बाहर अछि भदबारि रे।।

आसिन मासक हरिअर-हरिअर मृदु शस्य राशि मन्द-मन्द पवनक गतिपर झूमि रहल अछि। एकर मानवीकरण करैत कवि कहैत छथि जे प्रकृति हरित वसन पहिरि, शंकित मन, पंकिल पथपर पदविन्याससँ दूरस्थ प्रियतम-गृह गमन कय रहलि अछि –

प्रकृति पहिरि
चट हरित वसन
लटपट चंचल
शंकित मन
पंकिल पथपर पद
बढ़ि रहल निरन्तर
क्रमपर क्रम चलि रहल
दूरतर प्रियतम-घर

विद्यापतिक उक्ति अछि – 'आवय आसिन गगन भासिन घनन घन-घन रोल।'

'कातिक' शीर्षक कवितामे कवि कृषक-कामिनीक पीड़ाक वर्णन कौत छथि–

आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम् मास
कानि बैसलि कृषक कामिनि पड़लि पीड़ा फाँस
सुत विकल भूखें-पिआसें, रुग्ण पति बेहाल
रोग खीमा आबि गाड़ल रूप धय विकराल

पुनः चातकक तृषा-निवृत्तिक मनोज्ञ वर्णन करैत कवि कहैत छथि –

अछि लोटायल हरितिमा, धरणिक सजल अछि कोर।
आइ स्वाती आवि बरिसत चातकक चितचोर।।

कवि 'अगहन' मासक सुखक वर्णन करैत छथि। कालिदास 'ऋतुसंहार' मे लिखैत छथि जे हेमन्तऋतुमे ओ क्षितिजभाग चित्तकेँ उत्सुक बना दैत अछि, जनिक खेतमे पूर्ण धानक फसिल लहलहाइत अछि – 'प्रभूतशालिप्रसवैश्चित्तानि'।

कवि अमरजी कहैत छथि –

अगहनक अति सुखद सुन्दर मास
बाधमे लहलह करै छल
धनपतिक सौभाग्य अविकल

अगहनमे कातिकक व्यथा बीति गेल। घनहन अगहनक प्रेक्षणसँ जीवन धन्य भऽ गेल– 'घनहन अगहन धन-धन जीवन, झनझन बाजय धान'।

धानक लेल संस्कृत मे धान्य शब्द अछि। पाणिनि धान्यक व्युत्पत्ति 'धिनोतेर्धान्यम्'क रूपमे मानलनि अछि। धान धन्य कऽ दैत अछि। कवि 'धन-धन जीवन' कहि पाणिनिक उक्तिकेँ सिद्ध कयलनि अछि। 'झन-झन बाजय धान' मे ध्वन्यर्थव्यंजना अलंकार अछि।

कवि 1957क अगहनक अकालक वर्णन करैत कहैत छथि जे स्वातीक अबैत पछबा रमकऽ लागल। विपत्तिक घनमे बिजली चमकि गेल। गमकैत लाल सतरिया धान ठामहि ठमकि गेल।

स्वाती अबितहिँ पछबा रमकल
विपतिक घनमे बिजुरी चमकल
ठामहि ठमकल जे गमकल छल लाल सतरिया धान।
सतावनक अगहन सबहक मुहँ कयलक आबि मलान।।

'ठामहि ठमकल जे गमकल छल' एहि पंक्ति मे ध्वन्यर्थव्यंजनालंकारक सौन्दर्य प्रकट भेल अछि। एहि प्रसंगे महाकवि गंगक एहि पंक्तिक स्मरण भऽ जाइत अछि –

कवि गंग कहै चूक शब्द भयो
ढहनम ढहक्यो ढहनम ढहक्यो।

छेकानुप्रास एवं वीप्साक सौन्दर्य निम्नांकित पंक्तिमे प्रकट भेल अछि –

मधुर मिहिर झिहिर-झिहिर बहय मृदु समीर रे।
सिहरि-सिहरि जाय पुलक भरल लघु शरीर रे।।

'पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस' – एहि पंक्तिसँ पूस-विषयक कविताक प्रारम्भ होइत अछि। एहि पंक्तिमे 'प' वर्णक पाँच बेर आवृत्ति भेल अछि, तेँ एहिठाम वृत्त्यनुप्रास अलंकार थिक। आगाँ कवि वर्णन करैत छथि जे –

सिरसिरबय ई शिशिर अभागल
त्राहि-त्राहि करइछ सभ सबतरि
कैलक ई पैसाड़ सम्हरि कय की कोठा, की फूस?
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस।

'सिरसिरबय' शब्दक प्रयोग अतीव प्रभावशाली अछि। यात्रीजी लिखने छथि – 'सिमसिमाह ई साओन मास'। सिरसिरबय शब्दसँ शिशिर-शैत्यक प्रभाव पाठकक शरीर पर पड़ि जाइत अछि। शब्द-प्रयोगक एक कौशल प्रतिभासम्पन्न कविक कवितामे दृष्टिगत होइछ। शिशिरक प्रभाव-प्राकट्य निमित्त ई अपनामे पूर्ण अछि।

'माघ' शीर्षक कवितामे कवि वर्णन करैत छथि जे एहि मासमे कखनहुँ पुरिबा तँ कखनहुँ पछबा बहैत अछि। दिन कुहेससँ छारल रहैत अछि। माघक प्रबल प्रतापक कारणेँ दिवाकर निशाकर सदृश बुझना जाइत अछि। उपनागरिका वृत्तिसँ युक्त किछु पंक्ति द्रष्टव्य थिक –

खन पुरिबा खन पछबा, कौखन धूआँ सन मुँह कैने
छारल बेस कुहेस, दिवस अबइत अछि मुँह लटकौने
तोहर प्रबल प्रताप तेजपुंजे ने रहथु दिवाकर
बुझि पड़ैत छथि किन्तु उदित जनु नभमे पूर्ण निशाकर

कविवर बिहारी लिखने छथि –

पूस दिनन मे ह्वै रहै, अगनि कोन मे भानु।
मैं जानौं जाड़ा बली, तो यह डरे निदानु।।

'फागुन' शीर्षक कवितामे कवि आह्लादपूर्वक वसन्तक शुभागमनक वर्णन करैत छथि। धरणी नव अनुरागवती बनि रहल अछि। प्रकृति-नटी उपवन-आंगनमे नवद्रुमदल, नवमंजरी, नवमुकुलकेँ सजा रहल अछि –

'प्रकृति-नटी उपवन-आङ्न मे नव द्रुम-दल
नव मंजरि, नव-नव मुकुल वृन्तपर साजि रहल अछि।'

मैथिलकोकिल विद्यापतिक कथन छनि–

नव वृन्दावन नव-नव तरुगन, नव-नव विकसित फूल।
नवल वसन्त, नवल मलयानिल, मातल नव अलिकूल।।

सूरदास शरद्‌निशाक लताक नवीनताक वर्णन करैत छथि –

'सरद निसि अति पुलिन उज्ज्वल, नव लता वन धाम।'

ऋतुराजक एहि राजमे आनन्दक मधुमय धार बहत। आम्रमञ्जरिसँ मधुरसकेँ आनि पवन घर-घर मे मोन भरि परसत। प्रकाशक पुंजसँ ग्राम-नगर, उपवन-निकुंज आलोकित रहत।

प्रकाशक रहत एकटा पुंज
रहत आलोकित
ग्राम-नगर घर-बाहर उपवन और निकुंज!

एहि वासन्तिक सुषमाक अवलोकनक पश्चात् कविक मन आगामी ग्रीष्मक कराल रूपक स्मरण कऽ अवसन्न भऽ जाइत अछि। कविक कथन अछि –

वसन्तक हैत प्रतिष्ठा अन्त
जरत भू-मण्डल पसरत ज्वाल !

चैतक प्रति कविक मनमे आमर्ष अछि। कविक कथन छनि, जाहि वसन्तमे वृन्दावनक कालिन्दी-कूलक निकुंजमे नटवर नन्दकिशोर रास रचौलनि, ताहि वसन्तक आङ्नमे चैत नीमक पूजा करबौलक– 'ताहि वसन्तक आङ्नमे तौं करबौलह पूजा नीमक।'

फागुन अबिते शिवशंकर मनोनुकूल गौरी रानीकेँ पाबि बन्धकमे त्रिशूल राखि देलनि। चैत हुनका शरीरमे लेपय हित भस्म प्रदान कयलक, तेँ पछबाकेँ सनकाकऽ गामक गामकेँ फुक्का देल। शिवक एक शूल ई अग्निदाह अछि। दोसर शूल शुलबाहि (शूलरोग) अछि। तेसर शूल शीतलाक प्रकोप अछि।

एक शूल तँ सैह, लोककेँ कटा रहल अछि काहि
दोसर शूल कतेकोकेँ पकड़ौने अछि शुलबाहि
तेसर शूल देखि दूरहि सँ घबड़यलाह विधाता
तोहरे घरमे टहल लगाबथि आइ शीतला माता

'दोसर शूल कतेकोकेँ पकड़ौने अछि शुलबाहि' नामक उक्तिसँ एकटा संस्कृत-कविक उक्तिक स्मरण भऽ जाइत अछि। एक बेर शिव पार्वतीक गृहद्वार पर गेलाह। पार्वती पुछलथिन – अहाँ के छी? शिव बजलाह – हम शूली छी। पार्वती कहलथिन – जँ अहाँ शूली छी तँ वैद्यक ओहि ठाम जाउ। एहि ठाम वक्रोक्ति एवं श्लेषसँ शूलीक अर्थ शूलरोगग्रस्त कयल गेल।

'कस्तवम्? शूली, मृगय भिषजं'

चैतक प्रति कविक मनमे प्रसन्नता नहि अछि – 'नेनासँ बुढ़बा धरि सभकेँ कयलक चैत हरान'। ओना, कविवर सीतारामझा विरहिणीक हेतु चैतक विगान (निन्दा) कयलनि अछि –

चैतन चैत न हो तनमे, मन-भृंग नचैत न नीक लगै अछि।
भूषन भार लगै अछि, भूख न, भू-ख-नगादि न नीक लगै अछि।।

वैशाखक वर्णनक क्रममे कवि शाख-चढ़ल कोकिलक काकलीक वर्णन करैत नख-शिख लाल शिरीषक प्रति आकर्षित मधुकरक वर्णन कयलनि अछि –

धन्य मास वैशाख, शाख चढ़ि
कोकिल कुहुकि सुनाबय।
नखशिख लाल शिरीष कुसुम
लग मधुकर गुनगुन गबय।।

कवि वैशाखक पुण्यमास नामकरणक प्रति आस्थावान् छथि, कारण एहि मासमे सीतामाताक प्रादुर्भाव भेल – 'कारण हिनके कोरामे अवतरली सीता माइ।'

कृतिक अन्तिम कविताक शीर्षक 'जेठ' अछि। एहिमे जेठक प्रचण्डताक वर्णन कयल गेल अछि। एहि मासमे आठो दिशा धूल-धूसरित भऽ जाइत अछि। चन्द्रमाक प्रकाश मलिन बुझना जाइत छैक। पुष्करमे विस (मृणाल) सहित कमल जरि जाइत अछि। पुरिबा-पछबाक युद्ध दृष्टिगत होइत अछि। ओना, कविक आशा एहि रूपेँ व्यक्त होइत अछि–

पाकत आम रोहिनियाँ हैत अबस्से बरखा हेठ।
पलटत लोकक प्राण, आइसँ चढ़ल मास ई जेठ।।

पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क प्रस्तुत काव्यकृति कविकर्मक दृष्टिसँ परम प्रशंसनीय अछि। एहिमे रसोचित गुणालंकार, रीति आदि काव्योपकरणक प्रयोग भेल अछि। वैदर्भी रीति, उपनागरिका वृत्ति, वृत्त्यनुप्रास आदिक

आगमनसँ सहृदयकैं अतीव आह्लादक सृष्टि होइत अछि। कविक कवितामे नादात्मकता एवं प्रवाहशालिताक सहज दर्शन होइत अछि। संस्कृतमे एकटा उक्ति अछि जे –

तया कवितया च किम्
तया वनितया च किम्।
पद-विन्यास मात्रेण
यया नापहृयते मनः।।

ओहि कविता एवं ओहि वनितासँ की प्रयोजन, जे पद-विन्यास मात्रसँ सहृदयक मनक हरण नहि कऽ लेअय? कविक रचनामे अनेक आकाशीय, पार्थिव, स्पार्शन, चाक्षुष, घ्राणज विम्बक प्रयोग भेल अछि।

ऋतुप्रियाक कविक कविकर्म सहृदयता एवं पाण्डित्यसँ पूर्ण अछि। मैथिली की, अन्यो भाषाक साहित्यमे एहन रचना अत्यल्प अछि। वस्तुतः मैथिली साहित्यमे एहने रचनाक प्रयोजन अछि।

●

कहू कुशल !

डॉ० विभूति आनन्द

तीन मार्च दू हजारक लिखल चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क पत्र। जँ एकरा हमर आत्म-प्रशंसा नहि बुझी, तऽ हम अपन बात एतहि सँ शुरू करैत छी। ओ लिखैत छथि–

आयुष्यमान् श्री विभूति आनन्द जी,

शतशः आशीर्वादक संग अशेष साधुवाद। हम छी अल्पज्ञ, सोझ-सोझ बात बूझि जाइत छिऐक, मुदा द्रविड़ प्राणयाम कऽ कहल बात हमरा भोथ बुद्धि मे नहि अँटैत अछि। हम विश्वास देयबैत कहैत छी जे हमरा जे पोथी श्रद्धापूर्वक दैत छथि तकरा पढ़ैत छी अवश्य, आ जे बुझैत छिऐक से तुरंत पोथी पर लिखि दैत छिऐ'। हँऽ, बुझिते छिऐ' थोड़ तँ प्रतिक्रिया लिखबा सँ मौने रहब श्रेयस्कर बुझाइत अछि।

पोथीक नाम सँ हमरा माथ मे एक वाक्य आयल – 'सुन्न चोट नेहाइक माथ'। एहि उपलक्षणक प्रत्यक्ष उदाहरण हम सब मिथिलाबासी, मैथिलीभाषी बनले छी।

हमरा 'बाँस', 'मायक मनोरथ', 'दूभि' बड़ नीक लागल। 'तैयार अछि पृथ्वी', 'माटि' बहुत स्पष्ट बुझायल। 'गाम', 'आँगन', आदि मे कविक अभिव्यक्ति आकृष्ट कयलक। किछु प्रयोग, यथा 'खिच्चा रौद', 'लजकोटर रौद', 'बाढ़निक दुलार' बड़ नीक लागल, तँ 'मूसर लागल समाठ', 'इमली स्वाद' खटकल। 'पचीसीक आठो कौड़ी जकाँ चित्त खिलखिलाइत, गाय गोबरक साबुन सँ स्नान करैत आँगन' आदि पढ़िकऽ भेल जे ओहि कलम कैँ चूमल जाय वा हाथ कैँ से सोचि नहि पैलहुँ ! इति शुभम्।

स्नेहाधीन, श्री अमर

हमरा बूझल छल जे कवि अमर एक गंभीर पाठक सेहो छथि। तैँ एहि मे अजगुत नहि लागल, जे हमर 'नेहाइ पर स्वप्न' कविता संग्रह पर ओ अपन पाठकीय अभिमत देलनि। किछु दिन बाद हमर एक रचनाकार मित्र अयलाह डेरा। उक्त पत्र पर नजरि गेलनि। हम पढ़बा लेल देलियनि। पढ़लनि। आ त्वरित प्रतिक्रिया देलनि – आश्चर्य ! फेर हमरा पर उलहन फेकैत कहलनि – दरभंगा आबि अहूँ समाप्त भऽ गेलौं ! हम की बजितहुँ! किछु नहि बजलहुँ। मात्र हुनक सोच पर बिहुँसि देलहुँ।

आइ कवि अमरक मादे सोचबाक लेल बैसल छी तऽ ओ घटना मोन पड़ि रहल अछि। आइयो ओहिना बिहुँसि रहल छी। आ कचोटक संग विचारैत छी जे हमर समकालीन कवि-समीक्षक एहि मुद्रा मे किए जीवि रहल छथि? कोनो कविक कवि-भाव कैँ ओकर व्यक्तित्वक संग घोरिकऽ अपन विचार कैँ किए घोर-मट्ठा कऽ लैत छथि !

एतऽ एक प्रसंग मोन पड़ैत अछि। कवि यात्री अपन जीवनक सांध्य-वेला मे लहेरियासराय आबि गेल रहथि। निजी चिकित्सक भेल रहथिन गणपति मिश्र। घोर साहित्यिक आ मैथिलीक लोक। एक दिन ओ यात्री सँ पुछलथिन – एखन की सभ पढ़बाक इच्छा होइत अछि?

यात्री कहलथिन– हिन्दी मे पंत, निराला ..... कैँ फेर सँ पढ़ऽ चाहै छी!

– आ मैथिली मे?

– मैथिली मे अमरजी कैँ पढ़बाक इच्छा होइत अछि ! ...

एहि प्रसंग कैँ एतहि स्थगित कऽ हम आगू बढ़ि ई सोचैत छी जे स्वयं यात्री अमर कैँ पढ़बाक इच्छा व्यक्त करैत

छथि तऽ एकर पाछू कोन कारण भऽ सकैत अछि?

एतऽ एक बात आर उल्लेख करऽ चाहैत छी जे यात्री बेसी काल वाम-कोला मे रहियो कऽ विवादक केन्द्र भऽ जाइत रहथि। एकर कारण छल हुनक भीतरक राष्ट्रीय भावना। परिनिष्ठित शब्दावली मे कही तऽ ओ घोर राष्ट्रीय मार्क्सवादी रहथि। अपन गामघर, अपन देसकोस, अपन माटिपानि, अपन लोकवेद, अपन राज्य, अपन राष्ट्रक आह आ धाह केँ अपन लेखनी सँ पहिने मुखरित करब ओ अपन पहिल कर्त्तव्य मानैत रहथि। जखने हुनक चेतना केँ पोलित-व्यूरो सँ विभेद होइत छलनि, ओ फराक भऽ ठाढ़ भऽ जाइत रहथि। कवि अमर केँ पढ़बाक पाछू कदाचित् वएह राष्ट्रीयता तऽ ने हुनका विवश-बाध्य कयने रहनि ! यात्रीक एहि दृष्टि सँ जँ आइ मैथिलीक चिंतक चिंतन करितथि तऽ कवि अमरक राष्ट्रवादी चिंतन पर जामिकऽ गप भऽ सकैत।

हमरा लगैत अछि, एहि तरहेँ सोचल जयबाक चाही। मुदा तकरा संग इहो लगैत अछि जे हमर एहि तरहेँ सोचब सेहो हुनका असौकर्य मे राखि देतनि। हुनका लोकनिक एहि प्रकारक असौकर्य, संग-संग रहितो, कहियो नहि रूचल। किएक तऽ हम अपन हाथ मे अनेरो एकरंगा लेने रहबाक मानसिकता केँ प्रदर्शनीय, अथवा बिनु पचल विचार बुझैत रहल छी। तेँ मित्र लोकनिक एहन मानसिकता पर हँसि टा सकैत छी। हँसैत कवि अमर सेहो छथि –

सावधान ! हमरा सँ हटले रहू
थिकहुँ हम सब नवतुरिया,
घोरि देब हम हवा-पानि मे
चुप्पेचाप जहर केर पुड़िया।
अछि जिजीविषा, मुदा युयुत्सा
अन्तर्मन मे मारि करैए
कुण्ठा ओ संत्रास-ग्रस्त छी,
बुद्धि हमर बपहारि कटैए

मुदा एना नहि। हम हँसैत छी तऽ ताहि मे, आ कवि अमर हँसैत छथि तऽ ताहि मे भावक अन्तर रहैत अछि। बयसक अंतर रहैत अछि। सोचक अंतर रहैत अछि। हम मानैत रहल छी जे एहि तरहें जँ गंभीरता सँ सोचल, विचारल आ हँसल जाय तऽ पुतरी पर पसरल उदासीनताक कुहेस फाटऽ मे देरी नहि लगैत छै। अमरक कविता पढ़ैत ई बोध हमरा हमरा बेसी काल होइत रहैत अछि।

कवि अमर सँ पहिल भेट कहिया भेल, मोन नहि अछि। 'कन्यादान' फिल्म मे देखने रहियनि, आ कि विद्यापतिक मंच पर ! बाट चलैत कतौ क्यो देखा देने छल, आ कि एम.एल.एकेडमी सँ बहराइत स्वयं देखने रहियनि! मोन नहि पड़ैत अछि। अपन एकान्त मे कवि अमर हमर आत्मीय रहल छथि, तकर कारणो प्रायः इएह बुझाइत अछि जे हुनका कहिया देखलियनि, से मोन नहि पड़ैत अछि। मोन तऽ दूरक लोक केँ पाड़ल जाइत छै, अथवा एहन लोक पड़ैत छै जकरा संग औपचारिक संबंध हो।

जहिया कहियो कोनो कविसम्मेलन मे हुनका देखैत छियनि, भीतर सँ पुलकित भऽ उठैत छी। पुलकित एहि लेल नहि जे जाधरि संग रहब, हुनकर 'विट्स' सुनैत रहब। ओहो सुनब। मुदा सभ सँ बढ़ि राजनीतिक गुण्डै पर, अथवा सामाजिक अधोगति पर हुनक धरगर व्यंग्य केँ सुनब। देखब जे कवि अमरक गुरु-रूप कोना कवि-रूप मे सेन्ह मारि गड़बड़केँ छौंकियाबैत अछि, ओकरा पर काकु करैत अछि, लोककेँ तिलमिलयबा लेल बाध्य करैत अछि। ई

'कोना', जकरा सुसंस्कृत रूप मे 'शिल्प' कहबै, कवि अमरक अनूप लगैत रहल अछि हमरा, अनुपम लगैत रहल अछि हमरा।

हुनक एहि रचना-प्रक्रिया पर एखन धरि विचार नहि भऽ सकल अछि। कोनो गलतक विरोध करबाक अछि, ओहिपर व्यंग्य करबाक अछि, तऽ से कोना करी जे सोझे मर्म धरि पहुँचि जाय, आ तहि लेल कवि शब्दक चयन, शिल्पक चयन, आ कि मुद्राक चयन कोना आ कोन स्थिति मे करैत छथि– कोनो कविक प्रसंग एहि ढंगे गप करब जरूरी होइत छै। कवि अमरक प्रसंग से विशेष रूपेँ जरूरी बुझाइत अछि हमरा। किएक तऽ व्यंग्य एक सर्वथा कठिन शिल्प थिक, जकरा सभ नहि सम्हारि सकैत अछि, अंगीकार करब तऽ आर कठिन।

मुदा मैथिली मे एहि ढंगे सोचबाक मोन नहि विकसित भऽ सकल अछि। क्यारी-क्यारी मे बाँटल लोक, अपने मे अपने सँ काटल लोक एकर सार्थकता बुझबाक प्रयोजने नहि बुझि सकल अछि एखन धरि। मैथिलीक शीर्ष हास्य-व्यंग्यशिल्पी हरिमोहन झा जाधरि जीवित रहलाह, अपवाद छोड़ि हुनक रचना-प्रक्रिया पर, अथवा मात्र रचनो पर गप नहि भेल। परोक्ष भेला पर सेहो तेना भऽकऽ गप नहि भेल। हुनकहि परम्पराक कवि अमर सेहो कोला-कोला मे बँटल चिंतक-समीक्षकक उदासीन मानसिकताक शिकार बनल रहल छथि। ओ जाहि सोचक रचनाकार, विशेष कऽ कवि भऽ गेल छथि, ताहि गंभीरता सँ देखल नहि गेल छथि। व्यंग्यक कवि हास्यमे उड़ा देल जाइत रहल छथि।

कवि अमर जखन-जखन मोन पड़ैत छथि, हुनक एकटा कविता तकर संगहि मोन पड़ैत अछि – 'कहू कुशल'। चिंतनशील होइत छी तऽ ईर्ष्या होइत रहैत अछि। एकरा एना सेहो कहल जा सकैत अछि जे जखन हम कवि अमर केँ पढ़बा लेल तैयार होइत छी, तऽ इएह कविता तकर कारण बनैत अछि। प्रायः कवि यात्रीक संग सेहो एहने सन स्थिति आयल होयतनि, जखन ओ अमर केँ पढ़बाक इच्छा व्यक्त कयने होयताह।

ई कविता पहिल बेर उनैस सय पचपन मे 'विद्यापति के देश मे' नामक संकलन मे छपल छल। पछाति हुनक अपन संग्रह 'आशा दिशा' मे आयल। एहि प्रसंग दू बिन्दु पर ध्यान देब आवश्यक– पहिल, रचना-काल आ दोसर, कवि-दृष्टि। देश आजाद भऽ गेल छल। पहिल आम चुनाव सेहो पुरना गेल छल। सतत साकांक्ष कवि तखने, जखन ने स्वतंत्रतादेवीक पयरक अलता, ने हाथक मेहदी मलीन भेल छलनि, कुशल-क्षेमक प्रश्न लऽ जनताक समक्ष आबि गेल रहथि। डेरायल मोन, हेरायल इच्छा आ औनायल स्थिति लऽक जे आइ हम सभ अस्त-व्यस्त-संत्रस्त लागि रहल छी, ताहि स्थितिपर कवि अमर पचपने इसबीमे अपन विरोध दर्ज कऽ चुकल छलाह। तेँ हुनका पर एहि ढंगे गप प्रारम्भ करब प्रथम विचारणीय विषय लगैत अछि।

हुनक कवि सामाजिक दुश्चिंता सँ सतत सीदित रहल अछि। उनैस सय चालीस सँ प्रारम्भ भेल ई दुश्चिंता आइ दू हजार बीति गेलाक बादो ओहिना अपितु ओहिसँ अधिक सीदित अछि। लगातार छओ दशक सँ निर्बाध। एहि बीच राजनीतिक-सांस्कृतिक-आर्थिक आदि सभ स्थिति पर जमिकऽ उठापटक भेल, प्राकृतिक आपदा आयल, इन्द्रिय सँ लऽ कऽ खगोलीय स्तर धरि कतोक रंगक हवा-बिहाड़ि उठल-बहल। साहित्य-लेखन होइत रहल। लेखकीय चिंतन मे, चिंता मे वाद-विवादक कतोक नव आयाम जुड़ल, पुरान ध्वस्त भेल। भाव-भाषा, विषय-वस्तु आदि अनेक स्तर पर दृष्टिकोणक विवाद उठल, कमल, चुप भेल। एहि बीच क्यो एक दशक बाद अलोपित, क्यो दू धरि आबि असोथकिल, क्यो-क्यो तीन-चारि धरि, आ कि छबो धरि सक्रिय, मुदा अपन कोनो परिचिति बनाबऽ मे सफल नहि भऽ सकलाह। अमरक रचनाकारकेँ, खासकऽ अमरक कविकेँ एहि यात्रामे अपवाद मानल जा सकैत अछि। एकटा व्यंग्य-शिल्पीक रूपमे अमरक कवि जे अपन विशिष्ट परिचिति बनौलक, तकरा रेखांकित कयल जयबाक चाही। विगत साठि बरखक ई अनथक यात्रा, जे कवि केँ एक परिचिति देलकनि अछि, तकर उत्स वएह कविता थीक, जे

पचपन मे से हो टटका छल, आइये ओहिना लौंगिया मेरचाइ जकाँ सुसुआ दैत अछि मन-प्राण कैँ – 'कहू कुशल!' ओहि कविताक जे सामाजिक चिंता, सामाजिक सरोकार छै, ताहि पर आबऽ लेल सभ चेतन प्राणी कैँ विवश होबऽ पड़ैत छै। आइ संबंध मे जे औपचारिकता मात्र रहि गेल छै, अथवा संबंध-टूट सँ विकल प्राणी एक-दोसरक कुशलता लेल जे व्यग्र अछि – दुनूक समन्वित चिंता ई कविता व्यक्त करैत अछि। कतोक त्याग आ बलिदानक बाद देश कैँ आजादी भेटलै। लोक उमंग-उछाह मे जीवाक कल्पना कयलक, सपनाक गाम-समाज बनयबाक ओरिआओन करबा मे लागल। एहन ओरिआओनकर्त्ता कैँ उनैस सय बाबन मे चुनलक। मुदा सभ कल्पना, सभ सपना चटपट मे खण्ड-खण्ड होबऽ लगलै। स्वप्न-भंगक एहि स्थिति मे कवि अमर ओकर जड़िकैँ प्रत्यक्ष दोषी माननलनि आ ओकर अल्हैनी आ अचिंता दिस तर्जनी उठौलनि –

स्वार्थक ज्वाला धुधुआय रहल
तँ ककर पुछारी के करतै?
अपना सँ छुट्टी छैके ने
ओ आनक हाथ कोना धरतै?

दशक नहि पुरैत-पुरैत मोह-भंगक त्रासदी कैँ भोगैत एक-दोसर सँ कुशल-क्षेम पुछनिहार जनता आकुल-व्याकुल भऽ गेल। ओकरा बूझऽ मे भांगठ नहि रहलै जे स्वप्नक देश बनौनिहार सत्ताधारी, सेवक नहि शैतान भऽ गेल। आ शैतान किए हमर हाल-समाचार लेत? 'ओ नहि पुछैत अछि कहू कुशल!'

मुदा कवि एतऽ सोचक स्तर पर किंकर्त्तव्यविमूढ़ नहि होइत छथि। ओ त्वरित प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि जे आजादी हमरा किछु बेसी हड़बड़ी मे भेटि गेल। हम एकरा स्वादक वस्तु बूझि लेलहुँ। एकर पाछू क्रियाशील छद्मवेशी व्यवसायी कैँ नहि चिन्हि सकलहुँ। तैँ हमर ई हाल भेल। तैँ हम एक-दोसरक कुशल जानऽ लेल व्याकुल भऽ उठलहुँ, अथवा अपने मे अपस्याँत केवल औपचारिकतावश कुशल-क्षेम शब्द धरि सीमित रहि गेलहुँ।

पचपनक ई सत्य आजुक सत्य सेहो थिक। सभ एक-दोसर कैँ धकिया आगू बढ़ऽ चाहैत अछि। सभक मोन प्रतिस्पर्धी बनि गेल छै। संबंधक बंधन टूटऽ लागल अछि। क्यो ककरो सुनऽ लेल तैयार नहि अछि। स्वार्थ सभक टीक पकड़ि हिड्डुला झुलैत अछि, लोक खूनी मुद्रा मे जीबैत अछि। एक समय छल, जखन सामाजिकता शेष छलै। समाज एक-दोसरक सुख-दुख मे ठाढ़ रहैत छल। विवाह-कर्म हो आ कि श्राद्ध-कर्म, ओ एकक नहि भऽकऽ सभक होइत छल। आइ सभटा बंधन मे घून लागऽ लागल अछि। एतऽ धरि जे पति-पत्नीक संबंध सेहो तनाव मे जीबि रहल अछि। विचित्र स्थिति अछि!

हमर एक मित्र छथि। शहर मे रहैत छथि। गाम सँ संबंध टूटल नहि छनि। बेटीक विवाह ठीक कयलनि। पुछलियनि, कतऽ करब? कहलनि, गाम मे नहि करब। ओतऽ सहयोग कयनिहार नहि भेटत, दसटा पाहुन कैँ नीक निकुत खोआयब, तकरा बनाकऽ खोऔनिहार धरि नहि भेटत। पिताक श्राद्ध कयने रही। भंडुल कऽ देलक। खर्च आ खिधांस दुनू लऽकऽ घुरलहुँ। शहर एहि प्रदूषण सँ बाँचल अछि। गामक विकास-रूप आ शहरक विकास-रूप मे मौलिक अंतर छै, तैँ सभ किछु सहज उपलब्ध रहैत अछि। डाँर मे 'दम' रहबाक चाही।

स्वतंत्रता-पूर्व जे संबंध-बंध छल, अटूट छल, आइ टुटि चुकल अछि। समाज फाँक-फाँक भऽ गेल अछि। आ जकर कारणो हमहीं छी। हमरे बीचक लोक अपन भीतर पाखण्ड कैँ विकसित कऽकऽ सामाजिक संरचना कैँ तहस-नहस कऽ रहल अछि। हमरा सभ ओहन कैँ चिन्हियो कऽ नहि चिन्हि पाबि रहल छी। जेना हमरो भीतर पाखण्ड-रूप अँकुराय लागल आछि। भरिसक तैँ, अग्नि-स्फुलिंग सन तेज करोड़ो पद-दलितक करुणा सँ आर्द्र आहक दिस ध्यान नहि गेल।

कवि अमर एहि विस्फोटक स्थिति सभ पर पचपने इसबी मे स्पर्श कयलनि। अभिजात वर्गीय संस्कार कैं चेतौलनि। चेतौलनि एना, जे आहक जखन अति भऽ जाइत छै, तऽ ओ धाह मे परिवर्तित भऽ जाइत छै। शुरूहे सँ हुनक चिंता अपन ढंगक रहलनि। ओ वैज्ञानिक विध्वंसक चिंता हो, स्वार्थक ज्वाला मे झरकैत मानवताक चिंता हो, वैचारिक स्खलनक चिंता हो, आ कि अपन निजताकैं हेरा जयबाक चिंता हो, अमरक कवि एहि सभ दुःस्थिति पर सतत सहज भावें अपन लय मे टिप्पणी करैत रहल।

आइ भारतीय समाज राजनीतिक अदूरदर्शिताक कारणें अकबका सन गेल अछि। ओकर फूहड़ राजनीति जीवनक सभ स्तर कैं प्रदूषित कऽ रहलै अछि। अर्थात् राजनीति गंभीर नहि भऽकऽ हल्लुक भेल जा रहल अछि, जोकर भेल जा रहल अछि। पक्ष आ विपक्ष भ्रष्टाचार आ साम्प्रदायिकता कैं अपन सुविधा लेल अपन-अपन ढंग सँ भजा रहल अछि। निराकरण-चिंता गौण छै। सोचबाक थीक जे जखन नीति-नियंता फूहड़ भऽ जाय, तखन आम जनताक की हाल-चाल रहत ! अपन एक नवीनतम कविता मे कवि अमर ओहि चरित्रक एक चित्र उकेरैत छथि –

राज चलायब ठठ्ठा नहि छै, तिकड़म भिड़बऽ पड़िते छै
जते विरोधी होइ छै, से जी-जान लगाकऽ लड़िते छै
मुदा असल गुड़किल्ली सबकैं नीक जकाँ नहि बूझल छै
तैं स्वतंत्रता-देवी कैं ता हमरे मचकी झुलबऽ दे –

एहि कविता मे 'स्वतंत्रता देवी'क चर्चा भेल अछि। एहि देवीक दुर्दशा सँ कवि उनैस सय पचपने मे आहत भेल रहथि। देवीक दुर्दिनक आभास कवि कैं तहिये भऽ गेल रहनि। आइ ओ विराट भऽ गेल अछि। जैं कि राष्ट्रक विकासक आरम्भे मे अदूरदर्शीक हाथ पड़लै, हम आइ सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, एतऽ धरि जे सांस्कृतिक स्तर पर सेहो विकलांग भऽकऽ कहि गेल छी।

आइ जनता विचित्र दुर्दिन मे जीबि रहल अछि। सत्ताधारी एकरा फराकक लोक बुझि रहल अछि। एक दिस ओ समस्त राजनीतिज्ञ अछि, दोसर दिस एकरा छोड़ि देने छै। एहि अवडेरल लोकक ओ किए हालचाल लेत? एकर अहित मे ओकरा अपन हित देखाइत छै। तैं कवि ताही दिन लिखलनि–

जनिका मुट्ठी मे सत्ता छनि
तनिका कर शोभित छनि मूसल
ओ नहि पुछैत छथि कहू कुशल।

अपन देश-सामाजक कुशल-क्षेम बुझबा लेल एवं देखबाक लेल आकुल-व्याकुल, पछिला छओ दशक सँ सतत अविराम यात्रा करैत, लड़ैत, हँसैत-हँसैत व्यंग्य करैत कवि अमर कैं पढ़ल-गुनल नहि जायब विशुद्ध रूप सँ लेखकीय बइमानी थिक। हमरा लगैत अछि जे चिंतक-समीक्षककैं वाद-प्रतिवादक घेरासँ बहरा समय-सापेक्ष कवि अमरक समाज-चिंता पर अपना कैं फरिछा लेबाक चाही। ई सत्य छै जे हमरा सभ कोनो एक जीवन-दर्शन कैं आदर्श मानि जीवन-यात्रा तय कऽ लेने छी। तकर ई अर्थ किन्नहु नहि होइत छै जे ओहि दर्शनक व्याख्या सेहो सभ एके ढंगे आ एके रंगे करी। मार्क्सीय दर्शन आइ सम्पूर्ण वैश्विक राजनीति कैं प्रभावित कऽ लेने अछि। जानल-अनजानल भाव-भाषा-भंगिमा सभतरि व्याप्त अछिओ। एकरा दोसर शब्द मे कही तऽ कहि सकैत छी जे तैं ओकर अपन सत्ता छिन्न-भिन्न भऽ सम्पूर्ण वैश्विक राजनीतिक दर्शन मे अपरिहार्य आ प्रतिष्ठित भऽ गेलै अछि। अस्तु।

हम अपन कथनकैं एहि तरहैं सरलीकृत कऽकऽ कहऽ चाहैत छी जे जहिना कवि अमर अपन सोच मे स्पष्ट छथि,

कोनो भ्रम मे नहि छथि, तहिना हमरो स्वयं केँ स्पष्ट कऽ लेबाक चाही। अपन परंपरा केँ सहज रूप मे लेबाक चाही। कम-सँ-कम युगबोधक स्तर पर तऽ गप कयले जयबाक चाही। हमरा लगैत अछि यात्री पंत, निराला .... केँ पढ़बाक इच्छा केँ व्यक्त कऽ स्वयं केँ छायावादी खेमा मे अनबाक आग्रही नहि रहल होयताह, तहिना अमर केँ पढ़बाक इच्छा व्यक्त कऽ ओम्हरहि ओंगठि जयबाक मोन नहि बनौने होयताह। युगीन संदर्भ, युगीन बोध आ युगीन हुनक भावना प्रायः आकृष्ट कयने होयतनि ! एहि तरहें सोचल जयबाक चाही। अमर मैथिलीक बड़ी टा कवि छथि– सोचैत हुनका कविक मादे सोचल जयबाक चाही। समकालीन चिंतक-समीक्षक द्वारा अपन बटखारासँ कवि केँ जँ नापल जाय तऽ हुनक एक नव रूप बुद्धिजीवीक समक्ष आबि सकैत अछि। आ जे साहित्य आ साहित्यकार दुनूक हित मे रहतै। कोनो गप पर हमर पित्ती एक दिन कहने रहथि, विचार-भिन्नता मनुक्खक सहजात गुण थीक। तेँ की मोन नहि मिलने हम गुम रही। तखन तऽ सामाजिक आदान-प्रदाने नष्ट भऽ जायत।

आइ कवि अमरक मादे सोचबा लेल बैसल छी, तऽ ओ पत्र मोन पड़ैत अछि। ओहि पत्र पर अपन मित्रक प्रतिक्रिया मोन पड़ैत अछि। ओहि प्रतिक्रिया मे निहित उपहास मोन पड़ैत अछि। हमरा प्रति उपजल हुनक विरोग मोन पड़ैत अछि। मुदा हमर सोचब नहि बदलि पबैत अछि। हम पुनः पुनः सौचैत छी जे कवि अमर केँ गंभीरतापूर्वक एखन-धरि पढ़ल-गुनल नहि जायब एक साहित्यिक अपराध थिक। हम कोन स्तर पर हुनक कविक संग छी, नहि छी, अथवा गठबंधनक स्तर पर जँ भऽ अथवा नहि भऽ सकैत छी, तऽ ताहि पर तार्किक गप-सप होयबाक चाही। एखन धरि नहि होयब हमर इमानदारी पर प्रश्न ठाढ़ कऽ सकैत अछि। नहि तऽ साहित्य-सरोकारक मुँहथरि पर ठाढ़ इमानदार भविष्य एहन सभ गलत केँ काछऽ लेल विवश भऽ सकैत अछि। आ तखन ओकरा एतबो पुछबाक शिष्टाचार वा श्रद्धा नहि रहि सकैत छै, जे पूछि सकत – कहू कुशल !



‘विविध गीत’क गीतकार श्रीअमर

डा० फूलचन्द्र मिश्र ‘रमण’

प्रत्येक युगक कवि समाजक हितचिंतक बनल अपन नव दृष्टि, नव विचार ल’ कैं अबैत अछि आ समाजगत परिवर्तनक प्रक्षेपण-लक्ष्यसँ समकालीन वा दोसर पीढ़ीक कविक नव दृष्टि आ नव विचारक संग उपस्थित होइते ओ पहिल पीढ़ीक कवि आ’ओ विचार पुरान मानल जाय लगैत अछि। किन्तु दुनू धाराक कवि अपन-अपन सूक्ष्म दृष्टिक प्रति आस्थावान बनले रहैत अछि।

ऋग्वैदिक प्राचीन कवि प्रकृति (उषा, वरुण, अग्नि, सूर्य आदि)कैं अपन सर्वस्व बूझि ओकरहि गायनमे रमल भेटैत छथि तँ ओतहि नवीन कवि अपन समानधर्मा मनुष्यक गायन करैत भेटैत छथि। आदिम ओ वन्य संस्कृतिजीवी मानव पर मानवेतरक प्रहारसँ आहत कवि अपन इन्द्र (आरक्ष प्रधान) सँ मानवेतरक संहार करबाक विनती करैत छथि तथा राजा ओ धर्मावलम्बीक दान-पुण्य आ’ प्रेम-घृणाक गान सेहो करैत छथि। ई स्थिति प्रगतिक रूपमे उत्तरोत्तर मनुष्यक सन्निकट होइत आयल जे रामायण कालमे पूर्णतः चरितार्थ भेल। आदिकवि वाल्मीकि अपन महाकाव्यकैं प्रकृतिक सर्वस्वसँ चमत्कृत करितहुँ प्रकृतिकैं सर्वस्व नहि माननलि। आदिम जीवनसँ हँटिकय समाजक व्यक्ति सन आचरण केनिहार मानवक चरित-गान कयलनि। एहि कालक ई महत्तम देन थिक जे मानव अपन असाधारण कार्यसँ महामानव बनि गेल। कहबाक अभिप्राय ई जे कवि कवित्वक आदिम कालहिसँ अपन परिवेशक दृश्य-परिदृश्यकैं अपन काव्यमे व्यंजित करैत आबि रहलाह अछि।

यद्यपि परिवर्तनशील समाजक प्रवृत्ति, मूल आधार आ बाह्य उपकरणक प्रभावसँ वैचारिक स्तर पर कविक दृष्टि सतत द्वैध रहल अछि। कतहु प्रकृतिक प्रशस्तिगानमे आत्मविभोर तँ कतहु सभ्यता, संस्कृति, विचार आ भावक स्त्रष्टाक रूपमे मनुष्यक गुणगानमे निभेर। कतहु अगोचर देवतामे अदृश्य शक्तिक परिकल्पना आ ‘त्वमेव सर्वं मम देवदेव’क स्तुति तँ कतहु आसुरी शक्ति आ प्रकृति पर विजय हेतु संघर्षरत मनुष्यमे देवत्वगुणक स्तवन। उभयपक्षीय कवि वा उभयपक्षीय कविदृष्टि तखन जाकय एक भ’ जाइत अछि जखन काव्य (महाकाव्य आदि)मे कवि अपन प्रिय सद्पात्रकैं देवताक अनुरूप रूप आ शक्ति प्रदान करैत अछि। आदिम कालहिसँ जीवनमे व्याप्त दैविक भय आ मानसिक दासताकैं दूर करबाक निमित्त मनुष्यकैं सर्वोपरि साबित करैत अछि– आ आश्वस्त करैत अछि जे सृष्टि आ प्रलय मनुष्यक हाथमे अछि। वर्तमान कालहु मे वैज्ञानिक प्रभावसँ कृषि अनुसंधान आ परमाणु-युगमे ई बात आर बेशी प्रामाणिक प्रतीत होइछ। तखन अन्तःकरणक प्रगतिवादी पक्ष लेल अलौकिक देवता अद्भुत आ अज्ञात नहि रहि जाइत छथि। किन्तु दैविक-भौतिक प्रकोप-दर्शन सँ अन्तःकरणक रूढ़िवादी पक्ष भगवानसँ भक्तकैं श्रेष्ठ मानिओ कय देवताकैं साकार-निराकारक रूपमे स्वीकृति प्रदान करितहि रहल अछि। एहि दुनू पक्षक एक संग वा फूट-फूट आवेशी लोकक सर्वाधिक परिचित देवता ‘शिव’ बुझल जाइत छथि। अतिपरिचियसँ शिवकैं लोक कखनहु अपन हितू समाङ बुझि लैत अछि तँ कखनहु आदरणीय-सम्मान्य, कखनहु सिद्धपुरुष योगी मानि लैत अछि तँ कखनहु मुँहलगुआ सुधबौक, कखनहु श्रद्धार्पण करैत अछि तँ कखनहु दुख-दोषेक वाचन। एहि लेल लोक संगीतमय भाषाक आश्रय चाहैत अछि जाहिसँ अपन आन्तरिक अनुभूतिकैं मुक्तकंठसँ अभिव्यक्त कय आत्मीयकैं रिझा सकय। श्रुतिमधुर गीत गाबि आत्मिक तुष्टि पाबि सकय। ताहि लेल प्रगतिकामी ओ प्रगतिवादी कवि भावातुर लोकक छलकल प्रेम-प्रवृत्तिसँ भाव-धर्मक अभिसृष्टि करैत अछि-गीतिकाव्यक निर्माण करैत अछि, जाहिमे श्रद्धा, अपनत्व आ चमत्कारक शंसा रहैछ। मनोभावकैं तरंगित करबाक क्षमता रहैछ। मैथिली साहित्यक ख्यातनामा कवि श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ एहि दुहू भावधाराक अनुगामी गीतकार छथि, से हिनक शिव-गीतमे द्रष्टव्य अछि।

हास्य-व्यंग्यमूलक कवि श्री अमरजीक सस्वर काव्य-पाठसँ श्रोता-समुदायक बीच जे ख्याति-विस्तार अछि, मुक्तकक प्रस्तार अछि, ताहि अनुपातमे मैथिली गीतक संख्याबल थोड़ अछि। किन्तु जतबे अछि ताहिमे गीतिक तत्वबल बेजोड़ छैक।

हिनक एकमात्र मैथिली गीत-संग्रह उर्वशी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटनासँ उनैस सय अठासी ई०मे प्रकाशित अछि–'विविध गीत'। जाहिमे–महेशवाणी-दू, नवनचारी–एक, लगनी-तीन, लोकगीत-तीन, नृत्यगीत-एक, श्रृंगारगीत-एक, स्वागतगीत-दू, गजल-एक, डहकन-एक, बिडम्बना गीत-एक, युगलगीत-एक, उदासी-एक, कुल अठारह टा गीत संकलित अछि। एहि गीत सभकेँ देखने भासित होइछ जे श्रीअमरकेँ गीत लिखबाक रुचि वेशी नहि छलनि। जे लिखलनि से विशेष प्रयोजनसँ आ की विशेष अवसर पर। नियारि कय गीत दिस प्रविष्ट नहि भेला। तैयो जे लिखलनि ताहिमे गीतक सभ प्रमुख तत्त्व विद्यमान अछि। सफल गीतकारक चमत्कार सँ ओतप्रोत अछि। यद्यपि श्री अमर स्वयं कहैत छथि– 'हम ने गीतकार छी ने संगीतज्ञ, तखन मनोविलासक हेतु कखनहु कतहु किछु तुक जोड़ि लेल जे एक टा चनाजोरगरमवाला सेहो जोड़ि लैत अछि।...... एहिमे ने कोनो कवित्व प्रकर्ष अछि ने भावोत्कर्ष, केवल नमूनाक रूपमे मिथिलामे गाओल जाइत महेशवाणी, नचारी, लगनी, उदासी सन दस-पाँच गीतक संकलन मात्र भेटत।' ('विविध गीत'क आमुख)

संख्याक आधार पर भने कवि संकोच करथि, किन्तु एहि उक्तिमे मात्र विनम्रता अछि। किएक तँ आत्म-कथनमे पारंपरिक विनम्रता प्रत्यक्ष सत्यहु पर लाथ क' लैत अछि। से एतहु कविक दुनू महेशवाणीमे देखल जा सकैत अछि–

पहिल–

हे हर! वरद! बड़द चढ़ि आब पधारिअ हे,
भेल सदाशिव! हेहर दास उधारिअ हे।
लोचन भरि-भरि आयल, मन भरिआयल हे,
विसरल सरल सुगम पथ, दृग पथरायल हे।
आसन हम ने लगाओल, आश न त्यागल हे,
केहन अभागल भाग, सुदिन तजि भागल हे।
वेदन करब निवेदन वेद न जानिअ हे,
अहँ हर! हरब पराभव, मन अनुमानिअ हे।
हमरा खल छलि राखल, चाखल आसव हे,
आ सब पाप पछाड़ि कहैछ गरासब हे।
तारल अधम अनेक, किनार उतारल हे,
वारल ज्ञानक दीपक पसरि उवारल हे।
अमर सुयश पद गाओल, अलख जगाओल हे,
रमल शिवक पद भरमल मन सुख पाओल हे।

दोसर–

आब न हर! परतारिअ, भव सँ तारिअ हे,
दगधल मन बहटारिअ, बूझि न टारिअ हे।

हमर हृदय बड़ हलचल, हिय बिच हल चल हे,
थाकल पद दुहु निर्बल, संग न संबल हे।
रहलहुँ दुखक झमारल, विपतिक मारल हे,
जीवन जीवि बिगाड़ल, मन नहि गाड़ल हे।
अपनहि आगि पजारल, सब सुख जारल हे,
आदि न भेल सम्हारल, पौरुष हारल हे।
मन लहरल, हिय हहरल, लोचन झहरल हे,
हर न हरल दुख देखल, खल हँस खलखल हे।
विषय विषहि मन बाँटल, बाट न सूझय हे,
विलटल लटल-बुड़ल मति, बात न बूझय हे।
मन-नभ दुख-घन छारल, पकड़ि पछाड़ल हे,
साहल सन्मति दूरहि, कुमति बेसाहल हे।
अमर सुयश पद गाओल, आश लगाओल हे,
शिवक शरण गहि सेबल, से बल पाओल हे।

एहि दुनू महेशवाणीक पद-पदमे अनुप्रास आ यमक अलंकारक विन्यास दर्शनयोग्य अछि। हे हर-हेहर, वरद-बड़द, सदा-दास, विसरल-सरल आदि ओ परतारिअ-तारिअ, बहटारिअ-टारिअ, सेवल-से बल आदि पदमे अनुप्रासक शब्दच्छटा तथा भरि आयल-भरिआयल, आसन-आश न, हलचल-हल चल आदि पदमे यमकक अर्थान्विति अछि तँ 'अमर सुयश पद गाओल' वाक्यक पहिल अर्थ–अमर उपनामक कवि सुयशपद अर्थात् महेशवाणी गाओल, दोसर–अमर=शिवक यशस्वी चरण लग (शरणागत भव) गाओल, तेसर-शिवक प्रशंसामूलक प्रियगीत तँ चारिम-शिवेक लेल गेय पद=महेशवाणीक गायन आदि अर्थसँ श्लेष अलंकारक तथा 'मन-नभ, दुख-घन' मे रूपक अलंकारक चमत्कार अछि। संगहि उपास्यक प्रति सहज स्वामि-दास भाव आ भक्तिजन्य दीनता ओ आत्मनिवेदन अछि। भाषा आ विषय एवं विषय आ भावक सामंजन अछि। शब्द आ अर्थक विद्यमानता ओ संगतिसँ एहि दुनू महेशवाणीक आधारभूत सत्य कवित्वक प्रकर्ष आ भावक उत्कर्षमे सन्निहित अछि। धार्मिक गीतक कोटिमे रहितो ई साहित्यिक कोटिक लोकगीत थिक जे सामान्य जनसँ प्रबुद्धवर्ग धरिक हेतु समान रूपसँ बोधगम्य आ गेय अछि।

गीतकार श्रीअमरक नवनचारी व्यंग्य-गीत थिक, जाहिमे शिव प्रतीक छथि आ' बड़दयुक्त हरसँ भूमिच्छेदन करब धर्मदोष बुझनिहार वर्ग-विशेषकेँ ट्रैक्टरसँ स्वयं खेत जोतबाक युगसापेक्ष सलाह आ समर्थन तथा जातीय कूपमण्डूकतासँ बाहर भए राजनीतिपरक जनसम्पर्क बढ़यबाक आग्रह अछि तँ भारतमे भय रहल भोटक निन्द्य राजनीति आ सत्तालोलुप राजनेताक आत्मसुखभोगक लिप्सा पर सेहो शानदार व्यंग्य अछि–

शिव ई बाना छोड़ू औ,
बेचू बूढ़ बड़द, लय ट्रैक्टर परती तोड़ू औ।
भारतमे गणतंत्र भेल अछि बेटा अहिंक गणेश,
कार्तिकेय सेनापति छथिहे, अपने फोलू प्रेस,
देश सँ नाता जोड़ू औ।

सक्रिय रहि कय राजनीतिमे जन-सम्पर्क बढ़ाउ,
अपने भाषण खूब करू, जनताकेँ काज अढ़ाउ,
पुरनका धारा मोडू औ।
भूत, प्रेत, बैताले भोटर, देत अहींकेँ भोट,
अस्सी नम्बर खद्धड़ पहिरू, फेकू फाड़ि लङोट,
भाङ चिन्नी सङ घोरू औ।
बसि कैलास कपै छी जाड़ेँ, तकर प्रयोजन कोन,
'एयरकण्डीशण्ड' भवनमे रहू लगा कय फोन,
ज्ञान-गुदड़ीकेँ गोडू औ।
सुलभ 'मरकरी' व्यर्थ चन्द्रमा छेकता तखन ललाट,
'अमर' लोक धरि पर करु शासन, बनथु भैरवे लाट,
असुर केर भण्डा फोडू औ।।

लोकगीतक कवि अपन व्यक्तित्वकेँ सामाजिकतामे अलोपित क' दैत अछि किन्तु ओकर निजत्व एहिमे विलोपित नहि भ' पबैछ। कविक ई निजत्व लोकधर्म नहि, कविधर्म थिक जे निरन्तर रस-भावक संग-संग परम्परागत लोकगीतक अवधारणामे परिवर्तित युग-यथार्थक संधारण कय नवीन स्वर प्रदान करैत अछि। प्रत्यक्षतः ओहिमे धार्मिक प्रवंचना नहि, कार्मिक संवर्धनाक भाव-वृष्ट रहैछ। एखन जे लोकगीतक भास पर नव-नव बिम्ब आ विषय-वस्तुक समन्वयसँ गीत रचल जा रहल अछि ताहिमे बहुधा प्राकृतिक आपदा, कन्यादान आ बेरोजगारी संकटक अतिरिक्त राजनीतिक स्तर पर जातीयताक दोहनसँ प्रदूषित भेल सामाजिकताक आ की निरंकुश सत्ताधारीक धाहीसँ ध्वस्त भेल राज-काज ओ जर्जर नैतिकताक समस्या चित्रित रहैत अछि। जकर सत्यापन श्री अमरजीक लोकगीतमे सेहो होइत अछि–

बाँसक खुट्टा पर जकर बड़ेरी टेकल छै,
ताही फूसक घर पर ई चिनगी फेकल छै,
धधकैत कते लगतै देरी देखत दुनिञा
जे ओलतिक धधरा कोना बड़ेरी ठेकल छै,

देलकै देशक सब इनारमे भाङ घोरि?
नैतिकता केर हत्या कय, सत्यक टाङ तोड़ि?
देलकै समाजकेँ भुस्सा थरि बैसा तेँ ने
अपनो समाङकेँ रहलै अपन समाङ छोड़ि।
दुर्बुद्धिक द्वार खुजल सबतरि
सद्बुद्धिक बाटे छेकल छै।'

हिनक लगनीक एक अंश–

इज्जति मर्यादा गेलै, सतयुग केर दादा एलै,

सत्य-अहिंसा नाङरि अपन कटाओत रे की।

मुख्य अतिथिक ध्यान आकृष्ट करबाक दृष्टिसँ स्वागतगीतहुमे मिथिलांचलक वर्तमान दुःस्थितिक चित्रांकन करबामे कवि नहि चुकैत छथि–

ई विदेह जनपद विपन्न अछि,
कोटि-कोटि जन से निरन्न अछि,
भाषा-भूषा संस्कृति सब किछु
आइ भेल संकटापन्न अछि,
नगर-नगर, रन-वन भटकै छथि
लिखि ओ पढ़ि वैदेहीनन्दन।
करब कोन विधि हम अभिनन्दन।।

एकसठि ई.क गणतंत्र दिवसक अवसर पर बिहारक झाँकीमे दरभंगाक टोली जाहि नृत्यगीत द्वारा सर्वप्रथम घोषित आ पुरस्कृत भेल छल, ओ गीत श्री अमर जीक लिखल छल–

झम-झम झमकै ई कारी बदरिया
हम रोपी छप-छप-छप धान हो बाबा!....

'जय बाबा वैद्यनाथ' फिल्ममे हिनकहि लिखल डहकन गाओल गेल अछि–

वरकैं देखियनु गे दाइ,
दूध बेचि कय माय, पूतकैं देलनि केहन लटाइ।....

उग्रवाद, आतंकवाद, जातीय तुष्टिवाद, विभिन्न आर्थिक घोटाला आ करोड़ो बेरोजगारक हाहाकार आदि ज्वलन्त समस्यासँ आक्रान्त राष्ट्रक समक्ष कोनो संभावित अनहोनीक भयावहताक अनुमान करैत कवि अपन गजलमे कहैत छथि–

पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरैए,
धधकि उठत ज्वाल से संकेत करैए,
बहैत छै बिहाड़ि विपिन काँपि उठै छै,
अपनेमे घर्षणसँ आगि उठै छै,
सकल जीव-जन्तुमे पड़ाहि लगै छै,
सिंह ओ सियारमे ने भेद रहै छै,
हाथी मद-मत्त सेहो पाकि मरैए।....

अपन अनुभूति आ भावाभिव्यक्तिक खास शैलीसँ श्रीअमर मैथिली साहित्यमे लोककविक रूपमे समादृत छथि। हिनक मुक्तक वा गीत मे व्याप्त सहजता आ सुन्दरता एवं हास्यक संग व्यंग्य-वैदुष्य अतिशय चमत्कृत करैछ, आह्लादित करैछ। श्रीअमर जीक 'विविध गीत' मे समाजगत संस्कारक छाप, नव प्रवृत्तिक प्रश्रय, लोक-कल्याणक उदार भावना, चित्रणजन्य कलात्मक सौष्ठव आ गेयधर्मिता समान रूपसँ रणित-ध्वनित अछि।

●

मानव-आशाक किरण....

डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र

मैथिली काव्योद्यान कैं अभिसिंचित करबामे वृहत्त्रयीक रूपमे ख्यात मधुपजी, सुमनजी ओ यात्रीजीक पश्चात् जाहि कविश्रेष्ठक नाम सर्वाधिक समादरणीय थीक, ओ थिकाह हास्य-रस-वर्षण कएनिहार साहित्य अकादेमी सँ सम्मानित स्वनामधन्य कवि पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

अमरजीक अनेकानेक कृतिमे सँ एक थीक 'आशा-दिशा', जे 'अमर कृति'क संज्ञा सँ अभिहित भए सकैछ। प्रस्तुत पुस्तक हमरा दृष्टिएँ हिनक समस्त कृतिमे सर्वोत्कृष्ट अछि। कवित्व प्रतिभाक निखार एहि पोथीक प्राण थीक। कविक कर्म होइछ कविताक सर्जन करब, परंच से वएह कए सकैछ जकरामे सहजा आ उत्पाद्या दुनू रूपक कवित्व प्रतिभा रहैछ, ओहि दिशामे रुचि-अभिरुचि रहैछ आ' ओकर मर्मकैं बुझबामे सक्षम रहैछ। शब्द-संयोजनमे संयम, अलंकार-झंकारमे चमत्कार, रस-परस आ छन्द-बन्ध मे परिष्कार, भाव-प्रवणता ओ गेयधर्मितामे उद्गार आदिसँ सम्पृक्त कविता वस्तुतः कविताक कोटिमे परिगणित होइछ, जे गुणविशेष विवेच्य कविवरक रचनामे व्यापक रूपमे दृष्टिगत होइछ। हिनक एक-एक रचना प्राणवन्त अछि, जीवन्त अछि, प्रतीकात्मक अछि, समस्याक देबाल ठाढ़ कए ओकर समाधानक सरिता प्रवहमान कएनिहार अछि, सामयिक, अवसरोपयोगी ओ युगबोधपरक अछि आ' अछि संगहि उद्बोधनात्मक, कौतूहलवर्द्धक तथा मनोरंजक।

कवि तँ हृदयतः भावुक होइछ। एकर कवि-मन सतत घटना-चक्र पर बक-दृष्टि देने रहैछ। फलतः कोनो घटना घटित भेलाक पश्चात् अविलम्ब ओकर चित्र यथावत् अपन मस्तिष्क-कैमरा सँ खींचि सहृदय पाठकक समक्ष अवलोकनार्थ प्रस्तुत कए दैछ, जे आह्लादकारी सेहो होइछ आ' मनोमुग्धकारी ओ विस्मयकारी सेहो, उपदेशप्रद सेहो होइछ एवं फलप्रद सेहो। जकर जेहन दृष्टि, जकर जेहन दृष्टिकोण, से ओकरा ओही आवेश मे लैत अछि आ' चिंतन-चेतना दिशि तदनुरूप उद्बुध होइछ तथा प्रकृतिक उपादान सँ मणि-माणिक्य चुनि उत्तमोत्तम दुर्लभ अवदान साहित्य-जगत कैं प्रदत्त कऽ आचार्य मम्मटक उक्ति 'काव्यंयशसेऽर्थकृते व्यवहारविदेशिवेतरक्षतये.....' कैं चरितार्थ करैछ।

'आशा-दिशा'मे सन्निविष्ट कविता सभक प्रणयन सेहो उपर्युक्त तथ्य कैं ध्यानमे रखैत भेल अछि। काव्य-गुण सँ समन्वित एक-एक रचनामे प्रभावोत्पादकता, सरसता, मार्मिकता आ मनोहरता अछि जे सुधी सकल पाठकवर्ग हेतु संवेद्य थीक, पठनीय, चिरस्मरणीय, गेय ओ अनुपमेय थीक।

'आशा-दिशा' विभिन्न विषय ओ भावबोधपरक चौआलिस गोट कविताक अद्भुत संग्रह थीक। कविता सभक शीर्षक सएह विषयवस्तुक संकेत दैछ। देश-दशाक प्रति विह्वलता-उद्विग्नता, माटि-पानिक प्रति अगाध प्रेम, जननी जन्मभूमिक प्रति अजस्र श्रद्धा-प्रवाह, मातृभाषा मैथिलीक प्रति अनन्य अनुराग, युगधर्मक प्रति चिंता, मानव-मूल्यक प्रति गम्भीर चिन्तन, भ्रष्टाचारक प्रति आक्रोशक शंखनाद, नवजागरणक प्रति जयघोषक ललकारा, विद्रूपित समाजक विकृति-विसंगतिक वेदनाक प्रति उद्घोष, मिथिलाक चिर-संचित सांस्कृतिक धरोहरक प्रति आस्था, तथाकथित प्रगतिशीलताक प्रति क्षोभ, नैतिक मूल्यक संरक्षणक प्रति प्रबल समर्थन, विकासोन्मुख विचारधाराक प्रति बुद्धि-तर्कश सँ हास्य-व्यंग्यक साहाय्यैं अकाट्य तीर-बेधन, शान्ति-सद्भावनाक प्रति 'बसुधैव कुटुम्बकम्'क भाव-उद्घाटन, आत्म-मंथनक प्रति जन-समाज कैं संदेश-सुधा दान, रूढ़िवादक प्रति बज्रादपि कठोर कुठारक प्रयोग, आडम्बर ओ बितंडावादक प्रति घृणा, विच्छृंखल भेल समाज आ' उच्छृंखल भेल शासन-तंत्रक प्रति तीव्र प्रतिक्रिया, पड़ोसी बंग-बन्धुक प्रति मात्सर्य, कृषकक स्वाभिमानक प्रति विवेक, ममतामयी माताक प्रति मन-मंदिर मे उमड़ल मर्मस्पर्शी भाव, स्वराष्ट्रक प्रति गौरवमय अवधारणा, समाजक समस्त वर्गक प्रति अशेष अखंड स्नेह ओ समष्टि कैं

'स्व'क आत्मबोध कराएब, दार्शनिक पृष्ठभूमिमे जन्म-मरणक प्रति शाश्वत सत्यक झाँकी-दर्शन, स्वाधीनता दिवसक प्रति हृत्मानसमे उद्भूत असीम आनन्दानुभूति, हासोन्मुख भेल नैतिकताक प्रति उपहास, नव पीढ़ीक अज्ञानान्धकारक प्रति सजगता, विवेकहीनताक प्रति दृष्टिनिक्षेप, मानव-मूल्यक अवमूल्यनक प्रति अन्तर्ज्वाला, प्रियतमाक प्रियतमक प्रति परस्पर पावन प्रगाढ़ प्रेमक प्रबल उद्गार, समरभूमि मे राष्ट्रक अस्तित्व-अस्मिताक रक्षार्थ प्राण अर्पित कएनिहार वीर सपूतक प्रति नमन-निवेदन, लोकभाषा मे निबद्ध वाणीक वीणा झंकृत कएनिहार अमर कृति रामायणक प्रणेता महाकवि तुलसीक प्रति हुलसल भावाञ्जलि सँ संवर्द्धना व्यग्रता ओ मानवताक दानवता मे परिणत भेल घृणित-कुत्सित कुकृत्यक प्रति चित्त-चंचलता, सम्मतक अन्वेषणक प्रति जागरूकता, परनिन्दकक बुद्धिक बलिहारीक प्रति अवसाद, विधनाक विधि-विधानक प्रति विस्मयविमुग्धता, समस्त प्राणीमे सर्वश्रेष्ठ मानवक दानवीकरणक प्रवृत्तिक प्रति विक्षोभ, अरि-दलक आक्रमणक प्रति चेतना, जगन्माता महामाया दुर्गा द्वारा असुरक अत्याचार पर ओकर संहार करबाक क्रियासँ विजय-लाभ हित प्रेरणा एवं वर्तमान ओ भविष्यक सर्वतोमुखी कल्याणक प्रति अमृतोपम सूक्ति— सएह विवेच्य कविता-संकलनक मूल भाव प्रतीत होइछ, जाहिमे कविक हृदयोद्गार परिपक्व-प्रखर भए प्रकाशित भेल अछि, पाण्डित्य-प्रकर्षक प्रकृष्ट प्रकरणक परिचय प्राप्त होइत अछि।

'आशा-दिशा' पोथीक नामकरण सँ कविवर आशावादी विचारधाराक पक्षधर बनल लोकजीवन मे ज़ीवन अनबाक हेतु ओ जनमानस मे चेतनाक दीप प्रज्ज्वलित करबाक आग्रही लगैत छथि। मानव-जीवनक विविध पक्षक संवेदनशील तन्तुक स्पर्शानुभूति लए ओकर जे काव्य-रूपान्तरण करैत छथि, से हुनक सुधारवादी दृष्टिकोणक अप्रतिम परिचायक थीक।

'आशा-दिशा' प्रकृति सँ लए मानवक सम्पूर्ण जीवनक सूत्रबद्ध अभिलेख थीक। जीवनक आशा-निराशा, आरोह-अवरोह, सुख-दुःख, विरह-मिलन, संत्रास-उपहास, छगुन्ता-सेहन्ता, नेह-प्रेम, आशा-अभिलाषा आदिक परिधि मे घेरल-बेढ़ल थीक। दिशाविहीन दशाविहीन पथिकक पाथेय थिक 'आशा-दिशा', आ' थीक नैराश्य-तिमिर सँ आवेष्टित मानव-जीवनमे आशाक संजीवनी शक्ति भरनिहार उपचार। 'जय गण भारति'सँ 'आशा-दिशा'क आवाहन होइत अछि आ' 'मातृ-मुक्ति' सँ विसर्जन। धूप, दीप, ताम्बूल, नैवेद्य ओ चरणोदक आदि पूजाक विधि-विधान आ' सामग्री रूपमे 'मिथिला गौरव', 'पन्द्रह अगस्त', 'कलशस्थापन', 'विजय-दिवस', 'नवमुण्डक माला गाँथू', 'पर्वतक शिखर कैँ तोड़ि', 'कर्षक मण्डल', 'विधिक चिन्ता', 'आइ उमकि उमकि', 'शान्तिक रक्षा', 'युवकसँ', 'ई देश हमर', 'युद्धः एक समाधान', 'सम्मतक खोज', 'कृषक गीत', 'आबह हे बन्धु', 'नवयुगक स्वर', 'नवतुरिया', 'नैतिकता, 'उद्बोधन', 'अभियान', 'संकल्प', 'कहू कुशल', 'प्रयोजन' आदि भेटैत अछि जे प्रसाद बनल अमृत-पानक परमानन्द प्रदान करैत अछि।

गणतंत्र भारतक स्वरूपक चित्रांकन कवि आह्लादित भए मनोभाव कैँ उद्बोधनात्मक रूपेँ अभिव्यंजित करैत छथि 'जय गण भारति' मे—

''जय-मन-हारिणि जय-गण-भारति! सातो स्वर मे बाजय
सोनक आखरमे लिखि पाँती नवयुग आङ्न साजय।''

चिर-संचित आदर्शक पर्याय बनल मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्ष ओ एहि ठामक त्याग तपस्या आ' विदेह-वैदेही सँ लए मण्डन-भारती ओ अयाची-शंकर धरि एवं मर्यादा पुरुषोत्तम सँ लए लीलाधारी कृष्ण धरि सभक प्रेरक-उत्प्रेरक अभिव्यक्ति 'मिथिला-गौरव'मे सन्निहित अछि। कवि-मन एहन क्षणकैँ हाथ सँ निकलऽ नहि देबए चाहैत अछि, वर्णन करैत अघाइत नहि अछि। केहन चमत्कार अछि वर्णनमे—

''चलू लेखनी ओहि भूमि मे
जतय छला राजर्षि विदेह
होइत सदेह विदेह कहौलनि
कर्मयोगसँ राखि सिनेह
गीतामे भगवान कृष्णकेँ
लेबऽ पड़लनि जनिकर नाम।''

सन्तोषक रथ पर सवार अयाचीक त्याग ओ निस्पृह भावनाक स्तुत्य उदाहरण द्रष्टव्य–

''जनमि अयाची सिद्ध कयल
थिक सर्वश्रेष्ठ विभव सन्तोष
साग खाय रहला जीवन भरि
किन्तु न दान कयल स्वीकार
हम बालक, वाणी नहि बाला
जनिके पुत्रक थिक उद्गार।''

वस्तुतः एहिसँ बढ़ि आदर्शक अन्य उदाहरणे कोन भए सकैछ? एहि संगहि राजा हरिसिंहदेव सँ शिवसिंह एवं कविकोकिलक चर्चा 'मिथिला राज्य'क संदर्भमे सर्वथा प्रासंगिक रूपेँ करैत छथि। 'पन्द्रह अगस्त' स्वतंत्रता-दिवसक महापर्व थीक, जकर स्मृतिक कल्पना करिते कवि एक दिशि जँ हर्षाभिभूत होइत छथि तऽ दोसर दिशि रोमांचित सेहो, कारण परतंत्रताक बन्धन मे जकड़ल निरीह भारतीयक करुण-क्रन्दनक स्वर हिनक हृदय-पटल केँ झकझोरि दैत अछि। केहन भावाभिव्यंजना अछि–

''जतय छल दुखमे सभ संलिप्त
ततय बुझि पड़इछ से सभ तृप्त
तपस्या ई थिक ककर?

धन्य हे कृष्ण, धन्य हे राम!
धन्य हे गान्धी रूप ललाम।''

वैचारिक स्वातंत्र्य सँ बन्हल, कर्त्तव्यनिष्ठ बनल कृषकक मस्त भेल टेरल गीतक सुरमे सुर मिलाए कविक उल्लसित रूप 'कृषक गीत' मे दृष्टिगत होइछ–

''अछि छूतिमात्र नहि हमरामे अभिमानक हौ
हम कृषक गबै छी गीत खेत खरिहानक हौ।''

मनुष्य सामाजिक प्राणी होइछ, ई सर्वविदित अछि। एहि पाठ केर स्मरण दिअबैत कविक संकेत अछि जे सामाजिक प्राणी होएबाक कारणेँ जे जाहि रूपमे छी से अपन-अपन दायित्वक निर्वहन करी जाहिसँ समाजक सम्यक् उन्नति होएत। द्रष्टव्य थीक 'एक बात नहि बिसरक चाही'क निम्नांश–

''छात्र थिकहुँ, अपना चरित्र-निर्माणेमे लागक चाही
प्रहरी छी, राष्ट्रक रक्षामे राति-दिवस जागक चाही
सैनिक छी, नहि समर भूमिसँ पीठ देखा भागक चाही
नेता छी तँ सभसँ पहिने स्वार्थभाव त्यागक चाही।''

वैज्ञानिक चमत्कार कँ दार्शनिक पृष्ठभूमिक संग 'मनुसंतान'क सत्ता कविक लेखनी सँ चमत्कृत रूपें चित्रित भेल अछि–

''भ्रमण करक हित नभ अनन्त ई
नव ज्योतिर्मय दिग्-दिगन्त ई
सभ्यताक वनमे वसन्त ई
सर्व-शक्ति-सम्पन्न कहाबय
एक मात्र विज्ञान
जकर कर्त्ता थिक मनुसंतान।''

मिथिला-क्षेत्रमे लोकोक्ति छैक 'अपन महींस कुरहरिये नाथब'–कवि 'तथाकथित प्रयोगवादीक प्रति' लक्ष्य करैत आजुक कविक मानसिकता ओ हुनक कवि-वृत्ति सँ उपजल छन्द-लय-यति-गतिविहीन कविताक प्रति क्षुब्ध भए कहैत छथि–

''हे भविष्य-द्रष्टा, युग-स्रष्टा महाकवे!
कहि लिअऽ अहाँ अपना कँ अपने स्वयम्भूः
आ बना लिअऽ नवके विधान
नव ताल-छन्द-गति-यति-लय सब,
तोड़ू पुरना सब छान्ह-बान्ह,
अपना भाषा मे अहाँ आइ सँ आलूकँ कहियौ केरा।''

देवता-पितरक प्रति आस्था, स्वार्थक प्रति विमुखता, सृष्टिक प्राणी मात्रहिमे ईश्वरीय सत्ता, जाति, वर्ण, वर्ग, धर्म आदिक प्रति उदारता, क्षुद्र लोकक स्वार्थपरता ओ दण्ड-भेदजन्य संकीर्णताक मूल्यांकन अमरजीक ललितगर लेखनी सँ 'अपन अपन विश्वास'मे स्वाभाविक रूपें भेल अछि, जे प्रेरक-प्रसंग बनि 'गीता-सार'क संकेत दैत अछि–

''हम बुझैत छी ईश्वर अंशे थिक संसारक प्राणी
शाश्वत सत्यक चिन्तक ऋषि-मुनि केर मुखक ई वाणी।''

युवावर्ग सँ निजभाषा मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक अधिकार कँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु उद्बोधनात्मक संकेतक दिग्दर्शन 'युवक सँ'मे होइछ–

''सभ किछु पर अछि अधिकार स्वतः, ई जन्मसिद्ध अधिकार,
एहि लय लड़ब, मरब, मरि मरि कय
अपना अधिकारक रक्षा धरि निश्चय करब

लड़ब, निश्चय जीवन भरि लड़ब।''

एहि क्रममे मिथिला मैथिल ओ मैथिलीक प्रति अपना कैँ समर्पित कएनिहार मैथिली-जगतक मनीषीगणक उदाहरण प्रस्तुत कए कविवर प्रेरणाक अक्षय दीप प्रज्ज्वलित कएलनि अछि–

''विद्यापतिक मधुर स्वर सँ सेवित, पूजित,
चन्दाक चन्द्रिका सँ धवलित,
मुरलीधर सँ मन-मोद पाबि एखनहुँ शिथिला मिथिला प्रमुदित,
सीतारामक पद-विन्यासैं जन-कण्ठ-कण्ठसँ प्रतिध्वनित,
कविशेखर बदरीनाथ रचित अनुपम कविता-कानन कुसुमित,
किरणक मृदु किरणैं आलोकित
सुमनक सौरभसँ अति सुरभित,
मधुपक मधुगुञ्जन-अनुगुञ्जित,
यात्रीक रुचिर शब्दाबलिएँ नित नूतन भावैं परिपूरित,
हरिमोहन-कृत मनमोहन पद सँ सहजहि जन-मन आकर्षित
आरसी आरसी सूर्यमुखी, पूजाक फूल आ माटि-दीप लय समुपस्थित
संस्कृतिक भित्ति''

युग-परिवर्तनक चक्र-कुचक्र कैँ देखि सीदित-विखिन्न भेल कवि-मन कलपैत 'सम्मतक खोज'मे अपन अन्तःकुहरक कष्टकैँ निम्न भावैं प्रकट करैछ–

''हम तँ बताहे छी, बतहू सब कहितो अछि,
किन्तु कतहु सम्मत क्यो नजरि मे न आयल अछि।
हमरा जनैत आब सृष्टिक नियन्ते कैँ
काँके पठयबाक अवसर तुलायल अछि।''

प्रेमक महत्ताक बखान अमरजी 'प्रेमः एक परिभाषा'मे करैत छथि। ओ एकरा समभावैं सभ वर्गक साँचमे मनोरम रूपैं ढारैत कहैत छथि जे जीवन मे ई एक दोसराक पूरक होइत छैक जाहि पर लोक-जीवनक सार्थकता निर्भर करैत छैक –

''शिक्षक केर प्रेम-शुद्ध भुल्ली कुसियार बुझू,
देखबा मे ठेङा सन, देखि चौंकि उठी,
मुदा जँ जँ चिबबैत जाउ मधुरइ बुझैत जाउ।
मित्र केर प्रेम-पानि चिन्नी केर रूप स्वतः,
आपसमे मिलला सँ भिन्नता समाप्त तुरत।
भाय-बन्धु केर प्रेम–डोरी ओ डोल बनल

तृषित जे समाज तकर तृपा मेटा दैत अछि।
जीवन थिक साइकिल,
पति-पत्नी केर प्रेम-क्रैक-चेन बनल
साइकिल केँ आगाँ घिचैत अछि।''

'जननीजन्मभूमिश्चस्वर्गादपिगरीयसी'क माहात्म्यानुभूति करबयाक दिशामे कविक 'मातृ-मुक्ति' वस्तुतः 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'क पाठ पढ़बैत अछि। मातृ-वात्सल्य सँ विह्वल हृदय मे उमड़ल हुनका प्रतियेँ श्रद्धा-सुमन-अर्पण देवीवत् सुमिरनक संग करैत कविवरक उच्छ्वसित भव्य-भावोद्‌गार कोना प्रकट होइछ से द्रष्टव्य–

''अम्बक ऋण सँ उबरि सकब यदि जन्म-भूमि केँ सेबब,
हुनके लय आदर्श, उदधि मे जीवन-नौका खेबब।
बिसरत नहि जीवन भरि हुनकर 'बतहू' पदक सिनेह,
तावत धरि सुमिरब जाबत धरि रहत बचल ई देह।''

एहि प्रकारेँ अन्यान्यो कवितामे कविवर अपन कल्पना-शक्तिक प्रखरताक प्रसादात् सूक्ष्म सँ लए स्थूल विषयवासनाक भाव-भित्तिक संग चित्र-वृत्तिमे साफल्य हस्तगत कएलनि अछि, जे निस्सन्देह स्तुत्य थीक।

सगौरव ई कहल जा सकैछ जे चौरासी लक्ष योनिमे मनुष्य, जे सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनि बसुंधरा पर प्रादुर्भूत भेल अछि, जाहि जीवनक हेतु देवी-देवता पर्यन्त लालायित रहैत छथि, जे जीवन 'धर्म', 'अर्थ', 'काम' आ 'मोक्ष'क शिक्षा प्रदान करैत अछि ओ परम पदक दिशा देखबैत अछि, तकरा प्रतिएँ 'आशा-दिशा'क माध्यमेँ कविश्रेष्ठ आश्वस्त करैत पूर्णतः आशान्वित करैत छथि, जे एहिमे निर्दिष्ट मार्ग ग्रहण कएने जीवनमे आशाक संचार होएबे करतैक आ' संकट सँ लोककेँ त्राण भेटतैक, मुक्तिक पथ प्रशस्त होएतैक, टिमटिमाइतो दीप-शिखा प्रोज्ज्वल भए उठतैक, जे समाजक नव-निर्माण हेतु रामवाण सिद्ध होएत।

●

बहुआयामी भावधाराक कवि

डा०भाग्यनारायणझा

साहित्यमनीषी ओ साधक तपस्वी पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क लेखनीसँ निःसृत एक-एक रचना मैथिली भण्डारक धरोहर रूपमे अनुवर्त्तमान अछि। हास्य-व्यंग्यक एक विशिष्ट प्रतिभाशाली कविक रूपमे अमरजी *गुदगुदी, युगचक्र, उनटापालक* प्रकाशनसँ पूर्वहि मैथिली साहित्यिक मंच सभ पर अग्रगणित होम' लागल छलाह आओर हिनक कवित्वक परिपक्वता, उक्तिक प्रौढ़ता एवं कल्पनाक चमत्कारक परिचायकक रूपमे *ऋतुप्रिया* ओ *आशादिशाक* प्रशंसा होम लागल छल। एहि रचनासंग्रहक उपरान्त *'विविधगीत'क* नामसँ एकगोट अन्य रचनासंग्रहक सेहो प्रकाशन भेल अछि।

अमरजीक काव्ययात्रा अर्द्धशताब्दिओसँ अधिक दिनसँ अनेक पथ-प्रान्तरकेँ पार करैत निरन्तर अग्रसर होइत रहल अछि। पचहत्तरि-छिहत्तरि शरत्क उहा-पोहक स्थितिकेँ पार करैत निरन्तर कविकर्मसँ विरत नहि, अपेक्षाकृत अधिक निरत देखल जाइत छथि। साहित्यविधाक एहन कोनो क्षेत्र नहि जाहिमे हिनक रचना देखबामे नहि अबैत अछि। मैथिली साहित्यक कथा, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, ओ हास्य व्यंग्यमूलक स्तम्भहुमे गंभीर बात कहि लोककेँ अचंभित कऽ दैत छथि। आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा'सुमन' हिनक प्रतिभाक तुलना कवीश्वर चन्द्रक प्रतिभासँ कयलनि अछि। हिनक साहित्य-साधनाक सम्बन्धमे पण्डित श्रीसुरेन्द्रझा'सुमन' आशा-दिशाक भूमिकामे कहने छथि जे–''मिथिला-मैथिलीक एहन कोन आन्दोलन अछि जकर अग्रपंक्तिमे अमरजी नहि देखला गेल होथि ? साहित्यिक सामाजिक एहन कोन संस्था-आस्था अछि जाहिमे अमरजीक व्यक्तित्व नहि चमकैत हो? काव्यकलाक एहन कोन विधा अछि जतऽ अमरजी नहि विम्बित होयि?''

''गद्य-पद्य, नाटक एकांकी, उपन्यास, लघुकथा, व्यंग्य-विनोद, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण, साहित्य-शतदलक प्रत्येक दल पर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत। जहिना लेखन तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन तहिना प्रचारण-प्रसारण, तहिना शोध-सन्धान, जहिना संग्रह-संकलन–प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतूल अछि। जतबे कलम चलित-बलित ततबे वचनहु ललित-कलित, यद्वत् सभा सम्मेलनक मंच तद्वत् रूप चरित्रक रंगमंच, यथैव परिचर्या-विद्वत्गोष्ठी तथैव गामघरक गप्प गोष्ठी, जहिना पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ कालम, तहिना कथालापक प्रखर अवसर, सबतरि एहि तेजस्वी साहित्यिकक व्यक्तित्व प्रखर-भास्वर।''

हिनक काव्य साहित्यकेँ पढ़ला-किंवा हिनकहि श्रीमुखसँ सस्वर वाचन सुनैत मन पुलकित भ, उठैत अछि। वस्तुतः अमरजीक रचनासंसार विविधतामण्डित अछि, विस्तृतविशाल ओ व्यापक अछि, जकरा पढ़लासँ किछु नहि छुटैत अछि। रसास्वादनक सब अंगकेँ सहसा परितृप्त क' दैत अछि।

परन्तु मूलतः अमरजी भारतीय संस्कृतिक कविक रूपमे नहि अपितु भारतीयताक रक्षा-प्रहरीक रूपमे दृष्टिगोचर होइत छथि। *आशा-दिशामे* पैंतालीस गोट कविता संग्रहीत अछि, जाहिमे राष्ट्रीय भावना, सामाजिक भावना ओ किछु अन्य विषय वर्णनात्मक शैलीमे विविधताक संग वर्णित अछि। एहि संग्रहक सम्बन्धमे डा०जयकान्तमिश्रक अभिमत छनि जे–''आशा-दिशामे युद्ध, विज्ञान ओ काव्यप्रेरणास्पद विषय पर अनेक देशभक्तिपूर्ण रचनात्मक साहित्यिक ओ विचारप्रेषक मुख्य विचार परम्परागत व्यवस्थामे ग्रथित कयल गेल अछि।

हिनक काव्य-अभिव्यक्तिमे शब्द-रचना, कहबाक रीति एवं अनेकानेक सामाजिक विद्रूपताक भाव सहजहि हृदयग्राही भऽ जाइत अछि। आशा-दिशाक अमरजी हास्य-मूलक कवि नहि, विविध भावक कवि छथि। हिनकव्यंग्य-

विनोदक शैलीक पारम्परिक काव्यक संवाहकक रूपक स्वर एतऽ बदलल छनि। एहिठाम कविक चिन्तन-गांभीर्य, वैचारिक प्रौढ़ता ओ जीवनक प्रति आस्थाक नव विम्बक संगहि मानव मूल्यक संरक्षण-संस्थापन प्रतिभासित देखल जाइत अछि। आशा-दिशा काव्य-संग्रहक सम्बन्धमे डा०मदनेश्वरमिश्रक विचार छनि जे– ''मिथिला, भारत आ मानवताक गौरव-रक्षा हेतु कवि समस्त समाजक आह्वान करैत छथि। शान्ति, अहिंसा, प्रेम आ पूजाक सूत्रसँ निर्मित मिथिला ओ भारतभूमिक ज्ञान-सम्मत परम्परा आ इतिहासक प्रति सम्मान आ आसक्ति रखितहुँ एहि युगक समस्या सभक प्रति कविक दृष्टि सर्वतोभावेन प्रगतिवादी छैन्ह; यैह एहि संकलनमे सौन्दर्य स्थापित कयलक अछि। शान्तिक रक्षा लेल चिन्तित कवि दनुजताक दमन हेतु विशेष रूपसँ भारत पर चीनक आक्रमण आ वंगदेशीय समस्याक सन्दर्भमे निःसंकोच लिखैत छथि जे–''सृष्टिक समस्याक अन्तिम समाधान युद्धमात्र होयत। दिनानुदिन घटैत मानव मूल्य आ बढ़ैत विज्ञानक विभीषिकाकेँ देखि कविकेँ सृष्टिक नियन्तेकेँ काँके पठयबाक आवश्यकता बुझि पड़ैत छैन्ह।''

कविक 'ऋतु प्रिया' भावना ओ गंभीरतासँ युक्त दोसर प्रधान काव्य थिकनि। एहिमे प्रकृतिक विभिन्न मासाश्रित ऋतुसौन्दर्य नवीनताक संग उपस्थित भेल अछि।

काव्यमे प्रकृति-वर्णन आरंभेसँ होइत रहल अछि। काव्यमे युगक प्रभावक कारणेँ आओर युगक बदलैत परिवेशक कारणेँ नवीन रीतिक प्रकृतिकाव्यक रचना भेल अछि। संस्कृत साहित्यक प्रकृति वर्णनक रीतिक सेहो रचना भेल जे मैथिली कविताक विकासक दृष्टिसँ नवीन कहल जा सकैत अछि। अतः पण्डित कविगण द्वारा जे प्रकृति वर्णन भेल ताहिमे दुनू प्रवृत्तिक मिश्रण भेटैत अछि। एहि संग्रहक आषाढ़सँ अगहन धरिक कविता भावनाप्रधान अछि। अगहन मासमे प्रकृतिक केहन सजीव ओ हृदयग्राही चित्र उपस्थापित कयलनि अछि से द्रष्टव्य–

''किल-किलाकय हँसि रहलि छलि मधुर मिहिरक माँझ निश्चलि
चञ्चला श्री शान्त सूतलि कोरमे वसुधाक
नील पट पर खचित हीरा
चन्द्रिका वरखा करइ छलि सतत मानु सुधाक''

परन्तु पूस, माघ आओर चैत मास पर रचित कविता हास्य-व्यंग्य-प्रधान अछि। प्रकृति सम्बन्धी कविता मध्यहु अमरजीक वास्तविक व्यंग्यात्मक प्रतिभाक अभिव्यंजना भेल अछि। ओ यत्र-तत्र वक्रोक्तिमूलक हास्य-व्यंग्यक योजना कऽ देने छथि। पूस मासक चित्रणमे कवि सामान्य सत्यक अभिव्यक्ति कयलनि अछि जे समयसापेक्ष लगैत अछि–

''मनहि महाजन जोड़ि रहल छथि। तरि तिलकोड़ा तोड़ि रहल छथि।।
नरक जाय हित अपनहि हाथेँ बड़का खत्ता कोड़ि रहल छथि।।
लेब सबैया उतरल ड्यौढ़। बौआ मुँहमे टूस। पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस।।''

आशादिशामे कवि राष्ट्रीय भावना ओ मातृभूमिक प्रेमकेँ नहि बिसरि पबैत छथि। एहि लेल कविक भावनात्मक विचार जाग्रत भऽ उठैत छनि। ऋषिलोकनि भारत देशकेँ राष्ट्र, मातृभूमि आदिसँ अभिहित कयलनि अछि। पौराणिक युगमे मिथिलाभूमिक नाम अत्यन्त पवित्रता ओ कर्मयोगीक रूपमे लेल जाइत छल। मिथिला भूमिक पवित्रता, श्रेष्ठता ओ महत्ताक कारणेँ स्वयं भगवान श्रीकृष्णकेँ गीतामे एकर नाम लेबऽ पड़लनि। मिथिलाक भूमिक महत्ता पर कविक गंभीर उक्ति छनि–

''गीतामे भगवान कृष्णकेँ लेबऽ पड़लनि जनिकर नाम
जनिक पुण्यबल जगत विदित युगयुगसँ अछि ई मिथिला धाम

जतय धरित्री पुत्री पौलनि पतिव्रता सीताक समान।''

एहि देशक विद्वानलोकनिक ज्ञानक प्रशंसा देश-देशान्तरमे होइत रहल अछि। ओहि मनीषीलोकनिक स्मरण करैत कवि कहैत छथि–

''स्वयं शंकराचार्य जतय भारती संग कयलनि शास्त्रार्थ
भेल अनन्वय उपमाऽलङ्कारो जनिका लगमे चरितार्थ
मण्डन-प्रिया-मण्डिता मिथिला सन दोसर नहि हो अनुमान
शंकर सन शंकरे तथा भारती सदृश नहि विदुषी आन

'मिथिला गौरव' शीर्षक कविक जन्मभूमिविषयक लघुकाव्यक वर्णनात्मक रूप अछि। एहि मध्य महत्त्वमयी मिथिलाभूमिक सजल-सुफल ओ प्रबुद्ध स्वरूपक सजीव चित्र अंकित अछि। कविक अशेष श्रद्धा ओ भक्तिक रससँ ओत-प्रोत स्वानुभूतिक अभिव्यक्ति एहि कवितामे अछि।

अमरजीक सामाजिक चेतना अत्यन्त प्रखर छनि। हिनक कवितामे वर्त्तमानक प्रति तीव्र सजगता देखबामे अबैत अछि। सामाजिक चेतनासँ अनुप्राणित भऽ ''कर्षक मण्डल'' शीर्षक कवितामे कवि समाजक समग्रतामे व्यक्तिक एकाइकेँ अत्यधिक महत्त्व देलनि अछि। व्यक्ति ओ समाजक अन्योन्याश्रय सम्बन्धक पक्षपाती कवि व्यक्तिक महत्त्वकेँ एहि रूपेँ बुझौलनि अछि–

''अन्वेषक नूतनताक, किन्तु गौरव रखैत प्राचीनताक
जल-थल-नभ-गिरि गह्वर-सागर सभ पर अदम्य अधिकार हमर
संघर्षशील जीवन पथपर बाधासँ करिते रही समर
सृष्टिक सुन्दर उपहार ग्रहण करबाक कलामे बनि प्रवीण।''

युगीन परिप्रेक्ष्यमे श्रीअमर व्यष्टि-चेतनाक एक पक्षकेँ 'कर्षक मण्डल' कवितामे स्पष्टरूपेण व्यक्त कयलनि अछि। एहि कवितामे कृषकक तप, त्याग, करुणा, क्षमा आदिकेँ व्यष्टिधर्मक रूपमे निरूपित कयलनि अछि–

''हम सजग सतत राष्ट्रक प्रहरी मानवता प्रति अति जागरुक
हमरे ज्योतिक भयसँ पड़ाय झट आँखि बन्द कयने उलूक।
मम-जलक बाढ़िमे दहा दैत छी कोमल हृदयक दुर्बलता
भुजदण्ड ठोकि छी ठाढ़ कनै' अछि ठोहि पाड़ि कय निष्फलता।''

वैयक्तिक धरातल पर कवि जाहि मानवताक महत्ता प्रतिष्ठापित करबाक चेष्टा कयलनि ओकर रूप 'कृषकक तैयारी' शीर्षक कवितामे देखल जाइत अछि–

''चलतनि अनपुरनाक सबारी भरतनि खोपड़ी महल अटारी
बलिदानी बलि चढ़ा-चढ़ा कय कयलनि देशक रक्षा
भूख-युद्धमे विजय करक हित बान्हि जोर सँ कच्छा
कृषकक वर्ग कयल' तैयारी बुढ़बो बिसरल अपन बुढ़ारी'

एहिठाम हुनक ध्यान समाजमे व्याप्त निर्धनता, भुखमरी, उत्पीड़नक संग-संग सामाजिक-आर्थिक विषमता,

शोषण आओर अन्यायक निवृत्तिक संग राष्ट्ररक्षाक दिस गेलनि अछि। हिनक देशप्रेमक भावना निश्चित रूपसँ मानव प्रेमक अंग अछि। अतः देशक सुरक्षा आ लोकक मनक लालसा सामाजिक अन्याय एवं आर्थिक शोषणक विरुद्ध लड़बाक लेल कृतसंकल्पित भऽ उठैत अछि–

''ई थिक सत्य
ने शिव कखनहुँ, बर्बरता चाहथि
मुण्डमालिनी के चाही नव मुण्डक माला,
असुर दलक संहार करक हित क्रान्तिक ज्वाला।
इत्थं यदा-यदा बाधाक प्रतिज्ञा मोने
रहती कोना चण्डिका तखन कहू अनठौने
लैत शान्ति केर नाम भ्रान्तिमय युद्धक वर्जन
करत न किन्हु देश करथि बलिदानी गर्जन
सीमित सहनक शक्ति तथा अरिदल अछि उत्कट
दृढ़ संकल्प पुनः संस्थापित करब विजय घट।''

समष्टिचेतनासँ प्रेरित एवं प्रभावित भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामक लक्ष्य कऽ 'पन्द्रह अगस्त' शीर्षक कवितामे अँग्रेजी शासनक क्रूर अत्याचारसँ भारतीय जनताक आर्त्तताक चरम अवस्था एहि रूपेँ व्यक्त भेल अछि–

''बहल अन्यायक स्रोत महान
विकल भय आर्त्तनाद कय उठल निखिल भूभागक जर्जर प्राण
दैव केँ देलक खूब धिक्कारि विकल प्राणीक आर्त्त चीत्कार''

कवि अपना युगक व्याख्याता होइत छथि। हुनका युग-द्रष्टा आओर युग-स्त्रष्टा कहल जाइत छनि। समयक तीनू कालक समुचित संयोगसँ हुनक चिन्तन अत्यधिक हृदयग्राही होइत अछि। हुनक अभीष्ट काव्यमे दार्शनिक भाव स्पष्ट करब नहि रहैत छनि तथापि दार्शनिकतासँ अस्पृष्टो रहब संभव नहि। किन्तु दर्शनकेँ आर्द्र आओर सरस करबाक कला जाहि कविकेँ होइत छनि हुनक काव्य बुधजन-श्लाध्य मानल जाइत छनि। काव्यक धरातल पर कविक दर्शन सुदर्शन भऽ जाइत छनि। भारतीय काव्यपरम्परामे दर्शनकेँ नवनीत सदृश कोमल रूपमे उपस्थापित करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। महाकवि विद्यापति, गोविन्ददास, आओर कवीश्वर चन्दाझा पर्यन्त अनेकानेक मैथिली कविलोकनिक काव्यमे सरस मधुर रूपमे दर्शन विद्यमान अछि। संसारक क्षणभंगुरता ओ अनित्यताक सम्बन्धमे श्रीअमर संत कबीरक उक्तिकेँ स्मरण करैत कहलनि–

''कहि गेलाह कविवर कबीर जग पानिक तितल बतासा''

हिनक काव्यमे शास्त्रसम्मत दार्शनिकताक स्पष्ट अभिव्यक्ति भेल अछि–

सब कहैत अछि थिक अनित्य ई मायामय संसार।
वेद पुरान सकल सद्ग्रंथक सम्मत एक विचार।।
पञ्चतत्त्वमे पुनि मिलि जाइछ पाँचो तत्त्वक अंश।
आत्मा थिक नित्य, सत्कर्मे ओ पाबथि विश्राम।।

संसारमे व्याप्त कुंठा, आक्रोश, दुःख, प्रेमक कमी आदिक प्रति लोकक उदासीनताक प्रति कविक दार्शनिक भाव सहजहि मनकेँ आकृष्ट कऽ लैत अछि। 'शान्तिक रक्षा' शीर्षकमे कविक मनःस्थितिकेँ देखल जाय–

''धर्म-दीपमे श्रद्धा सिञ्चित, रहल न सत्यक टेमी।
मनुज-लोकमे बाँचि सकत नहि, आब मनुजता प्रेमी।
विश्वासक बस्ता फोलब तँ भेटत कपटप्रबन्ध।
आत्मतत्त्व दर्शनक दृष्टिञे, मनुज भेल अछि अन्ध।''

प्रेमक अभिव्यंजना जीवनमे अनेक रूपमे अनेक प्रकारेँ होइत अछि। किन्तु वास्तवमे प्रेमक नित्य स्वरूप की थिक तकर व्याख्या 'प्रेमः एक परिभाषा' मे एहि रूपमे कयल गेल अछि–

''किन्तु जे समग्र रूप प्रेमक हम देखल से
दूध मध्य अन्तर्हित नेनुक समान अछि
मथला सँ फक्क दऽ कऽ ऊपर अलगि जाइछ
लाख यत्न कयलो पर मिश्रित नहि होइत अछि।''

कवि जाहि रूपक प्रेमक परिकल्पना कयलनि अछि ओहन प्रेम जँ समाज मध्य पल्लवित भऽ जाय तँ निश्चित रूपेँ सब केओ सुखशान्तिमय जीवन व्यतीत करत।

विज्ञानक प्रगतिकेँ समाज आ व्यक्ति सम्प्रति स्वीकार करैत अछि। आजुक युग विज्ञानक अछि। विज्ञान मानवकेँ सुख-सुविधा, शक्ति आओर संहारक साधन उपलब्ध करौलक अछि। ओहिसँ मानव दिगभ्रान्त भऽ गेल अछि। विज्ञान बुद्धिक चमत्कारक दोसर नाम थीक। विज्ञानक बुद्धि मनुष्यक लेल कतऽ धरि उपयोगी अछि से प्रश्न लोकक समक्ष उपस्थित भऽ गेल अछि–''विज्ञानक बीहरिमे बैसल विध्वंसक ई व्याल।''

बीसम शताब्दीमे भारतीय चिन्तकलोकनिक समक्ष विज्ञानक उपयोगिताक संग-संग विध्वंसक विभीषिका अत्यन्त चिन्ताक कारण बनि गेल अछि। भौतिक सुखक समक्ष विज्ञानक प्रगति, लोकक मनुजताकेँ दनुजतामे परिवर्त्तित कऽ देलक अछि। वैज्ञानिक विकासक कारणेँ दू-दू बेर भयंकर विश्वयुद्धमे असंख्य लोकक विनाशक संग-संग दया, उदारता, त्याग आओर अन्य मानवमूल्यक समाप्ति गेल अछि–

''आइ मनुजता ग्रस्त रोगसँ, करुणा मनुजत्वक वियोगसँ
कानि रहल अछि हृदय-दोगसँ, छापि रहल अछि भाव गगन केँ
चौदिस तिमिर-वितान
चकित मन देखय मनु सन्तान।''

प्रसिद्ध साहित्यकार डा० एच० बी० रथ साहित्यमे नव कविता लऽ कऽ अबैत गतिरोधकेँ दूर करबाक लेल कलाक समान नवीकरण आवश्यक मानने छथि। हिनक स्पष्ट अभिमत अछि जे–''जँ कलामे पाठक केँ किछु नवीनता नहि भेटतैक तँ ओ एहि सबसेँ विमुख भऽ अपन दैनिक कार्यकलापमे समय खपबऽ लागत।'' अर्थात् एच० बी० रथ नव कविताक पाठकक रोचकताकेँ ध्यानमे राखि लिखलनि अछि।

साहित्यमे नव कविताक साहित्यिक प्रेरणाक प्रसंग दू गोट मान्यता विद्वानलोकनिक मध्य देखबामे अबैत अछि। किछु विद्वान एकरा आन भाषाक अनुकरणस्वरूप माननलनि अछि तँ किछु विचारकलोकनि स्वतःविकसित आ अपन

परिवेशक उपज मानैत छथि।

मैथिलीक प्रख्यात साहित्यकार वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' कहने छथि जे–'जाहि व्यक्तिकेँ छन्दक ज्ञान नहि ओ अतुकान्त कविताक नाम पर ठकपनी कऽ रहल छथि।' श्री अमर नवकविताक लेखन पर अपन विचारक अभिव्यक्ति करैत कहलनि अछि जे–''नियम उपनियमक अनुशासनसँ हीन कविता आ ताड़ी पिउननिहारक आलापमे कोनो अन्तर नहि अछि। नव कवितामे छन्द, यति, गतिक प्रति निषेधभावक संगहि भाषा ओ शब्दक प्रयोगमे विशृंखलता, अर्थक अस्पष्टता, वैचारिक स्वेच्छाचारिता इत्यादि देखि अमरजी 'कविताक मृत्यु' शीर्षकमे अपन भाव व्यक्त कयलनि–

''सम्प्रतितँ कविता केर अंग-अंग चीरि फाड़ि
डाक्टरेट पयबामे लागल छथि अनुसन्धाता
मम्मट सँ अम्मट घोरबा रहला प्रेम सँ
दण्डी छथि दण्डित आ विश्वनाथ ?
ज्ञानवापी मध्य कूदि भीतर सँ
टुकटुक तकैत छथि।''

व्यंग्यगर्भित अपन कविताक माध्यमसँ राजनीतिक विसंगति ओ अनाचार पर निरन्तर चोट कयनिहार अमरजी अपन व्यंग्यप्रहारक लक्ष्य नव कविताकेँ बनबैत 'प्रयोगवादीक प्रति' कवितामे कहैत छथि–

''अपना भाषामे अहाँ आइसँ आलूकेँ कहिऔ 'केरा'
छौंकले पातमे ढारि चाह, बिस्कुटक बना चटनी
अंगूरक पापड़ संगे संघड़ि जाउ
जँ थीक महिस अपने अहाँक, तँ कुड़हरिए सँ नाथि लिअऽ''

साहित्यमे भाव भाषाओ परम्परित शास्त्रसम्मत विचारमे आयल पतनकेँ देखि पुरान विचार-धाराक पोषक साहित्यकारलोकनिकेँ चिन्ता होइत छनि। किन्तु नवीन पीढ़ीक लेखकसँ विषयवस्तुक चित्रणक कोन कथा जे शुद्ध-शुद्ध वाक्यविन्यासो नहि भऽ पबैत छनि। किन्तु ओहि रचनाकेँ पुस्तकाकार कऽ लैत छथि। ओहन साहित्यकार पर कविक वक्रोक्ति देखल जाय–

''जँ अछि नवीनता भूत माथ पर ठाढ़ भेल
तँ जे फुरैछ से छपा लिअऽ
अनका नहि पलखति छैक एते जे पढ़ि सकते
जे जे फुरैछ से गाबि लिअऽ
अनका नहि छुट्टी छैक एते जे सुनि सकते।''

मातृभाषानुरागीलोकनि मैथिलीकेँ संविधानमे स्थान दियैबाक लेल स्मृति-पर्वक आयोजन करैत छथि। किन्तु एहू पर्व मध्य व्यक्तिवाद ओ जातिवादक प्रश्रय देखि, सत्यक उद्घाटन करैत कविकेँ देखल जाय–

''झा, मिश्र, चौधरी, लाल, दास
ठाकुर, मण्डल ओ सिंहगच्छ

छथि भेल उपस्थित सभा मध्य।''

महाकवि विद्यापतिक नाम पर विद्यापति पर्वक आडम्बर पर आक्षेप करैत मातृभाषानुरागीलोकनिकैं सचेष्ट करैत कहलनि अछि–

''जँ नाचि काछि भरितान मधुर ई पर्व मना सुति रहब फेर
तँ बीतत वर्षक वर्ष व्यर्थ आ उनहल जायत असल बेर।''
रामक समान न्यायी राजा, आ धयल मैथिली वनक शरण
लव कुश कैं देबय पड़ल छलनि, न्यायेक हेतु रण आमंत्रण
तँ की अन्यायक एहि राज्यमे, नाचि-गाबि अधिकार लेब।''

'आशा दिशा' गंभीर रचनाक संग्रह रहितो एहिमे कवि अपन रुचिकैं नहि छोड़ि सकलाह अछि। एहि संग्रहमे बहुतो स्थल पर हास्य-व्यंग्यक पुट देखबामे अबैत अछि। मैथिली हास्य-व्यंग्यसाहित्यमे अमरजीक मौलिकता स्पष्ट अछि। हिनक अभिव्यक्तिक शैली, रीति-नीति, विश्लेषणक वैशिष्ट्य तेहन आकर्षण आ रोचकताक सृजन करैत अछि जे अनायास लोक आकृष्ट भऽ जाइत अछि। हिनक हास्य-विनोद कोनो व्यक्ति किंवा प्रसंगकैं जानि बूझि कऽ विद्रूप कऽ नहि बहरायल अछि। अनुदार सिकताक स्थान पर उदार रसिकता अथवा विनोदप्रियता हिनक हास्य-व्यंग्य साहित्यमे सर्वत्र दृष्टिगत होइत अछि।

मैथिली भाषाक उत्थानक लेल समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति, कवि ओ नेतालोकनि मंच पर चढ़ि उच्च स्वरें भाषण करैत देखल जाइत छथि। किन्तु मंचक पश्चात् समस्त बातकैं बिसरि जाइत छथि। ओहन मातृभाषाअनुरागी पर कविक व्यंग्योक्ति छनि–

''दू दशक बितल जहिया आयल, ई अपन देशमे अपन राज
देखू उठाय कऽ आँखि कने, अछि भेल कते मैथिलिक काज
भाषणक बेरमे हाथ पटकि, गरजथि, तरजथि आ करथि पोज
काजक अवसरमे एकमात्र, पल्था लगाय कऽ खाथि भोज''

एखनधरि राजनीतिकैं आलम्बन बनाय जतेको कविलोकनि हास्यव्यंग्यक रचना कयलनि अछि, ओहिमे एकाधिकार श्रीअमरजीक रहलनि अछि। हिनक राजनीतिक व्यंग्य अत्यन्त तीक्ष्ण अछि। राजनीतिक व्यंग्य यद्यपि यात्रीजी सेहो कयने छथि। किन्तु हुनक व्यंग्य एक सुनिश्चित विचारधारासँ बान्हल भेटैत अछि। अमरजीक राजनीतिक व्यंग्य कोनो सुनिश्चित विचारधारामे बान्हल नहि रहल। स्वभावतः विभिन्न राजनीतिक पंथ हिनक व्यंग्यवाणक शिकार होइत रहल अछि।

देशमे राजनेतालोकनिसँ लऽ कऽ ऑफिस पर्यन्तमे बिनु घूस लेने कोनो काज नहि होइत अछि। एहन शासन-व्यवस्था पर कविक व्यंग्यात्मक स्वर मुखर देखल जाइत अछि–

''गाम-गाममे मुखिया सुखिया ब्लौक-ब्लौक मे बी० डी० ओ०
जनता कैं बैसक नहि भेटय नार पोआरक बीडीओ
दफ्तरमे सभ काज होयत जँ रहत संग दसटकही नोट
नेता हेतु जोगा कय राखू समय-समय पर चन्दा वोट।''

कांग्रेस पार्टीक चुनावचिह्न गाय–बछड़ा' छल। किन्तु ओ नेतालोकनि गो-हत्याक निवारण नहि कऽ ओकर हत्याकेँ प्रोत्साहन दैत देखल जाइत रहलाह अछि। देश-विदेशसँ कर्ज लऽ भारतवासीकेँ कर्जक भागी बना देने छथि। एहि तरहक राजनेतालोकनिक व्यवहार पर कतेक प्रासंगिक ओ सटीक उपहास कयलनि अछि –

''तीन योजना पूरल वा नहि, लेलनि कर्ज माथ पर थोपि।
पटना दिल्ली आइ रहल अछि, भोज बेरमे कुमहड़ रोपि।
खाद पटा कय जोति कोड़ि कय उपजा दै' छल जे गोवंश
राखि चुनावक चिह्न कराबथि तकरे हत्या बनल नृशंस।।''

नेतालोकनिक बात-विचार ओ आश्वासन पर जनताकेँ कोनो विश्वास नहि होइत अछि। ओलोकनि शराबक नशा सदृश चारित्रिक दोषसँ युक्त किछुसँ किछु वक्तव्य जनता मध्य दऽ दैत छथि। किन्तु पत्रकारलोकनि द्वारा पूछल गेला पर ओकरा ''स्लिप ऑफ पेन'' कहि अपनाकेँ मुक्त बुझैत छथि। एहि तरहक चरित्रवला नेताक सम्बन्धमे कविक व्यंग्यात्मक शब्द द्रष्टव्य अछि–

''होटल बोतलवला बात तँ साफ-साफ छल 'स्लिप ऑफ'' पेन
नेता खण्डन करबे करितथि अपन लगाय विचारक क्रेन
पत्रकार पुछितनि तँ कहितथि स्लिप ऑफ पेन वा 'स्लिपऑफ ब्रेन'।''

अमरजीक राजनीतिपरक कविता विशुद्ध हास्य आओर वक्रोक्तिसँ परिपूरित अछि। हिनक हास्य-व्यंग्यक रूप स्पष्ट तखन भेल अछि, जखन ओ समकालीन समाज आ नेतालोकनिक व्यवहार-विसंगति पर प्रहार कयलनि अछि। समकालीन आ प्रचलित अवस्थाक कारणेँ उत्पन्न विकृति पर हास्य-व्यंग्य समाज पर चिरैताक तिक्तक सदृश प्रभाव करैत अछि। स्वार्थरत राजनेतालोकनिक व्यवहार पर कविक प्रहार कतेक सटीक ओ सामयिक अछि –

''स्वार्थक ज्वाला धुधुआय रहल तँ ककर पुछारी के करतै'
अपना सँ छुट्टी छैके नहि ओ आनक हाथ कोना धरतै'
जनिका मुट्ठीमे सत्ता छनि तनिका कर शोभित छनि मूसल
ओ नहि पूछैत छथि कहू कुशल,
जकरासँ जेम्हरे भेट होइछ से सब पुछैत अछि कहू कुशल।''

विभिन्न राजनीतिक पार्टी सत्ताक सुखभोगक हेतु विभिन्न दलक संघटन कऽ राजभोगक सुखमे लिप्त भऽ जाइत अछि। एहि तरहक प्रवृत्तिसँ अनेको पार्टीकेँ लाभक संग-संग सुधुआ नेतालोकनिकेँ कष्टक सामना करऽ पड़ैत छनि। आधुनिक शासन ओ नेतागणक चारित्रिक दोषक उद्घाटन आजुक प्रसंगमे कतेक यथार्थ उतरल अछि से निम्न स्थलमे देखल जा सकैत अछि–

''शासन बेरोक अनुशासन विहीन लोक, भारतीय संस्कृति शीर्षासन करैत अछि
रासन पर जाहिठाम जनता जीवैत रहय, भाषण पर ताहिठाम उचिते मरैत अछि
बासन हो पैघ आ सिंहासन दुरुस्त रहय, ताहि हेतु डारि पात सभ दस धरैत अछि
फाँटि पर चढ़ैत कते गोटी उफाँटि मुड़ल, सुधुआ पछड़ैत तथा बुधुआ ससरैत अछि।

समाजमे भौतिक सुखक भोग ओ राजनेताक सुख-सुविधाकेँ देखि लोक अपन आचरणमे परिवर्त्तन कऽ रहल

अछि। किन्तु समाजमे किछु एहनो लोक छथि जे अपन संस्कृतिक रक्षा ओ लोकलज्जाकेँ लऽ कऽ माय-बापक मृत्युक पश्चात् पितरपक्षमे जल लऽ कऽ तर्पण करैत छथि। किन्तु जीवनकालमे वृद्ध माय-बापक सेवाक कोन कथा जे पीबाक लेल जल पर्यन्त नहि दऽ पबैत छथि। एहि तरहक स्वार्थरत लोकक बदलल मनोवृत्ति पर कविक व्यंग्यवाण स्पष्ट अछि–

''एक घोंट पानि हेतु बाप जकर मुइलथिन से पितर पच्छ पाबि पितृ लोक कैं दहबैत अछि।

अनका भूदान केर महिमा सुनाबय आ, अपने श्मशान ब्रह्मथानो ढहबैत अछि।।''

समाजमे दिनानुदिन शिक्षा, धर्म ओ लोकक सद्भावमे आयल कमीकेँ देखि कविकेँ प्रयोजनक आवश्यकता बुझना जाइत छनि। राष्ट्रक अधःपतन देखि राष्ट्रहितक चिन्ता सेहो कविकेँ भऽ रहल छनि। एहना स्थितिमे हुनक काम्य प्रयोजन अत्यन्त गुरु-गम्भीर भऽ जाइत छनि। कवि व्यंग्यक छौंकी फेकि एकटा राष्ट्र आ समाजक विशुद्ध हित-चिन्तक ओ विचारक भऽ उठैत छथि–

''तपः पूत किछु नेता चाही, सत्साहित्य प्रणेता चाही
शत्रु सैन्य दल मथन करक हित, भीष्म समान विजेता चाही
दिव्य दृष्टि व्याख्याता चाही, मन्त्र तत्त्व उद्गाता चाही
दलित पतित हित त्राता चाही, सत्यक अनुसन्धाता चाही''

एहितरहें अमरजीक रचनासँ मैथिली साहित्य-भण्डारक श्रीवृद्धि होइत रहल अछि। मैथिली हास्य-व्यंग्यक क्षेत्रमे तँ हिनक अवदान सर्वोपरि रहल अछि। मैथिली साहित्यक हास्य-व्यंग्यक परम्पराक कविवर सीतारामझा, प्रो० हरिमोहनझा, ओ श्रीचन्द्रनाथ मिश्र'अमर'–ई तीन गोट स्तम्भ थिकाह। कविवर सीतारामझा ठेठ देशज ओ तद्भव शब्दावलीक माध्यमसँ समाजमे व्याप्त स्वभावगत विकृति ओ सामाजिक विसंगतिक उपहास कयलनि। हास्य-व्यंग्य सम्राट् प्रो० हरिमोहनझाक व्यंग्यक्षेत्र पुरातनपंथहिक आलोचना धरि सीमित रहल। श्रीअमरजी अपन कविकर्ममे अपन पूर्ववर्त्ती हास्य-व्यंग्यकारसँ प्रेरणा ओ प्रभाव ग्रहण कयल परन्तु क्रमशः ई अपन स्वतन्त्र छविक निर्माण कयलनि। सीतारामझाक ऋतुवर्णनमे हास्यक सन्निवेशसँ अमरजीक 'ऋतुप्रिया'क किछु कविताक प्रभावित होयब असंभव नहि। प्रो० हरिमोहनझाक भोल बाबा, बुचकुन बाबा आ खट्टर कका सन चरित्रसँ प्रेरित भऽ अमरजीक भूखन भाइ ओ कन्तू भाइ सन चरित्रक सृष्टि संभावित अछि। परन्तु अमरजीक काव्यमे निहित हास्य-व्यंग्यक विषय विशेषतः स्वातंत्र्योत्तर भारतक जनजीवनमे राजनीतिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक परिवर्तनक विकृति रहल अछि। एहि क्षेत्रमे अमरजीक अनुसरण करैत कतोक कवि देखल जाइत छथि। हिनक व्यंग्य आधुनिक सामाजिक चेतनाक लेल पथप्रदर्शक सिद्ध भेल अछि।

●

देशक नौकामे ई *'उनटा पाल'*

माधवेन्द्रझा 'करुण'

नामक आदिमे एक 'चन्द्र', मुदा कर्मक्षेत्रमे चारि चन्द्र लागल, व्यक्तित्व-कृतित्वमे अमरत्व स्थापित, स्वनामधन्य पं०चन्द्रनाथमिश्र'अमर' रचित *'उनटा पाल'* राष्ट्रीय भावना आ राजनीतिक चेतनाक अनुरूप विशिष्ट काव्यग्रन्थ थिक। एहिमे चौबीस गोट कविता संगृहीत अछि। रचना अवधि 1948 सँ 74 धरि अछि। प्रत्येक कविता समय-समय पर वेश लोकप्रियता प्राप्त कयने अछि।

कोनो देश जखन स्वतंत्र होइछ तँ ओहिठाम राष्ट्रधर्म, राजनीतिक चेतना, राष्ट्रसेवाभावना, सामाजिक समरसता, व्यक्ति-व्यक्तिमे चरित्र-संस्कार अपेक्षित होइछ। मुदा भारतवर्षमे स्वाधीनताक वादेसँ विपरीत स्थिति बनऽ लागल। कवि सर्वत्र उनटे पाल तनल देखि, ओकरे लक्ष्य बनाय, अपन रचना द्वारा लोकचेतनाकेँ जगौलनि। स्वतंत्रताक बाद देशमे सर्वत्र अनैतिकता, पदलोलुपता, विदेश दिस झुकान आदि बढ़ऽ लागल। सामाजिक समरसता टूटऽ लागल। धर्म-संस्कृति-सभ्यता पर सभ ठाम अतिक्रमण, उनटा वातावरण, कविकेँ विचलित कयलक–

ई समाज दिग्भ्रान्त, परम उत्फाल बनल अछि।
देशक नौकामे ई उनटा पाल तनल अछि।।

व्यापारी समुद्रमे जखन नावपर चलैछ तँ हवाक रुखि देखि पालकेँ ओही अनुकूल तनने रहैछ, मुदा ओ पाल उनटे तानि देअय तँ की परिणाम होयत? देशक राजनीतिक वातावरणमे, सामाजिक जीवनमे वस्तुतः स्वतंत्रताक बाद राजनीतिमे काज कयनिहार सत्ताधारीगण उनटे पाल तनने रहलाह। अमरजी तकरे लक्ष्य कऽ व्यंग्य कयलनि अछि। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्वास लऽ देवता धरि पर कविक व्यंग्यवाण चलल अछि, जाहिमे भावना सुधारमूलक ओ यथार्थसँ परिपूर्ण अछि। संगृहीत चौबीसो रचनामे *'उनटा पाल'* नामक सार्थकता अछि।

प्रथम रचना थिक *मंगलाचरण*। मिथिलामे मांगलिक गीत विद्यापति रचित *'जय-जय भैरवि असुर भयाउनि'* प्रसिद्ध अछि। अमरजी ओकरे पैरोडी *'जय-जय भैरवि ससुर भयाउनि'क* रचना कयलनि। एहि मे आधुनिक समयक स्त्रीगणक व्यवहार, परिधान आ स्वभाव आदिकेँ विलक्षण ढंगे प्रस्तुत कयल गेल अछि। स्त्रीगणक धर्म थीक सासु-ससूरक सेवा, माथ झाँपब, नेनाकेँ कोर लेब, मृदुभाषिणी होयब, मुदा एतऽ स्थिति उनटल अछि–

झन-झन-झनन बजै अछि चूड़ी, हनहन-पटपट ठोरे।
चिरकुमारिके! माथ न झाँपिअ, टेल्ह करिअ नहि कोरे।।

'उनटा पाल'मे 'युगचक्र'क समस्त रचना समाहित अछि। युगचक्रमे देशक उत्थानमे लागल व्यक्तिकेँ आत्मोत्थानमे लिप्त भऽ गेला पर व्यंग्य कयल गेल अछि। युगचक्रक प्रथमे रचनामे कवि कहैत छथि–

जगकेँ युग परतारि रहल अछि।
एमहर-ओमहर के तकैत अछि, अपने हाथ सुतारि रहल अछि।।

कवि देखबैत छथि जे कोना लोक स्वार्थमे आन्हर भेल अछि। समस्याक समाधानक उत्तरदायी व्यक्ति व्यर्थक देखाबा करैत छथि, मूल समस्या दिस ध्यान नहि दैत छथि–'पहुँचलनि गूड़ केहुनी लग धरि, उनटाकऽ हाथ चटै छथि सब।' तहिना, एक कवितामे भौतिकवादी प्रवृत्तिक पसार दिस संकेत अछि। एहिसँ अध्यात्म कमजोर होइछ। भगवानो पर व्यंग्य करैत कवि कहैत छथि जे हुनको भौतिकवादी चाकचिक्य मानू ग्रस्त कऽ लेने छनि आ तैं ओ अपन भक्तोपर शेखी-शान बघारैत छथि।

'ककरा कहबै, के अछि मुँहगर' मे कविक निराशा झलकैत अछि। स्वर्गभूमि भारत नरक भेल जाइत अछि। देश रामराज्यक बदला लंकाराज्य बनल जाइछ। मूल तत्त्व समाप्त भेल जा रहल अछि। सभ अपने जोगाड़मे व्यस्त अछि। मुट्ठी भरि नेता 'को' खाइत अछि, जनता लय' 'कमरी' फेकि दैछ। चिन्तित कविकेँ सुधारक लक्षण निकट भविष्यमे नहि देखबामे अबैत छनि। *'हमर कथा के कान दैत अछि'* मे व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा आ स्वार्थमे लिप्त लोक कोना उन्नति कयलक, तकर चित्रण अछि। स्वाधीनताक फल किछुए लोकमे सिमटि कऽ रहि गेल आ ओ सभ नेहाल भऽ भेल–

''छलै सुखायल जकरो भोँटी, जे तकैत छल गूड़ा-रोटी।
सेहो सब अपना कुकूरकेँ जलखैमे पकमान दैत अछि।।''

वास्तवमे स्वतंत्रताक मोल जकरा भेटबाक चाही, से सभ पाछाँ पड़ि गेल, मुदा सभकेँ धकिया आगू बढ़ि जे-जेहन तेजगर निकलल, से अपने पाबि रहल अछि, संगहि परिजनकेँ सेहो तारि रहल अछि–

हथ-हथ भरि जे जीह बबै छथि सभसँ बेसी सैह पबै छथि
क्यो देआद क्यो भगिनमान केओ साढ़ू, क्यो सरबेटा
बैसल हकमै छथि कुकुरे टा !

स्वाभाविके, देशक कर्णधारसँ कवि विक्षुब्ध छथि– *'औषध-बाड़ी करू मुदा अतरी एखनहुँ धरि सड़ले अछि।'* वाह्य आडम्बरसँ मूल समस्याक समाधान नहि भऽ सकैछ। कवि सावधान करैत छथि–

पजरल छल कनिये टा चिनगी जे लेलक संसारक जिनगी
भीतर-भीतर धुआँ रहल अछि निश्चय पहुँचत जाकऽ फुनगी
आब मिझायल–छी बुझैत तँ भ्रम थिक-आब पजरले अछि
ऐँठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि!

स्वतंत्रतासँ कविकेँ एतबा तँ अवश्य संतोष छनि जे पहिने भारतक सम्पत्तिकेँ अँगरेज लुटिकऽ लऽ जाइत छल, आब सम्पदा रहैत तँ अछि अपने देशमे। किछुए सही, मुदा भोग तँ स्वदेशिए करैत छथि –

कमसँ कम सभ देशी अछि तँ उजरा वस्त्र स्वदेशी अछि तँ
गनले-गूथल भोग करओ– तैयो पहिनेसँ बेसी अछि तँ
मानि लियऽ जे बाँचल एक अलंग छै!

गान्धीजी रामराज्यक कल्पना कयने छलाह, किन्तु हुनक अनुयायीक अन्धस्वार्थप्रवृत्ति एवं भोगलिप्साक कारणेँ जनता हाहाकार कऽ उठल, ताहिपर प्राकृतिक प्रकोप, भीषण अकाल–

'देखहक हौ गान्धी बाबा, तोहरो स्वराजमे लाखो करै छइ काँहि-काँहि हौ।'

1965 मे भारत-पाक युद्ध भेल छल। अमेरिका सहित विश्वक अनेक राष्ट्र आ राष्ट्रनेताक व्यवहार भारतक अनुकूल नहि छल। जानसन, विल्सन, सुकर्ण, चाउ-माउ, ऊथां आदिक संदिग्ध चरित्र पर कवि नीक जकाँ प्रकाश देलनि अछि।

1967 मे संविद सरकारक दौड़ चलल छल। दल-बदलक धूम मचल छल। नित नवीन सरकार बनैत छल-टुटैत छल। जनतंत्र मखौल भऽ गेल छल। मंत्रिपदक लोभमे कोन विधायक कखन कोम्हर जायत, तकर ठेकान नहि छल।

नेता जोड़-तोड़मे लागल, अफसरक चानी, सरकारी काज ठप्प। कविक समीक्षा द्रष्टव्य–

पाँच-सात दल जे मिलि गेला, भेला गुरू सभ, रहल न चेला
लागल अछि अफसर केर मेला, गुड़कय नहि सरकारी ठेला
केन्द्रेमे बैसल छनि नारी, की कऽ सकता अटल बिहारी ?

तहिना, 1969 मे कांग्रेस-विभाजनक फलस्वरुप 'इंडिकेट-सिंडिकेट' बनल। ताहिपर कविक व्यंग्य भेलनि– *'बाम दिस खुरपी, दहिन दिस बैंट'*। तहिना समाजक विभिन्न वर्गपर कविक व्यंग्य-कटाक्ष हुनक 'प्रयोजन' सीरीजमे अछि। प्रजा, अफसर, लुच्चा तथा छात्रवर्गक प्रयोजनक माध्यमे एहि सभ वर्ग पर कविक कटाक्ष बड़ तीख अछि, तहिना सटीको। हास्य-व्यंग्यपूर्ण ई कवितासभ अत्यधिक लोकप्रिय भेल।

समसामयिक राजनीतिक गतिविधि पर कविक नजरि बराबरि रहलनि अछि। 1971 मे *'देखू दिल्लीक रंग/ आखिरमे आबि भेल लोकसभा भंग'* लिखलनि तँ चुनाव-परिणामक बाद लिखलनि– *'देखू दिल्लीक ताव/अलग-बलग सुतरि गेलनि इंदिराक दाव'*। इंदिराजीक जीत तँ भऽ गेलनि, मुदा देश दुर्दशासँ मुक्त नहि भऽ सकल तकर कविकेँ कष्ट छनि। चुनावी जीत-हारि तुच्छ थिक, असल थिक चारित्रिक उत्थान। तकर अभाव देखि कवि भूतनाथ महादेवकेँ गोहरबैत छथि–

हीन हो चरित्र, चित्र दीनताक निखरि उठय जीह नमरि चाहि रहल खाइ हम पोलाव।
बतहू मतंग भूतनाथे सहाय होथि देश केर लाजक हो तैखन बचाव।।

अन्तिम रचना *'उनटा पाल'* थिक, जाहिमे देशमे आयल विपरीत प्रवाह दिस संकेत कयल गेल अछि।

अमरजीक राष्ट्रीय भावनासँ अनुप्राणित आत्मा कचकि उठैछ। ओ पुछैत छथि–हम जाहि समाजमे छी, ताहि समाजक निर्माण-हेतु, कल्याण-हेतु महात्मा गान्धीक जीवन-अर्पण भेल, बलिदानीक रक्त-तर्पण भेल, कतोक माय-बहिनक सिन्दुर पोछायल, जन-जनमे क्रान्तिक फूत्कार छल, प्रलयंकारी हुंकार छल, मुदा ओहि समाजक गति आइ की अछि ? हमरा लोकनिकेँ कतऽ जयबाक छल आ कतऽ चल आयल छी? कतऽ पहुँचब?

की भविष्य भारतक भाल पर अंकित अक्षर बाँचि रहल अछि ?
आइ विवेक हमर पौरुषकेँ चढ़ा चाँछ पर जाँचि रहल अछि।

मुदा, कवि निराश नहि छथि। हुनक आशावाद कायम छनि। ओ समाजमे व्याप्त कुरीति, भ्रष्टाचार, स्वार्थलिप्सा, क्षुद्र राजनीति आदिक भण्डाफोड़ करैत ओकर दुर्गुणसँ जनमानसकेँ अवगत करबैत ओहि दिससँ सावधान करैत छथि आ आदर्शवादी समाजक संरचना लेल जन-जनक सहभागिताक आह्वान करैत छथि। वस्तुतः *'उनटा पाल'क* प्रत्येक कविता हास्य-व्यंग्यक चासनीमे बोरल राष्ट्रीय भावना, राजनीतिक चेतना तथा समुचित प्रेरणाक पक्वान्न थिक, जकर सौरभ सम्पूर्ण परिसरकेँ गमगमौने अछि।

●

अमरजीक पहिल काव्य संकलन *'गुदगुदी'*

डॉ० जयप्रकाशचौधरी'जनक'

पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' मैथिली हास्य-व्यंग्य साहित्यक एहन अतुलनीय रचनाकार छथि, जनिका प्रसंगमे हमर एक संशोधित अकाट्य उक्ति अछि जे–

''व्यंग्ये कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित चन्द्रनाथः।
मिथिलायां तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव।।''

अर्थात्, हास्य-व्यंग्य कविक गणनाकालमे कनगुरिया आंगुर पर पहिल नाम 'अमर'जीक भेल। संपूर्ण मिथिला मे उक्त रसक हुनक तुल्य आन नाम नहि भेटैत अछि। शैशवेसँ तेहन मधुमिश्रित रसपक्व चू मे चू मिलऽवला कटाक्ष लिखैत रहलाह जे प्रारंभिक उपनाम 'बतहू' सैह प्रसिद्ध रहल। तहिये सर्वजनप्रिय कवि भ' गेल छलाह।

कोनो रचना तैखन सुपाठ्य आ श्रव्य होइछ जँ ओहिमे मनमोहक परिधान होइक। बेर-बेर पढ़ने यदि आरो बेशी नवीनता प्रतिभासित हो, तँ ताही काव्यकेँ आचार्यलोकनि रमनगर काव्य कहने छथि। ताहूमे हास्य व्यंग्यक संग तँ एकटा वशीकरण वरदान रहैत छैक जे *'सद्यः प्रीतिकरो हास्यः।'* 'अमर'जीक हास्य व्यंग्यमय साहित्य सोझे ठहाकाक वस्तु नहि थीक, अपितु अन्तर्भूत प्रसन्नताक अनुभूति कौखन ईषत् हास्यसँ परिलक्षित होइछ तँ कौखन मन्द मुस्कानसँ। विवेच्य कवि खूब जोरसँ उपचर्म पर बिट्ठू कटैत छथि। मुदा वाह रे श्रोता ! ओकरा एको रत्ती टीस नहि होइ छैक, अपितु आरो गुदगुदी लगैत छैक। कहैत-कहैत ओकर समस्त बखिया उघारि दैत छथि। मुदा धन्य छी श्रोता! अहाँ भभा-भभा हँसै छी, जेना अहाँक प्रशस्तिगान भऽ रहल हो। कवि 'अमर'जी मैथिली साहित्यकेँ सब किछु देलनि। गद्य, पद्य, उपन्यास, निबन्ध, प्रभृति एको विधा हिनकासँ प्रायः छूटल नहि होयत। से तँ मैथिलीकेँ देलनि, मानै छी। मुदा! सामान्य मैथिल जनकेँ की देलनि? एकमात्र हास्य-व्यंग्य कविता। सुदूर देहातक नर-नारीक बीच अनचोकोमे पूछि दियौक जे अमरक पर्याय की थिक? उत्तर भेटत हास्यव्यंग्यपरक कविता।

ई परिचय छल श्रोताक दृष्टिजे, मंचक प्रसंगेँ, कन्यादानक लालकाकाक नजरियेँ। अमरजीक संग यात्राक क्रममे अथवा 'मिथिला मिहिर'क बलधिंगरोक मादे। मुदा मैथिली साहित्यक सुच्चा पाठक यदि विवेच्य कविक समस्त साहित्यक पारायण-अध्ययन करताह तँ स्वतः विश्वास होयतनि जे पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' वास्तवमे युगद्रष्टा एवं युगस्त्रष्टा छथि। विशेषता ई जे जतबे थलचरकेँ चिन्हैत छथि, ततबे नभचरकेँ। जहिना खोजपुरक बाध-बोनकेँ गह-गह जनैत छथि तहिना हस्तिनापुरक कोन-कोनकेँ बह-बह चिन्हैत छथि। तेँ हिनक काव्यमे धरातलसँ अन्तरिक्ष धरिक हलचलीसँ पाठककेँ दिग्दर्शन होइत छैक। फलतः आशानुरूप दिशा भेटि जाइत छैक, युगचक्रक समस्यासँ स्वतः समाधान पाबि लैत अछि तथा लजमंती ललना वा वीरकन्याक विदागरी बिना ताम-झामक कोना हो, तकर बाटो भेटि जाइछ।

अमर'क साहित्य-सागरसँ हम एखन मात्र जाहि एक गोट मोतीकेँ निकालि गुणग्रहण कऽ रहल छी, से श्वेत चमत्कृत मोती थिक– *''गुदगुदी''* ।

'गुदगुदी' कवि 'अमर'क पहिल काव्यसंकलन थकि अथिक नवरत्न ग्रन्थमालाक प्रथम पुष्प। एकर प्रथम संस्करण सन् 1353 साल अर्थात् 1946 इसवीमे भेल छल। जाहि दिन प्रेससँ बहरायल ताही दिन हाथे-हाथ सैकड़ों प्रति एकहि दिनमे बिका जायब एकटा कीर्त्तिमान बनि गेल मैथिली पोथीक। एकर भूमिका लेखक छलाह अमरजीक परम आप्त कवि-मित्र मथुरानन्द चौधरी 'माथुर। एहिमे चौदह गोट कविता चौदह गोट रत्न सदृश छल।

एकर दोसर संस्करण भेल सन् 1364 साल अर्थात् 1956 इसवीमे। एहि संस्करणमे पूर्व संस्करणक तीन गोट कविता–*आब बूझल, मैत्री आ कंसारमे बी०ए०* छोड़ि देल गेल, जखन कि अन्तिम छओ गोट नवीन कविता समाविष्ट कयल गेल। पूर्व संस्करणमे सब कविता छन्दोबद्ध तुकान्त अछि तँ एहिमे कतिपय अतुकान्त वा मुक्तवृत्त सेहो अछि। कवि अपन लेखकीय वक्तव्यमे स्वयं कहने छथि–'एहि नवीन संस्करणमे किछु अतुकान्त रचनाक सन्निवेश ओ किछु संग्रहीत कविताक बहिष्कार सेहो भेल अछि, किन्तु स्थानाभावें।'

गुदगुदीक नवीन वा द्वितीय संस्करणमे सभ मिलाय सत्रह गोट कविता अछि। प्रथम थीक 'विजये'तँ अन्तिम थीक 'प्राणक मोह'। *पुस्तक परिचय* आ *कवि परिचय* लिखने छथि कविक अन्यतम बन्धु श्रीमहेशशर्मा। काव्यप्रणेताक वास्तविक परिचय एक वाक्यमे दैत ओ लिखैत छथि ''काव्यप्रणेताक परिचय-पातक हेतु विशेष कहब आवश्यक नहि बूझि, आब एतबेटा कहब जे हिनक गद्य, पद्य, आलोचना, कथा, अभिव्यंजनामूलक उक्ति वैचित्र्य साहित्यजगतक मापदण्ड मानल जा सकैछ।''

प्राचीनताक संरक्षक आ अर्वाचीनताक समर्थक कवि 'अमर' नशामे बुत्त व्यक्तिक घोर विरोधी छथि। *'विजये'* शीर्षक कवितामे लक्ष्यहीन भऽ भंग-तरंगमे अटपट बजनिहारकेँ धूसैत छथि जे *पेट्ट मत्त भेल खैबाक अटकरो नहि बुझैछ*। चाणक्य जकरा *''मद्यपाः किं न जल्पन्ति''* कहलनि तकरा *'अमर'* कहैत छथि–

पंचम तान ज्ञान बिनु रहितहुँ मस्त फागु नित कूकी
रसगुल्ला लड्डू खैबामे ककरो लग नहि चूकी
विजये! विजय शंख हम फूकी

वैद्यकशास्त्रमे कहल अछि जे कोनो रोग आहार वा प्रदूषणेजन्यटा होइछ। कलिकलि, जकरा हौहटि कहल जाइछ तथा जे प्रारम्भमे नोचनीक रूपमे रहैछ, तकरा संबोधनकऽ 'कवि कहैत छथि' जे हम निर्विकार छी, हमरा हेतु अहाँ संक्रामक नहि बनी। दूषण-प्रदूषणसँ पृथक् रहितो जे कोनो दोष हमरा शरीरमे हो तँ तकरा क्षमाकरी, हुनकहि शब्दें –

छी निर्विकार,
नहि सीखल अछि स्वागत प्रकार
सब दोष क्षमब, नित दहिन रहब
कवि अमर करइ छथि नमस्कार।

सौराठ सभा आब तँ नाममात्रेक, मुदा पूर्वमे वैवाहिक केन्द्र छल। मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थक कौलिक पंजी छलैक। सभा गाछीमे पंजीकार, घटक, कन्यागत, वरागत आ पाग-दोपटा पहिरने वर उपस्थित रहैत छलाह। घटकलोकनि कैञ्चाक लोभमे पड़ि वंचक बनि गेल छलाह। अस्सी वर्षक बूढ़ घराड़ी बेचि कऽ आठ वर्षक गौरी कन्या सँ विवाह करैत छलाह। फल होइत छल जे– *'बीबी हेती मीयाँ जोग, मीयाँ हेता कब्बर जोग।'* सभामे असल दलाल होइत छलाह-घटक। घटकक चित्रण आ कन्याक दुर्दशाक वर्णन तखनुक प्रत्यक्षद्रष्टा कविलोकनि एहि रूपें कयने छथि–

'यात्री'– छाता रहनि, टूटल कमानी रहनि
हाथमे हुनक नोसिदानी रहनि
उसरगल छलनि की दनही छलनि
कुकुरक चिबौल पनही छलनि

साठा पाग रहनि चूनक छाँछी जकाँ
कनपट्टीक मोसबिर्ध माछी जकाँ
'मधुप'– रहि-रहिकेँ सखि हृदय हमर हहरि जाइए
असरेश मग्घ जकाँ नोर झहरि जाइए
ऐ सँ खुनाय खाधि बरू गाड़िये दितै
जनमैत काल नोन चटा मारिये दितै।

'अमर'– घटक राज,
सब पहुँचलाह
बैसइ गेलाह
बेङन ठाकुर केर लक्षण बस
हमरा गामक डोमा मलाह
नासिकानन्द
जे छलइ बन्द
नोसिदानी मे, चुटकी भरि भरि
पूड़ा मे दै दै, भै बुलन्द

एवंक्रमे तत्कालीन बहुसंख्यक रचनाकार एहि तथाकथित पवित्र प्रथाक विकारकेँ उजागर कैने छथि। 'अमर'क चोख लेखनी ताहू पंक्तिमे आगूए-आगू चलैछ।

कवि 'अमर' परतंत्र भारतक नीक जकाँ दुःख भोगने छथि। आ पुनः स्वतंत्र भारतक देखौआ सुख आ भितरिया दर्द भोगि रहल छथि। मंत्रीलोकनिक धूर्त्तपनी, लंठपनी, स्वार्थलोलुपता आ घुसखोरीसँ नीक जकाँ परिचित छथि। मंत्रीसँ बकबा लैत छथि जे हम मंत्री नहि षड्यंत्री छी। हुनकहि आखरमे–

हम मन्त्री छी,
हम एक पैघ षड्यंत्री छी
मानवक सुधारक हेतु हमहिं
संस्था सबहिक हृत्तन्त्री छी।

पुनश्च, मंत्रीजी अपनाकेँ लस्सायुक्त काँच बेल कहैत छथि जे ''बहिरेव मनोहराः'' रहैत अछि–

हम छी श्रीफल,
ऊपर सँ चिक्कन वेश सफल
अन्तर लस्सा सँ ओत-प्रोत
कण्ठे लग अछि आँठी अँटकल

सरकारी सेवामे रहैत एहन निर्भीकतापूर्वक कलम भाँजब ई साधारण साहसीसँ किन्नहुँ नहि भऽ सकैछ। दोसर

बात ई जे सत्ताधारी तंत्रक विरुद्ध कविता सूनब वा अभिनय देखब तकरा शत प्रतिशत लोक पसिन करैत अछि। 'अमर'क लोकप्रियताक ई एकटा सर्वथा सशक्त आधार रहल अछि।

कविकेँ सर्वत्र अपराध, भ्रष्टाचार, दुराचार आ स्वार्थपरायणता सैह दृष्टिगोचर होइत छनि। न्यायालयमे जतऽ अन्याय मात्र होइछ, ततऽ ओकील निहत्थ निरपराधी मोकीलकेँ अपराधी बनबैछ आ मातबर हत्याराकेँ मामिला खारिज कऽ ससम्मान विदा करैछ। ओहि ओकीलक श्रीमुखसँ बहरायल बात एतऽ उद्धृत अछि–

हम मूस जकाँ घर फोड़ि अपन स्वार्थक संसार बसा लइ छी

हम बड़की अन्हरी बाझहुँ केँ चाङुर मे आनि फँसा लइ छी

ई चोरानुक्रीक खेल औखन आर बढ़ले जाइछ। साहित्य समाजक दर्पण थीक। लोक चट्ट बाजि दैछ जे किछु दिन पहिने रामराज छल। एहि घूसघासक आबे चलनि भेल अछि। मुदा से बात फूसि, जकर साक्षी सन् 1364 सालक ओकीलसाहेब छथि।

अध्यापकलोकनिक आर्थिक स्थिति तहिया बड़ दयनीय रहैत छल। मात्र समाजमे लोक आदरक दृष्टिसँ देखैत छलनि; प्रणाम-पाती करैत छलनि। दसटा टाका मासिक, सेहो असमय पर भेटैत छलनि। खगल घरमे धीपल बालु परक पानि जेकाँ छन्न दऽ' ओ दसटकही उड़ि जाइत छलनि। एक अध्यापकक दुखनामा–

हम अइउण ॠलृक रटल जखन

कप्पार दरिद्रा सटल तखन

दश वर्ष परिश्रम केला पर

दश टका भेटै ई फल पापक

हम अध्यापक

मुदा आजुक दिनमे एकटा सरकारी स्कूलक अध्यापक साधारण व्यक्तिक परिचायक नहि थीक। एखन प्राध्यापकसँ चहटगर आ मोटगर चाकरी अध्यापकेक भऽ गेल छनि। कविक एहि आर्त्त पुकारकेँ सरकार स्वीकार कयलक। तेँ एकरा कविक सुधारवादी डेग कहब समीचीन।

गुदगुदीक सत्रहो कविता अपन-अपन पृथक् महत्त्व रखैछ। यदि ''अरिकोंछक स्वाद''मे मिथिलाक माटिक सुगन्ध आ तिरहुतक खान-पानक आदर्श देखैत छी तँ ''कन्ट्रोल''मे अकालपीड़ित मिथिलाक भूखल-प्यासल लोकक पीड़ा जेना करुणार्णव बहा दैत हो।

अन्त मे, आचार्य श्री सुमनक पंक्तिसँ हम सोलहन्नी सहमत छी जे ''कौलिकतेँ वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, साधने पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक 'अमर'जीक परिचय एक वाक्यमे यैह देल जा सकैछ।''

●

साहित्यिक संगम-त्रिफला

फूलचन्द्रझा 'प्रवीण'

साहित्यकार जिनगीक अनुभूतिएकेँ व्यक्त करैत छथि। ओ स्वयं जीवन आ जगतक द्रष्टा होइत छथि आ ओहिसँ बोध प्राप्त कय ओकरा व्यक्त करैत छथि। साहित्य भाषाक माध्यमसँ जीवनक अभिव्यक्ति थिक। साहित्यकार बनैत आ टुटैत सम्बन्ध एवं विकास आ ह्रासकेँ देखि संवेदनशील भऽ जाइत छथि आ अपन प्रतिक्रिया कृतिक माध्यमसँ व्यक्त करैत छथि। एहने स्वानुभूतिक कृति थिक-त्रिफला। नवरत्न गोष्ठीक ई चारिम पुष्प 1950 इ०मे प्रकाशित भेल। अमरजी मुख्यतः कविक रूपमे ख्यात छथि, ताहूमे व्यञ्जनामिश्रित हास्य रसक, मुदा साहित्यक आनो विधामे हुनक नीक गति छनि। आचार्य सुरेन्द्रझा'सुमन'क ई उक्ति–''जे वास्तवमे साहित्यकार छथि ओ साहित्यक कोनहुँ विधामे लीखि सकैत छथि, भनहि हुनका ख्याति कोनहुँ विशेषे विधामे किएक ने प्राप्त होनि'' अमरजी पर अक्षरशः चरितार्थ होइछ।

'त्रिफला' साहित्यक तीन प्रमुख विधाक बानगी प्रस्तुत करैत अछि। एक-एकटा कथा, कविता आ एकांकीक ई संकलन थिक। आरम्भ कथेसँ भेल अछि तेँ सर्वप्रथम कथे पर चर्चा करब उचित। कथाक शीर्षक थिक–'समाजक मुँह'। ई अमरजीक पहिल कथा थिकनि जाहिमे तत्कालीन समाजक बहुत नीक चित्रण भेल अछि। ई आजुक परिप्रेक्ष्यमे सेहो सार्थक आ सन्दर्भित अछि। ई समाज केहन अछि, एहि समाजक की स्वरूप छैक आ तकर केहन फल समाजक लोककेँ भोगऽ पड़ि रहलैक अछि, तकर एहिमे विलक्षण चित्र देखबामे अबैत अछि। कथानायक भोकरनझा कोन प्रकारेँ समाजकेँ गर्त्तमे लऽ जा रहल छथि से एहि वाक्यसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि– ''अहाँ अखन नेना छी, दोसर बात जे समाजक बीचमे रहबाक सौभाग्य अहाँकेँ कम काल प्राप्त होइत अछि, हम ध्यान मे रखबाक योग्य एकटा बात कहैत छी, गीरह दै कै राखू कारण जे–''वृद्धानां वचनं ग्राह्यम्''। समाजमे एहिना होइत छैक, समाजक मुँहमे क्यौ लागै, ओकरा सन ओकरा कहिऐक, एकरा सन एकरा, बीचमे अपने झिल्ली झाड़िके खाइत रहू, ताहीमे अपन कल्याण, दुनूक टीक हाथमे रहल, गामक रमन-चमन सेहो चलैत रहत।''

उपर्युक्त अभिव्यक्तिक द्वारा कथाकार समाजक वास्तविक रूपक जे चित्रण आइसँ पचास वर्ष पूर्व कैलनि से आइ धरि देखबामे अबैत अछि। मुँह देखि मुँगबा परसबाक परम्परा, एक दोसरकेँ लड़ा अपन गोटी सुतारबाक स्वभाव आ दोसराक दुःखकेँ अपन मनोरंजनक साधन बुझबाक प्रवृत्ति आइयो ओहिना अछि जहिना पूर्वमे छल। लेखकक ई चिन्ता हमरालोकनिक सोझाँ ओहिना छाती तानिकऽ ठाढ़ अछि। लगैत अछि जेना समाजक लोक एहि कथाकेँ पढ़ि नहि सकल, जँ पढ़ि सकल तँ गुनि नहि सकल आ जँ गुनि सकल तँ अपन जिनगीमे ओकरा उतारि नहि सकल। वर्त्तमानमे कथा-साहित्य बहुत बेसी आगू बढ़ि चुकल अछि, मुदा जाहि समयमे ई कथा लिखल गेल छल तकरा ध्यानमे राखि कहल जा सकैछ जे ई मैथिलीक उत्कृष्ट कथा थिक, जाहिमे अनुभूत सामाजिक यथार्थकेँ उजागर कयल गेल अछि।

संकलनक दोसर पुष्प थिक कथात्मक कविता–''दुइ चित्र''। एहिमे अमरजी अपन परिचय एक कुशल व्यंग्य कविक रूपमे देलनि अछि। प्रस्तुत कवितामे कवि दूटा चित्र प्रस्तुत कैलनि अछि। पहिल चित्रमे कवि देखौलनि अछि जे जा धरि बुच्चूबाबूक पिता कमौआ छलथिन, हुनका कोनहु प्रकारक चिन्ता-फिकिर नहि छलनि। दुलरुआ बौआक मनोनुकूल भोजन-साजन, कपड़ा-लत्ता, सुख-भोग सभटा उपलब्ध छलनि। बापक लाख प्रयास कैलाक बादो ओ नीक जकाँ पढ़ि लिखि नहि सकलाह, कोनहु नीक पद पर नहि जा सकलाह आ ने जिनगीक मूल्य-बोध भेलनि।' लहंलाड़ला सदा सुखीक'' उदाहरण बनल रहलाह। जाधरि बापक कमायल ढेउआ बगुलीमे छलनि ताधरि दोस-महीमक कमी नहि, मुदा बगुली खाली भेला पर क्यौ पुछनिहार नहि। बापक मुइलाक बाद जखन जिनगीक गाड़ीक जूआ कान्ह पर पड़ैत

छनि तँ छटपटा उठैत छथि, तिलमिला उठैत छथि आ विदा भऽ जाइत छथि परदेश, मुदा कत्तहु कोनहु जोगार नहि। गाम पर माय अपन मातृत्वकेँ बचौने साँझक साँझ उपास पड़ैत छथिन। लोक बूझय नहि तेँ आइ की तँ सोमवारीव्रत काल्हि की तँ मंगलवारी व्रत, मुदा एतेक कष्ट कटैत रहलाक बादो ओ अपन सूति-पाति वा गहना-गुड़िया बेचबाक कोन कथा जे बन्हकीयो धरि नहि लगबैत छथि, कारण मोनमे मनोरथ संयोगि रखने छथि जे बेटाक विवाहोपरान्त बिनु गहनाक पुतहुक मुँह कोना देखब? कवि कहैत छथि–

भरि बरख बितौलनि ओ बूढ़ी
सोमवारी मंगलवारीमे
तैं की ओ गहना बेचि लितथि ?
पुतहुक मुँह बिनु गहने देखितथि ?

आइ बुच्चूबाबूक सोझाँ अपन बापक वर्षी करबाक समस्या छनि। बीच आँगनमे माथपर हाथ धय कानि रहल छथि। सगरो संसार अन्हारगुज्ज लागि रहल छनि। कत्तहु इजोतक दरस-परस नहि। एहि कविताक पूर्वार्द्धक माध्यमसँ कवि वर्त्तमान पीढ़ीक नवतुरियाकेँ ई बोध करयबाक प्रयास कैलनि अछि जे बाबा बलेँ फौदारी बेसी दिन नहि चलैत छैक, बाबाक हाथीक सिक्कड़िसँ पोताक गुजर नहि भऽ सकैत अछि, दोसरक बल पर सुखद जिनगी बेसी दिन धरि नहि चलि सकैत अछि। मनुक्खकेँ अपना पैर पर ठाढ़ होयबाक सामर्थ्य स्वयं जुटयबाक चाही, अपना दुनू हाथसँ कर्म करबाक सामर्थ्य स्वयंमे होयबाक चाही, अपन बुद्धि बल पर जीवाक कला स्वयं तकबाक चाही। तखने जीवन सुखद भऽ सकैत छैक।

कविताक उत्तरार्द्धमे कवि कर्मवीर बुचबा चमारक चरित्र-चित्रण कैलनि अछि, जकरा क्यौ मार्गदर्शक नहि छलैक परंच अपन बुद्धि आ कर्मक बलेँ ओ सुखद जिनगी जीवि रहल अछि। नितदिन भोरे उठिकऽ चल जाइत अछि स्टेशन, अपन नेहाइ, सुतारी, डोरा, काँटी आ मरियाक संग। बाबू-भैयाक जुत्ता-चप्पलक मरम्मति कऽ कमा अनैत अछि अपन गुजर जोग टाका आ जीवि रहल अछि आनन्दक जिनगी। ओकरा कोनहु प्रकारक चिन्ता-फिकिर नहि। जँ चिन्ता छैको तँ मात्र एकेटा बातक, जाहि लेल ओ भगवतीसँ प्रार्थना करैत रहैत अछि। ओकर आकांक्षाकेँ कवि एहि प्रकारेँ अभिव्यक्ति देलनि अछि–

''सदै पनही बाबू भैयाक
हमरा भागे धरि रहौ टुटैत
जाहिसँ भरि परिवारक हेतु
रहौ ढ़ौआ धरि खूब जुटैत''

कविक इहो रचना महत्त्वपूर्ण अछि। वर्त्तमानो समयमे समाजक भीतर एहन दुनू चित्र देखबामे आबि रहल अछि। वर्णन चित्ताकर्षक अछि। अतः पठनीयता आइयो ओहिना बनल छैक। कर्मक प्रतिष्ठा आ महत्त्वक प्रतिपादक जीवनक दुइ गोट विपरीत चित्र अत्यन्त कुशलतापूर्वक उरेहल गेल अछि।

तेसर पुष्प थिक एकांकी, जकर शीर्षक थिक ''निरक्षरता निवारक पाठशाला''। एहि एकांकीक माध्यमसँ अमरजी समाजमे व्याप्त अशिक्षाकेँ दूर करबाक दृष्टि देबाक प्रयास कैलनि अछि। विश्वक तुलनामे भारतक, भारतक तुलनामे बिहारक आ बिहारोमे मिथिलाक साक्षरता-दर सबसँ कम रहल अछि। आइ साक्षरता विश्वक सबसँ पैघ समस्या थिक। एहि भौतिकतावादी युगमे बिना शिक्षाक एको-डेग आगू नहि बढ़ल जा सकैछ। अशिक्षाक कारणे

समाजक वृहत् भाग अपन मौलिक अधिकार सँ वंचित भऽ शोषण-उत्पीड़नक पात्र बनल रहबाक हेतु विवश होइत रहल अछि। ई चिन्ताक विषय एखनो अछि आ आधा शताब्दी पूर्व तँ और बेसी छल। ई एकांकी पढ़ैत काल हमरा लागल जे वास्तवमे साहित्यकारक दृष्टि कतेक सूक्ष्म होइत छनि आ ओ कतेक पैघ दूरदर्शी होइत छथि। एहि समस्याकेँ अमरजी पचास वर्ष पूर्वे अनुभव कऽ लेलनि आ एकदम सहज आ सरल उपाय सेहो देखा देलथिन। आइ सरकारो पूर्ण साक्षरताक लेल अनेकानेक योजना-परियोजना चला रहल अछि। विश्वबैंक बोराक बोरा टाका एहि व्याधिक उन्मूलन लेल फोलि देने अछि, जकर नीक परिणाम भेटलैक अछि आ साक्षरता दर बढ़लैक अछि। उदाहरणक लेल अपना देशक केरल राज्य पूर्ण साक्षरताकेँ प्राप्त कैलक अछि। आइ सरकारक माध्यमसँ वयस्क शिक्षा-परियोजना, प्रौढ़-शिक्षा परियोजना, समेकित बाल-विकास परियोजना, बिहार-शिक्षा-परियोजना, रात्रि-पाठशाला आदि अनेकानेक कार्यक्रम चलि रहल अछि आ अमरजीक ई निरक्षरताक चिन्ता बहुत कम समयमे दूर होयबाक सम्भावना देखबामे आबि रहल अछि। आब सोनेझा (एकांकीक पात्र) सनक लोकक संख्या समाजमे नगण्य भऽ गेल अछि आ चतुर्भुज (एकांकीक दोसर पात्र) सन लोकक संख्या बढ़ि रहल अछि। तैं आब ओ दिन दूर नहि जहिया हमरालोकनिक समाज पूर्ण साक्षरता प्राप्त कऽ लेत। एहि एकांकीक सबसँ पैघ विशेषता थिक जे गाम-घरक ठेठ मैथिली शब्द सभक प्रयोग प्रचुर भेल अछि आ रचनाकारक नाम जँ नुकाकऽ राखियो लेल जाय तैओ जे पाठक अमरजीक आन-आन रचना पढ़ने छथि तनिका कनिओ बूझऽमे भाङठ नहि रहतनि जे ई रचना हुनके थिकनि, कारण पाँती-पाँतीमे हास्यक पुट अमरजीक उपस्थिति प्रमाणित करैत अछि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे 'त्रिफला' मैथिलीक तीन गोट विधा-कथा, कथाकाव्य आ एकांकीक रूपमे गंगा, यमुनाआ सरस्वतीक साहित्यिक संगम थिक।

वास्तवमे त्रिफलाक रचनाकालक युवा साहित्यकारक भावी लेखनक विभिन्न विधाक बीज रूप निदर्शन एहि कृतिमे होइत अछि। श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क अनवरत साहित्य-रचनाक छओ दशकक आकलन कयला पर स्पष्ट भऽ जायत जे 1941 मे प्रकाशित पहिल कविता 'चश्मा'क बीज रूप हास्य-व्यंग्य वटवृक्षक रूप धारण कयलक तँ 'त्रिफला'क कथा-रूप बीज पचासो गोट कथाक रूपमे विकसित भेल। ई कमसँ कम दस गोट कथा-काव्य वा पद्य कथाक रचना कयने छथि तँ लगभग दस गोट एकांकी-प्रहसन सेहो लीखि मैथिलीक दृश्यकाव्यकेँ समृद्ध कयलनि अछि।

●

संगीत जो रमाये और जगाये भी[1]

डॉ० अविनाशचन्द्रमिश्र

मैथिली के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' की आरम्भिक दौर की हिन्दी कविताओं का संकलन 'अमर-संगीत' मुख्यतः गीतों के माध्यम से कवि के जीवनानुभवों और अनुभूतिमूलक आशाओं-दिशाओं की लयात्मक अभिव्यक्ति में समर्थ है। कवि ने कृति का नामकरण 'अमर-गीत' न कर 'अमर-संगीत' किया है। इसके पीछे सोच हो भले ही कि 'आरम्भिक जीवन की ये कुछ कविताएँ, कुछ इधर-उधर नष्ट हो गईं, जो बची रहीं उन्हें पुस्तकाकार कर देने का विचार मन में आया। अतः एक ही पुस्तक में जीवन की अनुभूतिमूलक कुछ कविताओं के साथ फुटकल रचनाएँ भी संकलित कर दी गई हैं ('कुछ अपनी' भूमिका से)। पर बात इतनी ही नहीं है। वस्तुतः यहाँ केवल विषय-वैविध्य ही नहीं, जीवन के वादी विवादी-सम्वादी स्वरों के आकर्षक मेल के कारण 'जीवन-संगीत' के कई-कई संपूर्ण रागों की सृष्टि हुई है।

मानव-संस्कृति के विकास में किसी कवि का योगदान दो या इन दोनों ही स्तरों पर होता है– एक तो समसामयिक परिस्थितियों में अन्तःसलिला की तरह प्रवहमान, पर दूसरों द्वारा प्रायः अननुभूत लयात्मकता के आविष्कार के रूप में, दूसरे नये बिम्बों की कलात्मक सृष्टि के रूप में। पहले में जहाँ कवि का व्यक्तित्व और अनुभव मुखरित होता है, दूसरे में वाह्यजगत् के साथ उसका विशिष्ट सम्बन्ध और उससे उसकी विशिष्ट टकराहट। 'अमर संगीत' की कविताओं में बिम्बों की कलात्मक सृष्टि का पक्ष प्रबल भले न हो, प्रवहमान और गतिशील जीवन से लयों के सृजन द्वारा मानवीय संवेदना को व्यापक बनाने का काव्य खूब हुआ है।

कवि ने अनुभव किया है कि हमारे जीवन में दुःख-संघर्ष और पीड़ा की एक सहज स्थिति है। लिखा भी है–

न जाने किससे मिला विषाद युगों से ढ़ोता आया हूँ।

संकलन में ऐसे अनेक गीत हैं, जिनमें जीवन में व्याप्त विषाद की अनुभूतिमूलक सघन अभिव्यक्ति हुई है; जैसे–

कैसी समझ तुम्हारी है जो तुम मुझसे गाने कहते हो
कौन मिला जीवन में अपना जिसको अपनाने कहते हो

लेकिन ध्यातव्य यह भी है कि जीवन के विषाद कवि की आशावादिता को मार नहीं पाते, कारण कवि के अनुभव में जीवन का वह पक्ष भी आता है, जो जटिलता लिए भले ही, हताशा से उबारनेवाला होता है और कवि लिखता है–

सुख-दुख के सम्मिश्रण से ही जीवन का निर्माण हुआ है।

ऐसी आत्मस्वीकृति के बाद तो जीवन किसी के लिए अभिशाप ही नहीं वरदान भी और दुख केवल म्लान करने वाला ही नहीं ज्योतिर्मान बनानेवाला भी हो जाता है–

जग कहता अभिशाप इसे, पर
जीवन तो वरदान मिला है
जग के मग पर पग बढ़ता है
गिरिश्रृङ्गों पर जा चढ़ता है

---

1. अमरसंगीत : श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', प्रकाशक - नवरत्न गोष्ठी, मिश्रटोला दरभंगा, प्रथम संस्करण 1977 ई०।

निखिल विश्व के छाता पर
कुछ मन की बातें गढ़ता है
दुख के संबल ले चलने पर ही
अन्तर ज्योतिर्मान मिला है।

और इसी तरह की आशावादिता जीवन को वह विशिष्ट दिशा प्रदान कर जाती है, जिस तरफ बढ़ते हुए मानव न सिर्फ सहज-सरल, अकुंठ और खुलेपन का आग्रही हो जाता है, बल्कि आह्वान और उद्बोधन का साहस भी अर्जित कर लेता है।

हृदय के उस द्वार को तुम खोल दो ना
आ सके समता
विषमता जा सके भी
रो सके यदि मन
कभी कुछ गा सके भी
आज मेरे करुण स्वर में प्राण मेरे
अमृत घट से ला अमिय इस घोल दो ना
हृदय के उस द्वार को तुम खोल दो ना

परिस्थितियाँ कुछ बदलीं, बहुत नहीं बदलीं पर खुलेपन से कवि ने आत्म-विश्वास की प्राप्ति के अनुभव को रेखांकित कर दिया–

दूर है मंजिल सदा से जानता हूँ,
किन्तु मैं विश्वास लेकर चल पड़ा हूँ
राह के काँटे अलग करने पड़ेंगे
भाव भी मन के सजग करने पड़ेंगे
आंधियों का काम ही तो रोकना है
किन्तु मैं उल्लास लेकर चल पड़ा हूँ

'कुछ अपनी' शीर्षक पुस्तक की भूमिका के अनुसार कवि की ये हिन्दी कविताएँ सन् 1960 तक की रचित कविताएँ हैं। साहित्यिक जीवन के आरम्भ से लगभग 15-20 वर्षों के बीच रचित संकलन की कविताओं में ग्राम-चेतना से सम्बन्धित एक कविता–'सपूतों का सपना'; प्रकृति परक एक कविता–'पावस का जन्म'; कोसी नदी के कहर पर केन्द्रित एक कविता– 'आँसू का क्रन्दन' तथा समसामयिक राजनीति पर व्यंग्य करती एक रचना 'चुनाव गीत' भी हैं। ये रचनाएँ मनोवेगप्रधान गीतों के साथ कवि की यथार्थवादी दृष्टि से हमारा साक्षात्कार कराती हैं।

मोटे तौर पर सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं के साहित्य के लिए सन् 1935 के बाद के पन्द्रह-बीस वर्षों का समय ही स्वच्छन्दतावाद (रोमान्टिसिज्म) और यथार्थवाद के बीच संघर्ष का दौर रहा है। हिन्दी का काव्य-जगत् भी इसी समय अपने विकास की प्रक्रिया में एक नये मोड़ की पहचान कराता है। यही वह समय है जब न सिर्फ स्वच्छन्दतावादी

छायावाद के स्तंभ कहे जाने वाले कवियों, विशेषतः निराला और पंत की कविताओं में भी यथार्थोन्मुख संघर्ष से जुड़ा एक स्पष्ट परिवर्त्तन दिखाई देने लगता है, बल्कि एक नयी भाव-भंगिमा के साथ काव्य-सृजन करनेवाले कुछ नये हिन्दी-कवियों की पुष्ट पहचान हिन्दी-जगत् को यहाँ आकर होती है।

स्वच्छंदतावादी मनोवृत्ति यद्यपि इस दौर की भी महत्त्वपूर्ण प्रवृति रही; फिर भी छायावाद के इस उत्तरवर्ती दौर में स्वच्छन्दतावादी भावनाओं की लाक्षणिकता जैसे आवरण से मुक्ति; अभिव्यक्ति में स्पष्टता, सहजता और सरलता; मस्ती और बेधड़कपना; प्रखर राष्ट्रीयताबोध; जनोन्मुखता मानवोपयोगिता के साथ ग्राम-चेतना और प्रकृति के प्रति नये लगाव को अलग से रेखांकित किया जाता है। अभिव्यक्ति के स्तर पर गीतात्मकता का भी यहाँ अपना विशिष्ट तेवर है। रामधारी सिंह 'दिनकर', 'हरिवंश राय बच्चन, शिव मंगल सिंह 'सुमन', गोपाल सिंह 'नेपाली', आरसी प्रसाद सिंह आदि इसी दौर के हिन्दी के कुछ महत्त्वपूर्ण कवि हैं। अगर हिन्दी कविता को भी अपनी रचनात्मक सक्रियता का क्षेत्र बनाये रहे होते तो हिन्दी के इन उत्तरछायावादी कवियों में कवि चन्द्रनाथमिश्र'अमर' की गणना भी निश्चय ही होती। कारण इस दौर की हिन्दी कविता के श्रेष्ठ बहुत चीज़ों में से कुछ और बहुत कुछ की संभावनाएँ इस संकलन की कविताओं में मौजूद हैं, इसमें सन्देह नहीं।

श्रीअमरजीक कथाकाव्य

डॉ०नबोनाथझा

लोकानुरंजनक हेतु कथा सुनबाक प्रवृत्ति मानव जातिक नैसर्गिक गुण रहल अछि। ई प्रवृत्ति मानवमे सभ्यताक आदिएसँ रहैत आएल अछि। एहि मनोवृत्तिक पूर्त्ति जेना गद्यमे कथा द्वारा होइछ, तहिना पद्यमे कथा-काव्य द्वारा बेसी प्रभावोत्पादक एवं चमत्कारक होइछ।

भारतीय प्राच्य साहित्यमे कथा-काव्यक चर्चा नहि समुपलब्ध होइछ। पाश्चात्य साहित्यमे एकमात्र हडसन महोदय कथाकाव्य सदृश एकगोट काव्यविधाक उल्लेख निम्न प्रकारेँ कएने छथि– "In our study of narrative poetry we naturally in verse; a form appears all literature and represents one of the earliest stages in the evolution of the poetic art. The themes are commonly furnished by the more elementary aspects of life, large space is given in them to tales of adventure fighting, deals of powers and valour; they have frequently a strong infusion of supernaturalism; while love, hatred, pity and the similar interests of the domestic life receive full share of attention."

कथाकाव्यक आरम्भ लोककथाकाव्यक रूपमे भेल अछि। प्राच्य ओ पाश्चात्य काव्यसाहित्यक सदृशे मैथिली काव्य साहित्यहुक दू वर्ग रहल अछि-लोक साहित्य ओ शिष्ट साहित्य। शिष्ट साहित्यक कथाकाव्यक उद्भव विकास नहि, निर्माण भेल अछि। मैथिली शिष्ट साहित्यक कथाकाव्यक संरचना वर्त्तमान कालमे भेल अछि। मैथिलीक लोककथाकाव्य वस्तुतः काव्यक ओहने विधा थीक जकरा संस्कृत वाङ्मयमे 'गाथा' ओ आँग्ल साहित्यमे 'वैले' (Ballad) कहल जाइछ। सम्प्रति एही कोटिक रचनाकेँ पद्यकथा, आख्यानकाव्य अथवा कथाकाव्य कहल जाइत अछि।

कथाकाव्य सेहो आने विधा सदृश जनजीवनक अभिव्यक्तिक माध्यम थीक। सामान्य कथा ओ कथाकाव्यमे भिन्नता अछि। जे वस्तु गद्यक माध्यमे कहल जाइछ से कथा थीक एवं ओएह कथा जँ पद्यबद्ध हो तँ ओ कथाकाव्य कहाओत। दुहूक कथ्य-शिल्पमे अन्तर रहैत अछि। कथाकाव्यमे कथानकक प्रधानता रहैत अछि। कथाकाव्य गीतिकाव्य नहि थीक। ई मुक्तक काव्य सेहो नहि थीक। कथा-काव्यमे कथाकाव्यकारक दृष्टि कथा पर केन्द्रित रहैछ परंच गीतिकाव्यमे गीतकार स्वानुभूतिकेँ प्रधानता दैत छथि।

आचार्य प्रो० रमानाथझा कथाकाव्यक प्रसंग कहने छथि– ''कथाक गति स्थिर नहि हो, कथानकक क्रमशः विकास हो, औत्सुक्य शिथिल नहि हो, आब की होइत छैक से जिज्ञासा बनल रहए–ई नीक कथानकक साधारण धर्म थिकैक से कथाकाव्यक निर्माताकेँ सतत ध्यानमे रखबाक थिकैन्हि।..... फलतः नाटकीयताक बहुत रास अंश सेहो कथाकाव्यमे रहैत अछि। कथाकाव्य साधारणतया एक तटस्थ व्यक्तिक मुँहसँ कहल रहैत अछि अथवा कथानकक चरितविशेषक मुँहसँ। परन्तु नाटकमे प्रत्येक चरितक उक्ति अपन स्वतंत्र होइत छैक आ कवि अपनाकेँ सतत चरितक स्थानमे राखि कहैत छथि।''

कथाकाव्यक निम्न तत्त्व मानल जा सकैत अछि– (1) कथात्मकता, (2) वर्णनात्मकता, (3) पात्रक चरित्र-चित्रण, (4) कथ्य-शिल्प, (5) जिज्ञासा, (6) क्रमबद्धता, (6) कथात्मक गतिशीलता, (8) उद्देश्य, (9) घटना।

कथा-काव्य पद्यबद्ध रोचक कथानकसँ संपृक्त रहबाक चाही। ओहि मध्य पात्रक चरित्रांकनसँ पूर्व विलक्षण क्रमबद्ध घटना आवेष्टित रहबाक चाही। उपर्युक्त गुणसँ समन्विते कोनो रचना कथाकाव्य कहा सकैत अछि।

वस्तुतः कथाकाव्यक विकास लोकसाहित्यक उद्भवसँ मानल जाइत अछि। किछु विद्वान उदारताक कारणेँ

विद्यापतिक कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका, किरतनियाँ नाटक, महाकाव्य एवं खण्डकाव्यक अँशकेँ कथाकाव्य मानल अछि। मुदा कथाकाव्यक आरम्भ आधुनिक कालमे सशक्त ओ यथार्थ रूपेँ भेल अछि। मध्यकाल धरि कथाकाव्यक स्वरूप देखबामे नहि अबैछ। विविध कथा ओ घटनाक बाहुल्यक कारणेँ; कथा विस्तारक कारणेँ मनबोधक 'कृष्णजन्महु'केँ कथाकाव्यक कोटिमे नहि परिगणित कएल जा सकैत अछि।

एक गोट आलोचकक मतेँ–''प्रथम विश्वयुद्धक पश्चात् देशमे सर्वत्र नवजागरण आएल, विज्ञानक विकासक कारणेँ लोकदृष्टि वैज्ञानिक भेलैक, पाश्चात्य सभ्यता–संस्कृतिक प्रभाव पड़ल, पुरान मान्यता ओ विचार नष्टप्राय होमए लागल, नवीन मूल्यक स्थापना भेल। एक दिस परम्परावादी कविलोकनिमे धर्म-संस्कृतिक प्रति निष्ठा वर्त्तमान रहल तँ दोसर दिस समाजक जर्जर, घृणित परम्पराक प्रति चोटगर प्रहार सेहो होमऽ लागल।

आधुनिक कथाकाव्यकारलोकनिमे हरिमोहनझा, मधुपजी, सुमनजी, तंत्रनाथझा, यात्रीजी, बैजू मिश्र, व्यासजी एवं अमरजीक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि।

आधुनिक मैथिलीक कथाकाव्यमे पं० श्री चन्द्रनाथमिश्र'अमर'क विशिष्ट अवदान छैन्हि। ई सारस्वत प्रतिभा-सम्पन्न बहुआयामी व्यक्तित्वक मूर्धन्य साहित्यकार छथि। परिमाणक दृष्टिएँ हिनक लगभग दू गाही कथाकाव्य समुपलब्ध भेल अछि–(1) राष्ट्रनिर्माता, (2) बुढ़बाक कका, (3) मैत्री, (4) कंसारमे बी० ए०, (5) पनिभरक डाबा, (6) अरिकौंछक स्वाद, (6) मालपूआ, (8) प्राणक मोह, (9) चाही आइ एहन रघुनन्दन (स्मारिका, मधुबनी), (10) दुइ चित्र (त्रिफला) (11) चुमना धानुक (अप्रकाशित)। एही दू गाही कथाकाव्यक संरचनाक कारणेँ श्रीअमरजी चिरस्मरणीय ओ अजर-अमर रहताह।

अमरजी हास्य-व्यंग्य लिखबाक हेतु मैथिली साहित्यमे सुप्रसिद्ध छथि। हिनक 'राष्ट्र-निर्माता' आर्थिक समस्यामूलक कथाकाव्य थीक। एहिमे निम्नमध्यवर्गीय अल्पवेतनभोगी शिक्षक राष्ट्र निर्माता बनबाक दिवारात्रि स्वप्न देखैत छथि। द्रष्टव्य थीक दुखरनझाक स्थिति–

''बी० ए० कयलनि पास बापसँ छुट्टी पौलनि
पेटक खाधि भरक हित सौंसे चास नपौलनि
शनिक दशासँ उबरक खातिर मन्त्र जपौलनि
दान दक्षिणा दौड़ धूप ओ घूस घासमे
खर्च करक हित पन्द्रह कठ्ठा खेत खपौलनि
तखन बेचारे विद्यालयमे नेशन-बिल्डर पद हथिऔलनि
नेता सभक मुँहेँ सुनलनि जे
''थिकथि राष्ट्र-निर्माता शिक्षक 'नेशन-बिल्डर।''

अन्ततः दुखरनझा पश्चाताप करैत झुख मारैत छथि। हिनक मनःस्थितिक प्रसंग कथाकाव्यकार कहैत छथि–

''करता कोन उपाय, हाय रे पड़लनि डाका
कयलनि बी० ए० पास पबै छथि सत्तरि टाका
सकल-राष्ट्र-निर्मातृ-शक्ति चुल्हामे पैसल
दुखरन रनमे हारि कनइ छथि घरमे बैसल।''

'राष्ट्र-निर्माता' कथाकाव्यक भाषा-शैली रोचक अछि, वर्णनमे प्रवाह एवं हास्यक संग-संग व्यंग्य संश्लिष्ट अछि। एहि कथाकाव्यक कथा प्रभावोत्पादक, शिल्प-शैली बेछप, चरित्र-चित्रण मौलिक, जीवन्त आ रोचक अछि। कथामे आरम्भसँ अन्त धरि जिज्ञासा अनुवर्त्तमान रहैछ।

श्री अमरजीक 'बुढ़बाक कका' 'गुदगुदी' काव्यसंग्रहमे संकलित अछि। एहिमे कथाकाव्यकार वृद्ध-विवाह पर चोटगर व्यंग्य कएलनि अछि। एकरा सामाजिक वैवाहिक दुरवस्था पर आधारित कथाकाव्य मानि सकैत छी। हम एहि कथाकाव्यकेँ 'मीलक पाथर' मानैत छी। एकर शब्दचित्र ओ भाषा-शैलीमे अद्‌भुत प्रवाह अछि, मौलिक कथात्मकता, विशद वर्णनात्मकता, बूढ़ वरक चरित्रांकन, जिज्ञासा वृत्तिक प्रचुरता, रोचक विषयवस्तुक वर्णनसँ संश्लिष्ट अछि अथ च समस्त कथाकाव्यमे हास्य-व्यंग्यक समावेश अछि जाहिसँ पाठकमे विलक्षण हास्यक संचार होइछ।

शुद्धक समय निकट उपस्थित भेला पर वृद्ध (बुढ़बाक कका) विवाहक हेतु आकुल-व्याकुल भऽ जाइत छथि। द्रष्टव्य थीक–

''अन्तर आकुल, बाहर आकुल, आकुल रोमावलि, स्वेदक कण
वन-वन मुख पर, भ्रू पर आकुल।''

'शारदा एक्ट' समुपस्थित भेला पर बूढ़ाकेँ नौ मन पानि पड़ि जाइत छैन्हि, मुदा उचक्का सभ किछु टाका लऽ हिनक विवाह करएबाक प्रबंध करैत अछि। एम्हर वृद्ध सभागाछी जएबाक हेतु सन्नद्ध छथि। तखनुक हिनक मनःस्थिति देखू–

''हम सब जा छी तावत गाछी–
कहि-कहि हकमथि, चञ्चलता छल
बस नाक परक जहिना माछी।।''

मुदा कन्यापक्षसँ नौ सै टाका माँग भेला पर बूढ़ाक उक्ति कतेक व्यंग्यामक, नाटकीयता कतेक चमत्कारक अछि–

''नौ सै लेताह हम छी बताह
आ'की ऐलहुँ अछि गाछीमे
करबालै हम पहिले विवाह।।''

एकर पश्चात् दुहू पक्षक मध्य छत्ता पर छत्ता बरसए लगैछ। अन्ततः उचक्का सभ वृद्धक बटुआ पार कऽ दैछ। वृद्ध गाछीमे बटुआ तकबैत छथि मुदा बटुआ नहि भेटैछ। एहना स्थितिमे वृद्धक मनःस्थिति ओ मुखाकृतिक शब्दचित्र कतेक अनुपम ओ प्रभावोत्पादक अछि से द्रष्टव्य थिक –

''लुलुआयल सन बिधुआयल सन
मुखड़ा छल काँचे बाँसक ओ
चोटकलहा पोर सुखायल सन।''

'पनिभरक डाबा' मे डाबाक आत्मकथा कविवर अमरजी व्यक्त कएलनि अछि। ई कथाकाव्य मधुपजीक 'छुतहर' कविताक स्मरण करा दैछ। एहि मध्य कथाकाव्यकारक कल्पनाशीलता, दार्शनिक विचार, प्रज्ञाक प्रखरता-तीक्ष्णताक अवबोध होइछ। कथाकाव्यकारक शब्दमे 'डाबा'क आत्मपरिचय द्रष्टव्य थीक–

''अछि आत्मकथा मनहरण हमर। जीवनो बनल अछि मरण हमर।
पण्डिते कोड़ि अनलनि हमरा। बस पानि मिला सनलनि हमरा।।
करबह दुर्दशा चाक पर दै, से कनिओं नहि कहलनि हमरा।।''
दिन-दिन दोगुन दुख बढ़ल गेल
कर्मक रेखा नहि पढ़ल गेल...
क्षण भंगुर जग, जीवन दुनू
एतबा धरि अनुभव अछि हमरो....
पर हित साधनमे जौड़ आइ
बनले अछि कंठाभरण हमर.....।।''

'अरिकोंछक स्वाद, कथाकाव्यमे कथात्मकता अछि, जिज्ञासा वृत्ति आ कथाक गतिमे प्रवाह अछि, हास्य-व्यंग्यक पुट अछि, वर्णनात्मकता अछि। कथाकाव्यकार अमरजीक शब्दमे भोजनप्रिय बाबाक भोज्य पदार्थक वर्णन द्रष्टव्य थीक–

''भोजभावमे बहुतो ठाँ सहजहिं बाबा करथि अनर्थ
भरल जवानीमे
सठबैत छलाह पसेरी भरि धरि गूड़
पन्द्रह सोड़ह रोहुक मूड़
छागर सौंसे पनपिआइमे दही विलच्छन बस, दू छाँछ
सात सेर धरि तरले माँछ''

बाबा एतेक सामग्री खएला पर कहैत छथि–

''हुनका हाथक रान्हल बाटल सन भेटल नहि तकरा बाद
मुइलथुन जहिए तोहर बाबी
ऊठि गेल हमरा लेखेँ अरिकोंछक स्वाद।''

'मालपूआ' 'कथाकाव्य' मध्य अमरजी पाठकजी टाईप लोकक मितव्ययिता पर हास्य-व्यंग्यक शब्दचित्र गढ़लनि अछि, जाहिमे कथाकतासँ विशेष वर्णनात्मकता चमत्कारक भेल अछि। पाठकजीक मितव्ययिता ओ हुनक दिनचर्चामे कतेक हास्य-व्यंग्यक छटा अछि–

''से पाठकजी फगुओ दिनमे
रोटी तँ खैबे करता
तेँ पहिने ओ गूड़क संग पानि पीलइ छथि ता'
दुनू टा पेटहिमे मिलि कै बनि जैतनि जा मलपूआ
विजया पीने पाठकजी
गरजइ छथि ''अच्छा हुआ।''

'प्राणक मोह 'कथा-काव्य भिखमंगनी वृद्धाक दिनचर्या पर हास्य-व्यंग्य अछि, जे प्रति दिन भिक्षाटन कऽ अपन गुजर-बसर करैत अछि, एकटा उकट्ठी छौंड़ा खौंझबैत पूछि बैसैत अछि–

''बुढ़िआ! आब भेलैं बड़ बूढ़
तौं मर
हम सब करबउ मिलिकै बढ़िया जकाँ सराध
भोजभाव बड़कीटा करबउ
बड़ी, बड़, सकड़ौरो पापड़
नोति देवउ जयवार समूचा।''

मुदा वृद्धाकैं प्राणक मोह रहैछ आ कहैछ जे जहिया मरबाक लिखल होएत तहिया हम बैसल रहब।

'चाही एहन रघुनन्दन'मे दहेज-प्रथा सन कैंसर रोगसँ समाजकैं विमुक्ति दिअएबाक हेतु युवावर्गक आह्वान आ उद्‌घोष कएल अछि। 'दुई चित्र' कथाकाव्यमे पूँजीपति आ मजदूरवर्गक मनःस्थितिक भेद समुपस्थित कएल गेल अछि।

पं० चन्द्रनाथमिश्र'अमर'क दू गाही कथाकाव्य हिनका कथाकाव्यकारक रूपमे पर्याप्त ख्याति प्रदान करैछ। हिनक कथाकाव्यमे कथातत्त्वक अभाव नहि अछि। हिनक कथाकाव्यसभमे सर्वत्र प्रवाह अछि, जिज्ञासावृत्ति बनले रहैछ एवं जनप्रचलित भाषामे रहलासँ सर्वबोधगम्य अछि। यात्रीजी जकाँ हिनक भाषा कोमल ओ प्रसादगुणयुक्त अछि।

श्री अमरजीक कथाकाव्य सहरजमीनक कथा कहैत अछि। एहिमे समाजक यथार्थ, पाखण्डजर्जरता, सामाजिक कुरीतिक नग्न चित्र भेटैत अछि। हास्य-व्यंग्यक माध्यमेँ कविवर अमरजी समाजक टेटर सभक शल्य-चिकित्सा करैत छथि।

हिनक कथाकाव्य ठेठ भाषामे विरचित रहितहुँ उक्ति-वैचित्र्यक कारणेँ वैदुष्यक परिचय दैत अछि एवं जनमानसमे हिनक रचना रसल-बसल अछि। इएह तत्त्व हिनक रचनाकैं लोकप्रियता प्रदान करैछ। हिनक हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचना हिनका शीर्षस्थानीय बनबैत अछि।

मिथिलाविभूति, शिखर-पुरुष पं० श्री चन्द्रनाथमिश्र'अमर' कर्मयोगी छथि एवं ई 'चरैवेति-चरैवेति'मे आस्था रखनिहार छथि। दू गाही कथाकाव्यक संरचना कऽ ई मैथिली साहित्यमे अमरताकैं सम्प्राप्त छथि। कहलो गेल अछि– 'महाजनो येन गतः सः पन्थाः'। अर्थात् महान व्यक्ति जाहि पथेँ जाथि सएह मार्ग थीक। तेँ अमरजीक व्यक्तित्व वस्तुतः अनुकरणीय अछि।

●

मैथिली साहित्यक ग्रीबाल्डी : श्रीयुत अमरजी

श्रीहरिश्चन्द्र 'हरित'

''अपनेकेँ कोनोटा बीमारी नहि अछि आ तेँ हम अपनेकेँ कोनोटा दवाइ नहि दऽ सकब। अपनेकेँ जे रोग अछि तकर एकमात्र इलाज अछि प्रसिद्ध हास्य-लेखक ग्रीबाल्डीक पोथी पढ़ब। अपने विश्वास करू एहि तरहक कतोक रोगीकेँ हम इएह सलाह देल अछि आ ओलोकनि सर ग्रीबाल्डीक पोथी पढ़ि कऽ आब पूर्ण स्वस्थ छथि आ सुखमय जीवन बिता रहल छथि''।

चिकित्सक महोदयक ई गप्प सूनि रोगी आ परिचारक दूनू विस्मित दृष्टिएँ एक दोसर दिस तकैत पुनः चिकित्सक महोदय दिस तकलनि आ एके बेर जोर-जोर सँ ठहक्का मारि हँसऽ लगलाह। डॉक्टर साहेब क्षुब्ध। हुनका नजरिमे ई लोकनि विचित्र जीव सन बूझि पड़लथिन जे सर ग्रीबाल्डीक नामे सुनिकऽ बताह छलाह थ। पाछाँ जखन डॉक्टरकेँ जनतब भेलनि जे ई मरीज स्वयं ग्रीबाल्डी छथि तेँ हुनकहुँ हाल देखबाक योग्य छल।

वस्तुतः पश्चिममे अपन हास्य-व्यंग्यक रचनाविधामें जे स्थान सर ग्रीबाल्डी बना गेल छथि, समकालीन भारतीय साहित्यक निर्माणमे सएह स्थान प्रो० हरिमोहनबाबू आ पं० चन्द्रनाथमिश्र'अमर'केँ छनि। प्रो० झा सामाजिक जड़ता, कुरीति, अंधविश्वास ओ अनर्गल तिरहुतामक तितम्हाक अन्हरजालीकेँ अपन हास्य-व्यंग्यक तीक्ष्ण ओ सटीक प्रहारसँ फाड़ि लोककेँ फड़िच्छ सोच देलनि, युगक संग डेगसँडेग मिला चलबाक अबगति देलनि, तकरा हुनकहि समय सँ अद्यपर्यन्त पुष्ट आ समृद्ध करबाक श्रेय जाहि एकमात्र व्यक्तिकेँ देल जा सकैछ से छथि – हास्यरसावतार मैथिली साहित्यक शिखर-पुरुष, साहित्य-अकादमी सँ दू-दू बेर पुरस्कृत-सम्मानित व्यक्तित्व आदरणीय पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'।

कोनहुँ सभा हो, गोष्ठी हो, कवि-सम्मेलन हो, अमरजीक उपस्थिति अपन खास महत्त्व रखैछ जकर समंजनक विकल्पक कल्पना हुनका छोड़िकेँ नहि कएल जा सकैछ। केहनो गंभीर विषय पर चर्चा-परिचर्चाक जटिल स्थिति-परिस्थिति हो कि भरि दिनुका थाकनि झमारल श्रान्त-क्लान्त मोन देह हो आ कि कोनोँ अनाहूत समस्याक आकस्मिक आगमन जबदाह वेश-परिवेश हो, एकसरे अमरजी अपन हास्य-रसक मधुमय फुहारसँ इजोरियाक शीतल-स्निग्ध बयार बहा देवामे सक्षम छथि।

माछक अँचार आ दहीक चटनी

सौराठमे कवि-सम्मेलन आयोजित छल-प्रसिद्ध एडवोकेट हीरा-बाबूक आवास पर दरभंगासँ आएल कवि-लोकनिक विश्रामक व्यवस्था छल। भोजनोपरान्त हीरा बाबूक संग अमरजी, विद्याधरजी, अमलेन्दु, अनीताजी आ हम हुनकहिँ गाड़ीसँ विश्रामक हेतु विदा भेलहुँ। भीम-बाबू आ रमणजी-विनोदजीक संग धऽ लेलनि। सौराठसँ निकलिते अमरजी हीरा-बाबू सँ कवि-सम्मेलनक प्रसंग पुछलथिन-केहन रहल। हीरा बाबू, प्रमुदित मोने एक-एक कविक प्रशंसाक पुल बान्हऽ लगलाह। अमरजीक तँ सहजहिँ। तत्पश्चात् हीरा बाबू भोजनक प्रसंग अमरजीसँ जिज्ञासा कय लनि-केहन रहल। अमरजी बजलाह-''जुनि पूछू। भोजनक विन्यास तँ अवर्णनीय छल। आन-आन सामग्रीक तँ जे से, माछक अँचार आ दहीक चटनी तँ बुझू जे हद्द छल। एहन ने कहियो देखल ने सुनल''। एतबा सुनिते गाड़ीमे बैसल हमरालोकनिक जे अवस्था भेल से की कहू ? लागल जेना सबटा खेलहा एखने ने निकलि जाए मार्ग बदलि कऽ। वास्तवमे भोजनमे चाहक चम्मचसँ दही आ पड़ोरक भुजिया सन माछक कुट्टी परसल गेल छल।

चारिमक नाम सूटकेस

घटना समस्तीपुर जिलाक नीरपुर-मुजौना गामक थीक। चाह जलखैक उपरान्त हमरालोकनि रस्ताक झमार उतारऽ लेल ऋचालोक (अमलेन्दुजीक दलान)मे पसरि गेल छलहुँ। दुर्गा-मंदिरक परिसरमे कार्यक्रम आयोजित छल जे प्रारंभ होयबाक सूर-सारमे छल। एकटा सूट-बूट धारी आकर्षक व्यक्तित्वक युवककेँ हमरा सभकेँ उचित समय पर मंच पर आनऽक हेतु प्रतिनियोजित कएल गेल छल। ओ युवक अपन परिवार आ पूर्वजक महिमा-मंडित गरिमाकेँ प्रभावशाली ढंगसँ हमरा सभक समक्ष पसारब शुरू कएलनि। कनियेँ कालक बाद सभक मोन उबिया गेल। हमरा लोकनि सुरेश्वर बाबू, चन्द्रभानुजी, रमणजी, आ प्रवीणजी सहित सभगोटे एहि स्थितिसँ त्राण हेतु अमरजीसँ मूक निवेदन कएल। ओहो एकरे प्रतीक्षामे जेना छलाह। पुछलथिन युवकसँ-अपनेक नाम की भेल? युवक सोत्साहित कहलनि-हमर नाम व्योमकेश, जेठ भाइ ऋषीकेश, तेसर भाई गुडाकेश आ चारिम...। ता अमरजी बिच्चेमे लोकैत कहलथिन – चारिम-पाँचमक नाम हमहीं कहि दैत छी। सभ अकचकाएल। अमरजी कहलथिन – कहू ? चारिम नाम सूटकेस, पाँचम ब्रीफकेस। ई सुनिते हम सब भभाकऽ हँसि पड़लहुँ आ युवकक जे हाल भेल से की कहू। हमरा सबकेँ अपनेसँ पूछि-पूछि मंच तक जाए पड़ल।

अर्थे बदलि जाइछ

स्वदेशक निआर सँ लय एखन धरि अनवरत रूपेँ चलैत ''स्वदेश-गोष्ठी''क आकर्षण बनल अमरजी एक दिन अबिते कहलथिन –''बुझबे औ भीमबाबू'' हम सब साकांक्ष भेलहुँ जे फुलझड़ी छुटबाक बेर आबि गेलैक। भीमबाबू कहलथिन – जी! अमरजी गप्पक तारकेँ जोड़लनि – आइ विभूतिजी (अमरजीक पौत्र) पुछलनि – ''बाबा यौ ! मामामे जी लगा दियौक तँ मामाजी, काकामे जी लगबियौक तँ काकाजी, मुदा बाबामे जी लगा देला सँ तँ अर्थे बदलि जाइत छैक बाबाजी आ ओई दिनक गोष्ठी शुरूहेसँ ठहकैत रहल।

मङनू खएता मारि

ओहि दिन हमरालोकनि अमरजी, भीमबाबू आ हम सोझे सुरेश्वर बाबूक ओहिठाम पहुँचलहुँ। पहुँचितहि चाहक आग्रहकेँ कटैत भीमबाबू कहलथिन-आहि, भरि दिन की चाहे पिबैत रहू? सुरेश्वर बाबू कहलथिन–जे–बेस. तखन किछु हल्लुके सही, जलखैए करा दैत छी। भीमबाबू कटलनि– जखन जलखै करबे करब तँ हलुके किए भारी किए नहि ? हँसिते बजला महामहिम जे की जलखै करब? उत्तर देलक मङनू – दही चूड़ा करा दियैन ? महामहिम डँटलनि? दही कहाँ सँ अनबैं ? अमरजी कहलथिन – से ओकरा पर छाँड़ि दियौक। आ से सत्ते मङनू प्रफुल्ल मोने परसि –परसिकऽ दूनू गोटेकेँ दही-चूड़ा जलखै करा देलक। ई बात फराक जे अपन नियमित कोटाक दहीकेँ एना परसल जाइत देखिकऽ गुम्हड़ैत महामहिमक आँखिकेँ अप्रत्यक्ष रूप सँ अमरजी लक्ष्य कऽ चुकल छलाह। ओतऽ स्वदेश-गोष्ठी अयबाक क्रम मे अशोकजी गम-गम करैत हाथ-मुँहक संदर्भ जिज्ञासा कयलनि। हमरालोकनिक ठोर पर सहज मुस्की आबि गेल, ता अमरजी सभटा वृत्तान्त कहैत कहलथिन ''हम सब खयलहुं चूड़ा-दही, मङनू खएता मारि''। फेर की छल, ओहिदिन बूझू ठहक्का मारिते हम सब गोष्ठीमे पहुँचलहुँ।

ई पे पर पढ़बैत छथि

मधुबनीक एकटा कओलेजक प्राध्यापक बेर-बेर भीमबाबूक ओतऽ कोनो ने कोनो छात्रकेँ कोनो ने कोनो पेपरक नोट्स लेल (भीमबाबूक असमर्थता प्रकट कएलाक बाद) पठबैत रहैत छलथिन। भीमबाबू अपन गऽरू स्थिति सँ स्वदेश गोष्ठीकेँ परिचित करा चुकल रहथि। एक दिन एहन संयोग भेल जे ओ महानुभाव, भीमबाबूक पुछारि करैत मैथिली-मंदिर धरि पहुँचि गेलाह। प्रणाम-पातीक औपचारिकताक बाद अशोकजी पूछि बैसलथिन-अपने कोन पेपर

पढ़बैत छियैक ? हुनका असमंजसमे पड़ल देखि अमरजी बाजि उठलाह – ''ई कोन पेपर पढ़ौथिन ? ईतँ पे (Pay) पर पढ़बैत छथिन'', फेर की छल ठहक्का सँ गोष्ठी गनगना उठल।

मुसरी घड़ारीआ बिलड़ा-बथान

एक बेर धनबादक कवि-सम्मेलन सँ घुरैत रहथि। बरौनीमे एकगोट सूटेडबूटेड युवक मणिपद्मजीकेँ अपन सीट पर ओलड़ल देखि कहलकनि – ''यदि आप ठीक से बैठ जाते तो मुझे भी जगह मिल जाती''। सीट आरक्षित छल आ युवकक कथन मे ठेसी। अमरजी पूछि बैसलथिन-कतऽ जाएब ? युवक बाजल – मैं ? ''हाँ! हाँ !! अहीकेँ पुछैत छी''। अमरजी कहलनि। युवक आरो कर्कशताक संग बाजल – ''मैं ऽऽ ? मैं जाऊँगा मुसरी घाड़ारी।'' और आप कहाँ जाएँगे ? अमरजी ओकरे शैलीक पुनरावृत्तिमे पुछलथिन – ''हऽम ?'' युवक बाजल – ''हाँ ! हाँ !! आप ही को तो पूछ रहे हैं।'' अमरजी अपन हास-परिहासक चिर-परिचित स्वरकेँ कने तनैत कहलथिन– ''हे ऽऽऽ। अहाँ जाएब मुसरी-घड़ारी तँ हम जाएब बिलड़ा-ऽ-बथाऽन''। आब युवकक मुँह देखऽ जोगछल कारण पूरा डिब्बा ठहक्कासँ गनगना उठल छल।

तहिया अमरजी अमलजी छलाह

एकबेर कमतौल सँ ट्रेन सँ घुरैत छलाह। सोझाँक सीट पर एकटा युवक टाँग पसारि सिकरेट धुकैत छल। हिनकालोकनिक अनुनय-विनयकेँ साफ नकारि छल्ला उड़बैत युवककेँ देखि अमरजी टिपलनि – ''देखियौक यौ! केहन अजगुत छै ? केहन – केहन नमछोर, गोल-गोल धूआँ बहार करैत छथिन''। अबधबिहारी बाबू आ द्वारिका (महासेठ) बाबू हुलसिकऽ बजलाह – 'तऽऽ ! इहो साधनाक प्रताप थिक''। युवक फूलि उठलाह आ चट पाँजर लग हिनका सबकेँ बैसाए लेलथिन। गाड़ी ससरल तँ अमरजीक आग्रह भेलनि – ''कने इंजन जकाँ धूआँ छोड़ियौक तँ''। युवक तुरत नाक दऽ धूआँ फेकऽ लगलाह। अमरजी थपड़ी बजबैत कहलनि – वाह ! वाह !! तखन आब मोटर जकाँ धूआँ बाहर करियौक तँ। युवक फेर मुह सँ धूआँ उगिलस लगलाह। मुदा एहि बेर अमलजी मन्हुएल स्वरमे बजलाह – ''उहूँऽऽऽ कहाँ भेल ? मोटर तँ पाछाँ दए धूआँ फेकैत अछि''। आ डिब्बाक सबगोटे भभाकऽ हँसि पड़लाह।

बापेक लाउ

कवि-सम्मेलनक बिच्चहिमे बिजली गुम भेलासँ श्रोतामध्य कोलाहल बढ़ल। सभापति अमरजी सँ मंच सम्हारबाक आग्रह कएलथिन। अमरजी ठाढ़ छलाह तँ माइकक वाक् बन्द। कोलाहल बढ़िते गेल। अमरजी - दू-तीन बेर पुछलथिन – की भेल ? उत्तर भेटलनि – ''माइके खराब अछि''। अमरजीक उत्तर छल – ''माइके खराब अछि तँ बापेक लाउ''। आ ओहि अन्हारेमे ठहक्का लगबैत जनसमूह बान्हल रहि गेल।

किछु अमरजीक मुहेँ सुन्दरकाण्डक मुखपृष्ठ :

कोनो कवि-सम्मेलनक मंचपर बैसल सोमदेवजी रहि-रहिकऽ हाफी कऽ रहल छलाह। बेर-बेर मुँह बबैत देखि कऽ कहलथिन – ''हाफी करैत कालक फोटो जँ गीताप्रेसकेँ पठा दिऐक तँ सुन्दरकांडक मुखपृष्ठ पर अवश्य छापि देत''।

वर-कनिएँ

हिनक मुहेँ सुनल एक बेर कोनो बरियातीमे पं० त्रिलोकनाथमिश्रकेँ भोजन करैत काल बारिक बेर-बेर पुछि बैसथि– ''पंडितजी बर लेबैक''? पंडितजी हुनकर व्यंग्यकेँ लक्ष्य करैत मुह दिस ताकि कहलथिन ''जखन एतेक आग्रह करैत छी तँ कनिएँ दऽ दियऽ''।

कनियां नहि नोसि

एक दिन पं० त्रिलोकनाथ मिश्र आवेशसँ बैसबैत गप्पक क्रममे नोसिदानीसँ नोसि झाड़ि हमरा सभ दिस (संगे शेखरजी छलाह) ताकि पुछलनि-चाही ? शेखरजी कहलथिन – ''कनियेँ दऽ देल जाओ।'

पंडितजी कहलथिन – ''ई नोसिदानी थीक। ओ कोनो कन्यादानी सँ माङि लेब''। शेखरजी लजा गेलाह।

हम कि कोनो ढोल छी?

दरभंगा मे 'कन्यादान' सिनेमा चलैत छलैक। ओही बीच अमरजी संस्कृत विद्यालय पर पहुँचलाह। किछु गोटे लालककाकेँ देखने छलमुदा अमरजीकेँ नहि। एक गोटे प्रेस रिपोर्टर जकाँ पुछलकनि– ''जँ फेर कोनो सिनेमा बनतै तँ फेरो अहाँकें बजाओत''? अमरजी पानकेँ एहिकल्ला सँ ओहि कल्ला धरि टहलबैत बजलाह – ''से कि कोनों हम ढोल छी जे हमरा बजाओत''?

मिथिलेटेड

एहि अंतिम मे हरिमोहन बाबू आ अमरजी संगहि

''मैथिलीक आयोजकलोकनि प्रारंभमे बड़ उत्साह देखबैत छथि मुदा बादमे हुनकालोकनिक उत्साह स्प्रीट जकाँ उड़ि जाइत छनि'' अमरजीक एहि टिप्पणी पर हरिमोहन बाबू कहलथिन – ''आहि रे वा तें ने स्प्रीटकेँ मैथिलेटेड वा मिथिलेटेड कहल जाइत छैक। यदि से नहि तँ मद्रासिएटेड, पंजाबिएटेड सएह कहबैत ने''?

मैथिली उपन्यासमे वैवाहिक समस्या : सन्दर्भ 'विदागरी'

डॉ०रमानन्दझा'रमण'

'विदागरी'क आमुखमे उपन्यासकार चन्द्रनाथमिश्र'अमर' लिखल अछि जे मैथिली उपन्यास साहित्यमे मुख्य रूपें जाहि वैवाहिक समस्याकेँ आदरणीय श्रीहरिमोहनझा 'कन्यादान' मे उठौलनि, प्रायः जतेक उपन्यास प्रकाशित होइत गेल, ओहि समस्याकेँ कथावस्तुक रूपमे उपस्थित करबाक चेष्टा उपन्यासकारलोकनि करैत अएलाह अछि।

'कन्यादान' एवं 'द्विरागमन'सँ प्रेरित प्रभावित-भए अमरजी 'विदागरी' लिखल अछि, एहिमे किंचितो सन्देह नहि अछि। मुदा मैथिली उपन्यासमे वैवाहिक समस्या प्रो० हरिमोहनझा सँ शुरु भेल सर्वथा अनैतिहासिक तथा भ्रान्तिपूर्ण अछि। गत किछु वर्षमे 'कन्यादान'सँ पूर्वहि प्रकाशित मैथिलीक कतेको उपन्यास आजुक पाठकक समक्ष आएल अछि। ओकर विवेचन भेल अछि। मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे भेल अनुसंधान आ विवेचन अमरजीक धारणा केँ निर्मूल करैत अछि।

प्रारम्भमे उपन्यास शब्द विधावाची नहि छल। कथा एवं उपन्यासक बीच स्पष्ट विभाजक-रेखा नहि छलैक। एहि हेतु उपन्यास शब्द जोड़ल रहबाक कारणेँ तुलापति सिंहक 'मदनराज चरित उपन्यास' बहुतो दिन धरि उपन्यासमे परिगणित होइत रहल। पुलकित मिश्र 'मोहिनी मोहन (1906) छापल। ओकरहु डा. रामदेवझा कथा विकासक चर्चक क्रममे कथा ('मैथिलीक आद्यकथा' शीर्षक लेख) तथा उपन्यास विकासक क्रममे उपन्यास (जनार्दनझा 'जनसीदन') सिद्ध करैत छथि। आरम्भिक उपन्यासकेँ उपन्यासक आधुनिक मानदण्डक अनुसार देखला पर झंझटिक पूर्ण सम्भावना छैक। ओना कथा तथा उपन्यासकेँ रासबिहारी लाल दास बहुत पहिने फुटौने छथि। विशेषतः उपन्यास की थिक ? ओकर वर्णन केहन होएबाक चाही, उपन्यासक प्रयोजन की छैक आदि पर प्रकाश देने छथि। ओ लिखैत छथि 'समाजरूपी फोनोग्राफक रेकर्ड, समाजरूपी फोटो कैमराक लेन्स, समाजगत चरित्र-प्रदर्शनीक पासपोर्ट अथवा गाइड, समाज चरित्रक चित्राधार अर्थात् अलबम, समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आचार उपन्यासे थिक।' (भूमिका 'सुमति', 1918 इ.) एहि अनुसारँ जीवनक विभिन्न स्थितिक वर्णनक उपयुक्त विधा उपन्यास थिक। उपन्यासक प्रयोजन भेल समाज-सुधार। लोककेँ दुर्गुणविहीन बनाएब। व्यक्ति अथवा स्थितिक एहन वर्णन, जाहिसँ व्यक्ति आ समाजक सुधारक हेतु प्रेरणा भेटैक।

साहित्यक प्रयोजन की ? साहित्यशास्त्रीलोकनि अदौसँ घमर्थन करैत अएलाह अछि। व्यक्तिक एहन चरित्रांकन अथवा स्थितिक एहन चित्रण जाहिसँ सुधारक प्रेरणा भेटैक 'शिवेतरक्षतये' थिक। उनैसम शताब्दीक अन्तिम पहर धरि मिथिलाक सामाजिक स्थिति जागरणक अनुकूल तँ भए गेल छल, परंच कलमलाएल नहि छलैक। देशक अन्य क्षेत्रक सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्त्ताक मिथिलामे अबरजात बढ़ल। देशक अन्य क्षेत्रमे जीवकोपार्जनक हेतु गेल पण्डितलोकनि गाम घुमलाह तँ अपनहुँ ओहिठाम सुधारक हेतु प्रयलशील भेलाह। देशाटनक क्रममे सेहो किछु अनुभव भेलनि। एहि सभक प्रभाव मिथिलाक शिक्षित समाज पर पड़ल। जागरण आएल। सुधारक निमित्त सामाजिक संस्थाक संघटन भेल। पत्र-पत्रिका छपय लागल। ओकर माध्यमे कुरीति, अंधविश्वास, आडम्बर, बहु-विवाह, अनमेल विवाह आदिक आलोचन शुरू भेल। समाजमे नारीक स्थान, नारीशिक्षा, नारीक असहायता आदि विषयक दिस लोकक ध्यान आकृष्ट भेलैक।

मिथिलाक समाज कोला-कोलामे विभक्त छल। प्रत्येक कोलाक बीच उँचगर आरि-धूर छलैक। खत्ता छलैक। समाज अनेक प्रकारक दुर्गुणसँ ग्रस्त छल। आकण्ठ डूबल छल। प्रत्येक वर्ष रौदी-दाही होइत छलैक। प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक विपदाक चपेटमे पड़ि उजड़ैत-उपटैत छल। रोग-शोक तथा अभावग्रस्त रहि कोनहुना जीवन खेपैत छल।

व्याप्त अशिक्षा, निर्धनता एवं जातिगत अभिमानमे समाजक प्रगतिचक्र फँसल छलैक। मिथिलाक सामाजिक स्थिति, एवं सुधारवादी आन्दोलन मैथिलीक संवेदनशील रचनाकारकेँ ओहि दिशामे लिखबा लेल प्रेरित कएलक। ओहि प्रेरणाक अभिव्यक्ति मोटामोटी दू दिशामे भेल। गोत्र वा वर्णचेतना सम्पन्न रचनाकार समाजमे व्याप्त वैवाहिक समस्याकेँ महत्त्वपूर्ण मानल। अनमेल विवाह, बहुविवाह, पाँजि-पाटि, नारीशिक्षा, सासु द्वारा पुतहुक प्रतारण, विधवाक समस्या या समाजमे स्थान, विवाहमे फजूल खर्च-वर्च, भोज-भात, आदिकेँ प्राथमिकता देल। भूख, अभाव, शोषण, अत्याचार घूसपेंच, धार्मिक अंधविश्वास, राष्ट्रीय स्वाधीनता-जन्य समस्या आदि विषयकेँ अपन उपन्यासक विषय-वस्तुसँ फराके राकल। किन्तु, जाहि रचनाकारक समक्ष भूखेँ आँट नेनाक कारुणिक दृश्य नचैत छल, अभावग्रस्त परिवार बिलखैत छल, धार्मिक अंधविश्वासमे घरक घर विलटैत छल, समाजमे वैवाहिक समस्या देखितहुँ, ओकर दुष्परिणाम बुझितहुँ अपन उपन्यासक विषय नहि बनाए ओही समस्याकेँ धएल। पहिल वर्गक उपन्यासमे प्रमुख अछि 'निदेयी सासु', 'सुमति', 'पुनर्विवाह', 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'सुशीला', 'भलमानुस' आदि। 'विदागरी' एही परम्परा आ मानसिकताक उपन्यास थिक। दोसर वर्गक उपन्यासमे प्रमुख अछि 'रामेश्वर', 'चन्द्रग्रहण' आदि।

'मोहिनी मोहन'क समस्या वैवाहिक होइतो परवर्ती उपन्यास जकाँ विकराल नहि अछि। जे कोनो समस्या अछि विवाहसँ पूर्वक। आ सेहो कतेकोठाम अलौकिकतासँ भरल।

'मिथिलादर्पण' (पुण्यानन्द झा, 1914/1925) केँ कोनो एक खऽलमे नहि राखल जा सकैछ। समस्या वैवाहिक होइतो वैवाहिकेटा नहि अछि। समाज सेवाक महत्त्व अछि, स्त्री-शिक्षाक महत्त्व अछि, मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक उत्थान तथा सांस्कृतिक गरिमाक रक्षाक चिन्ता अछि, आ सबसँ बढ़ि भारतवर्षक पराधीनताक चिन्ता अछि। 'मिथिला दर्पण'क नायक योगानन्द झा अनुभव करैत अछि– (1) मिथिलाकेँ के पूछय, समस्त भारतवर्ष कोनो देशक गणनामे नहि अछि। भारतवासीकेँ लोक भेड़ी बकरीसँ उपमा दैत छैक। भारतवासीकेँ लोक गुलामक पदवी दए रखलक अछि'। (पृ. 128) (ii) 'सम्प्रति भारतमे तीन कोटिक लोक अछि; अधिक भेड़िये बकरी। एक गोट हिन्दुस्तानी फ्रांस गेल छल। से कुली पर्यन्त ओकर मोटरी नहि उठाबैक। कहैक जे अहाँलोकनि गुलाम देशक लोक थिकहुँ।' (पृ. 170) आदि। ई उद्धरण 'मिथिलादर्पण'क व्याप्तिक उदाहरणस्वरूप अछि।

वैवाहिक समस्याक अन्तर्गत अनेक समस्या अबैत अछि। परंच पहिल अछि पाँजिक रक्षाक चिन्ता। वरगुण अथवा कन्यागुणक अपेक्षा पाँजिकेँ सर्वोच्च स्थान देब। प्रथम सामाजिक अथवा पारिवारिक दायित्त्व पालन इएह भए गेल। बहुविवाह, अनमेल विवाह अथवा विधवासमस्याक मूल कारण पाँजिरक्षाक चिन्ते थिक। ई चिन्ता जेना, जेना बढ़ैत गेल, एकर कोखिसँ जनमल समस्या क्रमशः गंभीर होइत गेल। समाजक ई समस्या मैथिलीक उपन्यासकार लोकनिकेँ आकृष्ट कएलक। ओकर विकास रेखा प्रस्तुत अछिः–

(क) 'एक पुरौताक अचलझा नामक घटक आएल छलाह से बाबूकेँ कहैत रहथिन्ह, जे जनिबाड़क बबुआझाक परिचय नहि नीक छैन्ह, तखन जे ई कार्य करब से परम अनुचित थिक (मोहिनी मोहन)। एहिठाम घटक पाँजिक महत्त्व बुझबैत छथि। किन्तु वरक बाप घटकक एहि विचार पर कानबात नहि दैत छथि।

(ख) हरिसिंहदेवी कतय लेने फिरै छी, कन्या जाहिसँ सुखमे रहय से कर्त्तव्य थिक (निर्दयी सासु)

(ग) 'वर व्यक्ति गुणो वेश छथि, तखन जाति किछ न्यून तँ आब की हो।' (मिथिलादर्पण)

(घ) 'पहिने मानि लियऽ चलै छल महादेवझा पाँजि, श्रीकान्तझा पाँजि, आब चलैत अछि मानि लियऽ डिप्टी पाँजि, वकील पांजि, मास्टर पांजि' (कन्यादान)

(ङ) आबतँ महादेवझासँ बेसी धनझा आ धनझाझँ बेसी विद्याझाक महत्त्व। तखन जँ पाँजिओ पाटिक लोक

होथि तँ आरो सोनामे सुगन्धि हो।' (विदागरी)

उपर्युक्त विकासरेखासँ स्पष्ट अछि जे 'विदागरीक पूर्वक उपन्यासमे पाँजिक महत्त्व गौण अछि। ओकर स्पष्टतः विरोध कएल गेल अछि। मुदा विदागरीमे पाँजिक स्पष्ट विरोध नहि अछि। एहि बिन्दु पर प्रगतिशीलताक अभाव खटकैत अछि। 'तखन जँ पाँजिओ पाटिक लोक होथि तँ आरो सोनामे सुगन्ध; लेखकीय द्विविधेकेँ प्रकट करैछ।

वैवाहिक समस्यामूलक उपन्यासमे दू प्रकारक नारीपात्र अछि। एक साक्षर आ दोसर निरक्षर। कन्यालोकनि सामान्यतः साक्षर छथि। पढ़बा, लिखबाक सतत् आकांक्षा छनि। बूढ़, पुरान सामान्यतः निरक्षर छथि। लोककेँ पढ़ैत लिखैत देखि खौझाइत छथि। मोहिनी ('मोहिनी मोहन') साक्षर अछि। पूर्वरागक स्थितिमे मोहनकेँ पत्र लिखि अपन मनक भाव प्रेषित कए दैत अछि। शारदा (निर्दयीसासु) पढ़लि-लिखलि अछि। रामायण बाँचि लैत अछि। परंच, पढ़ब, लिखब शारदाक सासुकेँ पसीन नहि छनि। शंका करैत छथि। सुमति 'सुमति'; 1918) निरक्षर नहि अछि। पढ़बामे रुचि छैक। योगमाया ('मिथिला दर्पण') साक्षर अछि। अपन सखि-बहिनोकेँ सिखबैत अछि प्रेरित करैत अछि। उपन्यासक नायकवर्ग निरक्षर कन्यासँ विवाह नहि करय चाहैत छथि। युवा वर्गक आदर्श अन्य जातिक विदुषी कन्यालोकनि होइत छथि।

स्त्री शिक्षाक प्रसंग मैथिली उपन्यासक नायकक विचार दू कोटिक अछि। एक कोटिक नवयुवककेँ मिथिलाक नारीसमाजक शिक्षाक यथार्थक बोध छनि। केवल देखौंस नहि विवेकक आधार पर निर्णय करैत छथि। योगानन्द झा ('मिथिला दर्पण') क समक्ष अन्यजातिक विदुषी कन्याक आदर्श अवश्य छनि किन्तु मिथिलाक वास्तविक स्थितिसँ अपरिचित नहि छथि। ओ चिन्तना करैत छथि – 'आइकाल्हि भारतक दशा हीन भए गेल अछि। जाति व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, रीति भाँति सब बिगड़ल अछि। एहि समय थोड़ेक थोड़ेक नहि सहने, हो कोनाकेँ? सर्वांग उन्नति एक दिनुक कार्य नहि थिक। एखन तँ क्रम-क्रम उद्योग कैने, तखन उन्नति होएत। विदुषी कन्या की कतहुसँ खसै छैक? बनौनहि बनै छैक। स्त्री-शिक्षाक प्रणाली एखन भारतमे आरम्भे भेल अछि। उचित थिक जे विवाह करी। एखन पढ़ैबेहुक समय अछि।' (मिथिला दर्पण)।

योगानन्द झा (मिथिला दर्पण) जकाँ सी.सी. मिश्र (कन्यादान) सेहो बनारसमे पढ़ैत छथि। ओ परमविदुषी, सर्व ललितकला निपुण एवं विश्वक अद्यतन राजनीतिक गतिविधिसँ पूर्णतः परिचित, प्रगल्भा पत्नीक कल्पनाक संग विवाहक हेतु प्रस्थान करैत छथि। परंच, चतुर्थीक राति बुच्ची दाइसँ अपन एकहु प्रश्नक उत्तर नहि पाबि भग्नमनोरथ चण्डीचरण मिश्र पत्र लिखि रातिएमे पड़ा जाइत छथि। ओ पत्रमे लिखैत छथि – 'जिस अभागिनी लड़की के साथ मेरा वैवाहिक नाटक किया गया है, उसको कह दीजिएगा कि वह अपने को कुमारी ही समझे और अब से भी शिक्षित बनने की चेष्टा करे। जिस दिन वह अपने को मेरे योग्य बना सकेगी उसी दिन उसके साथ मेरा सच्चा विवाह होगा। यदि वह ऐसा करने मे असमर्थ हो तो उसे उसी के अनुरूप किसी वर के हाथ सौंप दीजिएगा।' नारी शिक्षा जन्य समस्याक प्रति योगानन्दझा (मिथिला दर्पण) तथा चण्डीचरण मिश्र (कन्यादान) मे स्पष्ट अन्तर अछि / जे अन्ततः उपन्यासकार पुष्यानन्दझा आ हरिमोहनझाक लेखकीय दृष्टि थिक।

बुच्चीदाइ (कन्यादान) निरक्षर छथि। विवाहक दिन फुलमतियाक संगे कागदोस खेलाइत छथि। हुनक पिता साक्षर करबाक कोनो चेष्टा नहि करैत छथिन। बुच्चीदाइक निरक्षरता चण्डीचरण मिश्रक भग्नमनोरथक मूल कारण थिक। अमरजीक आदर्श अछि हरिमोहनझाक 'कन्यादन' आ 'द्विरागमन'। ओ 'निर्दयीसासु', 'सुमति', 'मिथिला दर्पण', 'पुनर्विवाह' आदिक साक्षर कन्याकेँ अपन आदर्श नहि बनाय कन्यादानक निरक्षर बुच्चीदाइ केँ 'विदागरी'क आदर्श बनाओल। द्विरागमनक बुच्चीदाइ सेहो हुनक आदर्श नहि भए सकैत छलथिन। तेँ बुच्चीदाइ जकाँ छाया (विदागरी) सेहो निरक्षर अछि। मुदा बुच्चीदाइ आ छायाक व्यक्तित्वमे अन्तर अछि। बुच्चीदाइ पतिक प्रत्येक प्रश्नक

उत्तर अपन चुप्पीसँ दैछ। परंच, छाया एकटा पकठोसल नेना जकाँ पत्र पढ़बाक पतिक आदेश पर कहैत अछि 'से की हम बंगालिन छी जे चिट्ठीपत्री लिखब-पढ़ब।' अशिक्षित कन्यासँ विवाह नहि करबाक पक्ष पर मुनचुनक जिज्ञासा पर छाया पूर्ण सहजताक संग उत्तर दैन अछि – हमरा गाममे मौगीसब नहि लिखैत छैक। ओकरा की मास्टरनी बनबाक छैक कि डाक्टरनी?' ठकल गेल मुनचुन छायाकेँ निर्दोष मानैत अछि एवं समाजकेँ दोषी। जखन कि सी.सी. मिश्र बुच्चीदाइकेँ दोषी मानैत छथि।

बड़कागामवाली (कन्यादान) सी.सी. मिश्रक मनोरथकेँ आकाश ठेका दैत छथिन। यथार्थक बोध नहि होअय दैत छथिन। परंच लुक्खीदाइ (विदागरी) अपन कौशल आ बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहारसँ मुनचुनक क्रोधकेँ कम कए दैत छथि। ओकर अनुनय-विनय पर मुनचुन विचार करैत अछि - 'ई लिखल पढ़ल छथि। आब यैह चेष्टा करथु जे बहिनपाकेँ पढ़ा देयुन्ह। हम हिनका वचन दैत छिऐनि जे जतबा हम जनैत छी, ततबा बहिनपोकेँ सिखा देबैक। ताहिसँ वेशी जिनगी भरि तँ हिनका सङ्ग रहतनि, जेहन चाहताह, तेहन बना लेताह।' प्रो० हरिमोहनझा आ चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क दृष्टिक अन्तरक ई उदाहरण थिक। मुनचुन (विदागरी) (योगानन्दझा) मिथिला दर्पण जकाँ विवेकशील भए मिथिलाक सामाजिक स्थितिक बोध करबैत अछि।

बुच्चीदाइक आन्तरिक व्यथा नोर बाटे बाहर होइत अछि। परंच छाया अपन अशिक्षाक कारणकेँ स्पष्ट करैत अछि। छाया बुझनुक अछि। मनेमन निर्णय करैत अछि। अपनाकेँ वचनबद्ध कए लैत अछि–'हम छौ मासमे अहाँकेँ पत्र नहि लिखी तँ जिनगी भरि अहाँ, हमर मुँह नहि देखब।' ई छायाक आत्मविश्वासक परिचायक थिक।

चण्डीचरण मिश्र तथा मुनचुन दूनू सासुरसँ विना विदा कयने विदा भए जाइत छथि। चण्डीचरण मिश्रतँ पड़ा जाइत छथि। मुदा काज भिन्न अछि। सी.सी. मिश्र, पड़ेबाक कारण थिक पत्नीक अशिक्षा। हुनकामे धैर्यक अभावहु अछि। 'कन्यादान'क अन्त 'एकर उत्तरदायी के?' बुच्चीदाइ लेल नहि समाज लेल अछि। समाज अपन दायित्त्वक पालन नहि कएलक, स्त्री शिक्षाक महत्व नहि देलक, ओहि दिस संकेत करैत अछि। मुदा सभटा दोष थिक बुच्चीदाइक। परंच, मुनचुनक दृष्टिमे छाया निर्दोष अछि। सभ दोष थिक ओकर पिता लीलाधरक। एहि बीच मुनचुनक आँखि सेहो उठि जाइत छनि। ससुरक अमर्यादित व्यवहार आ नेत्ररोगक कारणेँ ओ सासुरसँ चल अबैत छथि बिना दिनक। उपन्यासकारक अभीष्ट इहो संकेतित करब रहल होएतनि जे पाश्चात्य रंगमे रंगल आ पाश्चात्य शिक्षाप्रणालीसँ शिक्षित नवयुवक सी.सी. मिश्रक अपेक्षेँ भारतीय शिक्षा प्रणालीमे शिक्षित नवयुवक (मुनचुन) विशेष बुझनुक, धैर्यवान आ विवेकशील होइत अछि। योगानन्दझा (मिथिला दर्पण) ओही बनारसमे पढ़ैत छल जतय 'कन्यादानक सी.सी. मिश्र। किन्तु दूनूक विचार आचार-व्यवहार आ विवेकशीलतामे अन्तर अछि। तेँ अंग्रेजी शिक्षहिकेँ सी.सी. मिश्रक व्यवहारक दोषी नहि मानि, उपन्यासकारक उपस्थापनदृष्टिक अन्तरक परिचायक मानब उचित होएत। अपन विवाहिताक प्रति विवेकपूर्ण व्यवहारमे 'विदागरी', 'कन्यादान'क अपेक्षे 'मिथिला दर्पण'क विशेष निकट अछि।

आख्यान, उपाख्यान आ आख्यायिकामे पूर्वरागक वर्णन भेटैत अछि। गुणकथन, दर्शन अथवा स्वप्नसँ ई प्रगाढ़ होइत अछि। मोहिनी आ मोहन ('मोहिनी' मोहन')क पूर्वरागक कारण थिक गुणश्रवण। ओ पत्राचार करैत अछि। हृदयक उद्गार व्यक्त करैत अछि। निर्दयी सासु 'सुमति' आ 'कन्यादान'मे प्रेमोदय नहि होइत अछि। पूर्वराग नहि छैक। मिथिलादर्पण मे पूर्वरागक वर्णन अछि। आ से विस्तारसँ एवं लौकिक रूपमे। माता-पिताक मध्य कथावार्त्ताक चर्च सूनि योगमाया लजा कय उठि जाइत अछि। अढ़सँ उत्सुकतापूर्वक सभकिछु सुनैत अछि। प्रेमोदय होइत छैक। उपन्यासकार योगमायाक अन्तरमे प्रवेश कए ओकर मानसिक स्थिति, हृदयक उद्गार आ आकांक्षाकेँ व्यक्त करैत छथि – 'योगमाया दाइकाँ आब परम आग्रह छैन्ह, जँ हो तँ योगानन्द बाबू वर, नहि तँ आजन्म विन विवाहेक रहब। अतएव, ओ बरोबरि खूब मनसँ, चित्तसँ भगवतीक पूजा करैत छथि।' योगानन्द मौसीक गाम जाइत-अबैत छथि। प्रस्तावित

ससुर आ घटकसँ पूर्वपरिचय छनि। विवाह करबाक छनि नहि तेँ योगमायाकेँ देखिओ कय प्रेमोदय नहि होइछ। किन्तु योगमाया लजाएलि अवश्य रहैछ। बुच्चीदाइमे प्रेमोदय नहि होइत अछि। पूर्वराग नहि अछि। अपितु विवाहक दिन ओ कागदोस खेलएबामे मग्न अछि। सी.सी. मिश्रक मनमे संभावित पत्नीक आदर्श स्वरूप चकभाउर दैत अछि। ई पूर्वराग नहि थिक। मनोरथ थिक। एहि सभसँ भिन्न विदागरीक स्थिति अछि। छाया एवं मुनचुनक सामाजिक स्थिति भिन्न छैक। शैक्षणिक स्थिति भिन्न छैक। मुदा ओ दूनू ओहि वयवर्गमे पदार्पण कऽ गेल अछि जतऽ अन्य मानदण्ड आ बंधन शारीरिक सौंदर्य तथा आकर्षणक समक्ष शिथिल भए जाइत छैक। पारस्परिक दृष्टिनिक्षेप प्रेमोदयक कारण होइत अछि। ई सिद्ध मनोवैज्ञानिक सत्य थिक तेँ मनुचुनकेँ शिवमंदिर लए गेल जाइछ। ओहिठाम छाया सेहो पूजाक निमित्त अबैत अछि। दूनूमे ककरो एहि योजनाक पता नहिं छैक। मुनचुनक आँखि छाया पर पड़ैत छैक। छायाक आँखिमे मुनचुन बैसि जाइत छैक। मुनचुनक आँखिमे शिव मन्दिरक दृश्य-गोर नारि बिजुरी सन चमकैत देह .... कारी कारी केश .... पैघ पैघ पपनीवला भावपूर्ण आँखि .... चमकि चमकि उठैत छनि। छाया मनहिमन महादेव केँ गोहराबय लगैत अछि सीता एवं रामक मनमे पूर्वराग जनकपुरक पुष्पवाटिकामे उदित भेल छल। सीताकेँ अपन स्वयंवरक पूर्ण ज्ञान छलनि। राम सेहो स्वयंवर हेतु आएल छलाह। विदागरीक घटना पूर्वनियोजित होइतो आश्रयक हेतु अपरिचित अछि।

मिथिलाक समाजमे स्वयंवरक स्थिति नहि रहल। विवाहपूर्व कन्याकेँ देखब अथवा वरकेँ देखाएब तथा अनुकूल कए लेब सेहो व्यवहार नहि छल। मिथिलादर्पणमे टाटक भूरसँ एक अन्य कथामे कन्याकेँ देखबाक चर्च अछि। किन्तु 'विदागरी' मे वर आ कन्याक बीच पारस्परिक प्रेमोदयक हेतु साक्षात् दार्शनिक संयोजन अछि। ई संयोजन भविष्यक संकेत मानल जा सकैछ। जे कार्य पहिने अलक्षित रूपे होइत छल, से आब कथावार्त्ताक अंग बनल जा रहल अछि। 'कला' (चतुरानन मिश्र)क भेटघाँटक पूर्वराग अथवा प्रेमोदयक क्षण नहिथिक। ओ वर अथवा कन्याकेँ पसीन-नापसीनक अन्तर्वीक्षा थिक।

विवाहक प्रति कन्याक विचार, ताकल जाइत वर, वरक अवस्था आ आदर्शवरक मनमे बिम्ब, अकाल वैधव्य यातना भोगैत नारी समाजक व्यथा-कथाक चिन्ता, वैवाहिक समस्यामूलक उपन्यासमे दुर्लभ अछि। नारी जातिक एहि मानसिक प्रतिक्रियाकेँ मैथिली उपन्यासमे सर्वप्रथम पुण्यानन्दझा 'मिथिलादर्पण' मे अभिव्यक्त कएल अछि। सखि-बहिनपाक मध्य होइत गप्प-शप्प कन्यावर्गक चिन्तहिकेँ प्रकट करैत अछि – (i) हमरा लोकनि काँ की? बजार लगबे करतैक, मेढ़बा, टेढ़सिंगा औताह, हमरालोकनिक हाथ पकड़ि लेताह, बस भेल विवाह।' (ii) माय-बाप कों जतेक वेटाक खातिर होइ छैक ततेक की बेटीक होइ छैक? बेटा चाहे तँ दस बेर विवाह कए सकै, केश पाकल, मुहमे दाँत नहि रहैक तथापि विवाह भए सकै छैक।' (iii) परन्तु छौडीकेँ बुढ़बा वर होएतैक, ई कोन, न्याय थिक? जेँ हमरालोकनिक कोनो वश नहि चलै अछि, तेँ ने?'

'मिथिलादर्पण'क सखिबहिनपाक वार्तावालक उपर्युक्त अंश नारीजातिक मनमे पुरुषप्रधान समाजक उपेक्षा भावक कारणेँ गुम्हरैत मानसिकताक संकेत थिक। ई मानसिकता प्रच्छन्न आ व्यापक नहि रहल हो, किन्तु सामाजिक जागरण एवं सुधारवादी आन्दोलनक परिणामे अंकुरित अवश्य भए गेल छल। कन्यावर्गक अपना प्रति ई चिन्ता आत्म-विश्वासक बाट पर बढ़बाक मानसिकताक द्योतक अवश्य थिक। 'मिथिला दर्पण' मे कन्यालोकनि अपन वर्गक असहायता, दयनीयता, उपेक्षाभावक चिन्तना करैत अछि। आत्मविश्वासक दिस बढ़ैत डेगक परिचय दैत अछि। छायाकेँ (विदागरी) स्कूल कालेजक शिक्षा नहि भेटल छैक। ओ विदुषी नहि अछि। मुदा नीकअधलाहक निर्णयक विवेक छैक। उचित-अनुचित बुझबाक शक्ति छैक। ओकर व्यक्तित्वक एहि गुणक सर्वप्रथम परिचय भेटैत अहि चतुर्थीक रातिमे, जखन ओ अपन पतिकेँ निधोख भए निरक्षरताक कारणसँ अवगत करा दैत अछि। छाया अपन पिताक स्वभावसँ परिचित अछि तथापि पतिक प्रस्ताव पर मात्र क्षण भरि लेल विलमैत अछि। गौरकेँ खोंइछमे रखैत अछि। राङ्गी रामदुलारीक शीश सुड़र रि खोइछमे लैत अछि। पतिक संगे बिना ककरो किछु कहने रातारातीसासुर

पहुँचि जाइत अछि। हंसेरीक संगे आएल पिताकेँ ओ कहैत अछि – 'हम कुलकलंकिनी बेटी की अहाँ समाजकलंकी बाप, से स्वस्थचित्तेँ जाकए विचाकए, तखन पुरुषार्थ देखाएबर। अहाँ सन बाप जाबत एहि समाजमे जीवैत अछि, ताबत हमरे सन बेटीक आवश्यकता समाजकेँ छेक। वस्तुतः छायाक व्यक्तित्वक एही विशेषताक आधार पर उपन्यासकार 'आमुख' मे लिखने छथि-'जावत धरि छाया जकाँ दुस्साहस करबाक हेतु समाजक कन्या उद्यत नहि होइतीह तावत धरि लीलाधरझा सन व्यक्तिक मुह पर थापड़ नहि लगतनि।'

सी. सी. मिश्र (द्विरागमन) कहैत छथि – 'छौ माइल सकरी साइकिलसँ आध घंटाक रास्ता। ओहि लेल एतेक तूल - फजूल किएक कए रहल छी? बीसम शताब्दीमे समय और मनुष्यक मूल्य एतेक कम नहि छैक जे एगोटा आठ मनुष्यक माथ पर लदाकए चलय। और वायु, प्रकाश तथा प्राकृतिक दृश्यसँ अहाँके कोन शुत्रुता अछि जे ओहारक खोजमे विदा भेलहुँ अछि।' सी.सी. मिश्रक विचार स्थिर नहि रहल। ओ फेर कहैत छथि – 'हम तँ साइकिल पर जाएब लेकिन अहाँक बहिन विना पर्दाक कोना जएतीह।' एहिसँ स्पष्ट अछि जे सी. सी. मिश्रक विरोधक आगि पझा गेल। मनुष्यक माथ पर नहि जएबाक अथवा प्राकृतिक दृश्यक अवलोकनसँ वंचित नहि रखबाक उदारता निपत्ता भए गेल। उपन्यासकार सी.सी. मिश्रकेँ एहि प्रकारें आदर्शीकृत कए देल अछि जे गौरवगान कए सकैत अछि किन्तु जमकल पानिकेँ बहेबा लेल पौटी नहि चीरि सकैत अछि।

विदागरीक साइकिल प्रकरण निश्चित रूपेँ द्विरागमन सँ लेल गेल अछि। जाहिसूत्र केँ सी.सी. मिश्र छोड़ि देने छलाह ओही सूत्रकेँ मुनचुन पकड़ि लेल अछि। आ ठीक समय पर मुनचुन पत्नीकेँ साइकिल पर लोड कए विदा भए गेल। द्विरागमनक विचारकेँ विदागरीमे कार्यरूप देल अछि। विदागरीक ई नूतनता थिक।

लीलाधरझा लठैत अछि, धुरफंदी आ फरेवी अछि। ज्योतिषी विद्वान छथि, विवेकशील छथि। सामाजिक प्रतिष्ठा आ मानसम्मान छनि। लीलाधरझा समधिकेँ ऋणमुक्त नहि कएल, वरिआतीक उचित आदर-सत्कार नहि कएल। गछल एकोटा वस्तु नहि देल। ई ठकपनी अस्वाभाविक नहि अछि। चलैत रहैत छैक। परंच जाहि मिथिलामे जमाय विष्णुतुल्य छथि ततए ससुर जमायकेँ दुर्वचन कहथि, पतिक संग सासुर चल जएबाक कारणेँ बेटीकेँ घुमा अनबा लेल हँसेरीक संग पहुँचि जाएब तथा हँसेरी एवं सासुरक लोकक समक्ष बेटीकेँ कुलकलंकिनी आदि उपाधिसँ संबोधित करब आदर्शक स्थापना नहि, खण्डन थिक। उपन्यासकार छाया आ मुनचुन सन दुस्साहसी युवती आ युवकक सर्जना कएल अछि। अपन एहि सर्जनाक सम्पुष्टि उपन्यासक आमुखोमे कएल अछि। परंच एकटा स्थापित आदर्शक, जाहि आतिथ्य सत्कार लेल मिथिला ख्यात अछि, तकर खंडन उपन्यास करैत अछि। ओ तेहन ससुरकेँ गढ़ैत छथि जे जमाय धरिकेँ नहि छोड़ैत अछि। मनुनचुनक आँखि उठि गेल छनि। ओ ससुरक समक्ष गाम जएबाक प्रताव रखैत छथि। लीलाधरझा सुनितहि तरंगि उठैत छथि – 'की बुझैत हिएक जे रेलवे स्टेशनक मुसाफिरखानामे छी, जखन मोन हैत, उठि कए चलि देब।' मुनचुन पुनः ससुरसँ अनुरोध करैत अछि – 'हम विदाइ माँगी तखन ने? हम सोझे चल जाए चाहैत छी, से आइ हम चल्ले जैब।' मुनचुनक एहि बातपर लीलाधरझा कहैत छथि – 'अहाँ सबठाम एक्के रंग बुझैत छिऐक से भ्रम दूर करू। हमरा लगमे बतहपनी नहि चलत। हम केहन केहन बताहके हड़ीमे ठोकि सोझ कयने छी।' जमाय बिना दिनहु जाइत रहल अछि। सुविधा अनुसार विदाइ कएल जाइत छैक। परंच जएबाक प्रस्ताव पर लीलाधरझा अपन जमायक प्रति जाहि स्तर आ आवेशमे कुवाच्य कहैत छथि, उपन्यासक प्रयोजनक अनुरूप नहि अछि।

'भलमानुस' मे उपन्यासकार योगानन्दझा भलमानुसकेँ जयवारसँ फुटकाओल अछि। व्यावहारिकता, सौहार्द, एवं आचार-विचारमे भलमानुससँ जयबारकेँ न्यून प्रमाणित कएने छथि। विदागरीक उपन्यासकार पर मिथिलाक एहि सामाजिक विभाजनक प्रभाव रहल होएतनि। आ प्रायः तेँ ज्योतिषीसँ लीलाधरकेँ सभ प्रकारेँ न्यून चित्रित कएल अछि। मुदा लीलाधरझाक धूर्तता, ठकपनी एवं मिथिलाक आतिथ्य-चेतनाहीनता एक व्यक्तिक नहि गामक थिक। तेँ

लीलाधरझाक चरित्रांकन मे समाजहितकारी आ समन्वयवादी दृष्टि नहि अछि। विघटनकारी प्रवृत्तिक चरित्र ओ ठाढ़ करैत अछि। ई चित्रांकन उपन्यासक प्रयोजनक अनुकूल नहि भेल।

पहिने पिता कन्या विक्रय करैत छलाह। आप पुत्रक बिक्री करैत छथि। ई समस्या पहिनहुँ समाजमे दुर्गुण पसारैत छल आ आबहु ओएह काज कए रहल अछि। मैथिल समाजक एहि समस्याक अभिव्यक्ति मैथिलीक उपन्यासमे भेल अछि। प्रो० हरिमोहनझा तीन प्रकारक कथाक उल्लेख कएने छथि – खनखनौआ (बटी बेचब), टनटनौआ (बेटा बेचब) तथा ठनठनौआ (जाहिमे कोनो पक्ष खर्च नहि करए)। बेटी बेचब अथवा बेटा बेचब एक सामाजिक अपराध थिक। समाजकेँ एहि अपराधसँ मुक्त करबाक हेतु आन्दोलन होइत रहल अछि। एहि अपराधसँ समाजकेँ मुक्त करबाक हेतु उपन्यासकारलोकनि एहन पात्र आ स्थितिक सर्जना एवं वर्णन कयल अछि जे समाज केँ एहि सँ मुक्त करबाक प्रेरणा दैत हो। योगानन्द (मिथिला दर्पण)स्पष्टतः कहैत अछि – 'विवाहमे रूपैया पैसा नहि लेब हम पूर्वहिसँ निश्चय कएने छी, तखन ई टालबाक उपाय कएने रही।' 'कन्यादान' मे एहि व्यवस्थाक स्पष्ट विरोध नहि अछि। घटक टुन्नीझाकेँ कहल जाइछ– 'कन्याक प्रति टाका गनाएब हमरालोकनिक अभीष्ट नहि। कनेक नीक कथा चाहैत छी। वेशी तँ नहि दश, पाँच टाका यदि अपनो दिशिसँ खर्च पड़य तँ ताहिसँ पाछाँ नहि रहब।' ज्योतिषी (विदागरी), 'समाने शोभते प्रीतिः' क पक्षपाती छथि। किन्तु खगि गेल वरक बापक समक्ष जखन ऋणमुक्तिक प्रस्ताव अबैत अछि आ दरवज्जाक सामनेक खेतक प्रलोभन देल जाइत छनि तँ अपन आदर्श पर ओ स्थिर नहि रहि पबैत छथि। ई भिन्न बात जे समधि धूर्त्तइ कए लैत छनि। मुनचुन पढ़लि-लिखलि कन्या तँ तकैत अछि, पिताक लेबदेबक प्रस्ताव पर असहमतिक प्रसंग मौन अछि। समाजमे व्याप्त एहि दुर्गुणक विरोध आ निराकरणक प्रसंग 'विदागरी' चुप्प अछि जेना 'कन्यादान'क बुच्चीदाइ होथि। पसरैत दुर्गुणक विरोध नहि करब, शोषण-प्रतारणक प्रतिरोधमे कलम नहि उठाएब वा मौन रहि जाएब, समर्थनक अप्रत्यक्ष ढंग थिक ई चुप्पी 'मिथिला दर्पण' सँ भिन्न लेखकीय दृष्टिक परिचय दैत अछि।

जेना कथारूढ़ि अथवा काव्यरूढ़िक प्रयोग गति उत्पन्न करबाक हेतु कएल जाइछ, ओहिना ठमकल जाइत कथाकेँ गतिमान बनएबाक उपन्यासकार लुक्खीदाइक सर्जना कएल अछि। ओ छायाक सखी बनि मुनचुनकेँ अनुकूल बना लैत अछि। अपन व्यथा-कथा कहि, नारीजातिक व्यथा कथा कहि सहानुभूतिक पात्र बनि जाइत अछि। प्रेम निवेदन कए मुनचुनक लटकल मुँह पर प्रसन्नताक रेखा आनि दैत अछि। वृद्धालोकनिक दृष्टिमे उपेक्षणीय लुक्खीदाइ उपन्यासमे रोचकता आनि देल अछि। आ पाठकक मानसपटल पर अपन व्यक्तित्वक अमिट छाप छोड़ि एहि संसारसँ विदो भए जाइत अछि। ओहिना एकटा पात्र अछि मनिआ-छरहरि, पातरि-छितरि, जमुनिआ रंग जेना शालग्रामकेँ केओ घिउ हँसोथि देने होइनि, भीतरसँ रतरत करैत। बजैत किछु नहि अछि। मुदा जखन ओ बहुआसिन सभक फेरन, फारन पहीरि धीयापूताकेँ बुलेबा लेल आङनसँ छमकि डेग उठबैत अछि तँ कतेक बूढ़ पुरानक मनमे सारंगी बाजि उठैत छनि। एहिसँ उपन्यासमे रोचकता आएल अछि।

'विदागरी' अपन पूर्ववर्ती उपन्याससँ कतेको विन्दु पर मेल खाइत अछि। अभिव्यक्त विचार आ दृष्टिमे समानता छैक। किछु दृष्टि पूर्व अभिव्यक्त प्रगतिशील दृष्टिक समकक्ष नहि अछि। गोत्रचेतना ततेक प्रबल अछि जे ओहिमे देशकोस पूर्णतः भसिआए कातकरोट लागि गेल अछि। तथापि उपन्यासकार अपन समसामयिक सामाजिक (वैवाहिक) समस्याक समाधानक हेतु समाजसँ जीवनरस निचोड़ि स्फूर्तिदायके अर्क तैयार कएल अछि। स्कूटर कारक एहि जमाना मे अप्रासंगिक होइतो, तत्कालीन मैथिल समाजक समक्ष आएल युगान्तकारी मानदण्डक ओ परिचय दैत अछि।

●

अमरजीक कथासाहित्य

डा.राजारामप्रसाद

आधुनिक भारतीय साहित्यमे गद्यक माध्यमे कथा रूपमे जाहि विधाक विकास भेल अछि से निश्चित रूपसँ पाश्चात्य साहित्य, विशेषतः अंगरेजी साहित्यक प्रभाव-परिणति थिक। आधुनिक कथाक बहुतो तत्त्वक आभास वा संकेत प्राचीन भारतीय कथामे सेहो देखल जा सकैत अछि, तथापि वस्तु, शैली, उद्देश्य, चरित्र, वातावरण इत्यादि मे नवीनता आधुनिक कथाकेँ प्राचीन कथासँ सर्वथा भिन्न स्वरूप प्रदान करैत अछि। सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि सामाजिक जीवनक यथार्थ स्वरूप ओ ताहि मध्य घटित-घटना, जीवैत लोक, लोकक सम्बन्ध, सम्बन्धसँ उत्पन्न मानसिक ऊहापोह इत्यादिकेँ कथाक विषय वस्तुक रूपमे ग्रहण करबाक प्रवृत्ति, जे पाश्चात्ये कथा साहित्यक अवदान थिक। कथामे, कथाकारक रचना-प्रक्रियामे कथाकारक वैयक्तिक अनुभूति महत्त्वपूर्ण होइत अछि। वैयक्तिक वा सामाजिक जीवनक कोनो घटना, कोनो परिस्थिति, कोनो व्यक्ति, कोनो वाक्य, कथाकारक मर्म पर खचित भऽ ओकर संवेदनाकेँ उद्वेलित-उद्बोधित कऽ दैत अछि। इएह उद्वेलित शक्ति कथातत्त्वक मूलमे प्रवेश करबाक-प्रवृत्तिकेँ दिशा दैत अछि। कोनहु कथाकारक कथाकेँ मूल्यांकन करबाक यथार्थ कसौटीओ तँ वस्तुतः इएह थिक।

कथाकारक अनुभव ओ कल्पनाक संयोजनसँ कथानकक विश्वसनीयताक साँचा ठाढ़ होइत अछि। ओकरहि कथाकार बीज-विन्दु मानि परिवेशगत, चरित्र संवाद, औत्सुक्य, चरमोत्कर्ष इत्यादि तत्त्वक विन्यास कऽ कथाकेँ समग्रता प्रदान करैत अछि। जीवनमे यथार्थक ई अन्वेषण सैह वास्तविक कथाक अन्वेषण थिक। 'अमर'जीक कथामे अन्वेषणक इएह सत्य परिलक्षित होइत अछि। अनुभवक मर्म हिनक कथाकेँ सुवासित करैत अछि तथा समीक्षात्मक प्रवृत्ति ओहिमे स्वाद जगबैत अछि। हिनक कथाक मूल तत्त्व पर प्रकाश दैत डा० शैलेन्द्रमोहनझा 'जल-समाधि' कथा संग्रहक 'कथा ओ कथाकारक प्रसंगमे लिखैत छथि – 'अमर' जीक ई कथा सभ शून्यमे प्रसारित वक्तव्य मात्र नहि रहि एक अन्य समानधर्माक उपस्थितिक आभास दैत अछि। वस्तुतः कथा एवं पाठक दुनूक अवस्थिति जीवनक विडम्बना, असत्य एवं विद्रूपकेँ अस्वीकृत कऽ ओकरा सत्य, सौन्दर्य ओ सुरूचिसँ युक्त करैछ आ तखनहि जीवन, जीवाक योग्य बनि सकैछ। 'अमर' जीक कथाक मूल तत्त्व इएह थिकनि। एकर मूल्यबोध ओ कथात्मकता एकरा व्यक्ति-व्यक्तिसँ जोड़ैत अछि। इएह कारण अछि जे व्यक्ति व्यक्तिकेँ स्पर्श करैत ई कथा सभ प्रत्येक व्यक्तिक कथा बनि गेल अछि।''

हिनक कथा गम्भीर आ हल्लुक दुहू रूपक अछि। किन्तु सहज-सरल अभिव्यक्तिमे व्यंग्यक प्रखरता ठामठीम सहजहि आकृष्ट कऽ लैत अछि। हिनक कथासभक गुणवत्ताकेँ रेखांकित करैत स्थूल दृष्टिएँ हास्य-व्यंग्यप्रधान एवं गम्भीर-विचारप्रधान एहि दू कोटि मे डा. शैलेन्द्र मोहन झाजी रखलनि अछि। पंडित 'अमर' जीक नौ गोट कथाक एकटा संग्रह अछि **'जल-समाधि'**।

प्रस्तुत कथा-संकलन दोसर कोटिक थिक। गम्भीर कथा सभमे वस्तुक उपस्थापन ओ शिल्प विधानमे वक्रताक अपेक्षा सहजताकेँ विशेष प्रश्रय देल गेल अछि। एहि कथा सभमे कथ्य तत्त्वक सहज प्रेषण ओकर स्वभाविक धर्म बनि गेल अछि। वस्तुतः यदि शिल्प-संयोजना मे कथ्य आच्छन्न भऽ जाय तँ कथाक उद्देश्ये निरर्थक भऽ जाय। कथाक सत्यकेँ इतिहासक सत्यसँ विशेष व्यापक ओ सार्थक कहल गेल अछि। 'अमर'जीक कथा सभ एहि तथ्यकेँ चरितार्थ करैछ। उक्त कोटिक किछु प्रसिद्ध कथा अछि– जल-समाधि, आत्महत्याक पूर्व, जाड़ा फेनो अओतो, प्रतिक्रिया, सुराही, हमर कोन दोष, गोबर छत्ता, इत्यादि।

जल-समाधिक पहिल कथा अछि– **'कथा-व्यथा'** एहि कथामे अमरजी एकटा साधनहीन पत्रकारक कथा-

व्यथाकेँ मातृभाषाअनुरागीक रूपमे उपस्थापित कयलनि अछि। कथाकारक शब्दमे– ''रमेश साधनहीन छल अवश्य, किन्तु साधनाहीन नहि। ओ साधन, साहस आ विश्वासक बल पर पत्रकार बनबाक, निर्भीक पत्रकार बनबाक दुस्साहस कयने छल।'' मुदा एहन दुस्साहसी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ मातृभाषाक सेवकक परिणति तखन देखबामे अबैछ जखन ''अंगारजी रमेशक घड़ीशून्य पहुँचा देखि चकित रहि गेलाह। विस्मित होइत कहलथिन की अहाँ घड़ी बेचि लेल?''

'दोसर उपाय'? रमेश बजलाह, स्वाभिमानक रक्षा ओ आकांक्षाक पूर्ति हेतु आर उपाय की छल? मातृभाषाक सेवकलोकनिमे अधिकांशक तँ यैह हाल रहलनि अछि। इतिहास उनटा कऽ देखू। उक्त कथाक भाषा ओ शिल्प गम्भीर ओ संवेदनायुक्त अछि। कथाकार आजुक छौंड़ा सभक प्रति कठोर व्यंग्य देलनि अछि जे अपन कर्त्तव्यसँ हटि मातृभाषा प्रति अनुराग नहि रखैत अछि।

एहि संकलनक दोसर कथा थिक – **'प्रतिक्रिया'**। एहिमे कथाकारक अर्थात् मुख्य पात्र 'हम' मे 'गामक' प्रतिक्रिया, पारिवारिक परिवेशमे औनाइत आजुक परिस्थिति, जुझैत मनुष्यमात्रक बीच एकटा दृष्टान्त बनि, वर्त्तमान सभ्यताक विकसित रूपक उदाहरण तँ प्रस्तुत करैत अछि। मुदा इहो जे मनुष्यजन्यक अपनहि बुद्धिक विस्तारमे अहंकारक अट्टहासकेँ सेहो उजागर करैत अछि। ''तोँ हमर मानसिक प्रतिक्रिया जानऽ चाहैत छह? तोहर जयबाक कार्यक्रममे कोनो व्यवधान उपस्थित करब हमरा हेतु कोना सम्भव भऽ सकैत अछि? यदि से करबाक चेष्टा हम करैत छी तँ हमर स्वार्थ हमरा अपने आँखिमे गड़ऽ लागत। किन्तु प्रतिक्रिया आन की भऽ सकैत अछि?

दशरथकेँ रामक वियोगक अवधि निश्चित छलनि, किन्तु, ओ प्राणधारण नहि कऽ सकलाह। हम तँ अनन्तकालक हेतु से सहि चुकल छी। तथापि प्रतिक्रिया स्वरूप करुणा, अजस्र करुणा अन्तश्चेतनाकेँ भसियौने चल जाइत अछि। अपने ओहीमे डूबि जाइत छी। डुबले रहलामे सुखक अनुभव होइत अछि। अपनोकेँ बिसरि जाइत छी, पुनि संसारकेँ बिसरब तँ स्वाभाविके थिक। मुदा ई की ?....

लेखक द्वारा एहि कथामे आजुक युग-विचित्रता पर व्यंग्यप्रहार भेल आछि, जे एक दोसराक प्रति सतत् शंकालु बनल रहैत अछि।

'सुराही' पुरान आ नव लोकक मनःस्थितिक भावनात्मक अनुभवक संगहि पत्नीप्रेमक मिझायल दीपक स्मरणीय कथा थिक। एहि कथामे 'अमर'जी कविजी आ मुंशीजीक अवस्था गुने आपसी आहार-व्यवहार आ वर्त्तमान स्थिति-परिस्थिति, रहन-सहनकेँ हुनके सभक माध्यमे चित्रित कयलनि अछि। कुसंयोगे जखन धोखासँ त्रिभुज आकारमे मुंशीजी बुते सुराही फूटि जाइत छनि, तखन ओहि समस्याक निदान हेतु कयल गेल उपायक वृत्तान्त वस्तुतः पाठककेँ एकतरहेँ हास्यक आनन्दानुभूति प्रदान करैत अछि। मुदा इहो तँ सत्य आछि जे – ''आर्थिक विपन्नता मनुष्यकेँ खटखटाह बना दैत छैक, ताहूमे जँ दुखित सुखितक बेर पर अभाव भऽ जाइत छैक तखन तँ दू चिन्ता अपनामे लड़िकऽ माथकेँ उधेसिकऽ राखि दैत छैक।'' ओहि कालक मानसिक स्थिति कविजीकेँ तेहने सन छलनि। मुदा ओ मुंशीजीक व्यथा कोना नहि सुनितथि? आखिर मुंशीजी भेलाह पाकल आम...। ओ नव सुराहीक उद्योग कऽ कहैत छथिन जे यैह सुराही राखि लियऽ ने। ओहि सुराही मे कोन एहन विशेषता छैक जे एहि हेतु अहाँ भोजन-छाजन सभ छोड़ि देलहुँ? तखन मुंशीजी स्मृति-शेष अपन-पत्नीक प्रति मोनमे औनाइत भावकेँ व्यक्त करैत कहैत छथि – 'कविजी ! हम कोना मोनक वेदना प्रकट करू। ई सुराही हमरा जे नेना छथि तनिका माइक हाथक थिकनि। एहि सुराहीक जल ढारि कऽ जखन पिबैत छी तखन जे तृप्ति होइत अछि तकर अनुभव दोसर कोनो सुराहीसँ नहि भऽ सकैत अछि। वस्तुतः कहल जा सकैत अछि जे उक्त कथामे हास्यक पुट चीरिकऽ बहरायल अछि करुणाक निर्झरिणी।

'हमर कोन दोष' सौराठसभामे बिकैत लोक, खरीदैत भूखायल मनुख, बुद्धि भसिआयल पांडित्य, लोक द्वारा करैत पैकारीक सद्यः ज्वलन्त कथा थिक। एहि कथामे अमरजी मिथिलाक मैथिल ललनाक विवाह संस्कृतिक एहि परम्परा प्रति होइत लेन-देन तत्पश्चात् कखनहुँ गाराक घेघ बनल वर कन्याकेँ, तऽ कखनहुँ कन्याकेँ वर। सौराठसभामे उक्त वर कथा पात्र अर्थात् मद्धूक डेरा पर जखन दछिनवारि गामवला घटक संग चपचपायल मोने पहुँचलैक आ एकरो माम लहका देलक। घटकराज मद्धूकेँ पुछलकैक – बाबू अपनेक नाम की थिक?

– ''हमर नाम थिक मधुवन बिहारी शाण्डिल्य। अपनेकेँ हमर नाम सुनि कनेक छगुनता भेल होयत, मुदा झा, ठाकुर, मिश्र, चौधरी आदि संकीर्णताबोधक उपाधिकेँ व्याधि बूझि, कलकत्तामे रहनिहार हमरालोकनि यैह निश्चय कयलहुँ अछि। हम ओहीठाम कम्पिटीटिव एक्ज़ामिनेशनमे उत्तीर्ण भऽ बहुत संघर्षक उपरान्त आब स्टोमेक इनचार्यक पद पर काज करैत छी।'' एहन वरक छवि-छटा, बाजब-भूकब, रूप-रंग, डीलडौल देखि विशेष प्रभावित भऽ कन्यादानक भारसँ हलुक होयबाक लेल आतुर मिथिलाक समाज कोना सभ किछु बूझितहुँ अबुझ बनि कन्यादानकेँ कण्ठक भार बुझैत छथि? परिचय पातकेँ भलमानुसक सम्पत्ति आ जयवारक शृंगार कहि कात कऽ दैत छथि आ अपन बोरायल अभीष्टकेँ सिद्ध कऽ लैत छथि।

– दोसर यात्रामे ओझाजीकेँ पुछल जाइत छनि जे – 'ओझाजी, लाख ब्राह्मणक बीच अपने एतेक मिथ्या बजलहुँ?' ताहि पर ओझाजी अर्थात् मद्धूक उत्तर छलनि–'हम स्पष्ट शब्दे कहने छलहुँ जे हम 'स्टोमेक इनचार्ज' छी। यदि हमरा वाक्यक अर्थ अपनेकेँ नहि लागल तँ एहिमे 'हमर कोन दोष?'

इएह उक्ति कथाक सारतत्त्व अछि।

'गोबर छत्ता' सामन्तवादी व्यवस्था द्वारा अरजल वैभवक संगहि भारतीय एवं मिथिलामे पाश्चात्य सभ्यताक प्रवेश ओ भाषा-सम्मिश्रण 'कल्ट'क एकटा बानगी पूर्वक परिचय माहात्म्य, श्रवण-वर्णन-श्रुति कथा थिक। कथाकार अपन मित्रसँ भेँट करबाक निमित्त निर्मली रेलयात्राक क्रममे रेलगाड़ीमे बेसैत छथि। रेलगाड़ी जखन अपना चालियेँ ससरल जा रहल छलैक, ओही क्रममे पात्र-फल्लाँ बाबू ओही रेलगाड़ीक यात्री बनल अपन पितामहक छत्ताक बखान करैत छथि। एखन जे आठ कमानीवला छत्ता रौद पानिमे तनने देखैत छियैक से छाता नहि। छत्तामे सोड़ह गोट कमानी होइत छलैक ओहने सन जेहन की गोबरछत्ता होइत अछि। एहि छत्ताक विशेषता ओ आकार-प्रकारक वर्णन द्रष्टव्य-छत्तामे सोड़ह गोट कमानी, एकटा कमानी तीन हाथक। सोड़हो मिलाकऽ सोड़ह तिया अठतालीस हाथक। तौलमे पक्की तीन सेर। इस्पात सन मजगूत कमानी आ ताहि कमानी सभ पर सोनाक पानि चढ़ाओल। प्रत्येक कमानीक नोक पर जे छक सन गोलका भुटका होइत छैक से शुद्ध चानीक आ प्रत्येक भुटकामे लाल, हीरा, नीलम, आ पोखराजक कुन्नी सभ जड़ल छलैक।''

कथाकार वृत्तिएँ सफल शिक्षक रहबाक कारणेँ एहि गोबरछत्ताकेँ अलजेबराक फार्मूला अर्थात् गणितक हिसाब पर सेहो राखि एकर लम्बाइ, चौड़ाइ आ परिधिक परिज्ञानक परिमार्जन कयलनि अछि– 'टू पाइ आर अर्थात् 2 x 22/7 x R एकटा फार्मूला छैक। ताहि फार्मूलाक अनुसार एहि छत्ताक परिधि 18.8 हाथ होइत छैक। तनला उत्तर नओ आदमी पानिसँ आ अठारह आदमी रौदसँ बाँचि सकैत छल। एक तरहेँ छोटछीन सामियाना अथवा तम्बू सैह भऽ जाइत होयतैक।''

विपन्नता आ विभवहीन होइतो मिथिलाक संस्कृतिमे अतिथि-सत्कार करबाक मनोरथ लोकमे प्रबल रहल अछि। कथाकार संयोगे जखन अज्ञात रूपेँ फल्लाँ बाबूक ओतऽ राति बितबैत छथि आ भोरे जखन दुनू गोटे एक दोसरा

सँ मुखाकृत भऽ साक्षात्कार होइत छनि, तखन फल्लाँ पश्चात्तापक परिणामकेँ व्यक्त करैत ओ कहैत छथि जे – ''राति अहीं छलहुँ? तखन तँ अहाँकेँ व्यर्थे चुड़ेठलहुँ।'' कथाकार संग फल्लाँ बाबूक वर्त्तालापक क्रम रेलगाड़ी सँ लऽ कऽ ड्योढ़ी धरि मातृभाषामे सन्हियायल पाश्चात्य परिपाटी अनेरो टपकल सन बुझना जाइत अछि। जेनाकि – 'हमरा बूझब जे 'हेण्ड टू माउथ' माने भरि पेट भोजनक कोनो समस्या, से तँ नहि अछि।'' 'किछु स्वदेशी शुद्ध 'फ्रूट्स' खा लियऽ।' 'हायरे मंसूरीक ओ 'लाइफ'।' तेहने 'इमर्जेन्सी' माने नितान्त आवश्यकता।' 'हमरा बहुआसिन माने 'वाइफ'केँ 'क्लाइमेट चेञ्ज' अर्थात् हवा पानि बदलबाक प्रयोजन पड़ि गेलनि।' 'हुनका असलमे 'प्रेगिनेन्स' अर्थात् कल्याणक योग्यता छलनि।' 'बैंगलो लीक' करैत अछि।' 'एखनहुँ तेहने 'ब्यूटीफुल' माने सुन्दर लगैत छैक।' आदि-आदि।

वस्तुतः एहि कथामे सामाजिक वैषम्य पर एक-तरहेँ कसि कऽ व्यंग्यात्मक चोट पड़ल अछि।

'आत्महत्याक पूर्व' पत्रात्मक कथा थिक, एहि कथामे 'अमर'जी अमलेन्द्र मुमूर्षक माध्यमे पैंतीस-छत्तीस वर्षक दाम्पत्य जीवनमे अकुलायल आ बढ़ल वैषम्यक रहस्यकेँ स्पष्ट करैत अपन शुभेच्छु, विश्वासी अर्थात् चि. श्री ...केँ शुभाशीष दैत अपन आत्महत्या करबाक लेल बाध्य होयबाक कारणकेँ व्यक्त करैत छथि। कथाकार महोदय उक्त कथामे हिन्दू संस्कारमे प्रवाहित-रक्तक संयमकेँ सेहो देखलनि अछि। धर्मग्रन्थ आ शास्त्रक दृष्टान्त दऽ मनुक्खक भीतर विवेककेँ जगयबाक शक्ति पत्रक व्यथा-कथामे उत्तरदायित्त्वक निर्वाह आ विश्वासक फलीभूत होयबा लेल उत्प्रेरित करबाक संकेत दैत अछि।

ओना एहि संदर्भमे सद्यः पात्र द्वारा व्यक्त कयल गेल धारणा अछि जे – ''यद्यपि हमर अंधविश्वास रहल अछि जे जन्म माय–बाप दैत छैक, भोग तँ अपना कर्मक लोककेँ करऽ पड़ैत छैक आ जे विधाता मुँह चिरने रहैत छथिन्ह से तकर चिन्तो रखैत छथिन।'' कथाकारक विशेषता अछि जे एक पात्रकेँ एहन चिन्तनशील आ गम्भीर बना तत्काल मानसिक आवेगमे अयबा लेल रोकि दैत छथि। मुदा जखन आत्महत्या करबाक कारणक खुलासा होइत अछि तऽ जेना लगैत अछि जे पलायनवाद आ कायरक गप्प के कहय एकदम व्यंग्यात्मक हास्य रूप आत्महत्याक कारण बनि जाइत अछि – ''हमरा पत्नीकेँ हमरा प्रति अखण्ड अविश्वास। एकरा दुर्योग कही अथवा दैवी विडम्बना, मुदा सत्य यैह थिक जे एहन प्रतिकूलता रूचिक समन्वय असम्भवछल।'' पत्नीक अविश्वास ओकर सहनशक्तिक अतिक्रमण कऽ दैत अछि एकर जड़िमे अछि 'करुणा' ओ एक प्रतिभामयी नारी, नहि, किशोरी, जे यौवनक दुआरि पर एखन पैर रखबे कयलक अछि। तकरा लऽ कऽ आन दोसर केओ नहि ओकर अर्द्धाङ्गिनियेँ लांछना लगबैत अछि। स्वयं पत्नीक एहि प्रकारक आरोपसँ समाजक विवेकशीलो लोकक मति भ्रमित भऽ जयतैक।

.... किन्तु जनिका लेल चरित्रे बल छैक, सम्पत्ति ओ ऐश्वर्य छैक, ताहि चरित्रकेँ दूषित करबाक कयल गेल प्रयास वस्तुतः समाजक संकीर्ण विचार, दूषित मानसिकताक परिचायक कियैक ने कहल जयतैक। नारीक कतेको रूप अछि। देवी, श्रद्धा, ममतामयी, दयामयी, सती-साध्वी इत्यादि। नारी-मानवीय जीवनमे कोनो ने कोनो रूपमे युगसापेक्ष बनल अछि। मुदा कखनहुँ काल नारी वंचनाक रूपमे समाजक समाजिकतोकेँ दूषित शंकालु आ पिशुन-प्रवृत्तिमे परिणित कऽ दैत छैक।

एहि कथाक मुख्य पात्र अमलेन्द्र मुमूर्षुक पत्नी एही स्वाभावक अछि। जखन करूणा आकाशवाणी द्वारा अपन कार्यक्रम दैत छलीह आ ओ अपन कोठलीमे बैसल कार्यक्रम सुनैत मोनमे आयल भावनाकेँ प्रतिरूप दैत छलीह जे – ''करुणा हमर बेटी रहैत तँ एहि दिशामे एकर पूर्ण विकासक प्रबन्ध हम कऽ दितियैक। ओही कालमे हुनक पत्नी सेहो कोठलीमे अयलीह आ कहलथिन ई तँ ओही छुछनरिया ....। दोसर दिन भरि टोलमे एकर चर्चा पसरि गेल जे

करुणाक संग हुनक अनुचित सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल छनि। जकरा प्रति ओ अपन सन्तानक भाव रखैत छलाह तकरा प्रति अनुचित सम्बन्ध अनसोहाँत आ अनटोटल सन तऽ लगिते अछि, संगहि कथावृत्ते काल्पनिकताक भ्रममे राखि दैछ।

निर्विवाद रूपें कहल जा सकैछ जे ई कथा काल्पनिक परिवेशमे समाजक ओहि दूषित रहस्यकेँ उजागर करैत अछि, जाहिमे सामाजिकताक समस्त आयाम ओकरासँ आबद्ध छैक।

'जाड़ा फेनो अओतो' लेखकक वाचक कथा थिक। एकर कथासार अछि – ''कथावाचक पात्र अर्थात् 'हम' एकगोट भिखमंगा सूरदासक जीवनगाथा कहैत छथि। कथानायक अर्थात् 'रामफ्ल' नेनामे अपन गिरहत अर्थात् मालिकक भैंस चरबैत अछि। एक दिन जखन ओ पसर खोळि भैंसकेँ चरबैत अछि तऽ भोरहियामे भैंसक पीठ पर निन्न पड़ि जाइत अछि भैंस बाड़ीक सभटा भाँटा खा जाइत छैक। बाप ओकरा मारैत छैक। ओ तामसे घरसँ भागि कऽ समस्तीपुर चल अबैत अछि। ओतय भटकल उद्‌देश्य एकटा गाड़ीमे बैसि जाइत अछि। ओ गाड़ी ओकरा दरभंगा नेने चल अबैत छैक। ओहिठाम टी.टी. ओकरा पकड़ि लैत छैक, महज लगमे किछु नहि रहैक। तइयो टी.टी. ओकरा एकदम नंगाझाड़ कऽ दू-चारि चटकन मारिकऽ बैला दैत छैक। टीसनसँ ओ सोझे उत्तर मुँहे विदा भऽ जाइत अछि। रेल लाइन पर किछु मौगी-छौड़ीकेँ जरलाहा कोइला बीछैत देखि ओहो फटलाहा गमछामे कोइला बीछय लगैत अछि। ओतऽ पनरह-सोलह बरख उमेरक एकटा कोइलबिछनी छौंड़ीक संगे बजार जा ओकरे द्वारा अपनो कोइला बेचैत अछि। मेहनति तीन आना पाइ होइत छैक, ताहीमे सँदू गोट पाइ ओहि छौड़ीकेँ दऽ वर्त्तमानमे डूबि जाइत अछि ...।

पाँच-छौ दिन धरि सतुआ खाकऽ कोनो दोकानक बहरीमे पड़ि कोनहुना समय बितबैत गेल ...। ओ छौंड़ी माने परवतिया दू तीन दिन बीमार पड़लाक कारणेँ कोइला बीछय नहि आयल। रामफ्लकेँ परवतियाक चिन्ता होइत छैक। ओकर मोन कोनादन करय लगैत छैक। ओ एकटा बुढ़ियासँ पुछैत अछि ओकरे संगे परवतियाक घर पर जाइत अछि....। ओतऽ परवतियासँ सम्पर्क होइत छैक। एके आसरम अर्थात् जाति रहबाक कारणेँ ओकर बाप एकरा राखि लैत छैक। पारवती अर्थात् परवतियाक महादेव रामफल बनि जाइछ माने दुहूक विवाह भऽ जाइत छैक। भगवानक कृपासँ पारवती सन परवतियाक कोखिमे दुइटा कातिक-गणपति सन चेङना अर्थात् बालक भेल। रामफल सेहो ट्रेनक ड्राइवर बनि जाइत अछि। एक दिन स्वयं गाड़ी चलबैत, जाहि डेढ़बज्जी गाड़ीकेँ ओ हँकैत आबि रहल छल, ओही गाड़ीसँ सिगनल लग ओकर कातिक-गणपति सन दुनू बेटा रजुआ-भजुआ कटिकऽ मरि जाइत छैक। अपने द्वारा एहि घटित घटनासँ नायक बहुत दुःखी होइत अछि आ पश्चातापमे स्वयं आँखि फोड़ि भरि जनम आन्हर बनि भीख मँगैत रहैत अछि।

कथ्य अछि – 'भिखमंगाक विवशता ओ ओकर वैचारिक उत्कृष्टताक चित्रण।' यद्यपि सूरदासकेँ ईश्वर पर पूर्ण आस्था छैक किन्तु ओ ईश्वरक नाम भजा भिक्षाटन करब अनुचित बुझैत अछि। ओ कहैत अछि – 'बाबू! हम भगवानक नां कैं भजा कऽ नै खाय चाहैत छी। जे सीताराम – सीताराम कहैत रहैयऽ तेकरा सबकेँ धेयान ढेउआ पर रहै छै', ऊ ढेउएकेँ – सीताराम बुझै छै। बाबू ! भगवानक नाम कण्ठसँ नै हिरदयसँ लेबाक चीज छै। पापीकेँ हिरदयसँ भगवानक नाम बहराइते ने छै।'' ओकरा पाप-पुण्यमे आस्था छैक बिनु टिकटक गाड़ीक सीट पर बैसबओ पाप बुझैत अछि।

भाषा अलंकृत अछि, यथा – 'एहि ध्वनितरंगक बीच एकटा एहनो' ध्वनि कानमे पड़ल जे अपना दिस चुम्बक जकाँ घीचि लेलक।' ...'केवल दुनू आँखिक करिया डिम्हा सीप केर बट्टम जकाँ उज्जर सपेत।' .... बुझना गेल जे

ओकरा अन्तरक वेदना बान्ह तोड़ि कऽ बाहर भऽ गेलैक।' 'मोतीक माला जकाँ नोरक बुन्द गाल पर दऽ झहरऽ लगलैक।' 'वेदनाक एक तरंग सूरदासक आँखिकेँ जोरसँ आप्लावित कऽ देलकैक।'

कथाक शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमे जन्म-पुनर्जन्मक प्रतीक अछि। ''चिन्तनक चर्चा जखन चलऽ लगैत छैक तखन मोट-पातर, स्थूल-सुक्ष्म अनेक प्रकारक विचारसूत्र बाहर होबऽ लगिते छै।'' वस्तुतः इएह तँ थिक कथासूत्र।

'हल्लुक चोट' सुरेन्द्र आ विनोदक अन्तरंग मित्रता, उज्जवल भविष्यक कल्पना–सपनाक कथा थिक दूनू गोटे एके स्कूलमे अध्यापक छथि। मात्र अन्तर एतबे जे विनोद साहित्यक विद्यार्थीसँ अध्यापक बनलाह तँ सुरेन्द्र विज्ञानक छात्रसँ अध्यापक बनि ओहि संस्थाक प्रतिष्ठा बढ़ौलनि। ओना विनोद वयसमे सुरेन्द्रसँ जेठ तऽ छलाहे, संगहि सात वर्ष पहिनेसँ ओ ओहि संस्थामे काज करैत छलाह। महत्त्वपूर्ण वृत्त ई अछि जे सुरेन्द्रक जीवनक अध्यापक – उपलब्धि मोहमे जकड़ल रहब नहि अपितु संघर्षरत रहि उच्चतम लक्ष्यकेँ प्राप्त करबाक आकांक्षा रखैत अछि। ओ अपना जीवनमे उच्चतम मनोबलक सोझरायल लक्ष्यक परिकल्पना करैत अछि। विनोद भाग्य भविष्य आ काज पर आस्था रखैत अछि।

जखन प्रमोद द्वारा विनोदकेँ अकस्मात् ई समाचार भेटैत छैक जे सुरेन्द्र बाबू त्यागपत्र दऽ देलनि अछि, तखन ओ बिजलीक करेंट सन अनुभव करैत अछि। साइकिलसँ स्कूल दिस जाइत बाटमे सुरेन्द्रक प्रति आपकता ओ हुनक त्यागपत्रक कारणक आत्ममंथन करैत अछि। मुदा मोनेमोन आशय स्पष्ट होइत छैक, सुरेन्द्रक कल्हुका प्रश्नसँ। सुरेन्द्र काल्हि पुछने छलथिन – ''जीवनक लक्ष्य दिश चलि पड़ल व्यक्तिकेँ बाटमे भेटल छायाक प्रति जँ मोह उत्पन्न भऽ जाइक तँ ओहि बटोहीकेँ की करबाक चाहियैक?''

विनोद उत्तर देने रहथिन – ''आरामकेँ आराध्य बुझनिहार व्यक्तिकेँ लक्ष्य धरि पहुँचबाक आकांक्षा नहि करबाक चाहियैक। आराम तँ जीवन-विनाशक कीटाणु थिक। जाहि व्यक्ति पर एहि कीटाणुक आक्रमण भऽ गेलैक ओकर जीवन सड़ि गेलैक, सैह बुझबाक चाही। एही उत्तरक प्रतिक्रियास्वरूप सुरेन्द्र आइ त्यागपत्र दऽ देलनि। ओ उच्च शिक्षा प्राप्त करताह।'' विनोद आ सुरेन्द्रक आत्मदृढ़तामे किछु प्रायोगिक यैह अन्तर छैक। विनोद सुरेन्द्रक जीवन लक्ष्यक प्रश्नक उत्तर एकदम समीचीन रूपेँ देलथिन, मुदा अपना प्रति एहि दृढ़तामे पूर्ण पाक-साफ नहि छथि। ओ अपन मित्रक दृढ़तासँ कतेक आनन्दित छथि जे साइकिल पर चढ़ल रहबाक सुधि सेहो नहि रहैत छनि। कतेक दृढ़ता छनि सुरेन्द्रमे। विचारक एहि दृढ़ताक कारणेँ विनोदक हृदयमे आनन्दक लहरि आ वियोगजन्य दुःखक लहरि टकरा गेलनि।'' इएह विचारक मनः उद्‌बोधन कथा शीर्षकक समीप लऽ जा विनोदक बाहरक चोटक अनुमानतँ करेबे करैत अछि, संगहि अन्तरक चोटकेँ सेहो हल्लुक कऽ दैत अछि।

वस्तु-बोधक ओतेक व्यापकता तऽ नहि, मुदा शिल्पमे सहजताक अभिव्यक्ति जरूरे भेल अछि।

'जल समाधि' एहि संग्रहक अन्तिम कथा थिक। लेखक एहि कथामे नव-पुरान पीढ़ीक बीच उत्पन्न मनोवृत्तिमे आयल रूढ़िग्रस्तताक संगहि लोकजीवनक समसामायिक सामाजिक परिवेशमे मानवीय रूढ़िवादिताक प्रवृत्ति, संकीर्ण दृष्टिकोण आ ओहिमे आयल विद्रूपताक कारणेँ हठात् उत्पन्न विस्मय, क्षोभ आ दुःखसँ अभिभूत तथ्यकेँ रहस्यात्मक रूपमे पटुताक संग रखलनि।

खखना महींसक चरबाहक रूपमे भागमन्त बाबूक ओतयऽ काज करैत अछि। स्वयं छोटका गिरहत अर्थात् भागमन्त बाबू द्विरागमनक पश्चात् गाममे जा रहला, खखना विशेषकाल हुनके दुनू व्यक्तिक सेवा-भावमे रमल रहल। ओकरा जतबे भागमन्त बाबूसँ बम्बई-वर्णनक खिस्सा सुनबामे मोन लगैत छलैक ततबे नवकी गिरहतनीक गम-गम

करैत नूआ खिचबामे। मुदा जखन द्विरागमनक मास दिनुक बाद भागमन्त बाबू अपन नौकरी पर बम्बई चल जाइत छथि तखन हुनक कनेञाकेँ एकोरत्ती नीक नहि लगैत छलनि, कियैक तऽ ने ननदि ने देयोर रहनि। आङनमे बूढ़ी सासु आ बाहरमे बूढ़ा ससुरक अतिरिक्त एक मात्र खखना नोकर। परिवारक नामे गाममे इएह तीन-चारि गोटे छल।

कथामे अकस्मात् अतिरंजकताक पराकाष्ठा क्षणसँ जे परिस्थिति गुम्फित भऽ गुमड़ल ओ थिक– 'बूढ़ा जखन आङनमे पैर दैत छथि तँ भनसा घरकेँ ओसारा पर खखनाकेँ खिखिआइत देखलथिन। एके पटिया पर एक कात कनेञा आ दोसर कात खखना बैसल, बीचमे तास पसरल आ कनेञा अङैठीमोड़ करैत दुनू बाँहिकेँ उपर दिस उठौने। एहन स्थिति-परिस्थितिसँ बूढ़ाकेँ तरबाक लहरि मगज पर कोना नहि चढ़ितनि? ओ तामसे पाँच-सात घरमेच्चा खखनाकेँ आ दुइ-चारि लात पुतोहुकेँ लगा दैत छथिन। खखनाक चीत्कार आ कनेञाकेँ ओंघड़ायल देखि बुढ़ी बजलीह – 'ई की कयलहुँ, कनेञाकेँ किछु छनि। तखुनका वातावरणक परिदृश्य एकदम तिलसँ ताड़ भऽगेल, फोंसरीसँ भोकन्नर भऽ गेल। गप्पकेँ रातियेमे अण्डा भेलैक, प्राते बच्चों भेलैक से फर्र फर्र भरि गाम उड़ऽ लागल। बूढ़ा-बूढ़ी कतहु गाममे मुँह देखयबा योग्य नहि रहलाह खखनाकेँ निकालि देल गेल।

जखन बूढ़-पुरानक सह पर खखनाकेँ मारिकऽ लीढ़मे घोंसिअयबाक योजना बनल, कनेञा एहि वस्तुस्थितिसँ ओकरा अवगत करौलनि – ''मगनीमे अहाँक जान चल जायत आ हम कलंकिनी भेल जीवन भरि काहि कटैत रहि जायब। अहाँ हमरा बम्बई पहुँचा दियऽ।'' .... ओमहर भागमन्त बाबूकेँ जखन एहि घटनाक संदर्भमे बापक चिट्ठी भेटैत छनि तऽ ओ विस्मय-विमुग्ध रहि जाइत छथि। एम्हर गाम समाजमे अनघोल छल जे दछिनवारि गामबाली खखना संग उढ़रि गेलथिन। ओही राति कनेञा गहना-गुरियाक-टाका-पैसा सभ एकटा पेटीमे सरिया खखनाक संग बम्बई भागि जाइत छथि।

चिट्ठीकेँ तार बूझि भागमन्त बाबू जखन गाम पहुँचैत छथि तँ एतऽ ने ओ रामा ने खटोला। एहि बात लऽकऽ दुनू बापुतमे खूब त्वंचाहंच भेलनि। खखना ओमहर नवकी गिरहतनीकेँ लऽ बम्बइ पहुँचल, महानगरीमे कतेको खाक छानला पर भागमन्त बाबूक डेरा भेटलैक किन्तु भागमन्त बाबूक पते नहि। एम्हर कनेञाकेँ पूर्णमास भऽ गेलनि आ अस्पतालमे एकटा कन्या जन्म लेलकनि। एहि दुःखक समयमे जेँ ओ जन्म लेलकनि तेँ ओकर नाम दुखनी रखलथिन। ओही अस्पतालमे एकटा सेठानीकेँ सेहो बच्चा भेल रहैक। सेठानीक मरणासन्न भऽ गेलाक कारणेँ ओकरो बच्चाकेँ यैह दूध पियबैत छलीह। संयोग भेलनि जे ओ सेठ हिनकालोकनिकेँ आश्रय देलकनि।

कथाकार द्वारा एहि संयोगमे कथातत्त्वमे एकटा नव चमत्कारक समावेश तखन देखबामे अबैत अछि जखन ज्योतिषीक कहला पर सेठ स्त्रीक ग्रह शान्त्यर्थ एकटा अनुष्ठान कराबऽ लागल। ब्राह्मणी जानिअनुष्ठानक सभटा ओरियान कनेञाकेँ देल गेलनि। पण्डितजी आसन पर अयलाह की हुनका चकबिदोड़ लागि गेलनि। आश्चर्यमिश्रित स्वरमे कहलथिन – 'चानो दाइ थिकहुँ अय् ! कनेञा अपन नाम सुनि चौंकलीह। तखन दाढ़ीक झोंझमे नुकायल मुहकेँ चिन्हलनि। ई तँ पुरोहितक गामवला ओझा छला। ओ बेचारे अपन स्त्रीक हत्याकऽ दाढ़ीक झोंझमे अपनाकेँ कानूनक आँखिसे नुकौने छलाह।

आब अनुष्ठानी महोदय कनेञाकेँ अपना जालमे फँसयबाक उपक्रममे लागि गेलाह। कनेञा बेचारो जे एकटा अपन लोक पाबि आश्वस्त भेलि छलीह से उनटे सिद्ध भेलनि। अपन सतीत्वक रक्षा जे एतेक यत्नसँ करैत आबि रहल छलीह ताहि पर आँच लगबाक आशंका दृढ़सँ दृढ़तर होइत गेलनि। निरीह, अबला एवं अनाथकेँ जीवन भार होअऽ लगैत छैक। एहना स्थितिमे आत्महत्या लेल विवश भऽ एकटा पत्र खखनाकेँ लिखसनि –

चि.खखन ! शुभाशिष।

हमरा बुझना जाइत अछि जे पूर्व जन्ममे अहाँ हमर बेटा छलहुँ अथवा भाय। आजुक युगमे बेटो-भाय एतेक नहि करैत छैक। हमरे द्वारे अहाँकेँ कलंकित होअऽ पड़ल, घरद्वार, माय-बाप सभक त्याग करऽ पड़ल। एहि प्रदेशमे भरि-भरि राति अहाँ बाहरमे हमरा हेतु कष्ट कटैत रहलहुँ। अपनो ...। ओ शास्त्र-पुरान सत्यथिक तँ हम अगिला जन्ममे पुनः अपना पतिकेँ अवश्य प्राप्त कऽ लेबनि। .... अहाँक भरोस पर हम दुखनीकेँ छोड़ि समुद्रक शरणमे जा रहल छी। जे अनकर रक्षा करैत छैक, भगवान तकर रक्षा करैत छथिन।

खखना जखन 'ड्यूटी' परसँ घुरि कऽ अबैत अछि तँ पत्र पढ़ि सन्न रहि जाइत अछि। ओ भागमन्त बाबूक पिताक नामे पत्र लिखि 'छोटकी गिरहतनी समुद्रमे कुदि अपन हत्या कऽ लेलनि अछि', तकर जानकारी चरण सेवक रूपमे दैत एहि रहस्यकेँ सेहो उद्घाटित करैत अछि जे बम्बइक लोक बुझैत छलैक ई स्त्रीआ बेटी खखनेक थिकैक ... ओ हमर स्त्री नहि गिरहतनी छलीह।... समुद्रक तरंग महालक्ष्मीक मन्दिरक पाछूमे बनल महावीरजीक मन्दिरसँ टकराइत छलैक आ नवकी गिरहतनीक स्मृति-तरंग एकरा हृदयसँ टकरा रहल छलैक ...। एकबेर छपाक् शब्द भेलैक, किन्तु ई के बुझैत जे आत्मग्लानिसँ भरल कोनो आत्मा जलसमाधि लऽ लेलक।

वस्तुतः इएह मानवीय संवेदनासँ उत्पन्न ग्लानिबोध कलंकित होयबासँ बचबा लेल एक दिस नवकी गिहतनी अर्थात् दछिनवारि गामवाली कनेञाकेँ विवश कऽ दैत अछि। आत्महत्याक बाट पर चलबा लेल तऽ दोसर दिस खखनाकेँ जलसमाधि लेबाक लेल। यद्यपि चारित्रिक दृढ़ता एवं सतीत्व-शील नवकी कनेञा आ खखनामे ओतबे स्वच्छ अछि जतेक ओहि महासमुद्रक ओ पवित्र जल। तथापि प्रत्यक्षोमे जेना प्रमाणक अभाव, सत्योमे विश्वासक कमी, आ दृढ़तामे संशय एहि पात्र सभमे अकुलाहटि आनि देने अछि।

'जल-समाधि' कथासंग्रहक अतिरिक्तो कथाकारक अनेक कथा पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि।

'दैता पोखरि' मिथिला मिहिरमे सितम्बर 1960 मे प्रकाशित भेल अछि। कथाक नायक मंगलाक लोहरसारिक व्यवसाय खूब प्रगति पर अछि। गामक सभटा बिकाउ जमीन वैह कीनैत अछि। बिसुनी बाबू अपन कन्यादानक अवसर पर चारि कट्ठा कलमबाग बेचऽ चाहैत छथि। धरखन बाबू कम दामे कीनऽ चाहैत छथि। मंगला उचित दाम दऽ कीनि लैत अछि। धरखन बाबू ईर्ष्यावश मंगलाक विरुद्ध षड्यंत्र रचब आरंभ कऽ दैत छथि। बलात्कारक मिथ्या आरोप मंगला पर गढ़ल जाइत छैक। ओकरा सामाजिक रूपसँ जुर्मानाक संग जाति-समाजसँ निकालि देल जाइत छैक। ओ अपन लोहरसारि दैता पौखरि पर लऽ जाइत अछि। मधुश्रावणीक अवसर पर अन्य कन्या सभक संग धरखन बाबूक नवविवाहिता कन्या फूल तोड़ऽ दैतापोखरिक कछेड़ पर अवस्थित फूलक गाछ पर चढ़ैछ आ कुसंयोगे डारि टूटि गेलाक कारणेँ अथाह जलमे खसि पड़ैत अछि। मंगला ओकरा उबडुब करैत देखियोकऽ मिथ्या कलंकक दुआरेँ ओकरा बचयबाक लेल नहि जाइत अछि। इएह एहि कथाक कथासार अछि। एकर कथ्य एकटा प्रगतिशील युवक आ समाजक षड्यंत्रकारी, ईर्ष्यालु लोकक बीचक घटना थिक। कथाकार द्वारा सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य कयल गेल अछि।

'आब एकरे लोक त्याग कहैत छैक' ई कथा मिथिलामिहिरमे जून 1978 मे प्रकाशित भेल अछि। एहि कथाक सार तत्त्व अछि जे पितृविहीन कन्या पुनीताक विवाहक कथा प्रोफेसर साहेबक बेटाक संग चलैत छैक। सभ किछु ठीक भेल मुदा टाकाक लेन-देनक व्यवस्था बाधक भऽ रहल छैक। वरक मातामहकेँ एहि कथाक लेल दोसर कन्यागत एकासी हजार देबाक लेल तैयार छैक तेँ ओतबा हुनका भेँटबाक चाहैत। पंडितजीक कहलासँ एकैस हजारक त्याग करबा लेल तैयार होइत छथि मुदा वरक पिताकेँ अपन कन्यादानमे लागल साठि हजार टाका लेब आवश्यक छनि ओही

कारणेँ ई कथा नहियो भऽ सकैत छल।

विवाहमे बाधक तत्त्व टाकाक लेन-देन, गरीब ओ अनाथ कन्याक विवाहक समस्या, काटर प्रथा आदि समाजक व्याधि बनल अछि। दहेज लोभी वर पक्ष पर सटीक एवं कठोर प्रहार कयल गेल अछि। शैली व्यंग्यात्मक अछि।

'जीरो पावर' मिथिला मिहिरमे सितम्बर 1973 मे प्रकाशित भेल। तहिना 'झपासा' (लोक-कथा) मिथिला मिहिरक अप्रैल 1974 अंकमे प्रकाशित भेल। **'आतंक'** मैथिली दर्शन मार्च-अप्रैल1977 मे। **'उनटा गायत्री'** मिथिला मिहिर दिसम्बर 1980 मे। **'एक कौआ एक मनुक्ख'** मिथिला मिहिर अक्टूबर 1976 मे। **'ओकर नाम छलैक'** गल्पसुधा सं. 1964 मे। **'की ई विश्वास करब?'** मिथिला दर्शन अगस्त 1955 मे। **'गदहा गुणक खान'** व्यंग्य कथा **'मिथिला मिहिर'** अप्रैल 1981 मे। **'गोत्रन्नो बर्द्धताम्'** मिथिला मिहिर सितम्बर 1976 मे। **'भूखन भायक असौकर्य'** मिथिला मिहिर अक्टूबर 1960 मे। **'भूखन भाइक चुट्टक्का'** मिथिला मिहिर सितम्बर 1960 मे। **'मैना पीसी'** मिथिला दर्शन 1959 मे। **'राशिफल'** बतहू मिसरक नामसँ मिथिला मिहिर सितम्बर 1960 मे। **'जँ मौगी रहितहुँ'** सितम्बर 1965 मे। **'समाजक मुँह'** (त्रिफला) 1948 मे। **'छी हम बड़ सावधान लोक'** मिथिला मिहिर सितम्बर 1981 मे। **'मातृनवमीक नोँत'** मिथिला मिहिर नवम्बर 1974 मे। **'लिच्चीक महादेव'** मिथिला मिहिर सितम्बर1983 मे।

उपर्युक्त कथा सभक मूल्यांकनक सुयोग उपस्थित नहि कऽ हम मात्र एकर प्रकार आ प्रकाशनक सूचना देल अछि। ओना पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जीक ई कथा सभ विभिन्न सामाजिक-समस्या, समय-कालक-स्थिति-परिस्थिति, व्यंग्य-विनोद आ दर्शन-दिशाक एकटा उद्देश्यात्मक मंजूषा कहल जा सकैछ।

वस्तुतः एकर अवगाहन उद्देश्ये कोनो साहित्यकार वा कथाकारक 'मूल्यांकन' सुयोगकेँ उपस्थित करैत अछि। 'अस्तु'।

'जल समाधि'क वस्तु-शिल्प

डॉ० अरुणकुमारकर्ण

श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क योगदान मैथिली कथोक क्षेत्रमे उल्लेखनीय रहल अछि। मैथिली भाषाक विभिन्न पत्र ओ पत्रिकामे एवं कथा-संग्रह ओ कथा-संकलनमे हिनक कतिपय लघु, दीर्घ एवं हास्य-व्यंग्य-कथा सभ प्रकाशित अछि।

नवरत्न गोष्ठी, मिश्रटोला (दरभंगा) द्वारा हिनक चर्चित कथा सभक एकगोट संग्रह 'जल-समाधि'1972 इ० मे प्रकाशित भेलनि, जाहिमे नओ गोट कथा क्रमशः कथा-व्यथा, प्रतिक्रिया, सुराही, हमर कोन दोष, गोबर छत्ता, आत्महत्याक पूर्व, जाड़ा फेनो अओतो, हल्लुक चोट आ जल-समाधि संकलित अछि। कथाकार एहि कृतिकँ शिक्षा-जगतक अविस्मरणीय व्यक्तित्व श्रीयुत झिंगुर कुमरजीक कर-कमलमे सादर समर्पित कयने छथि। आचार्य सुमन द्वारा लिखित 'परिचय' एवं डा० शैलेन्द्रमोहनझा द्वारा व्यक्त विचार 'कथा ओ कथाकार'क महत्त्वक ऐतिहासिक अछि। प्रायः सभ कथा गंभीर-विचार-प्रधान थिक। हल्लुको कथा सभ गंभीरताक धरातलकँ स्पर्श करैत अछि। हास्यक परिवेश ओकर गंभीरताकँ नष्ट नहि कयने अछि।

आर्थिक विपन्नता स्वस्थ रचनाकारकँ सेहो विमुख करैत अछि। रचनाकार एवं पत्रकार दूनू गोटेक स्थिति प्रायः एके सन रहैत अछि। दुनू गोटे दरिद्रताक संग संघर्ष करैत अपन अस्तित्वक प्रति साकांक्ष रहैत छथि। एहि पर सभ किछु समर्पित करब श्रेयस्कर बूझैत छथि। रचनाकार जँ जीवनक सुख-सुविधाक प्रति कनेक उद्वेलितो होइत छथि तँ पत्रकार अपन निःस्वार्थ सेवासँ हुनक विचलन एवं मोहकँ दूर करैत छथि। यैह भाषा, मातृभाषा ओ साहित्यक सेवा थिक। यैह व्यथा कथाकार अपन पहिल कथा 'कथा व्यथा' मे व्यक्त कयलनि अछि।

कथानायक रमेश पत्रकार छथि। पन्द्रह अगस्तक अवसर पर विशेषांक बहार करबाक योजना छनि। एहि क्रममे ओ ओजस्वी कथाकार, तेजस्वी कवि ओ मनस्वी लेखक आदिक सूची बना लेने छथि आ एक गोट प्रतिष्ठित कलाकार अंगारजीक ओहिठाम एकगोट कथा प्रयोजनक सिद्धिक हेतु जाइत छथि। अंगारजी पहिने अपन घरक बदहाल स्थिति, सरकारी तंत्रक दुरुपयोग एवं देश ओ समाजक दयनीय दशा आदिपर चोट करैत छथि। एहि सभसँ किछु होमऽवला नहि थिक, पत्रकारिता बेकारक चीज थिक, व्यर्थ एहिमे लागल छी आदि ...आदि विषयपर विचार एवं आक्रोश व्यक्त करैत रचना देबासँ हिचकैत छथि। किन्तु, जखन अंगारजीकँ एहि तथ्यक ज्ञान होइत छनि जे रमेश विशेषांकक आर्थिक पूर्त्तिक हेतु अपन हाथक घड़ी बेचि लेने छथि तखन ओ करुणासँ व्यथित होइत यथासंभव सहयोगक हेतु तत्पर होइत छथि।

लेखक मैथिली साहित्यक पैध रचनाकार छथि। तँ अपन कथाक विषय साहित्यसँ जुड़ल यथार्थ समस्याकँ रखलनि अछि। 'कथा व्यथा'क रचनाक अतिरिक्त साहित्यसँ जुड़ल व्यक्तित्वक दयनीय दशा ओ मानसिक अवस्थाक चित्रण एवं साहित्यकर्मीलोकनिक निःस्वार्थ अवदानक पृष्ठभूमिक अभिज्ञानक मार्ग प्रशस्त कयलनि अछि, जे कथानायक रमेशक उक्ति – 'मातृभाषाक सेवकलोकनिमे अधिकांशक तँ यैह हाल रहलनि अछि। इतिहास उनटा कऽ देखू। भने आजुक छौंड़ा सभ गारिये पढ़ौक', एहि बातक सार्थकताक हेतु पर्याप्त अछि।

एक दिस मनुष्यक सभ्यता जँ द्रुतगतिएँ बढ़ि रहल अछि तँ दोसर दिस ओकर भीतर निवास करैत मनुष्यता सेहो किकिहारि काटि रहल छैक। जेना मोड़िक पिलुआ गन्दगीक सड़ल-गन्हाइत प्रवाहमे अपनाकँ पूर्ण सुखी बुझैत अछि, तहिना आजुक भौतिकवादी सभ्यतामे पालित मनुष्यक स्थिति छैक। आन्तरिक पवित्रतापर लोककँ संशय भऽ रहल

छैक। आचार-विचारक कोनो गति नहि रहि गेलैक अछि। सम्बन्ध स्वार्थकभत्तिपर ठाढ़ छैक। तेँ बिनु प्रतिदानक सेवा लेबासँ लोक चुकैत नहि अछि। दिनानुदिन अध्ययनक महत्त्व घटल जा रहल अछि। उपर्युक्त तथ्यक पुष्टि कथाकार 'प्रतिक्रिया' नामक कथाक माध्यमसँ करैत छथि।

'सुराही' शीर्षक कथा एकटा वृद्ध मुन्शीजीक अपन मृत पत्नीक प्रति समर्पित अनुराग ओ स्नेहकेँ उद्घाटित करैत अछि। ई कहलो गेल छैक जे सर्वाधिक प्रिय मित्र वृद्धकेँ पत्नी होइत छैक। मुन्शीजीक पत्नी जीवित नहि छथिन, किन्तु हुनक हाथक सुराहीसँ जलग्रहण करबामे अपूर्व तृप्तिक अनुभव करैत छथि, पर्याप्त संतोष भेटैत छनि तथा अत्यन्त आनन्दित होइत छथि। तेँ कविजी द्वारा प्रदत्त नव सुराहीकेँ ग्रहण नहि करैत छथि, अपितु ओ हुनकासँ किरमिच रंगक याचना करैत छथि, जाहिसँ पत्नीक हाथक सुराहीकेँ पहिलुक रंगमे रंगबाक इच्छा छलनि, से प्रकट होइत छनि। हुनक सुराही फूटि गेल छनि, जकरा ओ भोजन छोड़ि भरि दिन हरान भऽ दुरुस्त कयने छलाह। ओहि सुराहीक विशेषताक प्रसंग हुनक कथन द्रष्टव्य थिक – 'कविजी! हम कोना मोनक वेदना प्रकट करू। ई सुराही हमरा जे नेना छथि तनिका माइक हाथक थिकनि। एहि सुराहीक जल ढारिकऽ जखन पिबैत छी तखन जे तृप्ति होइत अछि तकर अनुभव दोसर कोनो सुराहीसँ नहि भऽ सकैत अछि।'

अतएव कथा पढ़बामे हल्लुक सन लगैत अछि किन्तु विचारक गंभीरतासँ परिपूर्ण अछि। युवालोकनिक अतिरिक्त वृद्ध मानसमे सेहो भाव एवं प्रेमक भूख रहैत छैक आ ओहिसँ तृप्त होमऽ चाहैत अछि। वस्तुतः वास्तविक प्रेमक कसौटी जीवनक चरमावस्थामे परिलक्षित होइत अछि। कथाकार एकगोट प्रेमी (वयोवृद्ध मुन्शीजी)क संवेदनशीलता एकगोट कविसँ अधिक प्रखर देखएबाक प्रयास कयलनि अछि।

'हमर कोन दोष' सौराठ सभापर केन्द्रित अछि। एहिठाम वैवाहिक सम्बन्ध दहेजक आधारपर होइत देखाओल गेल अछि। वरपक्ष कन्यागतसँ अधिकाधिक टाका लेबाक फेरमे रहैत छथि आ कन्यागत यथासंभव ओहिमे कटौतीक गुंजाइशमे लागल रहैत अछि। मध्यस्थता कयनिहार एक सय टाका एमहरसँ तँ पचास टाका ओमहरसँ तथा दुनू दिससँ पाँच टाका प्रतिशतक हिसाबसँ अर्जन करैत छथि। यैह थिक मैथिल ओ मिथिलाक सौराठ सभाक अवधारणा। यद्यपि मूल, पाँजि आ गोत्रक नगण्यता दिस समाज अग्रसर भऽ रहल अछि तथापि ओहि समाजकेँ टाकाक न्यूनता कथमपि स्वीकार नहि।

जँ पढ़ी नहि तँ शहरो अवश्य घूमि ली। कहलो गेल छैक शहर सिखाबए कोतवाली। शहरमे रहनिहार लोक चड़फड़ होइत छथि, अन्यथा अर्थक अज्ञानतासँ लोक धोखा खाइत देखल जाइत छथि। तेँ मद्धुक उत्तर छलैक जे जँ हमर वाक्यक अर्थ अपनेकेँ नहि लागल तँ एहिमे हमर कोन दोष? जँ एहि कथाक शीर्षक 'स्टोमेक इनचार्य' रहैत तँ कोनो विशेष अनर्गल नहि होइत। जाहि ढंगसँ धनक अर्जन होयत, तहिना खर्चो होयत, से तय थिक।

अमीरीक सारा पर पनुगल गरीबी अत्यन्त कष्टकर होइत अछि। 'गोबर छत्ता' शीर्षक कथामे कथाकार जमीन्दारी उन्मूलनक पश्चात् जमीन्दारक होइत आर्थिक क्षरण दिस ध्यान केन्द्रित कयलनि अछि। जँ पूर्वज शोषण अथवा पापसँ धन अरजलनि तँ ओकर सजाय हुनक उत्तराधिकारीकेँ होनि, से कथाकारक दृष्टिमे न्यायसंगत नहि थिक।

फल्लाँ बाबूक बाबाकेँ छाता नहि, छत्ता रहनि। खानदानी शान रहनि। इमर्जेन्सीक स्थितिमे ओकर मात्र मूठ बेचलनि तँ बीस हजार टाका प्राप्त भेल रहनि। किन्तु, आब आर्थिक विपन्नताक स्थितिमे ओ शान (छत्ताक शेष भाग) केँ बेचबाक हेतु उद्यत छथि जकर मूल्य मात्र पन्द्रह टाका छैक। वस्तुतः ओ आब गोबरछत्ते सिद्ध भऽ रहल छनि।

एतबा होइतहुँ ओ अपन खानदानी मर्यादाक निर्वाह करैत छथि। खानदानक प्रतिष्ठाक प्रति मोह छनि। कौलिक बड़प्पनमे उत्साहक अनुभव करैत छथि। विभवहीन होइतो अतिथिकेँ देवता बुझैत छथि। हुनक यथोचित सेवा-सत्कार

अत्यन्त आदर ओ विनीत भावसँ करैत छथि। हवेलीक मर्यादाकेँ अक्षुण्ण रखने छथि। अपन कौलिक परम्पराकेँ बिसरि नहि सकलाह। हुनका मात्र एहि बातक भय छनि जे हमर स्थितिक भंडाफोड़ ने भऽ जाय जे हमर कौलिक परम्पराक उपहासक कारण बनत। तेँ ओ कथाकारसँ कहैत छथिन जे ककरो कहबैक नहि जे बाबूसाहेब छत्ता बेचऽ चाहि रहल छथि। जमीन्दारक बदलैत परिवेशक चित्रणमे कथाकार अत्यन्त सफल भेलाह अछि। छत्ताक गुणवत्ताक संग ओकर उपायदेयता एवं सौंदर्यक वर्णन मनकेँ मोहित करैत अछि।

पत्नीकेँ जीवनसंगिनी कहल गेल छैक। तेँ दाम्पत्य जीवनक सफलताक हेतु दुनूगोटेकेँ डेगमे डेग मिलाए चलऽ पड़ैत छैक। पारस्परिक विश्वास सेहो एहि हेतु परमावश्यक छैक; अन्यथा जीवन नरक सन बुझना जाइछ।

पत्रात्मक शैलीमे लिखल 'आत्महत्याक पूर्व' शीर्षक कथाक कथानायक अमलेन्द्र, पत्नी अनुकूल नहि छथिन तेँ ओ परेशान छथि। कहुना ओ हुनका संग जीवन व्यतीत करैत छथि। हुनक धैर्यक पराकाष्ठा तखन टूटि जाइत छनि जखन अपने विवाहिता हुनकापर चरित्रहीनताक आरोप लगबैत छथिन। अतएव पलायनवादी कहबिहुँ आत्महत्याक हेतु विवश छथि। तथापि हुनका अपन संतानक प्रति अत्यन्त मोह छनि। हुनक उच्च शिक्षा-प्राप्तिक हेतु ओ दस हजार टाकाक बीमा करओने छथि। हुनका डर छनि जे हुनक मृत्युक पश्चात् प्राप्त एहि राशिक दुरुपयोग ने भऽ जाय अपितु मात्र हुनक संतानक उच्च-शिक्षाक प्राप्तिमे व्यय हो, से ध्येय छनि। संगहि बीमित राशिक प्राप्तिमे कोनो तरहक व्यवधान उपस्थित नहि हो, एहि हेतु ई आत्महत्या रहस्यमय अर्थात् गोपनीय बनल रहय। एहि दुनू बातकेँ ओ पत्रक माध्यमसँ सुनिश्चित करऽ चाहैत छथि।

मनुष्य संतानक जीवनमे अपन जीवन-दर्शन देखैछ। लोककेँ अपन नेना सर्वाधिक प्रिय होइत छैक। ओ हमरा मुइलाक बादो हमर नामकेँ जीवित राखत, से कथानायकक मन ओ मस्तिष्कमे रहैत छनि। अतएव संतानक सुखद भविष्यक कल्पनाकेँ साकार करबाक हेतु सतत प्रयत्नीशल रहैत छथि। कथाकार एहि यथार्थ सभक प्रतिपादनमे सफल भेल छथि।

कहल जाइछ जे ई संतान (पुत्र-रत्न) मनुष्यक आँखिक डिम्हा होइछ। जँ आँखि जीवन-ज्योति थिक तँ संतान सुख-शान्ति एवं उज्जवल भविष्यक साकार प्रतिमूर्ति होएबाक संग जीवनकेँ सार्थकता प्रदान करैछ। ई सम्बन्ध मानव-हृदयक मर्मकेँ स्पर्श करैछ। ओकर क्षतिसँ लोक अपन प्रिय आँखि पर्यन्त फोड़ि सकैत अछि। सूरदास कहाए अपन जीवन व्यतीत करब उचित बुझैत अछि। 'जाड़ा फेनो अओतो' शीर्षक कथाक विषयवस्तु उपर्युक्त तथ्यपर आधारित अछि।

एहि कथामे एकगोट भिखमंगा सूरदासक चारित्रिक उत्कर्ष अत्यन्त आकर्षणक केन्द्र रहल अछि। यद्यपि सूरदासकेँ ईश्वरपर पूर्ण आस्था छैक। किन्तु, ओ ईश्वरक नाम भजा कऽ भिक्षाटन करब अनुचित बुझैत अछि। ओ कहैत अछि जे – 'हम भगवानक नाँ भँजा कए नहि खाए चाहैत छी। जे सीताराम-सीताराम कहैत रहैए तेकरा सबकेँ ध्यान ढ़ेउआ पर रहैत छै। ऊ ढेउएकेँ सीताराम बुझैत छै। भगवानक नाम कण्ठसँ नहि हृदयसँ लेबाक चीज छैक। पापीकेँ हृदयसँ भगवानक नाम बहारइते ने छै।'' बिनु टिकटकेँ गाड़ीक सीटपर बैसब ओ पाप बुझैत अछि। जेँ कथाकार ओकर पुत्र द्वयक प्राइमरी स्कूलक संगी ओ संग पढ़निहार छथि, तेँ हुनक शरीरक स्पर्शसँ ओकरा एक प्रकारक सान्त्वना भेटैत छैक। भिखमंगाक विवशता ओ ओकर वैचारिक उत्कृष्टताक चित्रणमे कथाकार अत्यन्त सफल भेल छथि।

अतरंग मित्र वैह कहबैछ जकर मन अपन मित्रक विचलन ओ मानसिक अन्तर्द्वन्द्वसँ दूर भऽ श्रेयस्कर मार्ग दिस अग्रसर होइत देखि हल्लुक होथि।' हल्लुक चोट' शीर्षक कथामे जँ एहि बातकेँ राखल गेल अछि, तँ कथाक आयाम शिक्षकक व्यथित ओझरौटपर केन्द्रित अछि। कथामे कथानायक सुरेन्द्रक चारित्रिक उत्कर्षपर प्रकाश देल गेल अछि।

शिक्षककेँ सेहो अपन जीवन भारकेँ वहन करबाक समस्या छनि। अपन परिवार छनि। अतिथिलोकनिक सत्कार छनि आ ग़रीब छात्रलोकनिक सहायता करब सेहो आवश्यक छनि। आदर्श शिक्षकक जे गुण थिक, यथा छात्रक प्रति पिताक समान भाव राखब, छात्रहितक प्रति सचेष्ट रहब, विवश ओ लाचार छात्रक प्रति सहानुभूति राखब, उपरसँ क्रूर रहितहुँ छात्रहित हेतु भीतरसँ हृदयकेँ मोम सन मोलायम राखब .... आदि होइतहुँ, आर्थिक विपन्नता एवं दूषित शैक्षणिक वातावरणक आगाँ हुनका नतमस्तक होमऽ पड़ैत छनि। अतएव जे अपूर्ण शिक्षाकेँ छोड़ि शिक्षकक पदपर नौकरी करैत छथि, से अन्य उत्तम पदक प्राप्तिक हेतु उच्च शिक्षाक प्राप्ति दिस अग्रसर होइत छथि। यैह एहि कथाक सार थिक।

जलमे डूबिकऽ मरि जाएब आत्महत्याक सरल उपाय थिक। निरीह, अबला एवं अनाथ जखन अपन जीवनकेँ भार बुझऽ लगैत अछि तखन ओकरा हेतु आत्महत्याक अतिरिक्त दोसर कोनो रास्ता नहि रहि जाइत छैक। किन्तु, आत्मग्लानिसँ भरल आत्मा जलमे डूबि अपन प्राण त्याग करैछ, जलसमाधि थिक। अतएव आत्महत्या एवं जल समाधिक बीच उपस्थित अन्तराल जल-समाधि शीर्षक कथामे व्यक्त भेल अछि।

अधलाहक आशंकासँ ग्रसित समाजक सोच विपरीत सेहो भऽ सकैत अछि। ओ ई नहि सोचैत अछि जे एहि तरहक आशंका कतहु जलसमाधिक रूप ने लऽ लेअय। आशंका मनक विकार थिक ने कि सत्यक उद्घाटन। समाजक एहि मनोदशासँ लड़बाक साहस खखनाकेँ नहि भऽ सकलैक आ ओ जलसमाधि लऽ लैत अछि।

दूनू तरहेँ मनुसँ उत्पन्न जीवक अन्त होइत छैक, किन्तु, एकगोट आत्महत्या तँ दोसर जलसमाधि कहबैछ। अपन लोक-लाज, इज्जति-आबरू बचएबाक लेल कयल मृत्युक आलिंगन आत्महत्या थिक। एहिमे स्वार्थक भावना निहित रहैत छैक। पलायनवादीक प्रवृत्ति रहैछ। अपन भार ओ उत्तरदायित्वकेँ दोसरापर छोड़ि निश्चिन्त होएबाक प्रवृत्ति होइत छैक। एहि भारसँ मुक्तिक हेतु घटनाक पूर्व सूचना देबाक परिपाटी प्रायः रहलैक अछि। जीवनक संघर्षसँ उत्पन्न अकुलाहटिक स्थितिमे लोक आत्महत्या करैछ अर्थात् मृत्युक वरण करैछ। यैह बात जँ आनक लेल, ओकर मर्यादा अक्षुण्ण रखबाक हेतु निः स्वार्थ भावसँ कयल गेल जलसमाधि थिक। एहि हेतु समाज पूर्णरूपेण दोषी अछि। बिनु बुझने सुझने अतिशीघ्र ककरो दोषी कहि निश्चिन्त भऽ जाइत अछि। सत्यक उद्घाटन ओकरा लेल ओतेक महत्त्वक नहि रहि जाइत छैक। अतएव कथाकार एहि कथामे आत्महत्या एवं जलसमाधिक विश्लेषण कऽ अत्यन्त सफलताक संग दूनूक प्रतिपादन कयलनि अछि।

'जल-समाधि' कथा संग्रहमे कथाकारक 1960–70 दशकक कथा सभ संग्रहित अछि। एकगोट कथा (हल्लुक चोट) केँ छोड़ि एहि संग्रहक सभटा कथा 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित अछि। 'जाड़ा फेनो अनोतो' मिथिला मिहिरक अतिरिक्त 1971 ई०मे प्रकाशित 'कथापुष्प' मे सेहो संकलित छल।

आलोच्य कथा-संग्रहक निहित कथा सभमे समाजक विविध चित्र उपस्थापित भेल अछि। कथाकार यथार्थ जीवनक अन्वेषणक प्रति कटिबद्ध छथि।

अमरजीक कथाक मूल तत्त्वपर प्रकाश दैत डा० शैलेन्द्रमोहनझा लिखैत छथि – जीवनमे यथार्थक ई अन्वेषण सैह जेना वास्तविक कथाक अन्वेषण थिक। 'अमर'जीक कथामे अन्वेषणक इएह प्रयास परिलक्षित अछि। अनुभवक मर्म हिनक कथाकेँ सुवासित करैत अछि तथा समीक्षात्मक प्रवृत्ति ओहिमे स्वाद जगबैत अछि। ई कथा सभ शून्यमे प्रसारित वक्तव्य मात्र नहि रहि एक अन्य समानधर्माक उपस्थितिक आभास दैत अछि। वस्तुतः कथा एवं पाठक दुनूक अवस्थिति जीवनक विडम्बना, असत्य एवं विद्रूपकेँ अस्वीकृत कऽ ओकरा सत्य, सौन्दर्य ओ सुरुचिसँ युक्त करैछ आ तखनहि जीवन जीबाक योग्य बनि सकैछ। अमरजीक कथाक मूल तत्त्व इएह थिकनि।'

अधिकांश कथा साहित्य ओ साहित्यकारसँ जुड़ल विषयवस्तुपर आधारित अछि। प्रायः प्रत्येक कथामे साहित्य अथवा साहित्यिक गतिविधिक चर्चा अवश्य भेल अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे कथाकार साहित्यक प्रति समर्पित व्यक्ति छथि। गुरु-शिष्य परम्परापर अवलम्बित कतिपय कथा दृष्टिगोचर होइत अछि। तैं ओं उपदेशपरक कथाक कोटिमे आओत। निबन्धात्मक विवरण कथानकक गतिकैं कमजोर बनओलक अछि। तैं एक-आधगोट कथा हल्लुक सन लगैत अछि। किन्तु, विषयवस्तु ओ उद्‌देश्यक दृष्टिएँ ओकर महत्त्व कम नहि कहल जा सकैत अछि।

हास्यक उपस्थापन हिनक स्वाभाविक गुण-धर्म थिक। किन्तु, व्यंग्यक गम्भीरता विशेष हावी होइत दृष्टिगोचर होइत अछि। सूत्रात्मक वाक्य एवं संवादमे हास्यक पुटसँ कथा रोचक भेल अछि। घटनाक संयोजनक अपेक्षाकृत भाषाक प्रवाहमे हास्य-प्रदर्शन उत्कृष्ट भेल अछि। जे कथाकैं जीवन्त बनबैत अछि। अश्लील हास्यक प्रदर्शन हिनक ध्येय नहि छनि। नाटकीयताक आंशिक प्रवाह रहितहुँ कथानक गति न्यून नहि भेल अछि। अति सूक्ष्म अनुभूतिकैं कथाक दीर्घ आयाम देबामे ई सिद्धहस्त छथि। तैं कथ्य ओ शिल्पक दृष्टिएँ सेहो हिनक कथा सभ उल्लेखनीय अछि।

सरल, सहज, प्रौढ़ एवं आलंकारिक भाषाक प्रयोग हिनक कथा सभमे परिलक्षित होइत अछि सम्प्रेषणीयता हिनक कथाक मौलिक गुण थिक। विषयवस्तुक मौलिक चिन्तनसँ कथा सजीव भेल अछि। सूत्रात्मक वाक्य ओ लोकोक्तिक प्रयोग विशेष ठाम भेल अछि, जे कथाक स्वाभाविकता अनुकूल थिक। संस्कृतनिष्ठ नहि, अपितु चलित शब्द आ वाक्यक प्रयोग हिनक कथाक विशेषता थिक। अंग्रेजी शब्द एवं ओहिसँ सम्बद्ध फॉर्मूला सभकैं सेहो ई अपन कथा सभामे मैथिलीकरण कयलनि अछि। यथा स्पिरिट, इन्सपेक्सन, डीलर, बी.ए.एम.ए., इमर्जेन्सी, बैंगलो, स्टेशन, स्टोमेक-इन्‌चार्य, टू पाइ आर अर्थात् 2 x 22/7 x R, बहुआसिन माने वाइफ, क्लाइमेट चेञ्ज अर्थात् हवा पानि बदलबाक प्रयोजन, फेमिली डाक्टर, एस०सी० सेन अर्थात् सुशील चन्द्र सेन ओल्ड एम.बी.बी.एस., एडभाइस माने परामर्श, लाइफ डेंजर माने जानक खतरा, राजसी ठाठ माने हाइ स्टैन्डर्ड लाइफ लीड, पीरियड, दाइजी माने मदर, स्टेटक मैनेजर, स्टैण्डर्ड मेन्टेन, हैण्ड टू माउथ माने भरिपेट भोजनक, मौर्निंग वाक माने भिनसरुका टहलनाइ, स्नानसँ पूर्व किछु फ्रूट्स आदि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे श्री अमरजीक कथा निर्विवाद रूपें पठनीय अछि।

●

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ

प्रोफेसर डाक्टर प्रेमशंकरसिंह

नाटक प्रकृत्या सामाजिक कला थिक। एकर आयोजनसँ लऽ कऽ अवलोकन धरिक समस्त क्रिया समाजे द्वारा सम्पादित होइत अछि। अन्ततः एकर प्रदर्शन समाज द्वारा सामाजिकक लेल कयल जाइत अछि। अतएव एकर सर्वस्वर सामाजिकतासँ सम्पुष्ट अछि। एकर संरचनाक मूल प्रेरणाक स्थल सामाजिक प्रेरणा थिक। लेखक समाजगत प्रेरणासँ अनुप्राणित भऽ कऽ नाट्य-रचना दिस प्रवृत्त होइत छथि। सामाजिक जीवनमे घटित भेनिहार विभिन्न क्रिया-कलाप, वेश-भूषा, भाषा आदिक आधार पर नाटककार अपन नाट्य-कृतिमे कथानक, पात्र, रस, संवाद आदि विभिन्न नाटकीय तत्त्वक समावेश करैत छथि। नाट्य-कर्त्ताक मानस-पटल पर समाजक जे स्वरूप अंकित होइत छनि ओकरा ओ पुनः सामाजिकक समक्ष प्रदर्शित करैत छथि। कोनो देशक सामाजिक विकास तथा नाट्य-साहित्येतिहासिक तुलनात्मक विश्लेषणसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे नाटकक संरचनामे सामाजिक प्रेरणा सर्वदा प्रमुख रहल अछि। मैथिली नाट्य-परम्पराक अवलोकनसँ सामाजिक प्रेरणाक स्वरूप पूर्ण रूपेँ स्पष्ट भऽ जाइछ। एहिमे समाजक यथार्थ स्थितिक चित्रण नाटककार अत्यन्त सूक्ष्मतासँ कऽ कऽ वास्तविकताक परिचय देलनि अछि।

प्रत्येक महत्त्वपूर्ण नाटककार एकांकीकार ओ अपन कृतिक माध्यमे जीवनक कोनोने कोनो मूल्यकेँ, अपन अन्तर्दृष्टिकेँ, अपन सामाजिक, दार्शनिक, नैतिक, मानवीय उपलब्धिकेँ अभिव्यक्त करैत छथि। प्रत्येक साहित्यकारक सामाजिक दायित्व होइत छनि; किन्तु दृश्य साहित्य लिखबाक कारणेँ नाटककार अन्यक अपेक्षा अधिक उत्तरदायी होइत छथि। नाट्यकर्त्ता अपन सार्थकता तखने सिद्ध कऽ सकैत छथि जखन ओ सामाजिक चेतनाकेँ संस्पर्श करैत छथि। यैह कारण अछि जे नाटक वा एकांकी वा प्रहसन सामयिक होइत अछि। जीवनक जटिलता ओ गूढ़ रहस्यकेँ खोलिकऽ देखबाक कारणेँ आधुनिक संदर्भमे जाहि द्रुत गतिएँ एकरा माध्यमे जतेक सुगमतासँ भऽ सकैछ ततेक साहित्यक कोनो अन्य विधासँ नहि। जन समाजमे सामयिक स्थितिक प्रति चेतना उत्पन्न करब नाटककारक प्रमुख उत्तरदायित्व होइत छनि। राष्ट्र ओ समाजमे व्याप्त निर्जीवता एवं यांत्रिकतासँ पृथक् रहिकऽ उद्बुद्ध करब नाटकारक धर्म होइत छनि। एहन पैघ उत्तरदायित्वक सफल निर्वाहार्थ परमावश्यक अछि जे ओ वर्गविशेष वा सिद्धान्तविशेष वा दलविशेष धरि अपनाकेँ सीमित नहि राखि; समाजक समग्रताकेँ प्रत्येक दृष्टिएँ सामाजिकक सम्मुख प्रस्तुत करथि। एहि लेल नाटककारकेँ अपन कृतिमे परिस्थितिक व्याघातक विरुद्ध संघर्षरत होमऽ पड़ैछ। क्षणिक ख्यातिक हेतु ओछपनमे नहि पड़ि नाटककार सामाजिक शक्तिक गंभीर अध्ययनक हेतु केन्द्रित होइत छथि। सामाजिक विवर्त्तनक फलस्वरूप नाटककारक दायित्व अधिक भऽ गेलनि अछि। परिवर्तित सामाजिक परिवेशमे नव-पीढ़ीक लोककेँ प्रायः प्राचीन विचारधाराक प्रति किंचित अरुचि भऽ गेलनि अछि। ओ सब ओकर विरोध करैत छथि। आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारक फलस्वरुप सामाजिक परिवेशमे तीव्र गतिएँ परिवर्त्तन भऽ रहल अछि। परम्परागत धारणादि, प्रथादि, व्यवस्थादि, आदर्शादिसँ लोकक धारणा शनैः शनैः समाप्त होमऽ लागल अछि। अतीतक व्यवस्थादि वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे जीवन-यापनक लेल पर्याप्त नहि रहि गेल अछि। समाजमे एक विचित्र तनावक स्थिति उत्पन्न भऽ गेलैक अछि। एहन अवस्थामे समाजसँ बनब तथा समाजकेँ बनायब नाट्य-प्रक्रियाक आधारभूत हेतु बनि गेल अछि। तेँ नाटककारकेँ सामाजिक रुचिसँ प्रभावित हैबाक होइत छनि। संगहि हुनका समाजकेँ सुरुचिसम्पन्न बनयबाक प्रयल करऽ पड़ैत छनि। नाटकमे नाटककारक मानसिकताक बिम्ब रहैत अछि। ई प्रतिबिम्ब आत्मनिष्ठ एवं स्वयंपूर्ण होइछ। नाटककारक मानसिकता हुनक गृहीत संस्कार तथा समाजमे घटित घटनादिक परिणाम होइत अछि।

यद्यपि मैथिली साहित्यमे समस्त पूर्वांचलक भाषाक अपेक्षा नाट्य साहित्यक समृद्धिशाली परम्पराक दिग्दर्शन एकर प्रारंभिकावस्थहिसँ दृष्टिगत होइत अछि तथापि एकांकी साहित्य पर दृष्टिपात करैत छी तँ एकर उदय ओ विकास बीसम शताब्दीक चतुर्थ दशाब्दसँ प्रारंभ होइत अछि। वर्तमान युगमे जीवनक व्यस्तता, अशांति, कार्याधिक्यक कारणेँ अवकाशाभाव तथा जीवनक बढ़ैत द्वन्द्व एकर विकासक मूलमे अछि। शिक्षाक प्रचारक फलस्वरुप विद्यालय, महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालयमे अभिनयोपयोगी एकांकीक निरन्तर मांग तथा रेडियो-टेलीभिजनक प्रचार-प्रसारक फलस्वरूप एकांकीक लोकप्रियता बढ़ैत गेल। द्वितीय विश्वयुद्धक अवसर पर गद्य-साहित्यक प्रचारात्मक साधनक आवश्यकता भेलैक। फलतः एकांकीक अनेक रूपक विकास भेलैक जाहिमे रेडियो प्ले, फीचर, फेंटेसी आदि प्रमुख अछि। किन्तु मैथिली एकांकीक विकास ओ प्रचार-प्रसार स्वातन्त्र्योत्तर युगमे भेल अछि।

बीसम शताब्दीक विगत पाँच दशकसँ मैथिली साहित्यक गतिविधि पर दृष्टिनिक्षेप कयनिहार सर्वाधिक चर्चित साहित्य-मनीषीमे जनिक गणना कयल जाइत छनि ओ छथि अग्रगण्य साहित्य-चिन्तक, सशक्त कवि, उपन्यासकार, कथाकार, एकांकीकार, प्रहसनकार, इतिहासकार, अनुवादक, संवादक ओ आलोचकक रूपमे विशिष्ट स्थान रखनिहार पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' (1925)। हिनक वास्तविक प्रतिभाक प्रस्फुटन भेल हास्य-व्यंग्यसँ संयुक्त काव्य-सृजनसँ। एही कारणेँ मैथिली पाठकक सर्वाधिक चर्चित कविक रूपमे इं ख्याति अर्जित कयलनि। तथापि हुनक जतबहि एकांकी ओ प्रहसन अद्यापि उपलब्ध भऽ रहल अछि ओहि आधार पर हुनका श्रेष्ठ एकांकीकार ओ प्रहसनकारक रूपमे गणना कयल जाय तँ एहिमे कोनो अत्युक्ति नहि। हिनक वैशिष्ट्य एहि विषयकेँ लऽ कऽ अछि जे ओ एकांकी एवं प्रहसनमे जँ गंगा-यमुनाक धारा प्रवाहित कयलनि अछि तँ ओहिमे हास्य-व्यंग्यक लुप्त सरस्वती सेहो दृष्टिगत होइत अछि जे हिनक रचनाधर्मिताक वैशिष्ट्य थिक।

पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' स्वयं एक कुशल अभिनेता, कुशल निर्देशकक रूपमे अपन यथार्थ प्रतिभाक परिचय अपन कार्य-कालमे देलनि, जकर फलस्वरुप समाजमे ओ प्रतिष्ठा अर्जित कयलनि। एम०एल० एकेडमी लहेरियासरायमे अध्यापनक प्रारंभिक कालहिसँ सेवानिवृत्ति-काल धरि भिन्न-भिन्न उत्सव पर नाटक, एकांकी-प्रहसनक मंचनमे निर्देशकक रूपमे सम्बद्ध रहलाह जकर प्रतिफल हमरालोकनि देखि चुकल छी जे मैथिली फिल्मक अभ्युत्थानार्थ 'कन्यादान'मे ई लालकाकाक अभिनय कऽ कऽ मैथिली रंगमंचक विकासार्थ अभिनव अवदान देलनि जकर फलस्वरूप ओ समस्त मिथिलांचलमे लोकप्रियता अर्जित कयलनि। इएह कारण अछि जे हिनकामे रंगमंचोपयोगिता अद्यापि अक्षुण्ण छनि, जकर प्रतिफल भेल जे कतिपय नाटक, एकांकी ओ प्रहसनक मंचन हिनक कुशल निर्देशनमे भेल। ओ समाजकेँ अत्यन्त समीपसँ देखलनि तथा ओकर सजीव चित्र अपन एकांकी ओ प्रहसनमे प्रस्तुत कयलनि। हिनक प्रवृत्ति सामाजिक सुधारक दिशामे रहलनि अछि जकर फलस्वरुप हिनक एकांकी ओ प्रहसनमे सामाजिक यथार्थक वास्तविक मूल्यांकन भेल अछि। ई अपन एकांकी ओ प्रहसनमे मिथिलाञ्चलक सामाजिक जीवनक यथार्थवादी स्वरूपक उपस्थापन कयलनि ओ नव समाजक कल्पना कयलनि तथा आधुनिक जीवनसँ आयल विकृतिकेँ केन्द्र-विन्दु बनौलनि, जे सामाजिक परिप्रेक्ष्यकेँ जानबामे सहायक सिद्ध भेल।

मैथिलीक विभिन्न पत्रिकादिक अन्वेषण, अनुसंधान ओ सर्वेक्षणोपरान्त अद्यापि श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क जे एकांकी ओ प्रहसन दृष्टिपथ पर आयल अछि ओ थिक 'टोपी', समाधान (1955) मे संग्रहीत प्रहसन; 'आधुनिक पाठ्य प्रणाली', 'दुइ एकांकी', 'निरक्षरता निवारक पाठशाला' एवं 'श्रमदान'; 'घरैया लूरि' (वैदेही नवम्बर-दिसम्बर,1958), 'मलरवि' (मिथिला दर्शन, मार्च 1965) बाइचान्स, ब्रहमस्थान (पटना रेडियोसँ प्रसारित), 'हाकिमक हाकिम' वा 'ननदिओक ननदि' एवं 'दिशा बोध' (मिथिला मिहिर, 16 जुलाई, 1978) पत्रिकादि एवं

विभिन्न संग्रहमे संगृहीत अछि। एहि दृष्टिएँ हिनक कुल दस एकांकी ओ प्रहसन प्रकाशित अछि, जाहिमे दुइ प्रहसन ओ सात एकांकीक परिप्रेक्ष्यमे हिनक मूल्यांकन करबाक उपक्रम कयल जा रहल अछि। ओ मैथिलीक एहि विधान्तर्गत एक नव प्रतिमान उपस्थित करबामे सहायक भेलाह।

हिनक एकांकी ओ प्रहसनमे पाठक वा दर्शककेँ मिथिलांचलक समाजक प्रतिबिम्ब भेटैछ। ओ अपन एकांकी एवं प्रहसनमे समाजमे प्रचलित समस्यादिक स्पष्ट अंकन, सूक्ष्म निरीक्षण विषय उपस्थापन अत्यन्त प्रभावपूर्ण शैली मे कयलनि। ओ जाहि समस्याकेँ उपस्थित कयलनि अछि ओ ओहि कालक सापेक्षते धरि सीमित नहि रहल; प्रत्युत भविष्यकालीन परिणामक स्पष्ट अंकन करबामे सहायक भेल। हमर धारणा अछि जे भविष्यमे सेहो हिनक एकांकी एवं प्रहसन ओहिना प्रभावपूर्ण अनुभूत हैत। कतिपय समस्या एहन अछि जे कोनो स्थितिमे कहियो नष्ट नहि हैत-जेना दलित वर्ग पर भेनिहार अन्याय, अत्याचार, शोषण, पीड़न, शिक्षाक परिवर्तित स्वरूप, भ्रष्टाचार, राजनीतिक भ्रष्टता, सामाजिक असमानता इत्यादि कैं ओ एकांकी एवं प्रहसनमे युगीन संदर्भकैं महत्त्व देलनि। ओ जीवनपर्यन्त अध्ययन-अध्यापनसँ सम्बद्ध रहलाह तथा समाजक विभिन्न स्तरक विद्यार्थीकैं अत्यन्त समीपसँ देखलनि। ओकर कतिपय समस्यादि जे हुनक मनमे गड़लनि तकरे ओ एकांकी एवं प्रहसनमे सजीव रूपेँ प्रस्तुत करबाक उपक्रम कयलनि। जेना कोनो कानून बनैत अछि सर्वसाधारणकेँ न्याय दिअयबाक हेतु, किन्तु कखनो-कखनो न्यायमे एतेक वेसी जड़ता आबि जाइत छैक जे ओहिसँ न्याय नहि भेटि पबैछ। अतएव परिवर्तनशील समाजक लेल आवश्यकता अछि जे कानून मे सेहो समय-समय पर परिवर्तन हो। कैंसर अत्यन्त पीड़ादायक बिमारी छैक जकर औषध नहि छैक। एकमात्र मृत्युक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि छैक। तखन दोसर यथार्थ 'दयामरण'क कानून हैबाक चाही।

प्रहसन

मैथिली दृश्य-काव्यमे पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' दस्तक देलनि प्रहसनकारक रूपमे। हिनक पहिल प्रहसन प्रकाशित भेल 'टोपी'। एहि प्रहसनक अनुशीलनसँ ज्ञात होइछ जे एहिपर व्यंग्य-सम्राट् हरिसोहनझा (1908-1984)क प्रसिद्ध प्रहसन 'बौआक दाम'क (1946) स्पष्ट प्रभाव अछि। फ्रेंच नाटककार मौलियर (1622-1673) जहिना अपन नाटकमे हास्य-योजनाक हेतु कतिपय साधनकेँ अपनौलनि तहिना चन्द्रनाथमिश्र'अमर' अपन 'टोपी' प्रहसनमे सेहो एकर आयोजन कयलनि; किन्तु स्थल-स्थल पर एहिमे जार्ज बनार्ड शॉक समान गंभीर व्यंग्यक रूप परिलक्षित होइत अछि।

'आधुनिक पाठ्य-प्रणाली' (1955) मे प्रहसनकार सरकारक आधुनिक शिक्षा नीतिक परिप्रेक्ष्यमे एक शिक्षकक हैसियतसँ जे अनुभव कयलनि तकरे पृष्ठभूमिमे एकरा परिवर्तित सामाजिक परिवेशमे प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिलीक इतिहासकार एकर गणना एकांकीक श्रेणीमे कयलनि; किन्तु ई विशुद्ध रूपेँ प्रहसन थिक, जाहिमे हास्य-व्यंग्यक धारा प्रवाहित भेल अछि। प्राचीन ओ नवीन परीक्षा प्रणालीक परिप्रेक्ष्यमे प्रहसनकार एकर कथाभित्तिक निर्माण कयलनि अछि जे पाठक एवं दर्शककेँ मनोरंजन करबाक हेतु प्रचुर अवसर प्रदान करैत अछि। प्राचीन परम्परानुसार जतय साले-साल धौत परीक्षोत्तीर्ण पंडितलोकनि दरभंगा महाराजक ओतऽ गौरवान्वित होइत छलाह ततहि आधुनिक पाठ्य-प्रणालीक परिप्रेक्ष्यमे परीक्षातँ सत्यनारायण पूजाक समान संकरातिर्जें संकरातिर्जें'भऽ रहल अछि। एतऽ प्रहसनकार समसामयिक समाजमे प्रचलित सरकारक आधुनिक पाठ्यप्रणालीमे प्रचलित शिक्षा नीति पर व्यंग्य करैत छथि जखन देश स्वतन्त्र भेल छल, नव-नव योजना कार्यान्वित भेल जाहिसँ शिक्षा-जगत सेहो बाँचल नहि रहि सकल। परिवर्त्तित-परिवेशमे प्रहसनकारक व्यंग्य कतेक मर्मस्पर्शी थिक तकर अवलोकन तँ करू –

बचकानी– 'बापरे! से धरि सत्ते, छोट-छोट नेनासब हकर पेलैत चढ़ले भानसमेसँ काँचे कोचिल खा कऽ तीन-तीन कोस दौड़ल जाइत अछि आ' सुनैत छिऐक जे स्कूल पर एकरा सबसँ टकुरी-चर्खा कटबबैत जाइत छैक।' [समाधान, निर्माण प्रकाशन, लहेरिया सराय, 1955, पृष्ठ–15]

स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे नवीन शिक्षा नीतिक तहत स्कूल स्तर पर बुनिआदी शिक्षाकेँ प्रश्रय देल गेलैक तथा एकरा क्रियान्वित करबाक हेतु पाठ्यक्रममे आवश्यक परिवर्त्तन कयल गेल, जकरा समकालीन सामाजिक परिवेशमे स्वीकार करबाक स्थितिमे समाज एकदम नहि छल। समाजक एहन मानसिकता पर प्रहसनकार हास्य-व्यंग्यसँ सँ युक्त धारा प्रवाहित कयलनि अछि–

बुद्धन– 'हौ तोँ मसोम्मातक बेटा थिकाह जे चर्खा लेबह ओ तँ गान्धी बाबा एकटा रास्ता देखा गेलथिन्ह जे राँड़, मसोम्मात अपन गुजर करत, जकर जीवन पहाड़ छैक, आ' तोरा कथीक चिन्ता छह? कोनवस्तुक कम्मी छह?' (समाधान, पृष्ठ 19)

'आधुनिक पाठ्य-प्रणाली' प्रहसनक वैशिष्ट्य अछि जे प्रहसनकार सामाजिक परिवेशक यथार्थ मानसिकताक घटना चक्रक आधार पर हास्य-व्यंग्यक आयोजन कऽ कऽ जतहि एक भाग समाजकेँ हँसौलनि अछि ततहि दोसर भाग ओकरा माध्यमे मानसिक स्थितिकेँ परिवर्त्तित करबाक प्रयास कयलनि अछि। उपर्युक्त प्रहसनक मंचन एम० एल० एकेडमी, लहेरियासरायक वार्षिकोत्सवक अवसर पर भेल जतय तत्कालीन बिहार सरकारक शिक्षामंत्री पंडित हरिनाथ मिश्र उपस्थित रहथि। एकर निर्देशन प्रहसनकार स्वयं कयने रहथि।

एकांकी

देशक पुनर्निर्माणक आवश्यकता एवं सामाजिक चेतनाक लक्ष्य कऽ कऽ मैथिलीमे एकांकी लिखनिहारमे श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' एक सजग एकांकी कारक रूपमे मैथिली एकांकीक द्वार पर दस्तक देलनि। एहि दृष्टिएँ हिनक 'निरक्षरता निवारक पाठशाला', 'श्रमदान', 'धरैया लूरि', 'ब्रह्मस्थान', 'हाकिमक हाकिम वा ननदिओक ननदि' 'मलरवि' एवं 'दिशा बोध' इत्यादि मैथिलीमे उल्लेखनीय एकांकीक रूपमे चर्चित अछि, जाहि आधार पर हिनका मैथिलीक सफल एकांकीकारक रूपमे परिगणित कयल गेल छनि। हिनक उपलब्ध एकांकीक विश्लेषण नाटकीय तत्त्वक आधार पर करब समीचीन होयत। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक तेँ ओकर मूल्यांकन सामाजिक दृष्टिएँ अपेक्षित अछि।

वस्तु

नाटकीय तत्त्वक अन्तर्गत वस्तुक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। वस्तु एकांकीक गतिशील आधार होइत अछि। रस-निष्पत्ति, चरित्रक सजीवता एवं गतिशीलताक लेल वस्तुक निर्माण कयल जाइत अछि। एहि दृष्टिएँ वस्तु एकांकीक प्रमुख तत्त्वक रूपमे स्वीकारल गेल अछि। एकरा अन्तर्गत कार्यावस्था वा व्यापार तत्त्व एकांकीकेँ सफल ओ सप्राण बनयबाक उद्देश्यसँ कयल जाइत अछि। कार्यक गति दिस द्रुत गतिएँ बढ़यबाक दिशामे वस्तु-विन्यास श्रेष्ठ माध्यम थिक, कार्य एकांकीक प्रमुख साध्यथिक। नाटकीय सौष्ठवकेँ वस्तु-संगठन एवं व्यापारक समुचित योजनाक रूपमे देखल जाइत अछि। एहि प्रसंगमे पाश्चात्य आलोचक ई० एम० फार्स्टरक कथन छनि जे कथानक घटनाक ओ कालक्रमानुसार वर्णन थिक जाहिमे कार्य-कारण, सम्बन्ध पर विशेष बल रहैत अछि। नाटक वा एकांकीमे संघर्ष वा द्वन्द्वक महत्ता सर्वोपरि अछि। तेँ वस्तु-विन्यासक अन्तर्गत कथानक पर दबाव ओ ओकर प्रतिक्रियाक अंकन कयल जाइछ। वस्तु-विन्यास लेखकक उद्देश्यक अनुरूप क्रमबद्धता एवं विस्तार ग्रहण करैछ। अतएव एकांकीकार वस्तु-

विन्यास करबाकाल जीवनमे घटित भेनिहार समसामयिक जीवनसँ सम्बद्ध रहैत छथि, कारण मानव जीवनसँ विच्छिन्न कोनो साहित्य उत्कृष्ट नहि भ' सकैछ।

'निरक्षरता निवारक पाठशाला' (1955) मे एकांकीकार जाहि समसामयिक समस्याक उपस्थापन आइ सँ पचास साल पूर्वहि संकेतित कयने छलाह तकर प्रतिरूप वर्तमान शताब्दीक नवम दशम दशकमे सरकारक ध्यान एहि दिशामे आकर्षित भेलैक तथा वयस्क शिक्षायोजनाक माध्यमे निरक्षरकेँ साक्षर बनयबाक दिशामे प्रयास प्रारम्भ भेल। सरकार वयस्क शिक्षा-योजना पर करोड़क करोड़क रूपैया खर्च करैत जा रहल अछि, जकर मूल उद्देश्य छैक जे कोनहुना प्रत्येक भारतीयकेँ साक्षर बनाओल जाय। साहित्य-चिन्तक कतेक दूरदर्शी होइत छथि तकर वास्तविकताक परिचय एहि एकांकीक प्रणयनसँ पाठक वा दर्शककेँ उपलब्ध होइत छनि। समसामयिक सामाजिक परिवेशमे सरकार वयस्क शिक्षा-नीतिकेँ क्रियान्वित करबाक हेतु नुक्कड़ नाटकक आयोजन करैत अछि। जनसामान्यकेँ एहि दिशामे आकर्षित करबाक कतिपय प्रलोभन दैत अछि। तथापि ओकर कतेक परिणाम ओकरा भेटि रहल छैक तकरा स्पष्ट करबाक प्रयोजन नहि; प्रत्युत अनुभव करबाक योग्य थिक। किन्तु एकांकीकार समाजक एहि ज्वलन्त समस्याक सम्बन्धमे कतेक पूर्व ध्यानाकर्षित कयने छलाह तकर स्पष्टीकरण उक्त एकांकीक मनन सँ भऽ जाइत अछि। नेना बाबू तेना सोनेझाकेँ शिक्षित बनयबाक निमित्त प्रयासरत भेलाह जकर फलस्वरुप ओ शिक्षित भऽ गेलाह। एकरा माध्यमे एकांकीकार एहि विषयकेँ उद्घाटित करबाक उपक्रम कयलनि अछि जे देशक उन्नति तखने संभव अछि जखन प्रत्येक भारतीय शिक्षित कऽ कऽ ज्ञानक ज्योति प्रज्वलित कऽ कऽ एकर वास्तविक महत्त्व बुझथि। तखने मातृभूमिक स्वतन्त्रताक वास्तविक अर्थ बुझबामे तथा अपन अधिकार ओ कर्त्तव्यक पालनमे सक्षम भऽ सकताह अन्यथा सब प्रयास निरर्थक अछि। एहि निमित्त आवश्यक अछि जे जनसामान्यकेँ शिक्षित कयल जाय। एहि प्रसंगमे चतुर्भुजक कथन छनि–

'जतेक लिखल पढ़ल लोक छी से यदि प्रतिज्ञा करी आ' कमसँ कम दस व्यक्तिकेँ शिक्षित बनाबी। एक सँ दस, दससँ सै, सै सँ हजार तुरन्त भऽजैत। तैं हेतु साँझ खन जे समय घूड़ लग बितैत अछि से एही काजमे लगाबी तँ कोन क्षति? (समाधान, पृष्ठ-7)

उपर्युक्त वातावरणक पृष्ठभूमिमे एकांकीकार समाजक समक्ष एक प्रतिमान उपस्थित कयलनि अछि जे शिक्षित भऽ कऽ अपन सामाजिक दायित्वक संगहि-संग राष्ट्रीय दायित्वकेँ बुझि देशक प्रति अपन त्याग ओ कर्त्तव्यकेँ बुझथि। ई तखने संभव' भऽ सकैछ लोक अपन अधिकार ओ कर्त्तव्यक प्रति पूर्ण साकांक्ष भऽ पौताह अन्यथा ई संभव नहि। एहि दृष्टिएँ एकर कथानक समाजकेँ अपन अधिकार ओ कर्त्तव्यक प्रति दिशा-बोध करबैत अछि।

आधुनिक परिवेशमे दिन प्रतिदिन समसामयिक समाजक व्यक्ति-व्यक्ति आरामतलब बनल जा रहल अछि। ओ जेना श्रमक महत्त्वसँ अपरिचित भऽ गेल अछि। व्यक्ति-व्यक्तिमे एतेक बेसी ऊर्जा छैक जे ओ असंभव कार्य सेहो संभव कऽ सकैत अछि। तैं मानव जीवनमे श्रम सर्वोपरि साधन थिक। एकांकीकार 'श्रमदान' (1955) एकांकीमे समाजकेँ श्रमोन्मुख बनयबाक उद्देश्यसँ, शैशवावस्थहिसँ श्रमक महत्त्वकेँ बुझयबाक हेतु 'श्रमदान' एकांकीक रचना कयलनि। स्वातन्त्र्योत्तर भारतक सर्वतोमुखी विकासक लेल शिक्षाक नवनीतिमे श्रमदानक उपयोगिताकेँ उद्घाटित करबाक उद्देश्यसँ आधुनिक पाठ्यान्तर्गत बुनियादी शिक्षाकेँ महत्त्व देबाक उद्देश्यसँ श्रमदान करबाक प्रवृत्ति जगयबाक लेल एहि एकांकीक ओ रचना कयलनि। एकरा माध्यमे आर्थिक स्वतन्त्रतातँ आसानीसँ भेटि जा सकैछ। अतएव तन-मन-धनसँ अपन मातृभूमिक सेवामे तत्पर भऽ जयबाक प्रयोजन अछि। व्यक्ति-व्यक्तिमे एहि भावनाकेँ जगयबाक हेतु जे प्रयास भेल ओ तँ अपन स्थाने पर रहल; किन्तु विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर ए० सी०

सी०, एन० सी० सी० एवं एन० एस० एस० सदृश योजनाकेँ क्रियान्वित करबाक लेल स्थापना कयल गेलैक जकर मूल उद्देश्य छलैक श्रमदान करबाक प्रवृत्ति जगयबाक तथा भावी संततिकेँ शैशवास्थहिसँ अनुशासनक सूत्रमे बान्हल जाय जे भविष्यक हेतु लाभप्रद भऽ सकैछ तेँ तँ ज्ञानधन कहैछ– 'देशक एक-एक गोटे सँ निवेदन अछि जे निर्माण कार्यमे तन-मन-धनसँ सहायता करू। श्रमदानक भूखलि भारत माता अहाँक आह्वान कै रहल छथि।' (समाधान, पृष्ठ 27)। एहि प्रवृत्तिक उदय भेलासँ देशक नव-निर्माण निश्चित रूपेँ हैबाक संभावना अछि। सरकार एहि शिक्षा-नीतिक सराहना करैत छथि जे स्कूल एवं कॉलेजमे पढ़निहार पर दबाव पड़तैक तथा जनमानस उत्साहित भऽ कऽ एहि दिशामे कार्यरत हैताह। तखन सुन्दरलालक कथन छनि– 'जे सोचलक ई बात बड़ बुधियार छल। देखहक आब पढ़ैत छैक बारहो वर्णक धियापूता, सबकेँ नोकरी भेटतैक नहि, तखन सब बेकार भेल गामे पर एहि खोन्ही सँ ओहि खोन्ही ढहनाइत फिरैत छल से तँ नहि ने हैत।' (समाधान, पृष्ठ–32)

अनादि कालहिसँ समाज दुइ वर्गमे विभाजित रहल अछि जकरा धनीक-गरीब वा शोषक-शोषित वा सम्पन्न-विपन्न आदि विविध संज्ञासँ विभिन्न समयमे सम्बोधित कयल जाइत रहल अछि। सामाजिक विषमता सबसँ ज्वलन्त समस्या थिक जकर फलस्वरूप समाजक विभाजन भऽ गेलैक तथा समाजक वर्त्तमान स्वरूप विरूपित भऽ गेल। आर्थिक परिस्थिति वा हित-सम्बन्धक आधार पर समाज मुख्यतः तीन श्रेणीमे विभाजित अछि– उच्चवर्ग, मध्यवर्ग ओ निम्न वर्ग। उपर्युक्त आधार पर समाजक अन्तर्गत वर्गवैषम्यक आगमन भेलैक। सामाजिक वातावरणक उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे हिनक 'ब्रहमस्थान' एक उल्लेखनीय एकांकी थिक जाहिमे एकांकीकार शोषित वा गरीब वा विपन्न वर्ग पर होइत अत्याचारक वास्तविकतासँ अवगत करौलनि अछि। ग्रामीण परिवेशमे एहन परम्परा रहल अछि जे गामक डिहबार अर्थात् ब्रह्मस्थान गामक न्यायालयक प्रतीक मानल जाइत छल जतऽ नीक अघलाहक विश्लेषण कऽ कऽ दोषीकेँ दण्ड देल जाइत छलैक, जकर ओ साक्षी होइत छलाह। समाजक आचार-संहिताक ओ प्रतीक होइत छलाह। ब्रह्मस्थान जतऽ गाममे रहनिहार सुख-दुःखक समान रूपेँ सहभागी होइत छथि। समाज-कल्याण जनिक सर्वप्रमुख वैशिष्ट्य छनि तथा समाजिक कल्याणमे अपन कल्याण मानैत छथि। एहन न्यायालयमे बैसि कऽ लोक दूधक दूध आ पानिक पानि न्याय करबामे वस्तुतः क्षम होइत छथि। वैह डिहबार समाजमे सतत पूजित होइत रहल छथि तथा समाज हुनक सम्मान करैत आयल अछि।

बदलैत सामाजिक परिवेशमे एहन मान्यतामे परिवर्त्तन भेल जकर परिणाम भेल अछि जे स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे रामराज्यक स्थापनाक उद्देश्यसँ ग्राम पंचायतक स्थापना कयल गेलैक तथा ओकर प्रधान मुखियाक हाथमे गामक न्याय करबाक उत्तरदायित्व देल गेलनि। मुदा मुखिया न्याय की करैत छथि ओ तँ अन्यायक प्रतीक बनि कऽ अपन राक्षसी प्रवृत्तिसँ समाजपर अत्याचार करैत छथि। एही यथार्थताक पृष्ठभूमिमे एकांकीकार 'ब्रह्मस्थान' एकांकीक कथाभित्तिक निर्माण कयलनि अछि।

गामक मुखिया हरिवंश बाबूकेँ युग-युगान्तरसँ दीन-हीन जनसामान्यकेँ शोषित करबाक अभ्यास छनि। सुगियाक बेटा मखना विगत अठारह दिनसँ ज्वराक्रान्त छैक जे हुनक शोषण नीतिक फलस्वरूप अकस्मात् काल-कवलित भऽ जाइत अछि। सुगियाक मात्र एतबहि अपराध छैक जे समय पर हुनका ओतऽ पानि भरबाक हेतु नहि जाइत अछि, जकर इनाम ओकरा भेटैछ मारि-गारि सुनबैत निमर्मतापूर्वक पीटब ओ अपमानित करब। सुगियाक अन्धभक्त पति पचकौड़ी अपन पुत्रक मृत्युसँ आहत भऽ परम्परागत न्यायालयक प्रतीक ब्रह्मस्थानक अस्तित्वकेँ मेटयबाक लेल कटिबद्ध अछि; किन्तु ठकाइक बात मानि अपन विचारकेँ बदलि दैछ। अन्ततः ओही ब्रह्मस्थानमे गामक सब केओ उपस्थित भऽ वर्तमान मुखिया हरिवंश बाबूकेँ पदच्युत कऽ कऽ एक नव मुखियाक चुनावक नारा दैत छथि।

एकांकीकार शोषित वर्गक बीच युगयुगान्तरसँ चल आबि रहल आक्रोशसँ कथानकक निर्माण कयलनि अछि। प्रतिपाद्य एकांकी मूलतः दुइ विचारधारासँ संघर्षरत अछि। एक तँ परम्परासँ चलि आबि रहल बहियाक प्रति शोषकवर्गक नृशंस अत्याचार तथा दोसर भाग समसामयिक सामाजिक परिवेशमे प्रचलित चुनाव-पद्धति तथा आधुनिक मुखियाक क्रियाकलापक वास्तविकता पर जे अन्हरजाली छल तकरा हटयबाक उपक्रम कयल गेल अछि। परिवर्तित परिवेशमे समाजमे विद्रोहक स्वर अत्यन्त तीव्रभऽ गेल अछि तेँ सामाजिक परिवेशकेँ परिवर्तित करबाक प्रयोजन अछि। एकांकीकारक यैह प्रवृत्ति छनि।

कतेक शताब्दीक गुलामीक पश्चात् भारतकेँ स्वतन्त्रता प्राप्त भेलैक। देशक नव-निर्माणक हेतु कतिपय योजनादि क्रियान्वित करबाक दिशामे सरकार प्रयासोन्मुख भेल। सरकारक दिससँ सेहो कतिपय योजनाकेँ कार्यरूप देबाक हेतु प्रयास कयल गेल। एकर एकमात्र उद्देश्य छलैक जे कोनहुना व्यक्ति-व्यक्ति जे गरीबीक मारिसँ कुहरि रहल छल ताहिसँ मुक्ति दिअयबाक दिशामे प्रयास कयल जाय। अधिकांश ग्रामीण गामक परित्याग कऽ शहरोन्मुख हैबाक दिशामे प्रयास करऽ लागल। तकर भीषण दुष्परिणाम भेलैक जे गामक गाम जनशून्यताक कगार पर पहुँचऽ लागल। समाजक समक्ष एक विषम स्थिति उत्पन्न होमऽ लगलैक। एहना स्थितिमे ग्रामीण परिवेशकेँ बचयबाक लेल जनमानसमे एहन वातावरणक निर्माण कयल गेल जे ओ ओही परिवेशमे रहि अपन जीविकोपार्जनार्थ अपन कौलिक धन्धाकेँ पुनः स्वीकार करय। एकर दूटा प्रभाव पड़ितैक। एक तँ लोक अपन गृह-उद्योग दिस उन्मुख होइत आर दोसर शहरी परिवेश पर सेहो अनावश्यक दबाव नहि पड़ितैक।

एहि परिप्रेक्ष्यमे हिनक एकांकी 'घरैया लूरि' (1958) एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिका। विसुनदेव ग्रामीण परिवेशक परित्याग कऽ विसेस्सरक संग कलकत्ता सदृश महानगरीय परिवेशमे रोजगारक तलाशमे जयबाक आकांक्षी अछि। मुदा विसेस्सर शहरी परिवेशसँ परिचित रहबाक कारणेँ ओकर वास्तविक कठिनाइसँ अपन बाल-संगी मित्र विसुनदेवकेँ एहन निर्णय करबासँ सर्वथा मना करैत अछि– 'हम सोचैत छिऔक जे तोरा की करक चाहिअउ तोँहूँ नीक जकाँ सोचि ले।' (वैदेही) नवम्बर-दिसम्बर, 1958 पृष्ठ–407)।

विसेस्सर, अपन नेक सलाह दैत छैक जे अपन पुश्तैनी धन्धा अर्थात् करघा चला कऽ अपन परिवारक संग सुखी- सम्पन्न रहि सकैत अछि। एकर ओ समुचित प्रबन्ध सेहो कऽ दैत छैक जकर परिणाम होइछ जे विसुनदेव गामहिमे रहि अपन रोजगार कऽ कऽ सुखी-सम्पन्न भऽ जाइत अछि। विसुनदेवक देखा-देखी गोविन्द मिस्त्री, सैनी ठठेरी एवं झिंगुर चमार द्वारा निर्मित पलंग, झालि ओ ढोलक बजारमे छुहुक्का उड़ि जाइत अछि। एकांकीकारक मान्यता छनि जे आधुनिक शिक्षा-पद्धति व्यक्ति-व्यक्तिकेँ रोजगार मुहैया नहि करा सकैछ। जा धरि व्यक्ति पुश्तैनी धन्धाकेँ नहि अपना ओत ताधरि ओकर सामाजिक परिवेशमे कोनो तरहक सुधारक संभावना नहि दृष्टिगत होइछ। अतएव एकांकीक मूलस्वर छैक अपन कौलिक धन्धाक अनुरूपहि प्रशिक्षित भऽ कऽ काज करब। तखने हमर सामाजिक परिवेश परिवर्तित भऽ सकैछ तथा व्यक्ति-व्यक्ति-सुखी सम्पन्न बनबाक कामनाक पूर्ति भऽ सकैछ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीक रामराज्यक सपना एकरे फलस्वरूप साकार भऽ सकैछ। हमर प्राचीन सामाजिक व्यवस्थामे प्रत्येक जातिक कार्य ओकर सामाजिक परिवेशानुसारेँ विभाजित छलैक, तेँ बेरोजकारीक समस्या नहि उत्पन्न होइत छलैक। वर्णाश्रमक जे व्यवस्था हमर समाजमे कयल गेल छलैक तकर मूल परिकल्पना यैह छलैक। किन्तु परिवर्तित परिवेशमे लोक ओहिसँ सर्वथा विमुख भऽ गेल अछि तेँ बेरोजगारीक समस्या समाज ओ सरकारक समक्ष उपस्थित भऽ गेल अछि। प्रतिपाद्य एकांकीमे एकांकीकार मूलरूपेँ कुटीर-उद्योग एवं गृह-उद्योग दिस जनसामान्यक ध्यानाकर्षण कयलनि अछि। अत्याधुनिक परिवेशमे समाजमे, देशमे, पुनर्निर्माणक तथा सामाजिक चेतनाक

आवश्यकता अछि। एकांकीकार अपन व्यक्तिगत जीवनक व्यावहारिक अनुभवक आधार पर समाज ओ देशमे प्रचलित योजनान्तर्गत घरैया लूरिक केन्द्र-विन्दु निरूपित कयलनि अछि। ओ समाजक ओहि पक्ष दिस संकेत कयलनि अछि जे अत्याधुनिकताक चक्रवातमे पड़ि अपन कौलिक क्रिया-कलापकेँ तिलांजलि दऽ कऽ शहरोन्मुख हैबाक आकांक्षी भऽ गेल अछि। किन्तु प्रयोजन अछि जनमानसमे दिशा-निर्देशनक जकर फलस्वरूप ओकर कायाकल्प कयल जा सकैछ। उचित दिशा-बोधक फलस्वरूप विसुनदेव, गोविन्द मिस्त्री, सैनी ठठेरी ओ झिंगुर चमार सामाजिक परिवेशेमे रहि कऽ अपन आर्थिक स्थितिकेँ सुधारबामे क्षम भऽ सकल तथा उन्नतिक शिखर पर चढ़ि समाजक अन्य व्यक्तिकेँ अपन कौलिक व्यवसाय दिस उन्मुख कयलक।

'मलरवि' (1961)मे श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' हास्य-व्यंग्यक अद्‌भुत धारा प्रवाहित कयलनि अछि। जहिना काव्यक क्षेत्रमे हिनक एहि प्रवृत्तिक प्रस्फुटन भेल अछि तहिना ओकर वास्तविक स्वरूप एहि एकांकीमे स्पष्ट भऽ आयल अछि। एहिमे राउतलोकनिक तथा पंडितलोकनिक धूर्त्तताकेँ अत्यन्त मनोरंजक ढंगे एकांकीकार प्रस्तुत कयलनि अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर भारतक प्रमुख जनसामान्यक समक्ष आयल अछि भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति हमर जीवनमे एहि प्रकारेँ प्रवेश कऽ गेल अछि जे ओहिसँ मुक्तिक मार्ग नहि भेटि रहल अछि। जीवनमे डेग-डेग पर एकर नग्न रूप स्पष्ट अछि तथा समाजकेँ ओहिसँ मुक्तिक मार्ग नहि भेटि रहल छैक। जँ पश्चिमी एवसर्ड नाटकक लक्ष्य द्वितीय महायुद्धोत्तर विसंगतिक चित्रण करब छल तँ स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे उपजल चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार एवं नूतन अन्धधार्मिकता पर तीक्ष्ण प्रहार करब मैथिली एकांकीकारक लक्ष्य बनि गेल छनि। अतएव स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे उपजल चरित्रहीनता एवं भ्रष्टाचारक केन्द्र-विन्दु पर तीक्ष्ण प्रहार कयल गेल अछि।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यक हिनक 'हाकिमक हाकिम वा ननदिओक ननदि'मे स्पष्ट झाँकी भटैत अछि। एहिमे एक निर्धन संस्कृत प्राथमिक पाठशालाक शिक्षकक चित्रक माध्यमे एकांकी ओहि भ्रष्टाचारी डिप्टीक चरित्रकेँ उपस्थित कयलक अछि जे आकंठ भ्रष्टाचारमे डूबल अछि। डिप्टी साहेब भ्रष्टाचारक प्रतीक छथि जनिक निर्दयतासँ शिक्षक समुदाय बेचैन रहैछ, किन्तु ओ एहि विषयकेँ सर्वथा बिसरि जाइत अछि जे ओकरो ऊपर कोनो अधिकारी छैक। संस्कृत पाठशालाक शिक्षक विद्‌यालयसँ अनुपस्थित रहलाक कारणेँ पाँच टाका घूस डिप्टीकेँ गछैत छथि; किन्तु टाकाक अभावक कारणेँ शीघ्रहि अदा करबासँ वंचित रहैत छथि। स्कूलक वार्षिकोत्सवमे पंडितजी चेयरमैन साहेबक सोझाँ रूपैया दैत छथि। एहि घटनासँ डिप्टी साहेब आहत भऽ जाइत छथि। कारण ओ हुनको हाकिम छथिन। जहिना पारिवारिक जीवनमे ननदि सर्वथा एहि बातकेँ बिसरि जाइत अछि जे ओकरो ननदि छैक ओ अत्याचार करबामे कनेको कुंठित नहि होइछ। अतएव एकांकीकार अत्यन्त नियोजित ढंगे सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे घटित भेनिहार घटनाक चित्रांकन कयलनि अछि एहि एकांकीमे।

निर्धनता सामाजिक जीवनक अभिशाप थिक। जतऽ प्राचीन समयमे समाजवादी समाज छल ततऽ आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे व्यक्तिवादी समाजक स्थापना शनै-शनैः भऽ रहल अछि। एकर श्रेय छैक पश्चिमी संस्कृति ओ सभ्यताकेँ। वर्तमान शताब्दीक उत्तरार्द्धमे सामाजिक परिवेशमे एतेक शीघ्रतासँ परिवर्त्तन भऽ रहल अछि जे सामाजिक स्वरूप परिवर्त्तित भऽ गेल अछि। व्यक्ति आब एतेक बेसी आत्म-केन्द्रित भऽ गेल अछि जे एकैसम शताब्दीक प्रवेश करैत-करैत अपन प्राचीन परिवेशक परित्याग करबाक हेतु विवश भऽ गेल अछि। हमर सामाजिक परिवेश कतेक दूषित भऽ गेल अछि तकर वास्तविकताक चित्रण पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' कयलनि अछि 'दिशाबोध' (1978) एकांकीमे। सुन्दर युवावस्थाक प्रचण्ड बिहाड़िमे सामाजिक परिवेश परिवर्त्तित भऽ जयबाक कारणेँ एहन दिग्भ्रमित भऽ गेलाह जे

अपन वृद्ध मातापिता पर्यन्तकें अपन सुख-सुविधाक जिनगीमे बाधक मानैत छथि। किन्तु हुनक पत्नी पर परम्पराक छाप एतेक बेसी छनि जे आधुनिक परिवेशमे रहितहुँ ओ अपन मर्यादाक पृष्ठपोषिकाक रूपमे जनसामान्यक समक्ष प्रस्तुत होइत छथि। यैह कारण अछि जे हुनका अपन ससुर एवं सासुक प्रति असीम श्रद्धा ओ सद्भावना छनि। एकर पालन करबाक हेतु ओ अपन पतिक विरोधकरैत छथि– 'हम अहाँक गार्जियन किऐक रहब, मुदा जे माय-बाप एतेक सिद्दति सहि कऽ पोसलनि–पाललनि, लिखौलनि–पढ़ौलनि, ताहि मायक वास्ते दवाइ लय अहाँ कहैत छिऐक बूढ़ा झीटय चाहैत छथि आ सिनेमामे पाइ फेकय जाइत छी से उचित थिकैक। (मिथिला मिहिर, 16 जुलाइ, 1978)

सुन्दर पत्नीक मानसिक दशाक विश्लेषण करबामे सर्वथा असमर्थ छथि, कारण आधुनिकताक अन्हरजाली हुनका लागल छनि। तेँ पत्नीकेँ एकाकी छोड़िकऽ सिनेमाक लाथेँ घरसँ पड़ा जाइत छथि। एकांकीकार पति-पत्नीक वैचारिक भिन्नतोकँ यथार्थक धरातल पर आनि सामाजिक परिवेशमे बदलैत मानसिकताक विश्लेषण करबामे सफल भऽ पौलनि अछि। एतऽ ओ सामान्य पाठककेँ सोचबाक हेतु बाध्य करैत छथि जे अल्पवेतनभोगी कर्मचारीक मानसिकता आधुनिक सामाजिक परिवेशमे केहन भेल जा रहल अछि। ई मानसिकता मात्र किरानीक नहि, प्रत्युत सम्पूर्ण समाजक भऽ गेल अछि। सुन्दरकेँ परिस्थितिक वास्तविकताक ज्ञान तखन होइत छनि जखन ओ अपन बाल संगी नूनूकेँ अपन वृद्ध माता-पिताक प्रति प्रगाढ़ आत्मीयता ओ श्रद्धा देखैत छथि जे वस्तुतः अनुकरणीय एवं सराहनीय अछि। पत्नीकेँ प्रताड़ित कऽ कऽ नूनूक ओतऽओ उपस्थित होइत छथि। नूनू एम० ए० इन फिलॉसफी छथि तथापि ओ नौकरीकेँ परमुखापेक्षी मानैत छथि। की यैह आधुनिक सभ्यता वा सामाजिक परिवेशक उपज थिक।

पात्र

पात्र एकांकीप्रणेताक मानसिक सन्तान होइछ। ओकरामे रक्तबीज संचरण करैछ। ओहिमे संकल्प-विश्वासक गोत्रता तथा जीवन दर्शनमे वंशजता रहैछ। ओकर समस्त आभिजात्य कौलिक रहैछ जकर सम्पूर्ण वर्ण शुद्ध सेहो रहैछ। समग्रतः अपन प्रणेताक जीवन्त रंग साक्षात्कारक जीवन्त रचना थिक। ओ ओहिमे रागात्मकता, आसंग, सृजन-संकल्पना, नाट्यानुभव, रंग-संस्कार तथा रंग-राशिक तात्त्विक संघातसँ उद्भूत रंग-पुत्र अछि। एकांकी प्रणेताक आन्तरिक रंगयज्ञक रंगकुण्डसँ उत्पन्न तथा वरदान रूपमे प्राप्त रंगसिद्ध रंगवंशी रंगकुमार अछि। एकांकी प्रणेताक रंगप्रक्रियामे, रचनामे पात्ररचना केहन होइछ? ओ रंग-प्रक्रियामे कतसँ अबैत अछि? एहि प्रश्नसँ बाँचिकऽ आगाँ जायब युक्तिसंगत नहि होयत। एखन धरि बहुधा पात्रक गुण, प्रकार, वर्ग तथा ओकरा संगक बात होइत अबैत हो, अधिकांशतः पृष्ठप्रेषण होइत अछि। पात्रक रंगप्रक्रिया पर बड़ कम विचार भेल अछि। पात्र तँ रचनाकारक मानसिक सन्तान होइछ। रचनाकारक जीवनगत प्रतिबद्धतामे पात्रक मर्यादा थिक। ओ सेहो जीवनक प्रति ओहिना प्रतिबद्ध होथि।

पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क एकांकीक पात्र-योजना पर दृष्टिपात करैत छी तँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओ मध्य एवं निम्नवर्गीय सामाजिक परिवेशक प्रतिनिधित्व करैत देखल जाइत अछि जकरा समक्ष रोजी-रोटीक संगहिसंग अपन जीवकोपार्जनार्थ विविध समस्या सुरसा सदृश मुँह बौने ठाढ़ छैक। एहि दृष्टिएँ 'ब्रह्म स्थान' एवं 'घरैया लूरि'क अधिकांश पात्र निम्नवर्गीय गमैया सामाजिक परिवेशक प्रतिनिधित्व करैत अछि। 'हाकिमक हाकिम' 'मलरवि' 'दिशा बोध'क अधिकांश पात्र सेहो ओही श्रेणीमे अबैत छथि। मध्य वर्गीय श्रेणीमे 'घरैयालूरि'क महेन्द्र बाबू तथा 'ब्रह्मस्थान'क हरिवंश बाबू एवं 'हाकिमक हाकिम'क चेयरमैन् प्रतिनिधित्व करैत छथि। उच्च वर्गक पात्रक सर्वथा अभाव हिनक एकांकीमे अछि।

वस्तुतः हिनक पात्रक संघर्षमे सामाजिक समायोजन (सोशल एडजस्टमेण्ट)क भावना सन्निहित अछि। हिनक आत्मसम्मानी पात्र अपन प्रकृतिक विरोधी नकारात्मक प्रवृत्तिक सामाजिक प्रवृत्तिसँ अपन मेल नहि बैसा पबैत अछि। अतएव असमायोजनक स्थितिमे ओ मानसिक अशांतिक अनुभव करैत अछि जे कोनहुना ओहि मानसिक तनावसँ मुक्ति भेटय एकरा हेतु ओ अपन असमायोजनक कारणभूत विरोधी प्रवृत्तिकेँ परास्त करऽ चाहैछ। एहि प्रयासमे ओकरा समाज-विरोधी प्रवृत्तिसँ संघर्ष करऽ पड़ैत छैक।

एहि प्रकारेँ आत्मसम्मानी पात्रक संघर्ष अपन सामाजिक समायोजनक दिशामे कयल गेल एक प्रयास थिक। यैह हुनक अन्तःस्थ सामाजिक प्रेरणाकेँ व्यावहारिक क्षेत्रमे आनि कऽ उपस्थित कऽ दैत अछि। एहन संघर्षमय प्रयासक फलस्वरूप आत्मसम्मानी पात्रक व्यक्तित्व निर्मित भेल अछि जे हिनक मिथिलांचलक समाजक एकांकीक अनुपम देन थिक। 'ब्रहमस्थान'क पचकौड़ी एही श्रेणीक पात्र अछि जे अपन आत्मसम्मानक रक्षार्थ ब्रह्मस्थानकेँ कोड़िकऽ हुनक अस्तित्वकेँ मेटयबाक लेल तैयार अछि।

सत्ता आँखिक सोझाँ नव-दर्शनक निर्माण करैत अछि जाहिमे एकमात्र 'स्व' रहैत अछि। स्वार्थान्ध सत्ताकेँ जीवित रखबाक हेतु मदति कयनिहार व्यक्ति आत्मकेन्द्रित बनि जाइत अछि। किन्तु ओकरा संग संघर्ष ओ करैत अछि जकरा लोक-तन्त्रमे निष्ठा छैक। जे व्यक्ति सत्ताक विरोधमे नारा लगबैत अछि तकरा पर विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ैत छैक। तथापि नैतिकता आ सत्यताक बल पर व्यक्तिक मनोबल बढ़ैत छैक आर असत् वृत्तिक संरक्षक कालजयी सेहो सद्वृत्तिसँ डेराय लगैत अछि। एहि प्रकारक जन-जागृतिक कार्य एकमात्र साहित्ये द्वारा संभावित अछि। हरिवंश बाबू गामक मुखिया छथि तेँ हुनक आज्ञाक बिना गामक एक पात पर्यन्त नहि हिलि पबैत अछि। ओ एतेक बेसी स्वार्थान्ध छथि जे ओ अपन 'स्व' पूर्त्तिक निमित्त निरीह सुगिया पर प्रहार करबामे कनेको कुंठित नहि होइत छथि, कारण ओ हुनक ओ हुनकर बेटा नूनू बचबाक आज्ञाक उल्लंघन कयलक अछि। जाहिसँ हुनका अहं पर चोट पहुँचैत छनि। यद्यपि ओकर बेटा मखना अठारह दिनसँ ज्वाराक्रान्त छैक तथापि माया, मोह तथा ममता नामक कोनो वस्तु हुनक अन्तरात्मामे नहि छनि। तेँ निर्दयतापूर्वक व्यवहार करैत छथि जकर परिणाम अत्यन्त भयावह होइछ।

जाहि ग्रामांचलमे अशिक्षा एवं अन्धश्रद्धाक प्रभाव रहत ओतऽ निर्धनता तथा शोषणक परम्परा निश्चित रूपेँ रहतैक। अंधश्रद्धाक प्रतीक छथि पचकौड़ी तथा हुनक पत्नी सुगिया जे ब्रह्मस्थान पर कबुलापाती कऽ कऽ मखनाक नीके होयबाक कामना करैत छथि। यद्यपि शोषित वर्गमे एकता अवश्य अछि तथापि ओ अन्यायसँ डेरायल रहैछ; किन्तु ओहिसँ मुक्त होयबाक इच्छा अवश्य रखैत अछि। मुदा सामाजिक परिवर्तित परिवेशमे से संभव नहि भऽ पबैछ।

वर्त्तमान परिवेशमे एक दोसराक उपयोग करबाक पाछाँ बेहाल अछि। एहि लेल कोनो तरहक योग्यता अपेक्षित नहि अछि; प्रत्युत् एक हथकण्डाक प्रयोजन अछि। मुदा एतबा निश्चित अछि जे लोक अपन लाभक लेल ओकर उपयोग दोसरा पर करैत अछि। ई परम्परा समाजमे सतत चलैत रहैत अछि। एक बेर आक्टोपसक शिकंजामे पड़ि गेला पर वापसीक मार्ग अवरुद्ध भऽ जाइत छैक। 'घरैया लूरि'क महेन्द्र बाबू तथा 'ब्रह्मस्थान'क हरिवंश बाबू एही श्रेणीक पात्र छथि। जतऽ महेन्द्र बाबू ओहि श्रेणीक प्रतिनिधि छथि जे शोषित वर्गक शोषण सूदि पर रूपैया लगाकऽ करैत छथि समाजक साइलॉक सदृश छथि जे खदुकाक कौंढ़ करेज पर्यन्त खखोरबामे कुंठित नहि होइत छथि ततहि हरिवंश बाबू एक अहंकारी व्यक्ति छथि जे शोषक वर्ग पर अत्याचार करैत छथि। यद्यपि शोषित समाज हुनका सभक गतिविधिसँ पूर्णरूपेण परिचित अछि तथापि बेर-घड़ी पर वैह काज अबैत छथिन तेँ विरोध करबाक प्रश्ने ने उठैछ।

अत्यल्प पात्रक प्रयोग कऽ कऽ 'दिशाबोध' एकांकीक रचना एकांकीकार कयलनि। एहिमे कुल चारि पात्र

अछि। नूनू, हुनक वृद्ध पिता, सुन्दर तथा हुनक युवती पत्नी। हमर सामाजिक परिवेशक उक्त चारू पात्र मानसिक विश्लेषण करबामे क्षम भेलाह अछि। आधुनिक सामाजिक परिवेशक प्रतीक छथि सुन्दर जे भौतिकवादी युगमे अपन जीवनकेँ सुखी-सम्पन्न-सानन्दित बनयबामे निम्नसँ निम्न स्तर पर जा सकैत छथि। किन्तु युवती पत्नीक विद्रोही तेवर एतेक बेसी प्रखर अछि जे हुनका सोझाँमे ओ अँटकि नहि पबैत छथि। किन्तु नूनू कर्त्तव्यनिष्ठ पात्र छथि जे एम० ए० इन फिलॉसफी रहितहुँ अपन कर्त्तव्यपरायणताक संगहि संग पितृ एवं मातृभक्तिकेँ अपन पुनीत कर्त्तव्य बुझैत छथि। ओ दिग्भ्रमित सुन्दरकेँ आदर्श जीवन एवं कर्त्तव्यपरायणताक पाठ अपन व्यवहारसँ पढ़ाकऽ दिशाबोध करबैत छथि। नूनूक चरित्रसँ शिक्षित भऽ कऽ सुन्दर अपन रुग्ण मायक इलाजक लेल तत्परता देखायब आब कर्त्तव्य बुझैत छथि। एकांकीकार दिग्भ्रमित सामाजिक परिवेशक जे वास्तविक मानसिकता भेल जा रहल अछि तकर यथार्थतासँ जनसामान्यकेँ परिचित करयबाक प्रयास कयलनि अछि जे आधुनिक परिवेशमे उपेक्षणीय नहि प्रत्युत ग्रहणीय अछि।

संवाद

रंग-रचना चाक्षुष यज्ञ थिक तथा रंगानुष्ठान ओकर कर्मकाण्ड। संवादक ऋचा स्तवनसँ युगपुरुषकेँ साक्षात् कयल जाइत अछि। रंगानुभव यज्ञ पुरुषक एहि गायत्री गायनसँ अवगाहन पबैत अछि आर सम्पूर्ण रंग-कर्ममे प्रत्यक्ष होइत अछि। अतएव संवादक मन्त्रोचारसँ रंगकर्मक साक्षात्कार होइत अछि। एहि ऋचागायनक निश्चित व्याकरण अछि। एहि प्रकारेँ संवादक प्रस्तुतीकरणक सेहो एक संहिता अछि जे ओहिमे निहित अछि। संवाद रंगानुभवक आत्मज थिक। संवाद रंगकर्मक व्यवहार ओ आचरण थिक निर्देशक, सूत्रधार ओ रंगकर्मी संवादमे रंगकर्म, मंचन आ अभिनयक दिशाक अन्वेषण करैत छथि। कारण संवादक प्रत्येक शब्द, वाक्य रंगसिद्धिमे रहैत अछि। अतएव पूर्ण संवादरचनामे एक तँ प्रत्येक शब्दसँ रंगकर्मक किरण फुटैत अछि, दोसर संपूर्ण संवाद एहन रंगसिद्ध शब्दक अनुशासित समन्वयसँ एक एहन आलोक बिम्ब प्रस्तुत करैत अछि जे रंगकर्मक दिशा संकेत करैत अछि।

संवाद पात्रक बहुविध व्यक्तित्वक दर्पण थिक, ओकर विधायिका चारित्रिकताक समानुपातिक विकासक मानदण्ड थिक। संवादरचना नाटक मे नाटकप्रणेताक अत्यन्त कठिन भूमिका रहैत छनि। हुनका एकहि संग विविध पात्रक भूमिकामे उतरिकऽ ओकर मनःस्थितिक अनुरूप संवादरचना करऽ पड़ैत छनि। कतहु संवाद आरोपित नहि लागय, पात्रक प्रकृति ओ रंगसंवेदनाक प्रतिकूल नहि हो जकरा सतत ध्यानमे राखऽ पड़ैत छनि।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क संवादयोजना पर दृष्टिपात कयला पर स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे ओ प्रत्येक पात्रक संवाद-योजना ओकर परिस्थितिक अनुकूलहि निरूपण कयलनि अछि। प्रहसनमे जतऽ हास्य-व्यंग्यक प्रमुखता रहैत अछि ततऽ ओ तद्नुरूपनहि संवादयोजना कयलनि अछि। हिनक प्रत्येक संवाद एहन बुझना जाइछ जेना ओ स्वयं पात्रक रूपमे उपस्थित भऽ कऽ अपन बात ओकरा मुँहे कहयबाक प्रयास कयलनि अछि। हिनक एकांकी ओ प्रहसनक एक विशेषता अछि जे एकांकीकार ओहिमे पात्रोचित भाषाक संगहि संग ग्राम्य भाषाक प्रयोग एतेक सहजताक संग कयलनि अछि जकर परिणाम भेल अछि जे हिनक भाषा-शैली अत्यन्त मर्मस्पर्शी बनि गेल अछि। यद्यपि ई संस्कृतक पंडित छथि जनिका तत्सम शब्दक प्रयोग करबामे विशेष अभिरुचि रहबाक चाही; किन्तु ई भाषाप्रयोगमे एतेक बेसी उदारचेता छथि जे हिनक चाहे काव्यभाषा हो चाहे गद्यभाषा हो, ओहिमे ठेठसँ ठेठ शब्दावलीक एतेक प्रचुर परिमाणमे प्रयोग करैत छथि जे पाठकक मर्मकेँ स्पर्श करबामे सहायक होइत अछि। जतेक दूर धरि एकांकी ओ प्रहसनमे भाषाप्रयोगक प्रश्न अछि ओहि परिप्रेक्ष्यमे निर्विवाद रूपेँ कहल जा सकैछ जे लोकोक्तिक प्रयोग करबामे ई महारत हासिल कयने छथि जे पाठक वा दर्शकक ध्यानाकर्षित करैत अछि। प्रहसन ओ एकांकीक भाषाशैली वा संवादयोजना प्रस्तुत करबाक शैली एतेक सक्षम अछि जे नेपथ्यमे कोनो प्रकारक आडम्बर करबाक

प्रयोजन नहि पड़ैछ। रंगमंचक व्यवस्थाक एहन संकेत पात्रक माध्यमे देलनि अछि जे ओकर भूमिकाक निर्माण करैछ। पात्र जखन परस्पर वार्तालाप करैछ तखन अपन मौन, आवेग, स्थिर दृष्टिएँ, कखनो-कखनो हँसि कऽ, कखनो-कखनो बीचमे रुकि कऽ नाटकीय प्रभाव गंभीर बना दैत अछि। एहि प्रकारेँ मंचीय सम्भावनासँ परिपूर्ण हिनक प्रहसन ओ एकांकी सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्याकेँ जहिनाक तहिना प्रस्तुत कयलक अछि।

मिथिलांचलमे प्रचलित मुहाबरा ओ लोकोक्तिक प्रयोग हिनक काव्यभाषाक संगहिसंग गद्यभाषाक वैशिष्ट्य अछि। हिनक एहि प्रवृत्तिक प्रतिफल प्रहसन ओ एकांकीमे सेहो उपलब्ध होइत अछि जकर किछु बानगीक अवलोकन कयल जा सकैछ-यथा पेट काटिक पोसल पूत सैह कहै फल्लामा भूत, परि लागब, दाँत निपोड़ब, हक्कर पेलब,जीक पातर, नङो चङो करब, मनक मनसूबा, मनक मनोरथ मनहि बिलटल, आन करैत आन भेल हो रामा, गाल लगायब, अमार लगायब, बहिरा नाचे अपने तालेँ, कुकुर माछी काटब, बङौर लगाएब, भोथहा कलम, सनक सवार, मन लोहछब, गुमाने फाटब, पाँतरमे पड़ब, काछर काटब, रनरनायल फिरब, वंश कुड़हरि, नुड़िऐल फिरब, कनही गायक भिन्न बथान, कटहरमे नेढ़ा लगाएब, भाँड़ो छुइल आ पेटो नहि भरल, सोनक दोष की सोनारक दोष, पहाड़ ढाहब, छौंड़ी सिखाबय बुढ़ दादीकेँ, बुड़िसटही, खोप सहित कबुतराय नमः रड़धुम्मस करब, दम्म ने दुस्सा खाली बात पकठोस, गप्पीक खरिहान, दूरक ढोल सोहाओन, पेट छुटल गोनूझाक ढाकी, कनहा नछत्तर, नाक दम ठेकब, यमराजक पित्ती, आँखि गुड़रब, कमलाकातक दड़ारि जकाँ मुँह बायब, जीबइ छीने मरइ छी हुकुर हुकुर करइछी, भोकना बिलाड़, सुखिक टिटही, फिफिआइत रहब, हकलिलो भेल फिरब, खगने लोक की कीने करय, पेट पहाड़, रने बने फिफिआयब, छुहुक्का उड़ब, सुरता लागब, घूड़ धूआँ करब, टाटी लागब, लत्ते पत्ते दौड़ब, जोगाड़ धरायब, छप्पन छूरी चमकायब, कबुला करब, खगल लोक, डॉड़ पीठ एकट्ठा होएब, जिन्न पोसब, आँखि फुटब, एक बजा सतरह आबे, अकाश ठेकब, साटिघाटि राखब, लटारहम करब, खेखनियाँ करब, कुर्रकाई करब, आँटा गील करब, उत्तम खेती मध्यम बान, अधम चाकरी भीख निदान, हाथ पकड़ब, सेवासँ मेबा पायब, इत्यादि। एहि सँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे हिनका भाषा पर अद्‌भुत अधिकार छनि तथा पात्रक मुँह सुनैत देरी दर्शककेँ स्वयं आत्मबोध भऽ जाइत छैक।

एकांकी एवं प्रहसनक भाषा अन्य साहित्यिक विधादिक तुलनामे एक पृथक् संस्कारसँ संयुक्त रहैत अछि। यथार्थक आग्रहक कारणेँ ओकरा सामान्य जीवनक बोली वर्णक भाषासँ निकट होयब अनिवार्य अछि। पंडित श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन एकांकी ओ प्रहसनमे सामान्य भाषाक भीतरहिसँ अपनाकेँ संचरित-संस्कारित कयलनि अछि। एहि रूपमे एकांकीक वस्तुक लेल तथ्ये नहि एकत्रित करैछ, प्रत्युत सम्पूर्ण रचना-तन्त्रक निर्माण सेहो करैछ। वस्तुतः हिनक एकांकी ओ प्रहसनक भाषा सम्पूर्ण सम्प्रेषणक भाषा थिक जाहिमे एक-एक शब्द कहल गेल अछि, ओ महत्त्वपूर्ण नहि, महत्त्वपूर्ण अछि एक समग्र प्रभाव आर ओ जे नहि कहल गेल अछि, जे ध्वनित व्यंजित मात्र कयल जाइत अछि। हिनक भाषा हिनक व्यक्तित्वमे रचल-बसल छनि जे सामाजिक परिवेश, मानसिक चेतना सब मिलि कऽ हिनक भाषिक प्रतिभाक निर्माण करबामे सहायक भेल अछि। हिनक सर्जनात्मक बोध, चयन ओ संयोजनक सायास आग्रह सामान्यसँ विशिष्ट बना देलनि अछि।

गीत

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' मूल रूपेँ कवि छथि तेँ एकांकीमे सेहो स्थल-स्थल पर हिनक काव्य-प्रतिभाक प्रस्फुटन भेल छनि जकर प्रतिफल थिक 'घरैया लूरि'; 'हाकिमक हाकिम' एवं 'श्रमदान' मे सेहो हिनक काव्य प्रतिभासँ पाठक एवं दर्शक परिचित होइत छथि। 'घरैया लूरि'मे ढोलक झालि पर गबैत एक मण्डली प्रवेश करैत अछि, जकर विषय-वस्तु थिक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा देखाओल गेल गृह-उद्योग एवं कुटीर उद्‌योग, तकर महत्ता पर प्रकाश देल गेल

अछि। एहि एकांकीमे प्रयुक्त गीतक महत्त्वक मूल स्वर थिक जनसामान्यकैं एहि दिस आकर्षित करब। 'हाकिमक हाकिम वा ननदिओक ननदि'मे सेहो उपर्युक्त परम्पराक पालन कयल गेल अछि जखन मिडिल स्कूलक प्रांगण मे चेयरमैन साहेब उपस्थित भऽ छात्रलोकनिकैं वार्षिकोत्सवक अवसर पर पारितोषिक देबाक लेल जाइत छथि तखन हुनक स्वागतार्थ स्वागतगानक आयोजन कयल जाइत अछि। 'श्रमदान' एकांकीमे सेहो एहि परम्पराक निर्वाह कयल गेल अछि। स्वयंसेवकक दल कान्ह पर कोदारि आर हाथमे छिट्टा लऽ कऽ श्रमक महत्ताकैं प्रतिपादित करैत मातृभूमि भारतमाताक आह्वान करैत छथि जे मानवता पर दानवताक स्पष्ट झांकी भेटि रहल अछि। एहन विषम स्थितिमे दलितक उद्धारक हेतु एहिसँ उत्तम साधन आर की भऽ सकैछ? श्रमक माध्यमे हमरासभक उत्थान संभावित अछि। एहिसँ प्रेरित भऽ कऽ गौंआसब मिलि कऽ देशक निर्माण, अपन भाग्यक निर्माण तथा अपन भावी संतानक भविष्य निर्माणक हेतु कोशीक वन्दना करैत देखल जाइत छथि जाहिमे मातृभूमिक कल्याणार्थ क्रान्तिकारी डेग उठबैत विश्व-बन्धुत्वक भावनासँ प्रेरित भऽ कऽ आबाल-वृद्ध-वनिता देशक नव-निर्माणक हेतु सन्नद्ध भऽ जाइत छथि जे त्याग, तपस्या, आलस्य, भय आदिक परित्याग कऽ देशक नव-निर्माणमे लागि जाथि। उपर्युक्त तीनू गीतक शब्द विन्यास संगीत परम्परानुरूप अछि।

उद्देश्य

पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क जतबे एकांकी ओ प्रहसन प्रकाशमे आयल अछि ओहिमे एकांकीकार मिथिलांचलक परिप्रेक्ष्यमे जाहि सामाजिक समस्यादिकैं प्रस्तुत कयलनि ओ मात्र मिथिलांचलेक समस्या धरि सीमित नहि अछि, प्रत्युत् सम्पूर्ण भारतवर्षक ओहि सामाजिक परिवेशक समस्या थिक जाहि परिवेशमे भारतीय निम्न एवं मध्यवित्त परिवार गुजर-बसर करैत अछि। हमरा जनैत एकांकी ओ प्रहसनक रचनाक पाछाँ एकांकीकारक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहलनि जे ओ एकरा माध्यमे मिथिलांचलक सामाजिक परिवेशक पुनर्निर्माणक संगहि संग समाजमे एक एहन चेतना आनब जाहिसँ जर्जरित समाजक कायाकल्प कयल जा सकय। एक सफल शिक्षक होयबाक कारणें व्यावहारिक जीवनक अनुभवक आधार पर एक युगद्रष्टा साहित्यकारक सदृश ओ यैह संदेश देबाक उपक्रम कयलनि जे शिक्षा जगतमे आमूल परिवर्तन, परिवर्द्धन ओ परिमार्जनक प्रयोजन अछि। एहि पृष्ठभूमिमे ओ अपन एकांकी ओ प्रहसनक विषय-वस्तुक चयन कयलनि जे व्यावहारिक जीवनमे जनसामान्यक हेतु लाभप्रद सिद्ध भऽ सकय।

प्रत्येक व्यक्तिक जीवनक एक सुनिश्चित उद्देश्य होइछ। ओहि ध्येयक प्राप्तिक हेतु व्यक्ति सब किछु तन-मन-धन समर्पित कऽ दैत अछि। पुस्तक मनुष्यक गुरु एवं मित्रक संगहि सब किछु अछि। ओहिसँ फराक रहि कऽ मनुष्यकैं सुखक अनुभूति नहि भऽ सकैछ। मृगतृष्णाक पाछाँ-पाछाँ दौड़लासँ मनुष्यकैं मात्र थकाने होइत छैक। किन्तु पुस्तकमे व्यस्त रहला पर मानसिक समाधान ओ ज्ञानक संगहिं सम्मान भेटैछ। अतएव समाजसँ किछु मांगबाक लालसासँ नीक थिक जे अध्ययन-अध्यापनक सत्य दुनिया अपनायब राजमार्ग थिक। पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क विपुल साहित्यसाधनाकैं देखि प्रतिभासित होइत अछि जे हिनक साहित्यसाधना निश्चित रूपैं हिनक राजमार्ग छनि जकरा अनुसरण कऽ कऽ एतेक अवदान मैथिली साहित्यकैं श्रीवृद्धि करबामे दऽ पौलनि ओ जाहि सामाजिक परिवेशक प्रश्न एकांकी ओ प्रहसनमे उठौलनि ओ निश्चित रूपैं मिथिलाक पृष्ठभूमिमे एक अभिशाप थिक।

'ब्रह्मस्थान' एक उल्लेखनीय एकांकीक रूपमे पाठकक समक्ष अबैत अछि जाहिमे एकांकीकार निम्नवर्गीय गमैया समाजक प्रतीक रूपमे सुगिया ओ पचकौड़ीकैं प्रस्तुत क' कऽ ई जनयबाक उपक्रम कयलनि अछि जे युग-युगसँ सीदित, पीड़ित अछि, जकरा पर अत्याचार तँ अवश्य होइत छैक; किन्तु अपन आक्रोशकैं गामक मुखिया हरिवंश बाबू पर नहि प्रकट कऽ कऽ ब्रह्मस्थान पर प्रकट करैत अछि जे भगवान सेहो शोषकवर्गक संग मिलिकऽ अत्याचार करबामे

सहयोग देबामे कनेको कुंठित नहि होइत छथि। जाहि समाजमे अशिक्षा ओ अंधश्रद्धाक प्रभाव छैक ओतऽ गरीब तथा मजदूरक शोषणक परम्परा बनि कऽ रहि जाइत अछि। ओकर मानसिकता एहन छैक जे ओने तँ भगवानक विरोध कऽ सकैछ आने शोषकवर्गक प्रतिनिधि बनिकऽ मूक रहि सकैछ। ओ अन्यायसँ डेरायल अछि तथा ओहिसँ मुक्ति पयबाक आकांक्षी सेहो अछि। एतऽ संघर्षक दोसर पक्ष सेहो अछि जे मुखिया एहि अन्यायक एक पुर्जा मात्र अछि।

सामाजिक यथार्थ विषयक चयन करबाक पाछाँ श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' (1925)क मुख्य उद्देश्य छनि समाज-सुधार तथा जनसामान्यकेँ एहि दिस आकर्षित करब। एकांकीकार समाजक अन्याय पर प्रकाश दऽ कऽ जनसामान्यमे चैतन्य उत्पन्न कयलनि अछि। ओनातँ सभ देशक नाटककार सामाजिक विषयकेँ आधार बना कऽ कतिपय नाटक, एकांकी ओ प्रहसनक रचना कयलनि अछि जे पाठक वा दर्शकक आकर्षणक केन्द्र रहल अछि। भारतीय एकांकीकार ओ प्रहसनकार सामाजिक यथार्थक पूर्ण उपयोग कयलनि। प्रस्तुत एकाकीकार सामाजिक विषयकेँ आधार बनाकऽ सुधार करबाक दिशामे प्रयास कयलनि। ओ मिथिलांचलक सामाजिक जीवनमे विस्तृत कुरीतिकेँ देखलनि तथा ओहि पर व्यंग्यात्मक शैलीमे प्रहार कयलनि। एकांकीकारक सुधारक वृत्तिक परिणामस्वरूप समाजक जीबैत-जागैत चित्र जनसाधारणक सोझाँ प्रस्तुत भेल तथा नवीन भावनाक विकासक लेल मार्ग प्रशस्त भेल। समाजक परिष्कार भावनासँ प्रेरित भऽ कऽ ओ एकांकी एवं प्रहसनक रचना कयलनि तथा सामाजिक परिवेशक अन्तर्गत वर्गगत विडम्बनाकेँ नष्ट करबाक उद्देश्यसँ ओ हास्य-व्यंग्यकेँ प्रमुख साधन बनौलनि।

संभवतः एहि वास्तविकतासँ अवगत नहि रहलाक कारणेँ डा० दुर्गानाथझा'श्रीश' (1933) 'मैथिली साहित्यक इतिहास' (1991)मे हिनका पर जे आरोप लगौलनि अछि जे हिनक एकांकी–'जाहिमे प्रचार-प्रसारक स्वर अत्यन्त मुखर भेलासँ प्रत्येक एकांकी, सरकारी प्रचार साहित्य जकाँ लगैत अछि।' (पृष्ठ–301)। हमरा दृष्टिएँ डा० दुर्गानाथझाक ई कथन सर्वथा दिग्भ्रमित विचार थिक कारण साहित्यक प्रमुख उद्देश्य होइछ जे समाजमे घटित भेनिहार घटनाक थथार्थ पाठक ओदर्शककेँ अवगत करायब समाजक अभावमे साहित्य महत्त्वहीन भऽ जाइछ। एकांकीकार श्री चन्द्रनाथमिश्र'अमर' (1925) समाजक यथार्थक चित्रणक कऽ वास्तविकतासँ अवगत करयबाक प्रयास कयलनि जे सर्वथा ग्रहणीय अछि, अनुकरणीय अछि, कारण हुनक एकांकी ओ प्रहसनक विषय-वस्तु समाजोन्मुखी तथा समयक जे मांग छल तकरा परिप्रेक्ष्यमे लिखल गेल अछि।

निःसारण

पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' अपन प्रहसन ओ एकांकीमे हास्य-व्यंग्यक अवतारणाक लेल विविध पात्र एवं परिस्थितिकेँ कथा-वस्तुमे नियोजित कयलनि अछि, कारण हुनक समसामयिक सामाजिक परिवेशक अन्तर्गत एही प्रकारक ज्वलन्त समस्या छल जकर ओ अत्यन्त सूक्ष्मताक संग विश्लेषण कयलनि। प्रहसनक कथा अतिरंजित होइत अछि आर प्रहसनक पात्रक विविध क्रिया-कलाप सेहो दर्शककेँ हँसबैत अछि। यद्यपि प्रहसन उपहासात्मक होइत अछि तथापि ओहिमे सुधारक भावना सन्निहित रहैत अछि जे हिनक प्रहसनक केन्द्रविन्दु थिक।

एकांकीमे ई सामाजिक समस्याक विभिन्न पहलूकेँ प्रभावोत्पादक शैलीमे प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत कयलनि अछि। एकांकीकार यथास्थान सहज स्फूर्तिसँ मार्मिक विचारकेँ अभिव्यक्त कयनिहार ग्राम्य-भाषाक शब्दावलीमे जे अभिनेताक जीह पर अनायासहि आबि जाय तकरा अपना कऽ एकांकीकेँ सशक्त भाषाक माध्यमे प्रस्तुत कयलनि। हिनक एकांकी ओ प्रहसनक भाषा तथा ओकरा प्रस्तुत करबाक शैली एतेक सक्षम अछि जे नेपथ्यमे कोनो प्रकारक आयोजनक प्रयोजने नहि पड़ैछ। ई एकांकी ओ प्रहसनमे रंग-व्यवस्थाक एहन संकेत पात्रक माध्यमे देलनि अछि जाहिसँ

एकर भूमिकाक निर्माण स्वयं भऽ जाइछ। एक पात्र दोसरा संग वार्त्तालाप करैत काल अपन आवेग, मौन एवं स्थिर दृष्टिएँ बीच-बीचमे रुकिक' नाटकीय प्रभावकेँ गंभीर बना देलनि अछि। एहि प्रकारेँ मंचीय संभावनासँ परिपूर्ण हिनक एकांकी ओ प्रहसन सामाजिक जीवनक यथार्थथक विभिन्न समस्याकेँ एहि प्रकारेँ रू-ब-रू प्रस्तुत कयलनि अछि जाहिसँ आलोकित बिनु भेने नहि रहि सकैछ। हिनक एकांकी ओ प्रहसनक भाषामे सूक्ष्मता एवं प्रत्यक्षता अछि।

पंडित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' समसामयिक जीवनक दैनिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याकेँ विचारप्रधान ढंग सँ सोझरयबाक प्रयास कयलनि। ओ काल्पनिक जीवनसँ हटिक यथार्थक सहरजमीन पर अयलाह। कथानक, पात्र, चरित्र-चित्रण, भाषा, वेश-भूषा सबमे यथार्थक प्रति अभिरुचि हिनक एकांकी ओ प्रहसनक विशिष्टता अछि। यथार्थवादी प्रगतिशील समस्याकेँ ओ एकांकी एवं प्रहसनमे स्थान देलनि। ई नाटकीयभाषाक संस्कार कयलनि, नव भावक संजीवनी ओकरा देलनि एवं कलाक विभिन्न रूपमे सार्थक प्रयोग कयलनि तथा वर्त्तमान मैथिली गद्यकेँ दिशा देलनि। हिनक एकांकी-प्रहसनमे रस-निष्पत्ति स्वयं होइत अछि। विशेषतः हास्य-व्यंग्यक ई मैथिलीमे सिद्धहस्त लेखक छथि जकर प्रतिरूप हिनक समग्र साहित्यमे उपलब्ध होइत अछि। हिनक एकांकी ओ प्रहसन अभिनयोपयोगी अछि जकरा प्रस्तुत करबाक हेतु कोनो तामझामक आयोजनक प्रयोजन नहि पड़ैछ। हिनक एकांकी-प्रहसन जहिना पठनीय अछि तहिना अभिनेय सेहो। एहि प्रकारेँ हिनक एकांकी-प्रहसनक माध्यमे मिथिलांचलक समाजक समस्त सामाजिक जीवनक झलक भेटैत अछि जे विविध रूपमे प्रत्यक्षीकरण भऽ जाइत अछि।

●

एकांकीकार 'अमर'

डा० इन्दिराझा

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' मैथिली साहित्यक विविध विधाकेँ उपकृत क' 'अमर' छथि। मूलतः कविहृदय 'अमर'जी हास्य-व्यंग्यक आश्रय लऽ लोकप्रिय होइत कथाकार, उपन्यासकार, निबंधकार, आलोचक, संपादक, अनुवादकसँ रूपमे विख्यात भेलाह। आलोचना ओ अनुवाद दुनू क्षेत्रमे साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत प्रतिभावान सूर्य सदृश मैथिली साहित्यक क्षितिज पर उदित छथि। हिनक 'मैथिली पत्रकारिता' इतिहास, मैथिली साहित्यक अनमोल कृति थिक। मातृभाषाक विकास दिस साहित्यकार 'अमर' स्वयं स्वीकार कएने छथि जे, ''हम कर्मक्षेत्र मे अवतीर्ण होइतहिँ मातृभाषाक सेवाव्रत लऽ अपनाकेँ समर्पित कएने रहलहुँ। संगहि राष्ट्रभाषा हिन्दीओकेँ यथासाध्य सेवा कएल। एहि क्रममे दूनू भाषामे कविता-कथा-निबन्ध एवं व्यंग्य-स्तम्भ लेखनक अतिरिक्त मैथिलीमे उपन्यास, एकांकी, प्रहसन, संस्मरण, अनुसंधान, अन्वेषण ओ संपादनकार्य करैत मातृभाषाक विकास ओ अन्युत्थानमे, प्रयोजन पड़ला पर नाटकक रंगमंचसँ चित्रपट पर्यन्त पर उतरबामे संकोचक अनुभव नहि कएल।''[1]

एकांकीकारक रूपमे श्रीअमरजी अन्य साहित्यिक विधे सदृश पूर्ण सफल रहलाह। रंगमंचीय दृष्टिकोणसँ हिनक एकांकी मंचनयोग्य अछि। काव्यमे नाटक रम्य अछि किएक तँ एकर रसास्वादन कर्णकुहरक संग चक्षुसँ सेहो कएल जाइत अछि तेँ नाट्यरचना विशेष प्रतिभासंपन्न व्यक्तिएसँ संभव। एकर सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक दूनू पक्ष होइत छैक। नाटक हो वा एकांकी, ओ तखने सफल होएत जखन ओकर मंचीकरण सफल हो। अतएव ओकर तकनीकक ज्ञान एकांकीकारकेँ अवश्य होएबाक चाही। अमरजीक एकांकी रंगमंच पर अभिनीत होएबामे पूर्ण सफल भेल अछि।

एकांकी विधा सममामयिक परिस्थितिक विश्लेषणक एकटा सशक्त माध्यम थिक संकलनत्रय ओ संघर्षमय कार्यव्यापारक योगसँ एकांकी नाटक नवयुगक हेतु सर्वथा अनुकूल सिद्ध भेल अछि। लघुरूपता ओ कथानकक केन्द्रीयताक कारणेँ ई लोकप्रिय भेल। एहि विधाक विकास पाश्चात्य साहित्यक प्रभावसँ आधुनिक युगमे भेल अछि।

मैथिली साहित्यमे एकांकीक एकटा दीर्घ परम्परा रहल। गोपालजीझा 'गोपेश'क कथन छैन्हि जे 'एकांकीक विकास मैथिलीमे मात्र मनोरंजनक दृष्टिएँ नहि भेल अछि, प्रत्युत ओकर उद्देश्य बरोबरि रहल अछि सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्या सभहिक समाधान ओ अधुनातन दृष्टिकोणक प्रस्तुतीकरण, सामाजिक मूल्यक समीक्षण, प्राचीन गरिमाक प्रदर्शन ओ राष्ट्रीय उत्थानमे नित्यक योगदान।''[2]

नामक अनुरूपें एकांकीमे एक अंक होइत अछि। जीवनक कोनहु एक पक्षकेँ एकर कथानक उद्घाटित करैत अछि। सीमित पात्र ओ घटनाक न्यूनताक कारणेँ एकांकीमे कथानकक गति क्षिप्र भऽ जाइत अछि। एकांकीमे कौतूहलक सूत्रपात प्रारम्भेमे भऽ जाइत अछि। डा० दिनेशकुमारझा मैथिली एकांकीकेँ निम्न भागमे बँटलैन्हि अछि– पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, समस्यामूलक तथा राष्ट्रीय एकांकी।''

अमरजीक एकांकीक विषयवस्तु समाज रहल, लोकजीवन रहल तथा ओकर सभक सामाजिक, राजनैतिक ओ आर्थिक समस्या रहल। हुनक सूक्ष्म दृष्टि समाजेक विविध पक्षक उद्घाटन दिश नहि रहल अपितु राष्ट्रक प्रति लोकजीवनक दायित्त्वक प्रति ओ साकांक्ष रहलाह। डा० जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे हुनक निम्नलिखित एकांकी सभक उल्लेख कएने छथि-टोपी, निरक्षरता निवारक पाठशाला, आधुनिक पाठ्यप्रणाली, हकीमक हाकिम, घरैया लूरि, ब्रह्मस्थान आदि।[3]

एकांकी नाटकक एकटा विशिष्ट रूप अछि प्रहसन। मैथिली साहित्यमे प्रहसन रचनाक उद्देश्य रहल मनोरंजन

तथा धर्म, आदर्शक नाम पर पसरल अनैतिकता, पांखड आदिक मूलोच्छेदन। अमरजीक प्रसिद्ध प्रहसन अछि 'मलरवि' राष्ट्रक प्रति लोकक दायित्वबोधक भिक्षा 'मलरवि' प्रहसनक माध्यमे देल गेल अछि। अमरजीक एकगोट स्वतंत्र एकांकी संग्रह प्रकाशित अछि 'समाधान'। एहि एकांकी संग्रहक प्रति इतिहासकार डा० दुर्गानाथझा श्रीशक कथन द्रष्टव्य थिक–समाधान अमरजीक प्रचारात्मक एकांकी संग्रह थिक जाहिमे प्रचारक स्वर अत्यन्त मुखर भेल। प्रत्येक एकांकी सरकारी प्रचारक साहित्य जकाँ लगैत अछि। हमरा जनैत 'मलरवि' हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक कारण अमरजीक प्रतिभा हास्य व्यंग्यक वातावरणक चित्रणहिमे सर्वाधिक निखरैत अछि।''[4]

अमरजीक 'घरैया लूरि' एकांकीमे कुटीर उद्योगक विकास पर ध्यान आकृष्ट कयल गेल अछि आर्थिक प्रगतिक लेल गृहउद्योगक विकास अवश्य होएबाक थीक। खानदानी व्यवसाय-वृत्त सिखने बेकारीक समस्या नहि रहि जाइत छैक। द्रष्टव्य थिक निम्न संवाद–''मनचन–मटरू मिस्त्री अपन बेटा कैँ अपन घरैया लूरि सिखौलक तँ फुफुआइत अछि आ ओ अपन बेटा कैँ इस्कूल पठौलक तँ फिफिआइत अछि।''[5]

भाषाक इएह सरलता अमरजीक सभ रचनामे भेटत। हिनक संवादयोजना रोचक शैलीमे रहैत अछि तथा अलंकारक सहज प्रयोग ओकरा सरस बनबैत अछि। द्रष्टव्य थिक निम्न पांती–''बटुओ आइ मुँह बबैत अछि। एक चुटकी एहिमे तमाकू नहि। भिनसरसँ साँझ धरि खटैत-खटैत पीडक रीढ टूटि जाइत अछि आ ई पेट छूटल गोनूझाक ढाकी भऽ गेल।[6]

देशक आर्थिक विकासक लेल एकांकीकार अपन संदेश 'घरैया लूरि'मे दैत कहैत छथि– ''मनचन-सुनह' हमरालोकनिक बाप-पितामह मूर्ख नहि छलाह। पहिने सभ काजक हेतु सभ जाति फराक-फराक भार उठौने रहैत छलैक। सभ काज बाँटल छलैक। घर-घर लोक अपन धंधा करैत छल ताहि परसादें परिवारक पालन-पोपण होइत छलैक आ संगहि समाज सेवा एक तरहेँ भऽ जाइत छलैक। एककैँ दोसरसँ विरोधे बड़ थोड़ भेटैत छलैक।''

ग्रामीणलोकनि अपन लूरि मे परिमार्जित भऽ अर्थोपार्जन करथि तँ बेकारीक समस्याक समाधान संभव थिक–इएह एकांकीकारक विचार प्रतिपादित भेल अछि। एहि एकांकीक मंचीकरण सरल अछि।

अमरजीक एकांकी सभमे 'ब्रह्मस्थान' एकांकीक एकटा विशिष्ट महत्त्व अछि। समाजसुधारक सदृश एकांकीकार समाजक विविध ज्वलंत समस्यासँ पाठक, दर्शककैँ अवगतं करबैत ई चेतौनी दैत छथि जे शोषित वर्ग मे नवचेतना जाग्रत भऽ रहल अछि। अतएव सामन्तवादीकैँ अपन व्यवहारमे परिवर्तन अवश्य आनक थिक। सहज ग्रामीण परिवेशमे एहि विचारक अभिव्यक्ति भेल अछि। विविध पात्रक नियोजन ओ घटनाक्रममे तालमेल स्थापित कऽ विषयवस्तुकैँ साहित्यिक फलक पर राखल गेल अछि।

शोषित वर्गक प्रतीक थिक सुगिया ओ ओकर पति पचकौड़ी जकर जीवन हरिबाबूक ओतए बेकारी करैत व्यतीत भऽ रहल छैक। ओकर बाप-पितामह सेहो हरिबाबूक ओतय बंधुआ मजदूरक रूपमे कार्यरत छल। ओकरे सभ द्वारा लेल मामूली कर्ज सुगिया अपन श्रम दऽ अदा कऽ रहल अछि। मिथ्या कर्जक जालमे फँसा पीढ़ी दर पीढ़ी ओकर सभक श्रमक शोषण होइत रहल। ओकरा सभकैँ ने तँ भरिपेट भोजन भेटैत छैक ने द्रव्य। अतएव नकद रूपैयाक लेल पचकौड़ी शहर जाइत अछि। अपन ज्वरग्रस्त, मरणासन्न पुत्रकैँ छोड़ि सुगिया पानि भरबाक हेतु बिलम्बसँ हरिबाबूक ओतए, जाइत अछि। हरिबाबू क्रोधान्धभऽ असहाय सुगिया पर हाथ उठबैत छथिऽ सुगिया निर्भीकतासँ हरिबाबूक व्यंग्यवाणक उत्तर दैत रहैत अछि। पचकौड़ी शहरसँ समतोलालऽ घुरैत अछि ताधरि ओकर पत्नीक अनुपस्थितिएमे मखनाक प्राणांत भऽ जाइत छैक। पचकौड़ी क्रोधान्धभऽ उठैत अछि। ओ हरिबाबूक पुत्रक मुँहमे समतोला कोँचि दैत छनि। द्रष्टव्य थिक निम्न संवाद योजना– 'पचकौड़ी बाबू ई समतोला नेमो थिकै समतोला नेमो। बड़का लोकक धियापुता ई नेमो खाइत छैक। हम आइ बड़ मेहनतसँ ई नेमो अपन सूगा लै ऊपर कएने छी गऽ। सोचने छली जे हमर

बौआ ई देखि कऽ खुशी सँ नाचि उठत मगर ओ बड़का लोकक बच्चाक बराबरी कोना करितय। सुगवा उड़ि गेल। आइ हम पानिसँ सबकेँ डुबा दैत छिकी अहाँक बच्चाक अँतड़ी जलखै ले ऐँठइ छलनि मे? अङ्नामे पानि नहि छल गऽ। लाउ जते घैला, आइ अपना नोरसँ अहाँकेँ, अहाँक बालबच्चाकेँ, अहाँक घर-दुआरकेँ, सबकेँ डुबा दैत छिकी औ मालिक अरौ बाप रौ बाप!!!

पुत्रशोकसँ पचकौड़ी विक्षिप्त भऽ ब्रह्मस्थानकेँ कोड़बाक लेल उद्यत होइत अछि। मुदा धरणीधर ओ जयकान्तक प्रयाससँ शान्त होइत अछि।

ग्राम्यसमाजक विद्रूपता निम्न संवादयोजनामे प्रकट भऽ रहल अछि–

''पचकौड़ी-अन्याय नहि करू औ बाबू घोर अन्याय महा-अन्याय

जयकान्त–सेहो गामक मुखिया द्वारा।

पचकौड़ी–नई औ बाबू। हमसे नहि मानब। अहाँ सभ, मिलिकऽई अन्याय केली अऽ। जकरा पुस्त-पुस्तैनसँ गरीबक शोणित पिबैक लुतुक छैक तकरा ग्रामक मुखिया बनबैत गेल।

धरणीधर ठीक कहैछी कमती। जा धरि टकासँ भोट बिकाइत रहतैक ताधरि कोनो अधिकार रूपैयाबलाक हाथमे रहतैक।

जयकान्त– मुदा कमती एखन जे मोनक तामस अहाँ माटिक ब्रह्म पर झाड़ऽ चाहैत छी से ठीक नहि। कारण भारतक जनता धर्मांध अछि। एखनो ओकरा एहि माटिक ब्रह्म पर जतेक, श्रद्धा ओं विश्वास छैक ततेक जनता-जनार्दन पर नहि।

धारणीधर–वास्तवमे गरीबेक सेवा भगवानक असल सेवा थिकनि। इएह गाँधीजीक जीवनदर्शन थिकनि। एही आधार पर ओ ग्रामराज्यमे रामराज्यक स्वप्न देखैत छलाह।''

ब्रह्मस्थान एकांकीमे जनजीवनमे पसरल भ्रष्टाचार, घूस आदिक आदान-प्रदान आदि पर सेहो प्रकाश पड़ल अछि।

अमरजीक एकांकी परिमाणक दृष्टिसँ विपुल नहि मुदा गुणवत्ताक दृष्टिसँ उत्तम कोटिक अछि। एकांकीकारक रूपमे अमरजी एकटा आदर्थ उपस्थित करबामे सफल भेलाह अछि। सरल भाषाक माध्यमे अपन विचार व्यक्त करब हिनक विशेषता रहल अछि।

संदर्भ–

1. भारती मंडन, अं०3, पृ० 130
2. मैथिली साहित्यक रूपरेखा, चेतना समिति, पृ० 127
3. मैथिली साहित्यक इतिहास (साहित्य अकादमी) – डा० जयकांत मिश्र, पृ० 26)
4. मैथिली साहित्यक इतिहास– डा० दुर्गानाथझा 'श्रीश' पृ० 301
5. घरैया लूरि-एकांकी संग्रह (वि० पा० पु० नि०लि०), पृ० 70
6. एकांकी संग्रह, पृ० 12

●

पंडित 'श्रीअमर' ओ हुनक एकांकी

डॉ० अरुणकुमारसिंह

एकांकी आधुनिक साहित्यक देन थिक। इऐह कारण अछि जे आधुनिक जीवनक विसंगतिक विविध प्रवृत्तिक विश्लेषण एहि विधामे पर्याप्त रूपेँ भेल अछि। आधुनिक जीवन अत्यन्त कष्टपूर्ण ओ दुस्साध्य भऽ गेल अछि। जीवनमे अवकाशक समयाभावक कारणेँ विविध प्रवृत्यानुरूप एकर रचनाकेँ आर महत्त्वपूर्ण बना देलक अछि। मैथिलीक एकांकीकार साहित्यक नवीन प्रवृत्तिसँ प्रभावित भऽ अपन भाषा ओ साहित्यकेँ नव प्रवृत्तिक दृष्टिसँ सम्पुष्ट कयलनि अछि। उपेन्द्रनाथ अश्क स्वीकार करैत छथि– "हम प्रारम्भमे टैगोर, पुनः पाश्चात्य एकांकीकार बेरी, ओ नील, इब्सन, स्टिंडवर्ग, पिरेन्द्रे लो, शाँ, प्रीस्टले, मैत्रलिंक आ चेखबक नाटक सभक अध्ययन-मनन कयलहुँ। बर्नाडशॉ पढ़बामे नीक लगैत छथि, परन्तु ओ कदाचित् हमर रुचिसँ मेल नहि खाइत छथि। ओकर अपेक्षा चेखब ओ नील, प्रीस्टले, मैत्रलिंकक नाट्य रचनासँ प्रेरणा प्राप्त कयलहुँ आ अपन अनुभूतिकेँ नाट्यरूप देलहुँ।"[1] इऐह स्थिति मैथिली एकांकी साहित्य सर्जकक प्रसंगमे अछि।

नाट्य-कलाक क्षेत्रमे नवीन प्रवृत्तिक सूत्रपात भेल जकर प्रभाव एकांकी पर सेहो पड़ल अछि। ई अन्य बात थीक जे परम्पराक बाट पकड़ि युगसँ पाछाँ रहनिहार प्रत्येक युगमे भेटैछ, परन्तु पाश्चात्य नाटकक अध्ययन एहि संस्कारकेँ सुदृढ़ कयने जा रहल छल। नव प्रवृत्तिक प्रतिष्ठा भऽ रहल छल। एहि प्रवृत्तिकेँ मैथिली एकांकीकार अपन सहज रचनासंस्कारमे समाहित कयलनि। आधुनिक मैथिली एकांकीमे कतिपय प्रवृत्ति दृष्टिगत होइत अछि। नव प्रवृत्तिक एकांकी सरल गतिक कथानकसँ फराक होयबाक प्रयल कयलक अछि। आब मानल जा रहल अछि जे एकांकीक कथानकमे संघर्ष आ नाटकीय मोड़क अनिवार्यता अछि। ओ स्थिर नहि भऽ कऽ क्रमिक रूपसँ विकसित भऽ चरम सीमा धरि पहुँचय, कौतूहल आ जिज्ञासाक सृष्टि अन्त धरि बनल रहय, एक निश्चित दिशा, निश्चित केन्द्रबिन्दु, एकाग्रता, मितव्ययिता, संश्लिष्टता, सुसम्बद्धता रहय आ अनावश्यक विस्तार कतहु नहि हो। आधुनिक एकांकीमे वर्णनात्मकताक विरोध कयल गेल अछि। ओहि स्थान पर अभिनयात्मकताक प्रतिष्ठापन कयल गेल अछि।

एकांकीमे आधुनिक प्रवृत्तिक दृष्टिसँ एक दृश्यक संयोजनकेँ अनिवार्य मानल गेल अछि। एहिसँ फराक किछु एकांकीकार संकलन-त्रयक प्रयोगधर्मिताकेँ नितान्त आवश्यक मानलनि अछि। किन्तु एकांकी नाटकमे एकांकीकारक व्यक्तिगत प्रतिभा, संस्कार, रुचि, अध्ययन आदिक कारणेँ विविधता लक्षित होइछ।

भारतीय नाटकक आत्मा आदर्शवाद वा रस निष्पत्ति पर आधारित रहल अछि। किन्तु आधुनिक एकांकीक आत्मा मनोविज्ञान तथा अन्तर्द्वन्द्व अछि जे पाश्चात्य प्रवृत्तिक देन थीक। आधुनिक एकांकीमे दैनिक जीवनसँ सम्बन्धित घटना पर बल देल जाइत अछि। एहि रूपक घटना-चित्रणमे कार्यकारण विवेकपूर्ण कथोपकथनकक उपयोग कयल जाइछ। पुनः आधुनिक एकांकीमे संघर्षक महत्त्व पर बल देल गेल अछि। कतहु प्राचीनताकेँ नवीनताक संग, अमीर-गरीबक संग, समाजवाद साम्यवादक संग, पाश्चात्य विचारधारा केँ भारतीय विचारधाराक संग संघर्ष होइछ। एहि सभ विषयक चित्रण संस्कृतक एक अंकक नाटकमे स्थान नहि छल। सत्यतः जीवनक व्यस्तता, अशान्ति, कार्यबाहुल्य, अवकाशशून्यता आदि तथा मानव जीवनक उत्तरोत्तर बढ़ैत द्वन्द्व एकांकी नाटककेँ जन्म देलक अछि आर इऐह कारण थीक जे एकर विकास, प्रचार-प्रसार ओ लोकप्रियता बढ़ल अछि।

मैथिली एकांकी विधाक अस्तित्व पूर्णतः पाश्चात्य प्रवृत्ति एवं भारतीय भावभूमिक समन्वय पर स्थित अछि। उदाहरणस्वरूप मैथिली नाटकसँ मैथिली एकांकी नव-नव प्रवृत्तिमे बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि। पहिने ई विधा प्रहसन दिस देखल जाइछ, मुदा जहियासँ पटना आ दरभंगा आकाशवाणीसँ मैथिलीक रेडियो एकांकी, रूपक फैंटेसी, प्रहसन

इत्यादिक प्रसारण होमय लागल तहिएसँ एकर अस्तित्वकेँ ठोस धरातल भेटि गेलैक अछि। आधुनिक एकांकीमे मनुष्यक अन्तःनिरीक्षणक परम्परा चलल अछि। एकरा पाश्चात्य मनोविज्ञानक प्रतिफलन कहल जा सकैछ। संगहि विभिन्न वाद, यथा– आदर्शवाद, प्रगतिवाद, यथार्थवाद, समाजवाद, व्यक्तिवाद इत्यादिक प्रभाव एहि विधाक अस्तित्वकेँ अपन चरम सीमा दिस अग्रसर कऽ देने अछि।

पाश्चात्य नाटकक अध्ययन कऽ आर अभिनेयताकेँ ध्यानमे राखि एकांकीक रचना कयनिहारमे श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' अग्रगण्य छथि। ई हास्य-व्यंग्यक मूर्धन्यकवि, कथाकार, उपन्यासकार, पत्रकार एवं कुशल आलोचकक रूपमे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली साहित्यमे अपन परिचय देलनि।

अमरजी अपन एकांकी मध्य सामाजिक समस्याकेँ गंभीरता एवं यथार्थताक संग चित्रित कयलनि अछि। एहि मध्य हिनक 'घरैया लूरि'[2] एवं 'ब्रह्मस्थान'[3]क चर्चा कयल जा सकैछ।

मैथिलीमे हास्य और व्यंग्य प्रधान एकांकी पर्याप्त संख्यामे लिखल गेल अछि। सामाजिक अंधविश्वास, रूढ़ि, आडम्बर, आधुनिक समस्याक कृत्रिमता, मानसिक असंगति, अति आदर्शवाद, अहंकार, लोभ आदिकेँ विषय बना कऽ लेखक लोकनि व्यंग्य कयलनि अछि। एहन एकांकीक प्रवृत्ति सुधारवादी रहल अछि। किछु एकांकीमे मात्र व्यंग्यक प्रधानता रहल अछि तथा किछुमे विशुद्ध हास्यक सृष्टि कयल गेल अछि। किन्तु प्रहसनमे हास्य गंभीर कोटिक तथा किछु मे ओ अट्टहासक सीमा धरि पहुँचि गेल अछि। प्रहसनकार विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक समस्या पर गंभीर व्यंग्य कयलनि अछि।

अमरजीक एकांकी विभिन्न सामयिक सामाजिक समस्या दिस संकेत कऽ हास्य एवं गंभीर व्यंग्यक नियोजन कयलनि अछि। एहि दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि 'श्रमदान'[4] 'आधुनिक पाठ्यप्रणाली'[5] 'निरक्षरता निवारक' पाठशाला[6] 'नवीन पाठ्य प्रणाली'[7], 'मलरवि'[8] आदि।

'घरैया लूरि' मे एकांकीकार कुटीर उद्योगक प्रवृत्ति पर प्रकाश देलनि अछि। घरैया लूरि सिखबामे ने खर्च ने तरद्दुत। ने स्कूल ने कओलेज जयबाक आवश्यकता अछि। एहि प्रसंगमे मनचनक कथन छनि– ''देखहक मटरू मिस्त्रीकेँ ओ जातिक कमार थिक। बाप पितामह जिनगी भरि हर, पालो, हांसू, खुरपी बनबैत रहलैक। अपने मटरू मिस्त्री लोहा लक्कड़क काज बढ़ओलक। एहन चक्कू, सरौता, गुप्ती, छड़ी केओ बनबए जनैत अछि? आ आब ओकर बेटा से सिजिल केर पलंग, चौकी, टेबुल, कुर्सी बनबैत छैक जे हजार नफ्फा मारैत अछि।''[9] अत्याधुनिक युगमे पुनर्निर्माण एवं सामाजिक चेतनाक प्रयोजन अछि। एकांकीकार अपन जीवनक व्यावहारिक अनुभवक आधार पर सरकारी नीतिकेँ एकांकीक केन्द्रबिन्दु बनौलनि अछि। ओ समाजक ओहि पक्ष दिशि संकेत करैत छथि जे अत्याधुनिकताक चक्रमे पड़ि अपन कौलिक वृत्तिक उपेक्षा कऽ शहरोन्मुख होयबाक प्रत्याशी अछि। किन्तु समुचित दिशा-निर्देशक फलस्वरूप विष्णुदेवमे एहन परिवर्तन अबैछ जे अपन कौलिक व्यवसाय मे लागि उन्नतिक शिखर पर चढ़ि जाइछ।

प्रायः सब गाममे डिहबारक रूपमे ब्रह्मस्थान रहैत अछि जे न्यायालयक प्रतीक थिक। व्यक्ति अपन आचरणसँ समाजक मार्गदर्शन करैत अछि। समाजक कल्याणकेँ जे अपन कल्याण मानैत अछि, जे न्यायक पीठ पर बैसि दूधकेँ दूध आ पानिकेँ पानि करैत अछि, वैह डिहबारक रूपमे आइधरि समाजमे पूजित रहलाह अछि।''[10] मुदा पूर्वक डिहबारक तुलनामे आजुक मुखिया अन्याय, दुराचार आ शोषणक प्रतीक बनि गेलाह अछि – एही सत्यक उद्घाटन ब्रह्मस्थान एकांकीक नव प्रवृत्ति अछि।

अमरजी मिथिलांचलक समस्याक प्रस्तुतीकरण एतेक उत्कृष्ट रूपेँ कयलनि अछि जे ओ मात्र मिथिलाञ्चलक समस्या नहि रहि गेल अछि; प्रत्युत सम्पूर्ण भारतवर्षक समस्या बनि गेल अछि। एहि प्रवृत्तिक एकांकीक माध्यमे देशक

पुनर्निर्माण एवं सामाजिक चेतनाकेँ ध्यानमे राखि अपन व्यावहारिक जीवनक अनुभवक आधार पर शिक्षित करबाक उद्देश्यसँ व्यक्ति-व्यक्तिकेँ लौकिक परम्परा दिस संकेत कयलनि अछि जकर प्रसादात् भविष्य उज्ज्वल भऽ सकैछ। 'निरक्षरता निवारक पाठशाला'मे एकांकीकार ग्रामीण निरक्षर भट्टाचार्यकेँ शिक्षित करबाक अभिलाषी सोने झाक पुत्र चतुर्भुज छथि। सोनेझा एकर विरोध करैत छथि– ''हौ बूड़ि! क्यो नहि काज औतह, धन्न ई बुढ़िया महीस जे चुरकी पर तेल एमहर अबैत छह की आउ?''[11] चतुर्भुजकेँ स्वतंत्रताक गन्ध लागल छैक। ओ स्वतंत्र देशक युवक अछि। ओ गाममे वयस्क शिक्षा देबाक योजना बनबैत अछि जकर विरोध आकर पिता करैत छथिन्ह। स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे सरकारी शिक्षानीतिमे अनेक परिवर्त्तन भेल। 'आधुनिक पाठ्य प्रणाली' मे शिक्षा नीति पर तीव्र व्यंग्य अछि। बिहार सरकार माध्यमिक स्कूलमे मासिक परीक्षा चलौलक, तकरे फलस्वरूप मासे-मासे छात्रक परीक्षा होइत छल। एहन नीति पर एकांकीकार व्यंग्य करैत छथि– ''हौ नहि बूझल छह। आबतँ परीक्षा भऽ गेल सत्यनारायणक पूजा-संकरातिये-संकरातिये।''[12] प्राचीन शिक्षा नीति आ आधुनिक शिक्षा नीतिमे कतेक परिवर्त्तन भेल अछि तकर स्पष्ट दिग्दर्शन एहिमे कयल गेल अछि। प्राचीन शिक्षा नीति जतऽ एकमात्र उद्देश्यसँ होइत छल ततऽ आधुनिक शिक्षा नीतिमे प्रत्येक वस्तुक जानकारी तथा नौकरी उद्देश्य अछि। ई स्वाभाविक छैक जे प्राचीन विचार केँ आधुनिक पाठ्य प्रणालीक प्रति आक्रोश होयबे करतनि।

समग्र रूपेँ विश्लेषण कयला पर स्पष्ट भऽ जाइछ जे मैथिली एकांकीक स्वरूपकेँ सुनिश्चित करबाक दृष्टिसँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकांकीक रचना कयलनि। 'घरैया लूरि', 'ब्रह्मस्थान', 'श्रमदान', 'आधुनिक पाठ्य प्रणाली', 'निरक्षरता निवारक' पाठशाला', 'नवीन पाठ्य प्रणाली' एवं 'मलरवि' एकांकी मिथिलाक यथार्थ स्थिति प्रस्तुत करबामे पूर्ण गंभीरता ओ दक्षता धारण कयने अछि। प्रत्येक एकांकीक रचनाविधान एवं संवाद-योजना ओकर कथाक अनुकूल अछि, जाहिसँ प्रभावान्वितिमे कतहु व्याघात नहि होइत अछि। एहि एकांकीमे स्थल-स्थल पर व्यंग्यवाणक प्रयोगकऽ एकांकीक एकरसताकेँ दूर कयल गेल अछि, जाहिसँ साहित्यिकता ओ प्रभावोत्पादकतामे अभिवृद्धि भेल अछि। निःसंकोच रूपेँ कहल जा' सकैछ जे पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन काल खण्डक नव प्रवृत्तिक हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी लिखि श्रेष्ठ एकांकीकारमे छथि एहिमे कोनो अतिशयोक्ति नहि।

संदर्भ :

1. सप्तसिन्धु– उपेन्द्रनाथ अश्क, पद्मदेव शर्मा, 'कमलेश' जनवरी, फरवरी, 1961, पृष्ठ सं० 80
2. वैदेही, एकांकी विशेषांक, 1958
3. रंगशालामे प्रकाशित
4. समाधान, निर्माण प्रेस, लहेरिया सराय, 1955
5. तत्रैव
6. तत्रैव
7. वैदेही, एकांकी विशेषांक, 1958
8. मिथिला दर्शन, मार्च, 1961.
9. एकांकी संग्रह-सम्पादक जयदेव मिश्र, पृष्ठ सं० 70
10. मैथिली नाटक परिचय - डॉ० प्रेम शंकर सिंह, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पृ० सं० 18
11. समाधान, पृ० सं० 1.
12. तत्रैव, पृ० सं० 14

●

पं० श्रीअमरजी : बालसाहित्यक स्त्रष्टा रूपमे

डॉ० दमनकुमारझा

पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क बाल साहित्य पर चर्चा करबा सँ पूर्व हम लऽ चलैत छी दरभंगा स्थित हैरो पब्लिक स्कूल, जतऽ 20 दिसम्बर, 1998 कैं हिनके सम्मानमे साहित्य अकादेमी दिससँ लेखकसँ भेट (मीट द ऑथर) कार्यक्रम आयोजित कएल गेल छल। अपराह्न तीन बजेक समय। स्कूल-परिसर स्थानीय साहित्यकार, पत्रकार, बुद्धिजीवीसँ भरल। स्वयं रामदेव बाबू (डॉ० श्रीरामदेवझा) माइक पकड़ने छलाह, आ बेरा-बेरी प्रश्न पुछबाक हेतु एक-एक गोटेकैं बजा रहल छलाह। सामने मंच पर सुमनजी (आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा'सुमन')क संग अमरजी प्रसन्नचित बैसल छलाह आ सभक जिज्ञासाक समाधान कऽ रहल छलाह। भिन्न-भिन्न तरहक प्रश्न पूछल जा रहल छल। अमरजी स्वयं अपन श्रीमुखसँ तकर समाधान कऽ रहल छलाह। कि देखै छी एकटा आठ-नओ वर्षक कन्या भीड़सँ टपि कऽ रामदेव बाबू लग जाइत अछि आ कहैत अछि– ''नानाजी! हमहूँ एकटा प्रश्न पुछबनि। पूरा प्राङ्गण शान्त भऽ जाइत अछि। ओ माइक हाथमे लैत अछि आ पुछैत अछि– ''अहाँ तँ सभक लेल बहुत रास चीज लिखलहुँ, हमरा लेल की लिखलहुँ? छओ दशकसँ मैथिली साहित्येतिहासमे हँसैत-हँसबैत रहऽवला अमरजी प्रश्न सुनि गम्भीर भऽ गेलाह, कहलथिन– ''से ठीके! बेसी नहि किछु लिखि सकलहुँ।''

ई प्रश्न अमरेजी कैं नहि, मैथिली साहित्यक कोनो साहित्यकारकैं सोचबाक लेल विवश करबाक सामर्थ्य रखैत अछि। एकर पाछू बहुत रास कारण अछि। ओकरा फड़िछाएब एतऽ हमर अभीष्ट नहि अछि। हमरा मात्र एतबे कहबाक अछि जे मैथिलीमे बाल-किशोर वर्गक हेतु ठीकसँ साहित्य लिखले नहि गेल अछि। जेहो किछु अछि से आँगुर पर गनल-गुथल लोकक अछि। ओहि गनल-गुथल लोकमे जँ प्रमुखतासँ एहि विधाक लेखकक चर्चा कएल जाएत तँ निःसन्देह पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'क नाम लेल जाएत, जे ने केवल प्रौढ़े साहित्यक बखारीकैं भरलनि अपितु बालसाहित्यक कोठीकैं सेहो भरबाक प्रयास कयलनि।

बाल साहित्यक रूपमे कोनो फराक पोथी हिनक एखन धरि नहि उपलब्ध अछि, किंतु हिनक सम्पादनमे अनेको बाल साहित्यक पोथी प्रकाशित भेल। प्रमुखतासँ जाहि पोथीक नाम लेल जाएत से थिक-'कथा–किसलय', जकर प्रकाशन साहित्य अकादेमी, दिल्ली सँ 1999 ई० मे भेल'। एकर अतिरिक्त पाठ्य-पुस्तककैं राखल जा सकैत अछि, यथा–मैथिली साहित्यालोक, मैथिली नवीन साहित्य सुमन, मैथिली पाठावली, मैथिली भाषा सरिता भाग-1 आदि। एहिसँ स्पष्ट होइछ जे ई अपन मनमे नेना-भुटकाक हेतु सेहो स्थान सुरक्षित रखने छथि। एकरे परिणाम थिक जे ई कविता, कथा, निबंध एवं प्रहसन लिखि बालसाहित्यक कोमल गाछ कैं समय-समय पर पटबैत रहलाह।

बाल साहित्य रूपी गाछ मुइल नहि। मुदा, पानिक संग-संग जे उर्वरा शक्ति ओकरा भेटबाक चाही से भेटलैक नहि। क्यो ओकर जड़ि लगक झाड़-झंखाडकैं साफ करबाक प्रयासो नहि कयलक। तखन कोड़बाक आ कमेबाक बाते कोन? अमरजी से जनैत छथि। हुनका ओ सामर्थ्य छनि जे सभ किछु करबा सकैत छथि। करयबो कयलनि, करबो कयलनि, मुदा ओहन नहि कऽ सकलाह जेहन मनमे छलनि। संयोगसँ वातावरणो भेटलनि बाल-किशोर वर्गक बीच रहऽ वला। सेहो एक-दू मास नहि, वर्ष दू वर्ष नहि, पूरा-पूरी छत्तीस वर्ष। लगातार छत्तीस वर्ष धरि ई एम० एल० एकेडमी, लहेरियासरायमे मैथिलीक आद्य अध्यापक बनल रहलाह। अपन जीवनक स्वर्णिम काल ई बाल-किशोरलोकनिक बीच रहि बितौलनि। बाल साहित्य क्षेत्रमे ई बहुत काज कऽ सकैत छलाह। से नहि कऽ सकलाह। इएह चूक भरिसक हुनका कचोटैत होयतनि। आ इएह कचोट अमरजीकैं ओहि दिन गम्भीर कऽ देने होयतनि।

मुदा, हमरालोकनिकैं हिनका पर गर्व अछि। जतेक रचना ई बालसाहित्यकैं देलनि अछि से ककरहुसँ कम नहि

अछि। हिनक जे बालपयोगी रचना उपलब्ध अछि, ताहिमे गद्यक उपेक्षा पद्यक संख्या बेसी अछि। मुदा, गुणक हिसावेँ दुनू एक रंग अछि, उच्चकोटिक अछि। बालसाहित्यक रूपमे पहिल रचना कोन थिकनि से ज्ञात नहि अछि।

किन्तु हिनक कतोक रचनाकेँ बाल-साहित्यक रूपमे रेखांकित कयल जा सकैत अछि, यथा– एक बात नहि बिसरक चाही (मैथिली पाठावली), मैथिली गौरव (मैथिली भाषा सरिता, भाग–5), कर्षक मण्डल (मैथिली पद्यमालिका), आदि पाठ्यपुस्तक संग-संग किछु कविता बटुक, धीयापूता आ वैदेहीक पन्नामे स्थान पौने अछि। यथा– कोटिप्रणाम (दिसम्बर 1961), बटुक करथु नहि कविता चोरि (अगस्त 1962) दिग-दिग थैया (अप्रैल,1963), नेरू आ पड़रू (कथा विशेषांक, भाग-1, 1965) आदि बटुकमे प्रकाशित अछि, तँ 'बाबू आब लेब नहि जूता (अगस्त, 1960) धीया पूतामे छपल अछि।

गद्य विधामे हिनक 'लिच्वीक महादेव' (कथा किसलय), लोभ ओ क्रोधक कुपरिणाम (प्राचीन भारती), वन ओ वनस्पति (भाषा सरिता, भाग - 4) कथा अछि, तँ 'प्रसन्न रहबाक उपाय (मैथिली साहित्यालोक), लोकतंत्र (मैथिली नवीन साहित्य सुमन) आदि हिनक प्रमुख निबंध थिक। एहि क्षेत्रमे ई अनुवादक काज सेहो कयलनि, जे धीया पुताक लेल बड़का उपकारक भेल।

हिनक सभ रचनाक फराक-फराक वर्णन करब एतऽ सम्भव नहि अछि। किंतु, किछु प्रमुख रचना पर हम जरूर विचार करऽ चाहब, जे हिनक बाल साहित्यक रचनाकार होयबाक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।

ई अपन रोचक एवं चोटगर शैलीक माध्यमसँ बाल साहित्य विधोकेँ पुष्ट कयलनि, जकर प्रभाव हिनक अधिकांश रचनामे देखल जा सकैछ। अमरजी बुझैत छथि जे बाल साहित्यक रचनामे चरित्र-निर्माण पर अधिक जोर देबाक चाही। तखने ओ अनुकूल बौद्धिक जलवायु पाबि कऽ स्वाभाविक रूपसँ अपन व्यक्तित्वक संग-संग प्रगतिशील समाजक निर्माण कऽ सकत।

तँ, ओ नेनाकेँ दिशा-निर्देश करैत नव समाजक निर्माण हेतु प्रेरित करैत छथि–

''एक बात नहि बिसरक चाही, हमहूँ अंग समाजक छी
किछुनहि छी, तैयो सभ किछु छी, ई जुनि बुझी अकाजक छी
छात्र, थिकहुँ अपना चरित्र निर्माणे मे लागक चाही
प्रहरीछी, नहि समर भूमि सँ पीठ देखा भागक चाही
नेता छी, तँ सभसँ पहिने स्वार्थ भाव त्यागक चाही
संयोजक बनि रहू, भ्रमहुँ नहि सोचू देश विभाजक छी
किछु नहि छी, तैयो सभ किछु छी, ई जुनि बुझी अकाजक छी।''

एही भाव बोध पर आधारित एकटा आर कवितामे ई नेनाकेँ कहि रहल छथि, जे एहिठामक लोक कहियो आलसी नहि भेल अछि। सभ समयमे एक-सँ-एक महापुरुषक आविर्भाव भेल अछि, जनिक शौर्यसँ, ज्ञानसँ, कर्मसँ ई धाम पवित्र भऽ गेल अछि। अहाँ सभ एही भूमिक संतान छी। अपन पुरखाक नामकेँ आलोकित करैत मिथिला धामकेँ आर गौरवान्वित करू। ऐतिहासिक गौरवगाथासँ 'मिथिला गौरव' कविताक माध्यमे भावी पीढ़ीकेँ परिचय करबैत कहि रहल छथि–

''चलू लेखनी ओहि देशमे जतय छला राजर्षि विदेह।

होइत सदेह विदेह कहौलनि कर्मयोग सँ राखि सिनेह।।
गीतामे भगवान कृष्णकें लेबऽ पड़लनि जनिकर नाम।
जनिक पुण्य-बल जगत विदित युग-युगसँ अछि ई मिथिलाधाम।।

एहन जे पुण्य-भूमि अछि मिथिला, तकर अहाँलोकनि संतान थिकहुँ, से गौरवक बात थिक। किंतु एकर मर्यादा आब अहाँ सभक हाथमे अछि। ई तखने मर्यादित रहत जखन अहाँसभ नीक कर्म करब। एकटा छोट-छिन उदाहरणक संग अपन चर्चित पद्य-कथा 'नेरू आ पड़रू' में एही बातक संदेश देलनि अछि।

''जँ चाही देशक उन्नतितँ कऽ आलस्यक त्याग।
करीकाज जीवनमे तखने बाँचत जातिक पाग।।

कविक ई कविता वैदेहीमे पहिने प्रकाशित भेल छलनि। किंतु, जून 1962 मे एही कविताकेँ क्यो श्रीवासुदेव यादव 'व्यथित' 'जेठक जीवन' शीर्षकसँ बटुकमे छपा लेलनि। ई अपन प्रतिक्रिया कवितेक माध्यमसँ बटुक कार्यालय पठा देलथिन, जे अगस्त 1962क अंकमे 'बटुक करथु नहि कविता चोरि' शीर्षकसँ प्रकाशित भेल। ई कविता धीया पुताकेँ ने केवल अधलाह काज करबासँ रोकिते अछि, अपितु ओकर चरित्र-निर्माणमे सहायको भेल अछि।

''बटुक करथु साहित्यक सेवा से ककरा नहि अभिलाषा ।
रहथु निरंतर धुनिमे लागल उन्नत हो अप्पन भाषा ।।
मुदा, बटुक जँ चोरी केलनि तँ फीरल आशा पर पानि ।
पनुघाबथु प्रतिभाकेँ, छोड़थु जीवनमे पुनि चोरिक वानि।।''

अमरजीक रचना हास्य-व्यंग्यक फुलझड़ी थिक। हिनक ई प्रभाव बाल रचनामे सेहो पड़ल अछि।

'बाबू आब लेब नहि जूता'मे जतऽ दुलारू एवं जिद्दी नेनाक वर्णन भेल अछि ओतहि 'दिग-दिग थैया'मे एकदम कोमल मनक भावनाक चित्रण अछि।

''दिग-दिग थैया लड़े-लड़े काज करक अछि बड़े-बड़े
लड़ितहुँ चललहुँ जँ सै डेग, बढ़िते चलत आब ई वेग
मा, मामा, बाबा सब बोल, सिखलहुँ करइत छी अनघोल
मिथिला माता रखती तोख, 'बटुक' मोटाउ अहाँ भरि पोख।''

एहि शुभ संदेशक संग अमरजीक बालकविता बालके सदृश सहज, सुलभ एवं कोमल अछि, जकरा नेना लोकनि खेल-खेलमे सीखि लैत अछि, रटि जाइत अछि। ई कविता सभ बाल साहित्यक क्षेत्रमे आगुओ अपन सत्ता बनौने रहत, तकर विश्वास अछि।

किंतु उपर्युक्त कविताक बानगी सँ ई नहि कियो कहि सकैछ जे ई संस्कृतक पंडित छथि। दूर-दूर धरि हिनक बाल कवितामे ने कल्पनाक दुरूह उड़ान देखऽमे आएल अछि आने अलंकारक भारसँ दबल बूझि पड़ैत अछि। गद्योमे यैह रूप देखबामे अबैत अछि।

जतऽ ऐतिहासिक चरित्र पर लिखल कथा 'लोभ ओ क्रोधक कुपरिणाम' मे लोभ ओ क्रोधसँ बचबाक उपदेश देल गेल अछि, ओतहि 'लिच्चीक महादेव'क माध्यमसँ बतहूक बालमानसिकताक ऊहापोहक अद्भुत वर्णन भेल अछि। 'वनओ वनस्पति' मे एकर उपयोगिताक पाठ पढ़ाओल गेल अछि।

धीयापूताकेँ नियमबद्ध एवं अनुशासित रहबाक ढंग 'प्रसन्न रहबाक उपाय'मे आ लोकतंत्र ककरा कही, एकर सफलताक की सोपान भऽ सकैत छैक, एहि बातकेँ 'लोकतंत्र' शीर्षक निबंधक माध्यमसँ बुझयबाक प्रयास भेल अछि। पोथीक संग-संग शारीरिक श्रमक आवश्यकता केँ 'आधुनिक पाठ्य प्रणाली' प्रहसनमे बचकानी बुद्धन एवं नेनमणिक वार्तालापसँ पुष्ट कएल गेल अछि। अमरजीक ई प्रहसन बाल साहित्यक क्षेत्रमे एहि विधाक न्यूनताकेँ ने केवल कम कयलक अपितु छोट-छोट एवं रोचक संवादक कारणेँ नेनालोकनिक बीच सेहो चर्चित भेल।

एतबेसँ अमरजीक बाल साहित्यकारक छविकेँ निरूपित करी तँ ओ एकांगी एवं अपूर्ण कहल जाएत। जतेक काज ई एहि क्षेत्रमे प्रत्यक्ष रूपसँ कयलनि, ताहिसँ अधिके काज ई अप्रत्यक्ष रूपेँ कऽ देलनि अछि। हिनका द्वारा सम्पादित पाठ्यपुस्तक, हिनक सम्पादन-कौशलकेँ ने केवल स्थापित करैत अछि, अपितु बालमनक सूक्ष्मतंतुकेँ पकड़बाक सामर्थ्य रखैत अछि।

हिनक सम्पादित कोनो पाठ्य पुस्तककेँ लऽ लियऽ। कोन वर्गक छैक, तकरा झाँपि दियौक। बीचसँ कतहु उनटा कऽ पढ़ि जाउ। थोड़बे कालमे बुझि जयबैक जे ई कोन वय-वर्गक नेनाक हेतु अछि। एहन पारखी दृष्टि हिनकेसँ संभव छैक। ई तँ छात्रेक बीच रहैत रहलाह अछि। ओहीमे जीबैत रहलाह अछि। ओकर एक एक क्रियाकलापकेँ बहुत लऽगसँ देखने छथि। ओकर ज्ञानक भण्डारकेँ अखियासने छथि, ओकर कल्पनाक उड़ानकेँ भजारने छथि। ओकर दृष्टिक दूरीकेँ नपने छथि। ओकर शब्द सीमासँ परिचित छथि। एहन अनुभवी-पारखी द्वारा सम्पादित पाठ्यपुस्तक अपने सभटा बात धड़ा-धड़ कहि जाइत अछि।

एतबे नहि ई छात्रकेँ अनुशासनक केवल पाठे नहि पढ़बैत रहलाह अछि, नैतिक शिक्षे नहि दैत रहलाह अछि, अपितु नीक जकाँ बुझैत छथि जे नेना अनुकरणप्रिय होइत अछि। ओकरामे कहल बातक ओतेक असरि नहि होइत छैक, जतेक आँखिसँ देखल बातक। तेँ ओ स्वयं ओ सभ काज कयल करथि जे नेनाकेँ सिखबऽ चाहैत रहथि। ओकरे फल थिक जे आइ पचहत्तरि वर्षक आयु पूरा करितो हिनका सन अनुशासित, समयक पाबन्द, स्वस्थ एवं उत्साहित व्यक्ति भेटब दुर्लभ अछि। आलस्य नामक कोनो वस्तु हिनका मध्य एखन धरि कियो नहि देखलक अछि।

अंतमे, पुनः हम लऽ चलै छी हैरो पब्लिक स्कूल, जतऽ अमरजी छोट-छिन नेनाक छोटसन प्रश्न सुनि गम्भीर भेल छलाह। से लोक बुझने छल। ओ तँ अपन उत्तर आने प्रश्न जकाँ विस्तृत रूपेँ दऽ देने छलाह। हमरा तँ ई बुझऽमे आयल जे ओ कहि रहल छथि– 'हमहूँ तँ वैह काज केलहुँ जे आन बाल साहित्यकार करैत छथि। ओहो बालमतिक अनुकूल रचना करैत छथि। ओकरा नेना लोकनि पढ़ि मनोरंजन करैत अछि। आ जिज्ञासाक संग-संग ज्ञानक विकास करैत अछि। ताहिसँ ओ राष्ट्रक भावी एवं आदर्श नागरिक बनैत अछि। हमहूँ तँ सैह कयलहुँ। प्रत्यक्ष रूपेँ नेनाकेँ मनोरंजन करैत रहलहुँ। अनुशासनक पाठ पढ़बैत, ओकरा सही लक्ष्य दिस बढ़बाक हेतु प्रेरित करैत रहलहुँ। जीवनक छत्तीस वर्षतँ इएह कयलहुँ। आबो कऽ रहल छी। ई की कम छै कोनो बाल साहित्य सँ.......।'

से ठीके एतेक दीर्घ अवधि धरि लगातार बाल-किशोर वर्गकेँ प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूपसँ दिशा-निर्देश देबाक काज जँ एक गोटे कियो कयलक तँ ओ थिकाह पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', जनिक नाम मैथिली बाल साहित्येतिहासमे अवश्य जगमगाइत रहतनि।

●

अमरजीक सम्पादन कार्य

डा० योगानन्दझा

पंडित श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'जीक सम्पादन कलाक आयामक पर्यवेक्षणसँ ई स्वतः स्पष्ट अछि जे हिनका द्वारा सम्पादित कृतिक गुरुत्व हिनक मौलिक कृति, अनुसृजन, पत्रकारिता, स्तम्भ ओ इतिहासलेखन आदिसँ कनेको झूस नहि रहल अछि। सम्पादन कार्य सम्पूर्णतामे हिनक साहित्यिक-सामाजिक व्यक्तित्वक अंग रहल अछि।

हिनक सम्पादन कलाक लाभ राष्ट्रभाषा हिन्दी आ मातृभाषा मैथिली दूहूकेँ भेटलैक, से पत्रिकोक सम्पादनक क्षेत्र मे आ पुस्तकोक सम्पादनक क्षेत्रमे। तथापि मैथिलीमे हिनक सम्पादन कार्यक व्यापकता जतेक स्फुटित भेल से हिन्दीमे नहि।

सम्पादनमे दायित्वक दृष्टिञे हिनक दुइ गोट ढंग भेटैत अछि-स्वतंत्र सम्पादन आ संग सम्पादन। स्वतंत्र सम्पादन सँ तात्पर्य्य एहन सम्पादनसँ अछि जाहिमे ई सम्पादकीय कार्यक हेतु एकमात्र अधिकृत ओ उत्तरदायी रहलाह। दोसर दिस संग-सम्पादनमे ओहि दायित्वक निर्वहणक हेतु हिनका संगे एकाधिक सम्पादक आर छलथिन आ इहो सम्पादनसँ जुड़ल छलाह। हिनका द्वारा पोथी सम्पादनक दुइ गोट कोटि भेटैत अछि– संकलन सम्पादन ओ कृति सम्पादन। संकलन सम्पादनक अन्तर्गत चारि गोट वर्ग कयल जा सकैछ-सामान्य संकलन, प्रतिनिधि संकलन, पाठ्य पुस्तक ओ स्मृति-अभिनन्दन ग्रंथक सम्पादन। कृति सम्पादनक सेहो दुइ गोट कोटि अछि–सनामक सम्पादन ओ अनामक सम्पादन। सनामक सम्पादनसँ तात्पर्य्य ओहि कृति सभक सम्पादनसँ अछि जाहिमे सम्पादकक रूपमे हिनक नामक उल्लेख भेल अछि। दोसर दिस अनामक सम्पादित कृतिमे सम्पादकक रूपमे हिनक नामक उल्लेख नहि अछि मुदा कतहु 'भूमिका', कतहु 'आमुख', कतहु 'दू शब्द'क संग ई प्रस्तुत भेल छथि आ जँ सेहो नहि तँ हिनक स्मरणक अनुसार ओहि कृतिक प्रकाशन-पूर्व तैयारीमे हिनक सक्रिय भूमिका रहल छलनि। वस्तुतः अनामक सम्पादन अमरजीक सम्पादकीय व्यक्तित्वक ओ अंश थिक जकरा माध्यमे ओ समसामयिक नूतन वा प्रौढ़ सभ प्रकारक प्रतिभाकेँ साहित्यिक क्षितिज पर अनबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत छलाह। हिनक एहि व्यक्तित्वक लाभ मैथिलीकेँ रामकृष्णझा 'किसुन' आ दीनानाथपाठक 'बन्धु' सदृश प्रतिभासँ भेटलैक।

अमरजीक सम्पादन-प्रवृत्ति मातृभाषाक अनन्य सेवाक उद्देश्य-निर्झरिणीसँ प्रसूत रहल अछि। सम्पादकक धैर्यपूर्ण दायित्वक निर्वहण ई सहज रूपेँ करैत रहलाह अछि। शिक्षण-वृत्तिक बान्हल समय आ मध्यवर्गीय पारिवारिक दायित्वक संगहि सम्पादकक उत्तरदायित्वपूर्ण भारकेँ वहन करब हिनक श्रमक प्रति निष्ठा, उच्च उद्देश्यक हेतु दृढ़ संकल्प तथा समयपालनक प्रति प्रतिबद्धता आदि गुणहिक कारणेँ संभव भऽ सकल होयतनि। हिनका सदिखन एहि बातक दरेग रहैत छल होयतनि जे कोनहुना मातृभाषाक चरणारविन्द पर एकटा आर पुष्प चढ़ि जाय, कोनहुना मैथिली केँ एकटा आर लेखक भेटि जाथि। स्वभावतः मातृभाषाक प्रति प्रतिबद्ध ई कवि-व्यक्तित्व अपन अधिकांश समय, श्रम ओ संसाधनकेँ सम्पादनप्रवृत्तिमे क्षरित कऽ देलनि। परिणामतः मैथिली साहित्यकेँ एहि प्रतिभासँ एक गोट महान लेखकक जे विराट ग्रन्थावली भेटि सकैत छलैक, से नहि भऽ सकलैक। तथापि सौंसे भारतमे छिड़िआयल मैथिली रचनाकारक एकटा वृहत्तर समूह अवश्य भेटि सकलैक जाहिसँ मैथिली साहित्य समृद्ध होइत रहल। हिनका माध्यमे आधुनिक मैथिली साहित्यक रथीलोकनिक एकटा समूहकेँ अतिरथी द्रोणाचार्य अवश्य भेटि गेलथिन।

हिन्दीमे सम्पादन

श्रीअमरजी **'पंचायती राज'** ओ **'निर्माण'** नामक दुइ गोट हिन्दी साप्ताहिक पत्रसँ हिन्दी पत्रकारितासँ जुड़लाह।

पंचायती राजकेँ हिनक स्तम्भलेखनक लाभ भेटलैक आ निर्माणकेँ स्तम्भलेखनक संगहि किछु अवधि धरि सम्पादनक लाभ सेहो। मातृभाषाकेँ राष्ट्रभाषाक संपोषक माननिहार अमरजी हिन्दीभाषीलोकनिक ओहि कुचक्रक प्रति सावधान छलाह, जकरा माध्यमे ओलोकनि मैथिलीकेँ हिन्दीमे आत्मसात् कऽ लेबऽ चाहैत छलाह। तेँ मैथिलीभाषी हिन्दी लेखकलोकनिक गढ़मे ई प्रवेश कयलनि। एकर माध्यम बनल ओहि समुदायक लेखकलोकनिक हिन्दी पुस्तकक सम्पादन। एहि क्रममे ई फूलकान्त मिश्र 'प्रशान्त' रचित अनुभूतिमूलक गीत संग्रह **'शान्ति दर्शन'**क सम्पादन कयने छलाह जे शान्ति साधना मन्दिर, दरभंगासँ 1956 ई०मे प्रकाशित भेल छल। दोसर हिन्दी पोथी जकर ई सर्वथा अनामक सम्पादक भेलाह श्री विन्देश्वर सिंह रचित विनिबन्ध **'यशोधरा का काव्यरूप'** छल। एकर प्रकाशन ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा कयने छल।

तदतिरिक्त अन्य चारि गोट हिन्दी पोथीमे अमरजी अनामक सम्पादकक रूपमे दूटामे 'वक्तव्य' आ 'निवेदन' द्वारा तथा दूटामे 'दो शब्द' द्वारा अपन उपस्थिति दर्ज करौने छथि। ओ पोथी सभ थिक–बेधड़कबिहारी रचित **साली-साला**, श्रीमन्तपाठक कृत **हिमकण**, पं० रामकृष्णझा 'किसुन' रचित **आओ गायें** तथा विद्यापति गोष्ठी, लहेरियासराय द्वारा प्रस्तुत पाँच गोट गीतकारक एक एक गोट गीतक अठपेजी संकलन पुस्तिका **भूमिदान यज्ञ**। भूमिदान यज्ञक गीतकारलोकनि छलाह–सुधांशु शेखर चौधरी, नागार्जुन, अमरेन्दु, मस्त आ स्वयं अमरजी। तेँ एहि चारू पोथीमे साली-सालाकेँ जँ छोड़ि देल जाय तँ बाँकी तीनू कविलोकनि आधुनिक मैथिली साहित्यक अक्षय निधि सावित होइत गेलाह। हिनकालोकनिकेँ हिन्दीसँ मातृभाषा दिस उन्मुख करयबाक दिशामे अमरजीक सम्पादकीय संस्पर्शक मुख्य भूमिका रहल होयत, से सहज संभाव्य अछि।

मैथिलीमे सम्पादन

छात्रावस्थेसँ पत्रकारिता ओ सम्पादनसँ रुचि रखनिहार श्रीअमरजी म० र० संस्कृत महाविद्यालयक **छात्रसंघ** ओ **नवरत्न गोष्ठी**, दरभंगाक हस्तलिखित पत्रिका तथा एम० एल० एकेडमी, लहेरियासरायक छात्रावासक अधीक्षणक अवधिमे **प्रयास** नामक हस्तलिखित पत्रिकाक संचालन–संपादन तँ कयनहि छलाह, परवर्त्ती कालमे विभिन्न कालावधिक मैथिली पत्रिका सभक सम्पादन कयल यथा–**स्वदेश, वैदेही, चेतना, इजोत, जनक, अ० भा० मैथिली साहित्य परिषद पत्रिका**। आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे स्वदेश ओ वैदेहीक योगदान अनुपम रहल अछि। एहि पत्रिका सभमे स्वदेशमे श्रीअमरजी सम्पादकमण्डलमे छलाह तथा चेतना, इजोत ओ परिषद-पत्रिकामे संग-सम्पादकक स्तरीयता प्राप्त कयने छलाह। वैदेही ओ जनकमे ई स्वतंत्र सम्पादकक रूपमे काज कयने छलाह। अवश्ये वैदेहीक किछु अंकमे हिनक सम्पादनक अवधिमे डा० रामदेवझाक सम्पादकीय रहैत छलनि। प्रसिद्ध साप्ताहिक **मिथिला मिहिर** हिनक 255 गोट स्तम्भलेखनसँ लाभान्वित भेल छल।

मैथिली पोथीक स्वतंत्र सम्पादकक रूपमे ई छओ गोट कविता संग्रह क्रमशः **'विद्यापति के देशमे' 'पद्य-प्रसून'**, **'लोचन'**, **'विजयशंख' 'विद्यापति सूक्तितरंगिणी'** तथा **'स्वातन्त्र्य स्वर'** एक गोट एकांकी संकलन **प्रतिनिधि एकांकी**, एक गोट बालकथा संग्रह **कथा किसलय**, तीन गोट पाठ्यपुस्तक क्रमशः **साहित्यालोक, मैथिली नवीन साहित्य सुमन** ओ **मैथिली पाठावली** तथा म० म० मुरलीधर झाक कृति क्रमशः एक गोट जीवनी आ एक गोट यात्रासाहित्यक सम्पादन कयने छथि। हिनका द्वारा लिखित म०म० मुरलीधर झा नामक ग्रन्थक परिशिष्टमे उक्त महामहोपाध्याय द्वारा रचित **जीवनिका** शीर्षकसँ महाराज रमेश्वरसिंहक जीवनी साहित्य तथा **पश्चिमोत्तर यात्रा वा कश्मीर यात्रा** शीर्षकसँ यात्रा साहित्य मिथिला मोदक पुरना फाइलसँ संकलित-सम्पादित कऽ समाविष्ट कयल गेल अछि। विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थ 'पुरुष परीक्षा'क नीतिश्लोक सभक सानुवाद संकलन स्वतंत्र सम्पादकक रूपमे श्रीअमरजी **'विद्यापति नीति तरंगिणी'** नामे कयने छथि।

'विद्यापतिके देश मे'क माध्यमे ई सावित करबाक ऐतिहासिक प्रयास भेल छल जे वस्तुतः हिन्दीभाषीएटा मैथिलीक विरोध करैत छथि। मैथिली भाषी तँ मातृभाषा आ राष्ट्रभाषा दूनूक प्रति समान रूपेँ श्रद्धा रखैत छथि आ दूनूमे रचना कऽ सकैत छथि, करैत छथि। **'पद्य प्रसून'** मे तेरह गोट मैथिली कविक एक-एक गोट रचना संकलित भेल अछि। ईलोकनि आधुनिक मैथिली साहित्यपताकाक दंड सावित भेलाह। 'लोचन' मे तेरह गोट ख्यात-अख्यात कविलोकनिक रचना समाविष्ट अछि। 'विजय शंख' वीर रसात्मक कविताक एकमात्र विशिष्ट ऐतिहासिक संकलन सिद्ध अछि। एहिमे48 गोट कविक रचनाकेँ स्थान देल गेल छलि। 'विद्यापति सूक्ति तरंगिणी' कोमल मतिक बालकक हेतु विद्यापतिक गीतावलीक लोककंठआधारित ओ शृंगारिकतारहित संकलन थिक। 'स्वातंत्र्य स्वर' मैथिली कविलोकनिक ओहन रचनाक संकलन थिक जाहिमे राष्ट्रीय चेतनाक स्वर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ मुखरित छैक। 'प्रतिनिधि एकांकी' हरिमोहनझा, गोविन्द झा, अमरजी, सुधांशु शेखर चौधरी, किसुनजी ओ किरणजीक एक-एक गोट एकांकीक प्रतिनिधि संकलन थिक। 'कथा' किसलयक किशोर वयक बालक-बालिकाक हेतु रचित मैथिलीक 21 गोट बालकथाक संकलन थिक, जे विभिन्न पत्र-पत्रिकादिकसँ संकलित कयल गेल अछि। साहित्यालोक, मैथिली नवीन साहित्य सुमन ओ मैथिली पाठावली क्रमशः सातम, आठम ओ नवम वर्गक छात्र-छात्राक हेतु पाठ्य पुस्तक छल। एहि पोथी सभमे छात्रक अवस्थाकेँ ध्यानमे रखैत मैथिली गद्य ओ पद्यक वैविध्यसँ ओकर क्रमिक परिचयक व्यवस्थापन भेल छल।

संग सम्पादकक रूपमे श्रीअमरजी मैथिली साहित्यक दुइ गोट प्रतिनिधि संकलन क्रमशः **कविता संग्रह** आ **कविवर जीवनझा रचनावलीक** सम्पादन कयने छथि। कविता-संग्रह मैथिली कविताक विकास यात्राकेँ रेखांकित करैत अछि तथा कविवर जीवनझा रचनावली आधुनिक मैथिली नाटकक जनकक कृतिकेँ समुद्घाटित कयलक अछि। हिनक संग-सम्पादनमे **ललितनारायणमिश्र स्मृति ग्रंथ** तथा **श्रीसुमनसाहित्यसौरभ** प्रकाशमे आयल अछि। स्मृति ग्रन्थमे मिथिलाक वरद पुत्र स्व० ललितनारायणमिश्रकेँ साहित्यिक श्रद्धांजलि प्रदान कयल गेलनि अछि। 'श्रीसुमन साहित्य सौरभ' आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'जीक अभिनन्दनग्रन्थ थिक जाहिमे हिनक कृतिक विवेचनक संगहि हिनक छोट-छोट कविता, संकलन सभकेँ एकठाम कऽ ग्रन्थाकार कऽ देल गेल अछि, जाहिसँ मुक्तकक कवि सुमनजीक समग्रतामे दर्शन संभव भऽ सकल अछि।

उपर्युक्त संकलनसभक अतिरिक्त श्रीअमरजी मैथिलीक अनेक कृतिक सम्पादन करैत रहलाह अछि आ एहि तरहेँ मैथिली पोथीक प्रकाशनकेँ प्रोत्साहित करैत रहलाह अछि। एहन कृति सभथिक-दीनानाथ पाठक 'बन्धु' रचित **चाणक्य** महाकाव्य, मधुप कृत **त्रिवेणी** कथाकाव्य, रूपकान्त ठाकुरक कथासंग्रह **'धूकल केरा'** रूपनारायणचौधरीक कविता संग्रह 'अरिपन', हरिशचन्द्रझा 'हरीश'क एकांकी 'छींक' अनन्तबिहारीलालदास 'इन्दु'क कवितासंग्रह, **तीन सप्तक** आदि। एहि पोथी सभमे हिनक नाम सम्पादकक रूपमे दर्ज अछि। अवश्ये अमरजी एहि पोथी सभक संशोधन, परिमार्जन, व्यवस्थापन आदिमे लेखकलोकनिक सहायक रहल होयथिन।

अनामक सम्पादकक रूपमे श्रीअमरजी जाहि मैथिली कृति सभक सम्पादनसँ सम्बद्ध रहलाह ताहिमे मधुपजीक **ताण्डव, त्रिकुशा, गंगातरंगावली, दुर्गासप्तशती मैथिली सुधा, द्वादशी, वटसावित्री** ओ **राधाविरह** आदिकेँ राखल जा सकैछ। एहि कृति सभमे ई भूमिका-सम्मति लेखकक रूपमे अपन उपस्थिति दर्ज करौने छथि। मुदा किछु एहनो अनामक सम्पादित कृति सभ अछि जाहिमे हिनक कोनो प्रकारेँ सम्पादक होयबाक विधिवत् अथवा संकेतित संदर्भो नहि भेटैत अछि यथा–भुवनेश्वर प्रसाद कृत **मैथिली बालरामायण,** ललितेश्वरझा कृत **कवीश्वर चन्दाझा,** गिरीन्द्र मोहन मिश्र कृत **किछु देखल : किछु सुनल**, मुंशी रघुनन्दन दासकृत **सुभद्राहरण**, लोकपति सिंह कृत **द्रोहाग्नि** आदि।

ततःपर मातृभाषाक उत्थानक पवित्र उद्देश्यसँ संबलित एहि सम्पादकक सहज स्नेह-संवर्द्धनजन्य सम्पादन ओहि

सभटा पोथीकैं सहजहिं उपलभ्य छलैक जकर लेखक प्रकाशनपूर्व हिनक साहाय्य चाहलनि आ नवरत्न गोष्ठी, विद्यापति गोष्ठी, पंचायत प्रेस, निर्माण प्रेस, मिथिला प्रेस आदिक माध्यमे प्रकाशमे अबैत रहलाह।

एतावता सम्पादनक क्षेत्रमे श्रीअमरजीक बहुआयामी प्रतिभा, अदम्य उत्साह तथा सोद्देश्य ओ निःस्वार्थ सेवापरायणताक लाभ राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा दूहूकैं पत्रकारिता ओ पोथी-सम्पादनक माध्यमे भेटैत रहलैक अछि। राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाकैं परस्पर एक दोसराक संपूरक बुझनिहार एहि उदारचेता मातृभाषाभक्त सम्पादक द्वारा नवीन ओ प्रौढ़ दूनू प्रकारक लेखक समुदायकैं प्रोत्साहन ओ प्रकाशमे अनबाक अनवरत प्रयास होइत रहल अछि। जीवन्त रचनाशीलताक हेतु पत्रिकाक सम्पादन, शास्त्रीय गरिमाक उद्घाटनक हेतु प्रतिनिधि संकलनक सम्पादन, उद्देश्य विशेषक हेतु की गद्य की पद्य ग्रन्थक सम्पादन, छात्रक आवश्यकताक पूर्त्यर्थ पाठ्यपुस्तकक सम्पादन, आत्मगौरवक अवबोधक हेतु स्मृति-अभिनन्दन ग्रन्थक सम्पादन, लेखन ओ प्रकाशनकैं उत्प्रेरित करबाक हेतु कृतिक सम्पादन, सभमे ई अपन सम्पादन-पटुताक निदर्शन विज्ञापित करैत रहलाह अछि। अपन एही कलाक कारणें ई मातृभाषा मैथिलीक प्रति प्रतिबद्ध सम्पादकक वरेण्यताकैं प्राप्त कयने छथि।

●

श्रीअमरजीक 'मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्ति' तथा हुनक भाषिक चिन्तन

डा०कमलकान्तझा

हमरा श्रीअमरजीसँ परिचय सर्वप्रथम 1963 इ० मे भेल, जखन ओ वैदेहीक सम्पादक छलाह तथा हम स्नातकोत्तर मैथिलीक छात्र छलहुँ। हुनक साहित्यकार व्यक्तित्व एवं मातृभाषा मैथिलीक सेवा हमरा आकृष्ट कयलक। प० चन्द्रनाथमिश्र'अमर' पण्डित रहितहुँ जनसाधारणक भाषा, ओकर भावना तथा ओकर सर्वांगीण विकासक अधिक चिन्तन कयने छथि। मैथिलीक पण्डिताम भाषा एवं दुरूह शैलीकेँ सरल बनयबाक श्रेय जाहि किछु साहित्यकारकेँ जाइत छनि ताहिमे श्री अमरजी प्रमुख छथि। यैह कारण छैकजे प्रो० हरिमोहन झाक बाद जँ सर्वाधिक लोकप्रिय कवि केओ भेलाह तँ ओ यैह थिकाह। केवल भावनाक स्तर पर नहि अपितु भाषिक स्तर पर सेहो ई मैथिलीकेँ जनसाधारणक निकट अनलनि तथा आधुनिक युगकेँ अत्याधुनिक युग बनौलनि।

पूर्वमे लिखल जाइत छल वा एखनहुँ कतोक पुरानपन्थीलोकनि लिखैत छथि–इएह, कएलहुँ, भए गेल आदि। तकरा ईलोकनि सरल बनाय लिखऽ लगलाह–यैह, कयलहुँ वा कैलहुँ, भऽ गेल, कऽ लेलहुँ आदि। एहि नवीन शैली केँ जनसमर्थन प्राप्त भेलैक, कारण जनसाधारणक एहने उच्चारण होइत छैक। अधिकांश आधुनिक साहित्यकारलोकनि एहि शैलीकेँ स्वीकार कऽ लिखऽ लगलाह, जे अत्याधुनिक शैली मानल जाइत अछि। केवल किछु प्रेसमे काँटाक कमीक कारण पोथी वा पत्र-पत्रिका छपैत काल 'भऽ गेल' केँ 'भय गेल', 'कऽ लेलहुँ' केँ 'कय लेलहुँ' आदि छापय पड़ैत रहलैक अछि। तँ ई दूनू शैली सम्प्रति स्वीकृत अछि। ओहुना सहरसा प्रमण्डलमे लोक 'भऽ गेल' कम 'भय गेल' वा 'भै' गेल' अधिक बजैत छथि। श्रीअमरजी कठोर भाषाकेँ जनसाधारणक सुविधानुकूल बनयबाक पर्याप्त चेष्टा कयलनि। ईलोकनि 'कहल जाइत अछि केँ 'कहल जाइछ', 'भेटैत अछि' केँ 'भेटैछ', 'बुझि पड़ैत अछि' केँ 'बुझि पड़ैछ' आदि लिखऽ लगलाह, जकर प्रयोग आब अधिकांश मैथिली साहित्यकार एवं विद्वानलोकनि करऽ लगलाह।

श्रीअमरजी लोकसाहित्यक विकासक पक्षधर रहलाह अछि तथा ओहि विषय पर, ओकर विभिन्न अंग प्रत्यंग पर गवेषणाक लेल हमरालोकनिकेँ प्रेरित–प्रोत्साहित करैत रहलाह, जकर परिणाम भेल जे आइ अनेक लोकसाहित्य, लोक गाथा, धार्मिक लोक कथा आदि उजागर भेल अछि तथा एखनहु अनेक गवेषणा-कार्य चलि रहल अछि। लोक साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण विधा 'लोकोक्ति एवं मोहावरा' पर स्वयं गवेषणात्मक संकलन कऽ ओहि समयक एकटा दुर्लभ पुस्तक मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्ति' नामसँ प्रकाशित करौलनि, कारण ई विषय जनसाधारणसँ सम्बन्ध रखैत अछि।

लोकोक्ति एकटा एहन साहित्य थीक जे जनसाधारणक संग चलैत अछि जकरा विद्वानलोकनि सेहो पाछाँ प्रयोग करऽ लगैत छथि। जहिना भाषाविज्ञान आगाँ चलैत अछि, किन्तु व्याकरण पाछाँ, तहिना लोकोक्ति आगाँ अबैत अछि, तकर बादे गूढ़ साहित्यक सृजन होइत अछि। लोकोक्तिक पर्याप्त निर्माणक पश्चात् कोनो भाषाक साहित्यक स्वरूप ठाढ़ होइत अछि। लोकोक्ति दू शब्दक योग लोकउक्तिसँ बनल अछि। अर्थात् जनसाधारणक उक्ति भेल लोकोक्ति। उक्तिसँ अभिप्राय छैक वक्रोक्ति वा विशिष्ट कथन। जनसाधारण जखन ककरहुपर व्यंग्य करैत अछि तँ ओहि उक्तिमे अकस्मात् लोकोक्तिक प्रयोग भऽ जाइत छैक। यथा– अपना प्रति अन्याय होइत देखि केओ अकस्मात् बाजि उठैत अछि–औजी, 'सबसँ बुड़िबक दीनानाथ?' केओ अपन दोष अनका पर जखन मढ़ऽ चाहैत अछि तँ ओकरा पर अकस्मात् व्यंग्य कऽ देल जाइत छैक– अहाँ वेश कहैत छी, 'चलऽ ने आबय तँ अङने टेढ़।'

मिथिलामे लोकोक्तिक प्रयोग बड़ साधारण बात छैक। साधारण जनता दिनराति एकर प्रयोग करैत रहैत अछि। नारी समाज तँ प्रायः बिना लोकोक्तिक एकहुटा वाक्य बजितहिं ने छथि। लोकोक्तिमे दू प्रकारक भाषा भेटैत अछि

(क) जन साधारणक ग्राम्य भाषा तथा (ख) शिष्ट समाजक शिष्ट भाषा। जनसाधारण द्वारा प्रयुक्त लोकोक्तिमे अश्लील शब्दक अधिक प्रयोग रहैत अछि। शिष्ट लोक अश्लील शब्दकेँ सुधारिकऽ प्रयोग करैत छथि। स्वयं श्री अमरजी एहि सम्बन्धमे अपन पुस्तक 'मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्ति'मे कहैत छथि–''मैथिलीमे लोकोक्तिक संख्या बहुत अधिक अछि, परन्तु अश्लील ताहिमे ततेक अधिक, जकरा लिपिबद्ध करब सर्वथा अनुचित ओ उपहासास्पद बुझल जैत तथा सत्साहित्यमे ओहि प्रकारक प्रयोगो नहिञे होइत अछि।''

लोकोक्तिक परिभाषा लिखैत श्रीअमरजी अपन पुस्तकमे कहैत छथि– ''लोकोक्ति शुद्ध संस्कृत शब्द थिक। ठेँठ मैथिलीमे एकरा कहबी कहल जाइत अछि। एकर उत्पत्ति ओ विकासक कोनो शास्त्रीय पद्धति नहि छैक। लोकोक्ति मे बहुत सूक्तिक सन्निवेश सेहो रहैत छैक। अतः बहुतो लोकोक्ति छन्दोबद्ध देखना जाइछ। जाहि कोनो सत्यकथाक सार्वभौमिक महत्त्व रहैत छैक तकरा सर्वमान्यता भेटिए जाइत छैक। परिणामतः सर्वसाधारणक कण्ठमे ओकरा व्यापक स्थान भेटि जाइत छैक। यैह कारण थिक जे कहबीक उत्पत्ति कोना होइत अछि से निर्धारित करब बड़ कठिन।''

श्रीअमरजी 'मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्ति' ओहि समयमे लिखलनि जाहि समयमे लोकोक्ति विषय पर मात्र एकटा पुस्तक विद्यानन्द ठाकुर (पूर्णियाँक अधिवक्ता) रचित 'लोकोक्ति प्रकाश' नामसँ प्रकाशित छल। उक्त पुस्तकमे अप्रचलित अधिक प्रचलित कम लोकोक्ति संगृहीत छल। माध्यमिकसँ स्नातकोत्तर धरिक छात्रलोकनिक उक्त अभावक पूर्ति श्रीअमरजी कयलनि।

दोसर दिस हिनक काव्य ओ गद्यरचना सभमे लोकोक्तिक बहुल आ सुष्ठु प्रयोग अत्यन्त चमत्कारक भेल अछि। हिनक गुदगुदी, युगचक्र ओ अन्य कविताक बहुतो उक्ति सब समाजमे लोकोक्तिक रूप धारण कऽ लेलक अछि।

मैथिली जागरणक सेहो ई पैघ पुरोधा रहलाह अछि। जागरण एवं मैथिली आन्दोलनकेँ जनजन धरि पहुँचयबाक हेतु 'विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन प्रारम्भ कयल गेल, जकरा लोकप्रिय बनयबामे श्रीअमरजीक पैघ योगदान रहलनि। पर्वमे कविगोष्ठी अवश्य राखल जाय तथा ओकरा अत्यधिक चहटगर बना देल जाय, ताहि दिस ई पूरा ध्यान रखैत रहलाह। स्वतंत्रताक बाद सातम दशक धरि जाहि कविगोष्ठीमे श्रीअमरजी नहि पहुँचलाह तकरा अपूर्ण मानल जाइत छल। एक शब्दमे कहि सकैत छी जे आधुनिक मैथिली भाषा साहित्यकेँ आम जनता धरि पहुँचयबामे श्रीअमरजीक योगदान अविस्मरणीय अछि।

●

अमरजीक समालोचना साहित्य : 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास'

डॉ० शान्तिनाथसिंहठाकुर

आधुनिक मैथिली काव्यजगतक अग्रिम पंक्तिक कवि लेखकलोकनिमे प०चन्द्रनाथमिश्र'अमर'क नाम अति आदरक संग लेल जाइत अछि। अमरजी सिद्धहस्त कवि तँ छथिहे संगहिं साहित्यक विभिन्न विधापर हिनक लेखनी समाने रूपें अपन अधिकार प्रमाणित कएने अछि अमरजीक प्रसंग डॉ० भीमनाथझा अपन 'परिचायिका'मे लिखने छथि–'हिनक प्रतिभाक विकास विभिन्न दिशामे भेल अछि। साहित्य सर्जन' साहित्यकार निर्माण, मैथिली आन्दोलनक उत्प्रेरणा, कवि सम्मेलनक माध्यमे देश भरिमे मैथिलीक प्रचार......, साहित्य क्षेत्रमे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, एकांकीकार, आलोचक, निबन्धकार आदिक रूपमे ई ख्यात छथि।''

महाकवि विद्यापति अपन ''पुरुष-परीक्षा''क द्वितीय परिच्छेदमे प्रतिभा ओ प्रतिभावानक विषयमे कहैत छथि–

''बुद्धि स्फूर्त्तिमती यस्य भवेदूसमन्विता
उत्पन्नेषु च कार्येषु सप्रतिभः स उच्यते''

तात्पर्य ई जे जाहिसँ अवसर पर फुरय आ ऊहि तर्कपूर्ण हो तँ ओहेन बुद्धि थिक प्रतिभा आ' से जकरामे छैक से भेल सप्रतिभ, अर्थात् प्रतिभावान। प्रतिभाक मुख्य दू भेद अछि– कारयित्री एवं भावयित्री। एहिमे प्रथम तँ कविमे रहैछ, एवं दोसर आलोचकमे। कोनो साहित्यकार जँ दुनू प्रकारक प्रतिभासँ युक्त छथि तँ 'सोनमे सुगन्धि।' कविश्रेष्ठ अमरजी' विद्यापतिक प्रतिभाक लक्षणसँ युक्त छथिहे, एक साहित्यकारक रूपमे हुनक व्यक्तित्व उक्त दुनू प्रकारक प्रतिभासँ समन्वित अछि। एक दिस जँ कविक रूपमे **गुदगुदी, युगचक्र, ऋतुप्रिया** प्रभृति कविता सभक रचना कऽ यश अर्जित कएने छथि, तँ दोसर दिस एकांकी, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना प्रभृति गद्यक रचना सेहो सफलतासँ कएने छथि। कविवर सुमनजी हिनक व्यक्तित्वकेँ एक पंक्तिमे स्पष्ट करैत लिखैत छथि– ''गद्य-पद्य, एकांकी, नाटक लघुकथा, व्यंग्य-विनोद, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण, साहित्य शतदलक प्रत्येक दल पर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत। जहिना लेखन, तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन, तहिना प्रचारण-प्रसारण, जहिना शोध-संधान, तहिना संग्रह-संकलन-प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतूल अछि।'' प्रस्तुत निबन्धमे विवेच्य अछि अमरजीक समालोचना साहित्य।

साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण विधा थिक समालोचना। हमरा जनैत आजुक तिथिमे सेहो आन विधाक अपेक्षा अपन साहित्यक ई विद्या झुझुआन प्रतीत होइत अछि। ओना एहि दिशामे आब साहित्यकारलोकनि सचेष्ट बुझना जाइत छथि। यथार्थ इष्ट अछि जे साहित्य ओं समालोचनाक घनिष्ठ रहबाक कारणेँ साहित्य सृजनक संगहिं समालोचनाक सृजन सेहो अवश्यम्भावी भऽ जाइछ। कारण, मानव स्वभावतः विवेचनात्मक चेतनाक प्राणी होइछ। साहित्यक क्षेत्रमे इएह विशेषता ओकरा नीक-बेजाएक विवेचन करबाक हेतु बाध्य करैत अछि। तेँ समालोचककेँ विज्ञ, निष्पक्ष, गुणग्राहक ओ सहृदय होएब अति आवश्यक, जे ओकर निष्कर्षकेँ निष्पक्ष, निष्कलुष ओ ग्राह्य बनबैछ। ओहुना समालोचना शब्दक अर्थे होइछ कोनो कृतिक सम्यक् विवेचन अर्थात् मूल्यांकन। ई मूल्यांकन एहन होएबाक चाही जाहिसँ लोकहित प्रभावित नहि हो, संगहिं कृतिकारकेँ दिशा-निर्देश सेहो भेटि सकय।

अमरजीक समालोचना साहित्यक कोटिमे सम्पादकीय छिटफुट आलोचनात्मक निबन्ध, रचना-संग्रहक पहिलभागमे प्रकाशित ''**एकांकीः वर्त्तमानदशक**'' प्रभृति रचना प्रमुख अछि। मुदा सर्वाधिक महत्त्वक आलोचनात्मक ग्रन्थ हिनक ''**मैथिली पत्रकारिताक इतिहास**'' थिक जे 1981 इ० मे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ' 1983

मे साहित्य अकादमी द्वारा सर्वोत्कृष्ट मैथिली ग्रन्थक रूपमे पुरस्कृत भेल। प्रस्तुत निबन्ध अमरजीक एही अमर कृति पर केन्द्रित अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक सर्वांगीण विकासमे पत्र-पत्रिकाक योगदान सर्वाधिक रहलैक अछि। एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करबाक लेल **मैथिली पत्रकारिताक इतिहास** प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करैत अछि। विवेच्य ग्रन्थमे 1905 इ०सँ लऽ 1979 ई० धरि प्रकाशित कुल सतासी गोट पत्र-पत्रिकाक विषयमे विस्तृत विवेचन भेटैत अछि। एतेक संख्यामे पत्र-पत्रिका प्रकाशित होएबाक गौरव-बोध होइतहुँ लेखकक व्यथा कोन शब्दमे व्यक्त भेल अछि से देखल जाए– ''एहेन सौभाग्यशालिनी क्षेत्रीय भाषा बड़ थोड़ होएत जाहिमे एहि छोटसन अवधिमे एतेक संख्यामे पत्र-पत्रिका प्रकाशित भेल होएतैक, परन्तु अभागलियो एहेन दोसर क्षेत्रीय भाषा नाहि होएत जाहि भाषामे एतेक अल्पजीवी पत्र-पत्रिका भेल होइक। एतेक प्राचीन प्रत्युत नेपाल सहित सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारतक भाषा-समूहमे प्राचीनतम, अनेक उपभाषाक जन्मदात्री, अनेक क्षेत्रीय भाषाकेँ मार्गदर्शन कएनिहार मैथिली आइ धरि टग्ग हनैत, घिसियौड़ कटैत, ठेहुनिया दैत काहि काटि रहल अछि, आ एकरा सँ प्रेरणा पाबि विकसित भेल भाषा सब साहित्यिक भाषाक गौरवसँ मण्डित युगक संग पयर मिलओने प्रगति पथ पर दौड़ि रहल अछि।'' (पृष्ठ 18)

ग्रन्थक आरम्भमे पत्रकारिताक इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि। एकर संगहिं सम्पादकक दायित्व प्रसंग सेहो चर्चा भेल अछि। देखल जाए किछु पंक्ति– ''व्यक्ति व्यक्तिमे रुचि भिन्नता नैसर्गिक वस्तु थिक। सम्पादकक ई दायित्व भऽ जाइत छन्हि जे ओ समाजक रुचिकेँ चिन्हथि। यदि रुचिमे विकृति आबिगेल छैक तँ तकर परिष्कारक हेतु तदनुकूल विषयक संचय कऽ अपना पत्रकेँ सुसज्जित करथि रुचिक' अनुकूल वस्तु समक्ष अयला उत्तर समाज स्वयं ओकरा ग्रहण करैत छैक, परन्तु सम्पादककेँ ताहिप्रकारक चिन्तक, प्रत्युत्पन्नमति ओ आदर्श चरित्रक होयबाक चाही जे समाजमे यदि कुरुचि अथवा विकृत रुचि उत्पन्न भेल देखथि तँ अमन सुसंस्कृत विचारधारा तथा प्रभावपूर्ण भाषाक माध्यमसँ समाजक रुचि-परिष्कार करबाक योग्य भऽ सकथि सम्पादक रुचि परिष्कृत करबाक दिशामे अग्रसर होएबाक हेतु समाजक नाड़ीकेँ चीन्हि, नाड़ी विज्ञान विशेषज्ञ वैद्य जकाँ बिनु रोगीकेँ किछु पुछने समुचित औषधक प्रयोग कऽ रोगकेँ निर्मूल करबाक प्रयत्न करैत छथि। सफल ओ सुयोग्य सम्पादक तदनुरूप नीति निर्धारित कऽ समाजकेँ अपना प्रभाव क्षेत्रमे खीचि अनबाक कलामे पारंगत होइत छथि''–(द्र० **मै० पत्रकारिताक इतिहास** पृष्ठ 9)

मैथिली भाषा ओ लिपिक प्रसंग लेखक कहैत छथि जे–''जे बंगाल केवल न्यायशास्त्रे नहि, लोकभाषामे साहित्यसर्जनाक प्रेरणा जाहि मिथिलासँ प्राप्त कएने छल, प्रेरणे नहि, लिपि पर्यन्त एतहिसँ लऽगेल छल, सैह बंगाल पत्रकारितोक क्षेत्रमे अग्रसर भेल, न्यायशास्त्रक मुख्यकेन्द्र तँ बनिए गेल संगहिं मैथिलीकेँ गोटेक शताब्दी पाछाँ छोड़ि आगाँ बढ़ि गेल आ हमरालोकनि एखनहु दिनानुदिन आरो पछुअयले जा रहल छी। जहिया मिथिलाक्षरकेँ छोड़ि छापाक सुविधाकेँ ध्यानमे राखि मिथिलावासी देवाक्षरकेँ अंगीकार कऽ लेलनि तहिआ जँ वंगाक्षरकेँ स्वीकार कयने रहितथि तँ आइ जाहि प्रकारक घात-प्रतिघातक स्थितिमे मैथिली पड़ल अछि से दुःस्थिति नहि रहैत। आसामवासी एहि प्रसंग बेसी बुद्धिमानी कयलनि–बंगाक्षरेकेँ ग्रहण कऽ लेलनि आइ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे परिगणित भेल सब अधिकारक फल प्राप्त कऽ रहल छथि, आ मैथिली देवाक्षर स्वीकार कऽ लेबाक कारणे हिन्दीक बोली बनि गेल, हिन्दीक दाँततरसँ अपन नरेटी छोड़यबामे सब शक्ति लागि गेल, न्याय्य अधिकारसँ आइधरि हमरालोकनि वंचिते छी।'' (पृष्ठ–16)

यद्यपि लेखकक एहि उक्तिसँ पूर्ण सहमत नहि भेल जा सकैछ जे 'मैथिली देवाक्षर स्वीकार कऽ लेबाक कारणे हिन्दीक बोली बनि गेल। कारण साहित्य अकादमी सन सर्वोच्च केन्द्रीय संस्था मैथिली भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वकेँ स्वीकार कैये कऽ अन्यान्य बाइस भाषाक संग एकरा रखलक। मुदा से होइतहुँ लेखकक एहि धारणाक प्रसंग कोनो

शंका नहि जे देवाक्षरकेँ स्वीकार कऽ मैथिली भाषा साहित्यक अपूरणीय क्षति भेल अछि।

मैथिलीभाषा साहित्यक विकासमे पत्रकारिताक महत्त्वपूर्ण योगदान रहल अछि। मैथिलीक पहिल पत्र छल **'मैथिल हित साधन'** जे 1905 इ०मे जयपुरसँ प्रकाशित भेल। एहि मासिक पत्रक सम्पादक छलाह विद्यावाचस्पति मधुसूदनझा एवं प० रामभद्रझा। एहि पत्रक मुख्य उद्देश्य छल गम्भीर ओ व्यापक रचनात्मक साहित्यक निर्माण करब तथा साहित्यकेँ दर्शन, व्याकरण, भूगोल प्रभृति शास्त्रीय लेखसँ भरि देब। एहि तथ्यकेँ प्रायः सब इतिहासकारलोकनि स्वीकार कएने छथि, मुदा अमरजी द्वारा पत्रसँ कतिपय उद्धरण दए जाहि प्रकारेँ विवेचना कएल गेल अछि से एकरा उपयोगी बना देने अछि जे आन इतिहासकारलोकनि नहि कऽ सकलाह अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रसंग पसरल कतेको भ्रान्तिक निराकरण अमरजी अपन ग्रन्थमे प्रमाणपुरस्सर करबाक चेष्टा कएने छथि, मात्र दृष्टान्तक हेतु एक आद्य प्रसंगक चर्चा एहिठाम कयल जाइछ। **'मिथिलामिहिर'** सन प्रतिष्ठित पत्र पर सेहो राज दरभंगाक नियंत्रण छल, ओना मालिक होएबाक कारणे ई नियंत्रण स्वाभाविके, मुदा अभिव्यक्तिस्वतंत्रता पर यदि नियंत्रण हो तँ से कोनो पत्रक लेल शुभसूचक नहि मानल जाएत। अमरजी एहि तथ्यक उद्घाटन कएने छथि जे 'मिथिला मिहिर' म०म०डा० गंगानाथझाक लेखकेँ नहि छापि, आपस कए देने छल। तत्कालीन 'मिथिलामिहिर'क सम्पादक छलाह योगानन्द कुमर, जे 15.11.1911 इ०मे पत्रोत्तर दैत डा०झाक लेखकेँ आपस कऽदेने छलाह। पछाति 'मिथिलामोद' मे ई पत्र एवं डा०झाक लेख संगहि प्रकाशित भेल छल। एहि तथ्यक विस्तृत चर्चा अमरजी अपन ग्रन्थमे कएने छथि। (पृष्ठ 286-87)

'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' कतेको तथ्यात्मक सूचना दैत भ्रान्तिक निराकरण करैत अछि, जेना, इतिहासकारलोकनि 'मिथिला मिहिर'क आरम्भ 1908 इ० मानने छथि ओतए अमरजी सशक्त प्रमाण प्रस्तुत कऽ एकर प्रकाशनवर्ष 1909 इ० कहने छथि (द्रष्टव्य पृष्ठ 275) 'तहिना' 'मिथिला मिहिर'क सम्पादकक रूपमे श्रीशजी द्वारा जाहि जाहि व्यक्तिक नामोल्लेख अछि ताहिमे परमेश्वरझा ओ जगदीश प्रसाद ओझाक नाम सेहो अछि। मुदा अमरजी एहि बातकेँ अस्वीकार करैत लिखैत छथि– ''म० म० परमेश्वरझा एकर सम्पादक कहियो नहि रहलाह। जेँ हेतु प० विष्णुकान्त झा राजस्कूलक हेडमास्टर छलाह, अपन पूर्ण समय मिहिरकेँ देबाक स्थितिमे नहि रहथि, तेँ हुनक सहायतार्थ संयुक्त सम्पादक, रूपमे प० जगदीश्वर प्रसाद ओझा छलथिन्ह, जे मैथिलीक अंशक सम्पादन सम्पूर्णतः नीक जकाँ नहि कऽ सकथि एहि आशंकासँ म० म० जीकेँ देखरेख करबाक संकेत महाराजसँ भेटल छलनि आ तेँ हेतु म०म०जी कखनहु। कखनहु प्रेस जाइतो छलाह। (द्र० पृष्ठ 278)'' हमरा सन सन कतेको पाठकक हेतु ई नव सूचना कहाओत। एही प्रकारक अनेको तथ्यात्मक सूचना पाठकलोकनिकेँ 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' उपलब्ध करबैत अछि। एकटा सूचनाक बानगी आर देखल जा सकैछ– ''महाराज कामेश्वर सिंहक समयमे कांग्रेसकेँ जे किछु सहायता राज दरभंगासँ भेटैत रहल होइक, प्रत्यक्षतः ब्रिटिश सरकारक विरोधसँ राज दरभंगा सब दिन बचैत रहबाक प्रयास करैत रहल। जखन प० कपिलेश्वरझा 'शास्त्री', जे आपादमस्तक कट्टर राष्ट्रवादी रहथि, सम्पादक छलाह तँ एकटा दरोगाक भ्रष्टाचारक आलोचनाक क्रममे ब्रिटिश सरकारहुक नीतिक विरोधमे किछु लिखि देल, एही कारणेँ हुनका सम्पादकक पद छोड़ऽ पड़लनि। तखन प० श्रीसुमनजी एकर सम्पादक नियुक्त भेलाह। (पृष्ठ 278)''।

प० सुरेन्द्रझा 'सुमन' अपन सम्पादनकालमे **मिथिलांक** नामक विशेषांक बाहर कएल। ई विशेषांक 1936 इ० मे बहार भेल छल। एहि प्रसंग अमरजी लिखैत छथि– ''मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे यदि एहि मिथिलांकक प्रकाशनकेँ सर्वोपरि उपलब्धि कहल जाय तँ अत्युक्ति नहि होएत। मिथिलाक सम्बन्धमे जतेक सामग्री एहि विशेषांकक माध्यमे प्रकाशमे आबि सकल से निश्चय अनुसन्धित्सुलोकनिक हेतु प्रकाशपुंजक काज करैत आबि रहल अछि। एहि विशेषांकक ई विशेषता अछि जे एखनहुँ ई पुरान नहि भेल अछि, अपितु पुराण जकाँ मन्थन कएला पर एखनहुँ कतोक

सूत्र प्राप्त कएल जा सकैत अछि, जाहिसूत्रकेँ पकड़ि अनेक विषयक अनुसन्धान कयल जा सकैत अछि। डा० जयकान्तमिश्र जे एकरा **'स्टोर हाउस'** कहने छथि से ई एक शब्द अपनामे बहुतरास अर्थ समेटि कऽ रखने अछि (पृष्ठ 296) ई विशेषांक आब सर्वजन सुलभ नहि रहि गेल अछि तेँ अमरजी द्वारा एहि प्रसंग जतबा सूचना सामान्य पाठककेँ उपलब्ध कराओल गेल अछि, सएह कम महत्त्वक नहि अछि।

'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' किछु एहनो पत्रिकाक विषयमे वृहद् चर्चा प्रस्तुत कएने अछि जकर चर्चा अन्यान्य इतिहासकारलोकनि कएनहुँ नहि छथि आ यदि कतहु चर्चा भेलो अछि तँ मात्र नाम जना देल गेल अछि। मैथिली भाषा साहित्यक विकासमे ओकर योगदानक चर्चा नहि अछि। एहने एकटा पत्र छल 'फराक' जे कुलानन्दमिश्रक सम्पादकत्वमे पटनासँ प्रकाशित भेल आ' सेहो मात्र तीने अंक। मिथिला मैथिलीसँ सम्बन्धित अनेको समस्याकेँ उठएबामे ई पत्र सफल रहल। जेना मैथिलीमे 'नवलेखन' एक समस्या मानल जा रहल अछि। एहि प्रसंग एकर दृष्टिकोण देखल जाए– ''नवलेखन' शब्द आइकाल्हि ततेक ने घोंघाउजि उठा देलक अछि जे कहल नहि जाए। जाहि देशमे जाहि परिस्थितिक कारणेँ ओ लेखन चलल तकरा बिसरि मैथिलीअहुमे ओएह विषय सभक चित्रण करब नव लेखन कथमपि नहि थिक। मिथिला तथा मैथिलीकेँ अपन समस्या छैक, अपन समाज छैक, अपन आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थिति छैक। एहि परिवेशकेँ यदि छोड़ि देल जएतैक तथा विदेशी वातावरण अथवा सुदूर शहरी वातावरणक चित्रण मैथिलीमे होएतैक तँ यथार्थ मिथिला तथा मैथिलीक पाठककेँ कहियो रुचिकर नहि होएतैक। यावत धरि एहिठामक लेखकलोकनि अपनाकेँ एहिठामक माटिपानिसँ नहि जोड़ने रहताह तावत धरि हुनक रचनाकेँ समाज कहियो आदरक दृष्टिसँ नहि देखतनि (पृष्ठ 377)।''

'मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक' माध्यमे 1905 इ० सँ 1979 इ० धरि प्रकाशित कुल तिरासी गोट पत्र-पत्रिकाक वर्णनक क्रममे ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण तथ्यसँ पाठक सहजहिँ परिचित भऽ जाइत छथि। ई ग्रन्थ ने मात्र मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक अध्येताक लेल लाभप्रद अछि, अपितु मैथिली साहित्य, मैथिल संस्कृति ओ मिथिलाक गौरवमय परम्पराक प्रति निष्ठा रखनिहार कोनो व्यक्तिक लेल उपादेय अछि।

विवेच्य ग्रन्थक महत्त्व मात्र एही हेतुएँ नहि अछि जे ई मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहासकेँ क्रमबद्ध रूपेँ एकठाम प्रस्तुत कएने अछि, आ ने मात्र एहि हेतुएँ जे मैथिली भाषामे ई अपना ढंगक एकसरे ग्रन्थ अछि अपितु एहि हेतुएँ जे एक दिस जँ ई मैथिली गद्यक विकासक गतिकेँ रेखांकित करबाक सफल प्रयास कएने अछि तँ दोसर दिस मैथिली साहित्यक विकासमे पत्र-पत्रिकाक योगदानकेँ प्रमाणित करबाक चेष्टा सेहो कएने अछि। एहि क्रममे कतेको रोचक वृत्तान्तक वर्णन एवं लेखकक दृष्टिकोणसँ सेहो परिचय भेटैत अछि। थोड़ शब्दमे अमरजीक एहि अमर कृतिकेँ ''सूच नाक पिटारा'' मानब अनुचित नहि होएत।

●

पत्र-पत्रिकामे अमरजीक स्तम्भलेखन

पूर्णेन्दु चौधरी

आरंभमे मैथिली पत्र एवं पत्रिकामे हास्य-व्यंग्य रचना छपैत छल, मुदा, कोनो व्यंग्य रचनाकेँ स्थायी स्तम्भक रूपमे नहि छापल जाइत छल। स्तम्भ लेखनक रूपमे कोनो एक लेखकक रचना सभ अंकमे छपय, एहि पर सम्पादकक ध्यान नहि जाइत छल। तकर प्रमुख कारण ई छल जे पहिने कोनो तरहक आलोचनाकेँ मैथिली भाषी गारि मानैत रहथि। 1960 इ० सँ साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'क प्रकाशन शुरू भेला पर एहि पर ध्यान देल गेल आ नियमित रूपसँ व्यंग्य स्तम्भ 'गोनूझाक चटिसार' आरंभ भेल। पुनः 'धर्मधकेलानन्दजीक बलधिंगरो' आ एकर बाद 'बहिरा नाचय अपने ताले' प्रकाशित भेल।

मैथिलीमे हास्य-व्यंग्य लेखकक रूपमे दूटा साहित्यकार अपन आरंभिक रचनासँ स्थापित भऽ गेल रहथि। पहिल प्रो० हरिमोहनझा आ दोसर पं० चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'। हरिमोहन बाबूक रचना छपैत छल, मुदा ओ प्रायः स्थायी स्तम्भ लेखकक रूपमे नहि लिखलनि।

1951-52 मे दरभंगासँ चारिटा पत्रिकाक प्रकाशन हिन्दीमे होइत छल। **मिथिला मिहिर, उदय, पंचायती राज आ निर्माण। 'मिथिला मिहिर'** आ **'उदय'**मे कोनो स्थायी स्तम्भ नहि रहैत छल। पंचायतीराजमे नागार्जुन (यात्रीजी)' चुम्मन चौधरी की चिट्ठी' लिखैत रहथि। दू मासक बाद ओ लिखब छोड़ि देलनि। पत्रिकाक संपादकक आग्रह पर अमरजी हिन्दीमे 'बतहू मिसर की बतकही' लिखऽ लगलाह। एकर प्रति उपलब्ध नहि अछि।

निर्माण (हिन्दी साप्ताहिक)मे पछाति अमरजी स्वयं सम्पादक बनलाह। एहिमे चारिपृष्ठ मैथिलीयोमे छपैत छल। मुदा, एहिमे व्यंग्य-स्तम्भ हिन्दीमे 'बतहू मिसर की बहक' शीर्षकसँ छपैत छल। एहि स्तम्भमे व्यंग्यरचना वार्त्तालाप शैलीमे छल। दूटा पात्र छल मिसर आ रमजानी। दुनूमे मित्रवत् संबंध। एहिमे उल्लेखनीय जे रमजानीक हिन्दी ओहि भाषामे अछि जाहि भाषाक प्रयोग मिथिलांचलक साधारण मुसलमान समुदाय करैत छथि। एहिमे महगी, समाजक कुरीति वा अन्य सामाजिक समस्या पर व्यंग्य रहैत छल। एकर एक अंश निम्नलिखित अछि–

रमजानी ने पूछा– होली आ गई है और तुमको देखते हैं हो मिसर, कि बिलकुल गमगीन बने हो?

मिसर ने जवाब देते हुए पूछा– मै गमगीन हूँ इससे क्या, तुमको होली के लिए क्या पड़ा है?

रमजानी– अजी वाह! जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान अलग होइए गया और पहले से भी हमरे तजियामे हिन्दू भाई लकड़ी खेलने आते ही रहे हैं तो हम काहे न होली मनाबें?

मिसर– ख्याल तो बड़ा चोखा है, सूझ भी अनोखी है, मगर तुम झुके भी तो उसी साल आकर जब आम जनता तंगोतिरीज है। जब पेट मे दाना रहता है तो तीनो लोक तीन कदम और अगरचे पेट मे चूहा दण्ड पेलता हो तो दरवाजे से आंगन की दूरी पटना से दिल्ली की तरह मालूम होती है।

रमजानी– ई सब हमरे समझसे मनहूसी की बात है। परब जब आ गया है तो किसी तरह मनाना ही पड़ेगा। चलो और नहीं कुछ तो कल्हुआड़ से थोड़ा कुसियार का रस ले आबे और थोड़ा भांग तुम सिल पर तब तक डलबा दो। इतमीनान से उसीमे घोरकर सब आदमी पीएँगे और बंगौरासाती अगर डम्फा न मिले थरिया तो पितड़िया तोरे घर मे भी है और हमरे घर मे भी, दोनों जने कसकर पीटेंगे और दू चार फगुआ गा लेंगे। (निर्माण 5.3.55)

26.1.1950 इ० सँ वैदेही पाक्षिक रूपसँ छपब आरंभ गेल। बादमे मासिक रूपमे दरभंगासँ छपऽ लागल। एहिमे सर्वप्रथम मैथिलीमे पंडित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क रचना धर्मधकेलानन्द नामसँ 'गोनूझाक चौपाड़ि' स्तम्भमे

छपैत छल। ई मैथिलीक प्रथम व्यंग्य स्तम्भ अछि। ओना, ई स्थायी स्तम्भ नहि छल। 1955 इ०क बारह अंकमे मात्र तीन अंकमे ई स्तम्भ छपल अछि। एहि स्तम्भक अंतर्गत रचना कोनो एक विषयकेँ उठाकऽ नहि लिखल गेल अछि। अपितु, कोनो बात पर छोट-छोट रूपमे व्यंग्य रहैत छल। नमूना निम्नलिखित अछि–

'मातृभाषाक लाज'–एकटा कथा आर कहइ छिअहु। कतहु बजइ तऽ ने छह जे हमर मातृभाषा मैथिली थीक? कि कोनो फारम लगबऽ काल मातृभाषा खानामे मैथिली तऽ ने भरि दै छहक? किएक त तखन अप-टू-डेट नहि रहलह। आइकाल्हुक लोककेँ मातृभाषा मैथिली कहैत लाज होइछन्हि। (वैदेही, जनवरी 55)।

'बाढ़ि' गोनू बाबू– बाढ़ि पीड़ितक सहायता हेतुएँ बाढ़ि आओत, भयंकर रूपसँ। ताहिसँ हजारो लोक गृहविहीन भए जायत। खेत पथार भासि जएतइक, माल जाल दहा जएतइक, एकर संभावनामे सरकार पहिनहिसँ सूर-सार कऽ रहल अछि। परुकाँ, तेसरा, चारिम की पाँचम सालक बाढ़िक आघात सहए लेल जनताक प्राण रहनाइ आवश्यक छइक। अर्थात् जँ लोके उपटि जाएत तखन बाढ़ि जे एतेक कष्ट उठाकऽ आरि धूर टपि, बान्ह तोड़ि अबइछ, तकर अथक परिश्रम त नष्ट भऽ जएतइक आ संगहि बाढ़ि संबंधी सरकारक जे सहायता कार्य थिकइक तकरो ढोलक बन्द। (वैदेही, अगस्त 55)

1965 इ०सँ मिथिला मिहिरमे अमरजी 'धर्मधकेलानन्द क बलधिंगरो लिखऽ लगलाह। ई स्तम्भ **मिथिला मिहिरक**1965 सँ 1971 धरि छपल अछि। एहि स्तम्भक अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य कयल गेल अछि।

'धर्मधकेलानन्दक बलधिंगरो' पत्राचार शैलीमे अछि। एहिमे दूटा सकुनतकिया 'रामजीक प्रतापसँ आ गुरूगंगाक आशीर्वादसँ' तथा 'कहबाक आशयमे तात्पर्यक मतलब'क प्रयोग कयल गेल अछि। एहिमे एकटा पात्र 'बतहुत्थनजी'क उल्लेख अछि, जनिकर बातकेँ व्यंग्यकेँ आर प्रभावशाली बनयबाक लेल लेल गेल अछि। प्रारंभमे आ कि नहि? सँ पत्र समाप्त होइत छल। बादमे 'पत्रोत्तर नहि पयबाक प्रबल आकांक्षी श्री धर्मधकेलानन्दस्य' सँ समाप्त होबऽ लागल। एकर किछु अंश निम्नलिखित अछि–

स्वस्ति श्री संपादकजी/दोहाइ मिथिला मिहिरक/आंगा हाल सुरति जे अपना देशमे महानिर्वाचन समाप्त भऽ गेल। परिणामो सभ घोषित भऽ गेल। ई महानिर्वाचन की छल विरोधी दलक हेतु महामारी छल। जहिना महामारीमे के बूढ़ के अधवयसू किछु नहि देखल जाइछ। जे चपेटमे पड़ल से कालक पेटमे गेल, तहिना रामजीक प्रतापसँ आ गुरु गंगाक आशीर्वादसँ मानू कि जे धूमावती बाढ़नि लऽ कऽ सभकेँ खड़रि-खड़रि कऽ कूड़ा-करकटक ढेरमे उठा कऽ फेकि देलनि।

संपादकजी, असलमे पूछल जाय तऽ धर्म-तर्म सभ फसादक जड़ि होइत अछि। आइ यदि धर्मक नाम लेब बन्द कऽ देल जाय तँ कमसँ कम भारतमे पसरल सभ समस्याक अंत भऽ जायत, बुधियारी तँ एहीमे छैक। आइ धरि क्यो एहन लोक भेटल अछि जकरा धर्मसँ कतहु भैंट भेल होइक? धर्म तँ एक कल्पनामात्र थिक जे मनुक्खकेँ आन्हर बना दैत छैक। एही सभ बातकेँ दृष्टि मे राखि अपना देशक सरकार अपनाकेँ धर्मनिरपेक्ष घोषित कऽ देलक। तथापि किछु गोटे धर्मक नांगड़ि पकड़ने समाजमे घृणा उत्पन्न करैत रहल अछि। आब तँ समाजवाद आबि गेल तँ स्वतः लोक धर्मनिरपेक्ष भऽ जायत।

से कहबाक आशयमे तात्पर्यक मतलब ई जे जहिना-जहिना समाजवाद आयल जायत, वस्तु सभक दाम बढ़ल जायत आ टाकाक मोल घटैत जायत। साधारण सँ साधारणो लोक महग वस्तु कीनत तँ अपनाकेँ गरीब नहि बूझत। एहि तरहेँ बतहुत्थनजीकेँ बुझा-सुझाकऽ हुनकासँ शपथ करौलियनि जे एतेक दिन जे भेलैक से भेलैक, आबसँ एक शब्द

आलोचनाक नहि बाजल करब। संगहि धर्मधकेलानन्दो निर्णय लेलनि जे आब एहि समाजवादमे एकदमे चुप्पी साधि कऽ रहताह। आ कि नहि? इति शुभम। पत्रोत्तर नहि पयबाक प्रबल आकांक्षी/धर्मधकेला नन्दस्य।

1955 मे आ पुनः 1982 मे दैनिक स्वदेशक प्रकाशन भेल छल। एकरा मैथिलीक पहिल दैनिक पत्र होयबाक सौभाग्य छैक। एकर सभ अंकमे तँ नहि, मुदा अधिकांश अंकमे अमरजी भिन्न-भिन्न नामसँ व्यंग्य स्तम्भ लिखैत रहथि। ओहि स्तम्भक नाम अछि– **चेलारामक चौल, उचित रामक उचिती, खोखाइ सिंहक खखास आ कैलूरामक कूही।** एहिमे बेसी 'चेलारामक चौल' छपल अछि। एहि स्तम्भक प्रमुख विशेषता ई छल जे सभ स्तम्भक भाषा मिथिलाक वर्गविशेषक भाषाक रूपमे लिखल गेल छल। एहिमे कोनो एक विषयक प्रसंग चलाकऽ व्यंग्य कयल गेल अछि। उदाहरणक लेल रचनाक अंश–

दरभंगोमे बुद्धिजीवीलोकनि छथि तकर सूचना अपनेकैँ समाचार पत्रमे प्रकाशित समाचारसँ भेटल हैत। जँ नहि रहितथि तँ बुद्धिजीवी विचारमंचक संघटन कोना होइत? चेलाराम ई समाचार पढ़ि अपनाकैँ परम गौरवान्वित अनुभव कैलनि। गौरवक बोध हैबाक कारणे ई जे चेलाराम एखन एक एहन नगरमे रहि रहल छथि जाहि ठाम बुद्धिजीविओ लोक छथि।– **चेलारामक चौल।**

छात्र संघक चुनावक मौका पर तऽ सब विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र बनि जाइए आ ओ तऽ साक्षात कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय थिक। ओहू ठुम तऽ महाभारतके ट्रेनिंग भेटब उचिते कहाउत। तखन कुलपति बेचारे अपन रक्षा करेला पूरा परीक्षा विभाग सहित अपना कार्यालयकैँ लोहासँ घेरबौले छैथ तऽ से खोखाइसिंहक विचार सऽ ठीके कैले छैथ। असलमे पूछल जाय तऽ विश्वविद्यालयके बदलामे अपना देशमे अगबे विषविद्यालय चलाउल जा रहल अछि। जाहि ठुम सद्दो माल जालकैँ सिंघ धऽके मरखाह बनाउल जाइए।–खोखाइ सिंहक खखास

आगाँ हाल सुरति जे अपना देशमे अखनी जयन्ती मनेबाके खूम चाइल बैढ़ गेल गऽ। महान-महान लोकके जनम दिनके शिक्षक-दिवस, शहीद-दिवस, बाल-दिवस, एकता-दिवस आइद नाम घऽ देल गेल गऽ। बात बड़ निम्मन। हुनकरा आउरके जे तियाग तपेस्या छैन तेकरा इयादि दिया कऽ लोकके खास कऽ के जुआन आउरके कुच्छो सीखेक मोका देल जाइय। महज ऐसन-ऐसन आयोजनमे असली बात तर कऽ देल जाइय आ लिफाफबाजी के उप्पर। लोक बूझे लागल गऽ जे खुसामदीए लोकके पाँचो अंगुरी घी बोराइ छै तखनी हमही आउर कीए पाछू?–कैलू कमतीक कूही

एगो बात संपादकजी आरो जे उचित रामके मनमे एलैन गऽ ऊहो अपने के कहिए दै छैथ जे जखनी एक दिन दू दिनके वास्ते मुनिस्टर आउर अबै छथिन आ जेन्नऽ जेन्नऽ बाटे जाइ छथिन तै बाटके एना चिक्कन-चुनमुन बनाउल जाइ छै तखन एकगो कऽ मनुस्टरके सब शहरमे राख देल जाइन आ सब सड़क, गली, कुच्चीमे घुमाओल जाइन, तब त सब शहरके सब गली, कुच्ची चिक्कने रहतै। सरकार सेहे किए ने करैय?– उचित रामक उचिती

अमरजीक समस्त स्तम्भकरचना जँ एकटा पोथीमे छपय तँ ओ एकटा अभिनव रूपमे पाठकक सोझाँ औताह।

●

अमरजीक अनुवाद-साहित्य

डा० देवेन्द्रझा

प्रकृति ओ मानवक पुजारी, मातृभाषानुरागी पण्डित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' 1947 सँ 1983 अर्थात् 36 वर्ष अर्थात तीन युग धरि शिक्षकक पदकेँ अलंकृत करैत निरन्तर समाज, साहित्य ओ संस्कृतिसँ एहन प्रगाढ़ सम्बन्ध बनौने रहैत आबि रहल छथि जे सर्वथा स्तुत्य अछि। हम हिनका पारसमसि (स्पर्शमणि) बुझैत छी, वस्तुतः से छथिहो, कारण ई अपन लेखनीसँ जाहि साहित्यिक विधाकेँ स्पर्श कए छथि ओ मणि सदृश अमूल्य बनि गेल अछि। तें ई एकहि संग मैथिलीक रससिद्ध-प्रसिद्ध कवि, मूर्धन्य कथाकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, मर्मज्ञ समालोचक, कुशल सम्पादक, यशस्वी निबन्धकार, लोकप्रिय एकांकीकार एवं इतिहासकार सभ छथि। कहि सकैत छी जे ई अपन विलक्षण प्रतिभा, व्यापक व्युत्पत्ति एवं निरन्तर अभ्यास-साधनासँ साहित्यकाशमे जाज्वल्यमान नक्षत्र जकाँ उद्भासित-प्रकाशित छथि। आइ लगभग 60 वर्षसँ ई जाहि प्रकारेँ साहित्यक सर्जन करैत अपन चमत्कारी प्रभासँ लोकक हृदयकेँ प्रेरित, मस्तिष्ककेँ प्रभावित एवं मनकेँ आह्लादित करैत आबि रहलाह अछि ओ ककरो लेल स्पृहणीय भऽ सकैत अछि। आओर तें मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासमे हिनक बहुमूल्य योगदान स्वतःसिद्ध अछि। हिनकासँ प्रेरणा-प्रोत्साहन पाबि कतिपय लोक सनाथ भेल छथि एवं मैथिली आन्दोलनक गति तेज भेल अछि।

एहन बहुआयामी व्यक्तित्वसँ मण्डित स्वनामधन्य अमरजी मैथिली भाषामे अन्य भाषाक ग्रन्थकेँ अनुवाद कऽ सफल अनुवादकक श्रेणीमे सेहो परिगणित भेल छथि, जाहिमे निम्नलिखित प्रमुख अछि।

(1) विद्यापति नीति तरंगिणी-प्रथम संस्करण 1973

(2) हरि नारायण आण्टे– प्रथम संस्करण 1985

(3) बंकिम चन्द्र चटर्जी– प्रथम संस्करण 1990

(4) परशुरामक बीछल बेरायल कथा– प्रथम संस्करण 1995

अमरजी स्वयं नवरत्न गोष्ठीक स्थापना कऽ प्रारम्भमे स्वयं सचिव रहि साहित्य सर्जन कए-कराए कतिपय ग्रन्थक प्रकाशन करबौलनि जाहि क्रममे विद्यापति नीति तरङ्गिणी अठाइसघ पुष्प थीक। एहिमे विद्यापतिक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ पुरुष परीक्षाक 64 गोट श्लोककेँ संस्कृतसँ मैथिलीमे अनुवाद कएल गेल अछि। एकर विशेषता ई अछि जे गद्यमे तें सरल अर्थ देले गेल अछि संगहि पद्यात्मक अनुवाद सेहो कएल गेल अछि जे अत्यन्त उपयोगी अछि। एकर 'प्राक्कथन' मे ओ लिखने छथि– ''पुरुषपरीक्षाक कथासभमे बहुतो कथा लोककथाक रूप ग्रहण कऽ जन-जनमे प्रचलित अछि, किन्तु एहि कथासभक क्रममे लिखित नीतिपूर्ण आप्तवाक्य सभक दिस जनसाधारणक ध्यान एखन धरि नहि जा सकल अछि।'' एहिसँ एकर उपयोगिता स्पष्ट भऽ जाइत अछि। आइसँ सताइस वर्ष पूर्व एकर प्रकाशन भेल, मुदा आइयो ई ओहिना नवीने अछि एवं सभ दिन नवे रहत। उदाहरणार्थ एकाध श्लोककेँ देखल जा सकैत अछिः

''वीरः सुधीः सविद्यश्च पुरुषः पुरुषार्थवान्।
तदन्ये पुरुषाकारः पशवः पुच्छवर्जिताः।। – पुरुष-परीक्षा
''वीर, सुधी, विदयासँ शोभित पुरुषार्थी थिक पुरुष प्रमाण।
बिनु नाङड़िक पुरुष आकारक पशुए थिक चारूसँ आन।। – श्री अमरक पद्य

''वीर, बुधियार, विद्वान तथा पुरुषार्थ जे छथि से पुरुष थिकाह, एहिसँ अतिरिक्त पुरुषकेँ पुरुषक आकार मात्र रखनिहार बिनु नाङ ड़िक पशुए बुझबाक चाही।'' – श्री अमरक गद्य

एकर शैली सर्वथा सरल, सरस एवं स्वच्छ अछि एवं एहिना प्रत्येक श्लोकक मैथिली गद्य-पद्यमे रूपान्तर कएल गेल अछि जाहिसँ अमरजीक क्षमता अनुवादक क्षेत्रमे सेहो प्रमाणित भऽ जाइत अछि।

दोसर हिनक अनुवादक प्रमाण अछि रामचन्द्र भिकाजी जोशीक अंग्रेजी मोनोग्राफक सफल अनुवाद ''हरिनारायण आप्टे'' जे भारतीय साहित्यक निर्माताक क्रममे साहित्य अकादेमी द्वारा 1985 मे प्रकाशित भेल छल।

अमरजी वस्तुतः शाश्वत मूल्यबोधक श्रेष्ठतम कवि रहितहुँ, हास्य रसाचार्यक उपाधिसँ विभूषित रहितहुँ, साहित्यक प्रत्येक विधा पर समान अधिकार रखैत 1983 मे एक दिस यदि मौलिक लेखनक हेतु **''मैथिली पत्रकारिताक इतिहास''** पर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित भेलाह तँ दोसर दिस 1998 मे साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कऽ सफल अनुवादकर्त्ताक रूपमे सेहो प्रतिष्ठित भेलाह।

हिनक अनुवाद-साहित्यक तेसर पुस्तक अछि ''बंकिम चन्द्र चटर्जी''। इहो ग्रन्थ सुबोध चन्द्र सेनगुप्तक अंग्रेजी मोनोग्राफक सफल अनुवाद अछि जे साहित्य अकादेमीक भारतीय साहित्यक निर्माताक कड़ीमे सर्वप्रथम 1990 मे प्रकाशित भेल छल। एकर किछु पाँती द्रष्टव्य अछि: ''कथामे एक विलक्षण क्षणकेँ प्रस्तुत कयल जाइत छैक, कथ्यक निरन्तरता ओहिमे नहि होइत छैक। ई एक चिनगीक सदृश होइछ जे जहिना अकस्मात् चमकि उठैछ तहिना अकस्माते मिझाइतो जाइत अछि। यद्यपि कथाक स्वरूपमे आरम्भ, मध्य तथा अन्त एक भऽ सकैत छैक, तथापि एकर सम्पूर्ण भाव एक विशेष बिन्दु पर केन्द्रित रहैत छैक।'' बंकिम चन्द्र चटर्जी, अनुवादक अमरजी, पृ० 42

''विचार भलेँ कतबो महत्त्वक हो, जाबत धरि जीवन्त प्रतीकक माध्यमसँ ओकर अभिव्यक्ति नहि होइत छैक, ताबत धरि कलात्मक दृष्टिएँ ओ सर्जनशील नहि भऽ पबैत अछि। कला मार्मिक तथा जीवन स्फूर्तिसँ परिपूर्ण पात्र चाहैत अछि।'' पृ० 47

एतबे नहि दुर्गेशनन्दिनी कपालकुण्डलाक कथावस्तुक अनुवाद सेहो अत्यन्त सरस भेल अछि।

चारिम हिनक अनुवाद कार्य अछि 1958मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत ''बाङला गल्पसंकलन''क ''परशुरामक बीछल बेरायल कथा'' शीर्षकसँ अनुवाद। एकर मूल बाङ्ला लेखक छथि परशुराम राजशेखर वसु। एहि ग्रन्थक भूमिका डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या लिखने छथि एवं एकर प्रथम क्रमशः संस्करण 1995मे प्रकाशित भेल अछि। एहिमे बारह गोट कथाक अनुवाद भेल अछि। (1) श्री श्री सिद्धेश्वर लिमिटेड (2) मुशंडीक मैदानमे (3) बिरंचि बाभु (4) उनटा पुराण (5) हनुमानक स्वप्न (6) चिरंजीव (7) भरतक झुनझुना (8) रटन्ती कुमार (9) शाकाहारी बाघ (10) वरनारी वरण (11) जयहरिक जेब्रा (12) चिट्ठीबाजी।

एहि ग्रन्थमे मैथिलीक ठेठ शब्दक ठाठ अछि। उदाहरणार्थः गलचौथौअलि, नेना-भुटका, तरबिठुआ, भरनै नदी, ठाही लड़ब, टटौघर, लदगोबड़ि, पेटमधवा, साढ़े नौ, माहुर, कनिआ पुतरा, धुम धुमा देब, थकुचि कऽ राखब, अकछि जायब, अओन पओन, पीने बुत्त, आस्था पात, थुक्कम-फज्झैती, धौरवी, गोबी जमा लेब इत्यादि अनेक प्रमाणस्वरुप राखल जा सकैत अछि।

निष्कर्षतः कहि सकैत छी जे जहिना पद्य तहिना गद्य, जहिना उपन्यास तहिना कथा, जहिना निबन्ध तहिना एकांकी, जहिना सम्पादन तहिना आलोचना, जहिना मौलिक तहिना अनुवाद अमरजीक जेना बामा हाथक खेल रहए। एहन शब्द-शिल्पी, अर्थ-विन्यासी साहित्यकारक विषयमे आचार्य सुमनजीक ई उक्ति सर्वथा सत्य अछि 'साहित्य शतदलक प्रत्येक दल पर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत।'

अमरजीक अनुवाद-कार्य

प्रो० अशोककुमारमेहता

पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' मैथिली साहित्यक चीन्हल-जानल नाम अछि। मैथिलीक आद्य अध्यापकक विशेषण हिनका नामसँ तँ जुटल छन्हिएँ, संगहि डेढ़ दर्जनक करीब पोथीक रचना कऽ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरलनि अछि आ से विभिन्न विधामे। कथा, कविता, उपन्यास, एकांकी, निबंध, आलोचना, जीवनी आ संपादन सभ विधाक हिनक रचना चर्चित-प्रशंसित भेल अछि।

एहन लब्धप्रतिष्ठ रचनाकारक एकटा आरो रूप ख्याति पौलक–अनुवादकक। हिनका द्वारा अनूदित प्रायः चारिटा कृति उपलब्ध होइत अछि–''विद्यापति-नीति-तरंगिणी, हरिनारायण आप्टे, बंकिम चन्द्र चटर्जी एवं परशुरामक बीछल-बेरायल कथा।'

कोनो काजक दूटा पक्ष होइछ-सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक। अमरजीक अनूदित कृति पर विचार करबासँ पूर्व संक्षेपमे अनुवादक सैद्धान्तिक पक्ष अर्थात् अनुवाद ककरा कही, ताहि पर विचार करऽ चाहब।

'वद्' धातुमे 'अनु' उपसर्ग आ 'घञ्' प्रत्ययक मेलसँ 'अनुवाद' शब्दक व्युत्पत्ति भेल अछि। 'वद्'क अर्थ होइछ 'बाजब' वा 'कहब' आ 'अनु'क अर्थ होइछ 'पाँछा' वा 'बादमे' तथा 'घञ्' प्रत्यय 'वद्'केँ वादमे परिवर्त्तित करैत अछि। अर्थात् अनुवाद शब्दक अर्थ होइछ 'पुनःकथन' अथवा 'ककरो कहलाक बाद कहब।'

'शब्दार्थ चिंतामणि कोश' मे सेहो अनुवादक अर्थ 'प्राप्तस्य पुनः कथने, अथवा 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने' अर्थात् 'पूर्वमे, कहल गेल अर्थकेँ पुनः कहब' कहल गेल अछि।

स्पष्टताक संग कहल जाए तऽ 'एक भाषामे व्यक्त विचारकेँ यथासंभव समान आ सहज अभिव्यक्ति द्वारा दोसर भाषामे व्यक्त करबाक प्रयास अनुवाद थीक।

वस्तुतः अनुवाद एकटा प्रयास थीक आ एकर सफलता एहि बात पर निर्भर करैछ जे मूल भाषाक रचना वा सामग्रीक भाव वा विचार अनूदित रचनामे कतबा अंश धरि अक्षुण्ण रहि सकल। खास कऽ मूल रचनाक लोकोक्ति, कहबी, रस, छन्द, अलंकार आदिक ऐन-मेन स्वरूप अनूदित भाषामे उपलब्ध होयब थोड़ेक दुरूह होइछ, तथापि एक सफल अनुवादकक अनुरूप अमरजी एहि सिद्धान्तक अनुपालन कएने छथि।

महाकवि विद्यापतिक संस्कृत रचना 'पुरुष-परीक्षा'क नीति सम्बन्धी चौंसठि श्लोकक गद्यमे सरलार्थक संग पद्यात्मक अनुवाद थीक 'विद्यापति-नीति-तरंगिणी।' एकर उद्देश्यक संबंधमे अमरजी स्वयं लिखने छथि– ''..... मात्र 64 गोट एहन श्लोक एहिमे संकलित भय सकल जकर अध्ययन-मनन कएलासँ नेनालोकनि जीवन-यात्राक पथमे आलोक पाबि सकैत छथि।'' (प्राक्कथन, विद्यापति-नीति-तरंगिणी)

एहिसँ पूर्व कालीकृष्ण बहादुर अंगरेजीमे, हरप्रसाद राय बंगला मे, चन्दाझा, प्रो० रमानाथझा एवं पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिलीमे पुरुष-परीक्षाक अनुवाद कऽ चुकल रहथि। एहिमे सभ केओ प्रायः पद्य आ कथा दूनूक अनुवाद कएने छथि, जखन कि अमरजी मात्र श्लोकक अनुवाद कएलनि अछि।

पद्य वा काव्यानुवाद गद्यानुवादक तुलनामे कठिन काज होइछ। पद्यमे शब्दक चमत्कार अलौकिक होइछ। मूल

भाषाक सभ शब्दक लेल अनूदित भाषामे प्राप्त शब्द आंतरिक तथा बाह्य प्रभावक दृष्टिसँ सर्वदा समान नहि होइछ। किन्तु एक तऽ जननी-जाया संबंध हेबाक कारणेँ संस्कृतसँ मैथिली भाषामे अनुवाद करैत काल ई समस्या थोड़ेक कम होइछ आ दोसर अमरजी मूलतः संस्कृतहिक पण्डित छथि। तेँ कतोक श्लोकक अनूदितहि रूप मूल संस्कृतसँ बेसी पाठ्यसुलभ एव बोधगम्य बुझाइत अछि। एकटा श्लोकक शब्दशः अनुवाद द्रष्टव्य अछि–

संस्कृत– ''दानवीरो हरिश्चन्द्रः दयावीरः शिविनृपः।
युद्धवीरो भवेत्पार्थः सत्यवीरो युधिष्ठिरः।।''

मैथिली– हरिश्चन्द्र नृप दानवीर ओ दयावीर शिवि नृपति प्रमाण।
सत्यवीरमे रहथि युधिष्ठिर, युद्धवीरमे पार्थ महान।।''

विद्यापतिक काव्यक भाषाक सुकुमारताकेँ अमरजी एहि अनुवादमे बड़ कुशलतापूर्वक अक्षुण्ण रखबाक प्रयास कएलनि अछि।

काव्यात्मक अनुवाद आन विधात्मक अनुवादसँ सर्वथा भिन्न होइत अछि। कहल जाए तँ एक प्रकारसँ पुनारचना होइछ। तेँ कोनो कविहृदये काव्यानुवादक संग न्याय कऽ सकैछ। किन्तु, एहिमे एकटा आशंका ई रहैछ जे अनुवादकक कवि-व्यक्तित्वक प्रभाव अनुवाद पर पड़ैत रहैत अछि। 'विद्यापति-नीति-तरंगिणी' सेहो अनुवादकक व्यक्तित्वसँ प्रभावित अछि। अमरजीक हास्य-विनोदी स्वभावक प्रभाव एहि अनूदित पदमे स्पष्ट देखल जा सकैछ–

संस्कृत– 'दुर्बलस्य गुरुर्भारो दुष्टाग्नेर्गुरु भोजनम्।
राज्यं गुरुश्च दुर्बुद्धेः परिणाम सुखं कुतः।।'

मैथिली– होइत छै बलहीन लोककेँ मोटा भारी।
अपच रहै जकरा, तकरा तरुआ-तरकारी।।
बुद्धिहीनकेँ राज्यभार, होइछ अपकारक।
भेटय पुनि परिणाम कतयसँ सुख संसारक।।''

विद्यापति-नीति-तरंगिणीक एकटा खास विशेषता ई अछि जे मूल रूपमे प्रायः सभटा श्लोक अतुकान्त अछि जखन कि प्रायः सभटा अनुवाद लयबद्ध ओ तुकान्त अछि। ई प्रायः अमरजीक विलक्षण कवित्व-प्रतिभाक कारणेँ संभव भेल अछि।

शेष तीनू 'हरिनारायण आप्टे', 'बंकिम चन्द्र चटर्जी' आ 'परशुरामक बीछल बेरायल कथा' गद्यात्मक अनुवाद थीक। पद्यक तुलनामे गद्यक अनुवाद सरल होइत अछि। एहिमे अनुवादककेँ अपेक्षाकृत कम परिश्रम करऽ पड़ैत छैक।

'हरिनारायण आप्टे' आधुनिक मराठी साहित्यक सशक्त उपन्यासकार- नाटककारक जीवनी अछि। एकर मूल लेखक छथि रामचन्द्र भिकाजी जोशी। एहिना 'बंकिम चन्द्र चटर्जी' बंगला साहित्यक प्रख्यात साहित्यकारक जीवनी थीक। एकर मूल लेखक सुबोध चन्द्र सेनगुप्त छथि। उक्त दूनू अनूदित पोथीमे उद्धृत संकेतक अनुसार अमरजी मूल अंगरेजी भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद कएलनि अछि। ई एहि बातक प्रमाण थीक जे संस्कृतक विद्वानकेँ अंगरेजी भाषाक सेहो ज्ञान छनि।

चारिम अनूदित पोथी अछि– 'परशुराम'क नामसँ ख्यात बंगला कथाकार राजशेखर बसुक किछु प्रमुख बंगला कथाक अनुवाद– 'परशुरामक बीछल बेरायल कथा।' यैह पोथी वर्ष 1998 इ०मे साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा 'अनुवाद पुरस्कार'सँ पुरस्कृत भेल अछि।

'परशुरामक बीछल बेरायल' कथामे कुल बारहटा कथा संकलित अछि– श्री श्री सिद्धेश्वरी लिमिटेड, भुशंडीक मैदानमे, बिरंचि बाबा, उनटा पुरान, हनुमानक स्वप्न, चिरंजीव, भरतक झुनझुना, रटन्ती कुमार, शाकाहारी बाघ, वरनारी वरण, जयहरिक जेब्रा आ चिट्ठीबाजी। सभ कथा प्रायः हास्य-व्यंग्य प्रधान अछि। अनुवादक स्वयं हास्य-व्यंग्यक कथाकार छथि, तेँ प्रत्येक कथाक अनुवादमे ओकर मौलिक भाव ओ शैलीकेँ यथावत् रखबाक प्रयल कएलनि अछि। बंगला भाषासँ अनुदित 'चिट्ठीबाजी' सदृश कतोक एहन कथा अछि जे अमरजीक अनुवाद कलाक उत्कृष्टताक कारणेँ मौलिक मैथिली कथाक अनुरूप लगैत अछि।

निःसन्देह अमरजीक एहि अनुवाद कार्यसँ मैथिलीक अनुवादसाहित्य संवर्द्धित भेल अछि। अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित हैब एहि बातकेँ प्रमाणित करैत अछि जे हिनकामे एकटा कुशल अनुवादकक समटा गुण छनि। अस्तु, हम सभ आशा करैत छी जे आरो विविध विधाक, विभिन्न भाषाक सर्वोत्कृष्ट पोथीक हिनका द्वारा अनूदित देखबाक-पढ़बाक अवसर भेटत।

●

चतुर्थ खण्ड

विविध

मिथिलामे वेदान्त दर्शन

आचार्य शोभाकान्त जयदेवझा

वेदान्त दर्शन भारतीय आध्यात्मशास्त्रक मुकुटमणि मानल गेल अछि। एखनधरि यावत् दार्शनिक प्रवृत्ति विकसित भेल तथा तार्किक विचारक विकास भेल ओकर उत्कर्ष समस्त वेदान्तमे उपलब्ध होइत अछि। वेदान्तदर्शनक मूल रूप उपनिषद् थिक। श्रुतिक चरम सिद्धान्त वेदान्त दर्शनमे वर्णित अछि। वेदान्त शब्दक प्रयोग उपनिषद्मे कयल जाइत अछि, उपनिषद्मूलक कृष्णद्वैपायन वेदव्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्रमे कयल जाइत अछि तथा उपनिषद्मूलक भगवद्गीता एवं श्रीमद्भागवत महापुराणमे कयल जाइत अछि। वेदान्तदर्शनमे प्रस्थानत्रयी नामसँ उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद्गीता परिगणित अछि। वेदमे कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड ओ ज्ञानकाण्ड भेदसँ तीन काण्ड अछि। वेदक अन्त ज्ञानकाण्ड उपनिषद् थिक। एहि तीन प्रस्थानक समादर मिथिलामे प्रारम्भकालहिसँ अछि। मिथिला भूमि दक्षिणमे गंगासँ मण्डित एवं पूरब कौशिकी नदीसँ मण्डित, उत्तर हिमालयक तराईसँ वेष्टित, पश्चिम गण्डकी-नारायणीसँ सुशोभित पैघ भूप्रदेश अछि। मिथिलाभूमि महर्षि योगी याज्ञवल्क्यक, राजर्षि विदेह सीरध्वज जनकक भूमि अछि। एतय विदेह राजर्षिजनकक राजसभामे समस्त दार्शनिक महर्षिलोकनिक समन्वय छल। एतऽ दार्शनिक विचारधारा आदिकालसँ बनल रहल। महर्षि गौतमक भूमिमे न्याय-चर्चा केहन छल, एकर वर्णन कतेक कएल जाय। ओ स्वयं न्यायसूत्रक प्रणेता छलाह। मिथिला नव्यन्याय, प्राचीनन्याय सबहिक जन्मदात्री अछि। सभ दर्शनक उपसंहार वेदान्तदर्शनहिमे होइत अछि। वैदिक संस्कृति दर्शनहि पर प्रतिष्ठित अछि। वेदमे जाहि धर्म एवं ब्रह्मक निरूपण अछि, ओकर विशेष परिष्कार दार्शनिकलोकनि दर्शनेक माध्यमसँ करैत छथि। भारतीय संस्कृति अनेक सम्प्रदायसँ विभूषित अछि। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत, अनेक सम्प्रदायक जन्म भारतीय वेदान्तदर्शनक विकासमे योगदान कयने अछि।

मिथिलामे एक समय एहन छल, जे भारतीय दार्शनिक विद्वान् एवं ऋषिवर्ग आबि धर्म, ब्रह्मक चर्चा करैत छलाह तथा ''वादे वादे जायते तत्त्वबोधः'' एकर सुपरिचय दैत छलथिन्ह। शतपथ ब्राह्मण, बृहदारण्यक उपनिषद् आदिमे वेदान्तदर्शनक चर्चा वर्णित अछि। मिथिला भूमि निमि-कानन, तीरभुक्ति, विदेह अनेक नामसँ प्रथित अछि। एतऽ ब्रह्मसिद्धिक निर्माता अद्वैतवेदान्ती आचार्य मण्डनमिश्र आदिशंकर अद्वैतवेदान्तीक समकालिक व्यक्ति छथि। एतऽ अबाध गतिसँ दार्शनिक चर्चा जे प्रारम्भ भेल, अद्ययावत् ओकर परम्परा बनल अछि। एतय वेदान्तदर्शनक पूर्वपीठिका तँ प्रशस्त छल, किन्तु तदुत्तर वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्यलोकनि, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र धर्मदत्त बच्चाझा, महामहोपाध्याय पण्डित बालकृष्णमिश्रलोकनि एहि तरहक नवीन विचारधाराक प्रवर्तक भेलाह, जाहिसँ मिथिला भूमि वेदान्तदर्शनक विकासक सेहो जननी कहबैछ। मिथिलाक वेदान्तदर्शनक चर्चा भगवद्गीतामे सेहो वर्णित अछि। ''कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः'' उल्लेख कऽ भगवान कृष्णो कहने छथि जे जनकादिलोकनि ज्ञानकर्मक समुच्चय मानि मोक्षक द्वारनिरूपण कयने छथि। समस्त भारत भूमिमे मिथिलाक वेदान्तदर्शनक महाविभूति वेदान्तीलोकनि पसरल छथि। भारतक प्रत्येक प्रान्तमे मिथिलाक वेदान्त दर्शनक विद्वान्लोकनि वेदान्तदर्शनक प्रचार-प्रसार कऽ रहल छथि। जखन बौद्ध धर्म भारतक राजधर्म भऽ गेल तखन बौद्धदर्शनक विकासोमे मिथिलाक योगदान छल एवं बौद्धदर्शनक महिमाकेँ विलीन करबामे सेहो मिथिलाक योगदान छल। वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्यलोकनि न्यायदर्शनकेँ एतेक परिष्कृत बनौलनि जाहिसँ बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन सभ म्लान भऽ गौण भऽ गेल। मिथिलामे वेदान्तदर्शनक विद्वान् एखनहु विद्यमान छथि। एखनहु एहिठामक वैयाकरण, पूर्वमीमांसक, नैयायिक, सांख्य योगक विद्वान्लोकनि वेदान्तदर्शनक मर्मज्ञ भऽ सभ उपनिषद्-तात्पर्य ब्रह्माद्वैत दर्शनमे मानैत छथि।

मिथिला भूमिमे, मिथिलाक माटि-पानिमे वेदान्तदर्शनक प्रभाव अयाचीमिश्रलोकनिक परम्परासँ एखनहु धरि प्रसिद्ध अछि। अद्वैतप्रतिपादक मण्डनमिश्र ब्रह्मसिद्धि ग्रन्थक निर्माता छलाह। हुनक ग्रन्थ शंखपाणि टीका सहित मद्रासँ प्रकाशित अछि। आचार्य वाचस्पतिमिश्र जाहि तरहेँ आचार्य शंकरक ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य पर अपन ''भामती'' टीका कयने छथि, ओही तरहेँ ब्रह्मसिद्धिक ऊपर ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा नामक टीका सेहो कयने छलाह। किन्तु ब्रह्मसिद्धिक टीका आचार्य वाचस्पतिमिश्र रचित ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा उपलब्ध नहि अछि, किन्तु आचार्य वाचस्पतिमिश्रक ''भामती'' टीका शांकरभाष्य पर उपलब्ध अछि तथा ओकर उत्तरोत्तर टीका-उपटीका भेल अछि। मिथिलाविभूति आचार्य वाचस्पतिमिश्रक ''भामतीप्रस्थान'' वेदान्तदर्शनमे प्रथित अछि। आचार्य वाचस्पति मिश्रक वेदान्त सिद्धान्त पर आचार्य मण्डनमिश्रक विचारक प्रभाव विशिष्ट रूपसँ देखल जाइत अछि। आत्माकेँ उपनिषद् वाक्यसँ शाब्दबोध करबाक थिक तथा युक्ति सत्तर्कादि द्वारा आत्माक मनन करबाक थिक एवं धारणा-ध्यान-समाधि द्वारा आत्माक निदिध्यासन करबाक थिक। एहितरहेँ शाब्दबोध, अनुमिति एवं निदिध्यासनसँ आत्मसाक्षात्कार करबाक अछि। आचार्य मण्डनमिश्र आ आचार्य आदिशंकर सभ अद्वैती छलाह। क्यो ब्रह्माद्वैत मानैत छलाह, क्यो शब्दब्रह्माद्वैत मानैत छलाह, ई प्रक्रियागत वैशिष्ट्य अछि। एहिसँ अद्वैतक मर्यादा विनष्ट नहि होइत छैक। वेदान्तदर्शन भारतीय समस्त दर्शनक चरम दर्शन अछि। एहिमे सभ दर्शनक समावेश अछि। एहिमे पंचीकरण-त्रिवृत्करण प्रक्रिया विराट् हिरण्यगर्भ, ईश्वर परात्पर पुरुषोत्तमक चिन्तन अछि। एहिमे विश्वतैजसु प्राज्ञ तुरीयतत्त्वक चिन्तन अछि। एहिमे अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनन्दमय पंचकोशक विवेचन अछि तथा विवर्तवादक उद्भावन अछि। एहिमे मायावादक चिन्तन अछि। एहिमे समस्त दर्शनक परिष्कार अछि तथा समस्त दर्शनक समन्वयक भावना अछि। वेदान्तदर्शनमे त्रिविधसत्ता मानल जाइत अछि-प्रातिभासिक, व्यावहारिक ओ पारमार्थिक। प्रातिभासिक सत्ता शुक्ति-रजत, रज्जु-सर्पादिक अछि, व्यावहारिक सत्ता जगत्प्रपंचक अछि तथा पारमार्थिक सत्ता परब्रह्मक थिक। जाहितरहेँ न्यायवैशेषिक दर्शनमे आरम्भवादक चर्चा अछि, सांख्ययोगदर्शनमे परिणामवादक चर्चा अछि तहिना वेदान्त दर्शनमे विवर्तवादक चर्चा अछि। वेदान्तदर्शनमे कर्मज्ञानसमुच्चय विवेचन बहुत कयल गेल अछि। ओहिसँ कर्मनिष्ठा, ज्ञाननिष्ठा सभ परिष्कृत होइत अछि। ज्ञानकर्मसमुच्चयपक्षमे आचार्य मण्डनमिश्र अपन योगदान देने छथि। ज्ञाननिष्ठामे आचार्य आदिशंकरक योगदान अछि। एहितरहेँ मिथिला भूमि समस्त वेदान्तदर्शनक विकासमे अपन योगदान कयने अछि जकर विवेचन नहि कऽ एतबहि कहबाक अछि जे मिथिलाभूमिक सौभाग्य छैक जे मिथिला संस्कृत शोध संस्थान आ कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, ई दू टा संस्कृत संस्था मिथिला भूमिमे वेदान्तदर्शनक गरिमाक प्रकाशमे तत्पर अछि। जाहि तरहेँ सूर्योदयक अनन्तरेँ सभमे प्रकाश व्याप्त होइत छैक, ओही तरहेँ मिथिलाक वेदान्तदर्शनक प्रकाशहिसँ भारतवर्षमे वेदान्तदर्शनक प्रकाश भऽ रहल अछि। तेँ हमरालोकनिकेँ एकर गौरव हेबाक चाही जे मिथिलाक वेदान्त दर्शनमे जे योगदान छैक ओ सतत चिरस्मरणीय बनल रहत।

●

मिथिलामे राजनीतिक चेतना

रमाकान्तझा

मिथिलामे राजनीतिक चेतना विषय पर चर्चा करबासँ पूर्व मिथिला देश ककरा कही ई जानब आवश्यक अछि– ''गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे। विदेह भूः समाख्याता तैरभुक्त्यमिधः सतु।'' मिथिलाक पश्चिममे गण्डकी नदी, दक्षिणमे गंगा, उत्तरमे हिमालयओ पूर्वमे बंगाल अछि। जखन कोशी पूर्णियोक पूब बहैत छल तँ मिथिलाक पूर्व कोशिये कहल जाइत छल। परञ्च कोशी अपन धार बदलैत रहल आ आब ई निर्मली लग आबि गेल अछि। अतः आब मिथिलाक पूब बंगाल कहल जाइछ। ई मिथिला देश बड़ पावन, रम्य ओ सुसभ्य एवं सुसंस्कृत अछि। एतऽ कतेको प्रकाण्ड पण्डित आ विद्वान प्राचीन मध्य व अर्वाचीन कालमे भेल छथि। एहि भूमिक एक-एक खण्ड अनेक यज्ञसँ पूत भेल अछि। पूर्व मे ई भूमि दलदल छल। यज्ञे द्वारा एकरा सुखाओल गेल। तेँ कहल अछि ''परम् प्रिय पावन मिथिला देश।''

याज्ञवल्क्य एहि देशक महान् ऋषि छलाह। गार्गी आ मैत्रेयी परमविदुषी आ सीता एहि ठामक परम पूत कन्या छलीह। आब ई देश दू भागमे बँटि गेल अछि। अधिक भू-भाग भारतमे पड़ैछ एवं किछु भाग नेपालमे। हिमालयक तराइ क्षेत्र नेपालमे पड़ैछ। राजा जनकक राजधानी जनकपुर नेपालमे पड़ैछ।

मिथिला भू-भागक निरूपणक बाद आब एकर राजनीतिक चेतना पर विचार करी।

आइसँ लगभग दू हजार पाँच सय वर्ष पूर्व (इस्वी पूर्व पाँच सय वर्ष) मिथिलामे विदेह गणतंत्र छल। मिथिलाक राजा राजर्षि जनक विदेह कहबैत छलाह। हुनक महान् लक्ष्य छल–''मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति किञ्चन।'' एतदर्थ ओ विदेह नामसँ प्रख्यात भऽ गेल छलाह। अतः मिथिलाक एहि गणतंत्रक नाम हुनकहि नाम पर राखल गेल। पश्चात् एहि गणतंत्रक संघ बज्जि गणतंत्रक संग निर्मित कयल गेल। कालान्तरमे ई विदेह-बज्जि संघ विश्व भरिमे प्रसिद्ध भऽ गेल एवं अनेक पाश्चात्य विद्वान अपन-अपन इतिहास ग्रंथमे एहि संघक सांगोपांग वर्णन कयलनि।

एहि कालसँ बहुत पूर्व रामायण कालमे मिथिलामे अति प्रसिद्ध राजा सीरध्वज जनक भेलाह। मिथिलामे कतेको राजा जनक कहाओल। तेँ एहि राजा जनककेँ सीरध्वज जनक कहल गेल। ई बड़ प्रतापी राजा छलाह। हिनका कोनो दोसर राज्यसँ कहियो लड़ाइ नहि भेलनि। हिनक राज्यमे सर्वत्र सब कालमे पूर्ण शान्ति पसरल रहल। अतः हिनक राज्यमे सतत् शास्त्र-चर्चा एवं विद्वत्-समागम होइत रहल। शास्त्र चर्चाक धार शान्ति-सम्पन्न राज्याश्रय प्राप्त भेले पर विद्वत्समाज बहबैत छथि।

जेँ कि मिथिलामे विदेह गणतंत्रक स्थापना विश्व भरिमे सर्वप्रथम भेल, तेँ एहिठाम गणतंत्रक चेतना जनताक मानस पर सर्वप्रथम उमड़ल। ई राजनीतिक चेतना अपूर्व ओ प्रगाढ़ छल। जनता एहि चेतनासँ सराबोर होइत संसदमे बैसि महत्त्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय लैत रहल। ओहि समय साक्षात् गणतंत्र छल। प्रतिनिधिक चुनावक प्रथा नहि छल, कारण जनसंख्या अत्यल्प छल। तेँ समस्त जनता राजनीतिक दृष्टिसँ अत्यन्त जाग्रत एवं उद्‌बुद्ध छल आ एतदर्थ जनताक राजनीतिक चेतना बड़ भव्य, उच्च तथा उन्नत छल।

असलमे मिथिलामे राजतंत्रक उदय लगभग छौ हजार वर्ष पूर्वहिँ भऽ गेल छल। कीर्त्तिजनक व याज्ञवल्क्य एही कालमे भेलाह। ऐतरेय ब्राह्मणमे एकर स्पष्ट उल्लेख अछि। अतः मिथिलाक जनतामे राजनीतिक चेतनाक आविर्भाव छौ हजार वर्ष पूर्वहिँ भऽ गेल छल जे अद्यावधि बनल रहल अछि। सम्राट् ओ राजामे भेद छल। राजा प्रारंभमे निर्वाचित होइत छलाह। पश्चात् राजतंत्र वंशानुगत भऽ गेल। राजाक अवसानक पश्चात् हुनक ज्येष्ठ पुत्रहि राजा बनऽ लगलाह। परञ्च राजाक निःसन्तान मरणोपरान्त जनता परवर्ती राजाक निर्वाचन करैत छल। एहि प्रकारक निर्वाचित राजतंत्रक

परम्परा प्रायः सर्वत्र चलायमान छल। एहि प्रकारक राजाकेँ जनता अपनहिमे सँ एक (प्रथम– First among equals) मानैत छलाह।

कालांतरमे लगभग 2300 वर्ष पूर्व मिथिला परतंत्र भऽ गेल। ई मगध साम्राज्यक अंग भऽ गेल। नन्द, मौर्य, शुंग, गुप्त आदि राजाक शासन मिथिला पर होमऽ लागल। ई क्रम लगभग 1100 ई० धरि रहल। पराधीन प्रजाक गति जे हेबाक चाही से मिथिलामे भेल। प्रजाक राजनीतिक चेतना जे उन्नयन पर छल, अवनयन पर जाय लागल। जनता राजनीतिक चेतनाशून्य भऽ गेल। जनताक गतिशीलता स्थिर भऽ गेल आ साहित्य, कला, राजनीति आदिक ह्रास होमऽ लागल।

एकर बाद कर्णाट वंशक स्थापनासँ मिथिला स्वतंत्र भऽ गेल। ई काल 1100 ई० सँ प्रारंभ भेल। कर्णाट राजा क्षत्रिय छलाह। एहि वंशक प्रथम राजा नान्यदेव भेलाह। हिनका 'मिथिलेश्वर' तथा 'कर्णाट कुलभूषण' कहल गेल अछि। ई अपनहि परम विद्वान् छलाह आ पोथिओ लिखलनि।

हिनकर समयकेँ मिथिलाक स्वर्णयुग कहल जा सकैछ। कला, साहित्य, संगीत आदिक संग एहि युगमे राजनीतिक चेतनाक पुनरुत्थान भेल। घर-घर राजनीतिक चर्चा होमऽ लागल। जनमानस पर राजनीतिक चर्चा पसरि गेल। नान्यदेव मिथिलाक पृथक् अस्तित्व आ पहचान बना कऽ रखलनि। श्रीधर हिनक प्रधान मंत्री छलाह। ओ हिनका उचित परामर्श दऽ राज्यक अति उन्नयन कयल। 'अन्हराठाढ़ी' अभिलेखसँ ई सब तथ्य पूर्णतः परिलक्षित होइछ। विद्यापतिक ''पुरुष परीक्षा''मे नान्यदेवक प्रतिभा एवं राजनीतिक संज्ञान सुरक्षित अछि।

एही कालमे हरिसिंहदेव मिथिलामे पंजीप्रथाक प्रारंभ कयल जे मिथिलाक मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थमे एखनहुँ प्रचलित अछि। एहि पंजियोसँ मिथिलामे सामाजिक चेतनाक संग राजनीतिक चेतनाक अभिवृद्धि भेल। एही कालमे विद्यापतिक पूर्वज ज्योतिरीश्वर ठाकुर 'वर्णरत्नाकर' लिखलनि जे प्रसिद्ध पोथी भेल। एही कालमे चण्डेश्वर'राजनीति-रत्नाकर' लिखलनि जाहिमे प्रतिपादित कयल गेल जे क्षत्रियेटा राजा नहि भऽ सकैछ, ब्राह्मणो राजा भऽ सकैछ। बादमे कएकटा ब्राह्मणो राजा भेलाह।

1353 ई० मे मिथिलामे ओइनवार वा ठाकुर वंशक राज्यक स्थापना भेल। एकर प्रथम राजा महेश ठाकुर भेलाह। ई अपन विद्वत्ताक बलेँ मिथिला राज्यकेँ प्राप्त कयलनि। हिनक कालमे मिथिलामे कतेको विद्वान् भेलाह। शास्त्रचर्चा एवं राजनीतिक चर्चा होइत रहल। अतः राजनीतिक चेतना सेहो जाग्रत होइत रहल।

तत्पश्चात् सिंह लोकनि मिथिलाक राजा भेलाह ताहिमे शिवसिंह प्रसिद्ध महाराज भेलाह। विद्यापति हिनकहि दरबारक नामी-गरामी कवि भेलाह। विद्यापति अभिनव जयदेव कहओलनि। कवि जयदेवक परम्पराक अनुसरण करैत ओ पदावली लिखलनि। तेँ ई उपनाम। एहिकालमे विद्वान् ओ कविलोकनिकेँ दरबारमे खूब मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा भेटल करनि, संगहि प्रचुर द्रव्य सेहो। राजनीतिक चर्चा सेहो वेश भेल। मैथिल जनतामे राजनीतिक चेतना उद्बुद्ध भेल। विद्यापति संस्कृतक उद्भट विद्वान छलाह आ मैथिलीक सरस कवि। हिनक अनेक संस्कृत पोथी प्रसिद्ध अछि आ मैथिलीक पदावली सेहो। हिनका समयमे मैथिली भाषा चरमोत्कर्ष पर पहुँचि गेल छल।

1097-1526क अवधिमे राजनीतिक अध्ययन खूब भेल। लक्ष्मीधर 'राजनीति कल्पतरु' लिखलनि। चंडेश्वरक 'राजनीति-रत्नाकर'क चर्चा पूर्वहि भेल अछि। अनेक धर्मशास्त्रक पोथीमे राजनीतिओक चर्चा भेल। गोपाल 'राजनीति-कामधेनु' लिखलनि। आब राजाक सहायता एवं परामर्श हेतु मंत्रिमंडलक निर्माण सेहो भेल। ई मंत्रिमंडल राजाकेँ निरंकुश बनबासँ रोकैत छल। मंत्रिमंडलक प्रधानमंत्री 'महामहत्तक' कहबैत छलाह। ई मंत्रीलोकनि महान विद्वान व कानून-ज्ञाता होइत छलाह। एहि कालमे स्थानीय स्वशासनक सेहो बड़ महत्त्व छल। तेँ ग्राम-स्वराज्यक नीक

व्यवस्था छल। आ एहि कारणेँ जनताक राजनीतिक चेतना अत्युच्च छल। वाचस्पति, पक्षधर, वर्धमान, मिसरू मिश्र, केशव, नरहरि आदि कानून ओ राजनीतिक पर पोथी लिखबामे प्रमुख ग्रन्थकार भेलाह।

एकर बादो मिथिलामे क्रमिक रूपेँ राजनीतिक चेतनाक प्रचार-प्रसार होइते रहल। आब हम आधुनिक कालक मिथिलाक राजनीतिक चेतना पर प्रकाश देब। 1885 ई०मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना बम्बईमे कयल गेल। एहिमे दादाभाइ नैरौजी, फिरोजशाह मेहता, वेडरबर्न, ह्यूम आदि प्रमुख छलाह। पश्चात् तिलक ओ गोखले एकरा आगू बढ़ओलनि। कालान्तरमे कांग्रेस सम्पूर्ण भारतमे पसरि गेल। एकर असरि मिथिलोमे नीक जकाँ पड़ल। खासकऽ जखन महात्मा गाँधी 1917 ई०मे डा० राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, ओ धरणीधर प्रसादक संग चम्पारणमे निलहा गोराक खिलाफ सत्याग्रह कयलनि। ब्रजकिशोर बाबू आ धरणीधर बाबू मिथिलेक छलाह। 1921मे गाँधीजीक असहयोग आन्दोलनमे मिथिलाक अनेक सपूत भाग लेलनि यथा-मधुबनीक चतुरानन दास (भच्छीक), समौलक विद्यानन्द ठाकुर, कोइलखक श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार', दरभंगाक कमलेश्वरी चरण सिंहा, पं० रामनन्दन मिश्र, समस्तीपुरक सत्यनारायण सिंह, मुजफ्फरपुरक मथुरा प्रसाद सिंह, 'सीतामढ़ीक ठाकुर रामाशीष सिंह ओ ठाकुर गिरिजानन्द सिंह आदि। मिथिलाक गाम-गाममे 'वन्देमातरम्'क नारा गुंजायमान होमऽ लागल। बाल-वृद्ध-वनिता सब एहिमे भाग लेलनि। ब्रजकिशोर प्रसादक पुत्री आ जयप्रकाश नारायणक धर्मपत्नी प्रभावतीजी एहिमे भाग लेलनि।1923मे नागपुरमे जे झंडा सत्याग्रह भेल, सेहो मिथिलाकेँ प्रभावित कयलक। मलंगियाक डा० राजकुमार मिश्र एहिमे प्रमुख रूपेँ भाग लेलनि 1928मे साइमन कमीशनक 'बाइकाट' मे सेहो मिथिलाक नेतालोकनि भाग लेल दिल्ली जा कऽ।

तखन आयल 1930-32क गाँधी जीक 'सविनय अवज्ञा सत्याग्रह'। एहिमे मैथिल जनताक प्रमुख भाग रहल। 'ताड़ को कटबा डालो, खजूर को कटबा डालो, ताड़ी पीना छोड़ दो, दारु पीना छोड़ दो'– ई नारा सब मिथिलाक आकाशकेँ शब्दायमान कऽ देलक। 'नमक सत्याग्रह' (गाँधीजीक) मे मैथिल जनता जगह-जगह 'ऊससँ नोन बनाओल। मिथिलाक नोनियालोकनि नोन पूर्वमे बनबैत छलाह। तखन आयल 1940क 'व्यक्तिगत सत्याग्रह'। गाँधीजी द्वारा संचालित एहि सत्याग्रहमे मिथिलाक कतेको नेता भाग लेल। पूर्व 1937क प्रान्तीय विधान सभाक चुनावमे मैथिलगण पूर्व उत्साहसँ भाग लेलनि। पूर्व 1924 मे केन्द्रीय विधान सभाक चुनावमे सेहो मैथिल जनता भाग लेलनि।

पश्चात् आयल 1942 मे गाँधीजीक 'भारत छोड़ो' जनान्दोलन। एहूमे मैथिल जनता खूब जोर-शोरसँ भाग लेलनि। गाम-गाममे विशाल जुलूस बहरायल। यत्र-तत्र विशाल सभाक आयोजन भेल। मिथिलाक लगभग सोरह हजार स्त्री-पुरुष गिरफ्तार कयल गेलाह। कतेको केँ फाँसी देल गेल। कतेको 'टौमी'क गोलीसँ मारल गेलाह। समस्त मिथिलावासी राष्ट्रीय भावनासँ अभिभूत भऽ गेलाह। लेखक स्वयं एहि जनान्दोलनमे भाग लेलनि ओ लगभग अढ़ाइ वर्ष जहलमे बितओलनि। ओहि समय ओ सी० एम० कालेज, दरभंगाक द्वितीय वर्ष कलाक छात्र छलाह। ओही कालेजक ओ पश्चात् प्रधानाचार्य भेलाह।

1947 मे भारत स्वतंत्र भेल। मैथिल जनता हर्षक चरम बिन्दु पर पहुँचि गेल। ओ अपन प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरूकेँ खूब मान प्रतिष्ठा देलक आ हुनक जय-जयकार आ अभिवादन कयलक, संगहि राष्ट्रक तिरंगा झंडाक नमन कयलक।

'वन्देमातरम्! झंडा ऊँचा रहे हमारा।'

जय मैथिल जनता।

●

मिथिलाक गौरवध्वज : महामहोपाध्याय पदवी

गोविन्दझा

महामहोपाध्याय ई पाण्डित्यसूचक सर्वोच्च पदवी थिक। ई मिथिलामे लगभग छओ सए वर्षसँ चलैत आबि रहल अछि। लगभग 1900 ई० धरि ई केवल मिथिलामे चलैत रहल, ततःपर भारतसम्राट् द्वारा प्रदान कएल जाए लागल, आ तदुत्तर मिथिले धरि सीमित नहि रहि समग्र भारतमे स्पृहणीय पदवी भए गेल। एतेक गौरवपूर्ण रहितहुँ ई पदवी कहिआ के चलओलक तकर कोनो स्पष्ट सङ्केत नहि भेटैत अछि। तैओ अन्हारमे हथोड़िआ दए रहल छी–एहि आशासँ जे भए सकैत अछि अन्हराक झटहामे कोनो आम खसि पड़ए।

एहि पदवीकेँ लिपिबद्ध कएनिहार, हमरा जनैत पहिल व्यक्ति थिकाह रघुदेव जे ब्राह्मणसभक वंशावलीक अभिलेखन1248 शाके (1324 ई०)मे आरम्भ कएल। ज्ञातव्यजे पञ्जीमे एहि कालसँ पूर्वक कोनहु व्यक्तिक नाममे महामहोपाध्याय वा महोपाध्याय पदवी लागल कदाचिते भेटैत अछि। पञ्जीसँ भिन्न पोथीमे महोपाध्याय पदवीक प्राचीनतम उल्लेख लक्ष्मण संवत् 164 (1278 ई०)मे भेटल अछि, अर्थात् पञ्जीक अभिलेखन-कालसँ 53 वर्ष पूर्वः

''इति महोपाध्याय दिवाकरकृतो न्याय तृतीयाध्याय निबन्धोद्द्योतः समाप्तः।। .... देवराज्ये

देउलाश्रीमत्कटके पीतूपाटकसं उपाध्याय श्री गिरीश्वरैलिखितमिदम्।। लसं 164 ज्येष्ठ वदि 11।।''

(देखू हस्तलेख सं० 4770, एसिआटिक सोसाइटी, कलकत्ता)।

बारहम शतकक एक हस्तलेखमे नैयायिक चन्द्रक उल्लेख महामहोपाध्याय पदवीक सङ्ग भेल अछिः

''इति श्री महामहोपाध्याय श्रीचन्द्र कृतौ अमृत बिन्दुर्नाम प्रकरणं समाप्तम्।'' (देखू दीनेश चन्द्र भट्टाचार्य, हिस्ट्री आफ नव्यन्याय इन मिथिला, पृ० 67)।

पञ्जीक मुख्य प्रयोजन छलैक वैवाहिक सम्बन्धमे वर्जनीय सीमा जानब। से प्रयोजन आइओ एहिसँ सिद्ध भए रहल अछि परन्तु पञ्जी-अभिलेखक जे रूपरेखा अछि ताहिमे एक आओर परम मूल्यवान् सूचना समाविष्ट कएल गेल अछिः नामक सङ्ग वैयक्तिक प्रतिष्ठाक सूचक विशेषणक उल्लेख। एहिमे दुइ प्रकारक प्रतिष्ठा देखाओल गेल अछि– विद्यामूलक आ पदमूलक। पदमूलक प्रतिष्ठाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि गढ़ बिसपी मूलः

''गढ़ बिसपीसं त्रिपाटि कर्मादित्यः...सं.... दौ। ए सुतौ सान्धिविग्रहिक देवादित्य-राजवल्लभ–

भवादित्यौ....सं....दौ। तत्र सान्धिविग्रहिक देवादित्यसुताः पार्णागारिक वीरेश्वर महावार्तिक- नैबन्धिक धीरेश्वर-महामहत्तक गणेश्वर-स्थानान्तरिक

हरदत्त-मुद्राहस्तक लक्ष्मीदत्त-राजवल्लभशुभदत्ताः ....सं.......दौ।''

एतए प्रासङ्गिक विषय अछि विद्यामूलक प्रतिष्ठा। ई प्रतिष्ठा उत्कर्षक्रमेँ तीन कोटिक अछि–सदुपाध्याय, महोपाध्याय ओ महामहोपाध्याय। एहि तीनूसँ निम्नकोटिक पण्डितक उल्लेख पञ्जीमे हुनक पढ़ल शास्त्रक आधार पर कएल गेल अछि, जेना माण्डर मूलमे वै. विश्वम्भर, महो. महिपति, सदु. हरपति, महामहो. वटेश्वर, ज्यौ. बतहू। आलोच्य पदवीसभमे उपाध्याय शब्दक अर्थ थिक पढ़ौनी कएनिहार। प्रतीत होइत अछि जे आलोच्य पदवी से पबैत छलाह जे छात्रकेँ अपना ओतए राखि नियमित रूपेँ अध्यापन करैत छलाह। तृतीय कोटिक अध्यापक केँ सोझे 'उपाध्याय' नहि कहि 'सद्' लगएबाक आवश्यकता एहि हेतु भेलैक जे 'उपाध्याय' शब्द उपनाम (कौलिक उपाधि,

सरनेम) भए गेल छल आ आजुक 'झा' शब्दक पर्यायवाची छल। 'सद्' लगओला पर ई अर्थ व्यवच्छिन्न भए गेल। एहि शिक्षणकर्मी पण्डितलोकनिक तीन कोटिमे विभाजन कोन आधारपर कएल जाइत छल ताहि प्रसङ्ग अनेक धारणा प्रचलित अछि। केओ कहैत छथि–जे अपनहिटा पढ़ाबथि से कहाबथि सदुपाध्याय, जनिक शिष्यो पढ़ौनी करथि से कहाबथि महोपाध्याय आओर जनिक शिष्यक शिष्यो पढ़ाबथि से कहाबथि महामहोपाध्याय। दोसर धारणा अछि–एक शास्त्र जननिहार अध्यापक सदुपाध्याय कहाबथि, दू शास्त्र (मानि लिअ, न्याय आ मीमांसा) जननिहार महोपाध्याय तथा छबो दर्शन आ धर्मशास्त्र जननिहार महामहोपाध्याय। तेसर मत अछि जे जेना आन-आन वस्तुक श्रेणीकरण गुणतारतम्यक आधार पर सामान्यतः अधम, मध्यम आ उत्तम तीन कोटिमे करबाक परिपाटी अछि तहिना पण्डितहुक विभाजन वैदुष्यमे तारतम्यक अनुसार तीन कोटिमे कएल गेल अछि। चारिम मत अछि जे चौपाड़िमे तीन कक्षा होइत छल-प्रथमा, मध्यमा ओ उत्तमा। ताहिमे पढ़ओनिहार अध्यायको तीन कोटिक होइत छलाह–सदु, महो आ महामहो। ई चारू मत विभिन्न विद्वानक अपन-अपन धारणा मात्र पर आश्रित अछि। कोनहु मतमे कोनो लिखित प्रमाण हमरा नहि भेटल अछि। तथापि हमरा चारिम मत अधिक समीचीन प्रतीत होइत अछि।

कोन शास्त्रक पण्डित महामहोपाध्याय होइत छलाह। एहू प्रश्नक उत्तर निर्विवाद नहि अछि। व्यवहारतः नैयायिके महामहोपाध्याय अधिकतर देखल जाइत छथि। न्यायशास्त्रक गहन अध्ययनमे मीमांसा शास्त्रक सामान्य ज्ञान चाहबे करी। मीमांसकहुकेँ तर्कशास्त्रक सारभूत ज्ञान आवश्यक। तहिना धर्मशास्त्रक गहन ज्ञानमे किछु-ने-किछु मीमांसाक ज्ञान अपेक्षित। 1300 ई० सँ 1800 ई० धरि अधिकतर एहने महामहोपाध्याय भेटैत छथि जनिका परस्पराश्रित एहि तीनू शास्त्रमे प्रवेश छनि। ज्यौतिष आ वेदक पण्डितक पदवी पञ्जीमे आ ग्रन्थक पुष्पिका (समापन-सूचना-वाक्य) आदिमे ज्यौ./वै. रूपक भेटैत अछि। व्याकरणक अध्ययन मिथिलामे 1800 ई० धरि प्रायः स्वतन्त्र शास्त्र रूपमे नहि होइत छल। तेँ पञ्जीमे 1800 ई० धरि जे वै. अछि तकर अर्थ वैयाकरण नहि, वैदिक कएल जाए।

एहि प्रसङ्ग एकटा रोचक बात ई अछि जे विद्यामूलक आ पदमूलक प्रतिष्ठाक सूचना जहिना जाही रूपमे पञ्जीमे भेटैत अछि तहिना ताही रूपमे ग्रन्थक पुष्पिका सभमे सेहो भेटैत अछि। पञ्जी आ ग्रन्थ एहि दुनूक बीच ई असाधारण मेल दुनूक प्रामाणिकताक परस्पर पुष्टि करैत अछि। ततबे नहि, मैथिल पण्डितलोकनि अपन नामक कि आन मैथिलक नामक उल्लेख प्रायः मूलक उल्लेखक सङ्ग करैत छथि जाहिसँ हुनक ओ परिचय पूर्णतः सुनिश्चित भए जाइत अछि। एहिसँ इहो प्रतीत होइत अछि जे पञ्जीक अभिलेखन पण्डितलोकनिक प्रयासक सुफल थिक (एहिमे कोनो राजाक हाथ नहि छल), पञ्जी-पुस्तकक प्रस्तावना-श्लोक सेहो स्पष्टतः कहैत अछि–द्विजगणैः पञ्जीप्रबन्धः कृतः।

बहुतो लोकक धारणा छनि जे सदुपाध्यायक प्रतिस्थानी थिक सन्मिश्र आ सट्ठक्कुर; जनिक उपनाम मिश्र/ठाकुर थिकनि, उपाध्याय नहि, तनिका सदुपाध्याय कोना कहबनि। ई धारणा नितान्त भ्रान्त थिक, किएक तँ ठाकुर/मिश्र उपनामधारी पण्डितहुक उल्लेख 'सदुपाध्याय' एहि पदवीक सङ्ग बहुत भेटैत अछि। एक प्राचीन हस्तलेखमे महाकवि विद्यापति ठाकुर 'सदुपाध्याय' कहल गेल छथिः

''समस्त विरुदावली विराजमान महाराजाधिराज श्रीमच्छिवसिंहदेव सम्भुज्यमान तीरभुक्तौ श्रीगजरथपुरनगरे सप्रक्रिय सदुपाध्याय श्री विद्यापतीनामाज्ञया खौअलसं श्री देवशर्मबलिआसं श्रीप्रभाकराभ्यां लिखितैषा पुस्ती ल सं. 291 कार्तिक बदि 10।।''

अनेक ठाम 'सट्ठक्कुर' आ 'सन्मिश्र'क प्रयोग महामहोपाध्याय पदवीक सङ्ग-सङ्ग पबैत छी। यथा–

''इति महामहोपाध्याय सट्ठक्कुर श्रीमधुसूदन कृत कण्टकोद्धारे प्रत्यक्षखण्डः परिपूर्णः।'' (देखू दीनेश चन्द्र भट्टाचार्य,

हिस्ट्री आफ नव्यन्याय इन मिथिला, पृ० 177 पर उद्धृत)।

'इति महामहोपाध्याय सन्मिश्र श्री भवनाथात्मजेन.....।।'' (तत्रैव, पृ० 136 पर उद्धृत)।

''इति महामहोपाध्याय सन्मिश्र वाचस्पतिकृतौ.....।'' (तत्रैव, पृष्ठ 152 पर उद्धृत)।

एहि उदाहरण सभसँ प्रतीत होइत अछि जे सन्मिश्र आ सट्ठक्कुर वंशसूचक उपाधि थिक, किन्तु सदु (पाध्याय) तृतीय स्तरक पाण्डित्यक सूचक पदवी थिक।

सहजहि ई मानल जएबाक चाही जे केओ पण्डित एकाएक सोझे महोपाध्याय नहि भए जाइत छलाह। सदु सँ महो, आ ताहिसँ महामहो होइत होएताह। तहिँ एके पण्डितक उल्लेख कतहु कखनहु महो पदवीक सङ्ग भेटैत अछि तँ कखनहु महामहोक सङ्ग। उदाहरण छथि सन्मिश्र भवनाथक पुत्र शङ्करमिश्र जनिक उल्लेख म०म० परमेश्वरझा शीर्षकमे तँ 'महामहोपाध्याय शङ्कर मिश्र' शब्दें करैत छथि, किन्तु ओतहि पञ्जीक उद्धरणमे देखबैत छथिः

''मिश्र दूबे सुता महो शङ्कर-महादेव-भासे-दासेकाः।'' (परमेश्वर झा, मिथिलातत्त्वविमर्श, पृ० 119)।

भए सकैत अछि, पिताक परोक्ष भेला पर ई महामहो कोटिमे आबि गेल होथि।

महोपाध्याय आ महामहोपाध्यायमे भेद छैक ई बात पूर्वमे सम्भवतः सामान्य लोक जनैत रहल हो, परन्तु पछाति ई भेद प्रायः पढ़लो-लिखल लोकक बोधमे तिरोहित भए गेल। सामान्य लोक तँ ई विश्वासे नहि करत जे विद्यापति ठाकुरसन विद्वान् महामहोपाध्याय नहि छलाह।

'मिश्र भवनाथ' आ 'सन्मिश्र भवनाथ' एहि दूनूमे किछु भेद छैक कि नहि? हमरा जनैत जँ भेद छैक तँ ओतबे जतबा 'भवनाथक पुत्र' आ 'भवनाथक सुपुत्र' मे। अर्थात् 'सत्' लगाएब एक प्रकारक शालीनता थिक।

कहि चुकल छी जे ई पदवी तनिकहि भेटैत छलनि जे न्याय वा/आओर मीमांसामे निष्णात रहैत छलाह। प्रायः तहिँ ई पदवी पएबाक सौभाग्य सप्तरत्नाकरकार महामहत्तक चण्डेश्वर ठाकुर, छन्दोग पद्धतिकार रामदत्त ठाकुर, वाजसनेयिपद्धतिकार वीरेश्वर ठाकुर आ अनेकानेक धर्मशास्त्र ग्रन्थक रचयिता महाकवि विद्यापति ठाकुर एहिसभमे कनिको नहि भेलनि। तथापि विद्यापतिक नाममे तथा तत्सदृश आनो कतोक पण्डितक नाममे विद्वानोलोकनि, जानि नहि कोन आधारपर 'महामहोपाध्याय'क फुदना लटकाए दैत छथि। ज्ञातव्य जे प्रो० रमानाथ झा विद्यापति ठाकुरकेँ कतहु महामहोपाध्याय नहि कहलनि अछि।

सभसँ विकट प्रश्न ई अछि जे ई पदवी दैत के छलाह? बहुतो व्यक्ति अपन धारणाक अनुसार कहताह, आओर के, राजा दैत होएताह। एहि पदवीक उद्‌भव वा प्रचलन वास्तवमे तहिए भेल जहिआसँ पञ्जीक अभिलेखन आरम्भ भेल। पञ्जीक विषयमे सामान्य लोकक आ अधिकतर पण्डितोलोकनिक इएह धारणा अछि जे पञ्जीक प्रवर्तन हरिसिंहदेव कएलनि। ज्ञातव्य जे पञ्जीक प्रवर्तन 1326 ई० मे भेल आ हरिसिंहदेव अलक्षित भेलाह 1324 ई० मे, ओहिसँ दू वर्ष पूर्वहि। तैओ आश्चर्य जे पञ्जी-प्रवर्तनक श्रेय हुनकहि देल जाए रहल छनि। तर्कक खण्डन कएल जाए सकैत अछि, धारणाक खण्डन के करत। तहिना बहुतोक धारणा भए सकैत छनि जे ई पदवी हरिसिंहदेवक चलाओल थिकं। हम एहि धारणाकेँ पूर्णतः भ्रान्त बुझैत छी, कारण जे ई जँ हरिसिंहदेव वा हुनक केओ पूर्वज चलओने रहितथि तँ ई सभसँ पहिने चण्डेश्वर महथा पबितथि। जँ ओइनिबार-वंशक कोनो राजा चलओने रहितथि तँ 'अभिनव जयदेव महाराज पण्डित ठक्कुर श्रीविद्यापति' केँ अवश्यमेव भेटल रहितनि आ बिसफी ग्रामदानक ताम्रपत्रमे महामहोपाध्याय पदवीक उल्लेख अवश्य रहैत। पछाति जे खण्डवला-राजवंश स्थापित भेल ताहूमे केओ राजा ई पदवी अपना हाथमे

नहि लेलनि। तकर प्रमाण इएह जे एहि राजवंशमे जँ उक्त पदवी प्रदानक परिपाटी रहैत तँ धौत-परीक्षाक नव परिपाटी नहि चलाओल जाइत।

तखनके दैत छल ई पदवी? प्रश्न ठामक ठामहि रहल। पदवी जे केओ दैत होथु, ओकरा पञ्जीमे अभिलिखित तँ निःसन्देह पञ्जीकारेलोकनि करैत छलाह आ आरम्भमे पण्डितेलोकनि पञ्जीकार होइत छलाह जे पञ्जीक वैदुष्यपूर्ण संरचनासँ प्रकट होइत अछि। तखन किएक नहि पञ्जीकारेलोकनिकेँ प्रस्तुत पदवीक प्रदाता मानि ली? परन्तु हमरा जनैत पञ्जीकारकेँ एहि पदवीक प्रदाता मानब ताधरि एकटा सम्भाव्य कल्पना मात्र कहाओत जाधरि कोनो प्रमाणान्तरसँ एकर पुष्टि नहि हो।

एहने सन एक अन्य सम्भाव्य कल्पना ई भए सकैत अछि जे ई पदवी चौपाड़ि द्वारा प्रदान कएल जाइत छल। ज्ञातव्य जे मिथिलामे अठारहम शतकक अन्त धरि शिक्षाक व्यवस्था ओहने सन छल जेहन प्राचीन भारतमे ब्रह्मचर्याश्रम-व्यवस्थामे छल। भेद एतबे जे प्राचीन कालमे शिक्षा शुद्ध धार्मिक कृत्य छल, किन्तु सम्प्रति पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष आ आश्रम-निरपेक्ष भए गेल अछि पूर्वहि जकाँ गुरुक घरे विद्यालय होइत छल आ गुरु स्वयं तकर स्वतन्त्र नियन्ता होइत छलाह। धनवान् गुरु शिष्यक भोजनावास-व्यवस्था स्वयं करैत छलाह वा धनवान पड़ोसीलोकनिक सहयोगसँ। एहि प्रकारक एकस्वामिक गृहस्थित अध्यापन-संस्थाक नाम प्राचीन कालमे गुरुकुल छल। आ पछाति मिथिलामे ओकर नाम भेल चौपाड़ि। ब्राह्मण-धर्ममे अध्ययन-अध्यापन कार्य सदासँ वैयक्तिक रहल अछि, एहिमे सङ्घबद्धता वा सामवायिकताक कतहु आभास नहि भेटैत अछि। एकर विपरीत बौद्ध धर्मक शिक्षण-व्यवस्था पूर्णतः सङ्घबद्ध आ संस्थागत रहल, एहि हेतु मठ आ बिहार स्थापित होइत छल (जकर ध्वंसावशेष गङ्गाक ओहिं पार एखनहु अनेक ठाम पसरल अछि) आ ओतए प्रवेशक समयहिमे मन्त्र पढ़ाओल जाइत छल– 'संघं सरणं गच्छामि धम्मं सरणं गच्छामि।' ओतए छात्र भिक्षु कहबैत छल आ ओकरासँ भीख मङाए-मङाए तथा धनवान उपासक (भक्त सेठ) सभसँ स्थावर आ जङ्गम दान लए अपार सामूहिक सम्पदा सृजित कएल जाइत छल, आओर धर्मगुरुलोकनिकेँ भदन्त, थेर आ महाथेरक पदवी देल जाइत छल। परन्तु गङ्गाक उत्तरमे खढ़-बाँसक बनल पंण्डितक अपन घरमे गहनसँ गहन पढ़ौनी चलैत छल आ एहन घर 'अमुक व्यक्तिक चौपाड़ि' कहबैत छल। हमर अनुमान अछि जे एही प्रकारक उच्च-उच्च चौपाड़िमे वैदुष्यक जाँच सेहो होइत छल होएत आ तकर आधार पर चौपाड़िक अध्यक्ष महामहोपाध्याय इत्यादि पदवी दैत होएताह। बौद्ध मठमे जेना भदन्त, थेर आ महाथेर तीन पदवी देल जाइत छल तहिना चौपाड़िमे सदु, महोपाध्याय आ महामहोपाध्याय ई तीन पदवी देल जाइत होएत। हँ, वैदुष्यक जाँच एकसर नहि, पण्डितक एक मण्डली द्वारा कराओल जाइत होएत।

उपर्युक्त अनुमानक कोनो सुदृढ़ आधार तँ हमरा नहि भेटल अछि, परन्तु दुइ गोट उदाहरण अवश्य भेटैत अछि। पहिल उदाहरण थिक-शरयन्त्र परीक्षा, जकर विस्तृत विवरण हमर सम्पादकत्वमे राँटी (मधुबनी) सँ प्रकाशित शोधपत्रिका **जिज्ञासा वर्ष 1, अङ्क 1, जुलाई-दिसम्बर, 1995** मे प्रो० रमानाथ झाक लेख 'एक शरयन्त्रीक विज्ञप्ति'मे आएल अछि। एहि लेखमे म.म. सर गङ्गानाथ झाक **'कविरहस्य'** नामक एक पुस्तकसँ निम्नलिखित उद्धरण देल गेल अछि:

''सभा बीच पाण्डित्य परीक्षाक परम्परा मिथिलामे डेढ़-दू सए वर्ष पूर्व धरि प्रचलित छल। जखन केओ पण्डित यश आ अर्थ अर्जित कए घर घुरैत छलाह आ अपनाकेँ तद्‌योग्य बुझैत छलाह तँ देशक लोकबीच घोषणा करैत छलाह– 'सुनैत जाउ। हम विदेशमे खूब नाम कमाए घर घुरलहुँ अछि, किन्तु दूर देशमे अर्जित एहन वस्तु कोन काजक जे घरमे

ने ओकर शत्रु देखि सकए ने मित्र भोगि सकए? तेँ हमरा बड़ मनोरथ अछि जे अपन घरमे प्रतिष्ठा पाबी। मिथिलामे सदासँ पाण्डित्यक सभसँ पैध प्रतिष्ठा शरयन्त्र लेब मानल जाइत रहल अछि। तेँ हम चाहैत छी जे हमर शरयन्त्र-परीक्षा लेल जाए।''

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बच्चाझा सेहो 1900 ई० मे आयोजित धौत-परीक्षाक अवसर पर उक्त शरयन्त्रीक पदवी पएबाक प्रयास कएने रहथि किन्तु प्रयास सफल नहि भेलनि (देखू गङ्गानाथ झाक आत्मकथा, पृष्ठ 55)।

दोसर उदाहरण हमर पिता स्वयं छथि। कलकत्ताक संस्कृत कालेज दिससँ उपाधि-परीक्षा 1879 ई० मे आरम्भ भेल। पहिल वर्ष मिथिलाक दू छात्र खड्गनाथझा आ अपूछझा तर्कोपाध्याय परीक्षा देलनि आ सफल भेलाह। मैथिलमे पहिल तर्कतीर्थ भेलाह सन्तगोपालझा जे 1892 ई० मे ई परीक्षा पास कएल। हमर पिता दीनबन्धु झा एहि प्रकारक परीक्षाकेँ महत्त्व नहि देलनि। काशीमे जखन अध्ययन सम्पन्न कएलनि, तखन गुरु महामहोपाध्याय शिवकुमारमिश्रसँ प्रार्थना कएलनि जे परीक्षा लेल जाए। पाँच-सात मूर्धन्य पण्डित बजाओल गेलाह। सभक समक्ष मौखिक परीक्षा लेल गेलनि आ सभ पण्डितक संयुक्त हस्ताक्षरसँ एक विस्तृत प्रमाणपत्र देल गेलनि। ई प्रमाण पत्र हम सुरक्षित रखने छी।

तेँ हमर अनुमान अछि जे आलोच्य पदवी एही प्रकारक कोनो पण्डित-मण्डली द्वारा परीक्षणक उपरान्त देल जाइत छल होएत आ तखनहि पञ्जी मध्य पञ्जीकारलोकनि एकरा अभिलिखित करैत होएताह।

भारत मे बृटिश राजक स्थापना होइतहिँ ई पदवी देबाक अधिकार पण्डितलोकनिक हाथसँ भारत सरकारक हाथमे चल गेल। Royal Titles Act 1867 मे महामहोपाध्याय टाइटिल समाविष्ट कएल गेल। एहि क्रममे एकेटा पदवी 'महामहोपाध्याय' रहि गेल, आ से पदवी सरकारसँ सभसँ पहिने पओलनि महेशचन्द्र न्यायरत्न। ई कलकत्ता संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपल रहथि। ज्ञातव्य जे भारतीय विद्याक अध्ययन-अध्यापनक (संस्कृत टोलक) सर्वेक्षण/निरीक्षण करबाक भार 1890 ई०मे हिनकहि भेटल रहनि आ ताहि क्रममे ई दरभङ्गा आएल रहथि। ई प्रतिवेदनमे लिखलनिः

''न्यायदर्शनक शिक्षण-स्तर दरभङ्गामे एखनहु ओहने उच्च अछि जेहन बङ्गालमे; आओर पाणिनीय व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, मीमांसा आ ज्यौतिष, जे बङ्गालमे बड़ कम लोक पढ़ैत अछि, ताहि सभमे दरभङ्गाक स्तर काशीक तुल्य अछि।'' (जटाशङ्कर झा, बिगिनिङ आफ मर्डर्न एजुकेशन इन मिथिला, पृष्ठ xxi मे उद्धृत)।

परन्तु एतेक प्रशंसा करितहुँ ई महानुभाव भौरमे संस्कृत कालेज स्थापित करबाक जे प्रस्ताव छल ताहिमे बाधके भेलाह।

जानि नहि बृटिश सरकारकेँ ई सद्बुद्धि के देलनि जे रायबहादुर, रायसाहेब, के० सी० आइ० ई० इत्यादि पदवी जकाँ विशिष्ट पण्डितकेँ सेहो कोनो विशिष्ट पदवी सरकारक दिससँ देल जाए; आ ताहूमे ई के सुझओलथिन जे ई पदवी 'महामहोपाध्याय' राखल जाए। बहुत सम्भव जे ई पदवी केओ मैथिल महानुभाव सुझओने होएथिन, किएक तँ मिथिला छाड़ि भारतक कोनहु अन्य भागमे ई प्रचलित नहि छल। एकर सम्बन्ध मिथिलामे न्यायशास्त्रसँ छैक आ एहि शास्त्रक एक केन्द्र मिथिला छल तँ दोसर केन्द्र बङ्गाल। ततबे नहि, दूनू केन्द्रक विद्वान्लोकनिमध्य बड़ निकट सम्पर्क छल। तथापि आश्चर्य जे ई पदवी बङ्गालमे किएक नहि प्रवेश कएलक। अस्तु, प्रासङ्गिक बात ई जे जेँ ई पदवी एकमात्र मिथिलाक परम्पराक प्रतीक छल तेँ एहि पदवीक राजाश्रय पाबि अखिल भारतीय होएब निःसन्देह मिथिलाक हेतु असाधारण गौरवाधायक छल।

हमरा दृष्टिमे दुइ महानुभाव एहन छथि जे बृटिश सरकारकेँ महामहोपाध्याय पदवी चलएबाक परामर्श देने होएताह–पहिल काशी क्वीन्स कालेजक प्रिन्सिपल जार्ज थीबो, आ दोसर कलकत्ता संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपल ओएह महेशचन्द्र न्यायरत्न जनिक चर्चा पूर्वमे कए चुकल छी। ई दूनू महानुभाव न्यायशास्त्रक गम्भीर विद्वान् रहथि आ तेँ बहुतो दिग्गज मैथिल नैयायिकलोकनिक नाममे 'महामहोपाध्याय' विशेषण लागल देखने होएताह, एकर ऐतिहासिक आ पारम्परिक गौरवक अनुभव कएने होएताह, आओर सम्भवतः बृटिश सरकारक शिक्षा-सम्बन्धी, विशेष कए संस्कृत विद्या सम्बन्धी नीति-निर्धारणमे औपचारिक वा अनौपचारिक रूपेँ परामर्शदाता रहल होएताह। एहि प्रसङ्ग इहो स्मरणीय जे काशीक क्वीन्स कालेज मे किछु दिन महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह, हुनक पिसिऔत भाए विन्ध्यनाथ झा आओर गङ्गानाथ झा (पछाति महामहोपाध्याय) पढ़ने छलाह, आ तीनू दरभङ्गा राजपरिवारसँ सम्बद्ध परम प्रतिभाशाली मैथिल छात्र प्राच्यविद्यारसिक डा० थीबो साहेबकेँ अवश्य प्रभावित कएने होएताह आ मिथिलाक वैदुष्य-परम्परासँ हुनका सुपरिचित करओने होएताह। एहि प्रसङ्ग इहो बात स्मरणीय जे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1883 ई० मे गभर्नर जेनरलक लेजिस्लेटिभ काउन्सिलक सदस्य भेल रहथि आ पुनः 1893 ई०मे बङ्गाल काउन्सिल हिनका सुप्रीम काउन्सिलक सदस्य निर्वाचित कएलक। एहि अवधिमे बृटिश सरकारक भारतीय विद्याविषयक नीतिक निर्धारणमे, ओ तदङ्गतया महामहोपाध्याय पदवीक प्रवर्त्तनमे किछु-ने-किछु हिनको योगदान रहल होएतनि।

महामहोपाध्याय पदवीक सरकरी स्तर पर प्रवर्तनक पूरा इतिहास प्रामाणिक रूपेँ आं विस्तारपूर्वक तखनहि ज्ञात भए सकत जखन प्राचीन अभिलेखागारसँ एतद्विषयक सञ्चिका/कार्यवाही अभिलेख खोजिकेँ पढ़ल जाएत। खेद जे साधनक अभावमे ई काज हम नहि कए सकलहुँ। एहना स्थितिमे इहो नहि कहल जाए सकैत अछि जे पदवी सर्वप्रथम कोन वर्ष देल गेल। मोटा-मोटी प्रतीत होइत अछि जे ई पदवी 1887 ई० क 21 जूनसँ प्रवर्तित कए गेल होएत जहिआ महारानी विक्टोरियाक गोल्डेन जुबली कलकत्तामे धूमधामसँ मनाओल गेल छल।[1]

एहि पदवीसँ विभूषित भेनिहार मैथिलेतर पण्डितलोकनिमे उल्लेखनीय छथि महेशचन्द्र न्यायरत्न, वासुदेवशास्त्री अभ्यङ्कर, सुब्रह्मण्य शास्त्री, राखालदास न्यायरत्न, कैलाशचन्द्र शिरोमणि, राममिश्र, शिवकुमार मिश्र, दामोदर शास्त्री, सुधाकर द्विवेदी, जयदेवाश्रम स्वामी, भागवताचार्य, प्रभुदत्त शास्त्री, श्रीहरिस्वामी, वामाचरण भट्टाचार्य आदि। मैथिल पण्डितमे उल्लेखनीय छथि (कोष्ठमे पदवी प्राप्तिक वर्ष)–चित्रधर मिश्र (?), रजे मिश्र (?), हर्षनाथझा (?), गङ्गानाथझा (1910), परमेश्वरझा (1914), जयदेव मिश्र (1929), मुरलीधरझा (1922), शशिनाथ झा(1924), मुकुन्दझा बक्शी (1925), बाल कृष्ण मिश्र (1940) आओर उमेश मिश्र (1943)।

ई पदवी सभसँ कम वएसमे सर गङ्गानाथझा केँ भेटलनि। 1910 ई० मे ओ केवल 39 वर्षक रहथि। हुनका जे ई पदवी भेटलनि ताहि प्रसङ्ग ओ स्वयम् एक रोचक गप लिखने छथि (देखू, आत्मकथा, पृष्ठ 85) : लोकशिक्षा-

1. The moderm title of Mahamahopad hyaya was instituted by Goverment of India on the occasion of the first jubily of Queen Victoria in 1887. Till then the title was a purely academic one which was earned automatically under a longstanding convention among Pandits by any scholar who lived long enough and worked hard enough to train during his lifetime three generations of famous pupils.

[Mm. Dr. Sir Ganganatha Jha in the Foreword of Aryasaptashati published by Keshi Mishra]

निदेशक डेलाफाँस एक दिन हुनका कहलथिन, ''हम अहाँक नामक अनुशंसा करब।'' सर झा उत्तर देलथिन, ''ई पदवी तँ हमरा भेटि चुकल अछि।'' फाँस साहेब चकित भेलाह जे हुनक अनुशंसाक बिना ई कोना पाबि गेलाह। पूछि बैसलाह, ''कहिआ ?'' सर झा उत्तर देलथिन, ''जहिआ अपने छुट्टीपर गेल रही।'' बात भेलैक जे सरझाक परम प्रशंसक आ हितैषी गुरु डा० भेनिस साहेब फाँस साहेबक अवकाश कालमे कार्यकारी निदेशक भेलाह आ चटपट अपन प्रिय शिष्यकेँ महामहोपाध्याय बनाए देल।

महामहोपाध्याय पदवी, जे मैथिलक अपन वस्तु छल सरकारक हाथमे गेलापर बहुत दिन धरि मैथिलेतर विद्वानहिकेँ भेटैत रहल। एहि स्थिति पर मुरलीधरझा जे क्षोभ प्रकट कएल से नीचाँ उद्धृत अछि।

''धर्मावतार!....मिथिला देशक उन्नति कैल जाओ। जा धरि भारत-सरकार हमर देशकेँ हमर देशीय पण्डितकेँ कृपादृष्टि नहि देताह ता हमरालोकनिकैं सद्यः श्रीमान्सँ उपकार नहि बुझल जाएत। की आन-आन पण्डित 'महामहोपाध्याय' पदवी पैबा योग्य नहिं जे अन्यदेशीय कतेक साधारणो एहि पदवीकेँ दूरि कै रहल अछि? की एहि विषयमे श्रीमानकेँ बजबाक अधिकार नहिं ?'' (मिथिलामोद, उद्गार 109 ; पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' लिखित 'म.म. मुरलीधर झा', पृ० 35 पर उद्धृत)।

जँ माछीक आँखिएँ देखल जाए तँ मैथिल पण्डितलोकनिक बीच एहि सरकारी पदवीक वितरण पर एक शङ्का अनायास उठत–की ई पदवी पएबाक हेतु दरभङ्गा-राजक कृपाभाजन होएब आवश्यक छल? की एही कृपाक अभावमे एहिकालक योग्यतम मैथिल नैयायिक बच्चाझा एहि स्पृहणीय प्रतिष्ठासँ वञ्चित रहि गेलाह? विशेष कहब दुर्मुखता होएत, तेँ केवल दू बात कहब–पहिल ई जे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज रमेश्वर सिंह, महामहोपाध्याय डा. सर गङ्गानाथझा ओ डा. अमरनाथझा ईलोकनि सरकारक दृष्टिमे ततेक प्रतिष्ठित छलाह जे एहि विषयमे हिनकालोकनिक अनुशंसा सरकार आँखि मूनि मानि लैत छलः आओर दोसर बात ई जे दरभंगा राजक वा तत्सम्बद्ध उपर्युक्त व्यक्तिसभक कृपाभाजन विशिष्टे विद्वान् होइत छलाह, भनहि सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बच्चाझा एकर अपवाद होथु।

●

मिथिलामे तन्त्र

डा. त्रिलोकनाथझा

तन्त्र शब्द अनेकार्थक अछि। अमरकोषमे कहल गेल अछिः –

''तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे।''[1] भानुजिदीक्षित अमरकोषक व्याख्या सुधा (रामाश्रमी टीका) मे मेदिनीकोषकेँ उद्धृत करैत लिखैत छथि : –

'तन्त्रं कुटुम्बकृत्ये स्यात् सिद्धान्ते चौषधोत्तमे।

प्रधाने तन्तुवायेच शास्त्रभेदे परिच्छदे।।

श्रुतिशाखान्तरे हेतावुभयार्थप्रयोजके।

इतिकर्तव्यतायां च ......।।''[2]

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र नामक विशिष्टोपाधिमे तन्त्र शब्द शास्त्रबोधक अछि। बादरायणकृत ब्रह्मसूत्रक जगद्गुरु शङ्कराचार्य विरचित भाष्यमे तन्त्रशब्दक प्रयोग साङ्ख्यशास्त्रक अर्थमे भेल अछि। न्याय-वैशेषिककेँ सेहो तन्त्रक संज्ञा देल गेल अछि।

प्रस्तुत प्रकरणमे तन्त्र शब्दैं अभिप्रेत अछि आगम। म.म. वाचस्पति मिश्र तत्त्ववैशारदीमे लिखलैन्हि अछि :–

'आगच्छन्ति बुद्धिमारोहन्ति यस्मादभ्युदयनिःश्रेयसोपायाः स आगमः।''

अर्थात् आगम ओ शास्त्र अछि जाहिसँ अभ्युदय ओ निःश्रेयसक उपाय बुद्धिगोचर होइछ।

वाराहीतन्त्रमे यामल आदि चौंसठि तन्त्रक उल्लेख अछिः –

''चतुष्षष्टिश्च तन्त्राणि यामलादीनि पार्वति''।

आगमतत्त्वविलासमे एकरा गनाओल गेल अछि। कुलार्णवतन्त्रमे कहल गेल अछि जे कलियुगमे आगमानुसार आचार विहित अछि।

'कृते श्रुत्युक्त आचारस्त्रेतायां स्मृतिसम्भवः।

द्वापरे तु पुराणोक्तः कलावागमसम्भवः।।''

देवताक भेदैं आगमक भेद कएल गेल अछि, जेना शैवागम, वैष्णवागम, शाक्तागम, बौद्धागम आदि। शैवागमक उपभेद अछि वीरशैव, लिङ्गायत ओ पाशुपत तथा वैष्णवागमक वैखानस एवं पाञ्चरात्र। महाकालसंहिताक अनुसार शाक्तागमक चारि उपभेद अछि। ओ अछिः – कापालिक, मौलेय, दिगम्बर एवं भाण्डिकेर। एहि उपभेदक आधार अछि ओ आधारभूत ग्रन्थक प्रकार जकर अनुसरण कएल जाइछ। कापालिक डामरतन्त्रक, मौलेय यामलतन्त्रक, दिगम्बर भैरव-भैरवी-संवाद-तन्त्रक ओ भाण्डिकेर शाबरतन्त्रक अनुसरण करैत छथि। एहि चारिक अतिरिक्त एकटा सम्प्रदाय आओरो अछि जकर नाम अछि स्मार्त शाक्त-सम्प्रदाय। एहि सम्प्रदायक अनुयायी कट्टर तान्त्रिक नहि होइत छथि अपितु ईलोकनि समन्वयवादी होइत छथि। तान्त्रिक पद्धति एवं वैदिक पद्धतिक बीच समन्वय स्थापित करैत केवल ओही तान्त्रिक क्रियाक पक्षपाती रहैत छथि जकरा वेद एवं स्मृतिसँ कोनो विरोध नहि रहैत छैक आन तान्त्रिक क्रियाक नहि।

वेदहिक जकाँ तन्त्रकेँ अपौरुषेय मानल गेल अछि। दूनूक सङ्ख्या सेहो समाने तन्त्रहुक चारि भाग अछि-ज्ञान, क्रिया, चर्या एवं योग।

तान्त्रिक पद्धतिसँ उपासना सरल होइछ। एहिमे पवित्रताक कठोर नियमक पालनक प्रश्न नहि, आओर नहि उठैछ पूजासामग्री ओ विधि-विधानक समस्या। स्वल्प समयमे सिद्धिक प्राप्ति एहि मार्गें होइछ। एहिमे स्त्री-पुरुष सभकेँ एवं सभ वर्णकेँ समान अधिकार, तेँ अधिक लोकप्रिय भेल अछि ई पद्धति। हँ, एतबा अवश्य जे कखनहु-कखनहु विघ्न-बाधा सेहो अबैत छैक मुदा से तऽ वर्ष दिनक रास्ता छोड़ि छओ मासक रास्ता पकड़ि शीघ्र पहुँचनिहार कैँ होइतहिं छैक। ''चढ़े तो चाखे प्रेमरस गिरे तो चकनाचूर'' प्रसिद्धे छैक।

प्रागैतिहासिक कालसँ पूर्व भारतवर्ष अर्थात् आसाम, बङ्गाल ओ मिथिला तथा नेपालमे शाक्ततन्त्रक प्रचार-प्रसार रहैत आएल अछि। प्रधानतः ई भूभाग शक्तिक उपासक रहल अछि। ''अन्तः शक्ताः'' मैथिललोकनिकेँ कहल गेल अछि। दशमहाविद्या अर्थात् काली, तारा, त्रिपुरसुन्दरी (षोडशी), भैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती, मातङ्गी एवं कमलामे सँ एक प्रत्येक घरमे कुलदेवताक रूपमे पूजित होइत छथि। अधिकांश लोक आद्या (काली) अथवा द्वितीया (तारा)क मन्त्रसँ दीक्षित रहैत छथि। दीक्षाग्रहण आवश्यक मानल गेल अछि। अदीक्षितकेँ सर्वथा निन्दाक पात्र मानल गेल अछि, अयोग्य एवं त्याज्य मानल गेल अछि।

मुण्डमालातन्त्रमे एहि दश महाविद्याकेँ सिद्धविद्या कहल गेल अछि।

मिथिलामे शक्तिक उपासनाक प्राबल्य एहिठामक असङ्ख्य शक्तिपीठसँ स्वतः प्रमाणित होइछ। एहिमे चामुण्डा, गिरिजा, जयमङ्गला, राजराजेश्वरी, भद्रकालिका, वनदुर्गा, सिद्धेश्वरी आदि पीठ विशेष उल्लेखनीय अछि।

कहल जाइछ – **''कलौ चण्डीमहेश्वरौ।''** कलियुगमे संसार सागरसँ पार उतारनिहार, जन्म-मरणरूप भवबन्धनसँ मुक्ति प्रदान कएनिहार दूटा-शिव और शक्ति। ताहूमे शिवक अपेक्षा शक्तिक महत्त्व अधिक। शक्तिक अभावमे शिव शिव नहि रहि शव भए जाइत छथि। देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रमे कहल गेल अछि जे खप्परधारण कएनिहार भूत-प्रेतक स्वामी जे समस्त संसारक एकमात्र ईश्वरक पदकेँ प्राप्त कए लैत छथि से हे पार्वती! अहाँ जे विवाहकालमे हिनक हाथ पकड़लिऐन्हि तकरे फलस्वरूप अर्थात् अन्यथा ई सम्भव नहि होइतैन्हि हुनका हेतु।

''कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटी फलमिदम्।।''

शक्तिक उपासनाक दू मार्ग अछिः – वाम मार्ग एवं दक्षिण मार्ग। मिथिलामे दूनू मार्गक उपासक रहैत रहलाह अछि। तन्त्रक दू पक्ष अछिः – सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक। मिथिलामे दूनू पक्ष अपन उत्कर्षक पराकाष्ठाकेँ प्राप्त कएलक। तन्त्रविद्याक प्रसङ्गमे कहल गेल अछि :–

''गौडे प्रकाशिता विद्या मैथिलैः प्रबलीकृता।
क्वचिक्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे प्रलयं गता।।''

अर्थात् तन्त्रविद्या बंगालमे प्रकाशित भेल, मैथिललोकनि ओकरा दृढ़ता प्रदान कएलैन्हि, महाराष्ट्रमे कतहु-कतहु चलल आओर गुजरातमे समाप्त भऽ गेल। तन्त्रक प्रसारक मुख्य कारण छल एकर सर्वजनसुलभता। एकर द्वार सभक हेतु खुजल छल। कोनो प्रतिबन्ध नहि। सभसँ विशिष्ट सुविधा तऽ ई जे एहि पद्धतिमे भोगक सङ्ग मोक्षक उपाय कहल गेल अछि।

सामान्य नियम तऽ अछि जे वैदिक परम्परानुसार जतऽ भोग छैक ततऽ मोक्ष नहि ओ जतऽ मोक्ष छैक ततऽ भोग कतऽ :–

''यत्रास्ति भोगो न हि तत्र मोक्षो
यत्रास्ति मोक्षो नहि तत्र भोगः।''

मुदा शक्तिक मूर्ति त्रिपुरसुन्दरीक उपासनामे लागल लोकक हेतु भोग एवं मोक्ष दूनू अपना हाथहि पर रहैत छैन्हि। श्रीसुन्दरी एहि ठाम दशामहाविद्याक द्योतक अछि।

''श्रीसुन्दरी पूजनतत्पराणां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।''

जेना पूर्वहि कहि आएल छी मिथिलामे तन्त्रक दूनू पक्ष सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक उन्नतिक शिखरकैं प्राप्त कयलक। एकसँ एक ग्रन्थक रचना भेल ओ सिद्धि पाबि मैथिल तान्त्रिकलोकनि अद्भुत चमत्कार देखाओल। जनताक दुःखक निवारण तन्त्र-मन्त्र-यन्त्रक प्रयोगादिसँ कएल गेल। ईप्सित दुर्लभ वस्तु सबहिक प्राप्ति एहिसँ सुलभ भऽ गेल।

सैद्धान्तिक पक्षमे तन्त्रक अमूल्य ग्रन्थरत्नक प्रणयन कएनिहार घोसौत मूलक नगवार शाखामे उत्पन्न म.म. गोविन्द ठाकुरक बालक म.म. देवनाथ ठाकुरक नाम अनायास स्मरण भए जाइछ। हुनक **तन्त्र कौमुदी**[3] ओ **मन्त्रकौमुदी**[4] सुप्रसिद्ध अछि। अपन **अधिकरण कौमुदी** मे म.म. देवनाथ ठाकुर स्वरचित तन्त्रविषयक **सिद्धान्त कौमुदी** नामक ग्रन्थक उल्लेख सेहो कएलैन्हि अछि। एहि ग्रन्थ सबहिक रचना सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे भेल। एहिसँ पूर्व हिनक पिता म.म. गोविन्द ठाकुर **पूजा प्रदीपक** प्रणयन कए चुकल रहथि।

म.म. देवनाथसँ एक सय वर्ष पूर्व म.म. रुचिपतिक बालक ओ म.म. धनपतिक भ्राता आगमाचार्य हरपति मिथिलाधिपति कंसनारायण लक्ष्मीनाथक आदेशानुसार **मन्त्रप्रदीप** नामक ग्रन्थक रचना कएलैन्हि। मिथिलानरेश धीर सिंहक पौत्र ओ राघवेन्द्रक पुत्र गदाधर शारदातिलक पर **तन्त्रप्रदीप** नामक टीका ग्रन्थ लिखलैन्हि।

अठारहम शताब्दीमे पण्डौल निवासी घनानन्ददास तन्त्र विषयक दू गोट ग्रन्थक प्रणयन कएलैन्हि जकर नाम अछि :–

1. मातङ्गी कुसुमाञ्जलितन्त्र 2. मन्त्रकल्पद्रुम

पूर्णिया जिलामे खोखामे रहनिहार प्रसिद्ध तान्त्रिक बदरीनाथ उपाध्याय उन्नैसम शताब्दीक मध्यमे दरभङ्गा जिलामे उजान ग्राममे आबि बसलाह ओ महाराज महेश्वर सिंह (1850-1860 ई०)क आश्रित भए तन्त्र विषयक तीन गोट ग्रन्थक रचना कएलैन्हि :–

1. भैरवयामलोक्त स्तोत्रक मर्मसूचिका व्याख्या 2. ताराभक्तिसुधार्णवक टीका आओर 3. चक्रकौमुदी

ताराभक्ति सुधार्णवक मूल लेखक रहथि श्रीकृष्णक पौत्र गदाधरक बालक नरसिंह। एहिमे तारा (दशमहाविद्यामे द्वितीया)क पूजाक विधान अछि। एहिमे बीस अध्याय अछि। एगारहम अध्यायक नाम अछि-**काली भक्ति सुधार्णव** जाहि मे आद्या अर्थात् कालीक उपासनाक विबेचन कएल गेल अछि। वस्तुतः एहि सँ ई सिद्ध होइछ जे ई सभ एके छथि। तात्त्विक भेद कोनो नहि छैन्हि हिनकालोकनिमे। कहल गेल अछिः–

''यथा काली तथा तारा या तारा कालिकैव सा। उभयोर्नास्ति भेदोऽस्ति ......।।''[5]

मिथिला संस्कृत विद्यापीठक हस्तलेखविभागमे चूडामणिविरचित **साधकमण्डन** ओ श्रीशाननाथ प्रणीत **भवानीभक्तिमोदिका** नामक दू ग्रन्थ सुरक्षित अछि। ई तन्त्रक वाममार्गक ग्रन्थ बूझि पड़ैछ। भट्टनाग द्वारा **त्रिपुरासारसङ्ग्रह** ओ **सारसमुच्चयक** रचना भेल। सम्भवतः ई लोकनि मैथिल रहथि, ई तान्त्रिकलोकनिक कथ्य छैन्हि। **साधक मण्डनक** प्रारम्भ गदाधर विरचित **तन्त्रप्रदीपक** दू श्लोकसँ भेल अछि ताहिसँ चूड़ामणिक मैथिलत्व सिद्धप्राय बूझि पड़ैछ। विद्वदुपाध्याय रचित **तारिणीपारिजातक** सम्पादन स्व. पण्डित रमानाथझा द्वारा कएल गेल।[6]

आगमाद्वैत निर्णय कविकोकिल विद्यापतिठक्कुरक लिखल कहल जाइछ। तन्त्रविद्यामे मधुबनी परिसरमे अवस्थित दू गाम मङरौनी ओ हरिनगर सर्वाधिक उल्लेखनीय अछि। फन्दहमूलक खनामशाखा तान्त्रिक साधनामे शिखर पर छल। म.म. पीताम्बर विद्यानिधिक पुत्र रहथि म.म. त्रिलोचन अविलम्बसरस्वती, म.म. दण्डपाणि प्रसिद्ध

धनञ्जय, म.म. गोकुलनाथ ओ म.म. जगद्धर प्रसिद्ध जगन्नाथ। म.म. पीताम्बरक पिता रहथि सदुपाध्याय रामचन्द्र, पितामह सदुपाध्याय नीकार प्रसिद्ध हरिहर ओ प्रपितामह म.म. रुचिपति। म.म. गोकुलनाथक दूनू बालक म.म. सर्वस्वदाता रघुनाथ ओ म.म. लक्ष्मीनाथ सेहो प्रसिद्ध विद्वान् रहथि ओ हुनक पौत्र म.म. भवानीनाथ सेहो विशिष्ट विद्वान रहथि। कहल जाइछ जे एहि वंशमे विद्यावैभव तान्त्रिक उपासनाक चरम उत्कर्षक फल छल। ओना तऽ सभ केओ तन्त्रमे निष्णात रहथि मुदा सर्वाधिक चर्चित रहलाह म.म. गोकुलनाथक पितियौत मदन उपाध्याय जे पण्डितराज म.म. मधुसूदनक बालक रहथि।

ऐतिह्य अछि जे मदन उपाध्याय अपन सिद्धिक बलें प्रत्यह आकाशमार्गें मङरौनीसँ उपासनाक हेतु कामाख्या जाथि ओ पूजोत्तर गाम आपस आबि जाथि। दोसर जनश्रुति अछि जे एक बेर ओ नेपाल गेलाह। स्थानीय पण्डित लोकनि हुनका महाराजसँ भेंट नहि करए देथिन्ह। किछु दिनुका बाद संयोगवश दरबारमे ओ उपस्थित भेलाह। दरबारी लोकनि हुनका पुछलथिन्ह ''आइ कोन तिथि ?' अनवधानतावश ओ कहलथिन्ह जे ''आइ द्वितीया थीक।'' सभ भभाकें हँसलाह आओर कहलथिन्ह जे तखन तऽ चन्द्रमा अदृश्य होएताह। उपाध्यायजी कहलथिन्ह – ''हँ'', मुदा ओ रहैक पड़ीव। उपाध्याय अपन उपासनामे लागि गेलाह ओ सायंकाल भगवतीक कङ्गनकें अभिमन्त्रित कए आकाशमे फेकि देलैन्हि। कहल जाइछ जे समस्त नेपालवासीकें ओ कङ्गन चन्द्रमा बूझि पड़लैक। महाराज अत्यधिक प्रसन्न भए हिनका पुरस्कृत कएलैन्हि।

ईहो किंवदन्ती अछि जे स्नानोत्तर अपन धोतीकें उपाध्यायजी आकाशमे फेकि देथिन्ह बिना कोनो आधारक आओर सुखएला पर हाथ बढ़ाए राखि लेथि। ई छल हुनक सिद्धिक चमत्कार।

महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह (1898-1929) स्वयं बड़ पैघ तान्त्रिक रहथि। सिद्धान्तपक्ष एवं प्रायोगिक पक्ष दूनूमे निष्णात रहथि। सुनल अछि जे कामाख्या मन्दिरमे तीन दिन तीन राति ओ समाधिस्थ रहथि। हिनक राज्यकालमे मिथिलामे तान्त्रिक उपासनाक पर्याप्त प्रचार भेल। जनश्रुति अछि जे हिनक दरबारमे केओ दाक्षिणात्य विद्वान मिथिलाक विद्वान्लोकनिसँ योग्यताक प्रमाणपत्र लेबाक हेतु उपस्थित भेलाह। ओहि दिन पण्डितलोकनि कतहु विद्वत्परिषद्मे गेल रहथि। केवल तान्त्रिक बल्ली प्रसिद्ध हलधरझा रहथि। ओ बगलामुखीकें सिद्ध कएने रहथि। ओ हुनका **''गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ''**[7] क व्याख्या करबाक हेतु कहलथिन्ह, मुदा तेहन ने **''जिह्वां कीलय'' ''स्तम्भय स्तम्भय''क** प्रयोग कए देलथिन्ह जे ओ विद्वान् एको शब्द नहि बाजि सकलाह। दरबारसँ बाहर जाथि तऽ सभटा मोन पड़ि जाइन्हि। अन्ततः ओ बजलाह – ''हम मिथिलाक तान्त्रिक साधनाक प्रति नतमस्तक छी।''

म.म. सुरेशमिश्र एवं म.म. उमेश मिश्र दू भाइ रहथि। सुरेश कवि रहथि ओ उमेश तान्त्रिक-दार्शनिक। एक बेर शास्त्रार्थमे सुरेशकें उत्तर देबामे किछु विलम्ब होइत देखि उमेश कहलथिन्ह जे निर्दुष्ट गद्य वा पद्यमे उत्तर देबामे जे शैथिल्य भऽ रहल अछि से की त्रिभुवनक सारतत्त्व तारामाताक आराधना अहाँ नहि कएल अछि।[8]

चण्डेश्वर एवं चन्द्रशेखर दू भाई रहथि। एहिमे पहलि प्रायोगिक पक्षमे निष्णात रहथि दोसर सैद्धान्तिक पक्षमे।

मिथिलातत्त्वविमर्शमे वैयाकरणकेसरी म.म. परमेश्वरझा एक जनश्रुतिक उल्लेख कएलैन्हि अछि। मिथिलाक राजा कंसनारायण लक्ष्मीनाथसिंहदेवक आदेश पाबि दरबारमे रहनिहार एक तान्त्रिक योगी मन्त्री श्रीधरदासक परमसुन्दरी पत्नीके जाहि स्थितिमे ओ रहथि ताही स्थितिमे आकर्षण कए राजाक शयनागारमे आनि देलथिन्ह। मन्त्रीक घर अनेक कोस दूर रहैन्हि। कामुक राजा पतिव्रताक तेजकें नहि सहि सकलाह। अबैत देरी हुनका आपस पठा देबाक हेतु तान्त्रिक योगीकें आदेश देलथिन्ह। तत्काले आदेशक पालन भेल।

मिथिलाक तान्त्रिकलोकनि मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि सभमे सिद्धहस्त रहथि।

मिथिलामे विवाहक प्रकरणमे वैदिक कर्मकाण्डसँ भिन्न किछु तान्त्रिको प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ, यथा ठक-बक, नयना-योगिन आदि। घर-घरमे सम शुभ अवसर एवं पाबनितिहारमे कुमारिक पूजा वस्त्र, आभूषण, भोजनसामग्रीक सङ्ग जे कएल जाइछ ओ तान्त्रिक प्रभावजन्ये थीक। डाइन-योगिन जे सुनैत छी तनिका सभकेँ तान्त्रिक सिद्धि प्राप्त रहैत छैन्हि। ओझा-गुणीलोकनि तान्त्रिक साधना कइये कऽ भूत-प्रेतक उपद्रवकेँ शान्त करैत छथि।

तन्त्रविद्यामे पञ्चमकार – मत्स्य, मांस, मदिरा, मैथुन ओ मुद्राक विशेष महत्त्व अछि। किछु तान्त्रिक एकरा स्थूल अर्थमे बूझि एकरा उपासनाक अभिन्न अङ्ग मानि साधना करैत छथि, किछु एकरा साङ्केतिक मानि परिमार्जित अर्थ राखि उपासनामे प्रयोग करैत छथि।

प्राचीनकालहिसँ मिथिलामे तन्त्रक बलेँ सिद्धि प्राप्त कए अप्रतिम प्रतिभासम्पन्न विद्वान् होएबाक जनश्रुति अछि। कहल जाइछ जे गङ्गेश, वर्धमान, देवादित्य ओ गणनाथ तन्त्रविद्याबलेँ अपन-अपन शास्त्रमे अद्वितीय भेलाह। गङ्गेश उपाध्यायक प्रसङ्ग तऽ किंवदन्ती अछि जे ओ निरक्षर रहथि। पढ़बा लिखबाक अवस्था बीति गेल रहैन्हि। परन्तु आद्याक उपासनाक प्रसादेँ विश्वक सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक भेलाह।

वर्तमान शताब्दीमे तान्त्रिक सिद्धि प्राप्त कए समाजक आधि-व्याधि-पीड़ित जनसमूहकेँ रोगमुक्त कए अभीष्ट प्राप्ति करौनिहार अनेको तान्त्रिक मिथिलामे भेलाह। एहिमे सँ किछु प्रमुख तान्त्रिकक नामोल्लेख करैत छीः–

1. स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण राय। ई चनौर ग्रामवासी रहथि। पश्चात् शुभङ्करपुरमे रहि तान्त्रिक रीतिएँ जनकल्याणमे लागल रहैत सन् 1969 ई० मे शरीर त्याग कएलन्हि। 2. उजानग्रामवासी स्वर्गीय वैद्यनाथझा। 3. वैद्यनाथझाक पुत्र उमानाथझा सम्प्रति श्रेष्ठ तान्त्रिकमे गनल जाइत छथि। 4. लखनौर ग्रामवासी गौरीनाथ झा। 5. पाही टोल निवासी विघ्नेश ठाकुर सम्प्रति मधुबनीमे गङ्गासागरक पछबरिया महारपर अवस्थित काली मन्दिरमे रहि उपासना करैत छथि। 6. सनकोर्थुनिवासी स्व. विकल मिश्र। 7. सरिसववासी स्व. लक्ष्मीनाथझा। 8. मङरौनी ग्रामवासी स्व. मुनीश्वरझा। 9. महरैलग्रामवासी स्व. महावीर मिश्र। 10. सम्प्रति महावीर मिश्रक बालक युगनाथ मिश्र तान्त्रिक साधनामे संलग्न रहैत छथि। 11. पाही टोल निवासी स्व. एकनाथझा। 12. मङ्रौनी ग्राम निवासी स्व. दीनानाथझा। 13. महिनाथपुर निवासी पण्डित कृष्णदत्तझा। ई सम्प्रति सहर्षा महाविद्यालयक संस्कृत विभागाध्यक्षक पदसँ सेवानिवृत्त भए सहर्षहिमे साधनाकरैत छथि। 14. कोइलख निवासी सुरपतिझा सम्प्रति झंझारपुर स्टेशनक समीप रहि साधनामे लागल रहैत छथि। 15. हरिनगर निवासी स्व. हरिहर झा।

सन्दर्भ :–

1. तृतीय काण्ड – नानार्थवर्ग –3/185 (पूर्वार्द्ध)। 2. ओतहि। 3. स्व. पं. रमानाथझा द्वारा सम्पादित भए मिथिला संस्कृत विद्यापीठ दरभङ्गासँ प्रकाशित 1969 मे। 4. ओतहिसँ हुनकहि द्वारा 1960 मे प्रकाशित। 5. गन्धर्वतन्त्र। 6. वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसीसँ 1957 मे प्रकाशित। 7. पाणिनि –1/IV/52 8. यद्यनवद्ये गद्ये पद्ये शैथिल्यमावहसि। तत् किं त्रिभुवनसारा तारानाराधिता भवता।।

●

मिथिलामे ज्यौतिषशास्त्र

डॉ० रामचन्द्रझा

प्राचीनकालहिसँ मिथिला विविध विद्याक केन्द्र रहल अछि तेँ आन शास्त्रसभक संग-संग ज्यौतिषक अध्ययन-अध्यापन एवं ग्रन्थरचनामूलक कार्य सेहो सनातनी होइत आएल अछि।

वेदक षडङ्गमे ज्यौतिष नेत्र स्वरूप कहल गेल अछि। नेत्रक कार्य थीक देखब। ज्यौतिषशास्त्र द्वारा हम वर्तमानक संग भूत एवं भविष्यक विषयकेँ देखैत छी। जहिना शरीरमे आँखिक स्थान सर्वोपरि अछि तहिना वेदपुरुषक देहमे ज्यौतिषशास्त्रक स्थान सर्वोपरि अछि।

यद्यपि क्रमबद्धरूपेण ग्रन्थकार एवं ग्रन्थक परिचय तऽ उपलब्ध नहि अछि मुदा तइयो 1936 ई० मे बिहारोत्कल संस्कृत शोध परिषद्, पटनासँ प्रकाशित ''ए डिस्क्रीप्टिभ कैटलग ऑफ मैनुस्क्रिप्ट इन मिथिला'' क आधार पर एवं अन्यत्रो उपलब्ध तथ्यक आधार पर निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध होइछ–

ई०पू० 57 मे कालिदासक ज्योतिर्विदाभरण, एगारहम शताब्दीमे डाककृत डाकवचनामृत, वररुचिकृत मुहूर्त्तभार्गव, 1200 ई० मे भीमकृत भीमपराक्रम एवं चण्डेश्वराचार्य रचित सूर्यसिद्धान्त टीका। तेरहम शताब्दीमे हरिनाथोपाध्याय कृत संकेतकौमुदी, धीरेश्वरकृत बुद्धिप्रदीप एवं जीवेश्वरक ''रत्नशतक'' ग्रन्थ प्रसिद्ध अथि।

चौदहम शताब्दीमे हरदत्तक दैवज्ञबान्धव, चण्डेश्वरक कृत्यचिन्तामणि, पन्द्रहम शताब्दीमे गणपतिक भूमिभ्रमण, पक्षधरक सुबोध ग्रन्थ प्रख्यात् अछि। पन्द्रहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे हरपतिक व्यवहारप्रदीपिका, मकरन्द रचित मकरन्दसारिणी (पञ्चाङ्ग निर्माण पद्धति), नरहरिकृत स्वरोदय टीका एवं अहिवल चक्र, लक्ष्मीदासकृत सिद्धान्तशिरोमणिटीका, विभाकरकृत प्रश्नकौमुदी, परममिश्रकृत मुकुन्दविजय, सोलहम शताब्दीमे नाह्निदत्तकृत पञ्चविंशतिका, श्रीनिवासकृत शुद्धिदीपिका, म.म. महेशठक्कुरक अतीचारादि-निर्णय, परमानन्द ठक्कुरकृत सिद्धान्तसुधी, हेमाङ्गदठक्कुरकृत ग्रहणमाला, नीलकण्ठकृत ज्यौतिषसौख्यम् आदि, सतरहम शताब्दीमे नारायणदासकृत प्रश्नभैरव, म.म. माधवकृत अद्भुतदर्पण, विष्णुदेव विरचित रत्नकलाप, प्रभृति, अठारहम शताब्दीमे कलाधरकृत शिशुबोध, जीवनाथझा रचित भावकुतुहल, वास्तुरत्नावली, प्रश्नभूषण, भावप्रकाश, वनमाला प्रभृति ग्रन्थ, नीलाम्बरझा कृत गोलप्रकाशनामक ज्यौतिष सिद्धान्तग्रन्थ, कमलनयनमिश्रकृत जन्मपद्धति प्रभृति ग्रन्थ तथा उन्नैसम शताब्दीमे मोदनाथ लिखित ताजिक चिन्तामणि, कृष्णदत्तझा कृत जातक झोड, भानुनाथ कृत व्यवहाररत्नम्, तूफानीझा कृत अब्दचिन्तामणि, दामोदरमिश्रकृत लीलावतीवासना, अपूछझा कृत निर्णयार्क, म.म. मुरलीधर झा कृत सिद्धान्ततत्त्वविवेक टिप्पणी एवं म.म. मधुसूदनझा कृत कादम्बिनी प्रभृति प्रसिद्ध अछि। म.म. मधुसूदन जयपुर राजपण्डित विद्यावाचस्पति नामसँ विख्यात छथि। इएह श्रीमान् सर्वप्रथम मिथिलामोद पत्रिका मैथिलीमे प्रारंभ कएलैन्हि।

वर्त्तमान शताब्दीमे म.म. गंगाधर मिश्र सिद्धान्ततत्वविवेक-वासना, नीलकण्ठी टीका, वास्तवचन्द्र श्रृंगोन्नतिवासना, प्रतिभावोधकवासना, कृत्यसार टिप्पणी प्रभृति ग्रन्थक निर्माण कएल। हिनक सर्वोत्कृष्ट कृति सिद्धान्त तत्त्वविवेकवासना अछि। ज्ञातव्य यीक जे एहि ग्रन्थक एकमात्र टीका श्रीमिश्रक छैन्हि। एहि टीकामे मिश्रजी अपन गुरू गेनालाल चौधरीजीक यत्र-तत्र विशेष युक्तिक चर्चा कएने छथि। यथा – स्पष्टवलनसाधनादिमे।

मुरलीधर ठाकुर कृत सिद्धान्तसेतु एहि शताब्दीक मूल सिद्धान्त ग्रन्थ थीक। हिनक सिद्धान्तशिरोमणि स्पष्टाधिकारान्त टीका अति प्रशंसनीय अछि।

श्री वलदेव मिश्रकृत आर्यभट्टीय टीका एवं सरलत्रिकोणमिति ग्रन्थ प्रसिद्ध अछि।

श्री सीतारामझा कृत रेखागणित, गोलपरिभाषा, मुहूर्त्तचिन्तामणिक टीका, (कविवर) लीलावती टीका, नीलकण्ठी व्याख्या, सूर्यसिद्धान्तक टीका, वृहत्पाराशरहोराशास्त्र टीका, वृहज्जातक टीका आदि अनेको ग्रन्थ प्रसिद्ध अछि। श्रीझा मैथिलीक प्रसिद्ध कवि सेहो छलाह। हिनक षट्रस प्रसिद्ध अछि। एहिना अच्युतानन्दझाक वृहज्जातक, बीजगणित-जैमिनिसूत्र केशवीय जातक प्रभृति ग्रन्थक टीका एवं प. श्रीदेवचन्द्रझा कृत बीजगणित टीका, वृहत्पाराशर संस्करणक संपादन उत्कृष्ट अछि।

श्रीकपिलेश्वर चौधरी कृत सूर्यसिद्धान्तटीका, मुहूर्त्तचिन्तामणिटीका एवं जातकपारिजातटीका प्रभृति ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण अछि। एहिना लषणलालझाक व्यावहारिकज्यौतिषतत्त्व, जातकालंकारटीका, लघुजातकटीका, मकरन्द सारिणी आदि सम्पादित ग्रन्थ प्रसिद्ध अछि।

एतदितिरक्त दयानाथझाक भ्राभ्रमबोध एवं विमण्डल वक्रविचार, बुद्धिनाथझाक टिप्पणीविवरण, युगेश्वर झाक ग्रहलाघवटीका, दीनानाथझाक जातकालंकारटीका, चन्द्रशेखरझा कृत गोलीय रेखागणित एवं चापीयत्रिकोणमितिक टीका, मधुकान्तझा कृत मानसागरी टीका प्रभृति ग्रन्थ प्रसिद्ध अछि।

अध्ययन-अध्यापनक क्रम तऽ मिथिलामे विलक्षणे रहलं अछि। दलान पर, गाय चराबऽ कालमे सेहो गुरुक संग छात्रलोकनि पढ़ैत छलाह। चौपाड़ि तऽ प्रसिद्धे अछि। ओना आब तऽ अंगरेजिया तान पर प्राथमिक-मध्य-माध्यमिक-उपशास्त्री-शास्त्री-आचार्य स्तरक पढ़ाई प्राथमिक विद्यालयसँ लऽकऽ विश्वविद्यालय धरि होइछ। तथापि संस्कृत विद्याक अध्ययन-अध्यापन केन्द्र अद्यापि मिथिला अछि आ आगुओ रहत से विश्वास अछि।

●

मिथिलाक पञ्जी-परम्परा

– डॉ० कालिकादत्तझा

मिथिलाक ब्राह्मण एवं कायस्थ समाजक विवाह-संस्कारसँ समबद्ध पञ्जी-व्यवस्था समग्र विश्वमे अप्रतिम अछि। विश्वक कोनो समाजमे ई व्यवस्था एहि रूपें प्राप्य नहि अछि। चौदहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे कार्णाटवंशीय राजा हरिसिंहदेवक प्रेरणासँ पंजीव्यवस्थाक वर्तमान स्वरूपक आधार अस्तित्वमे आयल[1]। जाहि मैथिल ब्राह्मण आ कायस्थ समाजक बौद्धिक आ सांस्कृतिक उत्कर्षक विश्वस्तरीय मानदण्डक स्थापित परम्परा रहल अछि ताहि समग्र दूनू समाज कैं प्रायः सात-आठ सय वर्षसँ ई व्यवस्था पूर्णतः नियन्त्रित कयने अछि। एहिसँ एकर वैज्ञानिकता स्वतः सिद्ध होइछ। वैवाहिक अवसर पर वर-कन्याक कुल-विवेचनक अत्यन्त प्राचीन परम्परा परिलक्षित ओइछ। राम-जानकी विवाहक सन्दर्भमे वर-कन्याक कुल-मीमांसाक प्रसंग वाल्मीकि रामायणमे आयल अछि।[2] आभिजात्य वर्ग अथवा कुलीन समाजमे जाति एवं शोणितक शुद्धिक रक्षार्थ विवाहक समय वर-कन्याक वंश-परिचयक आकलन गुण-दोष-मीमांसाक आधाररूपमे 'समूह-लेख्य'क परम्पराक संकेत कुमारिलभट्टक तन्त्रवार्तिकमे प्राप्त होइछ जाहि आधार पर विवाहादि सम्बन्धी प्रवृत्ति-निवृत्ति निर्धारित होइत छल।[3] समूहलेख्यक यैह परम्परा, जकर स्वरूप पूर्णतः वैयक्तिक छल, हरिसिंहदेवक समयमे घटनाविशेषक कारणें पंजीप्रबन्धक रूपमे सामाजिक स्वरूपकैं प्राप्त कयलक। पंजी प्रबन्ध यौगिक शब्द अछि। एहिमे 'प्रबन्ध' व्यवस्थासामान्यक वाचक थिक। पंजी शब्द सामान्य लेखनपुस्तकाक अतिरिक्त ग्रन्थ विशेषक अर्थमे सेहो रूढ़ अछि। एक ध्रुवानन्द मिश्रक सन्दर्भ दऽ शब्दकल्पद्रुममे एहन उल्लेख प्राप्त होइछ।[4] सत्यभामा पदांशभूत भामासँ जेना सत्यभामाक बोध कयल जाइछ तहिना कुलपंजी पदांशभूत पंजीसँ कुलपंजीक बोध इष्ट मानि तत्कालीन बुधजन[5] समूहलेख्य कैं पंजीप्रबन्ध अभिधान दऽ एक सामाजिक स्वरूप प्रदान कयलनि।

एहि पंजीप्रबन्धक तीन पक्ष मानल जा सकैछ-धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक। प्रत्येक पक्षक कनेक विश्लेषण आवश्यक। यथा –

धार्मिक पक्ष

ई व्यवस्था पूर्णतः धर्मसँ सम्बद्ध अछि। धर्मस्वरूप मीमांसा तँ अत्यन्त विस्तृत तथा वर्तमान सन्दर्भसँ कनेक विषयान्तर होयत, परन्तु किछु विचार आवश्यक। हमरालोकनि विश्वक सर्वाधिक प्रबुद्ध वर्ग आर्यक सन्तान छी। मिथिलाक ऐतिहासिक अध्ययनसँ ई तथ्य स्पष्ट भेल अछि जे अत्यन्त प्राचीन कालमे पुण्यमय प्रदेश मिथिला सघनवनाक्रान्त, दलदल फलतः जनावासशून्य छल। उत्तर वैदिक कालमे सप्तसिन्धु प्रदेशसँ पूर्व दिशाभिमुख अग्रसर होइत आर्यक एक वर्ग गौतम रहुगण राजन्यवर्य विदेघ माथवक नेतृत्व मे सदानीरा गण्डकी कैं पार कऽ मिथिलाक तथोक्त निर्जन प्रदेशमे अग्निस्थापन कयलनि आ तपःपूत मिथिलाकैं आवासयोग्य बनौलनि। एहि तरहक एक उपाख्यान शतपथ ब्राह्मणमे आयल अछि। अग्निस्थापन यज्ञीय संस्कृति-वैदिक संस्कृतिक प्रतीक थिक। कालान्तरमे अन्य पराशर, काश्यप, वत्स, शाण्डिल्य, भारद्वाज, कात्यायन, सावर्ण आदि आर्यक अन्य प्रमुख गणलोकनि सेहो मिथिलामे आयल होयताह। जे किछु हो, ई स्थापित तथ्य अछि जे हमरालोकनि आर्यक महनीय परम्परामे अबैत छी। आर्य-धर्म आ आर्य-संस्कृति हमर धर्म आ संस्कृत छी। ई हमर स्वधर्म भेल। स्वधर्म पालन हमर कर्त्तव्य थिक। 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।' आर्य धर्मक मूल आधार अछि वर्णाश्रम व्यवस्था। एहीसँ वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन व्यवस्थित होइत रहल अछि। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-एहि चारू वर्णक सम्बन्ध सामाजिक जीवन सँ तथा ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास - एहि चारू आश्रमक सम्बन्ध वैयक्तिक आ पारिवारिक जीवनसँ अछि। श्रुति एवं स्मृतिक समृद्ध परम्परासँ ई सकल वर्णाश्रम व्यवस्था अत्यन्त आदर्श रूपें

व्यवस्थित अछि। मिथिलाक शिष्टानुमोदित समग्र आचार-विचार तथा संस्कार एही आदर्श वर्णाश्रम व्यवस्थाक व्यावहारिक अभिव्यक्ति थिक, जे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्ट्यक उपलब्धिक हेतु वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करैछ। आर्य धर्मक कर्मकाण्ड पक्ष विविध ब्राह्मणग्रन्थ, मनु, पराशर, याज्ञवल्क्य प्रभृति स्मृति ग्रन्थ एवं श्रौत-गृह्य आदि सूत्र ग्रन्थ सभ सँ नियन्त्रित अछि। यैह ग्रन्थ सभ जन्मसँ मरण पर्यन्त जातकर्म, चूडाकरण, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, श्राद्धादि, समस्त संस्कारक हेतु शास्त्रीय आधार प्रस्तुत करैछ। एहीमे आर्यक परम्परा प्रतिष्ठित रहल अछि।

व्यक्तित्वक उत्कर्षाधानमे संस्कारक महती भूमिका अछि। शास्त्रविहित कर्मजन्य संस्कार द्वारा पापापनोदन एवं गुणाधानसँ व्यक्तित्वमे विलक्षण योग्यता उत्पन्न होइछ।[6] कुमारिल भट्ट संस्कारकेँ परिभाषित करैत तन्त्रवार्त्तिकमे कहैत छथि– 'योग्यतां चादधानाः क्रियाः संस्कारा उच्यन्ते।' आर्य-परम्परामे विविध संस्कार मध्य विवाह संस्कारकेँ सर्वोत्कृष्ट मानल गेल अछि। शतपथ ब्राह्मणमे कहल गेल अछि जे पत्नी पतिक अर्द्धाङ्गिनी होइछ-यावत् पर्यन्त व्यक्ति विवाह एवं सन्तानोत्पत्ति नहि करैछ तावत् पर्यन्त ओ पूर्ण नहि भऽ पबैछ।[7] पत्नी केँ समस्त पुरुषार्थोपलब्धिक आधार मानल गेल अछि।[8] विवाहकेँ सामान्यतः दाम्पत्य सम्बन्धक हेतु एक विकसित ओ नियमित सामाजिक संस्था कहल जा सकैछ। परन्तु आर्य-परम्परामे सुखमय दाम्पत्य-जीवनक आधारक अतिरिक्त विवाहकेँ जीवनक समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं दार्शनिक आस्था तथा मूल्यक अनुभूतिक माध्यम स्वीकार कऽ ओहिमे एक अद्‌भुत गरिमा एवं दिव्यताक आधान कयल गेल अछि जाहिमे आध्यात्मिकताक पुट अछि। विवाह मात्र भौतिके सुखक नहि, अपितु नैतिक, धार्मिक एव सामाजिक कर्त्तव्य-निर्वाहक आधार भऽ एक आदर्श 'घर'क पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैछ – 'गृहिणी गृहमुच्यते'। सनातन हिन्दु-संस्कृति विवाहकेँ धार्मिक संस्कार मानैत अछि। स्त्री-पुरुषक सामान्य सम्बन्धसँ पति-पत्नी भाव स्थापित नहि भऽ सकैछ। शास्त्रीय विधानसँ सम्बन्ध भेले पर स्त्रीमे पत्नीत्व आबि सकैत अछि।[9] पत्नी शब्दक निष्पत्ति प्रक्रियासँ ई तथ्य पाणिनि द्वारा सुतरां स्पष्ट कयल गेल अछि।[10] चूँकि शास्त्रकार रति-सुख तथा सन्तानोत्पत्तिक अपेक्षा धर्म-निर्वाह केँ विवाहक अधिक महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्य माननलनि अछि[11] तेँ धार्मिक संस्कार विवाहक स्वरूपाधायक तत्त्व थिक।[12]

एहि तरहेँ विवाह स्त्री-पुरुषक मात्र यौने सम्बन्ध नहि अपितु शास्त्रविहित मन्त्रादि पुरःसर संस्कारसँ स्थापित परस्पर दायित्वबोधपूर्वक वर-कन्याक एक वैधानिक सम्बन्ध थिक। एहि सर्वाधिक महत्वपूर्ण विवाह संस्कारक सन्दर्भ श्रुति-स्मृति-गृह्यसूत्रादि परम्परासँ निर्धारित अनिवार्यतः अनुपालनीय किछु प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित रूपें द्रष्टव्य, यथा –

कन्या एवं वर दूनू समान गोत्र-प्रवरक नहि होथि।[13]

कन्या अपन जाहि पूर्वज पुरुषसँ छठम स्थान पर हो वर ओहि पुरुषक पितृपक्षें सन्तान नहि होथि। पुनः, जाहि पूर्वज पुरुषसँ कन्या पाँचम स्थान पर हो वर ओहि पुरुषक मातृपक्षें सन्तान नहि होथि। शब्दान्तरमे, वर अपन पितृपक्षक कोनहुँ पूर्वज पुरुषसँ छठम स्थान पर स्थित कन्यासँ विवाह नहि करथि – सातम स्थानक कन्यासँ विवाह अनुमान्य अछि। तहिना, वर अपन मातृपक्षक कोनहुँ पूर्वज पुरुषसँ पाँचम स्थान पर स्थित कन्यासँ विवाह नहिं करथि – छठम कन्यासँ विवाह अनुमोदित अछि। कन्या अपन सोलह पूर्वज पुरुषसँ छठम एवं आठ पूर्वज पुरुषसँ पाँचम स्थान पर रहैत छथि। पंजीक भाषामे एकरा छठि-पचमीक विचार कहल जाइछ। विवाहक सन्दर्भमे ई सर्वाधिक कठिन तथा साङ्गोपाङ्ग विस्तृत-परिचय-संकलन सापेक्ष विचार होइछ। वर-कन्याक निषिद्ध दूरीक सम्बन्धमे शास्त्रवचनमे भिन्नता पाओल जाइछ विशेषतः पितृपक्षक सन्दर्भमे। कतिपय धर्मशास्त्रीय ग्रन्थमे पितृपक्षमे सप्तम पुरुषकेँ त्याज्य मानल गेल अछि।[14] परन्तु महेश ठाकुर द्वारा पितृपक्षसँ छठम एवं मातृपक्षसँ पञ्चम पुरुषक त्यागक व्यवस्था देल गेल।[15] तहियासँ अद्यावधि मिथिलामें महेश ठाकुरक एही व्यवस्थाक आधार पर वर-कन्याक वैवाहिक अधिकार-विवेचन भऽ रहल अछि।

मातृसापिण्डाक स्थितिमे – अर्थात् जाहि मूलक वर दौहित्र होथि ताहि मूलक यदि कन्या हो तऽ – बीजीसँ सप्तम कन्याक त्याग इष्ट होइछ।[16]

वरक कठमामक सन्तान कन्या नहिं हो।[17]

वरक मातामह एवं पितामहक सन्तान कन्या नहिं हो।[18]

ज्येष्ठकं अविवाहित रहला पर छोट कन्या वा वरक विवाह नहिं हो।[19]

विवाह संस्कारक सम्बन्धमे उपर्युक्त स्थापित मानदण्डक कोनहुँ क्षेत्रमे उल्लङ्घन पातित्याधायक थिक। वस्तुतः एही तरहक एक विशिष्ट घटना हरिसिंहदेवक समयमे भेल छल जे एहि व्यवस्थाक एहि परिष्कृत स्वरूपकेँ जन्म देलक। 'नाहं पत्यतिरिक्त चाण्डालगामिनी' रूप दैवी प्रायश्चित-विधानक तत्काल संयोगवशात् समुत्पन्न एक विशेष अवसर पर 'चाण्डालः स्वजनागामी चाण्डालः स्वजनासुतः' एहि शास्त्रवचनानुसारे एक पं. हरिनाथ उपाध्यायकेँ चाण्डालत्व प्राप्त भेलन्हि।[20] संवेदनशील धर्मनिष्ठ राजा हरिसिंहदेव एहि घटनासँ प्रेरित भऽ विवाह संस्कार संबद्ध सकल शास्त्रवचनक समग्रतासँ पालन हो तदर्थ-अपेक्षित व्यवस्थाक सूत्रपात कयलनि। हरिसिंहदेवसँ पूर्वहुँ एहि सब पर विचार होइत छल। केवल छठि-पंचमीक विचारक आधार सुव्यवस्थित नहि छल। हरिसिंहदेव यथासम्भव अपेक्षित परिचय संकलित कराय पड़ूए मूलक गुणाकरझाकेँ प्रथम पंजीकार मनोनीत कयल –

दृष्ट्वा सभां श्रीहरिसिंहदेवो विचार्य चित्ते गुणिनि सहिष्णौ।
गुणाकरे मैथिल वंशजाते पंजी ददौ धर्मविवेचनार्थम्।।

स्पष्ट अछि-पंजीक सम्बन्ध धर्मविवेचनसँ अछि। प्रारम्भमे विविध गोत्रसँ सम्बद्ध मूलक अभिज्ञान भेल। लगभग दू सय वर्षक बाद ओही कुलक रघुदेवझा प्रत्येक मूलकेँ विविध ग्रामसँ सम्बद्ध कयलनि। एहि तरहेँ एक सुव्यवस्थित धर्मानुमोदित पंजी व्यवस्थाक आधार पर अद्यावधि मैथिलक सम्बन्ध-बन्धक प्रक्रिया चलैत आबि रहल अछि।

सांस्कृतिक पक्ष

मानवीय विकास-परम्परा स्थूलसँ सूक्ष्म दिस अग्रसर होइत रहल अछि। सृष्टि-विकासक संग सभ्यता एवं संस्कृतिमे उत्तरोत्तर मानव प्रत्येक क्षेत्रमे अपन मौलिक पशुतावृत्तिकेँ परिष्कृत करैत दिव्यतावाप्तिक दिस अग्रसर परिलक्षित होइछ। आचार, विचार, सारस्वत-साधना ओ सिद्धि, बुद्धि, विवेक, दया, दान, त्याग, शील, शौच, उदारता आदि वा अन्यान्य अनेक मानवीय सद्गुणक आधार पर कालक्रममे क्रमशः प्रशस्त कुल सभक अभिज्ञान स्थापित भेल, जाहिमे उत्पन्न व्यक्ति 'कुलीन'क रूपमे एक विशेष सांस्कृतिक गरिमासँ मण्डित भेलाह[21]। 'कुलीनता'क अवधारणा बहुत पूर्वहिं कुमारिलभट्टक तन्त्रवार्त्तिकमे प्राप्त होइछ।[22] मिथिला आ बंगालमे कुलीनलोकनिक सर्वाधिक प्रतिष्ठित वर्ग अस्तित्वमे आयल। पंजी प्रबन्धक विकास-क्रमसँ कुलीनताक अवधारणाकेँ आओर अधिक संवर्द्धन, संपोषण एवं अनेक विधि आयाम प्राप्त भेल। उत्कर्ष विशेषसँ युक्त वंशमे उत्पन्नो व्यक्ति कुलीन कहौलनि।[23] उत्कर्षवैशिष्ट्यक आधारक रूपमे आचारादि नवधा गुणक परिगणन शब्दकल्पद्रुममे कयल गेल अछि।[24] परन्तु कुलीनताक हेतु यथा परिगणित गुणेटा पर्याप्त नहि, परिगणित प्रशस्त कुलमे जन्मो आवश्यक।[25] फलतः अकुलीन सामान्य जन यदि यथोक्त उत्कर्षाधायक गुणसँ युक्तो छथि तथापि कुलीनताक गरिमाकेँ प्राप्त नहि कऽ सकैत छथि।[26] पंजीक परम्परामे कुलीनताक आधार जन्म एवं कर्म दूनूकेँ समन्वित रूपें स्वीकार कयल गेल अछि जाहि आधार पर विविध कुलमे उत्कर्षापकर्षक विचारधारा आयल आ तकरे प्रतीक थिक विविध श्रेणी आ पाँजि। ई पंजीव्यवस्थाक सांस्कृतिक पक्ष थिक। यद्यपि धार्मिक पक्षसँ ई साक्षात् सम्बद्ध नहि, परन्तु सर्वथा शास्त्रीय आधाररहितो नहिं अछि।[27]

एहि दूनूमे कदाचित पोष्य-पोषक भाव मानल जा सकैछ। पंजी-व्यवस्थाक सांस्कृतिक पक्षक स्वरूपमे सम्पूर्ण समाजक श्रोत्रिय-योग्य-पंजीबद्ध-वंश-जयवार ई पांच गोट स्थूल विभाजन अछि जाहिमे श्रोत्रिय-योग्य पंजीबद्ध वर्ग कुल तेइस श्रेणीक एक सय नवासी पाँजिसँ सम्बद्ध छथि। प्रायः तीन सय वर्ष पूर्व एकर परम्परा प्रारम्भ भेल। प्रारम्भमे श्रोत्रियेटा मे आठ श्रेणीक बत्तीसटा पाँजि छल। कालक्रमे नव पाँजि सब उद्‌भावित होइत गेल। महाराज रमेश्वरसिंहक समयमे एकर अधिक विस्तार भेल जे एखन समाजमे सुप्रतिष्ठित अछि। एकर गुण-दोष जे हो परन्तु ई एक विशेष प्रकारक आस्थाक आधार रहल अछि जकर संबलसँ अनेको मैथिल मनीषी अपन जीवनकें धन्य-धन्य कयलनि आ एखनहुँ बहुतो व्यक्ति छथि जनिका एहिमे धर्मवत् अटूट आस्था छन्हि।

सामाजिक पक्ष

संस्कृति एवं धर्मक संरक्षण-संवर्द्धन हेतु जाति तथा शोणितक पवित्रताक सर्वाधिक महत्त्व अछि। गीतामे जाति-व्युत्क्रमसँ समुत्पन्न वर्णसंकरताकेँ दोषावह कहल गेल अछि।[28] जातिक रक्षामे पंजी-व्यवस्थाक महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। पंजी-व्यवस्थाक कारणे कमसँ कम एक हजार वर्षसँ सम्पूर्ण मैथिल समाज मैथिलेतर तत्त्वसँ, अन्य कोनो समाजक अपेक्षया अधिक अप्रभावित भेल, तेँ सर्वाधिक सुसंगठित रहल अछि। मैथिल समाजमे व्यापक रूपेँ लब्धप्रसर सौजन्यासौजन्य विचारक पंजी-व्यवस्थासँ साक्षात् सम्बन्ध अछि। पंजी-व्यवस्थासँ निर्धारित समान वा उच्चवर्गीयटासँ सिद्धान्त-भोजनरूप सौजन्य-व्यवहार तथा तदितरसँ असिद्ध भोजनरूप असौजन्यव्यवहार शास्त्रानुमोदित आहार शुद्धताक परिप्रेक्ष्यमे स्वीकृत आछि। अपनासँ न्यून वर्गकेँ अजाति मानि ओकरासँ कोनहुँ तरहक सम्पर्ककेँ संस्कारापकर्षक मानल गेल। पर्य्यायक अविच्छिन्नताकेँ कुलीनता कहल गेल अछि।[29] पर्य्यायक अभिप्राय क्रम अथवा आनुपूर्वी अछि, अर्थात् कुलसामान्य।[30] पर्य्याय क्रमसँ सम्बन्ध कर्त्तव्य कहल गेल अछि।[31] एहि नियम-परम्पराक उल्लंघन कऽ विवाह सम्बन्ध कयनिहार जातिच्युत, तेँ अजाति, वा बिकौआ कहौलनि। एहेन अजातिसँ कोनो तरहक सम्पर्क वाञ्छनीय नहि। अजातिक पत्नी पितृकर्ममे सहभागिताक धार्मिक अधिकारसँ वञ्चित मानलि गेल छथि। एकरहु शास्त्रीय आधार अछि।[32] अजाति पत्नीसँ उत्पन्न पुत्रकेँ सम्पत्तिमे समान अधिकार नहि होइछ। पंजीमे प्रत्येक व्यक्तिक गुण-दोष उल्लिखित रहबाक कारणेँ प्राचीन व्यक्तित्वक अभिज्ञानमे ई सुनिश्चित प्रमाण उपस्थित करैत अछि। कविकोकिल विद्यापति इदमित्थं रूपसँ मैथिल तखनहिँ मानल गेलाह जखन पंजीसँ हुनक सम्पूर्ण कुल परम्परा उपस्थापित कयल गेल। यदि पंजी-व्यवस्था आओर पूर्वसँ प्रचारित भेल रहैत तँ कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र, प्रभाकर मिश्र व अन्य अनेक मैथिल विभूतिक मैथिल अभिज्ञान और अधिक प्रामाणिक भऽ पबैत। एतदितिरक्त समाजमे यथावसर प्राप्त उत्तराधिकार सम्बन्धी विवादक निराकरणमे पंजीसँ सुनिश्चित साहाय्य प्राप्त होइछ आओर परम्परासँ पंजीक अभिलेखकें न्यायिक महत्त्व एवं प्रामाणिकता प्राप्त रहलैक अछि। समाजक सर्वाङ्गीण उत्कर्षक प्रतीकभूत पंजी-व्यवस्थाक संरक्षक रूपमे, हरिसिंहदेव द्वारा मनोनीत प्रथम पंजीकार गुणाकरझासँ प्रारम्भ कऽ अद्‌यावधि, पंजीकारलोकनिक एक महनीय परम्परा अछि जे यथावर्णित तीन प्रमुख पक्षक आयामसँ गुरुतर पंजीक सिद्धान्तक अनुपालन करैत समग्र समाजक प्रति एक विशेष रूपक धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वक महान् दुर्वह भारकेँ पूर्ण सत्यनिष्ठताक संग वहन करैत आबि रहल छथि। कतेको उत्कृष्ट प्रतिभावान पंजीकारसँ ई पंजी अलंकृत भेल अछि जे अपन प्रातिभ दृष्टिसँ एहि क्षेत्रमे अनेक तर्कपूर्ण वैज्ञानिक सिद्धान्त स्थिर कयलनि जाहिसँ पंजीकें शास्त्रक गरिमा प्राप्त भेल। पंजी शास्त्र थिक। 'शासनात् शंसनात् शास्त्रम्।' पंजी शासन-नियमन तथा शंसन-वर्णन दूनू करैछ। घटक[33] एवं सभागाछी-दूनू पंजीव्यवस्थाक अनुवर्त्ती अनिवार्य अंग थिक जे विवाहादि कार्यमे पंजीक सिद्धान्तक अनुपालनमे सौविध्योपपादनार्थ क्रमशः अस्तित्वमे आयल।

एहि तरहेँ पंजी मैथिलक धर्म-रक्षक, मिथिलाक सांस्कृतिक अस्मिताक आधार एवं सम्पूर्ण विश्वमे एक आदर्श

सामाजिक व्यवस्था अछि। यद्यपि प्रसिद्ध इतिहासकार डा० उपेन्द्र ठाकुर समाज पर हानिकर प्रभाव मानि एकर कटु आलोचना कयलनि अछि,[34] परन्तु भारतीय ऋषिलोकनिक महनीय परम्परासँ स्थापित धार्मिक व्यवस्थामे सहायक पंजी-व्यवस्थाक दुष्प्रभाव अकल्पनीय अछि। ओना नीक सँ नीक सिद्धान्तक व्यवहार-कालमे व्यवहर्त्ता द्वारा दुरुपयोगक अवकाश रहैछ। प्रजातन्त्र आ सामाजिक न्यायक आदर्शक सम्प्रति केहन सदुपयोग-दुरुपयोग भऽ रहल अछि से प्रत्यक्ष अछि। ते एकर सिद्धान्तकेँ दोषावह नहि मानल जा सकैछ। धर्मक अनुपालन सतत मंगलकारी होइछ। पंजी-व्यवस्था हमर सांस्कृतिक धरोहर थिक। खेदक विषय जे, सम्प्रति पंजी आ पंजीकार दूनूक स्थिति शोचनीय अछि। आधुनिक ज्ञान-विज्ञानक परिवेशसँ आविष्ट मैथिल समाजकें एक आपाततः अमूर्त आधार पर स्थापित पंजी-व्यवस्थाक विविध मान्यता पर अनास्था भ रहल छन्हि। मैथिललोकनिक पंजीक साकल्येन संकलन नहि भऽ रहल अछि। सबसँ महत्वपूर्ण बात जे पंजीक स्थान सब लुप्त भऽ रहल अछि। मिथिलाक जे पंजीकारलोकनिक परिवार अछि ताहिमे सर्वत्र प्रायः एक सम्मानित जीवनक भविष्य नहि रहबाक कारणेँ, पंजीक पठन-पाठन प्रक्रिया अवरुद्ध अछि। आइ जखन एकर महत्ता अमेरिका, जर्मनी आदि पाश्चात्य देश सेहो अनुभव कऽ रहल अछि, कोनो आश्चर्य नहि जे, ई अपनहिं स्थानसँ लुप्त भऽ जाय। प्रसन्नताक विषय अछि, जे पंजीक प्रमुख सिद्धान्त सभ आधुनिक आनुवंशिकी विज्ञान (Genetics) सँ समर्थित भऽ रहल अछि। पंजीक महत्ता, उपादेयता, आधुनिक सम्बन्ध विज्ञानसँ एकर विविध सिद्धान्तक समीक्षा एवं संरक्षणक उपाय आदि विविध पक्ष पर गम्भीर विचारक अपेक्षा अछि जे अखिल भारतीय मैथिल महासभाक तत्त्वावधानमे कयल जा सकैछ।

सन्दर्भ

1. शाके श्री हरिसिंहदेवनृपतेर्भूपार्कतुल्ये जनिस्तस्माद्दन्तमितेऽब्दके बुधजनैः पञ्जीप्रबन्धः कृतः।।– मिथिला तत्व विमर्श।
2. प्रदाने हि मुनिश्रेष्ठ कुलं निरवशेषतः।
   वक्तव्यं कुलजातेन तन्निबोध महामते।। – वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड –72/2
3. विशिष्टैनैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिरक्षन्ति आत्मानम्। अनेनैव हि हेतुना राजभिर्ब्राह्मणैश्च स्व पितृपितामहादिपारम्पर्याविस्मरणार्थं समूहलेख्यानि प्रवर्तितानि। तथा च प्रतिकुलं गुणदोषस्मरणात्तदनुरूपाः प्रवृत्तिनिवृत्तयो दृश्यन्ते। – कुमारिल भट्ट, तन्त्रवार्त्तिक – 1.11.2
4. पञ्जीःग्रन्थविशेषः। यथाह ध्रुवानन्द मिश्रः
   प्रणम्य विश्वेश्वर पादमादौ सरस्वतीं तां कुलदेवतां च।
   शिशु प्रबोधाय कुलस्य पंजी विविच्यते श्रीयुतमिश्रकेन।। – शब्दकल्पद्रुप
5. .... बुधजनैः पंजीप्रबन्धः कृतः।।
6. संस्कारो नाम स भवति यस्मिन् जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य।
   – जैमिनी सूत्र 6.1.35 पर शबरभाष्य।
7. अर्धो ह वा एष आत्मनो यज्जाया तस्माद्यावज्जायां न विन्दते, नैव तावत्प्रजायते। असर्वो हि तावद् भवति। अथ यदैव जायां विन्दतेऽथ तर्हि हि सर्वो भवति। – शतपथ ब्राह्मण 2.2.10
8. अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।
   भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः।। – महाभारत, आदि पर्व – 74.40
9. सवर्णापूर्वशास्त्रविहितायां यथर्तु गच्छतः पुत्रास्तेषां कर्मभिः सम्बन्धः – आपस्तम्ब धर्मसूत्र – 11.6.13.1

10. यत्पुर्नो यज्ञ संयोगे।। पाणिनि, अष्टाध्यायी 4.1.133
11. धर्मप्रजासंपत्तिप्रयोजनं दारसंग्रहस्य।। आपस्तम्ब धर्मसूत्र।।
12. कः पुनरेवं विवाहोनाम उपायतः प्राप्तायाः कन्यायाः दारकरणार्थः संस्कारः। सेतिकर्त्तव्यताङ्गः सप्तर्षिदर्शनपर्यन्तो पाणिग्रहणलक्षणः।। मनुस्मृति-3.20 पर मेधातिथि भाष्य।।
13. अरोगिणीं भातृमतीमसमानर्षिगोत्रजाम्।। याज्ञवल्क्य स्मृति 1.53।।
सगोत्राय दुहितरं न प्रयच्छेत्।। आपस्तम्ब धर्मसूत्र 11.5.11.15।।
असमानप्रवरैर्विवाहः।।गौतमधर्मसूत्र -IV. 2.11.।।
उपयच्छेत, समानवर्णामसमानप्रवराम।।मानव गृह्यसूत्र1.7.8।।
असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने।।मनुस्मृति3.5।।
14. पञ्चमात्सप्तमादूर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा।। याज्ञवल्क्यस्मृति1.3।।
ऊर्द्ध सप्तमात्पितृबन्धुभ्यः बीजिनश्च मातृबन्धुभ्यः पञ्चमात्।।गौतमधर्मसूत्र।। IV.1.3.5।।
15. मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं त्यजेत्। वचनान्तरबलात्प्रामाणिकशिष्टाचाराद् भजेदिति पाठः समीचीनः। षष्ठीपञ्चमीपर्य्यन्ता दारमैथुनकर्म्मणि न योग्या। प्रमादाद्यदिकृतं चेत्तदा तां कन्यां परिवर्ज्जयेत्। महेश ठाकुर, धर्मशास्त्रीय निबन्धावली पृ. 178।।
मिथिलाराज्योपार्जक महामहोपाध्याय ठक्कुरमहेशास्तत्पाठमन्यथयित्वा पितृपक्षे सर्वत्र सप्तमी परिणयमनुजानन्ति तत्र शिष्ट सम्वादमाचारञ्च प्रमाणयन्ति।। संस्कार दीपक।
16. असपिण्डा च या मातुः .....।। मनुस्मृति 3.5।।
मातुरसपिण्डान्।। गोभिल गृह्यसूत्र 3.45।।
सपिण्डतातु आसप्तमात् सपिण्डेषु।। बौधायन धर्मसूत्र 1.5.11.2।।
17. सर्व्वाः पितृपत्न्यो मातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्दुहितरो भगिन्यस्तदपत्यानि भागिनेयाः ताश्चाविवाह्याः।।सुमन्तु।।
18. पितृष्वसृसुतां मातृष्वसृसुतां ...... विवाह्य चान्द्रायणं चरेत्।। सुमन्तु।।
19. ज्येष्ठे सोदरेऽविवाहिते विवाहितेऽप्याचतुर्थी कर्मणि कनिष्ठो नोद्वहेत्।।
कन्यायामप्येवम्।।हारीत।।
20. गंगौरो नयनाथकस्य दुहिता तस्यास्तु तारापतेश्चोद्वाहो मटिहानिसंज्ञक कुले तत्कन्यका वै पुनः।
गंगौरो हरिनाथकस्य गृहिणी कन्या तु सा पंचमी बीहूतो गणनावशाच्च स्वजनासम्बन्ध चाण्डालिनी।। मिथिलातत्त्वविमर्श।।
21. कुले, प्रशस्ते कुले, जातः कुलात्खः अष्टाध्यायी 4.1.139।। शब्दकल्पद्रुम्।।
22. विशिष्टेनैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिरक्षन्ति आत्मानम्।।
23. अथाधुनिक कुलीन लक्षणम्- कुलम् उत्कर्ष विशेषवंशः, उत्कर्षविशेषवंशजातक व्यक्तिरिति – शब्दकल्पद्रुम।।
24. आचारो विनयो विद्या प्रतिष्ठा तीर्थदर्शनम्। निष्ठाऽवृत्तिस्तपो दानं नवधा कुललक्षणम्।।

25. उत्कर्ष विशेष धर्मावच्छिन्नवंशजातकत्वे सति तद्धर्मवत्त्वं कुलीनत्वम्। शब्दकल्पद्रुम।।
26. एतेन इदानीं साधारण सामान्यजनानां यदि नवधा गुणः वर्तन्ते तदा तेऽपि कुलीनाः स्युस्तन्न।। शब्दकल्पद्रुम।।
27. कुविवाहै : क्रियालोपैर्वेदानध्यनेन च।
कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणातिक्रमेण च।। – मनुस्मृति 3.63
28. संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।।गीता 1.42।।
29. अनवच्छिन्नपर्य्यायत्वं कुलीनत्वम्।। शब्दकल्पद्रुम।।
30. समानं कुलभावञ्च दानादानन्तथैव च।
तयोर्वंश समानं हि पर्य्यायं च प्रचक्षते।। कुलदीपिका (शब्दकल्पद्रुममे उद्धत)
31. कुलीनस्य सुतां लब्ध्वा कुलीनाय सुतां ददौ।
पर्य्यायक्रमतश्चैव स एव कुलदीपिकः।।कुलदीपिका (शब्दकल्पद्रुममे उद्धत)
32. भर्तुः शरीरशुश्रूषां धर्मकार्यं च नैत्यकम्।
स्वा चैव कुर्यात्सर्वेषां नास्वजातिः कथञ्चन।।मनुस्मृति9/86।।
पतिव्रता धर्मपत्नी पितृपूजनतत्परा।
मध्यमं तु ततः पिण्डमधात्सम्यक् सुतार्थिनी।। (धर्मपत्नी सवर्णा प्रथमोढा-कुलुकभट्ट) मनुस्मृति – 3.262
33. घटयति परस्पर सम्बन्धादिकम् इति, घट+णिच्+ण्वुल।।
के नो विदन्ति पुरुषाः पुरुषानुपूर्वी मुर्वीतले कुलभृतां परिवर्त्तनं वा।
अत्यन्त सूक्ष्ममपि ये कुलतारतम्यं जानन्ति ते हि घटकाः न तु योजकाद्याः।। शब्दकल्पद्रुम।।
34. "It dominates the social life of the people with all its damaging effects and implications." Dr. Upendra Thakar - History of Mithila - P. 393.

●

मिथिलाक लोकगाथासभक सामाजिक संदर्भ

डा प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

ऐतिहासिक विदेह जनपदक विस्तार हिमालयक पादप्रदेशसँ लऽ कऽ गंगा धरि प्रायः तीन सय योजन छल आर मिथिला ओकर राजधानी छलैक (बुद्ध, विदेह और मिथिला-सं०- डॉ० मौन)। मुदा आइकाल्हिक मिथिला एकटा सांस्कृतिक जनपदक रूपेँ ख्यात अछि, जकर सांस्कृतिक विस्तार असम, बंगाल, उड़ीसा आ नेपाल तराइक मधेस धरि पसरल अछि। प्रमाण स्वरूप पूर्वांचलक लोकसाहित्य ओ लोकसंस्कृति (पूर्वांचल भाषा, साहित्य एवं संस्कृति, पटना) राखल जा सकैछ। ओहि मिथिलाक प्राकृतिक सुषमा, ऐतिहासिक गौरव एवं सांस्कृतिक गरिमा विवेचनीय अछि।

लोक प्रचलित मान्यतानुसारे मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमें गंगा, पूर्वमे कौशिकी और पश्चिममे गण्डकी प्रवाहित अछि। नदीसभसँ आवेष्ठित एहि जनपद केँ तीरभुक्ति ओ तिरहुत कालांतरमे नामित कयल गेल। मुदा बुन्देलखंडसँ मधेस धरि प्रचलित गाथा 'लोरिकाइन'क दिक्वंदनामे एहि सांस्कृतिक मिथिलाक सीमांकन एवं प्रकारेँ कयल गेल अछि–

पूरब जे पुरैनियाँ पुजलौं, पछिम जे बिहार।
उत्तर जे नेपाल पुजलियै, दक्षिण गंगा धार।।

मिथिलांचलक शास्त्रीय सीमाक लोक संपुष्टि उपरोक्त गीतांशमे भेल अछि। मुदा आजुक सांस्कृतिक मिथिलाकेँ तीन उपखंडमे अध्ययन-अनुशीलनक दृष्टिएँ विभाजित कयल जा सकैछ–उत्तरमिथिला (उत्तरांचल, नेपाल तराइक मधेस क्षेत्र), 2. मध्यमिथिला (मूल मिथिलांचल, जकर भाषा मैथिली छैक) आर 3. दक्षिण मिथिला (वज्जिकांचल)। एवं प्रकारेँ भाषायी चेतनाक फलस्वरुप क्षेत्रानुसार परम्परित लोकसाहित्यक सर्वेक्षण, ओ संकलन, प्राचीन साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलन एवं आधुनिक साहित्यक सृजन ओ मूल्यांकनक प्रक्रिया चलि रहल अछि। एहि आलेखमे मूल मिथिलांचलक लोकगाथा सभक सामाजिक संदर्भक आकलन प्रस्तुत कयल जा रहल अछि।

लोकसाहित्यकेँ लोकमानसक आत्माभिव्यक्ति मानल जाइछ। अतः मैथिली लोकसाहित्य वस्तुतः सांस्कृतिक मिथिलाक एकटा अमूल्य दस्तावेज थिक। लोकगाथा एहि दस्तावेजक एकटा स्वर्णिम अध्याय थिक। एहिमे मिथिलांचलक जनमानसक प्रतीकात्मक अभिव्यक्तिक क्रमे कथा, कल्पना एवं इतिहास ओ संस्कृतिक तत्त्व सभक नीक सम्मिश्रण भेल अछि। देश, काल ओ परिस्थिति सभसँ संघर्ष करैत एवं श्रुति परम्परासँ अवशिष्ट किछु लोक-गाथासभ क्षेत्रीय इतिहास ओ पुरातत्वक अनुसंधान प्रक्रियामे प्रेरणास्त्रोत आर आधारशिलाक काज करबामे सक्षम अछि। एहि संदर्भमे डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' (मैथिली लोकगाथाक इतिहास), पं० राजेश्वर झा (लोकगाथा विवेचन, पटना, 1974), डॉ० पूर्णानंद दास (मैथिली लोककाव्य, दरभंगा), डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (मैथिली लोकसाहित्यक भूमिका, मैथिली प्रकाश, 1976 कलकत्ता), डॉ० योगानंदझा (लोकजीवन ओ लोकसाहित्य, लहेरियासरायू 1986 ई०), डॉ० मोतीलाल यादव (सलहेसक भौगोलिक परिवेश), श्री सतीशचंद्रझा, डा० विश्वेश्वर मिश्र, डॉ० तेजनारायणलाल (मैथिली लोकगीतों का अध्ययन, आगरा, 1962 ई०) आदि विद्वानलोकनि जार्ज ग्रियर्सन (मैथिलि क्रेस्टोमैथी, बिहार पीजेंट लाइफ, दीनाभदरी का गीत-क्रमशः 1882, 1885 एवं 1885), डा० जयकांत मिश्र (इण्ट्रोडक्शन टू दी फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, इलाहाबाद, 1950 ई०), डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त (मुल्ला दाउद कृत 'चन्द्रायन', बम्बई), डॉ० लक्ष्मी प्रसाद श्रीवास्तव (यदुवंशी लोकदेव लोरिक और लोरिकाइन, पटना, 1989 ई०), श्री ऋषभदेव शर्मा (दीना भदरी, काठमांडू) आदि मनीषीलोकनि सांदर्भिक काज सभकेँ आगाँ बढ़ौलनि।

लोकगाथा वस्तुतः लोकसाहित्यक महाकाव्य मानल जाइछ, जकर मुख्य पात्र सभ प्रायः कुलीन अथवा इतिहास प्रसिद्ध नहि भऽकऽ जनसामान्यसँ उद्भूत किन्तु लोकप्रसिद्ध होइत छथि। सामान्य कुलक कोनो पात्रविशेष अपन शौर्य ओ पराक्रम, त्याग, तपस्या ओ बलिदान एवं विशिष्ट कार्य-संपादनक कारणेँ ओहि लोकगाथाक नायक बनबामे समर्थ भऽ जाइत छथि। एहि सत्यकेँ स्वीकार करैत कहल गेल अछि 'जे वीर पुरुष ओ सतीनारी मात्र ऊँचे जातिमे नहि प्रत्युत सरो-सोलकनमे जन्म ग्रहण कऽ मानवताक उच्च आदर्शक टेक निबाहि लोक कल्याणक अद्भुत काज कयलनि। तेँ युग-युगसँ दलित-पीड़ित सोलकन ओ नारीवर्ग कें एहि सभसँ अपन अभ्युत्थानक विशेष प्रेरणा भेटलनि।'

मिथिलांचलक प्रायः प्रत्येक चर्चित जाति-उपजाति सभमे प्रतिष्ठित लोकनायक सभक गाथा प्रचलित छैक, जकर परम्परा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध छैक। लोरिकाइन (यादव), सलहेस (दुसाध), नैका बनिजारा (तेली), फेकू-दयाराम (हलुआइ), गनीनाथ-गोविन्द (कानू), दुलरा दयाल (मलाह), दीना-भदरी (मुसहर), वसावन-बखतौर (यादव), अमर सिंह–जय सिंह (मलाह), रइया रणपाल, धनपाल (पाल क्षत्रिय), रन्नू सरदार (मुसहर), गरीबन भुइयाँ (धोबी), महकार (कोइरी), श्यामसिंह (डोम), लालवन बाबा (चमार), बेनीराम (हजाम), चूहरमल (दुसाध), विजयमल (मलय वंशीय क्षत्रिय), कुंवर वृजभान, वंशीधर बाभन, हंसराज-वंशराज, लवहरि-कुसहरि, सारंगा-सदावृज, गोपीचंद, कारिख आदिक गाथा सभमे तत्कालीन मिथिलांचलक भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्थितक बड़ सशक्त विवरण प्राप्त होइत अछि। एहि परंपरित गाथा सभमे राजकीय वैभव-विलासक अपेक्षा सामंती षड्यंत्र, शोषण-उत्पीड़न आदिक प्रतिकारक क्रमे लोक उद्भूत नायक सभक कथा वर्णित अछि, जे जातीय स्तर पर अति सामान्य रहितो असाधारण वीर ओ योद्धा छलाह। डा० मणिपद्म लोरिकाइनक गाथाकेँ आदिम क्रांतिकथा कहने छथि, जाहिमे एकटा चरवाह ओ चरवाहिनक बेटा लोरिक अपन बाहुबले राजा सहदेव, राजा मोचनि, राजा हरवा-बरवा, उघरा पमार आदिक अत्याचार एवं अनाचारक अंत कयलनि मुदा ओ कोनो व्यवस्था समाजकेँ नहि दऽ सकलाह। तहिना दीना-भदरी, कनकसिंह धाइम एवं जोरावर सिंह क्रमशः श्रम शोषण तथा अनाचारक विरुद्ध जोरगर संघर्ष कयलनि। वसावन सेहो राजा दलेलकेँ मल्लयुद्धमे पछाड़ि कऽ अपन अपहृत गाय सभकेँ आपस लेबामे समर्थ सिद्ध भेलाह। तहिना राजा धनपालकेँ द्यूतक्रीड़ामे हराकऽ हुनक सभटा गाय-महीसकेँ अपहृत कऽ लऽ गेल छल अहीरा गुआर। एवं प्रकारेँ मध्यकालीन मिथिलामे व्याप्त अनाचार ओ अत्याचारक आतंकसँ मुक्तिक लेल कयल गेल संघर्षमे जे विजयी भेलाह ओ अहुखन जातीयस्तर पर लोकदेवताक रूपेँ प्रतिष्ठित छथि (लोकदेवताओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रो० मौन, ज्ञानतरंगिनी-जनपदीय अंक, बक्सर, 1986 ई०) एवं हुनक गाथा सभमे लोकजीवनक सहज अभिव्यक्ति भेल अछि तथा कांतासम्मित उपदेशक सुघड़ निदेशन पाओल जाइछ।

लोकगाथा मूलतः अवैदिक तत्त्व थिक। वैदिक साहित्यमे जँ मानव समाजक आभिजात्य संस्कार ओ परिष्कृत चेतनाक शास्त्रीय अभिव्यक्ति भेल अछि तँ लोकसाहित्यमे लोकमानसक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति भेल अछि। लोक साहित्यक गौरवमय अध्याय गाथासाहित्यमे सामाजिक चेतनाक अभिज्ञान प्राप्त होइछ। किएक तँ लोकगाथाक संरचनामे कोनो घटनाबहुल परिवेशमे उद्भूत कोनो चरितविशेषक कथा प्रबंधात्मक रूपँ प्रस्तुत होइछ, जाहिमे प्रकारांतरसँ क्षेत्रीय अथवा जातीय जीवनक तथ्यसभ स्वतः समाविष्ट भऽ जाइछ। अतः मैथिली लोकगाथा प्रकारांतरसँ सामाजिक इतिहासक एकटा महत्वपूर्ण दस्तावेज थिक जे युग-युगांतसँ लोकजीवनकेँ अनुशासित ओ अनुप्राणित कयने आबि रहल अछि। एहि तरहेँ लोकगाथा सभक परम्परा आभिजात्य गाथासभक समानांतर देखना जाइछ।

डा० मणिपद्मक मैथिली लोकगाथासभ विश्वलोकसाहित्यक एकटा अमूल्य अभिलेख थिक। बंगला लोकगाथा जतए दैवी दर्प ओ माहात्म्य आदिसँ (मंगलकाव्य) पूर्ण अछि, ओतए मैथिली लोकगाथा दैवी क्रीड़ा-कौतुकसँ मुक्त अछि। यद्यपि मैथिलीक गाथाक नायक-नायिका अपन इष्ट अथवा आराध्यक भक्त रहितहुँ हुनक दास

अथवा अंशी वा अवतारी नहिं भऽ कऽ सुच्चा मनुक्ख छथि आर ओ सभ मानवीय संवेदनासँ परिचित तथा शौर्य-पराक्रम, सतीत्व आदिक गरिमा ओ महिमासँ मंडित मनुष्यमात्र छथि। एहि गाथा सभक जीवंताक एकमात्र आधार छैक एकर लोकधर्मिता, जकराबलैं ई गाथासभ अहुखन एकटा विशाल जनसमुदायकैं उद्वेलित करबामे समर्थ बनल अछि।

लोकसँ उद्भूत गाथानायक सभ अपन त्याग-तपस्या, सिद्धि-साधना, शौर्य-पराक्रम, लोक कल्याणक भावना आदिक प्राबल्यक कारणैं लोकदेवताक रूपे सेहो प्रतिष्ठित छथि आर हुनक अलौकिक शक्तिसम्पन्न व्यक्तित्व एवं नाटकीय चरित आइयो समाजकैं दिशा-निदेश कँ सकैछ। किछु मैथिली लोकगाथा सभक परंपरित नाट्यरूप सेहो देखना जाइछ। ज्योतिरीश्वर (तेरहम शताब्दी) लोरिक नाचक उल्लेख 'वर्णरत्नाकर' मे कयने छथि। एकर अतिरिक्त सलहेस, नटुआ दयाल, रेसमा-चूहर, विजयमल, गोपीचंद, सती विहुला, कुँवर वृजभान आदि लोकनाट्यक परंपरावशेष अहुखन देखना जाइछ। एवं प्रकारैं मिथिलांचलक गाथाक नायक-नायिका सभक चरित काव्यात्मके नहि अपितु नाटकीय ओ कलात्मक सेहो छैक। एतबे नहि एहि देवी-देवता सभसँ अनुप्राणित ओ अनुप्रेरित भऽ लोकक कलाक विभिन्न आयाम सेहो विकसित भेल। गाथा नायक सलहेसक लोकचित्र ओ लोकमूर्ति सभ बनयवाक क्रम आइ धरि प्रचलित अछि। सलहेसक अश्वारोही चित्र एवं गजारोही मूर्ति सभक अतिरिक्त लोरिकसँ बनठा चमारक मल्लयुद्धक मूर्त्ति प्रतिवर्ष बनाओल जाइछ। लोकदेवी-देवता सभमे बसावन, बखतौर, बरहम, धनपाल, चूहर, गहिल, विषहरा आदिक लोकमूर्त्ति सभ सेहो बनैत अछि आर हुनक प्रिय वाहन घोड़ाक मूर्त्ति प्रतीक रूपें सेहो पूजित होइत अछि।

मिथिलांचलमे गाथा गायनक परंपरा प्राचीन एवं समृद्ध सेहो छैक। जातीय आधार रहितो लोरिक, सलहेस, दुलरादयाल, नैका-बनिजारा, दीना-भदरी, बसावन, बखतौर, हंसराज-वंशराज आदिक गाथानायकलोकनि अपन सम्पूर्ण जीवनकैं लोक कल्याणक हेतु समर्पित कऽ देलनि। हिनक गाथा तंत्र-मंत्र, सिद्धि साधना, कामरूप-कामाख्या, मिथिला-मोरंग, मालिन-जोगिन, कृषि-वाणिज्य, युद्ध-प्रेम, शौर्य-पराक्रम आदिसँ अनुप्राणित अछि। मैथिलीक गाथा वस्तुतः मिथिलांचलक सांस्कृतिक दर्पण थिक, जाहिमे आभिजात्य वर्गक अपेक्षा उपेक्षित वर्गक सामाजिक चेतना ओ सांस्कृतिक संदर्भ अपेक्षाकृत विशेष उद्भासित भेल अछि, जकरा निम्नरूपें प्रस्तुत कयल जा सकैछ–

लोरिकाइन– मिथिलांचलक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लोकगाथा 'लोरिकाइन' मे वर्णित धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक तथ्य सभक विश्लेषणसँ ई प्रतीत होइछ जे एहि गाथाक सम्बन्ध एगारहम सदीक मिथिलाक अराजकतासँ अछि। ओहि युगमे पराक्रमी लोकनिक प्रभुत्व छल। मांजरि एवं चनैन (क्रमशः पत्नी-ओ प्रेयसी)क संगे संतुलित-असंतुलित रहितहुँ गाथानायक लोरिक गोचर संस्कृति एवं कृषि जनित सभ्यताक प्रतीक गाय, शक्ति ओ प्रेरणाक स्रोत नारी तथा पीड़ित ओ प्रताड़ित आर्त्तलोकनिक रक्षाक हेतु संकल्पित छलाह। ओ मिथिलांचलक राजा लोकनिकैं तरुआरिक बलें छमान कऽ शोषित ओ उत्पीड़ित लोककैं सामंती अत्याचार एवं अनाचार मुक्ति प्रदान करौलनि।

लोरिकाइनक कथानक वस्तुतः आदिम लोक क्रांतिक ज्वलंत उदाहरण थिक, जकर नायक कोनो कुलीन वर्गक नहि अपितु सामान्य वर्गक छलाह, जनिक गाधा मूलतः वीर ओ श्रृंगार भावसँ ओत-प्रोत अछि। एकर अतिरिक्त एहि गाथामे दुर्गाक भक्ति, सामंती अनाचारक विरोध, राजकीय षड़यंत्र, राजशक्ति पर लोकशक्तिक विजय आदिक निरूपण भेल अछि। आलोच्य गाथाक अनुशीलनसँ लोरिकाइनक अधिकांश राजालोकनि दुराचारी छलाह। मद्यपान, व्यभिचार, द्यूतक्रीड़ा ओ गायक अपहरण आदि सामान्य घटना मानल जाइत छल। कतेको राजा वा सामंत अपना प्रभाव क्षेत्रक प्रत्येक सद्यः विवाहिताकैं विवाहक प्रथम राति अनिवार्यतः अपन विलास भवनमे व्यतीत करबाक लेल बाध्य करैत छल। बंदीक हत्या बड़ क्रूरताक संग कयल जाइत छल। घर भरिक लोककैं भकसी झोंका देनाइ, खाल झीकिकऽ भुस्सा भरि देनाइ, जीवैत लोककैं तरहरामे गाड़ि देनाइ, बनिसारमे राखिकऽ कानमे पघिलल सीसा भरबा देनाइ, हाथ-पैर बान्हिकऽ हरीमे ठोकि देनाइ आदि सामान्य गप छलैक।

लोरिकाइनक अनुशीलनसँ ई स्पष्ट होइछ जे ओहि युगमे बौद्ध धर्मक ह्रास, ब्राह्मण धर्मक पुनरुत्थान, तांत्रिक प्रक्रियाक परिचालन (गाथाक कोसा मालिन बज्रयोगिनी छलीह), सतीत्वक परीक्षा लेल अग्निपरीक्षाक विधान (सीता जकाँ मांजरिकैँ सेहो अग्निपरीक्षा देबऽ पड़लनि), तांत्रिक नृत्य (असि खंडानृत्य, रणचंडी नृत्य, पूजानृत्य एवं बज्र योगिनी नृत्य), काकदूत (बाजिल)क लोकपरंपरा, स्थितिक अनुसार पत्रलेखनक जनपदीय पद्धति (सिन्दूरसँ सोहाग, काजरसँ वियोग एवं रक्तसँ बलिदान बोधक) आदिक प्रचलन अवशिष्ट छल।

एहि गाथामे चर्चित नारी पात्र सभक चारित्रिक विश्लेषण कयलासँ मिथिलांचलक तत्युगीन नारीलोकनिक स्थितिक अभिज्ञान स्वतः प्राप्त भऽ जाइछ। लोरिककैँ सौन्दर्यश्री मांजरिक शील, श्रद्धा ओ धर्मबुद्धि तथा विलासवती चनैनक उद्दाम यौवन, बुद्धिचातुर्य ओ साहचर्यसुख प्राप्त छलनि। मांजरि गंगा छलीह तँ चनैन यमुना आ दुहूक प्रवहमान संगम पर लोरिक प्रयागपुरुष बनिकऽ ठाढ़ छलाह। मांजरि सतीक प्रतीक छलीह तँ चनैन राधाक। मालिन सम्प्रदायमे दीक्षित कोसा तांत्रिक साधनामे प्रवीण छलीह। आलोच्य गाथामे मिथिलामे प्रचलित वस्त्राभूषण, लोकाचार, नदी-पोखरि, खेत-पथार, भोज-भात आदिक सजीव अंकन कयल गेल अछि।

सलहेस : शील, शक्ति ओ सौन्दर्य गुणादिसँ मंडित सलहेसक गाथामे दुसाधलोकनिक लोकदेवता राजा सलहेसक लोकरक्षक एवं लोकरंजक व्यक्तित्वक आकलन भेल अछि। साहसिकता, पराक्रम, रणकौशल ओ देशप्रेमक लेल प्रख्यात सलहेस हिमगिरिसँ गंगाधरि अपन विजय वैजयन्ती फहरौने छलाह। आलोच्य गाथा वन-पर्वत, हरिअर धरती, वन्य पशु-पक्षी आदिसँ भरल-पूरल एकटा रोमांटिक गाथा थिक, जाहिमे राष्ट्रक प्रति निष्ठा एवं कर्त्तव्यक अर्थ भौतिक प्रेमक बलिदान सेहो कयल गेल अछि। राष्ट्रीय आपातकालमे हुनक प्रेयसी कुसमा-दोना सेहो अपन बुद्धि-चातुर्यक बलसँ राष्ट्र रक्षाक संदर्भमे सक्षम सिद्ध भेलीह। मिथिलांचलमे अहुखन राजा सलहेस ओ अनंग कुसमाक पूजा लोक देव-देवीकरूपमे प्रचलित अछि।

सलहेसक गाथामे वर्णित कुसमा-दोना एवं हिरिया-जिरिया वस्तुतः ओहि युगमे व्यवस्थित मालिन सम्प्रदायमे दीक्षित छलीह। मिथिलांचलमे एहि मालिन लोकनिकैँ (मिथिलाक मालिन–डॉ० मौन, वैदेही, दरभंगा, जनवरी, 1988) दोहाइ देबाक परंपरा अवशिष्ट छैक। मैथिली लोकमंत्रादिमे हिरिया-जिरियाकैँ बंगालिन बेटी कहल गेल अछि। पं० राजेश्वर झाक अनुसारेँ (लोकगाथा विवेचन) मालिन सम्प्रदायक प्रसार मिथिलांचलसँ कामरूप-कामाख्याधरि छल। रूप-गुण, गति-मति एवं यौवनमे सर्वोपरि तथा सम्मोहन-वशीकरण आदिमे प्रवीण मालिनक चरितांकन एहि गाथामे विशेष रूपसँ भेल अछि।

'राजा सलहेस' (डा० मणिपद्मक औपन्यासिक कृति)मे सेहो मिथिलाक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्राप्त छैक जाहिमे सातम-आठम सदीक मिथिला, नेपाल, तिब्बत ओ चीनक ऐतिहासिक घटनावलीक प्रसंगेँ उत्तर मिथिला (मधेस) पर मंगोल वा किरात आक्रमणक सामना करबामे गाथानायक सलहेस अपन जाहि उच्च रणकौशल, पराक्रम, ओ साहसिक नेतृत्वक परिचय देने छथि, ओ अद्वितीय अछि। फलस्वरुप आलोच्य गाथामे राष्ट्रप्रेम एवं देश भक्तिक वीरताक स्वर प्रमुख बनि गेल छैक। मुदा श्रृंगारक अंतःसलिला सेहो गाथा नायिका कुसमा-दोनाक अपन स्वप्नपुरुष सलहेसक प्रति एकांत प्रेममे परिलक्षित होइछ। लोरिक जकाँ सलहेसो मात्र साधारणे अर्थमे वीर नहि अपितु श्रीभोलानाथझाक अनुसारे तांत्रिको अर्थमे वीर छलाह, जे कुसमाक सानिध्य पाबि वीराचारसँ दिव्याचारमे उत्तीर्ण भेल छलाह।

एवं प्रकारे राजा सलहेसक गाथा मातृभूमिक रक्षाक लेल अपन सर्वस्व अर्पणक दिव्य प्रेरणा दैत अछि। संगहि एहिमे परिस्थितिजन्य अपराधी (चूहर) कैँ प्रेम ओ सहृदयतासँ नीक जीवन जीवाक अवसर प्रदान करैत मानव कल्याणक मार्ग प्रशस्त कयल गेल अछि। मानव कल्याणक लेल लोकरिपुदमन ओ आत्मोद्धारक लेल आभ्यंतरिक

रिपुकदमन करबामे समर्थ लोक वीर आस्पदसँ विभूषित भऽ सकैछ। सलहेस ओहने वीर छलाह।

दुलरादयाल : 'दुलरादयाल' वस्तुतः जलजीवी लोक, प्रवहमान नदी एवं उत्ताल सागरक एकटा जीवंत गाथा थिक, जाहिमे हिमालयसँ लऽ कऽ गंगासागरधरिक प्राकृतिक सुषमा, मिथिला-कामरूप ओ बंगभूमि होइत यवद्वीप (जावा) ओबालीद्वीप (सुमात्रा) धरिक साहसिक यात्राक वृत्तांत अछि। एहि गाथाक नायक दुलरा दयालसिंह नदीदेवी कमलाक अनन्य भक्त, तांत्रिक नर्त्तक, दुस्साहसिक सार्थवाह एवं महान अभियानी छलाह। एहि गाथामे हिमालयकेँ हंसालय, मिथिलाकेँ कमलालय एवं सागरकेँ शंखालय कहल गेल छैक। एवं प्रकारेँ दुलरा दयालक गाथा नदीसाहित्यक एकटा अमूल्य अभिलेख मानल जाइछ।

स्वाभिमान, दृढ़प्रतिज्ञा, साहसिकता एवं आंतिरक त्यागक चरमावस्था मृत्यु धरिकेँ स्वीकार करबाक गाथा दुलरा दयालक नायक नटुआ दयालसिंहक नामे सेहो प्रख्यात छलाह। अपना युगक महान नर्त्तक होयबाक कारणेँ हुनक नामक आगाँ 'नटुआ' आस्पद सेहो लागल छैक। हुनका बखरी (बेगुसराय)क राजा गामक जमायक नाते विदाइकालमे एक दिनक राज एवं सिंहक मानद उपाधि सादर सम्मानित कयने छलथिन। किएक तँ अपना युगक महान साधिका (महाडाइन) बहुरा ठकुराइन (गोढ़िन) केँ ओ पराजित कऽ देने छलाह। नटुआ दयालक जीत तरुआरिक जीत नहि भऽ कऽ साधनापरक नृत्यक जीत छल। बखरी राजक प्रचंड योगिनी बहुराक इच्छाशक्तिक (विल पावर) आगाँ मनुष्य वा पशु-पक्षी सभटा अवश भऽ जाइत छल। ओ अपन श्री, सौन्दर्य ओ नृत्यकला द्वारा केहनो योद्धा, बोद्धा, नरेश, श्रेष्ठी वा नीतिज्ञकेँ सम्मोहित करबामे समर्थ छलीह। बहुराक पुत्री अमरावती दुलरादयालक पत्नी छलीह।

बहुराक अर्थ होइछ घूमयवाली अर्थात् फेर-फेर आबयवाली जे अपन चलबा द्वारा अपन पैरके बहुरबैत रहैत अछि। हुनक इच्छा छलनि जे हिमगिरि सँ लऽकऽ गंगाधार धरि जे नौका व्यापार चलैत अछि, ओकर प्रधान जल मार्ग गंडक बाटे रहय, जे कमलाक बाटे छलैक। अपन इच्छाक पूर्तिक क्रमे ओ सदिखन भय ओ आतंकक सृजनमे तल्लीन रहैत छलीह, कियेक तँ वर्तमान समाज पश्वाचारक अवस्थामे अछि, जे भय ओ आतंक द्वारा परिचालित अछि ने कि श्रद्धा ओ विश्वासक द्वारा। फलस्वरूप वणिकशक्ति, राजशक्ति ओ लोकशक्तिकेँ संतुलित रखबाक लेल भय ओ आतंकक सृजन आवश्यक बुझना गेल छल।

एवं प्रकारेँ गाथानायक दयालसिंह ओ नायिका अमरावतीक बीच खलपात्रक रूपेँ ठाढ़ि बहुराक चरित्र तंत्र-मंत्र, सिद्धि-साधना आदिक कारणेँ यद्यपि आलोच्यगाथा भयोत्पादक एवं रहस्यमय बनि गेल अछि, तथापि एहि सिद्धि-साधनाकालीन गाथामे मिथिलाक प्राकृतिक सुषमासँ सम्पन्न पृष्ठभूमिमे हिमालयसँ लऽकऽ गंगासागर धरिक मत्स्यजीवी ओ जलजीवीलोकनिक सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनधाराक नीक आकलन कयल गेल अछि।

नैका बनजारा–उत्तर मिथिलाक मैदानी भूभागमे विशेष प्रचलित नैकाबनिजाराक गाथा अभियान एवं प्रेम प्रधान गाथा थिक, जाहिमे गाथा नायक नैकाक पत्नी फुलेश्वरी एवं बहिन तिलकेश्वरी एवं तुलेश्वरीक अतिरिक्त तिलंगा नामक दिव्य बाछाक चरितांकन विशिष्ट मानल जाइछ। नैका अपन नवविवाहिता पत्नीकेँ घरमे राखि बारह वर्षक व्यापारिक अभियान पर प्रस्थित भेल छलाह। हुनक अनुपस्थितिमे फुलेश्वरी अपन कुटिला ननदि तिलकेश्वरीसँ प्रताड़ित भऽ दासी ओ वेश्यासभक क्रय-विक्रय कयनिहार कुंभा डोमक हाथेँ होइत द्रोणनगरक रानीक संरक्षण पाबि अपन सतीत्वक रक्षा मे समर्थ भेलीह।

आलोच्य गाथाक अनुसार मिथिलाक बनिजारालोकनि तिब्बत ओ नेपालसँ लऽ कऽ मोरंग, चंपा, हरिहरक्षेत्र, जगन्नाथपुरी, तामलुक (ताम्रलिप्ति) आदि होइत जावा, सुमात्रा धरि व्यापार करैत छलाह। प्रायः सातम आठम सदीमे भारतीय व्यापार उत्कर्ष पर छल। ओहि युगक व्यापरीलोकनिकेँ दस्यु आतंकक सामना करऽ पड़ैत छलैक। ओहि

कालक साहित्य युद्ध, रोमांस, स्टंट, चालाकी, ईर्ष्या-द्वेष, लूटमार ओ देवी-देवताक अलौकिक कर्म-विन्यास सँ यद्यपि आवृत्त भेटैत अछि, मुदा नैकाक गाथा एहि अतिचारी चतकारसँ प्रायः मुक्त देखना जाइछ। अर्थात् आलोच्य गाथा पूर्णतः मानवीय स्तर पर विकसित अछि। तिलंगाक मानवीकरणकेँ अपवाद स्वरूपेँ मानल जा सकैछ।

गाथानायक नैकाक व्यक्तित्व महान यात्री, ज्योतिषी, वैद्य, साहसी अभियानी, सांधिविग्रहिक, त्राता, सार्थवाह, वंशीवादक, रत्नपारखी, खानक खोजी ओ पक्षी सभक बोलीक विशेषज्ञक रूपेँ अंकित भेल अछि। ओ बनौषधिक नीक ज्ञाता सेहो छलाह। अर्थात् एकटा जीवनमे अनेक जीवनकेँ जीवैत छलाह। एहि प्रेम कथात्मक एवं अभियानी गाथामे फुलेश्वरीक विरहक मार्मिक अभिव्यक्ति भेल अछि। हुनक आत्मीय संरक्षिका द्रोणनगरक रानी तुलेश्वरीक आचरणक प्रसंगेँ जे चित्रांकन भेल अछि, ओ तत्युगीन मिथिलाक नारीक उत्कृष्ट आचरणक प्रतीक बनि गेल अछि–''लोक कल्याण लेल आकुल तुलेश्वरी जखन अपना भवनसँ बाहर भए गंगास्नान करए जाथितँ नित्यप्रति अन्न, वस्त्र वा सोना दान करथि। विद्वान, भिक्षु, कुमारि कन्या, गाय आ पक्षीकेँ भोजन देने बिना ओ भोजन नहि करथि।''

बारह वर्ष बाद व्यापारिक अभियानसँ घुरलाक बाद जखन हुनका अपन बहिन तिलकेश्वरी द्वारा देल पत्नी फुलेश्वरीक प्रताड़नाक कथा ज्ञात भेलनि, ओ घटना क्रमकेँ जाँच कऽ 'पंचद्वारा निर्धारित दण्डक अनुसारेँ तिलकेश्वरीकेँ सूली देबाक निर्णयकेँ स्वीकार कयलनि, मुदा विशालहृदया फुलेश्वरी अपन ननदिकेँ क्षमा कऽ जाहि उच्चाशयताक परिचय देलनि ओ एकटा दिव्य निदर्शन मानल जाइछ। एवं प्रकारेँ नैका बनिजाराक गाथामे दुस्साहसी नैका एवं सती साध्वी नारी फुलेश्वरीक जीवनसंघर्षक कथा मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक आइना बनि गेल अछि।

दीना-भदरी : मुसहरलोकनिक समाजसँ उद्भूत दीना ओ भदरीक गाथामे श्रमशोषणक विरुद्ध आदिम क्रांतिक विगुल, असाधारण वीरता, जनकल्याणक भावना, सामाजिक अनाचारक विरोध एवं स्वतंत्र जीवनधाराक निमित्त गाथानायककेँ जातीय परिवेशमे लोकदेवताक आस्पद प्राप्त छनि। एहि गाथाक भाषा आस्ट्रिक परिवारक भाषासँ प्रभावित अछि।

आलोच्य गाथाक अनुसारेँ जोगिया-जांजरक निवासी दीना ओ भदरीक शौर्य ओ शक्तिसँ लोक बड़ आतंकित छल। हुनका लोकनिकेँ दासताक जीवनसँ घृणा एवं स्वच्छंद जीवन प्रिय छलनि। कृषि कर्मक अपेक्षा शिकारकऽ जीवनयापन करब मुसहरलोकनिक स्वभाव मानल जाइछ। ओहि क्षेत्रमे कनकसिंह धाइमक प्रभुत्व छल आर हुनक खेतमे ओ सभ मजदूरकरूपेँ बेगार खटैत छल। एक दिन कनकसिंह धाइम दीना ओ भदरी दुनू भाइकेँ खेतमे काज करबाक आदेश देलनि। मुदा दुनू भाइ स्पष्ट कहि देलकनि जे कंद-मूल, फल-फूल ओ शिकारसँ जीवन-यापन कयनिहार ओ सभ बेगारी नहि करत। फलस्वरुप कनकसिंह ओ दीना-भदरीक बीच जमिकऽ मारि भेल आर दुनू भाइ मारल गेल। मुदा सात दिनक बाद ओ पुनः जीवित भऽ कऽ कनकसिंहसँ युद्ध ठानि देलक, जाहिमे कनकसिंह मारल गेलाह। दीना ओ भदरी श्रमशोषणक विरुद्ध अंत धरि लड़ैत-लड़ैत अंततः पोटरा (गीदर) द्वारा मारल गेल। ओहि दिन कोनो मुसहरनी सिंगार-पटार नहि कैलक–''कोनो मुसहरनी नहि केलक सिंगार/कालू बाबाके कनने धार बहि गेल/अम्मा निरसी कनने बिरिछ झरि जाए।''

मुदा दीना-भदरीके पुनजीर्वित भऽ उसरीडीह अबिते जेना चारू दिस उछाह पसरि गेलैक–हांसू झुनकी, बसुला झुनकी, काजर सेनूर सिंगार कएलक। जौं जीवैत छला दीना-भदरी जोगिया नगर। दीना-भदरीक अंतिम युद्ध जोरावरसिंह सँभेल। जोरावर सिंहक अत्याचारसँ लोक आतंकित छल। ओ पूर्वक कनियाँकेँ पश्चिम आ पश्चिमक कनियाँकेँ पूर्व, दक्षिणक कनियाँकेँ उत्तर आ उत्तरक कनियाँकेँ दक्षिण दिस नहि जाय दैत छल। एक दिन जोरावरसिंहक ओहिठाम हिरिया आ जिरियाक जाइत महफाकेँ दीना-भदरी रोकि टेलक। दुनूमे मारि बजरि गेल, जाहिमे जोरावरसिंह

मारल गेलाह।

एवं प्रकारेँ मुसहरलोकनिक वीर नायक कनकसिंह ओ जोरावरसिंहक क्रमशः श्रम शोषणक विरुद्ध एवं अनाचारक विरुद्ध लड़िकऽ हुनक आतंकसँ लोककेँ मुक्ति प्रदान कैलनि। हुनक प्रेयसीद्वय हिरिया ओ जिरिया (मालिन संप्रदायमे दीक्षित)क स्थान मिथिलांचलक जनजीवनक जादू-टोनाक क्षेत्रमे बड़ विशिष्ट मानल जाइछ।

बसावन-बखतौर : दक्षिण मिथिलांचलमे भुइयाँ बाबाक नामे प्रसिद्ध यदुवंशी वीर बसावन ओ बखतौरक गाथा बेस लोकप्रिय अछि। ओ लोकदेवी गहिलक सेवक एवं गो-शक्तिक संपोषक छलाह। हिनक गाथामे मध्यकालीन मिथिलाक गोचर संस्कृति, तंत्र-मंत्र, सूर्योपासना एवं शक्तिसाधनाक अतिरिक्त युद्ध ओ प्रेमक प्रासंगिक कथामे शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्षक उद्घोष कऽ लोककल्याणक मार्ग प्रशस्त कयल गेल अछि।

आलोच्य गाथाक अनुसार बसावनक पृष्ठभूमि गोचर संस्कृतिक एवं विस्तार लोक संस्कृतिक छैक। गाथा नायकक चरितमे एक दिस शौर्य-पराक्रम देखना जाइछ तँ दोसर दिस श्रृंगारिकता। यदुकुलक प्रख्यात वीर वसावन अपन सम्पूर्ण जीवनमे अन्याय, अत्याचार, शोषण एवं उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्ष कयलनि। हुनक मूल संघर्ष क्षेत्रीय सामंत दलेलसिंहसँ छल, जे हुनक अनुज संतोषी, सहधर्मी बथनियाँ एवं गाय-महीस सभकेँ ढाठि देने छलैक। ओ पहिने दलेलसिंहक प्रधान नट नथुआक पश्चात् दलेलकेँ अपन बल-विक्रमसँ परास्त कऽ सभकेँ बंधनमुक्त करौलनि। वीर वसावनक स्पष्ट घोषणा छलैक जे जाहि राजमे निर्बल ओ भूमिहीन लोकक शोषण हो, ओ ओहि राजमे वृत्ति स्वीकार नहि करत। मुदा हुनक चरितक दुर्बल पक्ष छल नीराक संग प्रेमप्रसंग, जकर ओ निर्वाह नहि कऽ सकलाह।

बखतौर बसावनक सहधर्मी छलाह-गोशक्तिक संपोषक एवं गहिलोपासक। फलस्वरूप दुनू पशुपालक लोकनिक बीच लोकदेवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। एहि दुनू यदुवंशी वीरक जीवनक अंत बड़ दुखद ओ पराजय-बोधक बुझना जाइछ। बसावनक जीवनमे जतय परकीया प्रेमक उच्छल प्रवाह देखना जाइछ ओतय बखतौर गृहस्थीक आंगनमे मर्यादित छथि। दुनू गाथानायक मध्यकालीन मिथिलांचलक पात्र छलाह, जाहि युगमे सामंती स्वेच्छाचारिता चरमपर छल, जकर विरुद्ध बसावन, लोरिक, दीना ओ भदरी जकाँ शोषण बेगार, डोला आदिक विरुद्ध संघर्ष कयलनि। बखतौरक गाथामे विवाहक क्रममे मौड़ीक निर्माण, द्यूतक्रीड़ा, मल्लयुद्ध मालिन सेवा आदिक प्रासंगिक कथासभक गायन मानर पर आइयो नृत्यक संग प्रचलित अछि।

गोपीचंद : गोपीचंदक कारुणिक गाथा बंगाल जकाँ मिथिलांचलमे सेहो लोकप्रिय छैक। मैथिली गाथाक अनुसार गोपीचंद गुरू गोरखनाथक शिष्य बनबाक लेल अपन राजपाट त्यागि देलनि, जाहिसँ चारू दिस क्रंदन पसरि गेल ''मैना माता रोबइ पटकि सिंहासन/हंसा चिरई रोबइ कोठा अटारी/गामके रैयत किसान रोबइ/बाटके बटोही रोबइ/ कुइयाँ के रोबइ पनिभरनी/ऐसन ऐसन दुलरुआ निकलि कए भेलनि जोगी।''.....

बंगला गाथाक अपेक्षा गोपीचंदक मैथिली गाथा बेसी मार्मिक छैक। यद्यपि एहि गाथाक उद्भवक श्रेय बंगालकेँ देल जाइछ। गोपीचंदक माय मैनावती गोरखनाथसँ दीक्षा लऽ एकटा प्रख्यात डाकिनी भऽ सहजज्ञानक स्वामिनी बनि गेल छलीह मुदा ओ गोपीचंदकेँ एहि मार्गसँ अलग राखऽ चाहैत छलीह। यद्यपि विवाहोपरांत गोपीचंद अपन दुनू रानीक संग सुखोपभोग करैत राजपाटमे लागल छलाह मुदा मैनावतीकेँ गोपीचंदक विलासमय जीवन नीक नहि लगलनि।

प्रचलित गाथाक अनुसार ब्रह्मज्ञानी मैनावती अपना युगक प्रख्यात डाकिनी छलीह, जनिक प्रेरणासँ गोपीचंद महाज्ञानक दीक्षा लऽ कऽ कनफटा जोगी बनि गेलाह। पूर्वोत्तर भारतमे नाथ सम्प्रदायक कनफटा जोगीक बड़ प्रभाव छल। बज्जिकांचलक गामेगाम जोगी बाबाक पूजा होइत छनि आर हुनका लाल विष्ठी, गाँजा भरि चीलम चुट्टा आर

काठक खरामक अतिरिक्त घोड़ा अथवा ऊँटक मूर्त्ति (वाहन प्रतीक) श्रद्धा पूर्वक चढ़ाओल जाइत छनि। एहि क्षेत्रमे जोगी बाबाक गीतसभ लोकप्रचलित छैक। गोरखपंथी साधुलोकनि गोपीचंद ओ राजा भरथरीक गाथा सारंगीपर आइयोकाल्हि गबैत छथि। गोपीचंद राजा भरथरीक भगिनीपुत्र छलाह। श्रुति ओ परम्पराक अनुसार गोपीचंद जालंधर पादक शिष्य छलाह एवं भरथरी गोरखनाथक। जायसी अपन 'पद्मावत'मे गोपीचंदकेँ जोगी भऽ कजरीवन जएबाक उल्लेख कयने छथि।

आलोच्य गाथामे स्त्रीकेँ चरखा काटिकऽ जीवन निर्वाह करबाक संदेश प्राप्त होइछ, जाहिसँ मिथिलांचलक श्रम नियोजन द्वारा शीलक रक्षाक प्रति सामाजिक दृष्टिकोणक अभिव्यंजना देखना जाइछ। एतबे नहि, जोगीक कठोर तपस्वीक जीवनक उपदेश सुनि कऽ गोपीचंद अनुपम शील एवं अलौकिक नम्रताक संग भीख लऽ विरह ओ विरक्तिकेँ अंगरागक रूपेँ स्वीकार करबाक साहस कयलनि।

रइयारणपाल : उत्तर मिथिलांचलक एकमात्र सवर्ण लोकनायक रइया रणपालक गाथा सम्पूर्ण मिथिलांचलमे प्रचलित अछि। एहि प्रेमप्रधान गाथाक नायिका गांगो पूर्वमे पूर्णियां, पश्चिमे मगह, उत्तरमे सातोखंड पहाड़ एवं दक्षिणमे गंगाक सात धार मध्यक अपूर्व सुन्दरी छलीह, जनिक रूप-लावण्य ओ उन्मत्त यौवनक चर्च मिथिले धरि सीमित नहि अपितु नेपाल (मधेस) धरि व्याप्त छल। गाथाक एकटा दोसर परंपराक अनुसार गांगो कोशीसँ पश्चिम ओ कमलाक पूर्व क्षेत्रक अपूर्व सुंदरी छलीह। आलोच्य गाथा रइया रणपाल (पालवंशीय क्षत्रिय) ओ निषादसुंदरी गांगोंक बीच आभिजात्य ओ जनसामान्यक बीच प्रचलित प्रेमात्मक गाथा थिक।

मध्यकालीन मिथिलामे प्रचलित लोकाचारक दर्पण बनि गेल अछि ई गाथा। गांगोक रूपलवण्यकेँ देखि भूलुंठित रणपाल सेवा-सुश्रूषा चेतनापर्यन्त कयनिहारि गाथानायिका गांगो द्वारा कयल गेल आतिथ्य सँ प्रभावित भऽ ओही ठाम रमि गेलाह। एहि अभ्यंतर दुनूक बीच प्रेमाकर्षण बढ़ऽ लागल। मुदा एक दिन गांगोक ओलहन सुनि जे अहाँक घामसँ हमर कंचुकी भीजि जायत आर महकए लागत, रणपालक आभिजात्य संस्कार जागि गेल आर ओ गांगोकेँ छोड़ि अपन राज घुरि गेलाह। गांगोक रोकने ओ नहि रुकि सकलाह। ओ अपन सखी-बहिनपा, अरोसिन-पड़ोसिन सभक अभ्यर्थना कयलक जे रूसल प्रियकेँ मना दियौक। मुदा गांगोकेँ स्पष्ट सुनय पड़लनि—'अपन पियाकेँ अपनहि लेहु मनाय।'

गाथाक अनुसारे बारह वर्षक पश्चात रइयारणपाल गांगोक एकनिष्ठ प्रेमक जाँच करबाक लेल सुगाक रूप धारण कऽ गांगोक गाम आबि गेलाह। दैवी कृपासँ ओ सुगारूपी रइयारणपालकेँ चिन्हि ओकरा पाछू लागि गेलीह आ मंत्रबिद्ध पान खुआकऽ वशीभूत कऽ लेलनि। एवं प्रकारेँ प्रेमक परीक्षामे उत्तीर्ण गांगोक साधना पूर्ण भेलनि। उत्तर मिथिला (मधेस) मे गांगोक पूजोपासना लोकदेवीक रूपमे अद्यापि प्रचलित अछि आ रइयाक लोकमूर्त्ति आलमनगर (मधेपुरा) क्षेत्रमे लोकदेवताक रूपमे पाओल जाइछ। मोरंगसँ प्राप्त रइया-गांगोक प्रासंगिक गीत सभमे मध्यकालीन मिथिलाक तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, सिद्धि-साधना, अंतर्जातीय प्रेम-प्रसंग, अमरपुरहाट, मांछ, कौड़ी आदिक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भेल छैक। गांगो सेहो संभवतः मालिन सम्प्रदायमे दीक्षित छलीह।

राजाधनपाल : उत्तर मिथिलांचलमे राजा धनपालक गाथा प्रचलित छैक। रइयारणपाल जकाँ राजा धनपाल सेहो पालवंशीय क्षत्रिय छलाह। धनपालक गाथाक अनुसार मिथिला (मोगलान अर्थात् मुगलकालीन भारतीय भू भाग) ओ मोरंग (मधेस अर्थात् नेपालक तराइ भाग) क अन्तर्सम्बन्धक अभिज्ञान प्राप्त होइछ जाहिमे गोशक्तिक अपहरण, द्यूत-क्रीड़ा ओ ओकर कुपरिणाम, रानीविलास, धाइमलोकनिक प्रभुत्व, कस्तूरीक व्यापार आदिक प्रासंगिक उल्लेख भेल अछि। मोरंग क्षेत्रक कदमाह मे राजा धनपालक गढ़ी तथा जनकपुर क्षेत्रक महदैयामे रइयारणपालक गढ़ीक ध्वंसावशेषक अनुश्रुति प्रचलित अछि।

लवहरि-कुसहरि : लवहरि कुसहरिक गाथा वस्तुतः उत्तर रामचरित जकाँ मिथिलांचलमे लोक प्रचलित छैक, जाहिमे सीताक वनवास, लव-कुशक जन्म, लालन-पालन ओ शिक्षा-दीक्षा, युद्ध आदि सँ लऽ कऽ सीताक पाताल प्रवेश धरिक मार्मिक कथा अभिव्यंजित भेल अछि। सीताक व्यथा-कथा मिथिलांचलक व्यथाकथा थिक। विश्वसाहित्यमे भरिसके कोनो राजराजेश्वरीक एकटा साधारण नारी भऽ वन्य परिवेशमे अपन दुनू पुत्रकेँ महान बनयबाक गाथा भेटत।

एहि गाथा सभक अतिरिक्त मिथिलाञ्चलमे कोसीक काम्य पुरुष रन्नू सरदार, नैना जोगिनक तंत्रपाशसँ दक्षिण मिथिलाकेँ मुक्त करौनिहार बाबा गनीनाथ, साहसिक अभियानक संग प्रेम ओ वीरताक प्रतीक कुमार वृजभान मिथिलासँ मोरंग धरि व्यापार कयनिहार फेकू-दयाराम, तंत्र-मंत्रक पाशसँ अपन पिता ज्योतिकेँ मुक्त करौनिहार कारिख, मिथिलाक राजा राघवसिंहकेँ मोगलक बनिसार मुक्त करौनिहार शशिया आदिक गाथा सभ सेहो प्रचलित छैक। मिथिलांचलक जातीय परिवेशमे बेनीराम, लालवन बाबा, गरीबन भुइयाँ, श्यामसिंह आदिक कथागीत सेहो उल्लेखनीय अछि। एहि लोकगाथा सभक परम्परित प्रस्तुतिक मूलमे लोकानुरंजनक अतिरिक्त लोकमे शौर्य-पराक्रम, त्याग-तपस्या एवं लोककल्याणक भावनाक प्रसारक नीति प्रकारान्तरसँ निहित रहल अछि, जकरा भव्य ओ गरिमामय बनयबाक लेल मिथिलाक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्राप्त छैक।

एवं प्रकारेँ मैथिलीक गाथासभ भारतीय गाथा साहित्यक इतिहासमे अपन ऐतिहासिक ओ भौगोलिक पृष्ठभूमि ओ परिवेश, सांस्कृतिक गरिमा, सामाजिक संदर्भ, जनपदीय चेतना आदिक कारणेँ विशिष्ट स्थान रखैत अछि।

●

मिथिलाक संगीत परम्परा

डा० चण्डेश्वरझा

विषयवस्तुक सन्दर्भमे सर्वप्रथम संगीत विषय पर ध्यान देब आवश्यक बुझना जाइछ। ''सम्'' एवं ''गीत'' दुनूक संयोग सँ संगीत शब्दक निर्माण भेल अछि। ''सम्'' (सम्यक)क अर्थ नीक एवं सुन्दर होइछ। वाद्य एवं नृत्य दुनूक मेल भेने गीत नीक ओ सुन्दर बनि जाइछ। गीत, वाद्य एवं नृत्य एहि तीनूक समन्वित स्वरूप कैँ संगीत कहल गेल अछि। संगीतसँ आनन्दक आविर्भाव होइछ। आनन्द ईश्वरक स्वरूप अछि। संगीतक एहन स्वरूप होएबाक कारण मनुष्य ओकर अभ्यास करैत अछि। संगीतमे रत व्यक्ति तप, दान, यज्ञ, कर्म, योग आदिक कष्ट सहन नहि कए मोक्षमार्ग धरि पहुँचैते अछि। ज्ञान आओर योगक सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी आचार्य याज्ञवल्क्यक कथन अछि–

''वीणा वादन तत्वज्ञः श्रुति-जाति विशारदः।
तालज्ञश्च प्रयासेन मोक्षमार्गं प्रयच्छति।'' याज्ञवल्क्य स्मृति

संगीत रूपी एकमात्र साधनसँ, धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारू पुरुषार्थ भेटैत अछि। भगवत्‌भजनसँ धर्म, राजा एवं श्रेष्ठ व्यक्तिसँ प्राप्त सम्मानक रूपमे अर्थ, अर्थ सँ काम तथा ईश्वरक कृपाक फलस्वरूप मोक्षक प्राप्ति होइछ आओर इएह मानव धर्मक लक्ष्य अछि।

संगीत जगतक इतिहास अति प्राचीन एवं विशाल अछि। हजारो-हजार वर्षक एहि इतिहासमे हमरालोकनिकैँ ओकर क्रमिक विकास दृष्टि-गोचर होइछ।

विदित अछि भारतमे सर्वप्रथम साम गायनक प्रचलन छल। वेद परम्परामे संगीतक उत्पत्ति सामवेदसँ मानल गेल अछि। तैँ कहल गेल जे **''सामवेदादिदं गीतं संज्जग्राह पितामहः''**।

एक परम्पराक पश्चात् दोसर परम्परा आरम्भ भेल। दोसर परम्पराक रूपमे गाथा गायन, गाथा गायन परम्पराक पश्चात् क्रमशः छन्द गायन, प्रबन्ध गायन, राग गायन एवं थाट गायनक विकास भेल। युग परिवर्त्तनक संग संगीत जगतमे सेहो परिवर्त्तन होइत गेल अछि। ई परिवर्त्तन मात्र गायनमे नहि अपितु रागक स्वरूपमे सेहो होइत रहल अछि। सर्वप्रथम श्रुति, श्रुतिसँ स्वर, स्वरसँ ग्राम, ग्रामसँ मूर्च्छना, मूर्च्छनासँ जाति, जातिसँ राग, रागसँ थाटक उत्पत्ति भेल अछि।

संगीत शास्त्रक अवतरणमे अनेक परम्पराक उत्पत्ति भेल अछि यथा–वेद परम्परा, आगम एवं पुराणक परम्परा तथा ऋषि प्रोक्त परम्परा। उपर्युक्त तीनू परम्परामे अनेकानेक महर्षिक प्रादुर्भाव भेल अछि जे अपन दिव्य ज्ञानसँ संगीत जगतकेँ आलोकित करैत संगीतशास्त्रक रचना कएल। परम्पराक एहि धारामे क्रमशः नन्दिकेश्वर, नारद, स्वाति, तुम्बरू, भरत, दत्तिल, कोहल, विशाखिल, कश्यप, याष्टिक, आञ्जनेय, हनुमन्मत, शार्दूल, मतंग, सुधाकलश, अभिनवगुप्त, महाराज भोज, नान्यदेव, सोमेश्वर, जगदेवमल्ल, शारदातनय, सोमराज, जयदेव, शारंगदेव, पं० दामोदर, पं० अहोबल, एवं लोचनझा आदि मुख्य छथि।

भारतीय संगीत जगत विश्वक अन्य कोनो देशक संगीतसँ प्राचीन अछि। प्राचीन भारतमे गायनक एके पद्धति छल संगहि एके प्रकारक संगीत विद्यमान छल। मुसलमान शासकक आक्रमण भारतमे भेलाक कारणेँ एहिठाम आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक समस्त क्षेत्रमे आघात भेल। एहिठाम गायन परम्परा पर प्रहार भेल। फलस्वरूप परम्परा छिन्न-विछिन्न भए गेल। कलाजगत एवं शास्त्रजगतमे शून्यता आबि गेल। उपर्युक्त आक्रमण महमूद गजनबी द्वारा दशम सदी ई०क अन्तिम दशकमे भेल। मन्दिरक विध्वंश तथा बलात् धर्मपरिवर्त्तन ओकर योजनाक अनिवार्य अंग छल,

फलस्वरुप जतऽ-जतऽ ओकर पाएर पड़ल, ओत विद्वानक अभाव होइत गेल। अलवरूनी ई स्वीकार कयने छथि जे ''हिन्दू विद्या ओतऽ चलि गेल जतऽ हुनकालोकनिक पहुँच नहि छल।''

महमूद गजनवीक आक्रमण कश्मीर पर 1015 ई० मे भेल एवं कश्मीरक विनाश कऽ देलक। ओहि ठामक पंडित छल वा मूर्ख, गुणी छल वा गँवार सबकेँ अपना लेल इस्लाम एवं मृत्युमे सँ कोनो एकक चयन करबाक छलैक। एहि बातसँ सम्पूर्ण भारतक राजा, विद्वान, कलाकार, धर्मनिष्ठ सभ जनमे भयावह स्थिति व्याप्त भए गेल। एहि विषम परिस्थितिक कारमेँ सभ भारतक अन्यान्य क्षेत्र मे जाकऽ जीवन-यापन करऽ लागल। एहने विषम स्थितिमे पम्मार क्षत्रिय (कर्णाटदेशीय) नान्यदेव मिथिला पर चढ़ाई कऽ शासक बनि गेलाह। हिनक शासनकाल 1089 ई०मे स्थापित भेल। किछु दिनसँ निर्विघ्न बीतल परन्तु पश्चात् बंगदेशीय मुर्शिदाबाद जिलाक अन्तर्गत कर्ण सुवर्णक राजा आदिशूर (विजयसेन)क आज्ञानुसार हुनक पुत्र वल्लालसेन मिथिला पर आक्रमण कएलक। नान्यदेव केँ परास्त कऽ हुनका बन्दी बनौलकनि।

महाराजा नान्यदेव संगीतशास्त्रक मूर्द्धन्य विद्वान छलाह। हुनक प्रसिद्ध ग्रंथ ''सरस्वती हृदयालंकार'' अछि, जकर दोसर नाम 'भरतभाष्य'' अछि। एहि ग्रंथमे पूर्ववर्त्ती विद्वानक यथा आपिशलि, पाणिनि, कश्यप, मतंग, देवराज, शतातप तथा रत्नकोशक चर्चा अछि। महाराज नान्यदेव गान्धार ग्रामक चर्चा करैत ओहिसँ उत्पन्न राग समूह केँ लौकिक व्यवहारक लेल उपयुक्त कहलन्हि।

मुसलमानक आक्रमण रुकलाक बाद 14म शताब्दीक आरम्भसँ एहिठामक कला पुनर्जीवित भेल। कलाकातर एवं शास्त्रकार पुनः अपन वृत्तिक प्रतिएँ जागरूक भेलाह। उत्तर भारत एवं दक्षिण भारतक बीच एक व्यवस्था पर सहमति बनल जकर फलस्वरूप उत्तर भारतमे थाट आओर दक्षिण भारतमे मेलक उत्थान भेल।

भारतीय संगीतक परिप्रेक्ष्यमे जखन हम मिथिलाक संगीत परम्परा पर दृष्टिपात करैत छी तँ देखैत छी जे एकर अपन एक पृथक् इतिहास अछि जाहिमे एकर प्राचीनता एवं परम्परा समतल अछि। संगीतक क्रमिक विकासक वास्तविक स्वरूप ''मिथिलाक संगीत परम्परा''मे भेटैत अछि।

मिथिलाक संगीत परम्पराक हेतु वैदिक युग पर दृष्टि देबऽ पड़त। ओहि युग मे संगीतक सम्पूर्ण थाती पुरहितक हाथमे छल। संगीतक प्रचार-प्रसारमे पुरहितक अहं भूमिका रहल। पुरहित आन जातिक नहि मात्र ब्राह्मण होइत छलाह। यज्ञादि अवसर पर ब्राह्मणलोकनि सामवेदक ऋचाकेँ सछन्द आओर सस्वर गबैत छलाह। एहि युगक संगीत अधिकांशतया यज्ञक अंगतम रूपमे बंनल रहल। बिनु ब्राह्मणक कोनो यज्ञक सम्पादन नहि होइत छल। यज्ञ-पूजादिमे सामगान अनिवार्य छल। ब्राह्मणे द्वारा ई कार्य सम्पादित होइत छल। शतपथ-ब्राह्मणमे तँ एहन कहल गेल अछि जे बिना सामगानक यज्ञ पूर्ण नहि होइत छल।

स्वाभाविक रूपेँ ब्राह्मण धार्मिक प्रवृत्तिक होइत छलाह। सामगान ब्राह्मणक एक विशेष अंग छल। समाजक अन्य वर्गकेँ ज्ञानदान करब, वैदिक रीति-रिवाज केँ समाज द्वारा ग्रहण कराएब तथा पूजा-पाठ, यज्ञ-जाप आदिमे सामगान करब हुनक प्रधान कार्य छल। ब्राह्मणक परिवारमे सामवेदज्ञाता प्रायः सभ होइत छलाह जाहि कारण हुनक संगीतज्ञ हएब स्वाभाविक भऽ गेल छल।

प्राचीन परिपाटीक प्रभाव आइयो सम्पूर्ण मिथिलामे देखल जाइत अछि। जन्मसँ लऽ यज्ञोपवीत आदि प्रत्येक अवसर पर कोनो ने कोनो रूपेँ सामगान होइतहि अछि। वर्त्तमानक ई प्रचलित रीति-रिवाज वैदिक युगक देन थीक। अतएव मिथिलाक संगीत परम्परा-यात्रा वैदिक युगसँ आरम्भ मानल गेल अछि।

सामगानक परम्परा चलिते रहल कि गायन परम्पराक दोसर धारा आरम्भ भेल जे लोक वा लौकिक संगीत

गायन परम्परा कहौलक। ओहि गानमे नियमक परिपालनक कोनो व्यवस्था नहि छल। जीवनक सम्पूर्ण गतिविधिक सजीव चित्रण ओहि गायनमे रहैत छल। जखन सामगान समाजक अन्य वर्गक हेतु दुरूह भऽ गेल तँ, अतृप्त जनमानस ओहि गानक नकल अपन-अपन घरमे आरम्भ कऽ देलक। एहि गानमे सामगानक नियम बन्धनादिकेँ तोड़ि-मरोड़ि देल गेल।

तत्पश्चात् ई लौकिक गान जातीय गान एवं ऋतु गानक रूपमे प्रकट भेल।

एहि तरहेँ देखबामे अबैछ जे मिथिलामे कालक्रमे गानक दू श्रोत भऽ गेल। एक श्रोतमे सामगान, जे एक वर्गक विशेष अधीनस्थ रहल, दोसर ओ गान जे सर्वजन सुलभ-सरल भेल जाहिमे गानक स्वतंत्रता छल। स्वतंत्र गानमे लौकिक संगीत चलैत रहल एवं बन्धन ओ नियमक आधार पर चलयबला गान सामगान भेल। लोकजीवनक संग-संग चलऽबला संगीत लोक वा लौकिक संगीत भेल एवं विशेष व्यक्ति वा विशेष परिस्थितिक गान सामगान कहौलक।

सामगानक पश्चात गाथागायनक परिपाटी आरम्भ भेल। ऋग्वेदक अनेक मंत्रमे ''गाथा'' शब्दक उल्लेख अछि। ''गाथा'' शब्दक प्रयोग पद्य या गीतक अर्थमे प्राप्त होइत अछि। गाथा गायन करयवला केँ ''गाथिन'' कहल गेल अछि। ''ऐतरेय ब्राह्मण'' मे ऋक् एवं गाथामे अन्तर देखाओल गेल अछि। ऋक्देवी अछि एवं गाथा मानवी। ब्राह्मण ग्रन्थक द्वारा ई प्रमाणित होइत अछि जे ऋक् यजुःसामसँ पृथक होइत छल। ओकर प्रयोग मंत्रक रूप मे नहि कएल जाइत छल; प्रत्युत कोनो राजाक सत्कृतकें लक्षित कऽ लोकगीतक रूपमे ओकर उपस्थापन कएल जाइत छल। जनसमूह द्वारा ओ गीत गाओल जाइत छल आ गाथाक नामे ओ प्रचलित छल। मिथिलामे लौकिक संगीत जनजीवनक संग चलैत रहल।

मिथिला मध्य लोरिक, सलहेस, दीना-भद्री, बिहुला, नयका-बनिजारा आदि अनेक गीत अछि जकरा गाथा गीतक नामे प्रसिद्धि भेटल अछि। एहि गीतक चर्चा कहियासँ मिथिला मध्य अछि से कहब कठिन परन्तु ई निःसन्देह अछि जे सामगानक अछैत ई लोकगायनमे अपन स्थान बनओलक। सामगानक दुरूहताक कारणेँ साधारण व्यक्ति ओकरा प्रतिएँ विमुख होइत गेल एवं गाथागायनक प्रतिएँ आकर्षित होइत गेल।

सामगान एवं गाथागायन समाज मध्य चलिये रहल छल कि छन्दगायनक एक नवीन परम्परा आरम्भ भऽ गेल। एहि परम्पराक परिपोषक विद्वत्जन भेलाह जे विभिन्न शास्त्रक रचना कयनिहार पाण्डित्यपूर्ण प्रतिभासँ मण्डित छलाह। गाथा गायन उन्मुक्त एवं स्वच्छंद होइत छल। कोनो तरहक प्रतिबन्ध एहि गायनमे नहि रहैत छल। एक व्यक्ति अनुकरण कय अगिला पीढ़ीकेँ अनुकरण हेतु प्रेरित करैत छलाह एवं गाथागायनक मौखिक शिक्षा दैत छलाह। ई परिपाटी सैकड़ो वर्ष धरि चलैत रहल एवं अउखन चलि रहल अछि। गाथापरम्परा गायनक एक सरल, सुलभ परम्परा रहल जाहिमे साधारणो व्यक्ति अनुकरण कऽ गाथागायनक कलाकार भऽ जाइत छलाह। परन्तु विद्वद्जनकेँ ई परम्परा उचित नहि बुझना गेलन्हि तेँ एक नवीन परम्पराकेँ ओलोकनि जन्म दऽ गायनमे छन्दक अनिवार्यता बुझलन्हि। भारतीय भाषामे सबसँ प्राचीन छन्द सभ वेदमे उपलब्ध अछि। वेदहिक छन्दसँ मैथिलीक छन्द सभ विकसित भेल हो से संभव अछि। वेदमे गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, बृहती, पङ्क्तिक, त्रिष्टुप एवं जगती छन्द अछि जे क्रमशः 8, 10, 11 वा 12 वर्णक चरण सभसँ बनल। वैदिक कालीन परम्पराक पश्चात् जे कवि वा विद्वान भेलाह ओ अपन विवेकानुसार आकस्मिक लयक एवं तालक अनुसार वर्णविन्यास करैत रहलाह।

कालक्रमे ई रचना सामान्य छन्दसँ अधिक चमत्कारी ओ आकर्षक होमऽ लागल, संगहि नव नामसँ बाजऽ जाए लागल। काव्यमे छन्दक एक विशेष स्थान भऽ गेल। कालान्तरमे ओएह छन्द तालक स्वरूपमे आबि गेल यथा–छः मात्राक ताल-दादरा, खेमटा। सात मात्राक ताल-तिब्रा, रूपक एवं पश्तो। आठ मात्राक ताल-कहरवा एवं धुमाली, दस

मात्राक ताल-झमताल एवं सूलताल, बारह मात्राक ताल-एकताल, चौताल, चौदह मात्राक ताल-द्विपबंदी (चाँचर), झुमरा, धमार, गजझपा आ आड़ा चौताल, सोलह मात्राक ताल-त्रिताल, यत एवं तिलताड़ा आदि।

साधारणतया मैथिली लोकगीत वर्णवृत्तक अपेक्षा मात्रिक छन्दमे लिखल गेल। मात्रिक छन्दमे मात्रा गनल जाइत छल एवं तद्नुकूल तालमे गाओल जाइत छल।

छन्दगायनक पश्चात् प्रबन्धगायनक परम्परा सम्पूर्ण भारतमे प्रचलित भेल। प्रबन्ध रचना संस्कृत भाषामे होमऽ लागल। प्रसिद्ध भक्तकवि जयदेव रचित ''गीत गोविन्दम्'' ग्रंथ संस्कृत भाषामे अछि। प्रबन्धगायनमे संस्कृत पद कैं रागमे बान्हि उपस्थापन कएल जाइत छल। ई गायनपद्धति मिथिलामे कइएक सै वर्ष धरि रहल। ओहि गीतमे अनेक चरण होइत छल। एहि गीत मे क्रमशः उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव, अन्तरा एवं आभोग होइत छल। ई प्रायः सामगानक प्रस्ताव, उद्गीत, प्रतिहार, निधान, उपद्रव आदिक प्रतिरूप रहल हो से संभव। प्रबन्ध गीतक समस्त भेदक विषयमे उल्लेख करब उचित नहि कारण एकर विवरण विशाल अछि। संक्षेपमे ई कहल जा सकैछ जे मिथिलामे एहि गीतगायनक परम्परा छल, ओहो शास्त्रीय संगीत गायनक द्वारा। सुनल एवं देखल अछि मिथिलामे कलाकार स्व० मांगन, स्व० रामचन्द्रझा, स्व० बालगोविन्दझा, स्व० रामचतुर मल्लिक एवं स्व० दरबारी दास नटुआ द्वारा एहि प्रकारक गीतक गायन होइत छल।

प्रबन्ध गीतक तीन भेद मानल गेल अछि क्रमशः सूड, आलि एवं विप्रकीर्ण। सूडक दू भेद अछि–शुद्ध सूड एवं सालग सूड।

सूद्ध सूडक आठ भेद अछि क्रमशः एला, करण, ढेंकी, वर्तनी, झोवड़ लम्ब, रास ओ एकताली।

सालग सूडक भेद अछि ध्रुव, मठ्य, प्रतिमठ्य, निस्सारुक, अड्ड, रास ओ, एकताली। ध्रुव सँ ध्रुवा, ध्रुवा सँ ध्रुपद आधुनिक रूप अछि।

मिथिलाक संगीत परम्परामे राजा नान्यदेवक बाद राजा हरि सिंह देवक नाम अबैछ। ओ संगीतक पूर्ण ज्ञाता ओ परिपोषक छलाह। हुनका विषयमे कहल गेल अछि–

''हरो वा हरिसिंहो वा गीतविद्याविशारदौ
हरि (हर) सिंहे गते स्वर्गे गीतविद् केवलं हरः''(1295 ई०)

मिथिलाक राजा हरिसिंहदेव (1295 ई०) संगीतशास्त्रक महान विद्वान छलाह। कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर जे 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थक रचना कयलन्हि, हुनके दरबारक एक पण्डित छलाह। ग्रंथ सात कल्लोलमे लिखल गेल अछि। हिनक अन्य दू ग्रंथ क्रमशः ''धूर्त समागम'' एवं पंचशायक'' अछि जे नाट्य प्रहसन अछि। मैथिली साहित्यक प्रथम ग्रंथ ''वर्ण रत्नाकर''क षष्ठ कल्लोलमे गायन, वादन एवं नृत्यक पूर्ण विवरण अछि। सर्वप्रथम राग विन्यास एवं विभिन्न लोकगीतक चर्चा एही ग्रंथमे भेल अछि। संगीतजगतक हेतु मिथिलांचलक ई ग्रंथ अनुपम भेट अछि।

हरिसिंहदेवक बाद राजा शिवसिंहक 1402 ई० मे जन्म भेलनि। हिनक शासन कालमे महाकवि विद्यापति ठाकुर छलाह। महाकवि स्वयं राजा एवं राज्यक सर्वश्रेष्ठ कवि एवं शुभचिन्तक छलाह। महाकवि विद्यापति एक महान संगीत साधक एवं गायक छलाह। महाकवि स्वयं शास्त्रीय संगीतक एक श्रेष्ठ विद्वान छलाह। जयदेवक परिपाटीक अनुरूप रचना कऽ ओहि पर रागक उल्लेख करब हिनक एक महान कार्य कहल गेल अछि। जयदेवक रचना जतऽ संस्कृत भाषामे भेल ओतऽ मिथिलाक महाकवि विद्यापति मैथिली भाषामे अपन गीतक रचना कऽ ओहि पर रागोल्लेख कऽ एक नव परम्पराक जन्म देलन्हि। हिनके रचनाक शीर्षकमे रागोल्लेख प्रारम्भ भेल जे कवि हर्षनाथझाक समय धरि रहल। महाकवि विद्यापति रचित गीत राजप्रासादमे सुधीजनक बीच राग-रागिनी मे कत्थक कलाकार एवं

मैथिल गायक द्वारा प्रदर्शित कयल जाइत छल। राजा शिवसिंहक शासनकालमे भारत पश्चिमी क्षेत्रमे कत्थकलोकनि मिथिला आबि अपन कला-प्रतिभासँ राजाकेँ प्रसन्न कऽ राज्याश्रित भेलाह। कत्थक परम्परामे सर्वप्रथम सुमतिक नाम अबैछ। सुमतिक वाद उदय, जयत आदिक नाम अबैछ जे महाकविक रचनाक आधार पर रंगमंच पर नृत्य प्रदर्शित कऽ राजा एवं सम्पूर्ण सभासदकेँ मंत्रमुग्ध करैत छलाह। जयत गौड़ प्रचलित गान केँ छन्द एवं तालमे निबद्ध कऽ महाराज शिवसिंहक समक्ष प्रस्तुत करैत छलाह। कत्थक परम्परा मे क्रमशः कृष्ण मल्लिक, हरिहर मल्लिक, खंगराम, घनश्याम, कल्लीराम, लक्ष्मीराम, राघवराम तथा टीकारामक नाम अबैछ। गायनक संग-संग नृत्य सेहो कएल जाइत छल। कृष्ण एवं राधाक प्रणय लीलाक प्रसंग गीत एवं नृत्यमे रहैत छल। अन्य प्रकारक गायन सेहो होइत छल जे जीवनक विभिन्न अंगसँ जुड़ल छल। एहि गायनमे लौकिकता छल, मौलिकता छल एवं ई लोकजीवनसँ जुड़ल छल। एहिमे सोहर, समदाउन, बटगमनी, लगनी, नचारी, महेशवाणी, भगवती गीत आदि छल। लोक धुनक ई गीतसभ पूर्ण आकर्षक छल। मिथिलाक संगीत परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे एक उदाहरण अछि जे महाकवि विद्यापति रचित पुस्तक ''पुरुष परीक्षा''क गीतविद्य कथामे उल्लिखित अछि। शीर्षकमे मिथिलाक कलाकार 'कलानिधि' नामक गवैयाक उल्लेख अछि। गायक तिरहुत राज्यसँ गोरखपुर राजधानीमे 'उदय सिंह' राजाक ओतऽ जाऽ ओहिठामक संगीत प्रतियोगितामे भाग लऽ समस्त राज्याश्रित गायककें अपन गायनकलासँ परास्त कऽ राजसम्मान प्राप्त कऽ मिथिलाक संगीतक प्रतिष्ठाकेँ स्थापित कयलन्हि।

महाकवि विद्यापतिक समय धरि राग गायनक परम्परा आरम्भ भऽ गेल छल। हिनक प्रतिभाक आधार पर हिनका ''अभिनव जयदेवक'' पदवी भेटल छलनि।

मिथिलाक संगीतपरम्पराक आलोकमे मध्ययुगक सभसँ उत्कृष्ट संगीतग्रंथ पं० लोचनझा रचित ''राग तरंगिणी'' अछि। एहि ग्रंथमे तीन भाषाक समावेश अछि जे क्रमशः संस्कृत, हिन्दी (ब्रजभाषा) एवं मैथिली अछि। कवि लोचन संगीत शास्त्रक एक कुशल ज्ञाता एवं कलाकार छलाह। ''हनुमन्मत''केँ आधार मानि ओ रागक विश्लेषण कएने छथि। प्रसंगवश कहैत छथि–

भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा। श्री रागो मेघरागश्च षडेते हनुमन्मताः।।

ग्रंथमे पांच तरंग अछि। प्रथम तरंगमे पुरुष राग कथन आ द्वितीयमे राग-रागिणी कथन अछि। सम्पूर्ण ग्रंथमे संगीतक पूर्ण विवरण अछि। तत्कालीन मिथिलाक प्रचलित देशी राग, देशी ताल तथा लय (सुर) पर ओ पूर्ण प्रकाश देलन्हि अछि। भारतीय संगीत ग्रंथक सूचीमे ई ग्रंथ महानतम अछि।

ईस्ट इंडिया कम्पनीक बाद भारतमे फिरंगीक शासन भेल। एक बेर पुनः सम्पूर्ण भारतमें चंचलता आबि गेल। भारतक कलाकार एक बेर फेर जान माल, एवं जाति-धर्मक सुरक्षाक हेतु ओहि स्थानमे जाए लगलाह जे स्थान सुरक्षित छल। कलाकार की तँ मिथिला मध्य अएलाह वा नेपालमे जा कऽ बसलाह। अध्ययन एवं अन्वेषणक पश्चात् ई स्पष्ट भऽ गेल जे मिथिलाक संगीत अति प्राचीन अछि। वर्त्तमानमे मिथिलामे एहन चारि संगीत घराना अछि जे सम्प्रति अपन दू सै सँ अढ़ाई सै वर्षक इतिहास रखने अछि। ओहि घरानामे क्रमशः अमता, मधुबनी, पनिचोभ एवं पचगछिया घराना अछि।

सभ घरानाक वर्णन कएल जाए तँ एक पृथक पुस्तक बनि जाएत तैं संक्षेपेमे उल्लेख करब उचित।

अमता घराना– एहि घरानाक स्थापना महाराज माधवसिंह द्वारा 1775 ई० मे अमतामे कएल गेल। अमता मिथिलाक एक प्रसिद्ध गाम अछि। दरभंगासँ 20 मीलक दूरी पर बहेड़ा थानान्तर्गत ई गाम अवस्थित अछि। संगीत जगतमे एहि गामक वैह स्थान अछि जे मध्यप्रदेशक ग्वालियरक। एहि घरानाक आदिपुरुषमे राधाकृष्ण एवं कर्त्तारामक

नाम अबैछ। ध्रुपद गायन (गौड़वाणी) शैलीक ई भारतीय स्तरक कलाकार छलाह। हिनक सन्तानमे क्रमशः स्वः क्षितिपाल मल्लिक, स्व० राजितराम शर्मा मल्लिक, स्व० पद्मश्री रामचतुर मल्लिक, स्व० नरसिंह मल्लिक, स्व० यदुवीर मल्लिक, स्व० महावीर मल्लिक, स्व० पद्मश्री सियाराम तिवारी, पं० विदुर मल्लिक, पं० अभय नारायण मल्लिक, श्री राम कुमार मल्लिक, श्री प्रेमकुमार मल्लिक आदिक नाम अबैछ। ई लोकनि चारू पट यथा ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, ठुमरी तँ गबितहिं छलाह, महाकवि विद्यापति रचित गीत एवं लोकगीत सेहो गबैत छलाह।

मधुबनी घराना– ई घराना मधुबनीक राँटी-मंगरौनीक परिवार द्वारा बसाओल गेल छलाह। ख्याल एवं ध्रुपद दूनू शैलीमे गायन उपस्थापन करब एहि पारिवारक मुख्य गुण छल। स्व० मनसा मिश्र, स्व० डीहो मिश्र, स्व० खरवान मिश्र, स्व० गुरै मिश्र, स्व० शिवलाल मिश्र, स्व० सितू मिश्र, स्व० हीरा मिश्र, स्व० झिंगुर मिश्र, स्व० भगत मिश्र, स्व० परमेश्वरी मिश्र एवं कमलेश्वर मिश्र, स्व० आद्या मिश्र, स्व० अनन्त मिश्र, श्रीरामजी मिश्र, श्रीलक्ष्मण मिश्र, श्रीललन मिश्र आदिक नाम एहि घराना मे अबैछ।

पनिचोभ घराना– मिथिलान्तर्गत पनिचोभ घरानाक इतिहास सेहो पुरान अछि। एहि घरानाक प्रसिद्ध कलाकार मे स्व० रामचन्द्रझा, पं० दिनेश्वरझा श्रीराजकुमारझा, श्रीमंगनूझा, श्रीदुर्गादत्तझा, श्रीजटाधरझा, श्रीरमाकान्तझा, श्रीनचारीचौधरी, श्रीमदनचौधरी, श्रीब्रजमोहनचौधरी आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। ख्याल, ध्रुपद एवं मिथिलाक सभ तरहक गीत गायन करैत ई लोकनि देखल गेलाह अछि।

पचगछिया घराना– स्व० रायबहादुर बाबू लक्ष्मीनारायण सिंह एहि घरानाक संरक्षक एवं पोषक छलाह। एहि घरानाक मुख्य गायनशैली ख्याल एवं ठुमरीक संग पखावज वादन छल। एहि घरानाक दू विख्यात कलाकार भेलाह जाहिमे प्रथम मांगन एवं द्वितीय रघूझा छलाह। मांगनसँ शिक्षा ग्रहण कऽ हुनक शिष्य क्रमशः निम्नलिखित कलाकार छथि–बटुकजीझा, तिरोझा, शिवनझा, बालगोविन्दझा, युगेश्वरझा, माधवझा, रामजीदास, धर्मदेवसिंह, राघो झा, पुनो पोद्दार, सुन्दर पोद्दार, गणेशकान्त ठाकुर, उपेन्द्रयादव, दुर्गादत्तझा, सत्यनारायणझा, परशुरामझा, बलरामझा आदि।

उपर्युक्त घर-घराना शिष्य तैयार कऽ मिथिलाक संगीत परम्पराक प्रचार-प्रसार देश-विदेशमे कऽ रहल छथि। थाट गायन परम्पराक जनक स्व० विष्णु नारायण छथि। अध्ययन, चिन्तन कऽ ओ समस्त रागसँकेँ दस थाटक अन्तर्गत राखि एक नवीन परम्पराक जन्म देलन्हि अछि। मिथिलान्तर्गत शास्त्रीय संगीतक ज्ञान प्राप्त कएनिहार व्यक्तिकें राग एवं थाट पद्धतिक अनुसार शिक्षा ग्रहण करऽ पड़ैत छन्हि।

जहिना व्यक्ति एवं समाजक रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, रीति-नीतिमे क्रमिक विकास भेल अछि, ओहि मे प्राचीनता एवं नवीनताक दूनू धारा सतत् प्रवाहित होइत रहल अछि तद्नुकूल मिथिलाक संगीत परम्परामे प्राचीनता एवं नवीनताक दूनू धारा क्रमशः शास्त्रीय धारा एवं लोक धाराक रूपमे सतत् प्रवाहित् अछि।

मिथिलामे व्याकरण

– डॉ० शशिनाथझा

भाषाक परिचायकक संग-संग स्वरूप-रक्षको व्याकरणे होइछ। धन्य पाणिनि जे हम सभ संस्कृत भाषासँ परिचित छी। हुनके प्रसादसँ संस्कृत भाषा जानि विविध शास्त्रक ज्ञान प्राप्त करैत छी। भाषाक प्रवाह बड़ तीव्र गतिसँ चलैछ आ अपन मूल रूपसँ बहुत फराक भए जाइछ। मुदा, व्याकरण द्वारा अपन स्पष्ट परिचय दए भाषाक समरूप अपना-अपना समयक अभिव्यक्ति दैत अछि। अतः प्रत्येक शास्त्रक अध्येताकेँ भाषा पर अधिकारक हेतु सर्वप्रथम व्याकरण पढ़ब आवश्यक भए जाइत छन्हि। दर्शनशास्त्रक अध्ययन-स्थल मिथिलामे व्याकरणक अध्ययन, साधन-रूपमे होइत रहल अछि, साध्यरूपमे तँ एतए दर्शन ओ धर्मशास्त्रे व्याप्त रहल। दार्शनिकलोकनि अपन शब्दखण्ड - विचारक क्रममे व्याकरण तत्त्वक सूक्ष्म विवेचन कएने छथि।

प्राचीनकालमे एतए साङ्ग पाणिनीय अष्टाध्यायीक पठन-पाठन प्रचलित छल। बादमे महाभाष्य ओ काशिकाक चलनि भेल, जे अठारहम शताब्दी धरि यथावत् रहल। उन्नैसम शताब्दीमे नव्यव्याकरणक लहरि मिथिलहुमे पहुँचल आ सिद्धान्तकौमुदी ओ तकर परिष्कार चलए लागल। मुदा, बीच-बीचमे पाणिनिसँ भिन्न व्याकरणो बनैत रहल। वर्तमान शताब्दीमे हिन्दी ओ मैथिली भाषाक व्याकरण विकसित भेल अछि। एतए मिथिलामे व्याकरण शास्त्रक क्षेत्रमे कएल गेल कार्यक लेखा-जोखा प्रस्तुत कएल जाए रहल अछि :–

1. वररुचि (कात्यायन) – ई०पू० 500 सँ पूर्व – पाणिनीय अष्टाध्यायी पर वार्तिक रचनिहार वररुचिक दोसर नाम कात्यायन थिक जे गोत्रसम्बद्ध नाम भेल। स्कन्दपुराणक अनुसार योगी याज्ञवल्क्यक पुत्र कत, तनिक कात्य ओ तनिक पुत्र कात्यायनेक नाम वररुचि छल। याज्ञवल्क्य मैथिल छलाह। जनिक एक आश्रम पीठ आनर्त (गुजरात) मे छल। हुनक प्रपौत्र वररुचि मैथिल छलाह, मुदा अधिक काल गुजरातमे रहबाक कारण दछिनाही बोलीक प्रभाव हिनका पर छल। तेँ महाभाष्यकार हिनका 'दाक्षिणात्य' कहने छथि (महाभाष्य-पस्पशाह्निक)।

2. मण्डन मिश्र (850 ई०) – सहरसा जिलाक महिषी गामक प्रख्यात मीमांसक मण्डन मिश्र सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र छलाह। मीमांसामे मीमांसानुक्रमणी, विधि-विवेक आदि, वेदान्तमे ब्रह्मसिद्धि आदि ओ व्याकरणमे स्फोटसिद्धि हिनक कृति अछि। एहि सभ ग्रन्थक शैली समान परिष्कृत अछि। स्फोट सिद्धिमे 'पददर्शिनाम्' (वैयाकरणक) सिद्धान्त महाभाष्यकारक अनुसार निरूपित भेल अछि। हिनक मैथिल होएबामे प्रबल युक्ति पं० सहदेवझाक मैथिली ग्रन्थ – ''वाचस्पति मिश्र''मे देखल जाए सकैछ।

3. हलायुध (950 ई०) – हिनक रचित 'कविरहस्य' नामक काव्य क्रियाक विविध रूप देखाय व्याकरणक काज करैत अछि। एहि मे राष्ट्रकूटक राजाक यशवर्णित अछि, जनिक ई राजपण्डित[1] छलाह। ज्ञातव्य थिक जे हलायुध कोश एवं ब्राह्मण सर्वस्वकार हलायुध हिनकासँ भिन्न परवर्ती लक्ष्मणसेनक धर्माध्यक्ष छलाह।

4. वररुचि (1100 ई०) – हिनक 'वाररुच-प्रयोग संग्रह' केवल 25 श्लोकक व्याकरण अछि जकर व्याख्या प्रयोगविवेक एवं प्रयोगविधि नामसँ ई स्वयं कएने छथि। दोसर व्याख्या धर्मकीर्तिक 'प्रयोगमुख' अछि। वररुचिक दोसर ग्रन्थ 'पत्र कौमुदी' थिक, जाहिमे लिखल अछि जे चिट्ठीक आदिमे आँकुशक चिह्न लिखी। ई मैथिल परम्पराक वस्तु थिक। विद्यापतिक लिखनावलीक मूल आधार यैह थिक। पल्ली वंशक मूलमे एहि प्रकारेँ वंशक्रम अछि – राउल भृगु – अभिमन्यु – वररुचि – देल्हन – धारेश्वर – धीरेश्वर (1250 ई०)।

5. पहराज सिंह (1100 ई०) – 'पाउअकोश' नामक प्राकृत व्याकरण एवं कोश हिनक प्रकाशित अछि। ई माण्डर – वंश मे भेल छलाह – त्रिलोचन भट्ट (वाचस्पति मिश्रक गुरु) – सुलोचन भट्ट–धूर्जटि – धर्मजटि – चन्द्रजटि

– अजयसिंह – विजय सिंह – पहराज सिंह।

6. धर्मकीर्ति (1150 ई०) – ई बौद्ध आचार्य छलाह, मुदा धार्मिक-दार्शनिक प्रसिद्ध धर्मकीर्तिसँ ई बहुत बादक थिकाह। वररुचिक 'प्रयोग संग्रह' पर हिनक प्रयोगमुख व्याकरण एक उत्तम व्याख्या थिक। पाणिनीय व्याकरणमे प्रक्रिया ग्रन्थक आरम्भ हिनके कएल थिक जे रूपावतार नामसँ प्रसिद्ध अछि। हिनक निवास विक्रमशिलाक आसपास छल।

7. विश्वरूप उपाध्याय (1250 ई०) – गंगुलिवार एवं खण्डवला वंशक पूर्व पुरुष बीजी गङ्गाधर–> वीर –> विश्वरूप –> देवरूप एहि क्रमें हिनक वंश अछि। पुरुषोत्तमदेवक भाषावृत्ति पर हिनक पञ्जिका टीका[2] अछि।

8. रुद्रधर उपाध्याय (1350 ई०) – वर्षकृत्य, व्रतपद्धति, शुद्धि-विवेक, श्राद्ध–विवेक आदि ग्रन्थकार दरिहरा वंशीय रुद्रधर अष्टाध्यायक वृत्ति एवं वार्तिक संग्रह कएने छलाह। ई दुनू पोथी वाराणसीक सरस्वती भवन पुस्तकालयमे हस्तालिखित अछि।

9. पद्मनाभ मिश्र (1375 ई०) – हिनक सुपद्मव्याकरण स्वयं मे परिपूर्ण अछि। एकर प्रचार बंग प्रान्तमे अछि। ई भूरिप्रयोगकोश आदि बहुतोग्रन्थ लिखने छथि। 'यङ्लुग्वृत्ति' मे अपन समय 'शाके शैलनवादित्ये' (1297 शाके = 1375 ई०) कहने छथि। ई श्रीदत्त मिश्रक[3] पौत्र ओ दामोदरदत्तक पुत्र छलाह।

10. बैजल भूपति (1400 ई०) – विद्यापति अपन गीतमे हिनक नाम कहने छथि। हिनक 'प्रबोधचन्द्रिका' बालोपयोगी व्याकरण थिक। हिनक नाम पर 'बिजलपुरा' (नेपालक रेलवे स्टेशन) मानल जाए सकैछ।

11. महामिश्र (नरपति मिश्र) (1425 ई०) – ई कविवर विद्यापतिक मित्र छलाह– ''विद्यापतेः प्रेरणकारणेन, कृतो मया व्याकरण प्रकाशः''। काशिकावृत्तिक विवरणपञ्जिका (न्यास) पर हिनक व्याख्या व्याकरणप्रकाश अछि, जकर एक हस्तलेख रघुनाथ पुस्तकालय, जम्मूमे अछि।[4]

12. वासुदेव मिश्र (1475 ई०) – पक्षधर मिश्रक भातिज वासुदेव मिश्र (नाथू मिश्रक पुत्र) बालबोधिनी (काशिकासारवृत्ति) बनओने छलाह, जकर हस्तलेख वाराणसीक सरस्वती भवन पुस्तकालयमे अछि।

13. भवनाथ उपाध्याय (1500 ई०) – पलिवार हाटी मूलक रामपतिक पुत्र भवनाथ श्लोकबद्ध स्वतन्त्र व्याकरण प्रयोगपल्लव[5] एवं तकर कल्पलता टीका लिखलनि। म०म० केशव मिश्रक संग श्रीनगर कोटाक राजाक आश्रयमे ई छलाह।

14. विश्वेश्वर मिश्र (1560 ई०) – ई हरिअम्मए मङ्रौना मूलक चीकू मिश्रक पुत्र ओ विरुदावलीकार रघुदेव सरस्वतीक पिता छलाह। ई भवनाथकृत प्रयोगपल्लवक व्याख्या लिखने छथि।

15. कृष्णदास (1575 ई०) – म०म० गोविन्ददास ओ रामदासक पिता कृष्णदास दिल्लीक अकबर शाहक आदेशसँ संस्कृतमे फारसी व्याकरण 'पारसीक प्रकाशः' रचने छलाह। एहिमे सूत्रबद्ध व्याकरण ओ पद्यमय कोश अछि। ग्रन्थकारकेँ बिहारी कहल गेल अछि।

16. वंशमणि (1600 ई०) – वेलौचँए सुदै मूलक कविवर वंशमणि व्याकरणमे कोनो ग्रन्थक रचना कएने छलाह। हिनक मतकेँ अचल उपाध्याय वाक्यवादमे उद्धृत कएने छथि।

17. अचल उपाध्याय (1800 ई०) – बुधवाल वंशीय रामझाक पुत्र मंगरौनी गामक अचल उपाध्याय 'वाक्यवाद' बनओलनि, जाहिमे वाक्यस्वरूप विचार अछि। सम्पूर्णानन्द सं० विश्वविद्यालयसँ एकर प्रकाशन भेल अछि।

18. रत्नपाणि झा (1850 ई०) – गंगुलिवार सकरी मूलक रत्नपाणि झा महाराज छत्रसिंह, रुद्रसिंह ओ महेश्वर

सिंहक राजपण्डित छलाह। हिनक 'कारकवादः' ग्रन्थ बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। ई नवानी ग्रामवासी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बच्चाझाक पितामह छलाह।

19. इन्द्रदत्त उपाध्याय (1850ई०) – हिनक सिद्धान्तकौमुदी फक्किकाप्रकाश ग्रन्थ प्रकाशित अछि। 'शब्द तत्त्व प्रकाश' दार्शनिक व्याकरण छनि।

20. होरिल शर्मा (1850 ई०) – हिनक पूर्वपक्षावली ओ उत्तरपक्षावली शास्त्रार्थ शैलीक ग्रन्थ थिक।

21. गिरिधर उपाध्याय (1750 ई०) – ई मंगरौनीक फन्नहवार वंशीय म०म० वागीश उपाध्यायक पुत्र तथा धीरेन्द्रक पिता छलाह। म०म० गोकुल नाथक शिष्य छलाह। हिनक 'विभक्त्यर्थ निर्णय' विशाल ग्रन्थ परम प्रसिद्ध अछि। एहिमे म०म० गोकुलनाथक[6] 'पदवाक्य रत्नाकर' कैं प्रमाणतया उल्लिखित कएल गेल अछि।

22. चन्द्रदत्त छा (1775 ई०) – ई पलिवार परोही मूलक हरिनगर ग्रामवासी सिद्ध विद्वान छलाह। हिनक वंशक्रम :– सप्रक्रिय गतिराम → वैयाकरण कमलाकान्त → वै० वेणीराम → वै० चन्द्रदत्त → गोपाल → बबुनन्दन → वै० मुशली झा। भक्तमाल आदि ग्रन्थक रचना कए ई व्याकरणमे 'परिभाषा मणिमाला' (पद्यबद्ध परिभाषेन्दु शेखर)[7] बनओने छथि।

23. हर्षनाथ झा (1875 ई०) – उषाहरणनाटककार हर्षनाथझा मनोरमाशब्दरत्नार्थदीपक, परिभाषार्थदीपक, लघुशब्देन्दुशेखरदीपक आदि ग्रन्थक रचना कएने छथि।

24. परमेश्वर झा (1875 ई०) – हिनक प्रयोगदर्पण[8], नक्षत्र निर्णय, ऊष्मविवेकटीका आदि ग्रन्थ व्याकरणमे अछि। 'मिथिला तत्त्वविमर्श'क रचयिताक रूपमे हिनक ख्याति अछि।

25. मुक्तिनाथ ठाकुर (1875 ई०) – अथरी ग्राम निवासी मुक्तिनाथ ठक्कुरक महाभाष्य व्याख्या पर शास्त्रार्थ चलैत छल।

26. खुद्दी झा (1900 ई०) – खौआल नाहस मूलक कोइलख वासी उमादत्त शर्माक पुत्र पं० खुद्दी झा (1868–1926 ई०) कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रथम प्राध्यापक भेल छलाह। हिनक नागेशोक्ति प्रकाश (लघुशब्देन्दुशेखर व्याख्या) तिङर्थवादसार तथा व्युत्पत्तिवादक नौकाटीका बड़ ख्याति पओलक।

27. जयदेव मिश्र (1854–1926 ई०) – गजहरा ग्राम वास्तव्य सोदरपुरवंशीय मिश्रजी काशीय महान् शास्त्रार्थी रहथि। हिनक परिभाषेन्दुशेखरक विजयाव्याख्या, व्युत्पत्तिवादक जया व्याख्या तथा शास्त्रार्थरत्नावली बड़ प्रसिद्ध ग्रन्थ भेल।

28. हेमपति झा (1925 ई०) – लालगञ्ज निवासी माण्डरवंशीय हेमपतिझा 500 पद्यमे निबद्ध शब्द प्रदीप नामक एकटा कोश कएने छथि जकर व्याख्या हुनक कनिष्ठ पुत्र स्व० पं० तुलानन्दझा एवं सम्पादन अपर पुत्र स्व. पं० श्यामानन्दझा सम्पादन कएने छथि।

29. रविनाथ झा (1925 ई०) – माण्डर रजौरा वंशीय ठाढ़ीवासी रविनाथ झाक 'भावकौतुक' (व्याकरणसूत्र परिष्कार) एवं देवता प्रत्ययार्थनिर्णय ग्रन्थ प्रकाशित अछि।

30. शशिनाथ झा (1860–1932 ई०) – सरिसव छाजन मूलक चनौर ग्रामवासी द्वारिकानाथझाक पुत्र पं० शशिनाथ झा मुजफ्फरपुरमे अध्यापन करैत परमलघुमञ्जूषाक सरला व्याख्या एवं विभक्त्यर्थ प्रकाशिकाक रचना कएलनि जे दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित अछि।

31. मुकुन्दझा बख्सी (1869–1936 ई०) – हिनक लघुधातुरूप संग्रह, प्राकृतमञ्जरी टीका, निरुक्तविवृत्ति आदि ग्रन्थ व्याकरणमे अछि।

32. चन्द्रमणि मिश्र (1914 ई०) – समस्तीपुर जिलाक घटहो ग्राम वासी पं० चन्द्रमणि मिश्र सिद्धान्तकौमुदी ओ लघुकौमुदीक 'अर्थतरङ्गिणी' मैथिली व्याख्या बनाए प्रकाशित करओने छलाह।

33. हरिशंकरझा (1877–1946 ई०) – ठाढ़ी ग्रामवासी पं० झा व्याकरणमे बहुत ग्रन्थ लिखने छथि – शब्देन्दुसुधा, महाभाष्यकुञ्चिका, मनोरमारत्नविवेक, भूषणसारचन्द्रिका, परिभाषेन्दुदीपिका, मञ्जूषारत्न, शिशुंतोषिणी, बटुतोषिणी, परिभाषेन्दुशेखरकामाख्याव्याख्या[१] आदि।

34. दीनबन्धुझा (1878–1955 ई०) – संस्कृत मे – कौमुदीमूलार्थविद्योतिनी, समासशक्तिदीपिका, भूषणसारदीपिका, पाणिनीयव्याकरणतत्त्वप्रदीप, लिङ्गवचनविचारआदि तथा मैथिली मे – मिथिला-भाषा विद्योतन (सूत्र भाष्य शैलीमे मैथिलीक व्याकरण), मिथिलाभाषा धातुपाठ ओ मिथिलाभाषाकोष बनाए ई महावैयाकरणक रूपमे विख्यात भेलाह।

35. मार्कण्डेय मिश्र (1879–1952 ई०) – सरिसवनिवासी, राजस्थान मे अध्यापनकर्ता, शास्त्रार्थमहारथी मिश्रजी पाणिनीयसूत्रपरिष्कार, परिभाषेन्दुशेखरपरिष्कार, व्युत्पत्तिवाद विवृत्ति, वर्णस्फोटविचार आदिक रचना कएने छथि।

36. महेशझा (1901–1983 ई०) – पलिवार महिषी कुलोत्पन्न गङ्गौली वासी, सुलतानगंजमे अध्यापक पं० झा धातुसार, स्फोटनिरूपण, लघुशब्देन्दुशेखरटीका एवं पातञ्जलमहाभाष्यव्याख्याविमलाक रचना कएने छथि।

37. कृष्णमाधवझा (1899–1985 ई०) – कर्महए बेहट मूलक विठ्ठो (सरिसव) गामक गोवर्धनझाक पुत्र पं० कृष्णमाधव झा परमलघुमञ्जूषाक व्याख्या लिखने छथि।

38. चन्द्रधारी सिंह – (1900–1983 ई०) राँटी (मधुबनी)क स्वनामधन्य बाबूसाहेब चन्द्रधारीसिंह वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीक वैज्ञानिक रीतिसँ हिन्दी व्याख्या तथा रूपबोधक विस्तृत सारिणी बनओलनि जे अद्यापि अप्रकाशित अछि। हिनक अमरकोशक हिन्दी व्याख्या प्रकाशित अछि। न्यायमुक्तावलीक हिनक हिन्दी व्याख्या बड़ विशिष्ट अछि।

39. किशोरीझा (1940 ई०) – चिकनौटा वासी किशोरीझाक परमलघुमञ्जूषाटीका प्रकाशित अछि।

40. कनकलाल ठाकुर (1930 ई०) – काशीकेँ अपन अध्ययन-अध्यापनसँ भूषित करैत ई अनेक ग्रन्थक सम्पादन व्याख्यादि कएने छथि। हिनक फक्किकारत्नमञ्जूषा प्रसिद्ध ग्रन्थ छनि।

41. शुकदेवझा (1950 ई०) – भागलपुरक सिमरा ग्रामवासी। हिनक मनोरमारत्नप्रकाश, भूषणसारप्रकाश, लघुमञ्जूषाप्रकाश, परमलघुमञ्जूषाप्रकाश, लघुशब्देन्दुप्रकाश , परिभाषेन्दुप्रकाश, महाभाष्यादर्श आदि ग्रन्थ प्रकाशित छन्हि, जे व्याकरणक मूर्धन्य ग्रन्थक सारांश-निरूपक थिक। ई काशीमे अध्यापन करैत छलाह।

42. रमेशझा (1907–57)– पलिवार महिषी मूलक गङ्गौली वासी पं० मार्कण्डेयझाक पुत्र पं० रमेशझाक प्रबन्धावली ग्रन्थ व्याकरण विषयक छन्हि।

43. रमाकान्त ठाकुर (1950 ई०) – लोहना ग्रामवासी रमाकान्त ठाकुरक 'प्रबन्धामृतम्' व्याकरणशास्त्रीय पदार्थविवेचक ग्रन्थक रूपमे बड़ प्रसिद्धि पओलक।

44. जीवनाथझा (1910–77 ई०) – माण्डर वंशीय ईसहपुरवासी महावैयाकरण दीनबन्धु झाक पुत्र पं० जीवनाथझाक 'व्याकरणकौतुकम्' ग्रन्थ प्रकाशित छन्हि।

45. रुद्रधरझा (1920–90 ई०) – ठाढ़ी गामक दामोदरझाक पुत्र रुद्रधरझा काशीमे अध्यापन करैत महाभाष्यक तत्त्वालोक व्याख्या लिखलनि (1953 ई०)।

46. बुद्धिनाथझा (1911–1998 ई०) – नरोनए पूरे मूलक गंगौली ग्रामवासी पं० मतिनाथझाक पुत्र बुद्धिनाथ

झा शब्दबोधविमर्श, फक्किकाविमर्श, सूत्रार्थविमर्श, परभाषेन्दुप्रकाश, व्युत्पत्तिवादप्रकाश (हिन्दी) आदि ग्रन्थ रचि गेल छथि जे अप्रकाशित छन्हि।

47. रामचन्द्रझा (1915–92 ई०) – तरौनी ग्रामवासी काशी निवासी पं० झाक संस्कृतव्याकरणम्, समासचन्द्रिका, रूपचन्द्रिका, लघुकौमुदी, मध्य कौमुदी ओ सिद्धान्तकौमुदीक इन्दुमती संस्कृत हिन्दी व्याख्या परम प्रचलित छन्हि।

48. सुरेशझा (1970 ई०) – महोत्तरी जिलाक साँढ़ा (नेपाल) ग्रामवासी पं० झाक संस्कृतबोधचन्द्रिका, संस्कृतशिक्षासोपान, श्लोकसिद्धान्तकौमुदी (1–2 भाग) श्लोकलघुकौमुदी आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध छन्हि।

49. लक्ष्मणझा (1909–77 ई०) – दरिहरए रतौली मूलक काश्यपगोत्रीय पं० गयादत्तझाक पुत्र पं० लक्ष्मण झा पूर्वी चम्पारणक देवापुर गामक वासी छलाह। हिनक पाणिनीय व्याकरणसार ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण छन्हि।

50. सदानन्दझा (1950 ई०) – मधुवनी जिलाक लक्ष्मीपुर ग्रामवासी वैद्यनाथधाममे अध्यापक पं० झाक परमलघुमञ्जूषाटीका अप्रकाशित छन्हि।

51. मणिनाथझा (1928–88 ई०) – पलिवार महिषी मूलक पाही (सरिसब) ग्रामवासी दिल्लीमे अध्यापक पं० झाक व्याकरणक अनेक महत्वपूर्ण निबन्धक संग एक 'तापकादर्श' नामक विशाल ग्रन्थ अप्रकाशित छन्हि।

एहि रूपें किछु वैयाकरणक परिचय दए संक्षेपमे आओरो ग्रन्थकारक निर्देश कएल जाए रहल अछि :– महावैयाकरण लालजी झा (चिकनौटावासी)क महाभाष्यव्याख्या अप्रकाशित अछि। लालगंजक पं० श्यामानन्दझाक लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या प्रकाशमे नहि आबि सकल, परन्तु 'मासत्रयेण संस्कृतम्' पोथी प्रकाशित भेल छल। पं० पलटूझाक संस्कृबोधः (हिन्दी) प्रसिद्ध अछि। पं० उपेन्द्र झा (तरौनी) दरभङ्गा महाविद्यालयक प्राचार्यक अनेक निबन्ध 'विश्वमनीषा'मे प्रकाशित भेल। वराईक पं० जटाशंकरझाक लघुशब्देन्दुटीका अप्रकाशित अछि। पाही गामक पं० तेजनाथझाक संस्कृतव्याकरणविनोद (हिन्दी), दीप गामक पं० तेजनाथझाक संस्कृतव्याकरणसार ओ स्फोट विचार, प्रो० हरिमोहनझाक संस्कृतअनुवादचन्द्रिका, छतौनीक पं० उदयकान्त झाक 'परिभाषेन्दुशेखर भूति विजययोस्तुलना' आदि रचना विशेष चर्चित रहल।

सम्प्रति जीवित वैयाकरणमे चयनपुर (भागलपुर) वासी पं० श्री अर्जुनझाक उणादिरत्नकौमुदी दरभङ्गा विश्वविद्यालयसँ प्रकाश्यमान अछि। आचार्यश्री शोभाकान्तजयदेवझाक परमलघुकला, केशुलीग्रामवासी पं० श्री शोभाकान्तझाक लघुशब्देन्दुकला, डा० जयमन्तमिश्रक संस्कृतव्याकरणसार (1950 ई०) ओ संस्कृत व्याकरणोदय (1955 ई०), पं० श्री आद्याचरणझाक मनोरमारत्न प्रकाशिका (उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत), विशौल ग्रामवासी (टटुआर) पं० सदानन्दझाक कौमुधवशिष्टशब्द विचारचर्चा', गजहराक पं० श्री हर्षनाथ मिश्र (दिल्ली विद्यापीठ)क परिभाषेन्दुशेखर संस्कृत-हिन्दी बृहद्भाष्य, डॉ० श्रीनारायण मिश्रक (वाराणसी) परिभाषेन्दुशेखर हिन्दी व्याख्या, दुर्घटवृत्तिव्याख्या आदि, पं० मधुकान्तझाक महाभाष्यप्रकाश, पं० श्रीताराकान्तझाक लघुशब्देन्दुशेखर हिन्दी व्याख्या (दरभंगा), पं० श्री योगेश्वर झाक मध्य पाणिनीयम् (वाराणसी1990 ई०), डॉ० सतीशचन्द्रझाक कात्यायनवार्तिकानामनुशीलनम्, डॉ० सदानन्दझा (लखनौर) क बालमनोरमातत्त्वबोधिन्योः समीक्षा, प्रयोगदर्पण हिन्दी व्याख्या, समास शक्तिदीपिकाक 'नीला' हिन्दी व्याख्या, डॉ० शङ्करजी झा (ठाढ़ीवासी)क व्याकरणतत्त्वमञ्जरी आदि, डॉ० शशिनाथ झा (दीप)क 'व्याकरण प्रबन्ध', डॉ० कृष्णानन्द झा (गङ्गौलीक) शाब्दिक सिद्धान्तः (पद्यबद्ध) एवं नागेशसम्मताशक्तिः, डॉ० विमल ठाकुरक संस्कृतदर्पण (1996 ई०) एवं मिथिलायां व्याकरणम् (शोधग्रन्थ), पं० कालीकान्तझाक मध्यकौमुदीव्याख्या, पं० विश्वेशवरझाक स्वरवैदिकी व्याख्या, डॉ० कलानाथ झाक कारक प्रकरण व्याख्या, पं० बालगोविन्द झाक समाससन्दर्शिका, पं० श्रीमतिनाथ मिश्र 'मतंग'क संस्कृत व्याकरणअनुवादचन्द्रिका

(1965 ई०), पं० श्री अर्कनाथ चौधरी (रूद्रपुर वासी, जयपुरमे अध्यापक)क मध्यकौमुदीक मध्यमनोरमापूरणी व्याख्या आदि, पं० श्रीकृष्णकान्त झा (सरिसव कालेज)क सन्धि प्रभा, पं० श्री रमेश झा (हैंठीवाली) क व्याकरणशास्त्रीय पारिभाषिक शब्दाः तथा व्याकरण निबन्ध मञ्जूषा आदि, डॉ० देवकान्तझाक अभिनवसंस्कृत व्याकरणम् एवं संस्कृत व्याकरण रत्नाकर (पटना 1998 ई०) आदि उल्लेखनीय कृति थिक।

हिन्दी व्याकरणकारमे आचार्य रामलोचन शरणक हिन्दी व्याकरण चन्द्रिका (1914 ई०) एवं हिन्दी व्याकरण चन्द्रोदय (1945 ई०) तथा पं० सौखीलालझाक हिन्दी रचना आदि ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध भेल।

मैथिली भाषाक व्याकरण

जार्ज ग्रियर्सन अपन 'मैथिली ग्रामर' मे एहि भाषाक व्याकरणक श्रीगणेश कएलनि। तकर बाद मैथिलीभाषा मे एकर व्याकरण सम्बन्धी काजक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत अछि :–

(1) महावैयाकरण पं० दीनबन्धुझा (1878–1955) – हिनक सूत्रभाष्यात्मक व्याकरण 1914 मे प्रारम्भ भेल, जकर नाम थिक 'मिथिला भाषा विद्योतन'। प्रथम खंड – 1923 ई० मे विजय प्रेस, मुजफ्फरपुरसँ पं० मुकुन्दझा बख्सीक सम्पादकत्वमे छपल। सम्पूर्ण पोथी पछाति 1945 मे तथा धातुपाठ 1950 मे छपल। कुल 914 सूत्र अछि। प्राकृत व्याकरणक बाद इयेह एक ग्रन्थ थिक जे व्याकरणक महत्त्वकेँ देखबैछ। एकर द्वितीय संस्करण भारत सरकारक अनुदानसँ धातुपाठ सहित1996 मे भेल अछि। हिनक मिथिलाभाषाकोष 1947 मे छपल।

(2) हीरालालझा 'हेम' (1926 ई०) – 'मैथिलीय भाषा व्याकरण भास्कर' विद्यालयीय छात्रक हेतु 1926 मे दरभंगासँ छपल। सहलेखक भेलाह – नवतिलाल झा (भागलपुर)। कुल पृष्ठ 106 अछि।

(3) भोलालाल दास (1940 ई०) – हिनक 'सुबोध मैथिली व्याकरण' पठन-पाठनमे खूब व्यवहृत भेल।

(4) ऋद्धिनाथझा (1937 ई०) – हिनक 'मिथिला बाल विनोद' दू भागमे दरभङ्गासँ प्रकाशित भेल। दोसर भागमे मैथिली व्याकरणक शिक्षा देल गेल अछि।

(5) श्री प्रो० आनन्द मिश्र (1950 ई०) – हिनक 'सुबोध मैथिली व्याकरण' एक लघु पुस्तिका थिक।

(6) प्रो० रमानाथझा (1955 ई०) – हिनक मिथिला भाषा प्रकाश सामान्य रूपेँ सभ अध्येताक उपयोगी व्याकरण अछि। हिनक दोसर कृति प्रवेशिका मैथिली व्याकरण 1976 मे प्रकाशित भेल।

(7) डॉ० सुभद्रझा (1955 ई०) – हिनक अंग्रेजी भाषामे मैथिली भाषा विज्ञानक पोथी 'फार्मेशन ऑफ मैथिली लैंगुएज' बड़ महत्त्वक भेल। मैथिली व्याकरण (खास कए मिथिला भाषा विद्योतन) पर समीक्षात्मक 'मैथिली व्याकरण मीमांसा' पोथी हिनक सी. एम. कालेज, दरभंगासँ1983 मे छपल।

(8) पं. श्री गोविन्दझा (1965 ई०) – ई अपन पिताक कृति मिथिला भाषा विद्योतनकेँ संक्षिप्त एवं वर्तमान शिक्षा प्रणालीक अनुरूप बनाए 'लघुविद्योतन' नामक व्याकरण लिखलनि (दरभंगा–1965 ई०)। व्याकरण ओ कोशक क्षेत्रमे हिनक बड़ वेशी अवदान अछि – मैथिलीक उद्‌गम ओ विकास (कलकत्ता –1968), मैथिली भाषा का विकास (पटना –1974), मैथिली व्याकरण रचना विजय (आठम वर्गक हेतु, पटना –1971), उच्चतर मैथिली–व्याकरण (पटना –1979), मैथिली शब्दकोश (पटना –1992), अवहट्‌ठकोश-राष्ट्रभाषा परिषद मे प्रकाशनाधीन, कल्याणीकोश – मैथिली अंग्रेजी, दरभंगासँ प्रकाशित)।

(9) डॉ. श्री बालगोविन्दझा 'व्यथित' (1970) – हिनक 'मैथिली व्याकरण रचना प्रवेश' 1970मे छपल। एक अन्य ग्रन्थ मैथिली सुबोध व्याकरण 1965 मे प्रकाशित भेल।

(10) श्री युगेश्वर झा (1966 ई०) – हिनक 'मैथिली व्याकरण आओर रचना' भारती भवन, पटनासँ छपल

आ व्यापक रूपेँ प्रचार पओलक।

(11) श्री महेन्द्रनारायणझा (1970) – हिनक 'मैथिली व्याकरण वाटिका' 1970 मे छपल।

(12) डॉ. श्रीनवीनचन्द्र मिश्र – हिनक 'मैथिली भाषा विज्ञान' स्नातकोत्तर छात्रक उपयोगी अछि। सहलेखक छथिन्ह – डॉ० शिवाकान्त ठाकुर। एकर प्रकाशन 1985 मे भेल।

(13) डॉ० श्री इन्द्रकान्तझा – हिनक 'मैथिली भाषा विज्ञान' 1987 मे छपल।

(14) डॉ० श्रीदयानन्दझा – हिनक 'मैथिली व्याकरण एवं रचना' प्रकाशित अछि (ज्ञानदा प्रकाशन, पटना)।

(15) डॉ० श्रीशक्तिधरझा – हिनक 'मैथिली भाषाक शब्दस्वरूपविधान' भाषा वैज्ञानिक ग्रन्थ थिक।

(16) डॉ० श्रीधीरेन्द्रनाथ मिश्र – हिनक 'मैथिली भाषा शास्त्र' (1986) एवं 'मैथिली भाषा विज्ञान व्याकरण ओ रचना' छात्रोपयोगी पोथी अछि।

(17) डॉ. श्रीरामावतार यादव – नेपालदेशीय मिथिलामे काज कऽ डॉ० यादव अंग्रेजी भाषामे एक बृहत् मैथिली व्याकरण लिखलनि अछि – 'रेफ्रेन्स मैथिली ग्रामर' (जर्मनी सँ 1992 मे प्रकाशित)।

एहि प्रकारेँ मैथिली भाषाक व्याकरण एवं भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे सतत कार्य प्रगति पर अछि। व्याकरणक संग कोशक घनिष्ठ सम्बन्धक कारणे कोशहुक उल्लेख कएल जा रहल अछि –

पं० भवनाथ मिश्र (जमुथरिक) मिथिला शब्द प्रकाश (1914 ई०), पं० दीनबन्धुझाक मिथिला भाषा कोष (1940 ई०), कविशेखर बदरीनाथझाक मैथिली – संस्कृत कोश (1943 ई०), पं० जीवनाथझाक 'लघुतम पञ्चभाषी शब्दकोश' (1960 ई०), डॉ० श्रीजयकान्त मिश्रक वृहत् मैथिली शब्द कोश (1–2 खण्ड, 1965 एवं 1995 ई०), श्री उमेशचन्द्रझाक मैथिली शब्द भारती (पाकेट कोश 1991), पं० श्रीगोविन्दझाक मैथिलीशब्द कोश (1992), कल्याणी कोश (मैथिली– अंग्रेजी वृहत् कोश 50,000 शब्द, 1999), पं० श्रीमतिनाथ मिश्रक मैथिली शब्द कल्पद्रुम (23,000शब्द, 1998 ई०) आदि ग्रन्थ महत्वपूर्ण अछि।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. 'हलायुध → महोदधि → महीधर → गङ्गेश्वर → वागीश्वर → रत्नेश्वर → सोदरपुर वंशक आदिमे ई क्रम अछि। महौदधिक उल्लेख प्रबोधचन्द्रोदयनाटकमे अछि।
2. मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगासँ हमरे सम्पादकत्वमे प्रकाश्यमान।
3. विशुद्ध वैदिक आचार ग्रन्थक रचयिता – (धर्मशास्त्र इन मिथिला– जयदेव गांगुली, कलकत्ता)
4. दरभंगासँ हमर सम्पादकत्व मे प्रकाशित।
5. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-भाग –1 युधिष्ठिर मीमांसक।
6. पदवाक्यरत्नाकर शब्द खण्डक ग्रन्थ थिक, परन्तु न्यायमतकेँ सिद्धान्तमे राखल अछि।
7. एकर व्याख्या हम कएने छी (अप्रकाशित)
8. एकर सम्पादकन कए हम दरभंगा सँ प्रयोगपल्लवक संग प्रकाशित करओने छी (1984 ई०)।
9. एकर हस्तलेख मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा मे अछि।

●

रीतिरात्मा काव्यस्य

डॉ० लक्ष्मण चौधरी 'ललित'

रीति सम्प्रदायक प्रवर्त्तक आचार्य वामन छथि। रीतिकेँ काव्यक जीवनधायक तत्त्व अथवा आत्माक रूपमे प्रतिष्ठित करवाक श्रेय हिनकहि छनि। किन्तु हिनक पूर्ववर्ती आचार्यलोकनि सेहो परम्परा प्रवाहक रूप मे एकर उल्लेख कैने छथि। आचार्य भोज रीतिक व्युत्पत्ति निर्देशित करैत कहलनि जे ई रीङ्गतौ गत्यर्थक 'रीङ्' धातुमे 'क्तिन' प्रत्ययक संयोग सँ निष्पन्न अछि, जकर अर्थ मार्ग, गति, प्रस्थान, पद्धति, विधि आदि होइछ–

'वैदर्भादिकृतः पन्थाः काव्यमार्ग इति स्मृतः।
रींङ् गताविति धातोः सा व्युत्पत्त्या रीतिरुच्यते।।'[1]

ऋग्वेद मे रीति शब्दक प्रयोग कतोक स्थल पर भेल अछि। किन्तु ओतए रीङ स्त्रवणे धातु सँ निष्पन्न भए धाराक अर्थक बोधक थीक।[2] ठाम-ठाम गमयिता, गति अथवा अर्थस्वभावक रूपमे सेहो ई शब्द प्रयुक्त अछि। वामन सँ पूर्व आचार्य भरत 'प्रवृत्ति' एवं मामह ओ दंडी 'मार्ग'क रूप मे रीति शब्दक प्रयोग कैलनि। वस्तुतः काव्यशास्त्रमे प्रयुक्त 'रीति' शब्दक स्त्रोत आचार्य भरत द्वारा निर्दिष्ट 'प्रवृत्ति'केँ सैह कहल जाएत। आचार्य भरत पृथ्वीक विविध देशक वेश-भूषा, भाषा तथा आचार-विचार व्यक्त करएवला केँ प्रवृत्ति कहलनि 'पृथिव्यां नानादेश-वेश-भाषाचार-वार्त्ताः ख्यापयतीति प्रवृत्तिः'

संगहि तत्कालीन प्रचलित चारिगोट प्रवृत्तिक उल्लेख सेहो कैलनि– आवंती, दाक्षिणात्य, पांचाली एवं उड्रमागधी।[3] भारतक पश्चिमी भाग मे आवंती अर्थात् आधुनिक उज्जैन, दक्षिणी भाग मे दाक्षिणात्य, पूर्वभाग अर्थात् उड़ीसा एवं मगध मे औड्रमागधी तथा मध्यदेश (पांचाल) मे पांचाली प्रवृत्तिक प्रचलन छल। एहि तरहेँ काव्यशास्त्रमे रीतिक विकास होमए लागल। यद्यपि एहि रीतिक विकास क्रम मे चारिगोट अवस्था देखि पड़ैत अछि। (आचार्य भरत सँ लैं वाणभट्ट पर्यन्त पहिल अवस्था थीक जकर आधार भौगोलिक छल) (द्वितीय अवस्था मे भौगोलिक सीमा खण्डित भए जाइत अछि तथा विषयक दृष्टि सँ एवं अन्य काव्यगुणक आधार पर रीतिक निर्धारण भेल।) (तृतीय अवस्था आचार्य कुन्तक सँ प्रारंभ होइत अछि जखन रीतिक सम्बन्ध कवि-स्वभावक संग स्थापित भेल) तथा (चारिम एवं अन्तिम अवस्था आचार्य वामन, रूद्रट एवं आनन्दवर्द्धन सँ कहल जा सकैत अछि जकर मूलाधार समास, गुण एवं रस स्थिर कैल गेल तथा जकरा वामन द्वारा काव्यक जीवनदायिनी शक्तिक रूपमे स्वीकार कैल गेल।)

भरतक पश्चात् बाणभट्ट अपन ग्रंथ 'हर्षचरित' मे रीतिक उल्लेख कैलनि। ओ अपना समय मे प्रचलित चारू भूभागक चारिगोट शैलीक वर्णन कैलनि। कहलनि जे उत्तर भारतक व्यक्ति श्लेष केँ, पश्चिम खण्डक लोक अर्थगौरव केँ, दक्षिण भागक व्यक्ति उत्प्रेक्षा केँ तथा गौड़ किंवा पूर्व भारतक लोक अक्षराडंबरक महत्त्व दैत छथि। किन्तु हिनका दृष्टिमे चारू प्रकारक शैलीक एकत्र प्रयोग काव्यक हेतु उत्कृष्टतम रूप होयत।

'श्लेषप्रायमुदीच्येषु प्रतीच्येष्वर्थमात्रकम्।
उत्प्रेक्षा दाक्षिणात्येषु गौडेष्वक्षर डम्बरः।।
नवोऽर्थो, जातिरग्राम्या, श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम्।।'[4]

आचार्य भामह अपन ग्रंथ काव्यालंकार मे दू गोट मार्गक उल्लेख कैलनि–वैदर्भ एवं गौड़ीय तत्कालीन धारणा मे वैदर्भ कैं श्रेष्ठ एवं गौड़ीय कैं निकृष्ट मार्ग कहल जाइत छल। किन्तु भामह एहि भेद कैं हँटाए दूनूक पार्थक्य अनावश्यक कहलनि। हिनका अनुसारैं वैदर्भी किंवा गौड़ीय अपन सीमा मे रहनहि श्लाध्य बनि सकैत अछि।[5]

आचार्य दंडीक रीति विवेचन बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। ई सर्वप्रथम रीति कैं गौरवक स्थान देलनि जाहि सँ हिनका रीतिवादी आचार्य से हो कहल जाइत अछि। आचार्य भामह तीन गोट गुणक निर्देश कैलनि छल किन्तु दंडी दस गोट गुणक उल्लेख कैं सभक समावेश वैदर्भी नामक मार्ग मे कैलनि। दंडी गुण एवं मार्ग मे अन्योन्याश्रय संबंध स्थापित कए रीतिक विवेचन कैं गति देलनि। हिनका अनुसारैं गुणक अभाव ओ अक्षराडंबर सँ विमंडित होयवाक कारणैं गौडीय मार्ग निकृष्ट थीक। संगहि दंडी एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छथि जे कविक भेद सँ मार्गमे अन्तर भए सकैत अछि–

'इतिमार्गद्वयं भिन्नं तत्स्वरूपनिरूपणात्।
तद्भेदास्तु न शक्यंते, वक्तुं प्रति कविस्थिताः।।'[6]

रीति निरूपणक इतिहासमे आचार्य वामनक स्थान सर्वोपरि अछि। आचार्य वामन सर्वप्रथम रीतिकैं काव्यक आत्मा ओ विशिष्ट पद रचना कैं रीतिक संज्ञा देलनि[7]– 'रीतिरात्मा काव्यस्य' एवं 'विशिष्ट पदरचना रीतिः'। विशिष्ट पदरचना सँ हिनक अभिप्राय गुणसम्पन्न काव्यक शोभाकारक धर्म सँ छल। अतः काव्यशोभाकारक किंवा सम्यक् पदरचनाक नाम थीक रीति। आचार्य वामन गुणक संग रीतिक घनिष्ठ संबंधक कल्पना कैलनि तथा गुणकैं काव्यक शोभा बढ़बएवला नित्य धर्म कहलनि। यद्यपि ओ शब्द गुणक अपेक्षा अर्थगुणक महत्त्व विशेष देलनि अछि। हिनक कहब छल जे अर्थगुणक समावेशहि सँ रीति कैं उत्कर्ष प्राप्त होइत छैक तथा प्रत्येक रसक समावेश 'कान्ति' नामक अर्थगुणमे भए जाइत अछि– 'दीप्तरसत्वं कान्तिः'। वैदर्भी, गौड़ी ओ पांचाली जाहि तीन गोट रीतिक निर्देश आचार्य वामन कैलनि ताहिमे 'वैदर्भी' कैं सर्वगुण सम्पन्न– 'समग्रगुणा वैदर्भी' तथा 'गौड़ीय' मे गुणक विपर्यय नहि मानि एहि मे ओज एवं कान्ति गुणक समावेश कहलनि– 'ओजः कान्तिमती गौड़ीया'।[8] एतवए नहि 'पांचाली' रीति मे सेहो ओज एवं कान्ति गुणक अभावतँ कहलनि किन्तु माधुर्य एवं सौकुमार्य गुणक अनिवार्यता कहलनि।

आचार्य वामनक पश्चात् रीति विवेचनक इतिहास मे नव मोड़ अबैत अछि। आचार्य रुद्रट (नवम शताब्दीक उत्तरार्ध) रीतिक एकटा चारिम भेद 'लाटीया'क कल्पना कैलनि। हिनक रीतिकप्रसंग विचारक आधार भूमि समास (पदक समस्तता अथवा असमस्तता) छल। रुद्रट लघुसमास, मध्य समास ओ दीर्घ समासक आधार पर पांचाली लाटीया एवं गौड़ी, रीतिक उल्लेख कए वैदर्भीक स्थिति समासक 'अभाव मे स्वीकार कैलनि। हिनक कहब छल जे व्रैदर्भी एवं पांचाली माधुर्य एवं सुकुमार गुण संयुक्त होइत अछि। अतः एकर प्रयोग शृंगार, करुण, भयानक एवं अद्भुत रस मे होइछ किन्तु गौड़ी एवं लाटीया मे ओज गुण होइत अछि तैं ई रौद्र रसमे सैह उपयोगी होइछ। 'अन्य रसक संबंध मे रीतिक कोनो नियम नहि होइछ आ कवि अपन इच्छानुरूप शैलीक प्रयोग करवा मे स्वतंत्र होइत छथि।1

आचार्य आनन्दवर्धन रीति कैं रसाभिव्यक्तिक साधन मानि रसक उपकारिणी कहलनि। ई रीतिक नियामक तत्त्व मे– वक्ता, वाच्य, विषय एवं रसक अनुकूलता किंवा औचित्य कैं स्वीकार कए रीति कैं गुणाश्रित मानि एकर वर्गीकरणक आधार समास कैं स्वीकार कैलनि। एतवए नहि रीतिकैं संघटना रूप सेहो कहलनि–

'असमासा समासेन मध्यमेन च भूषिता।
तथा दीर्घसमासेति त्रिधा संघटनोदिता।।'[9]

किन्तु एतवादूर धरि विचार करितहुँ आनन्द वर्धन रीतिकेँ काव्यक आत्म रूप मे स्वीकार नहि कए एहिमे अस्फुट रूप सँ ध्वनिक विद्यमानता कहलनि।

आचार्य राजशेखर रीति, प्रवृत्ति एवं वृत्तिमे घनिष्ठ संबंध स्थापित करैत वेष विन्यास क्रमकेँ प्रवृत्ति विलास विन्यासक्रम केँ वृत्ति एवं वाणी विन्यास क्रम केँ रीति कहलनि।

आचार्य कुन्तक रीतिक हेतु मार्ग शब्दक प्रयोग कए एकर तीन गोट भेद कैलनि– सुकुमार, विचित्र एवं मध्यम मार्ग। ई सुकुमार मार्गमे चारि गोट असाधारण गुण– माधुर्य, प्रसाद, लावण्य एवं आभिजात्य तथा औचित्य ओस्वभाव नामक साधारण गुणक समावेश कहलनि। हिनक कहब छल जे एहि मार्गक काव्यक परम तत्त्व थीक रस। विचित्र मार्गमे अलंकारक अधिकताक कारणेँ वाह्य चमत्कार विशेष रहैत अछि आ एहि मार्गक जीवन प्राण थीक वक्रोक्ति वैचित्र्य किन्तु मध्यम मार्गमे वैचित्र्य एवं सुकुमार दूनूक समन्वय कहलनि। आचार्य कुन्तक रीतिक भौगोलिक आधारकेँ समाप्त कए कविस्वभावक आधार पर मार्गक विभाजन कैलनि। हिनक कहब छल जे मार्गकेँ देशक संग कोनो संबंध नहि भए कविक आन्तरिक गुण एवं अभिव्यक्तिसँ अछि–

'सम्प्रति तत्र ये मार्गाः कविप्रस्थानहेतवः।
सुकुमारो विचित्रश्च मध्यमश्चोभयात्मकः।।'

आचार्य भोज रीतिक हेतु एकहि संग मार्ग, पंथ एवं रीति शब्दक प्रयोग कैलनि। हिनका अनुसारें रीतिक अर्थ थीक– 'कवि-गमन-मार्ग' जे कुन्तकक प्रस्थानक कारण छल। आचार्य भोज विस्तारवादी दृष्टि सँ रीतिक छौ गोट भेदक निरूपण कैलनि। वैदर्भी पांचाली, गौड़ीया, आवंतिका, लाटीया एवं मागधी। ई गुण एवं समासकेँ रीतिक मूलाधार स्वीकार कैलनि। आवंतिका रीतिक उपस्थिति पांचाली एवं वैदर्भीक अन्तर्गत तथा लाटीया रीति मे सभ रीतिक सम्मिश्रण ओ मागधीकेँ खंडरीति कहलनि।[10]

आचार्य मम्मट ओ आचार्य विश्वनाथ आनन्दवर्धनहिक अनुसरण करैत रीति केँ रसक उपकारक मानि काव्य-संघटना कहि संबोधित कैलनि। आचार्य मम्मट उपनागरिका परुषा एवं कोमला वृत्तिक उल्लेख अवश्य कैलनि किन्तु वृत्ति केँ रीति सँ पृथक नहि मानि क्रमशः वैदर्भी, गौड़ी एवं पांचालीक पर्याय कहलनि–

'एतास्तिस्रो वृत्तयः वामनादीनां मते वैदर्भी गौड़ी पाञ्चाल्याख्या रीतयो मताः।।'

आचार्य विश्वनाथ रीति केँ काव्यशरीरक अन्तर्गत पदसंघटना विशेषक अवयव संस्थान रूपमे कहि रसक उपकारक घोषित कैलनि–

'पदसंघटना रीतिरंगसंस्थाविशेषवत्, उपकर्त्री रसादीनाम्।'[11]

अस्तु साहित्य शास्त्रक अंतिम मर्यादाप्राप्त आचार्य पंडितराज जगन्नाथक अनुसार काव्यक अंगसंस्थानक रूप मे रीतिकेँ मान्यता प्राप्त रहल किन्तु रीतिकेँ काव्यक आत्मा मानवाक जे प्रयत्न आचार्य वामन द्वारा आरंभ भेल छल से अक्षुण्ण नहि रहि सकल आ रीतिकेँ शब्द एवं अर्थक आश्रित शैली रूप मे रचना-चमत्कारक पद प्राप्त भेल।

रीतिक संख्या– जतै धरि रीतिक संख्या निर्धारणक विचार उठैत अछि एहि प्रसंग विवेचन सँ स्पष्ट अछि जे भामह रीतिक दू गोट भेदक निरूपण कैलनि– वैदर्भ एवं गौड़ीय। आचार्य दण्डी सेहो हिनकहि समर्थन कैलनि किन्तु रीतिकेँ मार्ग कहि संबोधित कैलनि। आचार्य वामन आत्मा रूपमे काव्यक अन्तर्गत रीतिकेँ प्रतिष्ठित कए एकर तीन गोट भेद कैलनि– वैदर्भी, गौड़ीय एवं पांचाली किन्तु रुद्रट समासकेँ आधार बनाए एकटा चतुर्थ रीति लाटीयाक कल्पना सेहो कैलनि। आचार्य राजेशखरजँ अपन ग्रंथ कर्पूरमञ्जरी मे एक अन्य रीति 'मागधी' तथा बालरामायण मे 'मैथिली'

रीतिक उल्लेख कैलनि तँ आचार्य भोज विस्तार करबाक उद्देश्य सँ रीतिक संख्या छौ गोट कैं देलनि– वैदर्भी पांचाली, लाटीया, गौड़ीया, आवंतिका एवं मागधी। मुदा अन्ततः आचार्य मम्मट ओ विश्वनाथ प्रभृति आचार्य लोकनि आचार्य वामन द्वारा निर्देशित तीनहि गोट रीतिकैं स्वीकार कैलनि– वैदर्भी गौड़ीय एवं पांचाली आ यैह त्रिविध रीति मनोवैज्ञानिक आधार सँ संपुष्ट भए कालान्तर सँ मान्यता प्राप्त कैलक, कारण वर्णहुक तीन गोट स्थिति होइत अछि– मधुर परुष एवं मध्यम जे क्रमशः वैदर्भी, गौड़ी एवं पांचाली रीतिक प्रमुख धर्म थीक।

वैदर्भी रीति– एहि रीतिक अन्तर्गत तीन गोट विषय प्रधान होइछ– माधुर्य गुण व्यञ्जक वर्ण, ललित पद एवं अल्प समास अथवा समासक अभाव–

'माधुर्यव्यंजकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।
अल्पवृत्तिरवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते।।'[12]

वैदर्भीमे सानुनासिक वर्ण, कोमल वर्ण एवं असमस्त पदक प्रयोग होइछ। एकर व्यवहार शृंगार, करुण एवं शान्त रस मे होइत अछि। आचार्य वामन विदर्भादि देश मे उत्पन्न होएबाक कारणें एकर नाम वैदर्भी ओ एकर प्रशंसा मे कहलनि जे एहि रीति मे लेश मात्र दोष नहि रहैछ तथा ई समग्र गुण संयुक्त ओ वीणाक स्वरक सदृश मधुर होइत अछि–

'अस्पृष्टा दोषमात्राभिः समग्रगुणगुम्फिता।
विपंचीस्वरसौभाग्या वैदर्भी रीतिरिष्यते।'[13]

गौड़ी रीति– ओज-गुण-व्यञ्जक, दीर्घ समास युक्त ओ आडम्बर पूर्ण बंध किंवा पद-रचनाक बाहुल्य जतए रहैत अछि ओतए गौड़ीय रीति कहल जाइछ।[14] एहि रीति मे कठोर वर्ण, रेफ, द्वित्व वर्ण, संयुक्त वर्ण एवं ट, ठ, ड, ढ, श, ष आदिक प्रयोग होइत अछि। ई रौद्र, वीर, भयानक रसमे विशेष रूप सँ प्रयुक्त होइछ। एकर प्राण थीक ओज गुण। आचार्य वामन स्पष्ट शब्दें कहलनि– 'ओजः कान्तिमती गौड़ीया'[15]

पांचाली रीति– आचार्य वामनक अनुसार एहि रीति में माधुर्य एवं सुकुमार गुण संयुक्त रहैछ। एहि मे गाढ़बन्धत्वक नितान्त अभाव तथा पद शिथिल रहैत अछि एहिमे प्रयुक्त वर्ण ने तँ माधुर्यक द्योतक होइछ आने ओजक। अपितु ई दूनूक मध्यवर्ती होइछ–

'माधुर्य सौकुमार्योपपन्ना पांचाली',[16]

आचार्य विश्वनाथ एहि रीतिक अन्तर्गत समासक सीमा पाँच सँ छौ पद धरिक कहलनि–

'समस्त-पञ्चषट्पदी बन्धः पाञ्चालिका मताः।।'[17]

एतावता ई धरि निर्विवाद जे काव्यमे विविध रीतिक अनुपालन कविकैं यशस्वी बनबैत अछि, सहृदयकैं हृदयाह्लाद करैत अछि तथा आलोचककैं प्रतिष्ठित करैत अछि–

'काव्यं सद्दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्'

संदर्भ :

1. सरस्वती कण्ठाभरण– 2/51

2. ऋग्वेद 1/28/14
3. 'चतुर्विधा प्रवृत्तिश्च प्रोक्ता नाट्यप्रयोगतः।
   आवंती दाक्षिणात्या च पांचाली चौड्रमागधी।।'
   – नाट्यशास्त्र 14/36
4. हर्षचरति, प्रस्तावना– 1/7/8
5. काव्यालंकार– 1/34-35
6. काव्यादर्श– 1/101
7. काव्यालंकार सूत्र– 1/2-7
8. ओएह– 1/2/11-12
9. वैदर्भीपांचाल्यौ प्रेयसि करुणे भयानकाद्भुतयोः
   लाटीया गौड़ीये रौद्रे कुर्याद् यथौचित्यम्।।
   –काव्यालंकार– 15/20
10. ध्वन्यालोक– 3/5
11. वक्रोक्तिजीवित, 1/4
12. सरस्वती कंठाभरण, 2/53-55
13. साहित्य दर्पण, 9/1
14. साहित्य दर्पण, 9/2
15. काव्यालंकार सूत्र वृत्ति, 1/2/10-11
16. साहित्य दर्पण, 9/3
17. काव्यालंकार सूत्र वृत्ति, 1/2/12
18. ओएह, 1/2/13
19. साहित्य दर्पण, 9/4

●

मैथिलीमे रंगमंचक परम्परा

डॉ० जटेश्वरझा 'जटिल'

'रंगमंचक' अर्थ सम्प्रति ओएह होइछ जे पाश्चात्य साहित्यमे 'थियेटर'क होइछ। 'थियेटर' शब्द ग्रीक भाषाक 'थियेट्रोन'सँ बनल अछि, जकर अभिधेयार्थ होइत छल ओ भवन विशेष जाहिठाम प्रेक्षकक समक्ष अभिनय प्रस्तुत कयल जाय। कालक्रमे थियेटर' शब्दक अर्थविस्तार भेलैक तथा एकर अर्थ होमय लागल अभिनय तथा ओ समस्त प्रक्रिया एवं उपादान जे अभिनय व्यापारमे मुख्य अथवा गौण रूप सँ सहायक होइछ, जाहिमे रंगशाला सेहो एकटा अंग होइछ।

वस्तुतः जाहि अर्थमे 'थियेटर' शब्दक प्रयोग होइछ ताही अर्थगौरवसँ सम्पन्न शब्द 'नाट्य' थीक। भरत मुनि जखन नाट्यशास्त्रक प्रणयन कयने छलाह तखन ओहिमे 'नाट्य'क ओहि वृहत् अर्थकेँ समाहित कयने छलाह, जकर आभास भेटैछ, नाट्य-संग्रह विवेचनमे। नाट्य-संग्रहक रूपमे भरत एगारह गोट तत्त्वक परिगणना कयलनि–

रसा भावा ह्यभिनयाः धर्मवृत्ति प्रवृत्तयः।

सिद्धि स्वरास्तथा तोद्यं गानं रंगश्च संग्रहः।। ना० शा० (चौ० प्र०)–6/10

पाश्चात्य साहित्यमे प्रारंभमे 'थियेटर'क अर्थ-सीमा अत्यधिक संकुचित छल। मुदा बादमे ओकर अर्थमे विस्तार भेल। भारतवर्षमे ठीक एकर विपरीत प्रक्रिया भेल। भरत वा भारतक पूर्ववर्ती आचार्य जाहि नाट्यक कल्पना कयने छलाह ओ पूर्णतः उन्नत ओ सर्वांगपूर्ण छल ओतबे जतेक थियेटर। अर्थात् थियेटर ओ नाट्यकेँ एक दोसराक पर्यायक रूपमे व्यवहार करबामे कनेको त्रुटि ओ संकोचक अनुभव नहि भऽ सकैछ। मुदा धनञ्जय कालसँ 'नाट्य'क अर्थसंकोच होयब प्रारंभ भेल। एतेक धरि 'नाट्य'क सीमा-रेखाक संकोच भेल जे 'नाट्य'क अर्थ प्रेक्षागृहमे प्रयुक्त अभिनेय सामग्री वा रूपक मात्र कयल जाय लागल जकर परिधि वस्तु, नेता ओ रस रहि गेल। अतः एहि प्रकारेँ नाट्य शब्दमे अर्थसंकोच आभास दैछ जे भारतीय नाट्यक उन्नत परम्परा अवसानक चरम बिन्दु पर पहुँचि गेल।

आधुनिक कालमे भारतीय साहित्यक सम्पर्क पाश्चात्य साहित्यसँ भेल। यथा 'थियेटर'क विस्तृत अर्थक अवधारणा भेल तँ 'रंगमंच' सँ 'थियेटर'मे निहित वृहत् अर्थक द्योतन कयल जाय लागल। थियेटरक लेल उपयुक्त शब्द नाट्य होइछ। मुदा ओकर अर्थ ततेक संकुचित भऽ गेल जे ओकर प्राचीन वृहत् अर्थवत्ता प्रदान करब संभव नहि छल। अतः पाश्चात्य 'थियेटर' ओ प्राचीन भारतीय 'नाट्य'क अर्थमे 'रंगमंच'केँ स्वीकार कयल गेल।

'रंगमंचक' अभिधेयार्थ ओएह होइत अछि जे 'नाट्यशास्त्र'मे प्रेक्षागृह किंवा ग्रीक थियेट्रोनक होइछ। मुदा विस्तृत अर्थमे जखन 'रंगमंच' शब्दक प्रयोग कयल जाइछ तँ ओहिमे नाट्य-परम्परा, नाट्य विषयक शास्त्र, प्रस्तुत परिपाटी, नाट्य-वस्तु, रंगभूमि, अभिनय, अभिनेता, रंगशिल्प, अंगरचना, रूप-सज्जा, गीत-संगीत, प्रेक्षक इत्यादि समस्त तत्त्वक समेकित अर्थ द्योतित होइछ। मैथिलीयोमे 'रंगमंच', अभिधेयार्थ ओ वृहत् अर्थ दुहूक लेल प्रयुक्त होइछ। वर्त्तमान संदर्भमे रंगमंच शब्दक प्रयोग एही वृहत् अर्थमे कयल गेल अछि।

मिथिलाक रंगमंचसँ तात्पर्य अछि ओ समस्त अभिनय-व्यापार-परम्परा जे मिथिलाभाषा अर्थात् मैथिलीक आविर्भाव कालसँ लऽ वर्त्तमान काल धरि विद्यमान रहल अछि। एकर तात्पर्य ई जे तेरहम शताब्दीसँ आरम्भ भऽ अद्यतन मिथिलामे अथवा मिथिलासँ बाहर नेपाल ओ असममे जे मैथिलीमे रचित अभिनेय सामग्री, ओकर अभिनेता, अभिनय प्रणाली, गीत-नृत्य-वाद्य, प्रेक्षागृह, प्रेक्षक इत्यादि समस्त तत्त्वक सामवायिक रूप बोधित होइछ। ई सामवायिक रूपे मैथिली रंगमंचक स्वरूप थीक।

भरत नाट्यशास्त्रमे नाट्यक उद्भवक सम्बन्धमे प्रस्तुत कयल गेल विचार एवं वैदिक साहित्यसँ लऽ रामायण एवं परवर्ती कालक ग्रंथक आधार पर ई कहल जा सकैछ जे भरतक द्वारा जे नाट्य-प्रयोगक सिद्धान्तक स्थापना कयल गेल ओकर विकसित रूप 'भास'सँ प्रारंभ भऽ नवम शताब्दी धरि वर्त्तमान रहल। मुदा दशम शताब्दीक पश्चात् संस्कृत रंगमंचक ह्रासक संगहि भारतक विभिन्न भागमे लोक-भाषामे नाटकक अभ्युदय होमय लागल छल। एही बिन्दु पर मैथिली रंगमंचक उद्भवक बीज सन्निहित अछि।

ईसाक पञ्चम शताब्दीक बाद सामान्यजनक भाषा अपभ्रंश मात्र छल एहितथ्यकेँ सर्वप्रथम कालिदास बुझलनि तथा चाक्षुष यज्ञ (रंगमंच)मे सामान्यो जनकेँ किछु भाग उपलब्ध करयबाक उद्देश्यसँ 'विक्रमोर्वशीय' नाटकमे अपभ्रंश गीतक प्रयोग कयलनि। अपभ्रंशक प्रयोगकेँ आकस्मिक नहि मानल जा सकैछ। अवश्ये ओहि कालमे जन समाजमे परम्परागत रंगमंच सँ भिन्न एहन लोक रंगमंच प्रचलित छल जे शास्त्रीय विधानसँ निर्बन्ध, लोकानुरंजक, लोकभाषामे प्रयोगशील छल। अर्थात् समाजक अनुसार परिवर्तनशीलता ओकर सहज गुण छलैक। तात्पर्य ई जे एकटा एहन रंगमंच विकसित भऽ रहल छल जे अपनामे नागर रंगमंच ओ लोक रंगमंचक तत्त्वकेँ समेटने छल। एहि प्रकारक निष्कर्ष साधार अछि। कारण, दक्षिण भारतक केरल प्रदेशमे दशम शताब्दीमे कुलशेखर वर्मन नामक राजा रंगमंचक क्षेत्रमे एकटा अभिनयक प्रयोग कयलनि। ओ प्रयोग छल संस्कृत नाटकक अभिनय शैलीमे चाक्यारलोकनिक लोकनाट्य शैलीक सम्मिश्रण। एहि सम्मिश्रणसँ जे रंगमंच उद्भूत भेल तकर नामकरण 'कुटियाट्टम' पड़ल। कुटियाट्टमक अर्थे होइत छैक मिश्रित।

दक्षिणक एहि अभिनय शैलीक अनेक तत्त्व मिथिलाक रंगमंचमे सेहो प्रतिबिम्बित होइछ। एकर किछु विशेषता मुख्य रूपसँ ध्यान देबा योग्य अछि, यथा–(i) संस्कृतक कथोपकथनक देशीय भाषामे मंचहि पर अनुवाद प्रस्तुति (ii) विदूषकक अनिवार्य उपस्थिति एवं ओकरा द्वारा सामयिक प्रसंग पर परिहासपूर्ण व्यंग्य (iii) एकहि गोट नाटकक अनेक दिनमे सम्पन्न कयल जायब (iv) रागयुक्त गीतक बाहुल्य (v) एकहि अभिनेता द्वारा भाषा शैलीमे कोनो नाटकक नृत्याभिनय।

मिथिलाक रंगमंच पर दक्षिणक रंगमंचक प्रभाव पड़ब असंभावित नहि अछि। कारण, कुलशेखर वर्मनक एक शताब्दी बाद मिथिलाक शासन एक एहन राजवंशक हाथमे आयल जे दक्षिणसँ आयल छलाह। नान्यदेवक कर्णाट देशसँ अयबाक कारणेँ एहि वंशक नामे कर्णाटदेश पड़ि गेल एवं हिनका संगमे जे कर्मचारी सभ आयल छल तकर एक जाति करणकायस्थक नामसँ विख्यात भेल। एहना स्थितिमे मिथिला ओ दक्षिणक समागमक प्रभाव मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, संगीत इत्यादि पर पड़ब स्वाभाविक छल। नान्यदेव स्वयं निविष्ट संगीतज्ञ छलाह ओ भरतक नाट्यशास्त्र एवं हुनक संगीतसिद्धान्तक पूर्ण ज्ञाता छलाह। भरत नाट्यशास्त्रक ओ '**भरत-भाष्य** अथवा **सरस्वती हृदयालंकार** नामसँ टीका ग्रंथ रचने छलाह। संभव अछि जे नान्यदेवक प्रयत्नसँ मिथिलाक रंगमंच पर भरतक नाट्य-सिद्धान्त पुनः प्रतिष्ठापित भेल हो। एहि विषय पर कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर अवश्ये कोनो एहन महत्त्वपूर्ण ग्रंथक रचना कयलनि जाहिमे गीत, नृत्य, अभिनय इत्यादिक सम्बन्धमे विस्तारसँ विवेचन कयल गेल हो। कारण, ज्योतिरीश्वरक नाटक 'धूर्त-समागम'मे हुनका लेल' अभिनय विद्योतनाचार्य इत्यादि उपाधि एहि अनुमानकेँ पुष्ट करैत अछि। वर्णरत्नाकरमे 'विद्यावन्त'क वर्णनमे संगीतक अंग-प्रत्यंग आदिक वर्णन, नृत्य-वर्णनमे विभिन्न प्रकारक स्त्री ओ पुरुष नृत्यक विस्तृत वर्णनमे कविशेखरक नाट्यशास्त्रविषयक ज्ञान तद्विषयक अभिनव चिन्तनक द्योतक थीक।

विद्यापति रचित पुरुष-परीक्षा'क 'सुबुद्धि–कथा' सँ ज्ञात होइत अछि जे कविशेखरक आश्रयदाता हरिसिंहदेवक मैत्री देवगिरिक राजा रामदेव वा वामदेवसँ छलनि एवं दुहू ठामक गुणी-विद्वान आदिक आवागमन, आदान-प्रदान होइत छल।

दक्षिणसँ नर्त्तक ओ अभिनेतालोकनि मिथिलामे अबैत छलाह। मिथिलामे हुनका सभक कला अत्यधिक प्रशंसित होइत छल। एकर सूचना विद्यापति कृत 'गोरक्ष-विजय' नाटिकामे भेटैत अछि। एहि नाटकमे गोरखनाथ ओ हिनक शिष्य काननिपाद दक्षिण देशीय नर्त्तकक रूप धारण कऽ राजा मत्स्येन्द्रनाथक राज्यसभामे प्रवेश प्राप्त कऽ नृत्य प्रदर्शित करैत छथि।

एही सम्मिश्रणक परिणामस्वरूप मिथिलामे रंगमंचक उदय भेल जाहिमे प्रयत्न कयल गेल जे अभिजात्य वा नागरजनक संगहि सामान्य ग्राम्यजन समान रूपसँ एहि चाक्षुष यज्ञक भागीदार भऽ सकथि। मैथिली नाटकमे कथोपकथन संस्कृत-प्राकृतमे देल गेल तँ गीत लोकभाषामे। नागर परिपाटीक अनुसार उच्च वर्गक पात्र संस्कृतमे बजैत छल तथा निम्न वर्गीय पुरुष एवं नारी पात्र प्राकृतमे बजैत छल। मुदा गीतप्रयोगमे नाट्यशास्त्रक ओहि नियमक अनुसरण नहि कयल गेल, प्रत्युत उल्लंघन कऽ पुरुषो पात्रक हेतु लोक-भाषाक गीत गेय मानल गेल। ई पूर्ण संभव अछि जे लोकरंगमंचक अभिनेतालोकनि एहन प्रयोग अभिनय कालमे स्वयं करैत छल होयताह। संस्कृतक लोकप्रिय सरस नाटकक अभिनय करबाक काल अपना दिससँ प्रसंगानुकूल गीतक सन्निवेश नाटकमे कऽ दैत हेताह। प्रेक्षक समाजमे ई शैली अधिक रोचक सिद्ध भेल हयत। तेँ साहित्यकारोलोकनिकेँ एकर मान्यता देमय पड़लनि। एही परिपाटीमे अभिनेय सामग्रीक रचना द्वारा एकर पहिल प्रमाण उपलब्ध होइछ कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर रचित 'धूर्तसमागम' मे।

ज्योतिरीश्वर कृत प्रहसनक दुइ गोट संस्करण संस्कृत 'धूर्तसमागम' एवं भाषा 'धूर्तसमागम' उपलब्ध अछि। संस्कृत 'धूर्तसमागम'क रचना नाट्यशास्त्रीय आधार पर भेल अछि। मुदा ओकर अभिनय लेल मंच नहि उपलब्ध रहल हयत। एहना स्थितिमे ज्योतीरीश्वर कुलशेखर वर्णनक पद्धतिक अनुसरण कऽ मिथिलाक लोक ओ लोकनाट्यक अभिनेताक योग्यताकेँ सामने राखि अपन प्रहसनमे मैथिली गीतक समावेश कयने हेताह। धूर्तसमागममे मैथिली गीतक प्रयोगक एकटा निश्चित परिपाटी देखल जाइत अछि। किछु गीत पात्रक प्रवेशक सूचक अछि जकरा प्रवेश गीत कहल गेल अछि। किछु गीत संस्कृतक श्लोकक अर्थान्तर अछि ओ किछु गीत कोनो पात्रक कथन पर आधारित अछि। परवर्ती नाटकमे मूलतः एही पद्धतिक अनुसरण कयल गेल अछि।

मैथिली धूर्तसमागम वस्तुतः परवर्ती कालक अन्य संस्कृत नाटक जकाँ श्रव्य वा पाठ्य नहि भऽ पूर्णतः अभिनेय अछि, जकर मुख्य कारण अछि मैथिली गीतक प्रयुक्त होयब।

अतः ई स्पष्ट अछि जे मिथिलामे ज्योतिरीश्वरक कालमे दू कोटिक रंगमंच विद्यमान छल—नागर रंगमंच ओ लोक रंगमंच। धूर्तसमागम दुहूक सन्धि-विन्दु बनल।

ज्योतिरीश्वर कृत वर्णरत्नाकरमे रंगमंचसँ सम्बद्ध अनेक प्रकारक गीत, नृत्य, वाद्यक एवं अन्यो अनेक प्रकारक सूचना भेटैत अछि, जाहिमे प्रथम कल्लोलक चाँञ्चलि ओ 'लोरिक नाचो'क उल्लेखसँ ज्ञात होइछ जे 'लोरिक नाच'तँ स्पष्टे रंगमंचक वस्तु छल। 'चाँचलि' सेहो नृत्य-नाट्य रूपमे एखनो मिथिलामे प्रचलित अछि।

पञ्चम कल्लोलसँ ज्ञात होइछ जे नृत्यगीताभिनय आदिक हेतु उपवनमे संगीतगृहक व्यवस्था रहैत छल एवं ओहिमे वाग्विलासिनीक गीतगायन बेसी काल होइत रहैत छल। तेँ उपवनमे 'वाग्विलासिनीक गीत ध्वनि' एवं संगीत गृहक उल्लेख अछि। चतुर्थ कल्लोलक आधार पर सूचना भेटैछ जे ओहि समयक राजपुत्र, राजपुत्री, सामन्त ओ अभिजात्य परिवारक लेल चौंसठि कलाक ज्ञान आवश्यक मानल जाइत छल। ओहि चौसठि कलामे नृत्य, गीत वा चित्र, स्त्री-भूमिका, जलवाद्य, नेपध्य, देशभाषाक ज्ञान इत्यादिक उल्लेख कयल गेल अछि। ई सभ रंगमंचक महत्त्वपूर्ण उपादान थीक। छठम कल्लोलमे संगीतज्ञक रूपमे विद्यावन्तक वर्णन करैत संगीतविषयक परिचय विस्तारसँ देल गेल

अछि।

एहिना नृत्य वर्णनमे नेपथ्यक रचना, रंगभूमिक स्थापना, वाद्य यंत्रक व्यवस्था, विभिन्न रंग, पुष्प ओ वस्त्रादिसँ नटीक श्रृंगारक विन्यस्त वर्णन, विभिन्न प्रकारक नृत्य ओ नृत्यक विविध अंगक विस्तृत विवरण देल गेल अछि, जाहिसँ ज्योतीरीश्वरक समकालक मिथिलाक सशक्त एवं उन्नत रंगमंचक परिचय भेटैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक समयमे जे रंगमंच एकटा सुनिश्चित रूप धारण कयलक तकर क्रमबद्धता क्षीणो होइत–होइत19म शताब्दीक मध्य काल धरि बनल रहल। मध्यकालक पूर्वार्द्धमे मिथिलाक रंगमंच ततबा सशक्त उन्नत ओ लोकप्रिय भेल जे एकर विस्तार उत्तरमे मोरङ नेपालक राधाश्रय धरि तथा आसाममे वैष्णव सम्प्रदायक माध्यमसँ समस्त आसाममे भेल। नेपाल ओ आसाममे जे रंगमंच विकसित भेल तकर बहुतो उपादान मूल रूप सँ मिथिलहिसँ लेल गेल छल। संभव अछि जे एहि दुहूठामक रंगमंचक कतिपय विशेषता ओकर स्थानीय नाट्यपद्धतिसँ लेल गेल हो, परन्तु अभिनय ओ अभिनयपद्धति मिथिलहिँसँ ग्रहण कयल गेल। एकर सभसँ पैघ प्रमाण थीक आसाम ओ नेपालक परिसरमे रचित नाटक सभक भाषादिमे। ओ ततस्थानीय रंगमंचसँ उद्‌भूत भेल रहैत तँ ओहि नाटक सभक भाषा आरंभिके कालसँ नेवारी (नेपालक) अथवा असमी (आसामक) भाषाक प्रयोग ओहि नाटक सभमे होइत।

अतः ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापतिकं पश्चात् मैथिली रंगमंचक विकास ओ विस्तार, नेपाल ओ आसाम धरि भेल। एहि तीनू स्थलमे मध्यकालमे प्रचुर संख्यामे नाट्य-वस्तु अर्थात् नाटकक रचना भेल।

मिथिलामे विद्यापतिक बाद अनेक नाटककारक द्वारा नाटकक रचना कयल गेल, यथा–गोविन्दक नल चरित्त, रामदासक आनन्दविजय, देवानन्दक उषाहरण, उमापतिक पारिजातहरण, रमापतिक रुक्मिणीपरिणय, लाल कविक गौरी स्वयंवर, नन्दीपतिक कृष्णकेलिमाला, शिवदत्तक पारिजातहरण एवं गौरीपरिणय, श्रीकान्तगणकक श्रीकृष्णजन्मरहस्य, कान्हारामक गौरीस्वयंवर, रत्नपाणिक उषाहरण, भानुनाथक प्रभावतीहरण, हर्षनाथक उषाहरण, बलदेव मिश्रक राजराजेश्वरी तथा रमेशोदय, म.म. परमेश्वर झाक दुर्गाविजय इत्यादि।

मैथिली रंगमंचक विकासक दोसर स्थल नेपाल थीक जाहि ठाम मध्यकालमे मैथिली रंगमंच विकासक चरमविन्दु पर पहुँचि गेल छल। एकर श्रेय मल्लवंशक राजालोकनिकैं अछि। मल्लवंशक राजत्व कालमे नेपालमे मैथिली साहित्य विकसितावस्थाकैं प्राप्त कयने छल।

नेपालमे सर्वप्रथम नाटकक रचना जयस्थितिमल्लक समय (1386-1429 ई०)मे भेल। सर्वप्रथम ओ रामायण नामक नाटकक रचना कराओल जकर अभिनय अपन पुत्र धर्ममल्लक उपनयनक अवसर पर कराओल। हिनक उपरान्त एवं यक्षमल्लक मृत्युक बाद नेपालक राज्य तीन शाखामे विभक्त भऽ गेल–भातगाँव, वनिकपुर ओ काठमाण्डू। एहि तीनू शाखामे मैथिली नाटकक रचना प्रचुर मात्रामे भेल।

नेपाल राज्यक भातगाँव शाखामे अनेक नाटकक रचना भेत, यथा–जगज्जयोतिर्मल्लक मुदितकुवलयाश्व, हरगौरीविवाह, कुञ्जबिहार, जगत्प्रकाशमल्लक उषाहरण, नलीयनाटकम्, पारिजातहरण, प्रभावतीहरण, मलयगन्धिनी, मदन-चरित्र, सुमति जितामित्रमल्लक कालीयमथनोपाख्यान, मदालसाहरण, जैमिनीय भरतनाटकम्, उषाहरण, नवदुर्गानाटकम्, भाषा नाटकम्, भूपतीन्द्रमल्लक रुक्मिणीहरण, माधवानल, जालन्धरोपाख्यान, गौरीविवाह, गोपीचन्द्रोपाख्यान, कोलासुरवधोपाख्यान, कंसवध, कृष्णचरित्र। एहिशाखाक अन्तिम राजा रणजितमल्ल रचित सेहो अनेको नाटक प्राप्त होइछ।

काठमाण्डू शाखामे प्रतापमल्लदेवक राजत्वकलमे वंशमणिक रचित दुइ गोट नाटक प्राप्त होइछ–मुदित मदालसा ओ गीतदिगम्बर।

एहिना पाटनक सिद्धनरसिंहमल्ल, श्रीनिवासमल्ल, विष्णुसिंहमल्ल इत्यादि राजा सभक समयमे सेहो मैथिली नाटकक रचना भेल।

अठारहम शताब्दीक तेसर चरणमे राजा पृथ्वीनारायणशाहक आधिपत्यक संग मल्लवंशक तीनू शाखाक समाप्तिक संगहिं नेपालक मैथिली रंगमंचक सेहो अन्त भऽ गेल।

नेपाले जकाँ आसामोमे मैथिली रंगमंचक पूर्ण विकास भेल। एहि स्थलक नाट्य जकर प्रदर्शन आसामक मंच पर कयल जाइत छल, एक अंकक होयबाक कारणेँ अंकीया नाटक नामसँ प्रसिद्ध भेल।

एहि परम्पराक संस्थापक शंकरदेव छलाह। हिनक रचित कालीयदमन, रामविजय, रुक्मिणीहरण, केलिगोपाल, पत्नीप्रसाद, परिजातहरण; माधवदेवक अर्जुनभञ्जन, भोजनविलास, भूमिलोटौवा, भूपणहेरौवा, रासझुमुरा, कटोराखेलोवा, गोपालपारा, चोरधरा, पिम्पुरागुचोरा; गोपालदेवक जन्मयात्रा, उद्धवसंवाद; रामचरण ठाकुरक कंसवध, दैत्यारिठाकुरक नृसिंहहरण, स्यमन्तहरण नाटक प्राप्त होइछ। एकर उपरान्त कोनो तेहन प्रभावशाली नाटककार नहि भेलाह। मुदा अंकीया नाटक परम्परा समाप्त नहि भऽ वर्त्तमानो समय धरि अपन जीवनक रक्षा कयने अछि, मुदा परिवर्त्तित रूपमे।

नाट्यशास्त्रमे प्रेक्षागृहक जाहि प्रकारक रूपरेखाक नियत ओ नियमित विवरण प्राप्त होइछ, ओहन रूप-रेखाक विवरण वा सूचना मिथिला वा मैथिलीक प्रेक्षागृहक नहि प्राप्त होइछ। मुदा मैथिली रंगमंचक तीनू शाखा (मिथिला, नेपाल, आसाम)क रंगनिर्देशक आधार पर सिद्ध होइछ जे स्थानभेदक अनुसार प्रत्येक स्थल पर अभिनयस्थली वा प्रेक्षागृहक प्रत्येक उपादान नाट्यशास्त्रेक अनुसार वर्त्तमान छल। एहि प्रकारक परम्परा ज्योतिरीश्वरक समयसँ 19म शताब्दीक मध्यकाल धरि अनवरत रूपमे देखबामे अबैछ। मिथिला ओ नेपालमे राज्याश्रयमे स्थायी प्रेक्षागृह वा रंगशालाक अस्तित्व पूर्ण संभावित अछि। आसामोक सत्र सभमे नाचघर प्रेक्षागृहक रूपमे प्रयुक्त होइत छल। नाचघरक अतिरिक्त कोनो प्रेक्षागृहक रूप-रेखा अनुपलब्ध अछि। सामान्य समाजक लेल अस्थायी नाट्यमण्डपक प्रयोग होइत छल जे एखनो होइछ। एहि नाट्यमण्डप सभ पर रंगपीठ, रंगशीर्ष, नेपथ्य विधानक लेल पर्दाक प्रयोगक सूचना नाटक सभमे यवनिका, यमनिका, पटी, अपटी आदिक नामसँ प्राप्त होइछ। राजन्यक अतिरिक्त प्रत्येक रंगमंचक दर्शक समाजक कोनो कोटिक व्यक्ति होइत छल।

अभिनेताक प्रयोगक सम्बन्धमे जाहि प्रकारक निर्देश नाट्यशास्त्रमे प्रदान कयल गेल अछि ओहि प्रकारक पुरुष पात्र मात्रक चयन कयल जाइत छल। नारी पात्रक प्रयोग मिथिला ओ अंकीया रंगमंच पर नहि कयल जाइत छल। मुदा नेपालीय मैथिली नाट्य-प्रदर्शनमे नारीयो पात्रक प्रयोग पूर्ण संभावित अछि। किछु नियमित पात्रक प्रयोगक सेहो नित्यता रहल यथा–आसाममे-सूत्रधार, संगी; नेपालमे–नटी, सूत्रधार; मिथिलामे–नटी, सूत्रधार ओ विपटा।

पूर्वरंग ओ भरतवाक्यक प्रयोग जहिना संस्कृत रंगमंच पर नाट्य-यज्ञक प्रारंभिक ओ समापन व्यापारक अपरिहार्य विधायकक रूपमे कयल गेल अछि ओहिना मिथिला वा मैथिलीक रंगमंच पर सेहो स्वीकृत भेल। अन्तर मात्र रूपाकृतिमे भेल। मैथिली रंगमंचक तीनू शाखामे स्थान, समय ओ परिस्थितिक अनुकूल किछु-किछु भिन्नता देखल जाइछ। प्रत्येक स्थलक भावनात्मक एकता अछि। ओ भावना थीक भक्ति।

नेपालीय रंगमंचक राज्याश्रित रहबाक कारणेँ पूर्वरंगमे राज्य व्यवस्थाक छाया दृष्टिगत होइछ तँ अंकीया रंगमंचक उद्देश्य भक्तिभावनाक प्रचार मात्र अछि। एही कारणेँ पूर्वरंगक प्रत्येक उपादान आराध्यदेवक आराधनामे तल्लीनता सँ सम्बद्ध अछि। कीर्तनिञा रंगमंचमे परम्परागत राजाक गुण-कीर्तनक परम्पराक संगहि सामाजिक व्यक्तिक भावनाक समादर कयल गेल अछि।

मैथिली रंगमंचक तीनू शाखामे तीन प्रकारक समापन विधान (भरतवाक्य)क प्रयोग कयल गेल अछि। कारण, तीनू स्थलक रंगमंचक परिस्थिति, सभ्यता एवं संस्कृतिक परिप्रेक्ष्य भिन्न-भिन्न प्रकारक छल। मिथिलाक कीर्तनिञा रंगमंच बहुत किछु अंशमे नाट्यशास्त्रक परिपाटीक पालन कयलाक। एहिमे भाषागत अन्तर मात्र अछि।

नेपालीय रंगमंच पर भरतवाक्यक प्रयोग तँ भेल मुदा प्रधानता अछि शिव-पार्वतीसँ सम्बद्ध प्रार्थनाक।

एहिना अंकीया नाटक मंच पर सेहो भरत-वाक्यक रूपमे भटिमा वा मुक्तिमंगल भटिमाक पाठ कयल जयबाक परिपाटी रहल अछि, जकर विषय-वस्तु नाटकक नायक (देवपुरुष)सँ सम्बद्ध रहल अछि।

मिथिलामे मध्यकालमे जाहि नाट्य-वस्तुक अभिनय प्रेक्षागृहमे कयल गेल तकर आधार मुख्य रूपसँ पुराण, महाभारत एवं रामायण छल। तेँ प्रधानता अछि प्रख्यात कथावस्तुक। मिथिलाक नाट्यवस्तुमे तीनू प्रकारक दृष्टान्त उपलब्ध होइछ जाहिमे कल्पित एवं मिश्र कथावस्तुसँ युक्त नाटकक संख्या अत्यल्प अछि। अर्थात् प्रधानता अछि प्रख्याते कथावस्तुक। अंकीया नाटक कथावस्तु पूर्णतः प्रख्यात अछि। नेपालमे सेहो मिश्रित कथावस्तुक मात्रा अत्यल्प अछि। एहू ठाम प्रधानता प्रख्याते कथावस्तुक अछि।

अभिनय शैलीमे आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विकक प्रयोग मैथिली रंगमंच पर कोन रूपमे कयल जाइत छल तकर सूचनाक आधार तीनू स्थल पर प्राप्त नाट्यवस्तु अछि। नाटक सभक रंगनिर्देशकेँ देखि कऽ बुझबामे अबैछ जे आंगिक अभिनय शैलीक प्रयोगमे मैथिली रंगमंचक तीनू शाखा नाट्यशास्त्रक पूर्णतः अनुकरण करैछ।

वाचिक अभिनयमे मिथिला शाखाक रंगमंच पर नाट्यशास्त्रक अनुकूल संस्कृत प्राकृत भाषाक प्रयोग तँ कयले गेल अछि। एकर अतिरिक्त मैथिली भाषाक प्रयोग सेहो प्रचुर मात्रामे भेल अछि जे देखि एहन सन बुझबामे अबैछ जेना मैथिली गीतकेँ हटा देलासँ नाट्य-वस्तु छिन्न-भिन्न भऽ जायत। मुदा नेपाल ओ आसाम शाखाक नाट्यमे परम्पराक निर्वाह मात्रक लेल संस्कृतक प्रयोग कयल गेल अछि। सम्पूर्ण वार्तालाप मैथिलीयेमे अछि। नाम, उपाधि ओ सम्बोधन आदिक प्रयोगमे प्राचीन परम्परा एवं सामाजिक व्यवहार दुनूक सम्मिलित रूप देखबामे अबैछ।

आहार्य अभिनयमे ऐतिहासिक पात्रक वेशविन्यास तँ तदनुकूले कयल गेल मुदा ओहिसँ इतर पात्रक वेशविन्यास सामाजिक परम्परा ओ साधनक अनुसार कयल जाइत छल। अतः आहार्य अभिनयक चारू विधि-पुस्त, अलंकार, अंगरचना ओ संजीवक उपयोग यथासंभव कयल गेल अछि।

सात्विक अभिनय जे मनोभावक अभिव्यक्तिक मूल उपादान थीक तकरो पालनक पूर्ण आयास कयल जाइत रहल अहि जकर सूचना रंगनिर्देशसँ प्राप्त होइछ।

रंगमंचक लेल गीत, नृत्य एवं आतोद्य वा वाद्य अत्यन्त उपकारक उपादान मानल गेल अछि।

मैथिली रंगमंच पर तीन प्रकारेँ गीतक प्रयोग होइत रहल अछि–पूर्वरंगक गीत, उत्तर रंगक गीत एवं रंगक गीत।

पूर्वरंगक गीतक प्रयोगमे तीनू स्थलक आराध्य देवसँ सम्बद्ध गीतक प्रधानता अछि, यथा–नेपाल ओ मिथिलामे शिव ओ शक्तिक वन्दनागीतक प्रधानता अछि तँ अंकीया नाटमे आराध्यदेव विष्णुक विभिन्न रूपसँ सम्बद्ध गीतक योजना कयल गेल अछि।

उत्तर रंगमे प्रयुक्त गीतमे नेपालीय रंगमंच पर विभिन्न प्रकारक गीतक प्रचलन देखल जाइछ, यथा–आरती गीत, शान्तिगीत, कुराग, प्रायश्चित गान आदि-आदि, मिथिलामे मात्र मंगलकामनायुक्त गीतक प्रधानता अछि। ओहिना अंकीया रंगमंच पर आराध्य देवक वन्दना कयल जाइत रहल अछि, जकरा मुक्ति मंगल भटिमा कहल जाइछ।

मुख्यरंग अर्थात् नाट्य-वस्तुमे भरत पाँच प्रकारक गीतक प्रयोगक विधान कयने छथि–प्रावेशिकी, नैष्क्रामिकी, आक्षेपिकी, प्रासादिकी एवं अन्तरा। रंगमे प्रयुक्त गीतक प्रयोग तीनू ठाम नियमित रूपसँ कयल गेल अछि।

मैथिली रंगमंच पर मुख्य रूपसँ तीन प्रकारक नृत्यक प्रयोग कयल गेल अछि–स्वतंत्र नृत्य, प्रयोगमे नृत्य एवं नाट्य वस्तुक अनुरोधी नृत्य। ओहिना समाजमे प्रचलित विभिन्न प्रकारक वाद्यक प्रयोग मैथिली रंगमंचक तीनू शाखामे देखल जाइछ। स्थानक भिन्नताक कारणेँ किछु अन्तर मात्र अछि।

प्रारंभिक मैथिली रंगमंचक तीनू शाखामे सुव्यवस्थित रंगमंचीय परम्परा विद्यमान छल। मुदा 19म शताब्दीक पूर्वार्द्ध सँ 20म शताब्दीक पहिल दशक धरि रंगमंचक क्षेत्रमे शून्यता देखल जाइछ, जकर कारण अछि कीर्तनिञा नाट्य-परम्परामे किछु एहि प्रकारक गत्यवरोध आबि गेल जाहिसँ ओ परिवर्तित सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितिक मनोवृत्ति ओ रुचिक अनुरूप समाजक मनोरंजन करबामे सक्षम नहि रहि गेल।

मैथिली रंगमंचक अवसानक कारण दिस तद्युगीन विद्वानलोकनिक ध्यान गेल। पाश्चात्य साहित्यसँ प्रभावित भऽ देशक विभिन्न भागमे रंगमंचीय विधानमे जाहि प्रकारक परिवर्तनक कारणेँ नाटक लोकप्रिय भेल छल तकरा सम्बन्धमे चिन्तन कऽ आधुनिक कालमे मैथिली रंगमंचकेँ नवीन रूप प्रदान कयल गेल। एहि आधुनिक रंगमंचक सूत्रधार भेलाह कविवर जीवनझा।

जीवन झा संस्कृत नाट्यसाहित्यक रचना तत्त्व, कीर्तनिजा रंगमंचक गीत तत्त्व, नव युगक अनुरूप नाट्य-वस्तु, जाहिमे मिथिलाक समाजक प्रतिबिम्बन छल एवं पारसी थियेटरक प्रदर्शन-शैलीक संयोगसँ आधुनिक मैथिली रंगमंचक स्वरूपक निर्माण कयलनि।

आधुनिक कालमे मैथिलीक अनेक प्रकारक प्रेक्षागृहक रूपक दर्शन होइछ, जकरा देशी ओ परदेशी, दुइ मुख्य भागमे विभाजित कयल जा सकैछ। देशीक रंगमंच ओकरा कहल जाइछ जकर निर्माण मिथिलांचल क्षेत्रमे होइछ। मिथिलासँ बाहर निवास कयनिहार मैथिल द्वारा प्रयुक्त रंगमंच परदेशी रंगमंच कहबैछ। देशीक अनेक रूप अछि–स्थायी, अस्थायी (स्थिर-स्थिर नियत कालिक स्थिर अनियतकालिक, अस्थिर) आदि। एकर परिमाप साधारणतः 20' x 30' होइछ। एहि अभिनयस्थळीकेँ नाट्यशास्त्रानुकूल विभिन्न भाग-रंगपीठ, रंगशीर्ष, नेपथ्य, मत्तवारिणी (पार्श्व वा साइड) मे विभाजित कयल जाइछ। मुदा एकर एहि प्रकारक रूपमे स्थायित्व नहि होइछ प्रत्युत समय, परिस्थिति ओ आवश्यकताक अनुकूल उपलब्ध सामग्रीसँ निर्माण कयल जाइछ। एहि नाट्यमण्डप पर साधारणतः चारिगोट पर्दाक प्रयोग कयल जाइछ–ड्रापसीन, पथ, महल, जंगल। एहि प्रकारक पर्दाक नामकरण होइछ एवं नाट्यमण्डपक विभिन्न भागक विभाजनक कार्य पर्दा द्वारा होइछ। पर्दाक दुइ रूप होइछ–उर्ध्वगामी एवं पार्श्वगामी (उभय पार्श्वगामी एवं एक पार्श्वगामी)। वादकलोकनिक उपवेशनक व्यवस्था रंगपीठ पर वा नाट्यमण्डपक समक्ष खाधि कोड़ि कयल जाइछ। प्रेक्षक लोकनिक बैसबाक कोनो विशेष व्यवस्था नहि कयल जाइछ। मुदा अभिनयस्थलीक समक्षमे पर्याप्त स्थान रहय, तकर ध्यान राखल जाइछ। नाट्य प्रदर्शनक अवसर मिथिलाक विभिन्न पावनि-तिहार, मांगलिक अवसर ओ आमोद-प्रमोद मनयबाक समय होइछ। अभिनेताक रूपमे पुरुष पात्र मात्र भाग लैत छथि। नारी पात्रक अभिनय व्यापारमे कोनो योग नहि रहैछ। परदेशी रंगमंच पर नारियो स्त्रीक भूमिकामे भाग लैत छथि। आधुनिक रंगमंचक पूर्वरंगमे नाट्यसँ पूर्व प्रत्येक व्यापारक परिगणना कयल जाइछ जकर नामकरण व्यावहारिक पूर्वरंग करब उचित अछि। एकरा अन्तर्गत मंचयोजना, रंगयोजना, आद्य पूर्वरंग, उत्तर पूर्वरंग, नाट्य-उद्घोषणा आदिक गणना करब उचित होयत। उत्तर पूर्वरंगमे विभिन्न देवी-देवताक प्रार्थना, जयघोष ओ अन्य पूर्वरंगीय व्यापारक समापन कयल जाइछ। नाट्य-व्यापारक समापनक उपरान्त पुनः देवी देवताक जयघोष एवं नाना प्रकारक मनोविनोदार्थ गीतक गायन कयल जाइछ।

आधुनिक मैथिली रंगमंचक नाट्यवस्तु मुख्य रूपसँ मिथिलाक सामाजिक जीवनसँ सम्बद्ध अछि। एकर अतिरिक्त नाट्यवस्तुक रूपमे यदि पौराणिक वा ऐतिहासिक विषय-वस्तुकेँ ग्रहण कयलो गेल अछि तँ मिथिलाक सामाजिक वातावरणक अनुकूल गढ़ाय-चिकनाय।

आंगिक अभिनय शैली मे आधुनिक मैथिली नाट्यमंच पर नाट्यशास्त्रोक प्रदर्शनशैलीक अनुकरण करैछ। वाचिक अभिनयमे मैथिली भाषाक प्राधान्य अछि। स्थान विशेष पर आवश्यकताक अनुकूल संस्कृत, हिन्दी आदि अन्यो भाषाक प्रयोग कयल गेल अछि। सम्बोधन, नाम ओ उपाधिविधान मिथिलाक सामाजिक परम्पराक अनुकूल प्रयुक्त होइछ। आहार्य अभिनयमे ऐतिहासिक पात्रकेँ छोड़ि शेष पात्रक वेशविन्यास मिथिलाक सामाजिक प्रचलनक अनुकूले कयल जाइछ। एकर विभिन्न विधि-पुस्त, अंगरचना, अलंकरण एवं संजीवनक उपयोग सेहो प्रयोजनक अनुकूल कयल जाइछ।

मिथिलामे प्रचलित गीतक प्रयोगक प्रधानता आधुनिक रंगमंच पर देखल जाइछ। एकर अतिरिक्त आधुनिक युगक अनुरूप सेहो प्रयोजन भेला पर गीतक प्रयोग कयल जाइछ। नाट्य-व्यापारसँ इतर गीतक प्रयोग कयल जयबाक परिपाटी सेहो अछि। नृत्यक प्रयोग आधुनिक रंगमंच पर नटुआ मात्रक कयल जाइछ। यत्किञ्चित मात्रामे नाट्य-प्रदर्शनमे प्रयोजनक अनुकूल नृत्यक प्रयोग सेहो कयल जाइछ। मिथिलामे प्रचलित वाद्यक रंगमंच पर प्रयोगक प्राधान्य अछि। ओना स्थलविशेष पर आधुनिको वाद्ययंत्रक प्रयोग कयल जाइछ।

आधुनिक युगमे उपरूपकक सदृश एकटा नव विधा-एकांकीक सेहो प्रयोगक प्रचलन अछि जे अत्यधिक लोकप्रिय अछि। संस्कृत वा अन्य भाषासँ अनेक नाटकक अनुवाद भेल अछि। मुदा कलकत्तामे अनूदित नाटक प्रदर्शनक दृष्टिसँ विशेष सफल एवं लोकप्रिय भेल अछि।

मैथिलीमे रंगमंचक परम्पराक अवलोकन सँ ई स्पष्ट होइछ जे रंगमंचक विकासक लेल किछु उपादानक रहब आवश्यक होइछ, जकर अभाव आधुनिक मैथिली रंगमंचक लेल देखल जाइछ, यथा–स्थायी एवं सुव्यवस्थित प्रेक्षागृह, अभिनेय नाटक, पटु अभिनेता, अभिनयमे भूमिका ग्रहण करबाक लेल नारी पात्र आदि। दोसर, आधुनिक मैथिली रंगमंच उद्‌भवकालेसँ अनेक प्रकारक प्रतिस्पर्धाक सामना करैत रहल अछि, यथा–पारसी थियेटर एवं अन्यान्य भाषाक सुव्यवस्थित प्रेक्षागृह, सिनेमा-रेडियो रंगमंच। तथापि एतेक बाधा-व्यवधानक उपरान्तो अपन रक्षा एखन धरि कयने अछि। इएह आधुनिक मैथिली रंगमंचक वास्तविक उपलब्धि अछि। वर्त्तमान समयमे लोकक ध्यान मैथिली रंगमंच कठिनता दिस आकृष्ट भेल अछि तेँ एकर विकास निश्चित अछि।

●

मैथिल ब्राह्मणमे विवाह

डॉ. राजेन्द्रझा

विवाहक सम्बन्धमे विचारकक भावमे समानता रहितहुँ अभिव्यक्तिमे भिन्नताक अनुभव कैल जाइत अछि। लूसी मेयरक अनुसार विवाह स्त्री-पुरुषक एहन सम्बन्ध अछि जाहिसँ उत्पन्न सन्तान वैध मानल जाइछ। रिवर्सक शब्दमे जाहि साधनसँ मानव समाज सेक्स-सम्बन्धक नियमन करैछ, विवाह कहल जाइछ। वेस्टरमार्कक कहब अछि विवाह स्त्री-पुरुषक एहन सम्मिलन अछि जकरा कोनो संस्कारकेँ सम्पन्न कऽ कऽ स्वीकृत कैल जाइछ। हावेलक मतेँ विवाह सामाजिक नियमक जाल अछि जे वैवाहिक युग्मकेँ पारस्परिक रक्त-सम्बन्ध तथा बच्चा एवं समाजक प्रति सम्बन्धकेँ नियंत्रित एवं परिभाषित करैछ। जेम्सक विचारमे विवाह मानव समाजमे सार्वभौमिक रूपसँ प्राप्य एक आधारभूत संस्था अछि जे सेक्स-सम्बन्ध, गृहनिर्माण, प्रेम तथा व्यक्तित्व, जैवकीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आचारिक एवं आध्यात्मिक विकासक आवश्यकताक पूर्ति करैछ। वोगार्ड्सक अनुसार विवाह स्त्री-पुरुषक पारिवारिक जीवनमे प्रवेश करबाक संस्था अछि तऽ गिलिन एवं गिलिनक मतेँ विवाह एक प्रजननमूलक परिवारक संस्थापनाक समाज स्वीकृत पद्धति अछि। एहि परिप्रेक्ष्यमे कहल जा सकैछ जे विवाह मानव समाजक आधारभूत सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था अछि, समाजक प्रमुख प्राथमिक समूह परिवारक आधारशिला अछि, सामाजिक निरन्तरताक मूल अछि, समाज स्वीकृत प्रणाली अछि, जीवन संगी प्राप्त करबाक पद्धति अछि, दू आत्माक मिलन, पूर्णताक रूप तथा प्रगतिक प्रतीक अछि, व्यक्तित्व विकासक आधार अछि।

मैथिल ब्राह्मण वृहत्तर हिन्दू समाजक एक विशिष्ट अंग अछि। मैथिल ब्राह्मण समाजमे विवाहक अवधारणा मुख्यतः संस्कारात्मक अछि। एकर आधारशिला धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित अछि। एकरा जीवनक अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्तिक साधन ओ साध्य मानल जाइत अछि। मैथिल विवाह एक संस्कार अछि, एक अटूट पवित्र बन्धन अछि, धार्मिक कृत्यक सम्पादनक बाद समाज द्वारा अभिमत प्राप्त ई विषम सेक्सक व्यक्तिक विधिवत् मिलन अछि जे धर्मशास्त्रक प्रामाणिकता पर आधारित अछि। राधाकमल मुखर्जी एवं के.एम. कपाडियाक विचारसँ सेहो एकर सम्पुष्टि होइछ। वस्तुतः मैथिल ब्राह्मणमे विवाह एक अनिवार्य संस्था अछि, पारिवारिक जीवनमे प्रवेशक प्रमाण-पत्र अछि, जीवनक पूर्णताक परिचायक अछि, व्यक्तित्व विकासक द्योतक अछि, सेक्स आकांक्षाक पूर्तिक माध्यम अछि, जीवनक चरम आदर्श मोक्षप्राप्तिक साधन अछि। नियमित, नियंत्रित, व्यवस्थित, सुरक्षित, संगठित जीवनक आधारक संग सांस्कृतिक-सामाजिक ओ आर्थिक आवश्यकताक पूर्तिक लेल उपयोगी अछि। संस्कृत एवं मैथिली साहित्यमे एकर बहुविध उल्लेख भेटैछ।

मैथिल ब्राह्मण समाजमे विवाहसँ तात्पर्य विशेष रूपसँ ग्रहण करबासँ अछि अर्थात्, कन्याकेँ विशेष प्रकारसँ, विशिष्ट उद्देश्यसँ पिताक घरसँ वर द्वारा अनबाक अछि। उद्वह शब्द सेहो पैतृक गृहसँ कन्या केँ वरक घर लऽ अयबाक भावक पुष्टि करैछ। परिणय ओ परिणयन शब्दक प्रयोग अग्निक प्रदक्षिणाक क्रममे लेल जाइछ जकरा स्थिरता ओ सहकारिताक सूचक मानल जाइछ। विवाहक सन्दर्भमे विशेष प्रचलित शब्द प्राणिग्रहणक प्रयोग कन्याक हाथ पकड़बसँ अछि अर्थात् भार ग्रहण करब, रक्षाक प्रतिज्ञाक संग स्वीकार करब अछि आ उपयम्, शब्दक व्यवहार समीप आनिकऽ अपन बना लेबासँ अछि, दम्पत्ति शब्दक अर्थ गृहक समान अधिकारी होयब अछि आ 'अर्धाङ्गनी शरीरक आधा भागक द्योतक अछि। एहि तरहेँ कहल जा सकैछ जे मैथिल ब्राह्मण विवाह एक धार्मिक कर्त्तव्य अछि। एतए पूजा, उपासना, यज्ञ, आदिमे पति-पत्नीक सम्मिलित सहभागिताक विधान अछि आ तेँ पत्नीके अर्धाङ्गिनी कहल जाइछ। शतपथ ब्राह्मणमे लिखल अछि जे पत्नी निश्चित रूपसँ पतिक अर्धाङ्गिनी अछि। पत्नीक महत्ताक उल्लेख मनु, याज्ञवल्क्य एवं कालिदास सेहो कयने छथि। मैथिल ब्राह्मण विवाह सरिपहुँ संस्कारक समन्वय आ संगम अछि जतऽ

प्रत्येक संस्कारक मूलमे कछु धार्मिक विश्वास आ आस्था निहित रहैछ। समाजशास्त्रीय विश्लेषणसँ प्रतीत होइछ जे संस्कार द्वारा स्त्री-पुरुषकेँ पारस्परिक कर्त्तव्य एवं धार्मिक उत्तरदायित्वक निर्वाहक लेल एक सूत्रमे बान्हल जाइछ। विवाह स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध-स्थापनाक संग हृदय, मन, तथा वृत्तिक परिष्कारक साधन बनैछ। एतए एकरा जन्मजन्मान्तरक सम्बन्ध, जीवनक मुख्य लक्ष्यक प्राप्ति, काम आ मोक्षक साधन, तथा नाम अमर रखबाक आधार मानल जाइछ।

मैथिल ब्राह्मणमे विवाहक प्रमुख उद्देश्य हिन्दू विवाहक सन्दर्भ मे वर्णित धर्म, रति आ प्रजा मानल जाइछ। धर्म सँ अभिप्राय विश्वास क्रिया अर्थात् नियमक पालन यज्ञ, हवन, पूजा, आराधना एवं अन्य धार्मिक कार्यक सम्पादन सँ अछि, शास्त्रानुसार यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानक सम्पादन पति-पत्नीक पारस्परिक सहयोग एवं एकता सँ पूर्ण कयल जा सकैछ। पुरुषार्थचतुष्टयमे पहिल विन्दु धर्म अछि जे कतिपय विश्वास आ तदर्थ अपेक्षित क्रियाक सम्पादन पर निर्भर करैछ। धार्मिक कृत्यमे पत्नीक सहभागिता आवश्यक मानल जाइछ आ पत्नीप्राप्तिक आधार प्रस्तुत करैछ विवाह जे अर्धाङ्गिनी रूपमे पति केँ धार्मिक कार्यमे सहयोग प्रदान करैछ।

रति विवाहक महत्वपूर्ण उद्देश्य अछि। रतिसँ अभिप्राय आनन्दसँ अछि। पुरुषार्थ चतुष्टयमे एक अछि काम अर्थात् सेक्स सम्बन्धी आवश्यकताक पूर्तिक संग सांसारिक सुख प्राप्तिक अभिलाषा, इच्छा। कामक प्रवृत्ति मानवमे सहज रूपमे स्फुटित होइछ आ ओकर अभिव्यक्तिक प्राप्तिक हेतु विवाह आवश्यक मानल जाइछ। एहि तरहेँ रति दाम्पत्य जीवनकेँ सुन्दर एवं मनोरम बनबैत अछि संगहि सेक्स अभिव्यक्तिकेँ सहज, नियमित एवं अनुशासित करैछ आ यैह प्रस्तुत करैछ आधार प्रजा व सन्तानक।

प्रजा अर्थात् सन्तान सफल वैवाहिक जीवनक उपलब्धि अछि। विवाहक एक प्रमुख उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति अछि। मैथिल ब्राह्मणमे अन्य हिन्दूक भाँति पुत्रक महत्ता विशेष अंकित अछि, हेतु ओ पिताकेँ मृत्युक बाद पिण्डदान करैछ, स्वर्गक पथकेँ श्राद्धकर्मक माध्यमसँ प्रशस्त करैछ, मोक्ष प्राप्तिक आधार प्रस्तुत करैछ। पुत्र हेतु पत्नीक संग सहवास आवश्यक अछि। उक्ति अछि 'पुत्रार्थे भार्या' वस्तुतः विवाहक उद्देश्य 'प्रजा'क भावक अभिव्यक्ति अछि।

सार रूपमे मैथिल ब्राह्मण समाजमे जीवनक अभीष्ट मोक्ष प्राप्ति हेतु धर्मक अनुसरण करैत रतिक्रियाक माध्यमसँ प्रजा विशेष कऽ पुत्र उत्पन्न करब अछि आ एहि लेल अपेक्षित 'पत्नी' विवाह संस्कारक सम्पादनहिसँ सम्भव भऽ सकैछ।

विवाहक अनुषांगिक उद्देश्य सेहो अछि जाहि मे परिवारक निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्वक निर्वाह, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यक्तित्वक विकास ओ सुरक्षा तथा वंशवृद्धि आदिक उल्लेख विशेष रूपसँ कयल जाइछ।

स्वयं वा घटकक सहयोगक बलेँ वरपक्षकेँ कन्यापक्षक प्रस्तावक अनुकूल भेला सन्ता निर्णयकेँ अन्तिम रूप देबाक क्रममे पंजीकारक प्रयोजन पड़ैछ जे पंजी व्यवस्थाक विशेषज्ञक रूपमे उपलब्ध होइत छथि ओ गणनाक आधार पर निर्णय दैत छथि जे प्रस्तावित वर-वधूक बीच वैवाहिक सम्बन्ध सम्भव अछि वा नहि। पंजीसँ तात्पर्य एक विशिष्ट 'बही' सँ अछि जाहिमे विवाहेच्छुक पूर्वजक विवरणी लिपिबद्ध रहैछ यथा नाम गोत्र, विवाह आदि, जकरा पंजीक विशेषज्ञ पंजीकार सुरक्षित एवं अद्यतन राखि ओहि आधार पर विवाह सम्बन्धी निर्णय 'तालपत्र' पर 'अस्वजन पत्र' व 'स्वस्ति पत्र'क रूपमे प्रमाणस्वरूप वरपक्षकेँ प्रदान करैत छथि जे प्रक्रिया क्रममे कन्यापक्षकेँ दऽ देल जाइत अछि आ ओ ओहि पत्रकेँ जकरा सिद्धान्त कहल जाइछ, अपन कुलदेवताक समक्ष राखि वैवाहिक निश्चयतासँ आश्वस्त भऽ विवाहसम्बन्धी अग्रिम तैयारीमे लागि जाइत छथि। ई प्रमाणपत्र एहि निर्णयक सूचक होइछ जे वर-वधू एक निश्चित पीढ़ी धरिमे रक्त सम्बन्धी नहि छथि ओ ओहि दुहूक विवाहक मध्य कोनो शास्त्रीय व्यवधान नहि अछि; अर्थात् परिणय-सूत्रमे बन्हि पति-पत्नीक रूपमे परिणत होमऽवला व्यक्ति स्वजन अर्थात् रक्त सम्बन्धी नहि छथि।

उक्ति अछि 'मातृतः पंचमं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमम् त्यजेत' अर्थात् माता दिशसँ पाँच एवं पिता दिशसँ सात पीढ़ी धरि सम्बन्ध नहि होमक अछि। 'एहि पंजीमे मात्र पुरुषक नामक उल्लेख वस्तुतः पितृसत्तात्मक स्वरूपक दृष्टान्त प्रस्तुत करैछ। एहि तरहेँ विवाहक निर्णयमे पंजीकारक प्रस्थिति एवं भूमिका महत्त्वपरक मानल जाइछ।

विवाहक स्वरूप

मैथिल ब्राह्मणमे विवाहक प्रचलित स्वरूपमे मनु द्वारा प्रतिपादित प्रशस्त एवं अप्रशस्त श्रेणीक किछु दृष्टान्त भेटैछ, जाहिमे ब्राह्म विवाह एवं प्राजापत्य विवाहक सम्मिलित रूपक प्रमुखता अछि। ब्राह्मण विवाहमे कन्याक अभिभावक अपन कन्या केँ सुसज्जित एवं अलंकृत कऽ गुणवान एवं शीलवान वर केँ आमंत्रित कऽ दानक रूपमे प्रदान करैछ। एहि विवाहकेँ श्रेष्ठ मानबाक कारण ओहिमे व्याप्त सामाजिकता, शालीनता ओ धार्मिकताक भाव अछि तथा प्राजापत्य विवाहमे वैदिक मंत्रक संग आशीर्वाद दैत कहल जाइछ जे 'अहाँ सभ आइसँ सभ्यरीति सँ एक संग धर्मक आचरण करैत सृष्टिक सफल संचालनक क्रममे सहयोगात्मक रूपमे सक्रिय होइ''। एहि तरहक ब्राह्म एवं प्राजापत्य विवाहक सम्मिलित स्वरूपक दर्शन मैथिल ब्राह्मण विवाहमे भेटैत अछि। ओना गान्धर्व विवाहक रूप सेहो भेटल करैछ। किछु अर्थमे ओकरा नीक सेहो मानल जाइत अछि जे प्रायः प्रेमप्रधान भेल करैछ। एहि मे कामक प्रमुखता रहैछ। एकरा आइ प्रेमविवाहक संज्ञा देल जाइछ, मुदा एहिमे स्थायित्वक प्रति सन्देह व्यक्त कयल जाइछ। एहि तरहक विवाह वर-वधूक स्वेच्छासँ कोनो विशिष्ट कारणे भेल करैछ। एहिमे अभिभावकक सर्वथा उपेक्षा कयल जाइछ। जँ एहिमे अभिभावक अनुभवक लाभ उठा हुनक अभिमत प्राप्त कऽ लेल जा सकए तऽ वस्तुतः एहि विवाहकेँ नीक कहल जा सकैछ। हँ, एक आओर क्रम असुर विवाहक सेहो भेटैत अछि मुदा नवरूपमे। एकर प्राचीन स्वरूप परिवर्तित अनुभव कयल जाइछ - एहिमे धनक बल पर नीक कन्याकेँ प्राप्त कऽ लेबाक प्रचलन छल मुदा परिवर्तित क्रममे धनक उपयोग नीक वरक प्राप्तिक क्रममे कयल जाय लागल अछि आ एहि सँ एक तरहेँ अनमेल-बेमेल विवाहक चित्र विशेष उभरऽ लागल अछि जे कालान्तरे वैवाहिक विघटनक स्थितिकेँ स्पष्ट करऽ लगैछ आ जीवन दूभर बनि जाइछ, असन्तुलनक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल करैछ।

विवाहक मुख्यतः दू स्वरूपक दृष्टान्त मैथिल ब्राह्मणमे भैटेछ- एक विवाह आ बहुविवाह, जकर आधार पति-पत्नीक संख्या भेल करैछ। एक विवाहसँ तात्पर्य पति एवं पत्नी दुहूक संख्या मात्र एक होएबासँ अछि। कोनहुँ परिस्थितिमे ओहिमे वैधानिक परिवर्तनक गुजांइश नहि होइछ। बहुविवाह सँ अभिप्राय पति वा पत्नी दुहूमेसँ कोनो एक वा दुहूक संख्या अधिक होएबासँ अछि। जखन पतिक संख्या एक आ पत्नीक संख्या दू हो तऽ ओकरा द्विपत्नीविवाह कहल जाइछ। वो प्रायः आवश्यकतापरक मानल जाइछ। समाजमे व्याप्त पुत्रक महत्ताक क्रममे जखन पहिल पत्नीसँ कोनो सन्तान नहि हो व पुरुष सन्तान नहि हो तऽ दोसर पत्नीक प्रावधान शास्त्रसम्मत मानल गेल अछि। एकरा सामाजिक स्वीकृति सेहो भेटल अछि। जखन पतिक संख्या एक आ पत्नीक संख्या दूसँ अधिक हो तँ ओकरा बहुपत्नी विवाह करल जाइछ। ई मुख्यतः समाजमे कन्याक संख्या अधिक होएब आ विवाह अनिवार्य मानल जएबाक कारण भेल करैछ। ओना आनो कारण सभक उल्लेख कयल जाइत अछि। मुदा ई क्रम प्रशंसनीय नहि, हेतु एहिमे दाम्पत्यजीवनक मधुरता सम्भव नहि भऽ पबैछ आ अशान्तिक क्रम विशेष अनुभव कयल जाइछ। उपर्युक्त रूप सभ मैथिल ब्राह्मणमे प्रचलनमे अछि। जखन पत्नीक संख्या एक आ पतिक संख्या अनेक हो तऽ बहुपतिविवाह कहल जाइछ जे मैथिल ब्राह्मणमे ने प्रचलित अछि आ ने एकर उल्लेख भेटैत अछि। वएह स्थिति ओहि व्यवस्थाक सेहो अछि जाहिमे पति एवं पत्नीमेसँ दुहूक संख्या अधिक हो। ओकरा समूह विवाह कहल जाइछ। मैथिल ब्राह्मणमे एहि विवाहक प्रचलनक सर्वथा अभाव अछि। वस्तुतः एकरा विवाह नहि कही से नीक। एतहु पहिने बहुपत्नी विवाहक प्रचलन कतिपय आधार पर अवश्य रहल अछि, मुदा स्वस्थ, सुखी एवं सन्तुलित जीवनक दृष्टिसँ आब मात्र एकविवाही

स्वरूपक आदर्श भेटैछ। मैथिल ब्राह्मणमे सपिण्ड, सगोत्र एवं सप्रवर विवाहक निषेध अछि - मिताक्षराक प्रवर्तक विज्ञानेश्वरक अनुसार सपिण्ड ओ व्यक्ति होइत छथि जिनकामे एक पूर्वजक रक्त विद्यमान होइछ। प्रत्यक्ष रूपसे रक्तसम्बन्धी होएबाक कारण हुनकामे परस्पर विवाह वर्जित हैब स्वाभाविक तथा दायभागक प्रवर्त्तक जीमूतवाहनक अनुसार ओ व्यक्ति जे एक पितरक श्राद्ध वा पिण्ड अर्पण करैत छथि, सपिण्ड मानल जाहत छथि। जे हो कोनो व्याख्याक आधार पर सपिण्ड विवाहक प्रचलन मैथिल ब्राह्मणमे निषेध अछि।

सगोत्र विवाहक प्रचलन मैथिल ब्राह्मणमे नहि अछि। गोत्रक अर्थ मनुष्यक ओहि समुदायसँ अछि जे परस्पर एक रक्त सँ सम्बद्ध हो, जिनकर उत्पत्ति कोनो समान पूर्जवसँ भेल हो। सामान्यतः ओ समस्त व्यक्ति जे कोनो समान पूर्व पुरुष सँ अपन उत्पत्ति मानैत हो ओ सभ सगोत्र मानल जाइत छथि। याज्ञवल्क्य सगोत्र विवाहक निषेध कहने छथि। मैथिल ब्राह्मणमे एहि नियमक पालन कठोरतासँ कयल जाइछ। एक पूर्वज सँ सम्बद्ध होयबाक फलस्वरूप सगोत्र विवाह-निषेध मानल गेल अछि।

सप्रवर विवाहक सम्बन्धमे सेहो वर्जना अछि। प्रवरसँ तात्पर्य एक व अनेक पूर्वपुरुषक ओ समुदायसँ अछि जाहिसँ ओकर वंशजक नाम प्रचलित अछि। प्रवरक चलावऽवला ऋषि व ऋषिगण प्राचीनतम कालमे अत्यन्त प्रसिद्ध रहथि। प्रवर संस्कार आ ज्ञानक ओहि सम्प्रदायक दिश संकेत करैछ जाहिसँ व्यक्तिक सम्बन्ध होइछ। कपाड़िया एहि विचारक पुष्टि करैत छथि। वस्तुतः प्राचीनतम कालमे यज्ञ व अन्य धार्मिक संस्कार सम्पन्न करबाक लेल भिन्न-भिन्न प्रकारक रीति व पद्धति छल जाहिमे प्रत्येक पद्धतिक प्रचलन करऽवला केओ ने केओ ऋषि छलाह। एहि तरहेँ जे व्यक्ति जाहि ऋषिक पद्धतिक अनुसरण कएलन्हि, हुनकर प्रवर ओही ऋषि पर भेल। जाहि व्यक्ति सभक एक प्रवर छथि ओ परस्पर सप्रवर मानल जाइत छथि आ हुनकामे परस्पर विवाह निषिद्ध होइछ। एहि क्रममे मैथिल ब्राह्मणमे सप्रवर विवाहनिषेधक परम्परा अछि।

उपर्युक्त प्रतिबन्धक अतिरिक्त गोलट विवाहकेँ नीक नहि बुझल जाइछ। सामान्यतः एक व्यक्तिक पुत्र एवं पुत्रीक दोसर व्यक्तिक पुत्री एवं पुत्रसँ विवाह होएब गोलट विवाह थिक। एहि प्रकारक विवाहमे सम्बन्धक दोहरा रूपक अभिव्यक्ति भेटैछ। अर्थात् पहिल सम्बन्ध भाई-बहिनक आ दोसर सम्बन्ध सार-सरहोजिक भेल करैछ। अर्थात् एकहि व्यक्ति क्रमशः सार एवं बहिनोई दुहू प्रस्थितिक होइछ। तिहिना ननदिः भाउजक सम्बन्धक स्थिति रहैछ। एहि तरहक विवाह कोनो विशेष परिस्थितिक प्रतिफल भेल करैछ जकरा नीक कहब समीचीन नहि बुझना जाइछ। तहिना एक व्यक्तिक संग दू सहोदरा बहिनक विवाह निषिद्ध मानल गेल अछि। हँ, एक पुत्रीक मृत्युक बाद दोसर पुत्रीक विवाह ओही वरसँ करब निषिद्ध नहि अछि मुदा ओहो नीक नहि कहलजा सकैछ। एही प्रकारेँ दू सहोदर भाईक दू सहोदरा बहिनसँ विवाह-उत्तम नहि कहल गेल अछि। एतहु सम्बन्धक अभिव्यक्तिक क्रममे कतोक तरहक असौकर्यक अनुभव होइत अछि। शास्त्रसम्मत रहितहुँ ई प्रशंसनीय नहि अछि। सन्ततिशास्त्र कुलक बाहर विवाहक समर्थन करैछ। सहोदर अग्रज व सहोदरा अग्रजाक अविवाहित रहला सन्ता कनिष्ठ व कनिष्ठाक विवाह शास्त्रसम्मत नहि अछि। विशेष परिस्थितिमे ज्येष्ठक अनुमति आवश्यक भऽ जाइछ। विवाहक निर्णय सामान्यतः अभिभावकक अधिकार क्षेत्रमे अबैछ, मुदा अन्यक सहमति उपयोगितापरक भेल करैछ।

मैथिल ब्राह्मणमे विवाह परम पवित्र धार्मिक कृत्य अछि। कोनो मंगलमय शुभमुहूर्तमे एहि संस्कारक सम्पादनक प्रयास रहैछ। रघुनन्दनक अनुसार चैत्र, भाद्र एवं पौष मास छोड़ि आन मास विवाहक लेल शुभ अछि। ज्येष्ठ पुत्रक विवाह ज्येष्ठ पुत्रीक संग ज्येष्ठ मासमे विहित नहि अछि। दिनमे सोम, बुध, वृहस्पति आ शुक्र विवाह लेल शुभप्रद अछि तथा रातिमे विवाह विशेष नीक मानल जाइछ। वैवाहिक विधिमे स्थानीय रीति-रिवाजक समावेश प्रभावकारी अनुभव कयल जाइछ। कमलाकर विवाहमे देशाचारक पालन पर जोर दैत छथि। वैदिक कालक वैवाहिक विधिक अनुसरण धार्मिक सांस्कृतिक एकताक कारण एखनहुँ विद्यमान अछि। मैथिल ब्राह्मण-विवाहमे एकर अभिव्यक्तिक पुट नीक

जकाँ अनुभव कयल जाइछ।

विधि ओ प्रक्रिया : – विवाह सम्बन्धी विधिक अनुपालनक क्रममे मुख्यतः निम्नलिखित चित्र भेटैछ -

मैथिल ब्राह्मण समाजमे कन्याक विवाह योग्य भेला पर उपयुक्त वरक अन्वेषणक क्रममे सर्वप्रथम कन्याक अभिभावक स्वयं व प्रतिनिधिक माध्यमसँ वरक अभिभावकक ओहिठाम उपस्थित भऽ अपना कन्याक विवाह-हुनक पुत्रसँ करबाक आग्रहक संग प्रस्ताव रखैत छथि, जाहिमे गोत्र, कुल, वंश, योग्यता आदि गुणक विचार-विमर्श कऽ वरक अभिभावक मनोनुकूल होयबाक स्थितिमे विवाहकेँ निश्चित रूप प्रदान करबाक हेतु कोनो शुभ मुहूर्तमे सिद्धान्तक व्यवस्था कयल जाइछ, जाहिमे पंजीकार द्वारा स्वस्ति पत्रक प्राप्ति आवश्यक होइछ। पंजीकार द्वारा स्वस्ति भेटला पर औपचारिकताक निर्वाहक क्रममे दहेजक प्रचलन सेहो अछि जे वधुक अभिभावककेँ सामान्यतया वहन करऽ पड़ैछ। मैथिल ब्राह्मणमे वधुक अभिभावकेँ वरक ओहिठाम विवाह सम्बन्धी प्रस्तावक संग उपस्थित होयबाक प्रथा अछि, जतऽ वाग्दान द्वारा मौखिक स्वीकृति प्रदान कयल जाइछ। विवाहक दिन वरक घर पर चुमाओन कयल जाइछ तथा ओ अपन अभिभावक, सम्बन्धी, इष्ट-मित्र, शुभेच्छु, अपेक्षित, परिजन, पुरजनक संग सामान्यतः सायंकाल अपन परिस्थितिक अनुकूल सवारी पर वधुक घर वर-वरिआतीक रूपसँ पहुँचैत छथि जतऽ बधुपक्ष द्वारा हुनक स्वागत-सत्कार कयल जाइत अछि, परिचय प्राप्त कैल जाइत अछि। तदन्तर विवाहक प्रक्रिया आगू बढ़एबाक क्रममे आज्ञाक डाली अबैत अछि, जाहिमे कपड़ा, आभूषण ओ विधक अन्य सामग्री वर पक्ष द्वारा प्रदान कयल जाइत अछि, जे वधुक घर कुल देवता लग राखल जाइत अछि। तखन प्रकृतिपूजाक क्रममे वृक्षपूजाक क्रममे आम-महुक विवाह कराओल जाइत अछि आ तकरा बाद धोबिनसँ सोहाग देआओल जाइत अछि। ई सभ बधुक आगमन पर भेल करैछ। एही क्रममे मधुपर्कक व्यवस्था सेहो होइछ। जाहिमे मधुर-मिष्ठान्नसँ विशेष रूपमे वरक सम्मान कयल जाइछ। एकरा बाद हास परिहासक वातावरणमे महिलालोकनि द्वारा वरक 'परिछन' कयल जाइछ। जाहिमे 'विधकरीक' भूमिका महत्वपूर्ण भेल करैछ। ओ वर-वधुक मध्य सम्पर्क सूत्र व धूरीक काज करैत छथि तथा विवाह सम्बन्धी विधिक अनुपालनमे सहयोगी भेल करैत छथि। महिलालोकनि द्वारा उत्साहपूर्ण वातावरणमे शास्त्रीय एवं लौकिक विधिक अनुपालन करैत वरकेँ वेदीक समीप आनल जाइछ आ ओहिसँ पहिने कन्यादान कयनिहार व्यक्ति अभीष्ट सिद्धिक हेतु कुलदेवताक समीप 'मातृकापूजा' करैत छथि जे विवाहक धार्मिक स्वरूपक प्रतीक मानल जाइत अछि। वेदी लग कन्यादानक क्रम मे अग्नि केँ साक्षी बनएबाक उद्देश्यसँ हवन कार्यक निमित्त अग्नि प्रज्वलित कयल जाइछ तथा गोत्राध्यायक क्रममे पुरोहित द्वारा वर-वधूक पूर्वजक नाम गोत्र एवं प्रवरक मिलान कयल जाइत अछि तथा वर सहित आठ ब्राह्मणक संग यज्ञ निमित्त अक्षत प्राप्तिक क्रममे मूसरसँ उखरिमे चोट देल जाइछ जकरा ओँठंगर कहल जाइछ। एहिमे हजामक भूमिका सेहो रहैछ। तखन कन्यादानक विधिक पालन होइछ, जाहिमे कन्याक अभिभावक द्वारा कन्याकेँ सुसज्जित एवं अलंकृत कऽ आशीर्वचनक संग वैदिक विधि दान देबाक परम्पराक निर्वाह कयल जाइत अछि। दानक परम्परामे कन्यादान सर्वश्रेष्ठ मानल जाइत अछि। तखन आमक पातकेँ डोरीमे बाँन्हि वर-वधूक हाथमे मंत्रक संग बान्हल जयबाक विधान अछि जकरा 'झिटुका बन्धन' कहल जाइछ, जे चतुर्थीसँ क पहिने धरि ब्रह्मचर्य धर्मक पालनक प्रतीक मानल जाइछ। एहि क्रममे वर-वधूक दहिना हाथ मंत्रोच्चारणक संग पकड़ैत छथि जे पति द्वारा पत्नीकेँ भरण-पोषण व रक्षाक प्रतीक मानल जाइछ। एहि तरहेँ पतिपत्नीक समस्त उत्तरदायित्वक निर्वहनक **भार ग्रहण** करैत छथि, जे भाव पाणिग्रहण शब्दमे निहित अछि। अस्मारोहणक विधिमे पत्नीक पैर पाथर पर राखल जाइत अछि जे वस्तुतः प्रेम, मैत्री, विश्वास, दृढ़ता एवं शक्तिक प्रतीक मानल जाइत अछि। 'सप्तपदी'क विधिमे वर-वधू वेदी लग सात डेग गृहस्थ जीवनमे सुख प्राप्तिक कामनासँ चलैत छथि। ओही क्रममे वरक धोती आ कनियाँक साड़ीक खूटक जे गीरह बान्हल जाइत अछि, तकरा 'गेठ बन्हन' कहल जाइछ ओ वर-वधूक आजन्म विवाह ग्रन्थिमे बन्हयबाक प्रतीक अछि। एही क्रममे वर-वधूक हृदयक स्पर्श करैत छथि। मानव शरीरमे हृदय 'भावक' केन्द्रस्थल मानल जाइछ। एहिमे दुहूक एकमना होयबाक प्रयास रहैछ।

एही सन्दर्भमे वधुक भाइ द्वारा देल जाइत धानक लावाके वर वधूकेँ पाछाँसँ पकड़ने छिड़िआबैत छथि जे लाजाहोमक रूप मे जानल जाइत अछि। विवाह, सम्बन्धकेँ स्थायी एवं आनन्दपूर्ण बनेबाक दृष्टिसँ ध्रुवदर्शन कराओल जाइत अछि। ई ध्रुवताराक दर्शनक विधान पति-पत्नीक अचल प्रेमक परिचायक मानल जाइत अछि। एहि तरहेँ विवाह सम्बन्धी विधि व प्रक्रियाक वैदिक एवं लौकिक आधारे सम्पन्न भेला सन्ताँ सिन्दूरदानक व्यवस्था कयल जाइत अछि, जाहिमे वरक हाथेँ वधूक माँग (माथा) मे मटिया सिन्दुर अर्पित कयल जाइत अछि तथा एक दोसराकेँ पति-पत्नीक रूपमे स्वीकार कयल जाइत अछि। एहि विधिक अनुपालन मैथिल ललनाक सौभाग्य व सुखमय जीवनक परिचायक मानि कयल जाइत अछि। ई वस्तुतः विवाहक सबसेँ प्रधान एवं महत्त्वपूर्ण विधि अछि। सिन्दूरदानक बाद घोघट होइछ, जाहिमे बधूँकेँ नीक साड़ी सामान्यतः बेसकीमती बनारसी साड़ीसँ माथ झापल जाइत अछि। एहिमे स्थानीय स्तर पर अलग-अलग प्रचलन अछि-कतहु बधुक ससुर तऽ कतहु भैंसुर द्वारा एहि विधिक निर्वाह कयल जाइछ तऽ कतहु वर स्वयं वधुक माथ पर साड़ी रखैत छथि आ बधूक भाई ओकरा हटबैत रहैत अछि। ई प्रक्रिया तीन बेर होइत अछि। ओकराबाद चुमाओन होइत अछि। दुर्वाक्षत देल जाइत अछि। वधुक मुँह देखाओनक कार्यक्रम होइत अछि, जाहिमे वधुकेँ रुपया आभूषण प्रदान कयल जाइत अछि। एकरा बाद महिलाक भूमिका आबि जाइत आश्चि, ओ सभ मांगलिक गीतक संग वर-वधूकेँ कोहवर घर लऽ जाइत छथि। ई एक विशेष प्रकारक सुसज्जित कोठरी होइत अछि, जकरा वर-वधूक मिलनस्थल सेहो कहल जा सकैछ। कोहवर घर मे अयलापर महुअक विधि होइछ जे चतुर्थी धरि विविध क्रममे चलैत रहैछ। भोरमे गौरीपूजा, सायंकाल महुअक, राति मे चुमाओन आ पुनः महुअक आदिक प्रकरण चलैत रहैछ। चतुर्थीसँ पहिने धरि वर-वधूक जीवन संयमित एवं नियंत्रित रहैछ। सिन्दुरदानक बाद आचार्य दक्षिणाक सेहो विधान अछि। एहिमे आचार्य अर्थात् पुरोहितकेँ जे यज्ञ करओनिहार छथि, हुनका पारिश्रमिक देल जाइछ। विवाहक चारिम दिन भोरमे विवाहसम्पन्नताक दृष्टिसँ अनेक तरहक विधानक परिचालन कयल जाइछ, जकरा चतुर्थी कर्म कहल जाइछ। चतुर्थी कर्मक विधि सम्पन्न भेलाक बाद पति-पत्नी दम्पत्ति रूपमे सामान्य दाम्पत्य जीवनमे प्रवेश करैत छथि, जकरा बहुत उत्साह एवं उमंगक संग मनाओल जाइत अछि आ वर्षभरि अनेक तरहक विधिसभक अनुसरण होइत रहैत अछि। जाहिमे बरसाइत, नाग पंचमी, मधुश्रावणी एवं कोजागरा प्रमुख मानल जाइत अछि। वरसाइत में ज्येष्ठक अमावस्या कऽ वटवृक्ष अर्थात् वरक गाछक पूजन सौभाग्यक आकांक्षासँ कैल जाइत अछि तथा श्रावण कृष्ण पंचमीसँ श्रावण शुक्ल तृतीया धरि मधुश्रावणीक विधि होइछ। एहि मे नागदेवताक विशेष रूपमे पूजन कयल जाइत अछि। वधु संयमित एवं नियमित जीवन व्यतीत करैछ। नियमनिष्ठासँ रहैछ। एहि पर्वमे नवविवाहिताक उत्साह सरिपहुँ बहुत आनन्दक ओ उल्लासक रहैछ। तहिना आश्विनक पूर्णिमाकऽ वरक घर कोजागराक आयोजन धूम-धामसँ कयल जाइत अछि। विवाहक विधिक क्रममे दहनहीक नाम लेल जाइछ जे विवाहक पांचम, सातम वा नवम दिन मनाओल जाइत अछि। एहिमे वधूकेँ नदी व पोखरि मे स्नान कराओल जाइत अछि तथा पूजाक निर्मालक प्रवाह कयल जाइत अछि। एकरा वाद वधु पर सँ बहुत रास बन्धन स्वतः समाप्त भऽ जाइछ जे विवाहक क्रममे परहेजक जीवन व्यतीत करबा लेल बाध्य छलि। वरक विदा होमक समय स्वयं हुनक दोपट्टा पर वधूक हाथक छाप अंकित कऽ चुमाओन कयल जाइत अछि तथा वरक घर पर कलशमे वधुक आह्वान कऽ ओहि दुपट्टासँ झाँपि वरक चुमाओन कयल जाइत अछि जकरा वधू प्रवेशक संज्ञा देल जाइछ। विवाहक एक महत्त्वपूर्ण विधि द्विरागमन मानल जाइछ। प्राचीन परम्पराक क्रममे विवाहक सोलहम दिनक अन्दर व वर्षक भीतर व विषम वर्ष एक-तीन-पाँच आदिक कोनो शुभ मास, नक्षत्र, दिनक घड़ी मे वधूकेँ नैहरसँ सासुर आनल जाइछ, जकरा द्विरागमन कहल जाइछ। ओहि अवसर पर वधूकेँ सुसज्जित, अलंकृत कऽ साज सामानक संग विदा कयल जाइछ। सासुर पहुँचला पर युगल जोड़ीके परिछन ओ चुमाओन कयल जाइछ तथा लौकिक रीतिक अनुपालन करैत कुलदेवताक प्रणाम करबैत कोहवर घरमे प्रवेश कराओल जाइत अछि, जतऽ चारि दिन धरि अनेक प्रकारक विधि-विधानक निर्वाह कयल जाइत अछि। सामान्यतः वर-वधूके जमीन पर

पटिया राखि सुतबाक व्यवस्था कयल जाइछ। वधुक सासुर ऐबाक व गृह प्रवेशक चारिम दिन भोरमे भरफोड़ीक विधि होइछ, जाहिमे वधूकेँ परिवारक सामान्य सदस्य जकाँ अपन गृहस्थीक दायित्वक निर्वहन हेतु व्यवस्था कयल जाइछ आ द्विरागमनक एही प्रकरणक संग विधिक प्रायः समापन बुझल जाइछ। कहबी अछि 'भेल भरफोड़ी विधक अन्त' आ वर-वधू सम्मिलित रूपमे दम्पत्ति बनि गृहस्थ जीवनमे पदार्पण करैछ।

मैथिल ब्राह्मणमे विवाहक सन्दर्भमे एहि प्रकारेँ विधिक पालन करबाक प्रावधान अछि। सुखद भावी जीवनक कल्पनासँ वैवाहिक कार्यक्रमक अन्तर्गत वधुक घर वरियातीसँ लऽ कऽ वरक घर भरफोड़ी धरिक प्रथा-परम्पराक अनुपालन जीवनोपयोगी आदर्शक प्रतीक मानल जाइछ, जे वर-वधू केँ दम्पत्तिक प्रस्थिति प्रदान करैछ।

सामान्यतः दम्पत्ति शब्दक अर्थ गृहस्थीक समान अधिकारी होएब अछि। मैथिल ब्राह्मणमे दाम्पत्य जीवनक स्थायित्व एवं सुखद होएबाक कारण पति-पत्नीक मध्य अभिन्न प्रेम आ एकता रहल अछि। दुहूमे अभिन्नताक सम्बन्ध होयबाक कारण दुहूक एक दोसराक पूरक होएब अछि। दुहूक मध्य प्रेम घरक वातावरणकेँ आनन्दमय बना दैछ आ पत्नी अर्थात् गृहस्वामिनी पर मुख्यतः गृहस्थाश्रमक भवन आधारित भेल करैछ। ओ गृहलक्ष्मीक रूपमे सम्बोधित कयल जाइत छथि। पत्नीक सुरक्षाकेँ ध्यानमे राखि हुनक प्रसन्नताक निमित्त किछु विशेष सुविधाकेँ सेहो प्रावधान अछि। जाहिपर स्त्रीक विशेष अधिकार होइछ। एकर मूर्तरूप सम्पत्ति अछि जकरा हुनकहि नामसँ सम्बोधित कयल जाइछ, अर्थात् स्त्रीधन कहल जाइछ। ई ओ धन थीक जे वधू अपन नैहरसँ विवाहक समयमे प्राप्त करैछ। विवाहक समयमे समय-समय पर ककरोसँ उपहार व स्नेहक रूपमे प्राप्त करैछ। विवाहक वाद पतिपत्नीकेँ जे किछु सनेस, रुपया, आभूषण आदि प्रदान करैत अछि, ओकर गणना क्षेत्रक व्यापकता क्रममे स्त्रीधनमे होमऽ लागल अछि। स्त्रीधन, स्त्री केँ सबल बनएवाक आधार प्रस्तुत करैछ।

परिवर्तन एवं सुझाव : उपर्युक्त क्रममे सामान्यतः सम्पन्न होइत अछि मैथिल ब्राह्मण मे परम्परागत विवाहक कार्यक्रम मुदा एम्हर आबि नवाचारक रूप बढलासँ जे चित्र उभरि रहल अछि, ओहिसँ मैथिल ब्राह्मण विवाह सेहो क्रमशः प्रभावित भऽ रहल अछि। आधुनिकीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, शिक्षाक व्यापक प्रसार, स्त्री, आन्दोलन, धर्मक प्रभावमे कमी, विवाह सम्बन्धी उदारवादी कानून, आवागमन एवं संचार सम्बन्धी सुविधाक वृद्धि, भौतिकवादी व उपभोक्ता संस्कृति; लोकक सोचबाक एवं कार्य करबाक नव ढंग आदिक कारण विवाहक परम्परागत आदर्श स्वरूप, मान्यता, नियम, प्रक्रिया एवं दृष्टिकोणमे बदलाव अनुभव भऽ रहल अछि। आब विवाहमे धार्मिक पक्षक अपेक्षा वैयक्तिक पक्षक प्रधानता बढ़ि रहल अछि। ओकर संस्कारात्मक प्रकृति समाप्त भऽ रहल अछि। विवाह सम्बन्धी निषेध क्रमशः शिथिल भेल जा रहल अछि। जीवनक संगीक चुनावमे स्वतंत्रता आबि रहल अछि। ओकर क्षेत्रक विस्तार भऽ रहल अछि तथा अन्वेषणक ढंग बदलि रहल अछि। निर्णयप्रक्रियामे अत्यधिक अन्तर आबि गेल अछि। बिलम्ब विवाहक रूप बढ़ि रहल अछि। प्रेम विवाहक दृष्टान्त सेहो भेटऽ लागल अछि। पूर्वक पवित्र अटूट बन्धन टूटऽ लागल अछि। मिलाजुला कऽ मैथिल ब्राह्मण विवाहक उद्देश्य, स्वरूप, नियम, निषेध, आ प्रक्रिया आदि आधुनिकतासँ प्रभावित भऽ किछु अंशमे संक्षिप्त एवं सरल प्रकृतिक भऽ रहल अछि तऽ किछु अंश मे जीवनकेँ दूभर ओ दुरुह बनएबामे सक्रिय प्रतीत होइछ। तेँ यदि समय पर विवाह संस्थामे बढ़ैत विचलनक स्थिति केँ प्रश्रय देबाक प्रकृति पर समुचित नियंत्रणक व्यवस्था सम्भव नहि भऽ सकल तऽ मैथिल ब्राह्मण समाजकेँ विघटित होएबासँ रोकब कठिन भऽ जायत। आवश्यकता अछि एहि परिप्रेक्ष्यमे गहन चिन्तन एवं सम्यक् विवेचन-विश्लेषणक संग अपेक्षित सकारात्मक व्यवस्था हेतु समग्र समाजक सहभागिताक। तखनहिँ विवाह सन उपयोगी संस्थाकेँ व्यवस्थित कऽ मानवक सन्तुलित व्यक्तित्वक विकासकेँ साकार कयल जा सकैछ आ मैथिल ब्राह्मणक पहचानकेँ अक्षुण्ण राखल जा सकैछ।

●

मिथिलाक विदुषी

सतीशचन्द्रझा

मिथिला प्राचीनतम कालसँ एखन धरि निर्बाध रूपेँ विद्याध्ययन ओ विद्यादान लेल सुप्रसिद्ध रहि आयल अछि। एहिठाम 'विद्वान' मैथिल आ 'विदुषी' मैथिलानीलोकनि समान रूपेँ अपन ज्ञान-सुरभिकेँ चारू कात पसारैत रहल छथि। विदुषीलोकनिक संख्या सेहो बड़ वेशी अछि। से मिथिला-मैथिललोकनि लेल बड़ गौरवक बात। स्थानाभावक कारणेँ एहिठाम मिथिलाक विदुषीलोकनिमे मात्र किछुएँ गोटेक आ ताहूमे हुनक विद्वता-उत्कर्षक मात्र किछुये उदाहरण एहि निबन्धमे देनाइ सम्भव भ' सकत। ताहि धृष्टता ओ व्यवधान लेल सुधी पाठकलोकनिसँ पहिनहि क्षमाक याचना करैत छी।

प्रारम्भ विद्याक देवी–वाक् (सरस्वती)सँ केनाइ 'शुभ' होयत। हिनक नाम 'पथ्यवती' छल आ समयकाल ईसा पूर्व लगभग 1670-1550क लगभग। नेपाल तराइ स्थित महतरी प्रगन्नामे रहनिहार 'अभृण' ऋषिक ई पुत्री छलीह आ संगहि विदेहक सुप्रसिद्ध 'आदित्य सम्प्रदाय' (जे कालान्तरमे विदेह विश्वविद्यालयक 'आदित्य महाविद्यालय' जकाँ विकसित भेल आ जकरामे पछाति ऋषि याज्ञवल्क्य आदित्य (सूर्य)सँ वेदमन्त्र अपन योगसाधना सँ ग्रहण कऽ 'वाजसनेय संहिता' (वाजसनि = सूर्य, आदित्य; वाजसनेय = सूर्य, आदित्यक शिष्य; माने याज्ञवल्क्य)क रचना कयने रहथि (ई संहिता 'शुक्ल यजुर्वेद' नामे सेहो जानल जाइछ)–''आदित्यानीमनि शुक्लानि यजूँसि वाजसनेयेनाख्यायन्ते''।

लगभग 1630 वर्ष ईसापूर्व विदेहराज श्रुत (श्रुतायुस)क भरल राजदरबारमे माघ शुक्ल पंचमी दिन निम्नलिखित 'देवीसूक्त' मन्त्र (देखल जायः ऋग्वेद 10.1.125)क उद्घोष कयने रहथि आ विदेहराज हुनक विद्यासँ प्रभावित भऽ हुनका 'वाक्'क उपाधि प्रदान कयने रहथि –

''अहम् रुद्रेभिः वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहम् मित्रावरुणोभा विभर्मि अहम् इन्द्राग्नि अहमाश्विनोभा।।''

एहि मन्त्रमे मनुक्ख जातिक पहिल शास्ता (शिक्षिका) वाक् कहैत छथि जे ''हमही रुद्र, वसु, आदित्य आ विश्वदेवगण सभक रूपमे विचरैत रहैत छी। हमही मित्र आ वरुण दुहुकेँ, इन्द्र आ अग्निकेँ आ दुनू अश्विनीकुमार केँ धारण कयने रहैत छी।'' तहिना ऋग्वेदक दशम मण्डलहि केर आनहुँ मन्त्रमे (2 सँ8 धरि) कहल गेल अछि जे–

हमही शत्रुसभक नाश करयवला, आकाशमे चलायमान देवता सोमकेँ, त्वष्टा प्रजापतिकेँ आ, 'पूपा' ओ 'भग'केँ सेहो धारण कयने छी। जे हविष्यसँ सम्पन्न भऽ देवतालोकनिकेँ उत्तम हविष्य दियाबैत अछि, आ हुनका सोमरस सँ तृप्त करैत अछि, ओहि यजमान (व्यक्ति)केँ हम उत्तम यज्ञक फल आ धन दैत छियैक।

हमही सम्पूर्ण जगत केर अधीश्वरी छी, अपन उपासक सभकेँ धन देबयवाली, साक्षात्कार करबा योग्य परमब्रह्मकेँ अपनासँ अभिन्न रूपमे जानयवाली आ पूजनीय देवतालोकनिमे मुख्य छी। हम प्रपंचरूपमे अनेकहुँ भाव सभमे स्थित छी। सम्पूर्ण प्राणीलोकनिमे हमर प्रवेश अछि।

- अनेकहुँ ठाम रहऽवला देवतालोकनि जतऽ जे किछु करैत छथि, हमरहि लेल करैत छथि।
- जे क्यो अन्न खाइत अछि, हमरहि शक्तिसँ खाइत अछि; एही तरहेँ जे देखैत अछि, जे साँस लैत अछि आ जे कहल वचनकेँ सुनैत अछि, ओ सभहि हमरहि सहयोगसँ ओहि सभहि काजकेँ कऽ सकबामे समर्थ भऽ पबैत अछि। जे क्यो हमरा एहि रूपमे नहि जनैत छथि, ओ नहि जनबाक कारणहि दीन-दशाकेँ प्राप्त होइत छथि।

- हे बहुश्रुत! हम अहाँकेँ श्रद्धा भेटयवला बह्मतत्त्वक उपदेश कहैत छी, सुनूः–
  - हमही स्वयं देवतालोकनि आ मनुष्यलोकनि द्वारा सेवित एहि दुर्लभ तत्त्वक वर्णन करैत छी। हम जाहि पुरुषक रक्षा करय चाहैत छी, हुनका आनलोकनिक अपेक्षा वेशी शक्तिशाली बना दैत छियैक। हुनकहि सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, परोक्षज्ञान-सम्पन्न ऋषि आ उत्तम मेघाशक्तिसँ युक्त बनबैत छी।
- हमही ब्रह्मद्वेषी हिंसक असुरलोकनिक वध कऽरूद्रक धनुषक प्रत्यंचा चढ़बैत छी। हमही शरणागतलोकनिक रक्षा लेल शत्रुलोकनिसँ युद्ध करैत छी। हमही अर्न्तयामी रूपेँ पृथ्वी आ अकाशमे व्याप्त रहैत छी।
- हमही एहि जगतक पितारूप आकाशकेँ सर्वाधिष्ठानस्वरुप परमात्माक उपर उत्पन्न करैत छी। समुद्रमे आ जल मे हमरहि कारण (कारण स्वरूप चैतन्य ब्रह्म)क स्थिति अछि। तेँ हम समस्त भुवनमे व्याप्त रहैत छी आ ओहि स्वर्गलोकहुँकेँ अपन देह सँ स्पर्श करैत छी।

अतः सभसँ पहिने अद्वैतवादक निनाद वाक्‌देवी कयने रहथि। ऋग्वेद (1.3.10-12) में सरस्वती देवी–वाक् देवीक अन्य नाम–पतितपावनी, धनदात्री, सत्यप्रेरिका, शिक्षिका आ ज्ञानदात्री कहल गेल अछि। शुक्ल यजुर्वेद ओ बृहदारण्यक उपनिषदक विद्यावंशक सूचीमे ऋषि याज्ञवल्क्यक पूर्ववर्ती विदुषी (आदित्य सम्प्रदाय'क संस्थापिकाक रूपेँ वाग्देवीक स्पष्ट उल्लेख अछि। पूर्वी भारत आ नेपाल तराईक ओहि भूभागमे–जतय तत्कालीन विदेहराज श्रुत जनकक राज्य छल–ओहि दिनसँ (जाहि दिन वाक् देवी सूक्तक उद्घोष कयने छलीह), माने माघ शुक्ल पंचमी' (वसन्त पंचमी') क स्मृतिमे सभ वर्ष ओही दिन 'सस्वती पूजन' होमऽ लागल जे एखनहुँ धरि होइते अछि –

''माघ शुक्ल श्री पंचमी, नव वसंत ऋतुराज।
एहि तिथि पूजब शारदा, छात्रा-छात्र समाज।।''

हिनक पछाति जे विदुषी विदेहमे उत्पन्न मेलीह ओ 'हैमवती उमा' (उमा जे हिमवत प्रदेशक छलीह) रूपेँ जानल जाइत छथि। 'केनोपनिषद' (3.12) मे पहिल बेर हिनक उल्लेख भेल अछि। आदिगुरू शंकराचार्य एही 'उमा'केँ सभहि उपनिषदक जननी कहि गेल छथि। 'केनोपनिषद'मे कहल गेल अछि जे उमा सभसँ पहिने देवतालोकनिकेँ 'ब्रह्म'क रहस्य सिखौने रहथि। 'केनोपनिषद्'क तेसर आ चारिम अध्याय गद्य रूपमे अछि–प्रश्नोत्तर रूपेँ संभवत; ई तखन लिखल गेल होयत जखन उमा अपनहुँ किशोरावस्थाक अन्तिम अवस्था (अठारह बरखक लगभग)मे रहल होयतीह (लगभग 1454 वर्ष इसा पूर्वमे)–कारण प्रश्नोत्तरमे तेहने भाषाक प्रयोग देखबामे अबैत अछि। उमा रचित 'केनोपनिषद'क शेष अंश पद्यमे अछि जे निश्चिते हुनक मध्यावस्थामे लिखल गेल होयत। उमा हिमवतक तत्कालीन जनजातिमे 'मातृ'रुपेँ पहिनहिसँ प्रतिष्ठित रहथि। रूद्र (शिव) सँ वियाह कयलाक पश्चात तँ आर वेशी पूजित भऽ गेलीहः–

''सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी।
उग्रेण तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।।''

विदेह मे पछाति जे सुप्रसिद्ध विदुषी-द्वय भेलीह से दुनू ऋषि याज्ञवल्क्यक पत्नी–कात्यायनी एवं मैत्रेयी रहथिः ''अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्यो बभूवतुः। मैत्रेयी व कात्यायनी च।।'' (शतपथ ब्राह्मण 14.7.3.1)

कात्यायनी विदुषी रहथि तेँ हुनका ''स्त्री प्रज्ञा'' (स्त्री रूपमे पूर्ण ज्ञान) कहल गेल। कात्यायनी ''ऋषिधारा''क प्रवर्तिका रहथि आ सुप्रसिद्ध नचिकेताक माय सेहो– ''तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस।'' (तैत्तिरीय ब्राह्मण 3.11.8.14)

'स्त्रीप्रज्ञा' कात्यायनीक व्यक्तिगत योगदानहिक फलस्वरूप ऋषि याज्ञवल्क्य 'ईशोपनिषद्' सन् उच्च चिन्तन-ग्रन्थ लीखि सकल छलाह।

'ऐतरेय ब्राह्मण'क प्रवक्ता महीदास ऐतरेय लीखि गेल छथि जे कात्यायनीक वास्तविक नाम 'इतर' रहन्हि आ वैह 'ऐतरेय ब्राह्मण'क असली रचयिता छथि। हुनक पति ऋषि याज्ञवल्क्य 'शतपथ ब्राह्मण'क रचयिता छथि।

''आसीद् विप्रो याज्ञवल्क्यो द्विभार्यस्तस्य–द्वितीयामितरेति चाहुः।

स ज्येष्ठयाकृष्टचित्तः प्रियां तामुकत्त्वा–द्वितीयामितरेति होचे।।'' (ऐतरेय ब्राह्मण', अध्याय एक पृ० 4, त्रिवेन्द्रम संस्करण, 1942 ई० मे प्रकाशित)।

ऋषि याज्ञवल्क्यो 'बृहदारण्यकउपनिषद'मे हुनक दोसर पत्नी मैत्रेयीक संग ज्ञान-सम्वाद बड़ शिक्षाप्रद अछि।

मिथिलाक एकटा पुत्री मल्लिनाथ (मल्लिदेवी) जैन धर्मक एकमात्र महिला तीर्थंकर (उन्नैसम तीर्थंकर) छलीह से बड़ थोड़ मैथिलकेँ ज्ञात होयतन्हि। सुन्नरि युवा राजकुमारी मल्लिदेवी विवाह इच्छुक राजकुमार–राजा लोकनिकेँ सम्बोधित करैत कहने रहथि–'' देह यद्यपि सुन्नर लगैछ मुदा एहिमे अनेकानेक दुर्गन्ध सेहो व्याप्त छैके। तेँ हमर एहि देह सँ अहाँलोकनिकेँ एतेक मोह कियैक अछि (जे हमरासँ वियाह कऽ हमरा प्राप्त करबा लेल एक दोसरासँ लड़ाइ करबा लेल उद्यत छी) पूर्ण आनन्द प्राप्तिलेल अहाँलोकनि योगध्यान आ नियमसँ नित्य तपस्या करू; स्वच्छताक पालन सर्वत्र करू; सभहि जीव पर दया भाव राखू....''। पछाति ओ ''कैवल्य'' अवस्था प्राप्त कयलन्हि आ मल्लिदेवीसँ 'मल्लिनाथ' भऽ गेलीह –जैनधर्मक उन्नैसम तीर्थंकर रूपेँ जैन धर्मक प्रचार-प्रसारमे लागि गेल रहथि।

'श्रृंगेरी मठ' (श्रृंगगिरि–कर्णाटक मे स्थित) आ 'द्वारका मठ'क शिष्य सम्प्रदाय मध्ययुगहिसँ 'भारती' नामसँ प्रसिद्ध होइत आयल छथि कारण हुनकालोकनिक 'शिष्य सम्प्रदाय'क प्रारम्भिक शिक्षाक श्रीगणेश आठम-नवम शताब्दीमे विदुषी भारती द्वारा 'श्रृंगगिरि'मे आचार्य शंकरक आग्रह पर भेल छल। ओ उच्च कोटिक विदुषी रहथि। वेद, वेदांग; न्याय, दर्शनशास्त्रमे पारंगत रहथि। हुनकहि नामसँ ई विद्यावंश चलल।

ई भारती (शारदा) मिथिलाक सुप्रसिद्ध विदुषी महिला भऽ गेल छथि आ भगवती सरस्वतीक अवतार मानल जाइत छलीह। ई सुप्रसिद्ध मीमांसक कुमारिलभट्ट (नूतन मिश्र)क छोट बहिन आ तत्कालीन प्रकाण्ड वैदिक मीमांसक पं० मण्डन मिश्रक धर्मपत्नी रहथि (''श्रीमद् भगिनीभर्त्ता मंडन मिश्र इव सकल विद्यासु पितामह इव विद्यते''– आनन्दगिरिक 'शंकर दिग्विजय' सँ उद्धृत)। नैहरि रहन्हि 'भट्टपुरा' (मनीगाछी रेलवे स्टेशन लगक) आ सासुर महिषी (सहरसा जिला)। ई एतेक ज्ञानी-संस्कारी मैथिलानी रहथि जे आचार्य शंकर हिनके (पं० मण्डन मिश्रक संग) शास्त्रार्थमे मध्यस्था बनौने रहथि–

''ततः समादिश्च सदस्यतायां सधर्मिणी मंडनपंडितोऽपि।

स शारदां नाम समस्तविद्याविशारदां वादसमुत्सकोऽभूत्।'' ('शंकर दिग्विजय' सँ उद्धृत)

कहल जाइछ जे न्याय दर्शनक सुप्रसिद्ध विद्वान एवं टीकाकार महामहोपाध्याय वर्द्धमान उपाध्याय (बारहम-तेरहम शताब्दी) क सुपुत्री चामुण्डा सतरह वर्षक अल्प वयसहिमे विदुषी रूपेँ परोपट्टामे विख्यात भऽ गेल रहथि। ''चामुण्डा देवी स्थान'' (पचही गाम–झंझारपुरसँ दू कोश दक्षिण-पूबमे स्थित) हुनकहि स्मृतिमे वर्त्तमान अछि।

आब जाहि मैथिलानी विदुषीक हम संक्षिप्त चर्चा करब ओ महामहोपाध्याया लखिमा ठकुराइन (चौदहम शताब्दीक प्रारम्भिक बरख सभक समय कालक) छथि, जे सुप्रसिद्ध विद्वान महामहोपाध्याय पं० चण्डेश्वर ठाकुर–कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंहदेवक मन्त्री ओ अनेकहुँ ग्रन्थ सभक रचयिताक धर्मपत्नी रहथि, नैयायिक रहथि आ संगहि संस्कृत भाषाक अद्वितीय कवयित्री सेहो। हिनक रचित, अपन रूसल जमायक नामे बारहो राशियुक्त संकेतित पत्रक

एक अंशहि हिनक विद्वताक परिचय लेल यथेष्ठ अछि–

''आक्रान्ता दशमध्वजस्य गतिना सम्मूर्च्छिता निर्जले
तुर्यद्वादशमद् द्वितीय मतिमन्नेकादशामस्तनी।
सा षष्ठी कटिपंचमी च नवम भ्रूस्सप्तमीवर्जिता
प्राप्नोत्यष्टमवेदनां त्वमधुना तूर्णं तृतीयो भव।''

हे द्वितीय मतिमन्–वरद सन बुद्धि रखनिहार अहाँक नवयौवना पत्नी कामदेवक गतिसँ सन्तप्त छथि–माने, काम-विह्वला छथि। जेना काँकोड़ आ माछ पानि बिनु छटपटाइत रहैत अछि तहिना ओ अहाँक बिनु छटपटाइत रहैत अछि। ओ 'कन्या' थिक, कोनो वृद्धा नहि। ओकर डाँड़ 'सिंह'क डाँड़ सन पातर छैक आ स्तनद्वय 'कुम्भ' सन। ओकर भौंह 'धनुष' सन छैक जकरा देखितहि हृदयमे छेद कऽ सकबाक सामर्थ्य छैक। सप्तमी ओकरा वर्जित छैक। ओ अतुलनीया अछि, 'वृश्चिक' (बिच्छु) सँ ग्रसित अछि। तैं हे पहिल राशि 'मेष' सन मूर्ख! अहाँ एतय शीघ्रहि ओकरा लग आबि तेसर राशि 'मिथुन'केँ सफल बनाउ (ओकर काम-विह्वलताकेँ शान्त करू)!

हिनक अनेक उत्तमोत्तम कविता सभ उपलब्ध अछि– यथा : –

''मालती-मुकुले भाँति गुञ्जन्मत्त मधुव्रतः प्रयाणे कामदेवस्य शंखमापूरयन्निव।।''

उपरोक्त लखिमा ठकुराइनक पुत्री विजया (विज्जका) स्वयं विदुषी कवयित्री रहथि। एकहिटा उदाहरण पर्याप्त होयत–

''तप्ता मही विरहिणामिव चित्तवृत्तिः तृष्णाध्वगेषु कृपणेष्विव वृद्धिमेति।
सूर्य्यः करैर्दहति दुर्वचनैः खलो नुः छाया सतीव न विमुञ्चवति पादमूलम्।।''

(विरहिणीक मोन धीपल ई धरती अछि, बाटमे बटोहीक पियास तृष्णा सन बढ़ले जाइत अछि। दुष्टलोकनिक दुर्वचनसँ जेना पीड़ा पहुँचैत अछि, तहिना सूर्य्य प्रचण्ड रौद सँ दग्ध करैत छथि। सती स्त्री सन छाया पादमूल त्याग नहि करैत अछि माने सतीक पैर मे लपटाइलि रहैत अछि।

महारानी धीरमति देवी (पंद्रहम शताब्दीक चारिम पाँचम दशक लगभगक) उच्चकोटिक विदुषी-कवयित्री रहथि। हुनक रचित पुरुष-स्वभाव विषयक एक मैथिली कविताक आनन्द लेल जाय–

''उज्जर छवि देखइत पहु सुन्दर हिस तत गुन हुन कारी।
कुलकामिनि घर छाड़ल एकसरि जाए सेवल परनारी।।....''

विदुषी महामहोपाध्याया चन्द्रकला (महाकवि विद्यापति ठाकुरक पुतोहु)क विद्वताक प्रमाण लोचन रचित 'रागतरंगिनी'मे भेटैछ (**''स्निग्धकुञ्चितकोमलङ्कचगण्डमण्डित कोमलम् अधरबिम्बसमानसुन्दरशरदचन्द्र निभाननम्''**......)। पन्द्रहम सोलहम शताब्दीक लखिमा देवी (चन्द्रसिंहदेवक धर्मपत्नी) जनिका विद्या वाचस्पति कहल जाइत छल आ जे न्यायशास्त्र-धर्मशास्त्र प्रवीणा कवयित्री रहथि (**''किं मां हि पश्यसि घटेन कटिस्थितेन, वक्रेण चारु परिमीलितलोचनेन.....''**) आ सत्तरहम शताब्दीक कादम्बरी (महामहोपाध्याय पं० गोकुलनाथ उपाध्यायक सुपुत्री) प्रख्यात मैथिलानी विदुषी भऽ गेल छथि–

संदर्भ संकेत– लेखकक पोथी ''वैदेही पुष्पहार''मे सभहि सन्दर्भक विवरण उपलब्ध अछि।

●

मधुबनी अंचलक मन्दिर

डा० नरेन्द्रनारायणसिंह 'निराला'

वैदिक युगसँ अद्यावधि मिथिला संस्कृतिय विद्याक गौरवपूर्ण परम्पराक हेतु समादृत होइत आयल अछि। एहिठाम देश-देशान्तरसँ विद्यानुरागीजन आबि अध्ययन-अनुशीलन द्वारा पाण्डित्य प्राप्त कऽ गौरवान्वित होइत छलाह। हमरालोकनिक संस्कृति विद्या एवं मन्दिरसँ समन्वित अछि। जेँ एहिठामक भूमि, संस्कृति ओ विद्याक क्षेत्रमे अनुपम अछि तेँ एहिठामक मन्दिर सेहो अवर्णनीय अछि।

मन्दिर-निर्माणक संस्कृतिकेँ हम दुइ भागमे बाँटि सकैत छी। पहिल प्राचीन ऐतिहासिक स्थलक रूपमे आ' दोसर सुन्दर स्थापत्य कलाक दृष्टिकोणसँ।

गिरिजास्थान–ई स्थान ग्राम-फुलहर, परगना भाला, प्रखंड-हरलाखी, जिला-मधुबनीमे अवस्थित अछि। तुलसीदासक अनुसारेँ राम आ' सीताक परस्पर मिलन राजा जनकक फुलवारीमे भेल छलैन्हि। लोक एकरा ओएह स्थान कहैत छथि। एहिठाम सीता गौरी पूजनक हेतु आ राम गुरूक लेल फूल लेबाक हेतु आएल छलाह।[1] गामसँ सटले पश्चिममे गिरिजा मन्दिर अछि। ई खण्डित अछि। गिरिजा सिंहवाहिनी, अष्टभुजी छथि आ हुनक बाम हाथमे धनुष, चक्र, कुठार आदि आ' दहिना हाथमे असि, त्रिशूल आदि छैन्हि। एकर अतिरिक्त आओरऽ अनेक मूर्त्ति अछि। समीपस्थ व्यक्तिसभकेँ जतऽ कतहुँ मूर्ति भेटलैन्हि एतऽ आनि राखि देलैन्हि अछि। मुख्य मूर्त्तिक एक भागमे गणेशक तीन मूर्त्ति, योगमाया, कालिका, दुर्गा आ विष्णुक प्रतिमा अवस्थित अछि। दोसर दिस सीता, गौरीशंकर आ' शिवलिंग छथि।

मंदिरसँ सटले दक्षिण एक ताल छैक, जकर नाम सरसमीप अछि। मन्दिरक किछु मूर्त्ति सेहो एतऽ अछि। मन्दिर सँ लगभग एक किलोमीटर उत्तर एक गोट ताल अछि जकर नाम अछि 'बागतराग'। एकटा छोट भैरव मन्दिर सेहो अछि। मंदिरक संचालन हेतु भूमि सेहो अछि। एतऽ समय-समय पर मेला लगैत छैक। पुजारी पंडालोकनि रहैत छथि।

गाण्डीवेश्वर महादेव स्थान–पौराणिक कथाक अनुसारेँ भृंगकेर दरभंगासँ दक्षिणेश महेशक स्थानमे जानल जाइत छैक। एहि स्थानक प्रचलित नाम गाण्डीवेश्वर छैक।[2] ई स्थान दरभंगासँ तीस किलोमीटर उत्तर आ' मधुबनीसँ 36 किलोमीटर पश्चिम शाहपुर शिवनगर गामक समीप अवस्थित अछि। मिथिलामाहात्म्यक अनुसारेँ ई मिथिलाक दक्षिण द्वार पर अछि।[3] मुदा सम्प्रति एहि स्थानकेँ गांडीवेश्वर स्थानक नामसँ लोक जनैत अछि। जनश्रुति अछि जे महाभारत कालमे पाण्डवलोकनि अज्ञात वासक क्रममे एहिठाम आयल छलाह। शिवनगर मौजेमे एक गोट तलाव छैक, जकरा सैनी पोखरि कहल जाइत अछि। ओहि सैनी पोखरिक कातमे घनघोर जंगलमे श्मशान भूमिक समीप एक 'शमीक' विशाल वृक्ष[4] छलैक जाहि पर पाण्डवलोकनि अपन अस्त्र-शस्त्र रखने छलाह। पाण्डवलोकनिमे किनको प्यास लगलैन्हि। ताहि लेल अर्जुन अपन बाणसँ पृथ्वीकेँ फोड़ि जल बहार कयलैन्हि। ओएह स्थान सम्प्रति वाणगंगाक नामसँ जानल जाइत अछि। ई स्थान शिवोत्तरसँ तीन किलोमीटर पश्चिम विसनपुर गामक समीप अवस्थित अछि। लगभग दू किलोमीटर उत्तर चानपुरा गाम अछि जे तीन दिससँ नदीसँ घेरल अछि। एहि नदीक स्थानीय नाम बुढ़नद अछि। ई नदी अधवारा समूहक छोट नदी अछि। एकर उद्गमस्थल बाजपट्टीक चौर छैक।

तीरभुक्तिक क्षेत्रपर कलचुरि सभहक राज्य छल। एहि वंशक गाङ्गेयदेवक नाम पर एहि क्षेत्रमे अनेको शिवपीठक निर्माण कराओल गेल।[5] ई सभ गांगेश्वर कहाओल। शिवनगरक शिवपीठ सेहो ओहि समयक छैक। पछाति गंगेश्वरसँ गण्डीश्वर आ' तखन गाण्डिवेश्वर बनल। एक गोट महादेव ओ पार्वतीक मन्दिर सेहो छैक, जाहिमे कृष्णप्रस्तरमे महादेव आ' पार्वतीक मूर्त्ति अछि। पार्वतीक मूर्त्ति शिवक वाम जाँघ पर आलिंगनबद्ध मुद्रामे देखबामे अबैत अछि। ई मूर्त्ति पालकालीन अछि।[6] एकर अतिरिक्त मध्यकालीन द्वादशादित्यक प्रस्तरक मूर्त्ति सेहो एहि प्रांगणमे अवस्थित अछि।[7]

1904क कैडेस्ट्रल सर्वे (Cadestral Survey) मे 2296 तौजीमे करीब 45 बिगहा जमीन शाहपुरक जमींदार लोकनि लिखि देने छलथिन्ह जकर उपयोग गांडीवेश्वर स्थानक पंडालोकनि द्वारा कएल जाइत अछि।[8] ओहिठामक वृद्धलोकनिक अन्तर्वीक्षाक आधार पर ज्ञात भेल जे ई स्थान पहिने चारू दिससँ घनघोर जंगलसँ आच्छादित छलैक। एहि प्रांगणमे सम्प्रति पड़ोसी गामक एकगोट व्यक्ति राधा-कृष्णक एकगोट मन्दिरक निर्माण कएलन्हि अछि। शाहपुरे ग्रामवासी श्रीइन्द्रदेव नारायण सिंह सेहो एक गोट हनुमान मन्दिरक निर्माण कैलन्हि अछि, जे 1988क भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भऽ गेल। ओ पुनः ओहि मन्दिरकेँ पूर्णरूपेण तोड़ि आ' एक गोट मन्दिरक स्थापना कैलन्हि, जाहिमे राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान ओ कालीक मूर्त्तिक प्राणप्रतिष्ठा 6 जून, 1998 मे काशीक पंडितलोकनि द्वारा करौलन्हि। भूकम्पक आघातसँ क्षतिग्रस्त मन्दिर आ परिसरक जीर्णोद्वार श्रीसिंहजी पुनः करौलन्हि। ओहिमे किछुकाज बेनीपट्टीक भूतपूर्व अनुमंडलाधिकारी पहाड़पुरी सेहो करबौलन्हि।

उच्चैठ स्थान – बेनीपट्टी अनुमंडल मुख्यालयसँ पाँच किलोमीटरक दूरी पर एक गोट अतिप्राचीन ऐतिहासिक भगवतीक मूर्त्ति प्रतिष्ठित अछि। मन्दिरमे सिंहक पीठ पर कमल छैक जाहि पर दुर्गाक कृष्णप्रस्तरक कलापूर्ण मूर्ति प्रतिष्ठित अछि। मूर्ति लगभग दू हजार वर्ष प्राचीन अछि। हमर धारणाक अनुसारेँ कोनो आनठाम दुर्गाक मूर्त्तिक मस्तक छिन्न नहि छैक। एहन अनुभव होइत अछि जे उत्खनन कालमे कटि गेल होइक वा कोनो आक्रमणकारी द्वारा काटि देल गेल होइक। उच्चैठ कालिदासक तथाकथित जन्मस्थान सेहो छैक। मन्दिरक कात मे एक गोट नदी छैक। प्राचीन कालमे ओहिठाम एक गोट पाठशाला सेहो छलैक, जाहिमे कलुआ नामक एक गोट नौकर छल। एक दिन नदीमे अकस्मात् भयंकर बाढ़ि आबि गेलैक। केओ नदी पार कऽ भगवतीक पूजा-अर्चनाक लेल तैयार नहि छल। सभहक समक्ष एक पैघ समस्या उपस्थित भऽ गेल। किन्तु कलुआ एकरा सहर्ष स्वीकार कएलक। ओ आनन-फाननमे ओतऽ पहुँचि पूजा-अर्चना कएलक आ पहचानक लेल भगवतीक मुँहकेँ कारिखसँ पोति देलक। भगवती प्रसन्न भऽ वरदान मांगबाक हेतु कलुआसँ कहलन्हि। महामूर्ख कलुआ भगवतीसँ विद्याक याचना कएलक। भगवती वरदान देलन्हि जे राति भरिमे ओ जतेक पोथी-ग्रंथक स्पर्श करत से सभटा ओकरा कंठाग्र भऽ जइतैक आ सएह भेल। वएह कलुआ महाकवि कालिदासक नामसँ प्रसिद्ध भेल।

यद्यपि विश्वविश्रुत महाकवि कालिदासक जन्मस्थानक सम्बन्धमे विद्वानलोकनिमे मतवैभिन्य अछि तथापि एक गोट विद्वान्क वर्ग हिनका मिथिलावासी मानैत छथि। रंगनाथ रामचन्द्र 'दिवाकर' द्वारा सम्पादित ग्रंथ (बिहार थ्रू द एजेज, पृष्ठ 287) मे तथा पं० बलदेव मिश्र (विक्रम पत्रिका), रामप्रकाश शर्मा (मिथिला का इतिहास पृ०441-450), डॉ० भारती श्रीवास्तव (हिन्दी कथा साहित्य को मिथिलांचल का योगदान, शोध-प्रबंध) तथा डॉ० रामचन्द्र ठाकुर (मिथिलापभ्रंश के स्रोतः शोध प्रबंध) हिनका मिथिलापुत्र प्रमाणित कएलैन्हि अछि। कविकुलकुमुदकलाधर कालिदासक प्रतिभा हुनका ओ स्थान देलकैन्हि जकर बाद किनको दोसरक नाम नहि आबि सकबाक कारणेँ आंगुर सभमे अनामिका सार्थक भेलऽ। ''पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः। अद्यापितत्तुल्य कवेऽर भावात् अनामिका सार्थवती बभूव।।''

ज्योतिषपुरक उत्तरी-पश्चिमी सीमा कौशिकी नदी धरि पसरल अछि से कालिदासक मत अछि आओर हुनक रघुवंशक रघु द्वारा प्राग्ज्योतिषपुरक पराजयक चर्चा सेहो भेल अछि।[9] मिथिलाक कालिदास कौशिकी नदीक समीप छथि, उज्जैनसँ नहि। तेँ एहि किंवदन्ती पर विश्वास कएल जा सकैत अछि जे कालिदास मिथिलाक पुत्र छलाह। तखन निश्चित रूपेँ हुनक संबंध उच्चैठसँ रहल हेतैन्हि। एक गोट श्लोक प्राप्त भेल अछि, जे निम्न अछि :-

प्राग्ज्यौतिषः कामरूपे तीरभुक्तिश्च निच्छविः।
विदेहाश्चाथ काश्मीरे कीरास्युः शास्त्रशिल्पिनः।।[10]

कामरूपक पर्याय प्राग्ज्यौतिष अछि आ' तीरभुक्ति, निच्छवि, विदेह पर्याय अछि। निच्छवि कहियो एहि क्षेत्रक

नाम नहि रहल। एहिसँ स्पष्ट अछि जे त्रिकाण्डभेषक मोनमे निच्छवि क्षेत्र विदेहक भाग छल। कालिदासक काल आब प्रायः निश्चित भऽ गेल अछि। ओ चन्द्रगुप्त द्वितीयक सभापति छलाह, से प्रतीत भऽ रहल अछि।[11] रघुवंशक साहित्यिक भौगोलिक विवरणसँ ई विश्वास कएल जा सकैत अछि जे कालिदास उज्जैनक नहि मिथिलाक रहल होएताह।

कपिलेश्वर स्थान – ई स्थान रहिकासँ 2 किलोमीटरक दूरी पर अवस्थित अछि। सांख्यकदर्शनक प्रवर्त्तक कपिल मुनि एहिठाम शिवलिंगक स्थापना कएने छलाह। हुनके नाम पर एहि स्थानक नाम कपिलेश्वर स्थान पड़ल। एहिठामक शिवलिंग हजारो वर्ष पुरान अछि। कपिलेश्वर महादेवक सेवासँ जहिना विद्यापति नचारी ओ महेशवाजीक रचना कएलैन्हि, तहिना कालिदासमे उच्चैठ भगवतीक सेवासँ वरदान पावि कवित्व प्रतिभाक विकास भेल।[12]

चण्डेश्वरनाथ स्थान – झंझारपुर अनुमंडलक हरड़ी गामक समीप चण्डेश्वर महादेवस्थान अछि। एहि ठामक शिवलिंगक स्थापना ज्योतिरीश्वर ठाकुरक पूर्वज चण्डेश्वर ठाकुर कएने छलाह जे क्षत्रिय कर्णाट राजवंशीय राजा हरसिंहदेवक सलाहकार छलाह। हिनके रचना 'राजनीतिरत्नाकर' नामसँ प्रसिद्ध अछि।

भवानीपुरक उग्रनाथ – वर्त्तमान पण्डौल पाण्डवलोकनिक अज्ञातवासक कारणेँ पाण्डवालय भेल आ' बादमे पण्डौल भेल, इएह स्थानीय लोकक मान्यता छैन्हि।[13] अनुमान कएल जाइत अछि जे एकरे बाद पाण्डवलोकनि गाण्डीवेश्वर गेल होएताह। पण्डौल स्टेशनसँ तीन किलोमीटर दूर भवानीपुर गाममे उग्रनाथ महादेवक एक भव्य मन्दिर अछि। एहिमे छः फीट नीचा शिवलिंग स्थापित भेल अछि। एहन किंवदन्ती छैक जे विद्यापति अपन नौकर उगनाक संग यात्रा क्रममे एहिठाम रुकल छलाह। हुनका जोरसँ प्यास लगलैन्हि। अपन सहचर उगना जे साक्षात् महादेव छलाह, सँ जल अनबाक हेतु कहलैन्हि। तखन उगना हुनका गंगाजल पिऔलकन्हि। ओहि निर्जन स्थान पर गंगाजलक स्वाद पाबि महाकवि विद्यापति आश्चर्यचकित भऽ गेलाह। अन्तमे उगना महादेवक साक्षात् रूपक दर्शन दए स्वयं अन्तर्धान भऽ गेलाह। आइ ओहि स्थान पर दर्शनीय उग्रनाथ मन्दिर छैक।

स्थापत्य कलाक दृष्टिसँ एहि अंचलमे खण्डवला कुलक व्यक्ति द्वारा कतेको विशाल आ सुन्दर मन्दिर सभक स्थापना कएल गेल अछि।

राजादत्त सिंह (1807-1839) अपन पिता माधव सिंह (1775-1807) द्वारा स्थापित माधेश्वर मन्दिरक निर्माण कार्य सौराठमे कएलन्हि। लौहना रोड सँ दू किलोमीटर उत्तर विदेश्वरस्थान अछि। दरभंगा महाराज स्व० राघवसिंह एहिठाम शिवलिंगक स्थापना कएलैन्हि। ओहिठाम ताहि समयक एक गोट अभिलेख सेहो अछि। महाराज माधव सिंह (राज्यकाल 1775-1807)क बाद हुनक तेसर पुत्र महाराज कुमार रमापति सिंह (पचही-मधेपुर) दरभंगासँ विदा होएबाक काल शुभंकरपुरक पुल लग पंचानाथ शिवक मन्दिर बनबौलन्हि आ' मधेपुर आबि बुढ़ानाथ खगपतीश्वरनाथ) महादेवक स्थापना कएलैन्हि। बाटमे जतऽ कतहुँ हुनक विश्राम भेल-सकुरी, गंगौली, नरुआर, झंझारपुर आदि सभठाम शिवालयक निर्माणक आदेश दैत अएलाह। स्वयं तत्पर भऽ पछाति ओहि काजकेँ सम्पन्न करौलन्हि।

मधुबनी ड्याढ़ीक बाबूसाहेब गिरिधारी सिंह अपन हाताक बाहर 'मुरली मनोहर'क एक भव्य, मनोरम ओ दर्शनीय मन्दिरक निर्माण करबओलन्हि। महाराज रमेश्वर सिंह भौआरा मधुबनी मे एक गोट विशाल काली मन्दिरक निर्माण कएलन्हि। एहि मन्दिरक अन्दरक प्रतिमा सभ बहुत सुगठित एवं दर्शनीय अछि। ओ महाराजा भेलाक बाद राज नगरमे कामाख्या मन्दिर, काली मन्दिर, सूर्य मन्दिर, भगवान मन्दिर, नौलखा दुर्गा मन्दिर, कुलदेवी मन्दिर, गिरिजा मन्दिर, शिवमन्दिर, महावीरजी मन्दिर जकाँ उत्कृष्ट, विशाल एवं सौन्दर्यशाली मन्दिरक निर्माण करबौलन्हि। राजनगरक संगमरमर पत्थरसँ निर्मित अपूर्व ओ अनुपम मन्दिरक दोसर उदाहरण एहि राज्य मे नहि अछि।[14]

एहि अंचलमे आओर अनेको प्रसिद्ध मन्दिर अछि, जकर चर्चा संक्षेपमे कएल जाइत अछि। शैव स्थलमे- हैंठी-

बालीक महादेव मन्दिर (जकर शिवलिंग आश्चर्यजनक रूपसँ घुमैत छैक), उच्चैठक समीप कामदानाथ, अंधराठाढ़ी प्रखण्डक अन्तर्गत मदनेश्वरस्थान, लदनियाँ प्रखण्डक सिद्धप-परसाहीमे प्राप्त तंत्रपीठ, एतऽ केर मोतनाजे आ 'महुलियाक जमीनमे धँसल शिवलिंग'।

बरहीमे तलाबक अन्दर प्राप्त देवाल पर भित्तिमन्दिर, जयनगर प्रखण्ड केर दक्षिण-पश्चिम अर्धावा गाममे पंचमुखी महादेवक विशाल ओ भव्य प्रतिमा, बाबूबरही प्रखण्डक बरुआरमे लक्ष्मीनारायण मन्दिर, बासोपट्टी-हरलाखी मुख्यमार्ग पर कलना स्थानक कल्याणेश्वर भगवान ओ सरिसोपाहीक महादेव अछि। जनश्रुति अछि जे कृष्णक अग्रज बलदेव एहि महादेवक स्थापना कएने छलाह।

शक्तिस्थलमे खड़रखक बाणदुर्गा, निर्मलीक समीप नेपालक सखरा भगवती, झंझारपुरक समीप बाणेश्वरी चण्डीस्थान, भगवतीपुरक नाहर भगवती, कोइलखक भद्रकाली, पचहीक चामुण्डास्थान, अंधराठाढ़ीक देवी स्थान, झीखाक देवीस्थान, लोहटक जटेश्वरी, लोहनाक लोहनी देवी, रांटीक सतीहारा, सरिसबक सिद्धेश्वरी, मदनेश्वरक लग विराट चण्डी, डोकहरक राजेश्वरी प्रसिद्ध अछि।

उपर्युक्त मन्दिरक वर्णनसँ ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे शिव, शक्ति आ' विष्णु समानरूपसँ सिद्धि प्रदान करय वला बुझल जाइत छलाह।[15] तंत्रक प्रभाव सेहो मिथिला वासीपर छलैक।[16]

स्थापत्यक क्षेत्रमे मिथिलाक मन्दिर निर्माण कला अपन विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदर्शित करैत अछि।[17] प्रायः मिथिलाक प्रत्येक नरेश व्यापक स्तर पर मन्दिरक निर्माण करबैत छलाह। डॉ स्पूनर मिथिलाक मन्दिर सभकेँ मन्दिरक तिरहुत शैलीक नामसँ अभिहित कएलनि अछि।[18] सिद्धान्ततः तिरहुत शैलीक मन्दिर अतिसामान्य प्रकारक होइत अछि।[19] बाढ़िक विभीषिका कर्णाटकालीन चीज (स्थापत्य सभक अवशेष) सभकेँ समाप्त कऽ देलक।[20] किन्तु खण्डवला कुलक राजक अन्तर्गत मौलिक मिश्रित एवं अन्य क्षेत्रीय शैली सभमे राजसी शैलीसँ युक्त मन्दिरक स्थापना कएल गेल।

सांस्कृतिक चेतना सभ दिनसँ एहिठाम रहल अछि जकर कारण धार्मिक भावना ओ विद्याक परिशीलन अछि।[21]

मध्यकाल मे दिल्ली सल्तनत आ' मुगलक शासन कालक अन्तर्गत ई मन्दिर सभ हमर सांस्कृतिक चेतनाकेँ जागृत कऽ हिन्दू सभकेँ संगठित राखि सकबामे समर्थ भऽ सकल आ' अंग्रेजी शासन कालमे सेहो हमर सनातनी स्वभावकेँ अक्षुण्ण रखलक। एकर संगहि-संग विद्याक आधार आ' स्त्रोतक रूपमे सतत् ठाढ़ रहल। एहि मन्दिर सभक संस्कृति आ' शिक्षाक प्रभाव छल जे भारतक स्तर पर जे हिन्दू राजा अपन बेटीक वैवाहिक संबंध मुसलमानक संग कैलन्हि ओ सभ अपन राजकीय सत्ता आ' सेवा केँ बरकरार रखलैन्हि किन्तु अपन जाति आ' धर्म केँ सेहो बचओने रहलाह।[22]

भुवनेश्वरक कोणार्क आ खजुराहो सन मन्दिर सभमे यौन अंकन भेल अछि मुदा मिथिलाक मन्दिरमे एहन अंकन नहि अछि। सभ्यताकेँ जगतक विकास आ' संस्कृतिकेँ मनुष्यक उत्कर्ष कहि सकैत छी। एक दिस जतऽ दक्षिण भारतक मन्दिरमे विलासिताक संस्कृति आएल, ओहिठाम दोसर दिस मिथिलाक मन्दिर संस्कृतिक श्रोत बनल रहल अछि। मिथिलामे गुरू आश्रम व्यवस्था ओ मन्दिर शिक्षाक केन्द्र छल।

संदर्भ

1. उपेन्द्र झा, मिथिलापुरी का अभिज्ञान, विद्यामंदिर बनकट्टा; पो०–बेनीपट्टी, जिला–मधुबनी, 1983 ई० पृ०–47।
2. तत्रैव, पृ०–89।

3. तत्रैव, पृ०–90।
4. (i) देखू, हिन्दुत्व, विराट पर्व, पृष्ठ–152,
   (ii) सूरजलाल मेहता, महाभारत सार, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली, 1981, पृ०–1401
   (iii) ई ''शमीक वृक्ष स्व० भगवतनारायणसिंह 'अधिवक्ता', लहेरिया सराय-दरभंगाक हिस्सामे छलन्हि, जे तीस वर्ष पूर्वहि सुखि गेलैक। हुनकेसँ साक्षात्कारक क्रममे जानकारी भेटल।
5. उपेन्द्र झा, मिथिलापुरी का अभिज्ञान, पृ०–90।
6. उत्खननमे एहि तरहक पालकालीन समान मूर्ति अनेक स्थान पर प्राप्त भेलैक अछि जे ग्रंथ सभमे उल्लिखित अछि।
7. देखू, मध्यकालीन प्रस्तर मूर्तियों की तस्वीर, विजयकान्त मिश्र, कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला, मिथिला प्रकाशन, 1, सर पी० सी० बनर्जी रोड, इलाहाबाद (यू० पी०), 1979, पृ०–पुस्तक के अंतमें। प्लेट 14 फोटो -25
8. स्व० भागवतनारायणसिंह, श्रीत्रिभुवननारायणसिंह एवं श्रीमाहेश्वरप्रसादसिंह तीनू अधिवक्तालोकनि लहेरिया सराय, दरभंगासँ साक्षात्कारक क्रममे प्राप्त।
9. रमेश संधवी इन्डियाज नाँरदर्न फ्रान्टियर एण्ड चाईना कनटेम्पोरेरी पब्लिशर्स, बम्बई, पृ० 115
10. श्लोक 41, सत्पथ ब्राह्मण, उपेन्द्र झा, मिथिलापुरी का अभिज्ञान मे उद्धित पृष्ठ सं०–19।
11. बी० एस० उपाध्याय, इण्डिया इन कालिदास, पृ०–352-360, हि० सं० लि०, पृष्ट 8 केर आगां, आर०सी० माजूमदार, दि क्लासिकस एज' पृष्ठ 302-303 एवं सुबिरा जायसवाल, वैष्णव धर्म का उद्भव एवं विकास, दि मैकमिलन क० इण्डिया लि०, हिन्दी संस्करण 1976, पृ० 22 मे सेहो उद्धित।
12. बुद्धिधारीसिंह 'रमाकर', मधुबनी ओ ओकर परिसरक मैथिलीसेवा, रमानाथझा अभिनन्दनग्रंथ, पृ०–180
13. डा० रंगनाथ दिवाकर, मधुबनी जिला : पुरातत्व इतिहासके वातायनसे, स्मारिका, स्वतंत्रता दिवस स्वर्ण जयन्ती समारोह, 15 अगस्त, 1998, पृ०–57
14. देखू, कुमार गंगानन्दसिंह, दि बिहार अर्थक्वेक एण्ड दरभंगा राज, थैंकर्स प्रेस एण्ड डायरेक्टरीज लि० दरभंगा राज द्वारा प्रकाशित, 1936 ई० पृ०–14
15. उपेन्द्र ठाकुर, मिथिलाक इतिहास, पृष्ट–219।
16. सी० पी० एन० सिन्हा, मिथिला अण्डर दि कर्णाटाज, जानकी प्रकाशन, पटना–4, 1979 पृ०, 164
17. उपेन्द्र ठाकुर, उपर्युक्त, पृष्ट–236।
18. सी० पी० एन० सिन्हा, उपर्युक्त पृ०–165।
19. उपेन्द्र ठाकुर, उपर्युक्त, पृ०–237।
20. 'सी०पी०एन० सिन्हा, उपर्युक्त–165।
21. बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' उपर्युक्त पृ०–180।
22. देखू, डा० गोपीनाथशर्मा, राजस्थानका इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, दिल्ली, चतुर्थ संशोधित संस्करण, 1981।

●

मिथिलामे कर्मकाण्ड

डॉ० देवनारायणझा

मिथिला प्राचीन कालहिसँ आर्य संस्कृतिक केन्द्र रहल अछि। ओहि आर्य संस्कृतिक प्रमुख एवं आदिम रूप वैदिक संस्कृतिक रूपमे अभिव्यक्ति पौलक अछि। वैदिक वाङ्मयक उत्तरकालीन रचना सबमे मिथिलाक वर्णन विदेह भूमिक रूपमे भेल अछि। शतपथ ब्राह्मणमे कहल गेल अछि जे पुराकालमे आर्यलोकनिक एक दल विदेध माधवक नेतृत्वमे तथा गौतम रहूगणक पौरोहित्यमे सरस्वतीक तटसँ चलिकऽ एहि आर्यावर्तक पूर्वाञ्चलमे बहैत सदानीरा नदीकेँ पार कऽ ओकर परिसरमे अर्थात् पूर्वी तट परक भूमिकेँ अपन यज्ञीय अग्निसँ पवित्र कऽ ओहिठाम अपन अधिवास ग्रहण कैलनि। तहियासँ लऽ कऽ निरन्तर ई क्षेत्र आर्य सभ्यता ओ संस्कृतिक पताकाकेँ फहरबैत आबि रहल अछि।

शतपथ ब्राह्मणक एहि प्रसङ्गसँ स्पष्ट अछि जे आधुनिक कालमे मिथिलाञ्चल नामसँ जानल जाइत ई भूमि प्राचीन कालिक विदेहस्थल थिक। ई भूभाग ऋगवेदोत्तर कालमे वैदिक सभ्यता आ संस्कृतिक प्रमुख केन्द्रक रूपमे भारतक मानचित्रमे अपन स्थान सुरक्षित कऽ लेने छल। एकरे परिणाम थीक जे संहितोत्तर कालमे अस्तित्वमे आयल विभिन्न ब्राह्मणक कालमे वैदिक संस्कृति मुख्यतः जे स्वरूप ग्रहण कयलक, ओकर पूर्ण प्रभाव मिथिलोमे दृष्टिगोचर होइत अछि। संहिता कालक वैदिक धर्म मुख्यतः भावनाप्रबल एवं सुकोमल स्वरूप प्रदर्शित करैत अछि। मुदा ब्राह्मण कालमे आबिकऽ ओकर ओ स्वरूप किछु कठोरता दिस अग्रसर भेलैक। विभिन्न प्रकारक याज्ञिक क्रियाकलापकेँ एहिकालमे विशेष महत्त्व देल गेलैक। विभिन्न प्रकारक यज्ञक विधान एहि ब्राह्मण कालमे आबिकऽ प्रचलित भेल जाहिमे हिंसापरक बलि आदि अनुष्ठानक विधान देखल जाइत अछि। संहिता कालमे आर्यलोकनि देवताक उपासना, स्तुति, अभ्यर्थना, आदि विभिन्न ऋचाक माध्यमसँ करैत छलाह। हुनक ई मान्यता छलैन्हि जे एहि मन्त्र रूपक माध्यमे प्रार्थित देवतागण प्रसन्न भऽ अभिवाञ्छित फल प्रदान करताह। किन्तु ब्राह्मण कालमे विभिन्न यज्ञ सभक द्वारा देवगणकेँ वाध्यकरब, वशमे आनिकऽ अपन अभिलक्षित लक्ष्य सिद्ध करब मुख्य प्रयोजन रहि गेल। ब्राह्मणकालक एहि मनोवृत्तिक उपज थीक कर्मकाण्ड। कर्मकाण्डक अर्थ थीक विभिन्न याज्ञिक कर्मक समूह तथा ओकर विभिन्न शाखा।

ब्राह्मण कालमे कर्मकाण्डक विभाजन वर्णाश्रमानुसारी नहि भेल छल। जखन कर्मकाण्डक महत्त्व बढ़ल तऽ एकरा विभिन्न वर्ण आ आश्रमसँ सम्बद्ध करबाक हेतु विभिन्न सूत्र-साहित्यक रचना भेल। समग्रतामे एहि सूत्र-साहित्यकेँ कल्पसूत्रक नामसँ जानल जाइत अछि। कल्पसूत्रक तीन भाग अछि, जकरा तीन शाखा कहल जा सकैत अछि। ई तीन शाखा थीक-श्रौतसूत्र, धर्मसूत्र, तथा गृह्यसूत्र। श्रौतसूत्रमे श्रुति प्रतिपादित विभिन्न कर्मक विधानक प्रक्रिया निरूपित अछि। धर्मसूत्रमे ई प्रतिपादित अछि जे कोन प्रकारक याज्ञिक कृत्यसँ कोन प्रकारक धर्म अर्जित होइत अछि। गृह्यसूत्रमे गृहस्थाश्रमी द्वारा विधेयक देवयज्ञ, पितृयज्ञ, ऋषियज्ञक विधानक विवरण प्राप्त होइत अछि। स्मृति ग्रन्थक प्रणेता मनु सेहो एहि कर्मकाण्डक विषयपर विशेष विचार व्यक्त कऽ एकर अनिवार्यता सिद्ध कैलन्हि –

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्य्याद् देवर्षिपितृतर्पणम्।
देवताभ्यर्चनञ्चैव समिधादानमेव च।। मनु० 2/176

मिथिलामे प्राचीन कालहसँ नित्य नैमित्तिक, एवं काम्य कर्मक अनुष्ठानक प्रथा प्रचलित अछि। सन्ध्या वन्दनादि नित्य कर्म थीक, पुत्र कामनासँ विहित पुत्रेष्ठि यज्ञादि नैमित्तिक कर्ममे अबैत अछि आ स्वर्गादि प्राप्ति हेतु क्रियमाण कर्म यागादि काम्य कर्मक कोटिमे अबैत अछि। ई तीनू प्रकारक कर्म कर्मकाण्डक अंग थीक। पञ्चविध महायज्ञक अनुष्ठान सेहो कर्मकाण्डक अङ्गक रूपमे सदा प्रवर्त्तित अछि। एहि महायज्ञक अनुष्ठान गृहस्थाश्रमीक हेतु अनिवार्य धर्म थीक। कहलो गेल अछि–

स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन् होमैर्देवान् यथाविधि :।

पितृन् श्राद्धैश्च नृनन्नैः भूतानि बलिकर्मणा।। (मनु० 3/81)

उपर्युक्त श्लोकक अभिप्राय ई थीक जे मृत पिताक श्राद्ध-तर्पणक द्वारा, ऋषिलोकनिक स्वाध्याय द्वारा, देवता सभक हवन द्वारा, राजाक अन्नक द्वारा एवं प्राणी सभक बलिकर्मक द्वारा तृप्ति होइत छनि। तैं ई पाँचटा महायज्ञक अनुष्ठान अनिवार्य थीक। योगदर्शनक प्रणेता पतञ्जलि सेहो लिखैत छथि जे ''स्वाध्यायशील व्यक्तिके इष्टदेवतासँ सम्पर्क होइत छैन्ह।'' स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः'' (पा०यो०सू०पा० 44)। स्वधर्मनिष्ठ गृहस्थाश्रम सभ आश्रमक मूल थीक। सबटा कर्मकाण्डक आधार गृहस्थाश्रम पर निर्भर अछि, तैं एकर पवित्रता आ संरक्षण हेतु मिथिलामे विशेष रूपसँ वेदविहित कर्मानुष्ठान दिस ध्यान देल गेल। वस्तुतः मिथिलाक कर्मकाण्ड वेदमूलक थीक। वेद प्रणिहित कर्मकाण्डक स्वरूप कठोर आ सीमित छल, तैं ओकर विकास प्रचुर मात्रामे नहि भऽ सकल। तकरे विकसित रूप स्मार्त्त कर्मकाण्ड थीक जाहिमे सौकर्य्य आ सारल्यक प्रतिपादन अछि, आओर सब वर्गक वास्ते उदात्त भावनाक परिचय देल गेल अछिं। एखनो मिथिलामे दू तरहक कर्मकाण्डक प्रचार-प्रसार अछि। एकटा कर्मकाण्डक धारा एखनो मिथिलाञ्चलमे श्रोत्रिय ब्राह्मण परिवारमे पाओल जाइत अछि। ओ थीक वेदमूलक कर्मकाण्ड। श्रोत्रियक लक्षण शास्त्रमे निम्न प्रकारसँ निर्दिष्ट अछि।

एकां शाखां सकल्पां वा षड्भिरङ्गैरधीत्य वा

षट्कर्म निरतो विप्रः श्रोत्रियो नाम धर्मवित्।।

जे लोकनि वेदक एकटा शाखाक अध्ययनक संग आ कल्प सहित छओटा कर्म यजन, याजन, पठन, पाठन, तथा दान देब-लेब निरन्तर करैत रहलाह से श्रोत्रिय भेलाह। तैं ई लोकनि श्रोत्रिय उपाधिसँ विभूषित भेलाह। मुदा कट्टरता तथा कठोरताक कारणे ई कर्मकाण्ड बहुत बेसी पल्लवित आ पुष्पित नहि भऽ सकल। एकरे विस्तृत रूप स्मार्त्त कर्मकाण्ड देखबामे आबि रहल अछि। ओना मिथिलामे जे कर्मकाण्ड प्रचलित अछि से आन प्रदेशक कर्मकाण्डसँ बहुत भिन्न अछि। एहिठामक कर्मकाण्ड परिनिष्ठित थीक। एहिठामक आचार-विचार, रहन-सहन, पञ्चदेवोपासना, वैष्णव, शाक्त, शैव आदि विभिन्न सम्प्रदायक अनुष्ठान विविधतामूलक थीक। एहिठाम प्रत्येक परिवारमे माटिक बनाओल पार्थिव शिवलिङ्गक पूजाक प्रचलन अछि। सधवा स्त्रीक लेल गौरी पूजाक विधान सेहो अछि, जकर पुष्टि शास्त्रो कऽ रहल अछि। निम्न श्लोक एकर प्रमाण अछि –

वरं प्राणपरित्यागः शिरसो वाऽपि कर्त्तनम्।

अनभ्यर्च्य न भुञ्जीत भगवन्तं त्रिलोचनम्।।

अलिङ्गशिव इत्युक्तः लिङ्गं शैव इति स्मृतः।। (लिङ्ग पुराण)

एहि लिङ्गपुराणक वचनक अनुसार विशुद्ध ब्रह्मस्वरूप शिवबोधक चिह्न शिवलिङ्ग कहल जाइत अछि। मिथिलामे साकार ओ निराकार दूनू तरहक उपासनाक प्रचलन अछि। ''नमो हिरण्य वाहवे'' (वा०सं० 16/17) नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय'' (वा०स० 16/28) हिरण्य केशः हिरण्य श्मश्रुः (छा०1/6/6) इत्यादि वेदक उदाहरण एवं ''अन्तस्तद्धर्मोपदेशात्'' (ब्र०सू० 1/1/20) ई ब्रह्मसूत्रक निदेशानुसार सगुण आ साकार ब्रह्मक पूजाक वर्णन स्पष्ट रूपसँ देखल जाइत अछि। श्रीमद्भागवत्मे सेहो एहिपर विस्तृत चर्चा भेटैत अछि –

वैदिकस्तान्त्रिको मिश्र इति मे त्रिविधो मखः।

यदा स्वनिगमेनोक्तं द्विजत्वं प्राप्य पूरूषः।।

यथा यजेत मां भक्त्या श्रद्धया तन्निबोध मे।

अर्चायां स्थण्डिलेऽग्नौ वा सूर्ये वाप्सुहृदि द्विजे। –

द्रव्येण भक्तियुक्तोऽर्चेत् स्वगुरुं माममायया।। (श्री भा० 1/27/7-9)

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।

मनोमयी मणिमयी प्रतिमाहष्टविधा स्मृता।।

चलाचलेति द्विविधा प्रतिष्ठा जीवमन्दिरम्।

उद्वासावाहने न स्तः स्थिरायामुद्धवार्चने।।

अस्थिरायां विकल्प : स्यात् स्थण्डिले तु भवेद् द्वयम्।

स्नपनं त्वविलेप्यायामन्यत्र परिमार्जनम्।। (श्री.भा. 11-27-12-24)

वस्तुतः मिथिलाक कर्मकाण्डक विस्तृत क्षेत्र अछि जकर पार पायब कठिन थीक। जेना की श्रीमद्भागवतमे कहल गेल अछि। नह्यन्तोऽनन्त पारस्य कर्मकाण्डस्य चोद्धव''। (श्री भा० 11-27-6)

एहि तरहें मिथिलाक कर्मकाण्डक क्षेत्र अति प्राचीन कालहिसँ विस्तृत अछि। ई कर्मकाण्ड मिताक्षरा, दायभाग, व्यवहारमयूख, हेमाद्रि, पाराशर, माधव, वीरमित्रोदय, धर्मसिन्धु, निर्णय सिन्धु, मत्स्य पुराण, गरुण पुराण प्रभृति निबन्धग्रन्थक आ पूर्वोत्तर मीमांसादिन्यायग्रन्थक ऊपर आधारित आ प्रतिष्ठित अछि। वेदमे कर्मकाण्डक देवता तीन तरहक प्राप्त होइत छथि। ओ छथि द्युस्थानीय, अन्तरिक्ष स्थानीय, आ पृथिवी स्थानीय। अथर्ववेदीय मन्त्र एकर प्रमाण अछि –

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्ष रुदश्च ये।

पृथिव्यां शक्रा येश्रितास्तेनो मुञ्चन्तं हसः।। अथर्व 11.8.12

एहिसँ स्पष्ट अछि जे तीनहु देवताक स्थान तीन ठाम अछि, आओर तीनहुँ देवताक उद्देश्यें पूजन आ यज्ञक अनुष्ठान-विधान कयल गेल अछि। किछु विचारक मूर्त्ति पूजाक विरोध करैत छथि, किन्तु हुनक तर्क सर्वथा निर्मूल थीक। वेदमे प्रतिमापूजन विधान स्पष्टतया निर्दिष्ट अछि ''सहस्त्रस्य प्रमासि सहस्त्रस्य प्रतिमासि'' (वा०सं० 16/65) अथैतात्मनः प्रतिमामसृजत्। यद्यज्ञम्। तस्मादाहुः प्रजापतिर्यज्ञ इत्यात्मनो ह्येत प्रतिमामसृजत्'' (श०ब्राह्मण) 11-1-8-3)। उपर्युक्त मन्त्रसँ प्रतिमानिर्माण तथा पूजनक स्पष्ट निर्देश प्राप्त होइत अछि। ''स्नात्वा शुचौ गोमयेनोपलिप्य प्रतिकृति कृत्वा अक्षतपुष्पैर्यथालाभमर्चयेत'', (बौधायन क.सू. परिचर्य्यासू०) एहि मन्त्रसँ कर्मकाण्डक अनिवार्यता सिद्ध होइत अछि।

मिथिलाक कर्मकाण्ड जीवनक अभिन्न अंग मानल जाइत अछि। जीवनक सबटा प्रवृत्ति-निवृत्ति कर्मकाण्ड मूलके थीक। कुल्लुक महोदय सेहो एकर अनिवार्यता प्रमाणित कैलन्हि अछि - ''प्रतिमादिषु हरिहरादि देवपूजनम्'' कहि कऽ अपन विचार व्यक्त कयनहुँ छथि। वाल्मीकि सेहो एहि पक्षक समर्थक छथि –

श्रृङ्गाट के ग्राममध्ये विष्णोर्वा शङ्करस्य च।

गणेशस्य रवेर्देव्याः प्रासादान् क्रमतो न्यसेत्।।

अत्रपूर्वं महादेवः प्रासादमकरोद् विभुः।।(वा०रा०पु०का० 123-20)

यजुर्वेदिक मन्त्र सेहो मूर्ति पूजाक विधान प्रमाणित करैत अछि :-

''हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (यजु० 13/4)

एहि मन्त्रसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे मूर्तिपूजन आ यज्ञक अनुष्ठान वैदिक परम्परासँ अनुप्राणित थीक। शाक्त सम्प्रदायक कर्मकाण्ड सेहो वैदिक स्रोतमूलके थीक, जेना अधोलिखित मन्त्रसँ प्रमाणित होइत अछि –

''यं कामयेत तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।

अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावा पृथिवी आविवेश।। (ऋ०सं० 10/125/1-5-6)

उपर्युक्त मन्त्रमे देवी भगवतीक रुद्रादित्य रूपमे विचरण करब निरूपित अछि। भगवतिये विष्णु, रुद्र, एवं ब्रह्माक रूपमे विचरण करैत छथि ''अहं ब्रह्मा रूद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः'' ''गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे'' (शु०य० 23/19)क एहि मन्त्रसँ गणेशक आवाहनक विधान कयल गेल अछि। ''तं यज्ञं बर्हिषि प्रौसन पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त...'' (शु०य० 31/9), एहि मन्त्रमे यज्ञपुरुषक अभ्यर्चनक विधान कैल गेल अछि। एहि सभक आधार मानियेकऽ मिथिलाक कर्मकाण्ड अद्यावधि प्रवर्तित अछि। दोसर एकर महत्त्व वैज्ञानिक सेहो अछि। भगवान् गीतामे सेहो एहि विषयमे अपन मत प्रतिपादित करैत कर्मकाण्डक विशिष्टताक स्वरूपक वर्णन कैलन्हि। ब्राह्मविवाह, यथाविधि गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्मादि संस्कारसँ संस्कृत आओर उपनीत त्रैवर्णिक व्यक्तिये कर्मकाण्डक अधिकारी होइत छथि –

सह यज्ञा : प्रज्ञाः सृष्टा पुरोवाच प्रजापतिः।

अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट कामधुक्।। (गी०3/10)

एहि मन्त्रक द्वारा यज्ञानुष्ठान, देवताप्यायन, देवताक द्वारा वृष्टि प्रदान कय मनुष्यलोकक आप्यायन सेहो प्रमाणित अछि। गीताक आनो पद्य एहि तथ्यक पुष्टि करैत अछि।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न संभवः।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।। (गी०3/14)

कर्मब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम्।

तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।। (श्री.भ.गी. 3/15)

शास्त्रक अध्ययनसँ ई बात प्रमाणित होइत अछि जे सर्वप्रथम अक्षर ब्रह्म परमात्मासँ तदात्मक वेदब्रह्मक प्रादुर्भाव भेल। तत्पश्चात्, श्रौत, स्मार्त, कर्मक उत्पत्ति, तकराबाद तज्जन्य अदृश्य रूप यज्ञक उत्पत्ति भेल, तत्पश्चात् पर्जन्य, तदनन्तर अन्न तत्पश्चात् प्राणिमात्रक प्रादुर्भाव भेल। ई समग्र यज्ञानुष्ठान ओहि देवताक उद्देश्यसँ कऽकऽ तत्-तत् फलक लेल विहित अछि। यैह कर्म ईश्वरक आराधना बुद्धिसँ अनुष्ठेय भेला सन्ता सत्त्व-बुद्धि-विवेक – वैराग्यादि विविदिषा पुरःसर श्रवणादि क्रमसँ तत्त्वज्ञान प्रदान करऽवला मोक्षाधायक सेहो होइत अछि जेना की बृहदारण्यक कहैत अछि- ''तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा-विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेन'' (वृ०उ०4/4/22)। एहि बातक पुष्टि भागवत द्वारा सेहो होइत अछि –

वेदोक्तमेव कुर्वाणो निःसङ्गोऽर्पितमीश्वरे।

नैष्कर्म्यसिद्धिं लभते रोचनार्था फलश्रुतिः।। (श्री०भा०)

जेलोकनि वेदोक्त प्रतिपादित कर्मक अनुष्ठान नहि करैत छथि से पाशविक कर्म लक्षणक मृत्युक अतिक्रमण करबामे समर्थ नहि होइत छथि, उल्टे विकर्म रूप अधर्मसँ मृत्युकेँ प्राप्त करैत छथि, जेना की कहल गेल अछि –

नाचरेद्यस्तु वेदोक्तं स्वयमज्ञोऽजितेन्द्रियः।

विकर्मणा ह्यधर्मेण मृत्योर्मृत्युपैति सः।।(श्रीमदभा०)

वेदार्थ संज्ञक कर्मकाण्डक उपासनासँ मानवमात्र स्वाभाविक पाशविक कर्मकेँ तिरोहित करैत तत्त्वज्ञान प्राप्तकऽ अमरत्व, देवतात्म भाव, साक्षात्मोक्षभावक प्राप्ति करैत छथि। मिथिलामे एतेक विस्तारमे कर्मकाण्डक विवेचन आ आचारक अनुपालनक यैह उद्‌देश्य छल जे कोना आत्मतत्त्वक बोध भऽ जाय। तखन मुक्ति सेहो भेटय ई तात्पर्य छल। एकर अभिप्राय ई जे परमपुरुषार्थ प्राप्त करबेटा समग्र कर्मकाण्डक उद्‌देश्य अछि। ताहिमे ब्राह्मणक हेतु यजन-याजन, अध्ययन-अध्यापन, दान, आ परिग्रह नामसँ कर्मक विधान कयल गेल अछि। एहिमे यजन, अध्यापन, परिग्रह तीनटा जीविकाक लेल अछि। क्षत्रिय वैश्यक लेल यजन, अध्ययन, दान-तीनटा कर्म धर्म रूपमे निहित थीक। क्षत्रियक हेतु युद्ध, प्रजापालनादि, वैश्यक हेतु कृषि-वाणिज्य, गोपालनादि जीविकाक रूपमे वर्णित अछि। शूद्रक हेतु द्विजसेवा धर्म आ वृत्ति शिल्पादि जीविकार्थ निरूपित अछि। अग्निहोमादि सेहो धर्मक अङ्ग थीक। तदङ्गतया सत्पुत्रक लाभ, आत्माक रक्षा, स्त्रीरक्षा, भूषणादिक द्वारा स्त्रीक सम्मान सबटा विहित प्रक्रियाक अनुरूप कर्मकाण्डक मूल थीक। जेना की मनु कहैत छथि–

स्वां प्रसूतिं चरित्रञ्च कुलमात्मान मेव च।
स्वञ्च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन् हि रक्षति।।
प्रजनार्थं महाभागाः पूज्याश्च गृहदीप्तयः
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन।। (मनु.9/7/26)

आदिकालहिसँ राष्ट्रक उन्नतिक हेतु ज्ञान-विज्ञान निष्ठ शौर्य्य-पराक्रम प्रभृति परायण; उद्योग, वाणिज्य, कृषि-गोपालनादिमे तत्पर; शिल्पविज्ञान आदि कर्ममे निपुण व्यक्ति जहिना उपयोगी होइत छथि, तहिना शास्त्रोक्त विधिसँ कर्मकाण्डक आचरण केनिहार व्यक्ति समाजमे समादृत ओ पूजित होइत छथि। एहि लेल मिथिलाक कर्मकाण्ड शास्त्रानुमोदित आत्माभ्युदयक निमित्त अछि, जकर अनुष्ठान कोनो ने कोनो रूपेँ होइत आबि रहल अछि आ चलैत रहत। मिथिलाक कर्मकाण्ड वैदिकवाद थीक। तैं एकर नित्यता अक्षुण्ण अछि। ई कर्मकाण्ड आपामर सेव्य, अनुकरणीय आ महनीय अछि। ई कर्मकाण्डक भावना विश्वबन्धुत्वक कामनासँ जुड़ल अछि। परिणामतः ई निम्नाङ्कित सूक्ति सत्य चरितार्थ भऽ रहल अछि –

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।
स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथोधिवा।
संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। (ऋ० सं० 10/191/2)

एहि तरहेँ समग्र कर्मकाण्डक उद्‌देश्य एकमात्र आत्मतत्त्वक बोध करायब अछि, जाहिसँ सुख-शान्तिक प्राप्ति संभव थीक। भगवान गीतामे कहलन्हि जे

सर्वकर्माखिलं पार्थ जाने परिसमानयते।
रोचनार्था फलश्रुतिः।।

●

मिथिलामे पंजीव्यवस्थाक स्वरूप

जयानन्दमिश्र

मिथिलामे 'पंजी' शाके 1248 अर्थात् 1326 इ०मे लिपिबद्ध भेल जे निम्नांकित श्लोकसँ सेहो स्पष्ट होइत अछिः ''शाके श्रीहरिसिंहदेवनृपतेर्भूपार्क (1216) तुल्ये जनिस्तस्माददन्तमितेऽब्दके द्विजगणैः पंजीप्रबन्धः कृतः।''

एहिसँ पूर्व एहिठामक लोक अपन वंशपरिचय व्यक्तिगत रूपसँ वा ओहि परिवारक जे मानल व्यक्ति रहैत छलाह, लिखित वा कंठस्थ कऽ रखैत छलाह जकरा कुमारिल भट्ट 'समूह-लेख्य' कहलनि अछि। मिथिलाक तत्कालीन कर्णाटवंशीय नृपति हरिसिंहदेवक समयमे एक घटना वर्त्तमान मधुबनी जिलान्तर्गत देभार गाममे घटल जकर परिणामस्वरूप पंजी लिपिबद्ध भेल। संक्षेपमे ओहि घटनाक एतऽ उल्लेख कऽ देबऽ चाहैत छी। मधुबनी जिलान्तर्गत सतधारा गाममे शाण्डिल्य गोत्रक अन्तर्गत गंगौरे पौनद मूलधारी हरिनाथझा (शर्मा) नामक एक पंडित छलाह। हुनक पुरोहिती व्यवसाय दूर देशमे छलनि। हुनक धर्मपत्नी नित्य मुक्तेश्वर महादेवक ओहिठाम, जे सतधारा गाम सँ सटले द०-पू०मे देभार गाममे अवस्थित छथि, पूजा-अर्चनाक हेतु अबैत छलीह। एक दिनक घटना थिक जे भिखना नामक एक दुसाध सूगर चरबैत ओहि मंदिरक समीपसँ प्रस्थान कएलक। ओतऽ पंडित हरिनाथझाक स्त्रीकेँ एकान्त देखि हुनक पतिव्रता- धर्महरण करऽ चाहलक, मुदा देवइच्छासँ हुनक धर्म बाँचि गेलन्हि। एहि बातक चर्चा जखन गाममे भेल तऽ लोक सब मिथ्या प्रचार कएलन्हि जे पंडिताइन कलंकित छथि। पश्चात् समाजमे एक धर्मसभाक आयोजन भेल जे अग्नि परीक्षासँ हुनक सतीत्वक जाँच कएल जाय।

अग्निपरीक्षाक माध्यम छल– पीपरक पात पर तप्त लोह एवं मंत्र ''नाहं चाण्डालगामिनी'' लिखि कऽ पंडिताइनक हाथ पर देल जाय आ पाकि गेला पर कलंकित एवं नहि पकला पर निष्कलंकित मानल जेतीह। तहिना कएल गेल आ हुनक हाथ पाकि गेलन्हि। परीक्षामे असफल भेलाक बाद पंडिताइनकेँ समाजसँ निष्कासित कऽ देल गेलन्हि। ओहि समयमे बिदूझा नामक खड़ौरे मूलक सुरपतिक कन्या लखिमा छलीह जे विदुषी छलीह आओर मैथिल समाजमे हुनक प्रतिष्ठा छलन्हि। पंडिताइन विदुषी लखिमाकेँ भेट कऽ सब बात कहलथिन्ह। लखिमा सतधारा गाम आबि मंत्रक स्वरूपकेँ बदलैत पंडिताइनक सतीत्वक परीक्षा लेलनि। एहि बेर मंत्रक स्वरूप छलः

''नाहं पत्यतिरिक्त चाण्डाल गामिनी।'' अर्थात् अपन पतिक अतिरिक्त परपुरुष सँ सम्पर्क नहि अछि। एहि बेर हुनक हाथ नहि पकलन्हि आओर ओ निष्कलंक मानल गेलीह। तखन हुनक पति (हरिनाथ झा)मे चाण्डालात्वक अन्वेषण कएल गेल, कियैक तँ चाण्डालत्व स्वजन वर्गमे विवाह कएने सेहो प्राप्त भऽ जाइत छैक। ''चाण्डालः स्वजनागामी चाण्डालः स्वजनासुतः।'' पंडित हरिनाथझाक विवाह मातृपक्षमे पाँचम पीढ़ीक कन्यासँ भऽ गेल रहन्हि तेँ हुनकामे चाण्डालत्व अयलन्हिः ''गंगौरोनयनाथकस्य दुहिता तस्यास्तु तारापतेश्चोद्वाहोमटिहानि संज्ञक द्विजस्तत्कन्यका वै पुनः। गंगौरो हरिनाथकस्य गृहिणी कन्या तु सा पञ्चमी वीदूतो गणनावशाच्च स्वजना सम्बन्ध चाण्डालिनी।'' धर्मशास्त्र एवं पंजी नियमानुसार मातृपक्षमे पाँचम पीढ़ी एवं पितृपक्षमे छठम पीढ़ी धरि विवाह वर्जित मानल जाइत अछि। ई उपर्युक्त घटना मिथिलाक तत्कालीन महाराज हरिसिंहदेवकेँ प्राप्त भेलन्हि। ओ एहन घटनाक पुनरावृत्ति नहि हो ताहि हेतु सभजातिक वंशावली अलग-अलग एकत्र करबाक हेतु आज्ञा देलथिन्ह। मैथिल ब्राह्मणमे वंशावली संकलन करबाक पूर्ण भार पडुए मूलक रघुदेवझा तथा कर्ण कायस्थमे सीसव मूलक शंकर दत्त मल्लिककेँ देल गेलन्हिः

''ब्राह्मणानां समुत्पत्तिं तद्बीजिकथनं तथा।
करोमि रघुदेवाख्यः पाण्डुः पञ्जीविनिश्चयम्।।'' तथा

''तस्मात् कर्णबीज कलितं सद्विश्वचक्रे पुरा।
कायस्थ मति प्रदस्थ गुणिनः श्री शंकर दत्तवान।।''

राजपूत एवं वैश्य-लोकनिमे सेहो वंशावली संकलन कएल गेल। किछु दिन पंजी चलबो कयल मुदा काएम नहि रहि सकल।

जे व्यक्ति वंशावलीक संकलन कऽ विवाह-सम्बन्धक निर्णय करऽ लगलाह 'पंजीकार' (Registrar) कहौलन्हि। पंजीकारसँ प्राप्त 'अस्वजन पत्र' जाहिसँ अमुक कन्याक संग अमुक वरक विवाह भऽ सकैछ, 'सिद्धान्त' कहबैत अछि। संग्रहित परिचय जाहिमे विवाह एवं संतानक नाम जुटैत रहैत अछि, 'पंजी'सँ जानल जाइत अछि (पंजीक अन्तर्गत किछु शब्द (Term) क जानकारी हेतु प्रस्तुत लेखकक पोथी 'पंजी व्यवस्थाक उद्भव एवं विकास' द्रष्टव्य)।

प्रारंभ मे मैथिल ब्राह्मणमे पंजीक लेखन-कार्य पडुए मूलक पंजीकारेलोकनिक द्वारा होइत छल।

पश्चात् एहि मूलक अतिरिक्त अन्यो मूलक व्यक्ति पंजीलेखनकार्य करऽ लगलाह। वर्त्तमान समयमे मिथिलामे हमर जानकारीक अनुसार निम्नांकित पंजीकार छथिः

नाम	ग्राम	मूल-ग्राम
1. श्री हरिनन्दनझा	ककरौड़	पडुए महिन्द्रू
2. श्री शक्तिनन्दनझा	ककरौड़	पडुए महिन्द्रू
3. श्री कीर्तिनाथझा	कोइलख	पडुए महिन्द्रू
4. श्री नूनू मिश्र	ननौर	पलिवार समौल
5. डा० जयानन्द मिश्र	ननौर	पलिवार समौल
6. डा० कालिकादत्तझा	सौराठ सम्प्रति दरभंगा	नरौने मलिछाम
7. श्री त्रिलोकनाथझा	कछुआ चकौती	पडुए महिन्द्रू
8. श्री दशरथझा	जरैल	सरिसवे सकुरी
9. श्री भुवनेश्वरझा	जरैल	सरिसवे सकुरी
10. श्री रेवन्तझा	मंगरौनी	पडुए महिन्द्रू
11. श्री विश्वमोहनमिश्र	सौराठ (पोखरौनी)	हरिअम्बे सिवा
12. श्री शंकर कुमारमिश्र	सौराठ (कोठाटोल)	हरिअम्बे सिवा
13. श्री पिताम्बर मिश्र	सौराठ (कोठाटोल)	हरिअम्बे सिवा
14. श्री देवचन्द्र मिश्र	सौराठ (कोठाटोल)	हरिअम्बे सिवा
15. श्री मंगनू मिश्र	सौराठ (कोठाटोल)	हरिअम्बे सिवा
16. श्री आनन्दचन्द्र मिश्र	सौराठ (कोठाटोल)	हरिअम्बे सिवा
17. श्री हरेकृष्ण झा	सौराठ (कोठाटोल)	सकरिवार हरड़ी
18. श्री नूनूझा	सौराठ (कोठाटोल)	सकररिवार हरड़ी
19. स्व० मोदानन्दझाक बालक	शिवनगर (पूर्णिया)	फडुए महिन्द्रू
20. स्व० रामचन्द्रझाक पौत्र	पिलखबाड़	सरिसवे खांगुर

21. स्व० जगन्नाथझाक बालक	भराम	करमहा, इत्यादि।

पंजीकारी विद्यासँ लुप्त घर

1. स्व० बौकूझा	ननौर	पगुलवार बढ़ियाम
2. स्व० हरिनन्दनझा	अन्धराठाढ़ी	सकरिवार परहट
3. स्व० बच्चाझा	नाहर भगवतीपुर	सरिसवे खांगुर
4. स्व० दीनानाथझा	मंगरौनी	पडुए महिन्द्र
5. स्व० भोलाझा (संदेह)	सझुआर	पडुए महिन्द्र इत्यादि।

पंजी साहित्य पर प्रकाशित पोथी

	पोथीक नाम		लेखक
1.	मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था	–	प्रो० रमानाथझा
2.	मैथिल ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थक पंजी-प्रबन्ध	–	गणेश राय
3.	पंजी व्यवस्थाक उद्‌भव एवं विकास	–	प्रो० जयानन्द मिश्र
4.	अलयी कुल प्रकाश	–	प्रो० रमानाथझा
5.	जिनिओलोजी एण्ड जिनिओलोजिस्ट्स ऑफ मिथिला	–	डॉ० उग्रनाथझा
6.	मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण	–	विनोद बिहारी वर्मा
7.	कर्ण कायस्थक वंशावली : कोठीपालसँ हिरणी डेरा	–	सं० रमापति चौधरी
8.	मैथिल कर्ण कायस्थों के गोत्र एवं प्रवर	–	(प्रका०) वैद्यनाथ लाल दास

पंजीसँ संबंधित अप्रकाशित पोथी

1.	मैथिल विद्वानक वंश परिचय	–	डॉ० जयानन्द मिश्र
2.	कर्णाट, ओइनी एवं खड़ौरे कुलक वंशावली	–	डॉ० जयानन्द मिश्र

विभिन्न पोथी मध्य प्रकाशित पंजीसँ संबंधित

लेखः

1.	मिथिला तत्व विमर्श	–	पं० परमेश्वरझा
2.	मिथिला की धरोहर	–	पं० सहदेवझा
3.	विद्यापति	–	पं० शिवनन्दन ठाकुर
4.	विविध प्रबन्ध	–	नरनाथझा
5.	संस्कृति	–	ज्यौ० बलदेव मिश्र
6.	वैदेही, जनवरी 1953	–	प्रो० रमानाथझा
7.	वैदेही, जून-जुलाई 1970	–	पंजीकार बोधकृष्णझा, इत्यादि।

अप्रकाशित शोध-ग्रंथमे पंजीक सामग्री :

1.	मैथिल ब्राह्मण का जीवन-चक्रः एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण	–	डा० कृपानाथ मिश्र

2. मिथिला प्रदेश के ब्राह्मणों एवं कायस्थों का एक सांस्कृतिक भौगोलिक अध्ययनः झंझारपुर अनुमंडल के विशेष संदर्भ में। – डा० जयानन्द मिश्र
3. पंजी सिस्टम इन मैथिल कर्ण कायस्थाज – विनोद कुमार कर्ण
4. पंजीसँ सम्बन्धित शोध-कार्य – डा० कैरोलिन ब्राउन, इत्यादि।

वर्तमान समय क राँटी (मधुबनी) गामक श्री ईश्वरचन्द्रझाजी द्वारा अमेरिका सरकारक योजनानुसार पंजीकार सभसँ पंजी पोथी प्राप्त कऽ 'मैक्रोफिल्म' तैयार कऽ अमेरिका पठाओल जा रहल अछि। राँटीमे स्व० चन्द्रधारीबाबूक ओहिठाम पंजीकार श्रीशक्तिनन्दनजी द्वारा पंजी-पोथी सभक नवीनीकरण कयल जाइत अछि।

पंजीक विकासक हेतु हमर विचारः

1. पंजीकार-लोकनि गाम-गाम मे जा कऽ पंजीलेख पूरा करथि।
2. अल्प जानकार पंजीकार योग्य पंजीकारसँ अधूरा ज्ञानक पूर्ति करथि।
3. वर्षमे कमसँ कम एक बेर सभ पंजीकार एकठाम उपस्थित भऽ पंजीक गतिविधि पर विचार-विमर्श करथि।
4. पंजीकारलोकनि अपन कौलिक विद्याक सुरक्षाक हेतु एकहु व्यक्तिकेँ पंजीकार अवश्य बनाबथि। पंजी एवं तिरहुता लिपिक मुख्य संरक्षक पंजीकारेलोकनि थिकाह।
5. पंजीकार-लोकनिमे आपसी सहयोग भावना चाही, जाहिसँ एक-दोसराक पंजी-लेख पूर्ण भऽ सकय।
6. जे व्यक्ति बिना सिद्धान्त करौने विवाह – संबंध स्थापित करैत छथि, ओहिसँ संबंधित वर एवं कन्या चाण्डालक संग-संग ओहिमे उत्पन्न संतान 'वर्णसंकर' भऽ सकैछ।
7. सिद्धान्त लिखयबाक समय कन्या एवं वर दुनू पक्षक लोककेँ रहब आवश्यक।
8. कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयमे पंजीक पढ़ाई पुनः शुरू हेबाक चाही।
9. पंजीकारलोकनिकेँ उचित आदर-सम्मान भेटबाक चाही।

●

अरिपनक शास्त्रीय सन्दर्भ

श्रीमित्रनाथझा

धर्म, दर्शन ओ संस्कृतिक त्रिवेणीमे निष्णात मिथिलाक समग्र सुषमाक मनोहारी अवलोकन तावत् धरि सम्भव नाहि यावत् एहि क्षेत्रक चित्रकलामे सन्निहितगूढ़ातिगूढ़ विषयक सम्यक् अवगाहन नहि कयल जाय। विश्वक प्रायः प्रत्येक भू-भाग अपन माटि-पानिक नैसर्गिक शोभा कैं उत्तरोत्तर उन्मत्त करबामे संलग्न रहैछ परन्तु, जनक ओ याज्ञवल्क्यक तपोभूमि ई 'मिथिला' निश्चित रूपसँ अपना जड़ि कैं सुदृढ़तर बनयबाक लेल जाहि प्रकारक अनुकरणीय प्रयास करैत रहलीह अछि, ओ विश्वक समग्र संस्कृतिक लेल एकटा अद्भुत आदर्श अछि।

आर्यावर्तक एहि विशाल भूखण्ड पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रमे भाँति-भाँतिक कला-शैलीक उद्भव ओ विकास भेल, किन्तु 'मिथिलाक चित्रकला' अपन किछु वैशिष्ट्यक कारणें आइ समस्त विश्वक कलामर्मज्ञक लेल आकर्षणक केन्द्रविन्दु बनि गेल अछि। कोनो प्रकारक कला शैलीक उद्भव ओ विकासक मूलमे ओहि क्षेत्रक सामाजिक, आर्थिक ओ आध्यात्मिक पृष्ठभूमिक महत्वपूर्ण योगदान रहैछ जगज्जननी जानकीक जन्मस्थली ई 'मिथिला' नाना प्रकारक ऐतिहासिक एवं भौगोलिक झंझावातक भीषण प्रहार सहियोकऽ आई धरि अपन कला ओ संस्कृतिकैं विकासमार्ग पर अग्रसर करैत रहलीह अछि। एहि क्षेत्रक प्रायः समस्त कलाकृतिक अवलोकनसँ स्पष्ट होइछ जे एकर मूलमे एक प्रकारक भावनात्मक उद्रेक अछि जे अनुभूत अथवा अवलोकित अनुभवकैं स्वरूप देबाक सफल प्रयास थिक।

प्राचीन भारतीय संस्कृति ओ सभ्यताकैं आइ धरि अक्षुण्ण रखबामे भारतक विभिन्न लोककलाक जे भूमिका रहलैक अछि, ताहिसँ समस्त सुधीजन सुपरिचित छथि, एतबा विश्वास करबामे कोनो व्यवधान नहि। एहि विशाल देशक आञ्चलिक लोककलामे चित्रकलाक विशेष महत्त्व रहलैक अछि। कतिपय अस्पृष्ट कल्पना, अपरिचित आह्लाद् ओ अज्ञात कौशल सम्पन्न आंगुरक माध्यमे पृथ्वी, देवाल तथा प्रकृतिक अन्य साधन पर उतरि कऽ रंग एवं रेखाक मनमोहक अप्सरागण केवल घरक प्राङ्गण, देहरि तथा कोबरे घरमे नहि, अपितु बाह्य प्रकृतिक आँगनमे कतेको युगसँ नर्त्तन करैत रहलीह अछि।

आर्यावर्त्तक विभिन्न आञ्चलिक लोककलामे मिथिलाक लोककला, विशेष रूपें एहि क्षेत्रक लोकचित्रकला अपन किछु मौलिक विलक्षणातक कारणें आई अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ईर्ष्य ख्याति अर्जित कऽ कयने अछि, यद्यपि मिथिला चित्रकला अपन रूप, रंग, आकार, तथ्य ओ अन्यान्य शैलीगत विशेषताक कारणें अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर अपन कीर्ति वैजयन्ती गत तीन दशकसँ फहरा रहल अछि, परन्तु प्रस्तुत निबन्धमे एहि लोक चित्रकलाक शास्त्रीय पक्ष पर सम्यक् विचार प्रस्तुत करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

प्राचीन भारतीय ऋषिमुनिक विलक्षण प्रतिभा एवं हस्तपटुताक परिचालक, याज्ञिक युगसँ एखन धरि निरन्तर वर्त्तमान ऋग्वेदोक्त रेखाकृति मात्र भारतवर्षहिक लेल नहि, अपितु समस्त विश्वक सारस्वत समाजक लेल गम्भीर चिन्तनक विषय बनल रहल अछि। वैदिक युगसँ एखन धरि यज्ञक वेदी एवं कर्मकाण्ड-प्रधान प्रक्रियामे प्रकारान्तरसँ जाहि रेखाचित्र सभक प्रयोग होइत आयल अछि, ओकरहि मूलमे कोनो-ने-कोनो ठाम 'मिथिला चित्रकला'क उत्स अन्तर्गर्भित अछि। मिथिलाक लोकचित्रकला उपर्युक्त वैदिक रेखाकृतिक आधार पर कालान्तरसँ शक्तिपरक आगमशास्त्रक अनुगत, सम्मत ओ संवर्द्धित रूप थिक। मिथिलाक जनजीवनमे व्याप्त एक-एकटा शुभ अथवा अशुभ अवसरक लेल पृथक्-पृथक् रेखाकृति एवं चित्र-निर्माणक समृद्ध परम्परा एखनहु अपना ओजकैं जोगाकऽ रखने अछि।

महर्षि जनक एवं याज्ञवल्क्यक कर्मभूमि ई मिथिला कतेको युगसँ विद्या ओ संस्कृतिक मुख्य केन्द्र रहलअछि। अनेको सहस्राब्द धरि एहि भूभागमे संस्कृति एवं कलाक निरन्तर विकास होयबाक कारणें एहिठामक एक-एक कण

कला एवं संस्कृतिक संवाहक बनि गेल अछि। एहि क्षेत्रक लोकचित्रकलामे व्यवहृत बिन्दु, रेखा, मण्डल ओ चक्रादिमे आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक अवधारणाक विशाल भण्डार सुरक्षित आछि। परम्परागत मिथिलाक नारीक मस्तिष्क सँ प्रसूत युग-युगान्तरसँ सुरक्षित ई 'मिथिला लोकचित्रकला' मात्र सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिके धरोहर नहि थिक, अपितु काल एवं स्थान-भेदसँ एहि कलाक द्वारा राजनीतिक एवं वैज्ञानिक तथ्यक दिग्दर्शन सेहो होइत रहल अछि।

आजुक एहि औद्योगिक युगमे मानवजीवनक तीव्रधारामे प्रतिपल सम्भावित परिवर्त्तनक कारणेँ केवल मिथिले मे नहि, समस्त भारतक विशाल ओ समृद्ध कला-परम्पराक क्षितिज पर विनाशकारी मेघ सदिखन गर्जना कऽ रहल अछि। परिवर्त्तनक जे स्वरूप एखन दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि, ताहिसँ बुझना जाइछ जे एहन ने परिस्थिति उत्पन्न भऽ जाय, जाहिसँ एहि क्षेत्रक ई विशिष्ट कला-परम्परा सदा-सर्वदाक लेल लुप्त भऽ जाय।

विश्वक प्रायः कोनो आञ्चलिक लोककलाक एहन सुव्यवस्थित ओ सुदीर्घ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहि रहलैक अछि जेहन मिथिला लोकचित्रकलाक विशाल शास्त्रीय परम्परा देखबामे अबैछ। वैदिक साहित्य एवं इतिहास-पुराणमे वर्णित चौंसठि कलामे 'आलेपन' अथवा ''आलम्पन'कैँ सेहो कलाक संज्ञा देल गेल अछि। आर्ष युगक इएह 'आलेपन' वा 'आलिम्पन' मिथिलामे 'अरिपन' तथा बंगालमे 'अइपन'क नामसँ प्रख्यात अछि। मिथिलाक अरिपन-कलाकैँ विश्वक कलामर्मज्ञलोकनि उन्नत कलाक श्रेणीमे रखैत छथि।

प्राचीन गृह्यसूत्र एवं अन्यान्य शास्त्रीय निबन्धमे कतिपय स्थल पर 'मण्डल' शब्दक जे प्रयोग भेल अछि, ओकर संबंध कोनो-ने-कोनो रूपेँ मिथिलामे व्यवहृत 'अरिपन'सँ छैक। कर्मकाण्डक शुभ कर्म मे प्रयुक्त 'सर्वतोभद्र', 'स्वस्तिक', 'अष्टदल', 'षोडशदल' आदि रेखाकृतिके देखलासँ स्पष्ट बुझना जाइछ जे ई सभटा आकृति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ मिथिलामे व्यवहृत 'अरिपन'क भेदोपभेद मात्र थिक। सर्वतोभद्र स्वस्तिकक निर्माणक परम्परा तँ वैदिक युगक कर्मकाण्डप्रधान यज्ञादि क्रियासँ प्रशस्त आछि।

पुराण-साहित्यमे यत्र-तत्र एहि प्रकारक रेखाकृतिक विस्तृत चर्चा कयल गेल अछि। उपर्युक्त आकृतिक प्रसङ्गमे 'ब्रहम पुराण'क अधोलिखित उद्धरण ध्यातव्य अछि –

''विवाहोत्सवयज्ञेषु प्रतिष्ठादिषु कर्मसु।
निर्विघ्नार्थं मुनिश्रेष्ठ तथोद्वेगाद्‌भुतेषु च।
वासुदेवकथाभिश्च स्तोत्रैरन्यैश्च वैष्णवैः।
सुभाषितैरिन्द्रजालैर्भूमिशोभाभिरेव च।।''

उपर्युक्त श्लोकमे 'भूमिशोभा' शब्दक जे प्रयोग कयल गेल अछि, ओहिसँ 'अरिपन' अथवा 'आलेपनक' ग्रहण सहज रूपेँ कयल जा सकैछ।

सुप्रसिद्ध कर्मकाण्डवेत्ता आचार्य भट्टगोपीनाथ अपन बहुचर्चित पुस्तक 'संस्काररत्नमाला'मे 'अरिपन'सँ सम्बद्ध अपन मन्तव्य निम्न रूपेँ व्यक्त करैत छथि –

''लग्नाहे मातृकाः पूज्याः पूज्या गौरी हरान्विता।
पीठे वै तदलाभे तु सुश्लक्ष्णे तण्डुलान्विते।
पङ्कजं कारयित्वा तु तत्र गौरीहरौ यजेत्।।''

एहि श्लोकक दूटा पद – 'सुश्लक्ष्ण' ओ 'तण्डुलान्वित' स्पष्टरूपेँ अरबा चाउरकैँ पानिमे भिजाकैँ तैयार कयल गेल 'पिठार' दिस संकेत करैछ।

'भविष्योत्तरपुराण'मे एहि प्रसङ्गक सूक्ष्म व्याख्या कयल गेल अछि –

''मण्डलञ्च ततः कृत्वा सर्वतोभद्रमेव च।
व्रतोपनयने चूडे शान्तिरेवमुदाहृता।
विवाहादौ लिखेन्नित्यं तिलकं नाम मण्डलम्।''

एहि श्लोकमे प्रयुक्त 'मण्डल' ओ 'सर्वतोभद्र' स्पष्टरूपें 'अरिपन' दिस संकेत करैछ। एतबे नहि, अनेकानेक एहन शास्त्रीय उद्धरण भेटैछ जे मिथिलाक लोकचित्रकलाक सम्पोषण करैछ। मिथिलामे प्रचलित 'हरिताली' व्रतोद्यापनक प्रसङ्ग शास्त्रीय उद्धरणमे स्पष्टरूपें कहल गेल अछि –

''मण्डलेषु समस्तेषु सान्निध्यमुपकल्पयन्।
कारयेद्विधिवद्देवीं मण्डलस्य च पूजनम्।।''

'कृष्णाष्टमी व्रतोद्यापन'मे एहि सम्बन्धमे एकटा उद्धरण एही प्रकारक भेटैत अछि –

''गोचर्ममात्रं संलिप्य मध्ये मण्डलमाचरेत्।
मण्डले स्थापयेत्कुम्भं ताम्रं वा मृण्मयं शुचिम्।।''

तात्पर्य ई जे गोचर्म-परिमित भूमिकेँ नीपिकेँ ओकरा मध्यमे मण्डल-अरिपनक निर्माण कऽ ताहि पर तामक (तमघैल) अथवा माटिक नव घटक (घैल) स्थापना करबाक चाही।

विवाहादि शुभ अवसर पर मण्डल आदिक निर्माणक चर्चा विवाह पद्धति एवं वर्षकृत्य पद्धति सभमे विस्तृत रूपें कयल गेल आछि, जाहिमे किछु महत्त्वपूर्ण उद्धरण निम्नांकित अछि –

''संस्थाप्य गणपं गौरीं काञ्चनीं काञ्चने गजे।
कृत्वोपवासनियमं गजं गौरीञ्च पूजयेत।।''
''वर्त्तुलं भास्करं विद्यादर्द्धचन्द्रं निशाकरम्।।''
''मण्डले मृण्मये कुम्भे त्रिशूले खड्ग एव च।
तथा चित्रपटे वापि नृमुण्डे वह्निमण्डले।।''आदि।

स्वनामधन्य महामहोपाध्याय चण्डेश्वर अपन प्रख्यात ग्रन्थ 'कृत्यरत्नाकर'मे कहैत छथि –

''पूजयेन्मङ्गलां तत्र मण्डले विधिवत्सदा।''

वीरमित्र मिश्र अपन 'पूजाप्रकाश'मे लिखैत छथि –

''पद्ममष्टदलं तत्र कर्णिका केसरोज्ज्वलम्।
उभाभ्यां वेदतन्त्राभ्यां मध्ये तूभयसिद्धये।।''

म०म० गोविन्दठाकुर बहुचर्चित ग्रन्थ 'पूजाप्रदीप'मे लिखैत छथि –

''मन्त्राधारमाश्रित्यैव पूजा विहिता।''

एतबे नहि, देवीतन्त्रादिमे सेहो एहि प्रसङ्ग विस्तृत उल्लेख भेल अछि –

''यः करोति नरो भक्त्या चन्द्राकारन्तु मण्डलम्।
चण्डिकायाः पुरो राजन् चण्डिकायाश्च मन्दिरे।।
स दिव्यं यानमारूढ़े रमते वैष्णवे पुरे।

पद्माकृतिं तु यः कुर्यान्मण्डलञ्चण्डिकापुरे।।"

पुनश्च–

"शक्रादिमथ वज्रादिं लिखेद्विन्दुगतापि वा।
मुक्ताफलप्रबालोत्था पद्मरागकृतोरगा।।
सितकुङ्कुमरागैर्वा नीलैर्मरकतैरपि।
शालिपिष्टकचूर्णैर्वा यवगोधूमजाऽपि वा।।"

एहि श्लोक मे 'शालिपिष्टकचूर्ण' तथा 'यवगोधू मजा'–ई दूनू पद 'पिठार' दिस स्पष्ट सङ्केत करैछ।

'मेरुततन्त्र'क 'वशीकरण' प्रकरण मे स्पष्ट उल्लेख अछि–

"तण्डुलोद्भवपिष्टेन विद्यार्थां तु सहस्त्रकम्।"

महामहोपाध्याय हेमाद्रि अपन सुविख्यात ग्रन्थ 'हेमाद्रिनिबन्ध' व 'कार्त्तिकसंक्रान्तिव्रत' प्रकरण मे लिखैत छथि–

"संक्रान्तिवासरं प्राप्य रविबिम्बं लिखेद्भुवि।
तस्य मध्ये स्थितं देवं पूजयेत्सर्वमन्त्रतः।।
करोति स्वस्तिकादीनि तस्य पुण्यं निशामय।
यावत्यः कर्णिका भूमौ लिप्ता रविकुलोद्भव।।"

एहि श्लोक मे भूमि पर सूर्यक आकृति बनयबाक प्रसङ्गमे स्पष्ट उल्लेख अछि।

संस्कृत साहित्यक विश्वविश्रुत महाकाव्य 'नैषधीयचरितम्' मे स्वनामधन्य महाकवि श्रीहर्ष एकठाम कहैत छथि–

"धृतलाञ्छनगोमयाञ्चनं विधुमालेपनपाण्डरं विधिः।
भ्रमयत्युचितं विदर्भजाऽऽनननीराजन वर्द्धमानकम्।।"

एहि श्लोक में प्रयुक्त 'आलेपन' शब्द स्पष्ट रूपें अरिपनक पर्याय थिक। प्रस्तुत श्लोकक 'नारायणी' टीका मे पण्डित नारायण स्पष्ट लिखैत छथि–

"आलेपनम् = 'अईपण' इति लोके प्रसिद्धम्।"

हिन्दू विवाह पद्धति मे प्रायः प्रत्येक वर्गमे प्रकारान्तरसँ 'सप्तपदी'क प्रथा कोनो-ने-कोनो रूपमे एखनहु प्रचलित अछि। विवाहक सप्तपदीक्रमणक प्रसङ्गमे गृह्यसूत्रकारलोकनि तथा हुनक भाष्यकारलोकनि जाहिमे कर्क, हलायुध, हरिहर, महीधर आदि विद्वान प्रमुख छथि, अनेको ठाम 'आलेपन' अर्थात् 'अरिपन' शब्दक प्रयोग कऽ ओकरा द्वारा सप्तपदीक्रमणक लेल सातटा गृहक निर्माण करबाक उल्लेख अनेकशः कएलैन्हि अछि।

आइसँ लगभग छः सय वर्ष पूर्व कविकुल कोकिल महामहोपाध्याय विद्यापति ठाकुर लिखने छथि–

"लता तरुअर मण्डप जीति। निरमल ससधर धबलए भीति।।
हरि जब आओब गोकुलपूर। घरे-घरे नगरे बाजय तूर।।
अलिपन देओब मोतिमहार। मङ्गल कलस करब कुचहार।।"

एहि ठाम ध्यातव्य थिक जे विद्यापतिक समय तक 'आलेपन' व 'आलिम्पन' मैथिली भाषामे 'अलिपन'व

रूपसे व्यवहृत छल। कालान्तरमे वैह 'अलिपन' शनैः-शनैः 'अरिपन', 'अड़िपन', 'ऐपन' आदि रूपें प्रान्तभेदसँ व्यवहृत होमऽ लागल।

'शब्दार्थचिन्तामणि', 'शब्दकल्पद्रुम' आदि अभिधानग्रन्थमे एहि 'अरिपन' शब्दक व्याख्या एहिं प्रकारें देखबा मे अबैछ –

''तण्डुलचूर्णमिश्रितोदकेन मङ्गलार्थं दीयमान आलिम्पने।''
तण्डुलादिचूर्ण मिश्रित जलेन गृहादौ चित्रकार लेपनभेदौ।''

पुण्यश्लोक गदाधर 'पारस्करगृह्यसूत्र'क 'श्राद्धनवकण्डिका'मे लिखैत छथि –

''मण्डलानि च कार्याणि नैवारैश्चूर्णकैः शुभैः।
शालिपिष्टकचूर्णैव यवगोधूमजैश्च वा।।''

एहि उद्धरणमे 'मण्डल', 'शालिपिष्टकचूर्ण' तथा 'यवगोधूमजा' – ई तीनू पद मिथिलामे प्रचलित 'अरिपन' दिस स्पष्ट सङ्केत करैछ।

उपर्युक्त शास्त्रीय उद्धरण सभसँ सुस्पष्ट अछि जे 'मिथिलाक लोकचित्रकला' भारतवर्षक आञ्चलिक लोककलाक एहन सुव्यवस्थित रूप थिक जकर एक-एक विन्दु ओ रेखाक समर्थन शास्त्रोक्त वचनसँ सम्भव होइत अछि। विश्वक प्रायः अन्य कोनो कला-शैलीकेँ ई गौरव प्राप्त नहि।

मैथिली लोकगीतक सामाजिक भूमिका

प्रो० हरेकृष्णझा'हरि'

'लोक' एकटा व्यापक शब्द अछि। ऋग्वेदमे 'लोक' शब्दक प्रयोग दू गोट अर्थ – जन तथा स्थान लेल भेल अछिः—

'नाभ्या आसीदन्तरिक्षग्वं शीर्ष्णौ द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्।।'

जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मणक अनुसारेँ ई लोक अनेक रूपमे परिव्याप्त अछि – 'बहु व्याहितो वा अयं बहुशो लोकः।'

अँगरेजीक' फोक' शब्द 'लोक'क पर्याय अछि। वस्तुतः 'लोक'क अर्थ जन समुदाय अछि, जकर विस्तार समस्त पृथ्वी पर छैक। एहि 'लोक' शब्दमे गीत जोड़ि 'लोकगीत' समस्त पद बनल अछि।

लोकगीत ग्राम्य संस्कृतिसँ स्वतः उद्भूत ओ स्रोतस्विनी थीक, जकर शीतल धारासँ नहि केवल ग्रामीण समाज आप्लावित रहैत अछि, अपितु ओहिसँ लोकचेतनाक सुमधुर वाणी सेहो मुखरित होइत अछि। अस्तु, जनसमुदाय लोकगीतक तनुक तन्तुमे हृदयक विविध भाव-मुक्ताकेँ अनुस्यूत कऽ सामाजिक जीवनक उल्लास ओ विषादक क्षणकेँ आत्मसात् करबाक महत् अनुष्ठान करैत अछि।

लोकगीत लोकसंस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत अछि आ ओकर सामाजिक भूमिका सेहो अक्षुण्ण अछि। ओहिमे लोकचेतनाक विस्तृत विवृत्ति भेटैछ। मैथिलीमे लोकगीतक एकटा सुदीर्घ परम्परा रहल अछि, जाहिमे मिथिलाक संस्कृति अपन पूर्ण जीवंतताक संग चित्रित होइत रहल अछि। मैथिली लोकगीतमे विभिन्न सामाजिक आयाम विस्तृत, सजीव एवं स्वाभाविक रूपमे चित्रित भेल अछि।

समाजमे विभिन्न प्रकारक सम्बन्ध पाओल जाइछ। समाजक अपन परम्परा होइत छैक, अपन संस्कार ओ लोक विश्वास होइत छैक। रीति-रिवाज, खानपान, रहन-सहन, पावनि-तिहार एवं अन्य क्रियाकलापक सामाजिक संरचना एवं पारस्परिक सौहार्दमे महत्त्वपूर्ण योगदान होइत छैक। सामान्य जन सामाजिक स्तरभेदकेँ पाटबाक हेतु लोकगीतक माध्यमसँ अपन मनोभावकेँ सहज अभिव्यक्ति प्रदान करैत अछि।

गार्हस्थ्य जीवनः

पारिवारिक जीवनमे पति-पत्नी, सासु-पुतोहू, ननदि-भाउजि, देओर-भाउजि, माय-बेटी, बाप-बेटी, भाय-बहिन आदि सम्बन्ध होइत अछि आ ओहि सम्बन्ध सभमे कटुता ओ मधुरता दुनू दृष्टिगोचर होइत अछि। एक दिस जतऽ सासु-पुतोहु ओ ननदि-भाउजिक सम्बन्धमे कटुताक समावेश होइछ, ओतय दोसर दिस पति-पत्नी, भाय-बहिन, माय-बेटी एवं बाप-बेटीक सम्बन्धमे मधुरता परिलक्षित होइत अछि। मैथिलीक लोकगीतमे सेहो एहि सम्बन्धक व्यापक एवं स्वाभाविक चित्रण भेल अछि।

बेटाक जन्म, मुण्डन एवं उपनयनक अवसर पर कोकिलकंठी ललनालोकनिक द्वारा गाओल गीत– 'सोहर' ओ 'खेलौना'मे विभिन्न सम्बन्धक सुन्दर व्यंजना भेटैछ। एतऽ ननदि-भाउजिक दृष्टान्त द्रष्टव्य अछि। ननदि भतीजाक जन्मक समाचार सुनि उल्लासपूर्वक वस्त्राभूषण लऽ नैहर अबैत छथिः—

'भैया घरमे बेटा भेलनि बधैया। मांगऽ अयली हो लाल।
सोना के हम मट्ठा अनलौं रूपा के हम कड़ा हो लाल।
रेशमी के हम अंगा अनलौं फुलकर जड़ी टोपी हो लाल।'

परञ्च ननदिक अयलासँ भाउजिकेँ प्रसन्नता नहि होइत छनि, ओ ओकरा उपेक्षा आ अनादरक दृष्टिसँ देखैत

छथिः

'भानस कऽकऽ भौजी अयली खादी साड़ी पहिरेबनि हो लाल
सयक बदला पचास लऽकऽ जेती मूड़ो मे डाँड़ लगेबनि हो लाल
कनिते घर ननदि जेती हो लाल।'

एतबे नहि, जखन बेटाक जन्म पर विभिन्न सम्बन्धीलोकनिकेँ निमंत्रित करबाक विचार पति-पत्नी करैत छथि, तँ भाउजि दिससँ ननदिकेँ छोड़ि आन सम्बन्धीलोकनिकेँ नोतबाक बात स्पष्ट रूपेँ कहल जाइत अछि, किएक तँ भाउजिक दृष्टिमे ननदि घरकेँ लूटऽ अबैत छथिः—

'दर दियाद पिया नोतब परिजन नोतब रे
ललनारे पिया हे अपन बहिनि नहि नोतब
घर-बाहर लूटति रे।' अथवा
'आँगाँ आगाँ आओत सासुर लोक तखन नैहर लोक रे
ललना रे एक नहि औती ननदिया कि जनि सँ रूसल रे।'

सासु-पुतोहु ओ ननदि-भाउजिक अप्रिय सम्बन्धक बहुत सुन्दर चित्रण एहि सोहरमे देखल जा सकैछः

'बारह बरख के उमरिया कि तेरहम चढल रे
सासु मोरा कहय बँझिनिया कि घरसँ निकालय रे
सासु मोरा मारय ठुनका कि ननदि गरियाबय रे
परक घरके गोतिनियाँ कि बँझिनिया नाम राखय रे।'

पति-पत्नीक मधुर सम्बन्धक मनोहर अभिव्यक्ति मैथिली लोकगीत सभमे अनेक रूपमे भेल अछि। पति परदेशमे छथि। पतिक वियोगमे पत्नीक लेल एक क्षण जीवित रहब असंभव भऽ जाइत छनि। ओ सोना सन अपन पुत्रकेँ छोड़ि सकैत छथि परञ्च पतिकेँ नहिः—

'बाट रे बटोहिया कि तोही मोरा भैया कि हितबन रे
ललना रे कहबनि पियाके समाद कि धनि नहि जीबति रे।'
'सोन सन पुत्र हम तेजब वनखण्ड सेवब रे
ललनारे कोइली कुहुक जकाँ कुहुकब पिया कोना तेजब रे।'

माय-बाप अपन कन्याक लालन-पालन बड़ यत्नसँ करैत छथि। परञ्च जखने ओ पैघ होइत अछि तखने माय-बापक घरकेँ सून कऽ सासुर चलि जाइत अछि। बेटीक विदाइक अवसर पर माय-बापक वात्सल्य-प्रेम अजस्त्र अश्रुधारामे प्रवाहित होमऽ लगैत अछि। माय-बेटी ओ पिता-पुत्रीक प्रिय सम्बन्ध समदाउनिक एहि पंक्ति सभमे मार्मिकताक संग व्यक्त भेल अछिः—

'आम बिन सून भेल आमक घोदबा, कोइली बिन सून भेल डारि
धिया बिन सून भेल बाबा के हबेलिया, धिया चललि ससुरारि।' अथवा
ओलतिक छाहरि जकाँ पोसलहुँ हे धिया, मधुर जकाँ राखल जोगाय
सेहो धिया मोरा सासुर जैतीह, सून भवन कयने जाय।

भाय-बहिनक सम्बन्धक निर्मलता ओ पावनताक साम्य संसारक कोनो अन्य सम्बन्धसँ संभव नहि अछि। भाय-बहिनक परस्पर प्रेम स्वार्थक सिद्धिक हेतु नहि होइछ, अपितु निःस्वार्थ होइत अछि। जतऽ एक दिस बहिन भायक

मंगल-कामना करैत अछि, ओतऽ दोसर दिस भाय बहिनक प्रति स्नेह-सिंचन करैत अछि। ननदिक आगमन पर भाउजि द्वारा ओकरा शीघ्र विदा करबाक तत्परता देखाओल जाइत अछि, परञ्च भाय कोनो बहाना बनाकऽ बहिनकेँ रोकि राखऽ चाहैत छथिः

साड़ी मड़बड़िए घरमे साया दरजीबे घरमे
गंगा आयल अछि बाढ़ि बहिन कोना जेती हे,

परञ्च भाउजि एहि बात केँ मानक हेतु तैयार नहि छथिः—

'साया हम अपने देबनि साड़ी हम अपने देबनि
गंगामे लागल छै जहाज बहिन भने जेती हे।

एहि पर बहिन निस्पृह भाव सँ कहैत अछिः—

नहि हम साड़ी लेब नहि हम नकलेस लेब
बौआसँ दीदी कहबेबै तखने हम जेबै।'

भाय-बहिनक नैसर्गिक सौहार्दपूर्ण सम्बन्धक मनोरम चित्रण 'सामा-चकेबा'क गीतमे विस्तारसँ भेल अछि। ने भाय बहिनकेँ विपन्न देखऽ चाहैत छथि आ ने बहिन भायसँ कोनो वस्तुक याचनाकऽ अनावश्यक भार देबऽ चाहैत छथि। हुनक हार्दिक इच्छा छनि जे हुनक्र भायक सतत समृद्धि होइत रहनिः—

'जुनि कानू जुनि खीजू फल्लों बहिनो हे हमार
बाब्रा के सम्पतिया हे बहिनो आधा देबऽ हे बाँटि
बाबा के सम्पत्तिया हो भैया तोरो बढ़ौ हे हजार
हम दूरदेशनी हो भैया मोटरिया केर हे आस।'

यैह कारण थिक जे ओ निःस्पृह बहिन भाउजिक मना कयलो पर भायक उल्लासक निमित्त नैहर आबि सामा-चकेबा खेलयबाक लोभक संवरण नहि कऽ पबैत अछि। ओ अधिकारक संग कहैत अछिः—

'सामा खेलय गेलहुँ भाइ आँगन हे
आहे भौजी लेल ललुआय छोड़ू ननदो आँगन हे।
जनु लुलुआबी भौजी हे
आहे, जाबे रहतै भाय बापक राज ताबे हम आयब हे।'

मैथिली लोकगीतमे देओर-भाउजिक सम्बन्ध हास-परिहासपूर्ण अछि। कतहु भाउजि देयोरकेँ नादान कहैत अछि, कतहु ओ भाय ओ भाउजिक बीच दूतक काज करैत अछि, तँ कतहु भाउजि द्वारा उपहासक पात्र बनाओल जाइत अछि। 'सोहर' ओ 'लगनी'मे एहि प्रकारक सम्बन्धक सुन्दर व्यंजना भेल अछि। एहिठाम लगनीक एकटा बानगी देखल जा सकैछः—

'नहि हम खोलब आहे बजरी केबड़िया अँचरे सुतल नंदलाल रे बिरोगिया
हमहूँ तँ छलहुँ धनि देश रे विदेशवा ककर जनमल नंदलाल रे बिरोगिया
घरेमे छलै बालम छोटका दिअरबा हुनके जनमल नंदलाल रे बिरोगिया।'

सामाजिक संस्कार : संस्कार समाजक प्राण अछि। संस्कारक अभावमे सामाजिकक अधःपतन भऽ जाइत अछि। कहल गेल अछिः 'संस्काराभावे गुरुत्वात् पतनम्।' मनुस्मृतिमे उल्लिखित अछि— 'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज

उच्यते।' तात्पर्य ई जे संस्कार समाजक आडम्बर नहि, ओकर अनिवार्य अंग थिक।

भारतीय धर्मशास्त्रमे जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त सोलह संस्कारक विधान कयल गेल अछि। एहिमे जन्म, मुण्डन, उपनयन, विवाहादि मुख्य अछि। मैथिली लोकगीतमे विभिन्न संस्कारसँ सम्बन्धित अनेकशः गीत प्रचलित अछि, जाहि मे सामाजिक जीवनक विभिन्न स्थितिक मनोरम झाँकी भैटैछ।

सामाजिक संस्कारकेँ निर्विघ्न एवं सुचारु-सम्पन्न करयबाक हेतु देवी-देवतासँ मंगल-कामना, पूर्व पुरुषक आशीर्वाद ओ समाजक स्त्री-पुरुषक सहयोगक अपेक्षा होइत अछि। मूड़न ओ उपनयनक अवसर पर हिनकालोकनिकेँ निमंत्रित करबाक विशेष परम्परा रहल अछि। मैथिली लोकगीतमे एहि परम्पराक सेहो निर्वाह भेल अछिः—

'बट्टा भरि चानन रगड़ल पाने पत्र लिखल हे
ताहि पान नोतब गोसाउनि जे नित पूजि थिकि हे
ताहि पान नोतब पितर लोक जे नित आशीष देथि हे
ताहि पान नोतब कुटुम्बलोक जनिसँ सोहावन लागु हे
ताहि पान नोतब ऐह्ब लोक जनिसँ मंगल हैत हे।'

विवाह योग्य बेटीक दाम्पत्य-सूत्र बंधन एकगोट महत्त्वपूर्ण सामाजिक दायित्व अछि आ एहि दायित्वक बोध सर्वप्रथम मायक द्वारा कराओल जाइछ। कुमार, सम्मरि, बारहमासा आदि मैथिली लोकगीतमे एहि दायित्वबोधक मार्मिक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहिठाम तीनूक उदाहरण प्रस्तुत कयल जाइत अछिः—

कुमार :

आइ हे, माइ हे, पर पड़ोसिन बाबा के दियनु जगाइ हे,
जकरहु घर बाबा कन्याकुमारी सेहो कोना सुतल निश्चिन्त हे

सम्मरि :

कर जोड़ि बिनती करवि ऋषिरानी सुनहु ज्ञान की बात यौ। सिया कुमारि कतेक दिन रहती ईनहि उचित थिक बात यौ।

बारहमासा :

बैसाख मैना कहथि ऋषिसँ गौरी कोना रहति कुमारि यौ गौरी जोगवर जोहि आनहु चढ़ल मास बैसाख यौ प्रत्येक मायक यैह अभिलाषा रहैछ जे बेटीसँ सुन्दर ओ सुयोग्य जमाय भेटथि। कोनो कारणवश ओहिमे व्यवधान भेला पर ओ विरोध प्रकट करैत अछि आ ओहन वरसँ विवाह नहि करबाक भाव व्यक्त करैत अछिः

एहन उमा के एहन वर माइ हम नहि करब जमाइ गे माई।
कर मे त्रिशूल ओढ़न बघछाला अंगमे भस्म लगाई गे माई।।
बसहा चढ़ल शिव डमरू बजाबथि पैर फाटल बेमाई गे माई
शशि लिलाट सुन्दर सिर गंगा जटा दहोदिस छिड़ियाइ गे माई।

वस्तुतः अनमेल ओ आर्थिक रूपेँ विपन्न वरकेँ देखि बेटीक भविष्यक चिन्ता करब कोनो सुहृदया मायक हेतु सर्वथा स्वाभाविके अछिः—

'गौरी औरी ककरा पर करती वर भेल तपसी भिखारि गे माई
कनक शिखर पर बसथि एक घर नहि छनि अपन परार गे माई
वारि कुमारी राजदुलारी ऋषि के प्राण अधार गे माई

से गौरी कोना विपति गमौती के मुख करत दुलार गे माई
तेल फुलेल लय केश बान्हथि आर उँगारथि आँग गे माई
से गौरी कोना भसम लोटैती नित उठि कुटती धान गे माइ।'

खान-पान एवं रहन सहन :

प्रायः सभ समाजमे खान-पान एवं रहन-सहनमे किंचित् भिन्नता पाओल जाइत अछि। तात्पर्य ई जे समाज विशेषमे प्रचलित खान-पान ओ रहन-सहनसँ ओहि पर भौगोलिक स्थितिक प्रभाव आ ओकर वैशिष्ट्य प्रकट होइत अछि। भारतीय जन समाज प्रायः शाकाहारी रहल अछि। शाकाहारी भोजनमे दूध ओ दूधसँ बनल पदार्थक विशेष महत्त्व अछि। पूजा-पाठक अवसर पर मिठाइ आ फल अर्पण करबाक परम्परा रहल अछि आ नुनगर पदार्थ वर्जित रहल अछि।

भारतीय समाजमे 'अतिथि देवो भव'क भावना विद्यमान रहल अछि। फलतः लोकगीतमे आतिथ्य-सत्कारक प्रबलता देखि पड़ैत अछि। मैथिली लोकगीतमे सेहो एहि भावनाक व्यापक अभिव्यक्ति भेल अछि। विवाह आदिक अवसर पर सौजन्यक लेल मैथिलानी यत्नपूर्वक एगारह, तेरह सुस्वादु व्यंजन बनाकऽ सँठैत छथि। एकर मनोरम वर्णन 'उचिती' आदि गीतमे भेल अछि। किछु पाँती द्रष्टव्य अछिः

मेही भात जतन भनसीया साँठि कयल भरि थारी जी
राहड़िक दालि बटा भरि उत्तम ताहि देलनि घृत ढारी जी
ओल परोर बड़ी बड़ भटबड़ तरह-तरह तरकारी जी
ऩेबो काटि आद चुरि आनल खटरस सरस सम्हारी जी

एहि पाँतीसँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे खान-पानमे नहि केवल नीक वस्तुक व्यवहार महत्त्व रखैत अछि, अपितु ओहि वस्तुकेँ सुरुचिपूर्ण ढंगसँ साँठि प्रस्तुत करब सेहो एकटा कला अछि।

मिथिलामे तिलकोरक पातकेँ पिठारमे लपेटिकऽ तरब आ अतिथिकेँ खुअयबाक प्रथा रहल अछि। तिलकोरक पातकेँ तरब सेहो एक गोट विशेष कला होइछ। एकर आयुर्वेदीय महत्त्व सेहो अछि। मैथिली लोकगीतमे एकर चर्चा अछि।

'आइ खैयो जेना-तेना काल्हि तरब तिलकोर यौ' अथवा
सखि हे आजु तरब तिलकोर
जे पाहुन कहियो नहि आयल से आयल घर मोर।

व्यंजनक विविधताक एक गोट आर उदाहरण देखल जा सकैछः—

अदौरी तिलौरी दनौरी फुलौरी, मिथिलामे सबसँ प्रसिद्ध कुम्हरौरी
बड़ बड़ीक भरमार यौ, हमरा देखिते बनैए
पाहुन अहाँक ई ताल यो हमरा किछु ने फुरैए।

मैथिली लोकगीतमे बहुतो स्थान पर माछ आ छागरक उल्लेख भेटैत अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिल समाजमे भोजनमे माछ ओ मांसक प्रयोग होइत रहल अछि। गर्भवती स्त्रीकेँ माछ अरुचिकर लगैत छनि जकर उल्लेख 'कुमारक' एहि पंक्तिमे भेल अछि।

'जाहि दिन आहे बाबू तोहे अवतरलह माछ मछरी ने सोहाय हे।
माछ मछरी मनहु न भावय पनमहि राखल परान हे।'

मिथिलामे मूड़न ओ उपनयनक अवसर पर देवीदेवताक आराधनामे छात्रबलिक प्रथा अछि जकर चर्चा एहि

प्रकारेँ भेल अछिः—

छागर आनि हम धूर बान्हल
शोणित पीबै की नाही अथवा :
'छागर चढ़ायब हम धूर बान्हिकऽ' खुशी हेता ब्राह्मण शोणित पीबिकऽ

लोकगीतमे एतेक लोच होइत अछि जे परिस्थितिक अनुसारे ओहिमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि। एकदिस लोकगीतमे जतऽ हमर प्राचीन परम्परा दृष्टिगोचर होइत अछि, ओतहि दोसर दिस नव प्रभाव आ परिवर्तन परिलक्षित होइत अछि। मैथिली लोकगीत सेहो एहि प्रभाव आ परिवर्तनसँ अछूत नहि अछि। सम्प्रति दहेज प्रथाक पराकाष्ठाक कारणेँ सौहार्दक परस्पर अभाव भऽ गेल अछि ओ वर पक्ष द्वारा कन्या पक्षक चतुर्दिक शोषण विवाहक मूल उद्देश्य भऽ गेल अछि। मैथिली लोकगीतक एहि पाँतीमे मैथिल समाजक अधोगतिक एकटा व्यंग्यचित्र देखल जा सकैछः—

सतरह बोतल कोकाकोला सत्तरि पान चिबेलियै
भोजन पर तँ घरबैयाकेँ करची जकाँ लिबेलियै
मात्र अठारह रऽहुक खण्डी मूड़ा संग टपेलियै
चौका-छक्का सँ रसगुल्ला दू सेंचुरी पुरेलियै
x x x
दुइएटा तहदर बिसटकही लहराकऽ देखेलियै
सोलह वर्षक मुन्नीबाइकेँ कोरामे बैसेलियै।'

मिथिलामे पानक विशेष महत्त्व अछि। देवी-देवता, पितर ओ सामान्य लोकक अंततः पानक बिना समुचित सत्कार पूर्ण नहि होइछ। मैथिली लोकगीतमे देवी-देवताकेँ पानक पात पर चाननसँ लिखि आमंत्रित करबाक बात कहल गेल आछि। पितृकर्ममे पान अनिवार्य अछि आ कोनो कार्यप्रयोजनक अवसर पर लोकक स्वागत पानेँसँ कयल जाइत अछि।

रहन – सहन : रहन-सहनक अंतर्गत समाज विशेषमे प्रयुक्त होमऽवाला नर-नारिक परिधान एवं आभूषण तथा अन्य श्रृंगार प्रसाधनक बोध होइत अछि। लोकगीतक माध्यमसँ समाजक पारम्परिक सभ्यताकेँ भावी पीढ़ी दिग्दर्शन करैत अछि। मैथिली लोकगीतमे सेहो एहि ठामक समाजमे प्रचलित वस्त्राभूषण ओ श्रृंगारप्रसाधनक बहुविध उल्लेख भेटैत अछि।

धोती, पाग, दुपट्टा मिथिलाक पुरुष लोकनिक सामान्य परिधान रहल अछि। विवाहक अवसर पर विवाहार्थी वरकेँ वस्त्र बदलबाक क्रममे ललनालोकनि ओकर उल्लेख करैत छथि। जट-जटिनक गीतमे दाम्पत्य नोंकझोंकक बीच साड़ी, आङ्गी, सिंदूर, टिकुली, कंघी, नथिया, हसुली आदि विभिन्न प्रकारक वस्त्राभूषण ओ श्रृंगार प्रसाधनक वर्णन, भेल अछि। परंच सामाजिक स्थितिमे परिवर्तनक क्रममे सामाजिकक रुचिमे जे परिवर्तन भेल अछि ओकर परिचय आधुनिक जट-जटिन गीतमे भेटैत अछि, जतऽ टाटा बाई-बाईक संग साहेबक संग घुमबाक, सिनेमा देखबाक, पिकनिक मनयबाक, ब्यूटी पार्लरमे रूप सजेबाक, पैंट टाइ लगयबाक ओ कैरम खेलयबाक बात कहल गेल अछि। वस्तुतः पहिलुक आ आजुक एहि अंतरकेँ विश्लेषित कऽ समाजक एहि मूल्यसंक्रमणकेँ रेखांकित करबाक नितांत आवश्यकता छैक।

लोकविश्वासः सामाजिक जीवनमे लोकविश्वासक बड़ महत्त्व होइत अछि। लोकजीवन लोकविश्वासेसँ परिचालित होइत अछि। लोकविश्वासमे व्यवधान भेला पर सम्पूर्ण समाजव्यवस्था चरमरा जाइत अछि। यैह कारण थीक जे अनेक सामाजिक परिवर्तनक बादो लोकविश्वासक जड़ि भीतर धरि पैसल अछि।

मैथिली लोकगीतमे लोकविश्वास, लोक-कल्याणक भावनासँ अनुप्राणित अछि। साँझ, नैनाजोगिन, जोग तथा बटसावित्री, मधुश्रावणी, नागपंचमी आदि पर्व-त्यौहारसँ संबंधित गीतमे लोकविश्वासक व्यापक अभिव्यक्ति भेल अछि। साँझमे यदि कोनो बालक वा बालिका कानऽ लगैत अछि, तँ बूझल जाइत अछि जे ओकरा ककरो खराब दृष्टि लागि गेलैक अछि आ कोनो ओझा-भगतसँ भस्म पढ़बा ओकरा लगाओल जाइत छैक। एहि दृष्टिसँ 'साँझ'क ई पाँती सभ देखल जा सकैछ :–

''भरि दिन कृष्ण छलाह नीकहि खेलाइ। साँझ खन कऽ देलनि कननी लगाइ।।
कहाँ गेला नन्द बाबा कहब बुझाइ। कतहुँसँ विभूति लौताह पढ़ाइ।।''

कोनो शुभकार्यक निर्विघ्न समाप्तिक हेतु समाजमे देवी-देवताक मनौती कयल जाइछ। मिथिलामे शुभ कार्यक अवसर पर छागरक बलि देल जाइछ जे लोकविश्वासक अभिन्न अंग थीक। मैथिली लोकगीतक अन्तर्गत 'ब्राह्मण गीत' ओ 'देवीगीत' सब मे एहि भावक वर्णन भेल अछि।

विवाहक अवसर पर 'नैना-योगिन' विधिक अवसर पर जे गीत गाओल जाइत अछि, से वर-कन्याकेँ भावी अनिष्टसँ बचयबाक निमित्त तांत्रिक प्रयोग अछि। उदाहरणार्थ, किछु पाँति उद्धृत कयल जाइत अछिः–

''थिकहुँ बंगालिन, बसी बंगला, सुरपुरसँ अयलहुँ अछि
सुरपुर नदिया नाव बहाओल, अपने तरहथ दही जमाओल
कोठी कान्हा बड़द घुमाओल, चुल्हा पुत्ता सारि उपजाओल
आलरि झालरि काँधे कामर, माथे बीयनि।''

पंचमी ओ मधुश्रावणीक अवसर पर नाग सापक पूजा आ बट सावित्रीमे बड़ गाछक नीचाँ दूध-लाबाक अर्पण स्त्रीलोकनि अपन कल्याणकामनासँ करैत छथि। एहि सभक पाछाँ हुनकालोकनिक लोकविश्वास प्रबल अछि।

आँगनमे कौआक कुचरब आ वियोगिनी ललना द्वारा ओकरा प्रिय आगमनक सूचना बूझब लोक विश्वासक एकटा सबल दृष्टान्त अछि। मैथिली लोकगीतमे ई प्रबल विश्वास एहि रूपेँ व्यक्त भेल अछिः–

''ललना रे काग बचन सुनि नागरि, सगुन बिचारल रे,
बोलु बोलु कागा शुभ बोली जौं हरि आओत रे।।''

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे मैथिली लोकगीतक सामाजिक भूमिका अहम् अछि। हम अपन सांस्कृतिक-धरोहरक सुरक्षा तखने धरि कऽ सकैत छी, जखन धरि मैथिली लोकगीतक ई अनंत अन्तःसलिला अपन मूल रूपमे पूर्ण जीवंतताक संग सतत प्रवाहित होइत रहत।

●

मिथिलामे ज्यौतिष विषयक मान्यता

डॉ० रमणझा

मिथिला प्राचीन कालहिँ विद्याक केन्द्र रहल अछि आ खास कऽ ज्यौतिष एवं धर्मशास्त्र विषयमे तऽ एहिठामक व्यावहारिके निर्णय अकाट्य मानल जयबाक प्रमाण अछि –

धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारतः।

देशक विभिन्न भागसँ विद्वान्‌लोकनि वेद, धर्मशास्त्र, ज्यौतिष, दर्शन, न्याय, व्याकरण इत्यादिक विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु मिथिला अबैत छलाह जकर कतोक प्रमाण अछि। एतऽ केर लोक सदासँ धार्मिक प्रवृत्तिक रहल अछि आ धर्मशास्त्रक निर्णयक हेतु ज्यौतिष अभिन्न अङ्ग थिक। जतेक प्रकारक व्रतक प्रचलन एतऽ अछि से कतहु अन्यत्र भेटब दुर्लभ। एतऽ नाना प्रकारक देवीदेवताक पूजा होइत अछि; यथा – दुर्गापूजा, कालीपूजा, विश्वकर्मापूजा, इन्द्रपूजा, सरस्वतीपूजा, अनन्तपूजा, गणेशपूजा, सत्यनारायणपूजा, रामनवमी, कृष्णाष्टमी आदि। एतदतिरिक्त सूर्य, चन्द्र, नाग इत्यादि दृष्ट देवताक पूजा सेहो कम महत्त्वक नहि अछि। नागपञ्चमी दिन तऽ लोक धानक लाबाकेँ ''खेले खेलेरे सर्प्पा ...... दोहाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीकेँ।'' पढ़ि अपन आलयमे छिटैत अछि, जे नागदेवता ग्रहण करथि। एतबे नहि, नवग्रहक पूजा, वटसावित्री, मधुश्रावणी एवं कतोक एहन पूजाक प्रचलन मिथिलामे अछि तकर ठेकान नहि। ग्रहक नाम पर तऽ लोक सोमवारी, मङ्गलवारी सँ लऽ कऽ रविपर्यन्त व्रत करैत अछि। एतय केर प्रसिद्ध व्रत थिक-शिवरात्रि, नरक निवारण, हरितालिका, हरिवासर, जितिया, रामनवमी, कृष्णाष्टमी, महाष्टमी (दुर्गापूजा) देवोत्थान एकादशी, इत्यादि। आजुक समयमे कठिन व्रत अछि-हरिवासर, जितिया, छठि इत्यादि, कारण जे आब तऽ चन्द्रायण, तारायण (पन्द्रह दिन आ मास दिनक) व्रत कएनिहारक दर्शन दुर्लभ अछि। हँ, दुर्गा पूजामे दस दिन पर्यन्त अन्न-जल त्यागि छाती पर कलश राखि जयन्ती जनमौनिहारक दर्शन समय-समय पर अवश्य होइत रहल अछि।

मिथिलामे रहनिहार विद्वान चाहे धर्मशास्त्र पढ़ने होथि वा व्याकरण, दर्शन पढ़ने होथि वा न्याय, वेद पढ़ने होथि वा साहित्य-ज्यौतिषशास्त्रक ज्ञान हुनका रहिते छनि। यैह कारण थिक जे मिथिलामे रचल गेल साहित्य पर ज्यौतिषक प्रभाव पूर्णरूपेण भेटैत अछि। कारण लेखकक विभिन्न शास्त्रक ज्ञान हुनक साहित्यमे सन्निहित होयब स्वाभाविके अछि।

एतऽ लोक बिनु दिन गुणओने कोनो शुभ कार्य तऽ नहिएँ करैत अछि अपितु सामान्यो यात्रा धरिमे, सामान्यो बुझनिहार लोक दिनक विचार कऽ लैत अछि, यैह कहैत जे – ''नहि किछु जानी तऽ दिग्बल धऽ तानी।'' एहिसँ स्पष्ट अछि जे दिग्बल, दिग्विरोध, दग्धयाम, अर्द्धप्रहरा, तिथि, नक्षत्र इत्यादिक ज्ञान मिथिलाक मूर्खो नर-नारीकेँ रहैत छैक। यैह कारण थिक जे मैथिली काव्यमे ज्यौतिष-ज्ञान भरल-पड़ल अछि।

मैथिलीक हास्य-व्यंग्यसम्राट् स्व० प्रो० हरिमोहनझा तऽ अपन 'खट्टर ककाक तरंग'मे तेना ने ज्यौतिषीजीकेँ खट्टरककासँ भिड़न्त करा दैत छथि जे एक दोसराक मतक खण्डननमे लागि गेलाह। ओ खण्डन-मण्डन ततेक ने रोचक प्रचलित तथा सर्वग्राही अछि जे सामान्यो पाठक आकृष्ट भऽ जाइत अछि। कारण जे एतय तऽ सबकेँ एतबा ज्ञान छैके जे – ''शनौ चन्द्र त्यजेत् पूर्वां ... मेष, सिंह, धनु पूर्बे चन्दा ....., तथा हरति सकल दोषः चन्द्रमा सम्मुखस्थः।'' प्रो० झा उपर्युक्त पुस्तकक 'ज्योतिष' शीर्षकमे खट्टर कका द्वारा पर्याप्त वाद-विवादसँ पाठककेँ आनन्दक संग कतोक गूढ़ तत्त्वक सेहो संकेत दैत छथि।[1] तहिना 'प्रणम्य देवता'क ज्योतिषाचार्य शीर्षकमे दूटा ज्यौतिषीकेँ एक दोसरासँ लड़ाए दैत छथि, जाहिसँ पाठकक मनोरञ्जन तऽ होइतहि छनि संगहि ज्यौतिषक कतोक गुत्थी सेहो सोझरा जाइत अछि।[2]

मैथिलीमे काव्य रचनिहार प्राचीन कालमे तऽ पंडिते (संस्कृतक विद्वान) रहैत छलाह किन्तु आइ बीसमो शताब्दीमे पण्डित द्वारा रचल मैथिली काव्यक अभाव नहि अछि, जाहिमे पर्याप्त ज्यौतिषविद्याक प्रभाव देखबामे अबैत अछि; यथा

– कविशेखर बदरीनाथझाक 'एकावली-परिणय'; कविचूड़ामणि 'मधुप'क 'राधा-विरह'; कविवर सीतारामझाक 'अम्बचरित', प्रो० तन्त्रनाथझाक 'कृष्ण चरित', प्रो० सुरेन्द्रझा 'सुमन क' 'दत्तवती', 'प्रतिपदा', 'उत्तरा इत्यादि।

मिथिलामे ज्यौतिष विद्याक बड़ विशिष्ट महत्त्व अछि कारण जे लोकक़ँ एकर प्रामाणिकता पर विश्वास भऽ गेल छैक। पञ्चाङ्गमे जाहि प्रकारेँ गणना कएल गेल रहैत छैक तहिना फलीभूतो होइत छैक। उदय एवं अस्तक समय, सूर्य-ग्रहण एवं चन्द्र-ग्रहणक समय, दिन, तिथि, नक्षत्र इत्यादिक जे मान छैक तकर प्रामाणिकता पर ककरहु संदेह नहि छैक। मैथिल कवि-लोकनि ज्यौतिष-शास्त्रमे पटु रहलाह अछि आ एहि पर विश्वासो ततेक ने छनि जे ओ अपन काव्यहुमे यथास्थान ओकर समावेश कएने छथि। आधुनिक मैथिली साहित्यक अधिष्ठाता कवीश्वर चन्दाझा श्रीरामचन्द्रक जन्म समयक विशिष्ट ग्रहयोगक जे संकेत दैत छथि से सहज अवलोकनीय थिक –

शुक्ल पक्ष नवमी शुभ कर्क उदित हित।
मध्य दिवस नक्षत्र पुनर्व्वसु अभिजित।।
पञ्चग्रह उच्चस्थ मेषमे दिनकर।
सृष्टि त्रिगुण उतपत्ति शक्तिकर जनिकर।।

कविशेखर बदरीनाथझा अपन एकावली परिणयमे यात्रा समयमे जाहि वस्तु सभकेँ शुभ मानैत छथि तकरहु आधार ज्यौतिषे थिक। अवलोकनीय थिक –

पूर्ण कलश दधि मीन द्विज, गणिका निरखि नरेश।
वनिता-सुत-अनुचरसहित, कएलन्हि भवन प्रवेश ।।[4]

उपर्युक्त पद्य ज्यौतिषशास्त्रक निम्नांकित श्लोकसँ कोना प्रभावित अछि से देखल जाय –

अग्रे धेनुः सवत्सा वृषगजतुरगा दक्षिणावर्त्त वह्निः।
दिव्यस्त्री पूर्ण कुम्भो द्विजवर गणिका पुष्पमाला पताका।।
मत्स्यो मांसं घृतं वा दधि मधु रजतं काञ्चनं शुक्लवर्णं।
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः।।

मिथिलामे बच्चाक जन्म होइतहिँ ओकर टीपनि बनाओल जाइत छैक, जाहि आधार पर जातकक भविष्यक संकेत भैटेत छैक। राजा तुर्वसु सेहो एकवीरक टीपनि बनबाए ओकर फलादेश व्यग्रतापूर्वक सुनलनि। कविशेखरहिक शब्दमे द्रष्टव्य थिक –

शिशु लखि गणना करइत जे,रहलाह राति भरि जगले।
टीपनि बनाए से शुभ फल, दैवज्ञ सुनाओल लगले।।
बुझि सुतक ग्रहस्थिति उत्तम, नृप गणकगणहि परितोषल।
वितरण प्रभावसँ मानू, कल्पद्रुमहुक मद सोखल।।[5]

कविवर सीताराम झा तऽ ज्यौतिषीये छलाह। हुनक 'अम्बचरित' एवं अन्यायो रचनामे ज्यौतिषतत्त्वक प्रधानता अछि। मिथिलावासीक मान्यता छनि जे कोनो प्रकारक विपत्ति ग्रहक कूरता, वक्रता, युति, गति, उच्च, नीच, मार्गी, वक्री, शुभाशुभ दृष्ट, अंशबल इत्यादिक कारणेँ अबैत अछि। पं. सीतारामझा भूकम्पक लक्षण दैत कहैत छथि –

जखन कुगर्भक विकृत वह्नि जल वायु बढ़ै अछि।
रविक राशि पुनि जखन पाँच ग्रह आबि चढ़ै अछि।।

यदि वा रविशशिबिम्ब निकट पृथ्वीक रहै अछि।
भूगर्भस्थ विकार तखन बहराए चहै अछि।।[6] पुनश्च –
ऋतु परिवर्तन समयमे, भूकम्पक अछि लेख।
मकर-मेष-कर्कट-तुला-संक्रमनिकट विशेख।।[7]

मैथिली साहित्यक आधार-स्तम्भ प्रो० सुरेन्द्रझा 'सुमन'क ज्यौतिषशास्त्रमे केहन पहुँच अछि से ककरहुसँ चोराओल नहि अछि। हुनक 'मिथिला-पंचाङ्ग सँ के परिचित नहि छी? स्वाभाविक छैक एहन कविक काव्यमे ज्यौतिष तत्त्वक बाहुल्यक। दत्तवती महाकाव्यक निम्नांकित पंक्ति देखल जाय जाहिमे गुरु कोन प्रकारेँ अन्य शास्त्रहि जकाँ ज्यौतिषक ज्ञान सेहो अपन शिष्यकेँ करबैत छथि –

गणित फलित नक्षत्र राशि दिन लग्न करण तिथि योग।
ग्रह उपग्रहक गति अनुगति ग्रहणहु ज्योतिष उपयोग।।[8]

पुनश्च सुमनजी कहैत छथि जे क्रूर ग्रहक निवारण मात्र शान्तिपाठ नहि थिक, टीपनि मात्र टिपने ग्रह नहि कटैछ, शनैश्चर सन पाप ग्रहक संक्रमण सँ घोर विपत्ति अयबे करत। निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन अप्रासङ्गिक नहि होयत–

विग्रहकेँ ग्रह क्रूर मानि कय दान। शान्तिपाठ करबे की उचित निदान ?।
शनैश्चरक संक्रमण काल विकराल। टीपनि टिपने की टरइछ ग्रह-जाल?।[9]

सुमनजीक लिखल अनेकानेक रचनामे हुनक ज्यौतिषज्ञानक छाप पड़ल अछि। प्रतिपदाक पद्य द्रष्टव्य थिक –

हुनक रेवती प्रिया हन्त ! भदवा धरि बारल एक।
आर्द्रासँ स्वाती धरि अनुगामिनी अहाँक अनेक।।[10]

उपर्युक्त पद्य श्रीसुमनजीक सूक्ष्म एवं संतुलित ज्योतिष ज्ञानक द्योतक थीक कारण जे आर्द्रासेँ स्वाती धरि दसटा नक्षत्र अछि (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा', मघा, पूर्व फल्गुनी, उत्तर फल्गुनी, हस्त, चित्रा, एवं स्वाती) जे स्त्रीसंज्ञक थीक, पुनः विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा एवं मूल नपुंसक आ शेष तेरह गोट पुरुषसंज्ञक। पञ्चाङ्गमे एकटा दैनिक नक्षत्र रहैत अछि आ दोसर लगभग 13 दिन पर बदलैत अछि कारण जे बारह मासमे सत्ताइसटा नक्षत्रक संचार होइत छैक। पंडितलोकनि नक्षत्रक स्त्री पुरुष योग देखि वर्षाक भविष्यवाणी करैत छथि। स्त्री नपुंसक योगमे, पुरुष नपुंसक योगमे तथा पुरुष योगमे वर्षा नहि होइत अछि।

उपर्युक्त पद्यमे श्रीसुमनजी द्वापर केर हलधर (बलराम)क तुलना कलियुगक हलधरसँ करैत कहैत छथि जे हुनका एकटा प्रिया छथिन रेवती आ सेहो 'हन्त' (स्वर्गीया) आ अहाँकेँ' दसटा – आर्द्रासँ स्वाती पर्यन्त। एतऽ ध्यातव्य थिक जे अनुगामिनी शब्दक प्रयोग कतेक सटीक छैक कारण जे श्रीसुमनजी प्रिया कहने छथि तेँ दसोटा स्त्रीसंज्ञक नक्षत्रक नाम लेलनि अछि आ दोसर जे वस्तुतः कृषक हेतु ओहि नक्षत्रक विशेष महत्त्व अछियो।

उत्तरा खण्डकाव्य मध्य सेहो प्रो० सुरेन्द्रझा'सुमन' क्रूर ग्रहक कारण दुर्योग आएब तथा ग्रहक शान्ति आवश्यक बुझैत छथि। द्रष्टव्य थिक –

बुझि पड़इछ किछु तहिना सन दुर्योग। आबि तुलायल एतय क्रूर ग्रह योग।।

x x x

ग्रहक शांति दैवीक उपद्रव हेतु। क्यौ कह, सैन्य सुसज्जित रक्षा सेतु।।[11]

महाकविलोकनि प्रायः अपन काव्यक समाप्ति पर ओकर समाप्ति तिथिक घोषणा करैत छथि जे सामान्य

पाठकक हेतु दुरूह भऽ जाइत अछि कारण जे ओकर अर्थक संगति बैसएबाक हेतु ज्यौतिषक सूत्र 'अंकस्य वामा गतिः' केर अनुपालन करऽ पड़ैत छैक। एतऽ प्रस्तुत अछि प्रो० तन्त्रनाथझाक 'कृष्ण चरित' महाकाव्यक निम्नांकित पद्य –

नग-निधि-वसु-शशि-शक समा, ज्येष्ठ असित अहि जीव।
अरपल ई कृष्णक चरण प्रणत 'मुकुन्द' अतीव।।[12]

उपर्युक्त पद्यमे नग–7, निधि–9, वसु–8, शशि–1, 'अंकस्य वामा गतिः, सँ1897 शाके भऽ जाइत अछि। पुनः ज्येष्ठ असित (कृष्णपक्ष) अहि 13 अर्थात् पञ्चमी तिथि भऽ जाइत अछि।

ज्यौतिषीलोकनि ग्रहक स्थिति, गति, संक्रमण, क्रूरता, बलाबल, शुभाशुभ इत्यादिक आधार पर भविष्यक संकेत दैत छथि, किन्तु एतदितिरिक्त यात्रा, खेती, अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प आदिक लक्षण तथा शकुन-अशकुनक विचार समाजमे होइत अछि जकर मैथिली काव्य पर सेहो प्रभाव देखबामे अबैत अछि। एतऽ हम उद्धृत करैत छी डॉ० भीमनाथझाक 'भूकम्पसँ' पहिने आ पति' शीर्षकक किछु अंशसँ जाहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे 1988 क भूकम्पक आभास हुनका पूर्वहिसँ छलनि। द्रष्टव्य थिक –

फाड़ै छल झुण्ड-झुण्ड कारकौआ कान, कत्ता दिनसँ !
छल कनैत बेर-बेर गाम भरिक श्वान, कत्ता दिनसँ।
निकलि मूस मारय छरपान, कत्ता दिनसँ।
भऽ कऽ बदरंग अरे! उगै छलैचान, कत्ता दिन सँ।[14]

एहितरहें हम सब देखैत छीजे मिथिलामे ज्यौतिष पर लोककें विश्वास छैक, फलीभूतो होइत छैक, लोक एकर अध्ययनो करैत अछि, शास्त्रार्थो करैत अछि तथा विद्वानलोकनि अपन काव्यमे सेहो एकर स्थान दैत छथि। परम्परागत पण्डितवर्गक तऽ कथे कोन जे सामान्यो कोटिक विद्वानक काव्यमे ज्यौतिष तत्त्वक प्रचुर स्थान भेटल अछि जकर अध्ययन कऽ ओकर अर्थक संगति बुझबा हेतु मिथिलाञ्चलक सामान्यो पाठक सक्षम रहैत छथि।

मैथिली काव्य मध्य तऽ छिट-फुट ज्यौतिषक प्रभाव अछिए, मात्र ज्यौतिष विषयेटा पर 'डाकवचन संग्रह' तीन भागमे प्रकाशित अछि जाहिमे ततेक ने सोझ भाषामे ज्यौतिषक सूत्र सभक व्याख्या कएल गेल अछि जे अनपढ़ो लोकक कंठमे ई समाएल अछि। मूर्खो लोकक मुहसँ सुनब –

केरा रोपी सोचि विचारि। शी मी भादो भदवा बारि ।।[15]

एतय 'शी' भेल एकादशी, द्वादशी इत्यादि तथा मी भेल पञ्चमी, सप्तमी इत्यादि। अर्थात् पड़िव, द्वितीया, तृतीया, चौठ आ षष्ठी एतबे तिथिमे केरा रोपी आ ताहूमे भादव मास आ भदवा बारि कऽ। तहिना यात्राक सम्बन्ध मे डाकक वचन सर्वविदित अछि –

रविके पान सोमके दर्पण मंगल किछु किछु धनियाँ चर्वन।
बुधके गुड़, वृहस्पति राई शुक्र कहे जे दही सोहाई।।
शनि कहए मोहि अदरख भाव सकल काजकें जीति घर आब।
ने गुनी भदवा ने दिक्शूल कहथि 'डाक' ई अमृत समतूल।।[16]

एही तरहें यात्राक समयमे छींकक विचार छनि। सामान्यतया लोक यात्राक समयमे छींक सुनितहि सहमि जाइत अछि, घबड़ा जाइत अछि। अशकुनक संदेह करऽ लगैत अछि, किन्तु ध्यातव्य थिक जे छींकक शुभ फल सेहो छैक। बहुत कम छींकक अशुभ फल छैक। छिंकनिहार कोन दिशामे अछि से ध्यान राखब आवश्यक। एहि प्रसंग डाकक

वचन सामान्यो लोकक कंठमे अछि। द्रष्टव्य थिक –

दक्षिण छीकै धन लै छीजै। नैऋत कोन सिंहासन दीजै।।
पश्चिम छीकै मीठ भोजना। गेलो पलटे बाचब कोना।।
उत्तर छीकै मान समान। सर्वसिद्ध लै कोन ईशान।।
पूरब छिक्का मृत्यु हकार। अग्निकोनमे दुःखक भार।।
सब केर छिक्का कहि गेल 'डाक'। अपने छिक्का नहि करु काज।।
आकाशक छिक्के नर जाय। पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय।।[17]

एहि तरहें हम सब देखैत छी जे मिथिलामे ज्यौतिषविद्याक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। छोटसँ पैघ कार्य लोक बिनु दिन, तिथि, नक्षत्र, अर्द्धप्रहरा, संक्रान्ति, मासान्त इत्यादिक विचार कयने नहि करैत अछि। विद्वानसँ मूर्ख धरि, अङरेजियासँ पण्डित धरि, राजासँ रङ्क धरि सभकेँ एहि गम्भीर शास्त्रक प्रति आस्था छैक आ तदनुसार लोक आचरणो करैत अछि।

सन्दर्भ

1. द्रष्टव्य : खट्टर ककाक तरंग : प्रो० हरिमोहन झा, पृ० 51-57
2. द्रष्टव्य : प्रणम्य देवताः प्रो० हरिमोहन झा, पृ० 71-86
3. मिथिलाभाषा रामायणः कवीश्वर चन्दा झा, पृ० 16
4. एकावली - परिणय : कविशेखर बदरीनाथझा, 2/68
5. वैह, 3/67,68
6. भूकम्प वर्णन : ज्यौ० कविवर सीताराम झा,
7. तत्रैव
8. दत्तवती : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', 2/19
9. दत्तवती : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' 4/58
10. प्रतिपदा : प्रो० 'सुमन', पृ० 24
11. उत्तरा : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ 32
12. कृष्ण-चरित : प्रो० तन्त्रनाथ झा, 12/11
13. तिथांशा वह्निको गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः।
    शिवादुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ।।
14. नाम तँ थिक वैह : डॉ० भीमनाथ झा, पृष्ठ –106
15. डाकवचनसंग्रह।
16. वैह।
17. डाकवचनसंग्रह।

मिथिलामे हस्तकला

श्रीमती कविताकुमारी

मिथिलामे हस्तकलाक परम्परा अत्यन्त प्राचीन अछि, जे एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीमे हस्तान्तरित होइत चल आबि रहल अछि। एकरा सिखबाक हेतु ने कोनो विशेष संस्थानक आवश्यकता पड़ैछ आ ने विशेष प्रशिक्षण ओ प्रशिक्षकक। मिथिलामे हस्तकलाक परम्पराकेँ तीन वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि। पहिल पूर्णतः व्यवसाय पर आधारित हस्तकर्म, दोसर पूर्णतः कलात्मक ओ तेसर उभयपक्षीय हस्तकर्म। ई सभ सम्पूर्णतामे जीवनक हेतु अत्यन्त उपयोगी रहल अछि। एकरा अन्तर्गत लौहकर्म, वंशकर्म, काष्ठकर्म, कोढ़िला कर्म, मृत्तिकर्म, सूचीकर्म, तृणकर्म, तूरसूतकर्म, चित्रकला, लाहकला आदि अबैत अछि।

लौह कर्म लोहार द्वारा कयल जाइत अछि। ई कला पूर्ण रूपेँ व्यावसायिक कला थिक। एकर अन्तर्गत कृषिकार्यक हेतु जे उपकरण तैयार कयल जाइत अछि, ओहिमे हाँसू, खुरपी, खन्ती, कोदारि, फार इत्यादि अबैत अछि। गृह कार्यक हेतु आवश्यक सामग्रीमे छोलनी, झाँझ, तऽब, करछु, चुट्टा, लोहिया, ताइ इत्यादि अबैत अछि जे गृह कार्यक हेतु अत्यन्त आवश्यक ओ उपयोगी होइत अछि। एहि कार्यमे विशेष कलात्मकताक आवश्यकता नहि पड़ैत छैक।

मिथिलाक एकटा प्रमुख हस्तकला जे डोम, धनिकार ओ बाँतर जाति द्वारा कयल जाइत अछि, ओ थिक वंश कर्म। एहिमे काँच बाँसकेँ चीरि पातर-पातर कमची बनाओल जाइत अछि, जाहिसँ सूप, चालनि, कोनिञा, सुपती, छितनी, मौनी, पेटार, पौती, छिट्टा एवं बियनि बनैत अछि। बाँसक कमचीसँ माछ मारयवला टापी, गाँज बनाओल जाइत अछि जे मलाह जाति एवं अन्य माछ मारनिहारक लेल उपयोगी होइत अछि। फूल तोड़बा लेल फुलडाली बनैत अछि आ द्विरागमनमे कनिञाँक संग बाँसक बनल पेटार जाइत अछि। बाँसक बनल चुमाओनक डाला एवं उपनयनक मेघडम्बर अत्यन्त आवश्यक आ महत्त्वपूर्ण होइत अछि।

काष्ठकला मिथिलाक जातीय व्यवसाय थिक। ई कार्य मुख्य रूपेँ बरही किंवा कमार द्वारा कयल जाइत अछि। काठसँ निर्मित गृहोपयोगी वस्तुमे दाबि, सरबा, ढाकन, कठौत, चकला, बेलना, पकवान बनेबा लेल साँच, अन्नकेँ कुटबा ओ छँटबा लेल उखरि, समाठ इत्यादि बनैत अछि। एहि सभ वस्तुमे मात्र साँचमे कलात्मकता देखबामे अबैत अछि। एहि पर दुनू कात तीन वा चारि प्रकारक आकृति बनल रहैत अछि। प्राचीन काष्ठकलामे पलंगक नक्काशी देखबा योग्य रहैत अछि। परन्तु एहि सब जातीय व्यवसायक आधुनिकीकरण भऽ जयबाक कारणेँ ई सब कला विलुप्तप्राय भेल जा रहल अछि।

मिथिलामे माली द्वारा निर्मित वस्तुक विशेष कऽ पावनि-तिहार, उपनयन, मूड़न एवं विवाहादिक अवसर पर आवश्यकता पड़ैत अछि। मालीक कार्य शुद्ध कलात्मक होइत अछि। एकर आधार-सामग्री कोढ़िला एव रंग होइत अछि। कोढ़िलाकेँ काटि कऽ मौर, झाँप, माला इत्यादि बनाओल जाइत अछि एवं एहि वस्तु सभक ऊपर लाल, पीयर, हरियर, नील रंगसभसँ विभिन्न तरहक आकृति जेना फूल, पात, सूगा इत्यादि बनाओल जाइत अछि।

मृत्तिकर्म कुम्हारवर्ग द्वारा कयल जाइत रहल अछि। उपनयन, मूड़न, विवाह एवं अन्य पावनि-तिहार ओ शुभ काज-परोजनमे काज काबऽवला सामग्री यथा-पुरहर , पातिल, हाथी, घोड़कलश, बोहनी, लगजोड़ी, कोसिया, कुरबार, दीप इत्यादि एहि वर्ग द्वारा बनाओल जाइत अछि। गृहोपयोगी वस्तुमे – तौला, कोहा, कोही, ढाकन, सरबा,

घैल, मटकूरी, छाँछ, बसनी, डाबा चपई, झबहा (नपना) इत्यादि। एहि सब गृहोपयोगी सामानमे कलात्मकता नहि रहैत अछि, परन्तु, पुरहर, पातिल, हाथी, घोड़कलश, बोहनी पर विभिन्न रंग जेना-गुलाबी, हरियर, पीयर ओ नील रंगसँ फूल-पात-सूगा, माछ, किनारी, बनाओल जाइत अछि। बच्चाकेँ खेलयबाक हेतु विभिन्न तरहक खिलौना ओ मूरुत बनैत अछि। एतऽ धरि जे भाइ-बहिनिक विशिष्ट पावनि सामा-चकेबाक मूरूत सेहो आब कुम्हारे द्वारा बनाओल जाइत अछि जे मिथिलाक हस्तकलाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

मिथिलामे गृहस्थलोकनि डोरी बँटैत छथि जाहिसँ माल-जालक लेल सोहरि, गरदाम, ढेक, जाबी, नाथ, सिंघौट आ कराम बनाओल जाइत अछि। डोरीसँ आराम करबाक हेतु खाट ओ पलंग घोड़ल जाइत अछि। डोरी बँटबाक हेतु साबे ओ सऽन केर प्रयोग कयल जाइत अछि। डोरीसँ सीक सेहो भाँगल जाइत अछि। एहि सींककेँ चारमे टाँगि देल जाइत अछि, जाहि पर तौला-बासन राखल जाइत अछि। संगहि दूध-दहीकेँ बिलाड़िसँ बचयबाक हेतु सीक पर टांगल जाइत अछि।

एहिसँ भिन्न महिलालोकनि विभिन्न प्रकारक जीवनोपयोगी एवं कलात्मक हस्तकर्म सबमे निपुणता प्राप्त करैत रहलीह अछि, जाहिमे मृत्तिकर्म, सूचीकर्म, तृणकर्म, चित्रकला आदि अबैत अछि।

मृत्ति कर्म – माटिक कला तऽ मिथिलाक प्रत्येक आँगनक आवश्यक ओ विशिष्ट कला थीक। नारी लोकनि भानस करबाक हेतु चूल्हि-चिनबार स़ँ ल ऽ कऽ अन्न रखबाक हेतु विविध प्रकारक कोठीमे तिनकोठिया, पँचकोठिया, मछकोठिया, ढन्हारी तदतिरिक्त मोड़ा, भुड़कूड़ा, लावनि आदि, भानस एवं उसिनिञा करबाक हेतु एकचुल्हिया, दुचुल्हिया तीनचुल्हिया आदि, जाड़मे आगि तपबाक हेतु बोरसि बनबैत छथि। विवाहदानमे परिछनिक लेल चान(जान)डाला, ठक-बक, गौरीपूजा लेल हाथी आदि आ एतऽधरि जे भाइ-बहिनिक प्रसिद्ध पावनि सामात चकेवाक मुरूत, चौकीदार, सतभैया, पौती, महफा, भहरा, लडुबेचनी, झाँझी कुकुर, चुगिला, वृन्दावन आदि बनबैत रहलीह अछि। माधुश्रावणी ओ बड़िसाइत पावनिक लेल नाग-नागिन स्त्रीगणे द्वारा बनाओल जाइत रहल अछि। गामघरमे एखनहुँ जतऽ झाँझनिक घर अछि, स्त्रीगणलोकनि चिक्कनि माटि आ गोबरसँ लेबैत छथि आ लेबलाक बाद ओहि माँटिसँ विभिन्न तरहक आकृति उरेहल जाइत अछि। आकृति बनलाक बाद ओकरा रंगसँ रंगि देल जाइत अछि।

सूची कर्म – हस्तकलामे सूचीकला केर अपन महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। मिथिलाक प्रायः प्रत्येक स्त्रीगण एहि कलामे दक्ष, होइत छथि। रुमाल, थाड़ीझपना, गेडुआ-खोल, परदा, ओछाओनक चद्दरि पर सुइसँ अनेक तरहक सिलाई जेना लहरिया, झिक्को, जंजीरा, मोती, पोखरिया, सिटुआ इत्यादि बनाओल जाइत अछि। एकर अतिरिक्त मिथिलाक महत्त्वपूर्ण कला अछि सुजनी कला। मिथिलाक कोनो घर एहन नहि रहैत अछि, जाहि घरमे हाथ सँ रंग बिरंगक बनाओल सुजनी नहिं भेटत। एकरा बनयबा लेल ओछाओनक लंबाइ चौड़ाइक अनुसार कपड़ा नापिकऽ लेल जाइत अछि, कपड़ाक संख्या सुजनीक मोटाइकेँ जते, रखबाक हो-ताहि अनुसारेँ लेल जाइत अछि। कपड़ामे नव पुरान फाटल धोती, साड़ी, चद्दरि एवं आनोआन कपड़ा सभ रहैत अछि। ओहि सब कपड़ाकेँ एक दोसर पर तऽह लगा देल जाइत अछि, जकरा सुजनी साटब कहल जाइत छैक। एहि सभक ऊपरसँ नीक सादा वा रंगीन सलग कपड़ा बैसा देल जाइत छैक। तकर बाद मोटका सुइ एवं मोटका तागसँ टाँकि कऽ एकहारा कयल जाइत छैक। तकर बाद दू वा तीन रंगक रंगीन तागसँ मेंही-मेंही टोप दऽ कऽ पोखरिया, लहरिया, जंजीरा, झिझरी वा झिक्को सिलाइसँ सुजनीक ऊपर विभिन्न तरहक आकृति जेना– पुड़ैनि, कमलदह, पोखरापाटन, सूगा, माछ एवं विभिन्न तरहक फूल-पात बनाओल जाइत अछि। एतेक कयलाक बाद सभसँ अन्तमे सुजनीक चारू कात नीक रंगगर वा छीटवला कपड़ासँ मगजी लगा देल

जाइत अछि जे देखबामे अत्यन्त आकर्षक लगैत अछि। एकरा बनयबामे पूर्ण लगन ओ परिश्रमक आवश्यकता पड़ैत अछि। सुजनी कैँ भोथरी, केथरी, खेन्हरा ओ गेण्डा सेहो कहल जाइत अछि। एकर एकटा आरो स्वरूप होइत अछि, जकरा सिट्टो, सटुआ वा एप्लिक कहल जाइत अछि। एहिमे एक कपड़ाक ऊपर दोसर रंगक कपड़ा दऽ देल जाइत अछि। ओकर बाद ऊपरवला कपड़ा पर आकृति बना कऽ ओकरा काटिकऽ फूल तैयार कयल जाइत अछि। बरिसाइत पावनिक कनिया-पुतरा सेहो स्त्रीगणे द्वारा तैयार कयल जाइत अछि।

तृण कर्म – मिथिलामे हस्तकलाक अद्‌भुत उदाहरण अछि तृण कर्म। मिथिलाक एकटा प्रमुख वर्ग पटिया बिनबाक काज करैत अछि। विवाह ओ द्विरागमनमे पटिया विधिक काजमे अबैत अछि। विवाहमे कोबरमे पटिया ओछाओल जाइत अछि आ द्विरागमनमे कनिञाँक संग पटिया गेनाइ आवश्यके अछि। एते धरि जे काज-परोजनमे हकार पुरनाहरिकैँ बैसबा लेल पटिये देल जाइत छन्हि। पटिया अनेक तरहक होइत अछि यथा – मोथीक पटिया, सबरंगपटिया, मूजक मुजैली, खजूरक पटिया, तारक तराइ, डाभीक खिनहरि, कुशक आसनी आदि। एहि सभक बिनाइ केर अनेक शैली होइत अछि, जेना – गुहुआ, बिनुआ, डोरिया इत्यादि। मोथीक पटियामे कलात्मकता सेहो देखबामे अबैत अछि, विशेष कऽ विवाह-द्विरागमनक पटिया रंगीन होइत अछि एवं ओहि पर विभिन्न तरहक आकृति जेना-हाथी, कमलक फूल, पुड़ैनि, नचैत मयूर इत्यादि बनाओल जाइत अछि। तृणकलामे बाढ़नि, खजूर-तारक बीयनि अत्यन्त उपयोगी अछि।

तृणकलाक एकटा महत्त्वपूर्ण भाग अछि सीकी-मौनी, जे मिथिलाक हस्तकलाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। सीकी एक प्रकारक खढ़ होइत अछि, जाहिसँ विभिन्न तरहक वस्तु यथा – सीकीक पौती, पनबट्‌टी, पसाहनिक पौती, मौनी, माछ, काछु, हाथी, बीयनि, बिरहारा इत्यादि बनैत अछि। सभसँ पहिने सीकी कैँ लाल, पियर, हरियर आदि विभिन्न रंगमे रंगि देल जाइत अछि। तत्पश्चात् जे वस्तु बनयबाक हो ओकर अनुसार डाभी, साबे वा मूज केर खोंचा देल जाइत अछि तकर बाद टाकुसँ आधा-आधा चीरल सीकीसँ मोट-मोट टीप दऽ कऽ ओकरा बान्हल जाइत अछि। पुनः विभिन्न रंगसँ रंगल सीकीसँ मेंही-मेंही टोप दऽ कऽ ओहिपर विभिन्न तरहक आकृति बनाओल जाइत अछि। अथक परिश्रम सँ तैयार कयल गेल सीकीक वस्तु-जात अत्यन्त आकर्षक लगैत अछि। सीकीक बिरहारामे जनउ तैयार कऽ कऽ राखल जाइत अछि, तऽ पसाहनिक पौतीमे अयना, ककबा, सिन्दूर, टिकुली, काजर एवं अन्य श्रृंगारक सामग्री भरि कऽ कन्या कैँ देल जाइत अछि। द्विरागमनक अवसर पर सीकीक सामान साँठमे अवश्ये देल जाइत अछि। मिथिलाक सीकीक बनल वस्तुक सुन्दरता अप्रतिम होइछ। इएह कारण अछि जे ई देश-विदेशमे ख्याति अर्जित कयने अछि।

तूर – सूत – स्वभाव ओ संगतिसँ जे सीखल जाइत अछि ओकरा लूरि कहल जाइत छैक। टकुरी ओ चर्खा कटबाक सम्बन्ध मे इएह कहल जा सकैत अछि जे ई लूरि मिथिलाक स्त्रीगण स्वभाव ओ संगतिसँ सिखैत छथि। टकुरी काटब एकटा महत्त्वपूर्ण कला रहल अछि, जाहिसँ जनउ तैयार कयल जाइत अछि। जनउ तैयार करबाक प्रक्रियामे सबसँ पहिने सूत काटल जाइत अछि। तकर बाद ओहि सूतकैँ तानल जाइत अछि आ तेसुत तैयार कयल जाइत अछि। तेसुतकैँ बाँटल जाइत अछि। तेसुत बँटलाक बाद फेर तेसुत बाँटि ओकरा माँजल (खेहल) जाइत अछि। एहि सभ प्रक्रियाक समाप्तिक पश्चात् ओकरा चंगुरा कऽ जनउ तैयार कयल जाइत अछि। जनउ तैयार करब एकटा महत्त्वपूर्ण कला थिक जाहिमे मिथिलाक स्त्रीगण सब पटु रहैत छथि।

चित्रकला – मिथिलाक सबसँ लोकप्रिय ओ प्रसिद्ध हस्तकला अछि-मिथिलाक चित्रकला, जे वर्त्तमानमे मिथिला पेण्टिँग्स वा मधुबनी पेण्टिँगसक नामसँ विख्यात अछि। मुख्य रूपसँ एकर टू टा प्रकार होइत अछि –

(i) भू चित्र (ii) भित्ति चित्र

भूचित्र भूमि पर बनाओल जाइत अछि जकरा 'अरिपन'; 'अहिपन' वा अइपन कहल जाइत अछि। 'अरिपन, बनयबालेल अरबा चाउरकेँ पानिमे फुला, सिलौट पर मेंही कऽ पीसि लेल जाइत अछि, जकरा पिठार कहल जाइत अछि। आब ओहि पिठारकेँ पानिमे गाढ़ कऽ घोरि देल जाइत अछि। अरिपन देबासँ पूर्व अरिपन देबाक स्थानकेँ पहिने गोबरसँ नीपि चिकनी माँटिसँ ठाँव कयल जाइत अछि। तत्पश्चात् पिठारमे आँगुर डुबा अरिपन बनाओल जाइत अछि। अरिपन बनलाक बाद बीच-बीच मे सिन्दूरक ठोप देल जाइत अछि। सिन्दूरक ठोप देलासँ एकर सुन्दरता सेहो बढ़ि जाइत छैक। दोसर जे बिनु सिन्दूरक अरिपन अशुद्ध होइत अछि। ओना कहल जाइत अछि जे पुरुष जँ बिनु सिन्दूर लागल अरिपन देखय तँ दोष होइत छैक।

अरिपन अनेक प्रकारक होइत अछि। प्रत्येक अवसरक अरिपनक अपन फराक-फराक महत्त्व ओ फराक-फराक आकृति होइत अछि, जेना – तुसारीक अरिपन, पृथ्वीक, साँझक, उबटन लगयबाक, बेटा विवाहक, बेटी विवाहक, मुहअकक, मधुश्रावणीक, कोजागराक, दीपावलीक, गवहा संक्रान्तिक, स्त्रीक दशपात, पुरुषक दशपात, षडदल, शतदल ओ अष्टदल इत्यादि।

भित्तिचित्र देवताक घर, उपनयनक मड़बा, विवाह-दानमे कोबर घरक एवं घर आँगनक सुन्दरता बढ़यबा लेल कयल जाइत अछि। भित्तिचित्र लेल बकरीक दूधमे रंग घोरि लकड़ीमे तूर वा कपड़ा लपेटि ओकर तूलिका बनाओल जाइत अछि। भित्तिचित्रमे पारंपरिक रंगक उपयोग कयल जाइत रहल अछि। कारी रंगक लेल जौकेँ जरा कऽ ओकर छाउर अथवा डिबियाक करिख वा खापड़िक कारिखमे बेलक लस्सा आ गोबर मिलाओल जाइत अछि। पीयर रंगक लेल चूनमे बड़क पातक दूध मिलाओल जाइत अछि वा डोकहरक फूलकेँ पीसि एवं हरदिकेँ पीसि कऽ तैयार कयल जाइत अछि। लाल रंग कुसुम फूल ओ सिन्दूरसँ; नारंगी रंग सिंगरहार फूलक डण्टी ओ पलास फूलक परागसँ, हरियर रंग बेलपत्र ओ सीमक पातक रससँ, नील रंग नीलसँ तैयार कयल जाइत अछि। एहि सभ रंग मे प्रमुख रंग कारी होइल अछि, जाहिसँ चित्र ओ दृश्यक आकार देल जाइत अछि। भित्तिचित्रमे विभिन्न तरहक पौराणिक ओ धार्मिक दृश्य चित्रित कयल जाइत अछि। रामायण पर आधारित चित्रमे सीतारामक जयमाल, वनगमन, केवट-प्रेम, अहिल्या-उद्धार इत्यादि प्रमुख अछि। महाभारत पर आधारित चित्रमे विराट स्वरूपक दर्शन, द्रौपदीक चीरहरण अत्यन्त सुन्दर लगैत अछि। कृष्ण विषयक चित्रमे कालियादमन, कृष्णक बाललीला, एवं रास इत्यादि, जाहिमे राधाकृष्णक रासलीला अत्यन्त सुन्दर ओ आकर्षक लगैत अछि। एकर अतिरिक्त गौरीमहादेव, अर्द्धनारीश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती, दशावतार आदिक, चित्र बनाओल जाइत अछि। एहि सभक अतिरिक्त देहरिपर बनाओल कटहरक भरिया, केराक भरिया, माछक भरिया, दहीक भरिया, नचैत मयूर केर चित्रक अत्यन्त आकर्षक होइत अछि।

भित्ति चित्रमे कोबर घरक स्थान महत्त्वपूर्ण अछि। कोबर घरमे अत्यन्त परिश्रमसँ बनाओल गेल चित्रक मुख्य आधार रहैत अछि-सातटा पुड़ैनि, पानिमे रहनिहार जीव, चिड़ै ओ फूलपात, गाछ, साँप, काछु, माछ, शंख, बीछ, कमलक फूल, कमलदह, सूगा, मयूर, केराक गाछ, बाँस, लौंगक गाछ, बेलक गाछ; मूर्त्तिमे वर-कनिञाँ, गौरी-महादेव, सूर्य, चन्द्रमा, नवग्रह। कोबर घर मे चारू कोनमे नैना योगिनक मूर्त्ति फारल जाइत अछि। कोबर घरक देहरि पर आमक गाछ, अनारक गाछ, कदम्बक गाछ आदि बनाओल जाइत अछि।

मिथिला चित्रकलाक प्रमुख आकर्षण अछि विविध प्रकारक मूर्त्ति-चित्रण, जकरा मूर्ति फाड़ब कहल जाइत अछि। मिथिलाक लोकचित्रमे आँखि ओ नाकक प्रमुखता रहैत अछि। एहि चित्रकलामे एकहारा काज नहि कयल जाइत

अछि प्रत्युत् प्रत्येक रेखापट दोहरा चलाओल जाइत अछि। यद्यपि एहि चित्रकलामे भरनीक प्रमुखता रहैत अछि परन्तु भरनीक संग-संग कचनी-झिटकी सेहो कयल जाइत अछि। कचनीमे सोझ कचनी, तिरछा कचनी, दोहरी कचनी, कूटनी, तारा; झिटकीमे गोल झिटकी, तिरछा झिटकी, मजरी केर प्रयोग कयल जाइत अछि। शनैः शनैः मिथिलाक चित्रकला भूमि ओ भित्तिसँ कागज ओ कपड़ा पर आबि गेल अछि। ई चित्रकला मिथिला ओ भारतक सीमाकेँ टपि कऽ सम्पूर्ण विश्वमे व्याप्त भऽ गेल अछि।

मिथिलाक प्रसिद्ध कला लाहकला सेहो अछि। एहि कार्यमे लहेरी जाति द्वारा लाहकेँ आगि पर गला कऽ ओहि सँ रंग बिरंगक लहठी तैयार कयल जाइत अछि। विवाह-दान, पावनि-तिहार एवं अन्य काज-परोजनक अवसर पर लाहक लहठी पहिरनाइ शुभ मानल जाइत अछि। लाहक चूड़ी मे तीसी फूलक चूड़ी, समउ, नखी लहठी प्रसिद्ध अछि। मिथिला मे विवाहक अवसर पर कनिञाँकेँ तीसी फूलक लहठी पहिरनाइ परमावश्यक होइत अछि। धीरे-धीरे समयक संग लोकक विचार ओ व्यवहार बदलैत चलल जाइत अछि परंतु लहठी पहिरबाक परंपरा पूर्ववते अछि। हाँ, ओकर बनावटि मे आधुनिकता अवश्य आबि गेल अछि। लाहक रंग-बिरंगक लहठीक माँग मिथिलेटामे नहि अपितु मिथिलासँ बाहरों पर्याप्त मात्रामे अछि।

मिथिलाक हस्तकला मिथिलाक संस्कृतिक आधार थिक। नव सभ्यताक बिहाड़िमे मिथिलाक हस्तकला विलुप्त भेल जा रहल अछि। आवश्यकता अछि एकर पर्याप्त प्रचार-प्रसार ओ संरक्षणक। अन्यथा ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक हस्तकला अतीतक कथा मात्र बनि कऽ रहि जायत। तेँ एहि दिशामे लोकक जागरूकता ओ साकांक्षता परमावश्यक अछि।

●

स्वातन्त्र्योत्तरकाले न्यायशास्त्रमधिकृत्य मिथिलाया अवदानम्

डॉ० किशोरनाथझा

भारतवर्षस्य स्वातन्त्र्योत्तरकाले मिथिलायां संस्कृतभाषायां न्यायशास्त्रमधिकृत्य मौलिकग्रन्थप्रणयनं प्राचीनग्रन्थानां व्याख्यानञ्चापेक्षिकं सन्तोषजनकमभूदिति निःसङ्कोचं वक्तुं शक्यम्।

वङ्गाभिजनयोः पुण्यश्लोकयोः वामाचरणभट्टाचार्यफणिभूषणतर्कवागीशयोरथ च स्वनामधन्यस्य सर्वतन्त्रस्वन्त्रस्य धर्मदत्त(बच्चा)झाशर्मणः मैथिलशिष्यपरम्परा अस्मिन्नवधौ ग्रन्थप्रणयनव्याख्यानाभ्यां न्यायशास्त्रस्य संवर्धने तत्परा सती न केवलं धवलां कीर्तिमुपार्जयदपि तु पुष्कलां चिन्तनसामग्रीमपि उत्तरसाधकानां कृते समुपाहरत् स्वकीयवैदुष्यसौरभं च चतुर्दिक्षु प्रसारयत्।

1. दरभंगास्थमिथिलासंस्कृतशोधसंस्थानस्य सम्मानितोऽध्यापकः प्रसिद्धबच्चाझामहाशयस्य साक्षादन्तेवासी विद्यावाचस्पतिः[1] शशिनाथझा महाशयः नव्यन्याये मौलिकं ग्रन्थं त्रितलावच्छेदकतावादाभिधं आचार्योदयनस्य कृत्योः लक्षणावलीलक्षणमालयोः व्याख्याञ्च प्रणीय मिथिलासंस्कृतशोधसंस्थानतः प्राकाशयदिति विदितं न्यायशास्त्ररसिकेषु।

यथा प्रासादे द्वित्रास्ततोऽधिकाः वा तलाः निर्मीयन्ते तथैवावच्छेदकताया अपि त्रयस्ततोऽधिका वा तलाः भवितुर्महन्ति विवेचनायामिति त्रितलावच्छेदकतावादनाम्नस्तात्पर्यम्। तस्मादेवास्य ग्रन्थस्य भूमिकायामवच्छेदकतायाः स्वरूपं-प्रकारं-प्रयोजनं-महत्त्वं-वैशिष्टयञ्च प्रतिपादयन् लेखकः नीलो घट इत्यस्य वाक्यार्थबोधे त्रितलावच्छेदकतायाः क्रीडां पञ्चाशीतिमितेषु पत्रेषु प्रादर्शयदिति ग्रन्थं वीक्ष्य कोऽपि आश्चर्यसरसि निमज्जेत्। विदितमेव नैयायिकानां यदियमवच्छेदकता देशकालधर्मसंसर्गादिभेदेन भिन्नापि प्रतिनियतव्यवहारोपपत्तये नितरामावश्यकी विलक्षणा च प्रतियोगितानुयोगिताप्रकारतादिभ्यः। न्यायदर्शनस्य महत्त्वपूर्णः सिद्धान्तः कार्यकारणभावः प्रतिबध्यप्रतिबन्धक-भावादिश्च नोपपद्यते विनावच्छेदकतयेति विदितमेव तद्विदाम्। यद्यपि शास्त्रार्थसभायां विजिगीषूणामस्त्रस्वरूपस्यात एव प्रतिपक्षिणां दुःखबोधाय जटिलवागाडम्बरात्मकस्य गुरुपरम्परायां विद्यमानस्य त्रितलावच्छेदकतावादस्याविष्कारो नूनं पाण्डित्यस्य प्रकर्षं प्रदर्शियितुमेव विद्यते तथापि श्लाघ्यतां याति सूक्ष्मतमचिन्तनचमत्कारोऽत्रेति कोऽपि विना विचिकित्सयाभ्युपगच्छेत्।

अस्यैव महानैयायिकस्य व्याख्यात्मिके द्वे कृती विराजते। उदयनाचार्यस्य लक्षणावली समानतन्त्रस्य वैशेषिकस्य प्रसिद्धानां सप्तपदार्थानां सप्रभेदं लक्षणमाख्याति। लक्षणमाला च न्यायशास्त्रानुमतानां प्रमाणादिषोडशपदार्थानां सप्रकारं लक्षणमभिलपति। उभयोरनेन कृता व्याख्या व्युत्पन्नानां व्युत्पिसूनां चोपकृत्यै कल्पते। अवधेयं पुनरत्रेदं यत् प्रागियं लक्षणमाला ओरिएन्टल जर्नल इत्यत्र शिवादित्यमिश्रस्य कृतिरूपेण मद्रासनगरतः प्रकाशिताभूत्। पश्चादयं शशिनाथ झा महाभागः स्वकीयानुसन्धानबलेन मौलिकयुक्तिकदम्बेन चोदयनाचार्यस्य कृतिरूपेणेमां प्रतिष्ठितामकरोदथ च व्याख्यां विधाय प्राख्यापयदस्याः गौरवम्। तत्त्वानुभूतिः प्रमेति लक्षणमत्रत्यं प्रमायाः उदयनाचार्यस्य प्रतिपक्षिणा दार्शनिकमहाकविना श्रीहर्षेण खण्डनखण्डखाद्ये खण्डितमिति न तिरोहितं विद्वल्लोचनेभ्यः।

2. मुम्बई महानगर्या वल्लभसम्प्रदायस्याचार्यचरणानां गोस्वामिकुलभूषणानां गोकुलनाथजी महाराजश्रीचरणानामाश्रितेन उपर्युक्तयोः भट्टाचार्यमहाशययोरन्यतमेनान्तेवासिना नैयायिकमूर्धन्येन कृष्णमाधवझा[2] महाभागेन नव्यन्यायपद्धतिमनुसृत्य प्रणीताः अनेकाः कृतयः समक्षमस्माकं विद्यन्ते, यासु धर्मदत्त(बच्चा)झा शर्मप्रणीतस्य सिद्धान्तलक्षणगूढार्थतत्त्वालोकस्य सुबोधिनीव्याख्या महत्त्वमधिकं बिभर्ति। प्रथमतो ह्ययमेव गूढार्थतत्त्वालोकं व्याख्यातुं प्रावर्तत इत्यस्य सूक्ष्मचिन्तनरुचिः न्यायविद्यां प्रति सहजं प्रेम च प्रकटितं भवति। प्रयागस्थ

गङ्गानाथझा केन्द्रीयसंस्कृत विद्यापीठतः (1982 तमे खीष्टाब्दे) प्रकाशितेयमुत्तरप्रदेशसंस्कृत अकादमी संस्थायाः सर्वोच्चशाङ्करपुरस्कारेण सभाजिता सर्वत्र नैयायिकवृन्देन च सामोदं समादृताभूदिति, व्याख्यायाः महत्त्वं व्याख्यातुश्च साफल्यं स्वीकर्त्तव्यमेव।

कुवलयानन्दस्यालङ्कारलक्षणानि नव्यन्यायरीत्या परिष्कृत्य अलङ्कारविद्योतनं नाम मौलिको ग्रन्थोऽनेन प्रणीतः कविशेखरपुष्पाञ्जलौ प्रकाशितश्च। यद्यप्यलङ्कारशास्त्रीयोऽयं ग्रन्थस्तथापि नैयायिका एवात्र ग्रन्थाभिप्रायं तत्त्वतोऽवगन्तुं प्रभवेयुरिति तदुल्लेखोऽत्र नानौचित्यं भजति।

अखिल भारतीय प्राच्य विद्यासम्मेलनस्य दरभंगाधिवेशने (1948 तमे खीष्टाब्दे) झा महाशयेनानेन नव्यन्यायरीत्या त्रयो निबन्धाः निबद्धाः यथाक्रमं न्यायव्याकरणालङ्कारशास्त्राणां विभागीयसदस्सु पठिता आलोचिताश्च। ते पुनरभावविचारः, कर्मानुक्तत्त्वविचारः, काव्यलक्षणविचारश्चेति नाम्ना तदीयनिबन्धसारसंग्रहे सन्ति समुल्लिखिताः।

3. अस्यैव सतीर्थ्यः बिहारप्रान्तीय सुलतानगञ्जसंस्कृतमहाविद्यालयस्य प्राचार्यः प्रसिद्धपाण्डित्यः महेशझा[3] महाशयः तर्कप्रदीपाभिधं मौलिकं ग्रन्थं निर्माय (1978 तमे खीष्टाब्दे) दरभंगास्थ मिथिला संस्कृतशोध संस्थानतः प्राकाशयत्। सन्त्यत्र नवतितमप्रकरणानि येषु षट्त्रिंशदधिकद्विशतमिताः विषयाः सविशेषमालोचिताः। तर्कगादाधरी विद्यते अस्याधार उपजीव्यो वा। अतएव तत्रत्याः विषयाः अध्यापनसरण्या तथोपपादिताः यथा जिज्ञासूनामल्पायासेन बोधगम्या भवेयुरित्यस्य ग्रन्थस्य वैशिष्ट्यं महत्त्वञ्चाकलनीयम्। तर्कमधिकृत्य प्राचीननवीनाचार्ययोः समग्रं चिन्तनं, तर्कस्य स्वरूपं, प्रकारः, प्रयोजनं, महत्त्वञ्चेत्यादि सर्वं सोदाहरणं, सोपपत्तिकं चात्र साधु संकलितं समालोचितञ्चेत्यस्य उपादेयत्वं निर्विवादं सिद्ध्यति। तस्मात् लेखकस्यावदातं गंभीरतमं च वैदुष्यं ग्रन्थनिर्माणकौशलञ्चाभ्युपगन्तव्यम्।

4. अनयोरुपर्युक्तयोः नैयायिकयोः सतीर्थ्यः नैयायिकवरेण्यः रूपनाथझा[4] महाभागः सामान्यनिरुक्तेः विमलप्रभाभिधां सुबोधां व्याख्यां विधाय दरभंगास्थ मिथिलासंस्कृतशोधसंस्थानतः प्रकाश्य च महत्पुण्यमुपार्जयत्। उत्तरसाधकानामुपाकरेण सह स्वकीयं वैदुष्यमपि सफलयाञ्चकार। सुबोधया सरण्या ग्रन्थाभिप्रायावबोधाय बद्धपरिकरोऽपि व्याख्याकृदत्र सत्यवसरे निर्मलां गभीरां स्वसम्प्रदायानुमतां च विवेचनां पुरस्करोतीति न भवति गतार्थेयं पूर्वजकृतव्याख्याभ्य इत्यवधेयम्।

5. मैथिलपण्डितपुण्डरीकमार्तण्डस्य बालकृष्णमिश्रस्यान्तेवासिना वाराणसीस्थ श्यामामहाविद्यालयस्य प्रधानाध्यापकेन प्रसिद्धवैदुष्येण उग्रानन्दझा[5] शर्मणा व्युत्पत्तिवादस्य तरणीव्याख्या निर्मिता, वाराणसीस्थ चौखम्बा संस्कृतसिरीज संस्थातः (1972तमे खीष्टाब्दे) प्रकाशिता, जिज्ञासूनां धीधनानाञ्चोपकारिका सती व्याख्यातुरसाधारणं पाण्डित्यं विद्योतयति। व्युत्पत्तिवादस्य वङ्गाभिजनकृता व्याख्या दृष्टिपथातिथिर्नाभूदस्माकम् प्रायः मैथिलधीधनैरेव कृताः व्याख्याः उपलभ्यन्ते। यथा धर्मदत्त(बच्चा)झा शर्मणः गूढार्थतत्त्वालोकः, जयदेवमिश्रस्य जया, लक्ष्मीनाथ झाशर्मणः प्रकाशः, खुद्दीझाशर्मणो नौका, जयदेवमिश्रशिष्यस्य वाराणसीवासिनः वेणीमाधवशुक्लस्य शास्त्रार्थकला नाम्नी चेति सर्वाः वाराणसीत एव प्रकाशिताः यद्यपि, तथापि सर्वाश्चैताः स्वतन्त्रतायाः प्राक्कालिक्य इति नात्र निबन्धे समीक्षिताः। नैयायिकवरेण्यस्य शिवदत्तमिश्रस्य दीपिका सुदर्शनाचार्यस्य पञ्चनदीयनैयायिकस्यादर्शव्याख्या च व्युत्पत्तिवादस्य नात्र व्याप्नुतः देशकालाविति न समीक्षितौ।

6. प्रथममुदयपुरनगरीये महाराणा संस्कृतमहाविद्यालये पश्चात् जयपुर नगरीये महाराजा संस्कृतमहाविद्यालये च प्राचार्यवरः धर्मदत्त(बच्चा)झा महाभागानां प्रधानशिष्येष्वन्यतमस्य षष्ठीनाथमिश्रस्यान्तेवासी तनूजन्मा च नैयायिक श्रेष्ठः खड्गनाथमिश्रः[6] ग्रन्थद्वयं शाब्दबोधादिपञ्चकप्रकाशं सिद्धान्तलक्षणतत्त्वालोकप्रकाशं च मौलिकमेकपरञ्च व्याख्यात्मकं

प्रणीय यथाक्रमं (1990, 96 खीष्टाब्दयोः) जयपुरस्थ केन्द्रीय संस्कृतविद्यापीठतः तत्रत्य राजस्थानविश्वविद्यालयतश्च प्राकाशयदिति प्रमोदस्य विषयः।

अत्र भागद्वये विभक्ते प्रथमग्रन्थे पञ्चविषयाः प्राधान्येन द्वौ चानुषङ्गत इति संकलनया सप्तविषयाः चिन्तिताः सपरिष्कारम्। तथाहि वैयाकरणमीमांसकनैयायिकानां दृष्ट्यः शाब्दबोधमधिकृत्य प्रदर्शिताः सरलया सुबोधया च भाषया, यत्र सिद्धान्तरूपेण न्यायमतं प्रतिष्ठापितम्। आख्यातवादे गंगेशोपाध्यायरघुनाथशिरोमण्योः ग्रन्थयोर्व्याख्या विहिता। विधिव्याप्तिग्रहोपायवादौ च गङ्गेशोपाध्यायस्य व्याख्यातौ। कारणतावादमधिकृत्य जगदीश भट्टाचार्यमहादेवपुणतामकरराजेश्वरशास्त्रिद्रविडमहाभागानां मतैः साकं स्वकीयोऽभिप्रायोऽपि वैशद्येन विवेचितः। अनुषङ्गतश्चात्रान्विताभिधानाभिहितान्वयवादौ द्वितीयार्थकर्मत्वञ्च परिष्कृत्य पुरस्कृतानि। तस्मादस्य मौलिकत्वमाकलयामः। हिन्द्यामनुवादोऽपि स्वयमनेनैव कृतोऽत्र विद्यते। यद्यपि व्याख्यापि ग्रन्थस्य व्याख्यातुर्मौलिकमेव चिन्तनं तथापि व्याख्येयग्रन्थस्याधारता तत्रावलम्बनाय संतिष्ठते।

तत्त्वालोकप्रकाशस्तु कृष्णमाधवझा महाशयेन सह प्रतिस्पर्धयानेन प्रणीत इति प्रत्येमि। यतो ह्यात्मपरमगुरूणामनेकासु सतीषु विवेचनासु सद्योव्याख्यातस्यैव सिद्धान्तलक्षणतत्त्वालोकस्य व्याख्यार्थमयं प्रावर्तत। सामान्यतः अनेकत्र ग्रन्थे प्राधान्येन त्रिषु स्थलेषु अनेन मिश्रमहाभागेन कृष्णमाधवझा शर्मणः मतान्यपाकृतान्यपि। यद्यपि अमुं झा महाभागं गुरुकल्पपदेनोल्लिखन्नयमात्मविनयं प्रदर्शयति तथापि मतानि खण्डयन् स्वाभिप्रायस्यैव प्रामाणिकतां प्रसाधयति। कोऽत्र समीचीनमतावलम्बी गूढार्थतत्त्वालोकस्याशयं याथार्थ्येनावागच्छदिति तु नव्यन्यायविवेचनापटीयांस एव निर्णेतुमर्हन्ति न तु मादृशाः प्राचीनन्यायविद्यार्थिनः। किन्तु अवधेयमिदं यन्नव्यन्याये प्रतिस्पर्धा न जयनति वैरस्यमपि तु चिन्तनावसरप्रदानेनामोदम्। अत्र खण्डनमण्डनपरम्परा चिरादेव समायाति। यज्ञपत्युपाध्यायस्य मतखण्डनं पक्षधरमिश्रेण कृतं पुनः नरहरि उपाध्यायः निजगुरोः पक्षधरस्य मतं निराकरोत्। माधवमिश्रः पक्षधरपुत्रः वासुदेवमिश्रश्च पक्षधरभ्रातृजः नरहरिमतमपाकुरुतामिति सगोत्रकलहः न केवलं मिथिलायामपि तु वङ्गदेशेऽपि गुरोः वासुदेवसार्वभौमस्य प्रतिपक्षिणश्च पक्षधरमिश्रस्य मतं रघुनाथशिरोमणिना निराकृतमिति विदितं नव्यन्यायशास्त्रस्येतिहासविदाम्। अतएव जागदीशी पक्षतायां पक्षधरमिश्रस्य, वासुदेव सार्वभौमस्य यज्ञपत्युपाध्यायस्य च मतानि व्याख्यातान्युपलभ्यन्ते। तस्मात् नैतेन मतद्वैधेन कस्यापि व्याख्यातुरुत्कृष्टतापकृष्टता वा भवति। प्रतिस्पर्धयानया केवलं न्यायशास्त्रस्याभिवर्धते चिन्तनप्रकार इति शास्त्रस्य सौभाग्यम्।

7. गङ्गानिर्झरिणीं व्याख्यां क्रोडपत्ररूपां निर्माय विख्यातस्य वाराणस्यां न्यायाध्यापने प्रसिद्धस्य शिवदत्तमिश्रमहाभागस्य कृतविद्येन शिष्येण प्रसिद्धमैथिलदार्शनिकशङ्करमिश्रस्य वंशधरेण वाराणसी-स्थश्यामामहाविद्यालयस्य न्यायाध्यापकेन नन्दिनाथमिश्र[7] महाशयेन नव्यन्यायमधिकृत्य न्यायनिबन्धावली नाम्नी कृतिः विरचिता शारदा लाइब्रेरी वाराणसीतः (1950 तमे खीष्टाब्दे) प्रकाशिता च। अत्राष्टौ निबन्धाः छात्रणामुपकृत्यै संकलिताः विद्यन्ते। येषु प्राच्यनव्यमध्यमाचार्याणां मतानि सम्यगालोच्य सिद्धान्ताः साधूपपादिता इति निबन्धानां प्रामाणिकतायां नोदेति संशीतिलवोऽपि। एते पुनर्निबन्धाः नामभिर्विषयस्य प्रत्यक्षकारणत्वविचारः, पाकजविचारः, द्वित्वाद्यपेक्षाबुद्धयोः कार्यकारणभावविचारः, रूपादेर्व्याप्यवृत्तित्वाव्याप्यवृत्तित्वविचारः, चित्रस्वरूपविचारः, प्रभावाप्ययोः प्रत्यक्षताविचारः, विषयनिष्ठदोषप्रतिबध्यप्रतिबन्धकभावविचारः, वेगनाश्यनाशकभावविचारश्चेति सन्ति प्रसिद्धाः। अखिलभारतीयप्राच्यविद्यास्मेलनस्य दरभंगाधिवेशने प्रथमाविचारमधिकृत्यानेन लिखितो निबन्धः समालोचितः सदसि इत्यप्यवधेयम्।

8. सूरतनगरनिवासिनां वल्लभसम्प्रदायस्याचार्याणां गोस्वामिश्रीमथुरेशजीमहानुभावानामाश्रितः ठाढ़ी

ग्रामवासिनां प्रसिद्धनैयायिकानां विश्वनाथझा शर्मणां शिष्यपरम्परायां पण्डितश्यामसुन्दरझा[8] नामा नैयायिकः सप्तपञ्चाशत्तमे (1957) खीष्टाब्दे व्याप्तिपञ्चकमाथुरीजागदीश्योः सिंहव्याघ्रलक्षणजागदीश्याश्च चन्द्रिका नाम्नीं व्याख्यां विरच्य वाराणसीतः प्रकाशितवान्। व्याख्येयं छात्राणामत्र प्रवेशसौलभ्याय सोपानायमाना पंक्त्यक्षरानुसारिणी विषमस्थेलषु लक्ष्यलक्षणसंघटनपथोपदर्शनपुरस्सरा नातिविस्तरा नातिसंक्षिप्ता च यावदुक्तोपपन्नात्मनः चन्द्रिका नाम्नः सार्थकतां बिभर्ति।

9. लखनऊ नगरीय केन्द्रीय संस्कृतविद्यापीठस्य प्राचार्यः डॉ० श्री उमारमणझा[9] महोदयः भासर्वज्ञाचार्यस्य न्यायसारमधिकृत्यालोचनात्मकं प्रबन्धं न्यायसारविचारं प्रणीतवान् प्राकाशयच्च रणवीरकेन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठतः जम्मूनगरात्। नैकान् शोधनिबन्धान् विलिख्य विभिन्नासु पत्रिकासु च प्रकाश्य न्यायशास्त्रालोचने प्रवृत्तोऽयं यशोभाग् विद्यते।

10. पंक्तेरस्याः लेखकस्तु किशोरनाथझा[10] शर्मा प्रसिद्धनैयायिकस्य प्रो० श्री अनन्तलालठाकुरमहाशयस्यान्तेवासी न्यायदृष्ट्यात्मवादानुचिन्तनं नाम मौलिकं ग्रन्थं प्रणीय दिल्लीस्थ नागप्रकाशनतः प्राकाशयत्। अत्र गौतममुनिप्रणीतं न्यायसूत्रमारभ्य आत्मतत्त्वविवेकं यावत् अध्यात्मवादं समागतानां विचाराणां सङ्कलनमालोचनञ्चैतिहासिकशास्त्रीयदृष्टिभ्यां विहितम्। कालक्रमेण सिद्धान्तानां पल्लवनप्रदर्शने पूर्वोत्तरपक्षाभ्यां विषय-प्रस्तुतौ च प्रतिस्पर्धिनां बौद्धाचार्याणां मतान्यपि समीक्षितानि। संक्षेपेण दर्शनान्तरसिद्धान्ता अपि संगृह्य समालोच्य च सन्निवेशिताः। तेन विषयोऽयं पूर्णाङ्गतां भजति। अस्य समीक्षा नागपुरनिवासिना नैयायिकवर्येण प्रो० श्रीनारायणशास्त्रिद्रविडमहाशयेन कृता भारतीयदार्शनिकानुसन्धानपरिषत्पत्रिकायां (Journal of ICPR) प्रकाशितास्ति।

प्राचीनन्यायमधिकृत्य झामहोदयेनानेन लिखिताः त्रिंशद्भ्योऽप्यधिकाः निबन्धाः विविधासु भारतीयशोधपत्रिकासु प्रकाशिता उपलभ्यन्ते। अत्राल्पपरिचितानां लुप्तपरिचयानां च प्राचीनन्यायाचार्याणां मतानि प्रामुख्येन संगृहीतानि समालोचितानि चेति गवेषणादृष्ट्या महत्त्वमेषामङ्गीकृतं तद्विदिभः। एषु निबन्धेषु बहूनामुल्लेखस्तु पूनाविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागतः प्रकाशितायां न्यायदर्शनस्य विवरणिकायां विद्यते।

अत्रानुद्धृतानां केषाञ्चन नैयायिकानां निबन्धाः अखिलभारतीय प्राच्य विद्यामहासम्मेलनस्य दरभंगाधिवेशने (1948मे खीष्टब्दे) विभागीय सदसि पठिताः आलोचिताश्च। ते यथा ठाढ़ीग्रामवसिनः रुद्रधरझा शर्मणः अवच्छेदवादः, सरिसवग्रामवासिनः वाचस्पतिमिश्रस्य तमसोऽभावत्वसिद्धिः, सिंहवारग्रामवासिनः आनन्दझा शर्मणश्चाक्षुषं ज्ञानम्, दरभंगावासिनः शोभाकान्तजयदेवझा शर्मणः शक्त्याश्रयशब्दविमर्शेति सम्मुलेखमर्हन्त्यत्र।

अस्मिन्नवधौ न्यायशास्त्रमधिकृत्य हिन्द्यां व्याख्यां विदधत्सु मैथिल नैयायिकेषु समुल्लेखमर्हन्ति पण्डित दुर्गाधरझा, पण्डित आनन्दझा, प्रो० हरिमोहनझा, डॉ० श्रीनारायण मिश्रः, डॉ० किशोरनाथझा च। पण्डित दुर्गाधर झा[11] महाभागेन कृता न्यायकन्दल्याः न्यायकुसुमाञ्जलेश्च हिन्दी व्याख्या सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयतः, न्यायलीलावतीव्याख्या पुनः जयपुरनगरस्य राजस्थानविश्वविद्यालयतः प्रकाशिता। आनन्दझा[12] महाशयस्य पदार्थशास्त्रनाम्नी कृतिः वैशेषिकदर्शनस्य पदार्थानां परिचयं वैशद्येनाख्याति उत्तरप्रदेशस्य सूचनाविभागात् लखनऊनगरतः (1965 ई०) प्रकाशिता। पटना विश्वविद्यालयस्य दर्शनविभागे पूर्वप्राध्यापकः प्रो० हरिमोहनझा[13] न्यायपदार्थानां परिचयं स्वकीये हिन्दी न्यायदर्शननाम्नि ग्रन्थे प्रास्तोत्। वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य संस्कृत विभागे आचार्यः डॉ० श्रीनारायण मिश्रः[14] वैशिषिक दर्शननाम्नि ग्रन्थे वैशेषिकदर्शनपदार्थानां वैशद्येन विस्तरेण चालोचनं विधाय गवेषकाणामुपकारं व्यधात्। वाराणसीतः प्रकाशितेयं कृतिः। अस्य हरिदासीकुसुमाञ्जलिग्रन्थस्य विशदा व्याख्यापि वाराणसीतः प्रकाशितास्ति। अस्य न्यायनिबन्धाः शोधपत्रिकादिषु विदुषामभिनन्दनग्रन्थादिषु च सन्ति

प्रकाशिताः। पंक्तेरस्याः लेखकस्तु (किशोरनाथझा) न केवलं न्यायशास्त्रस्येतिहासं संस्कृतवाङ्मयस्य संकल्पिताया-मितिहासयोजनायां व्यलेखीदपि तु 'बौद्धदर्शन की पृष्ठभूमि में न्यायशास्त्रीय ईश्वरवाद' इति शोधप्रबन्धमपि विलिख्य प्राकाशयत्। अस्य समीक्षा संबोधिपत्रिकायां अहमदाबादनगरे प्रो० नगीनजी साह महाशयेन, प्राचीज्योतिपत्रिकायां कुरुक्षेत्रे प्रो० गोपिकामोहनभट्टाचार्येण, प्रज्ञालोकपत्रिकायां गोरखपुर नगरे प्रो० करुणेशशुक्लमहाशयेन च कृता प्रकाशितास्ति।

इदानीं न्यायदर्शनमधिकृत्य लेखनाध्यापनयोर्व्यापृतेषूल्लेखमर्हन्ति नवानी ग्रामवासी प्रसिद्ध बच्चाझा महाशयस्य पौत्रः श्रीरतीश झा, दरभंगावासी प्रो० श्रीशोभाकान्तजयदेव झा, व्युत्पत्तिवादगूढार्थ तत्त्वालोकस्य सम्पादकः पण्डित श्री कीर्त्यानन्द झा, पूना विश्वविद्यालयस्य संस्कृत विभागे आचार्यः नैयायिकाग्रगण्यः डॉ० वसिष्ठनारायणझा, मङ्गरौनी ग्रामवासी पण्डित श्रीरामसेवकझा, जम्मूनगरीयरणवीरकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठस्य प्राध्यापकः श्रीवैद्यनाथझा अन्ये चेति।

निबन्धेऽस्मन्नुल्लिखितेषु ग्रन्थलेखकव्याख्यातृषु धीधनेषु द्वौ धर्मदत्त(बच्चा)झा शिष्यपरम्परायां, द्वित्राः अन्यपरम्परायामवशिष्टाः अष्टौ ततोऽधिका वा वामाचरणभट्टाचार्यफणिभूषणतर्कवागीशयोः सम्मिलितशिष्यपरम्परायां विद्यन्त इत्यवधेय मिति।

सन्दर्भ :

1. मधुबनी मण्डलतः पूर्वस्यां दिशि क्रोशमिते दूरे राँटीग्रामे विदुषोऽस्य आवास आसीत्।
2. मधुबनीमण्डलतः पूर्वस्यां दिशि पञ्चक्रोशपरिमिते दूरे बिट्ठोनाम्नि ग्रामे लब्धजन्मायमित्यवधेयम्।
3. मधुबनी मण्डलस्य पूर्वस्यां दिशि षट्क्रोशमिते दूरे गंगौली नाम्नि ग्रामेऽस्य जन्माभूत।
4. दरभंगा मण्डलस्य पूर्वस्यां दिशि द्वादशक्रोशपरिमिते दूरे विद्यमानः उजाननामा ग्रामोऽस्य महाविदुषो जन्मस्थानं वर्त्तते।
5. मधुबनी मण्डलतः पश्चिमायां दिशि पञ्चक्रोशमिते दूरे ककरौड़ नाम्नि ग्रामे ह्ययं लब्धजन्मा विद्यते।
6. अयं हि मधुबनी मण्डलतः षट्क्रोशपरिमिते दूरे पूर्वस्यां दिशि लालगञ्जग्रामे लब्धजन्मा विद्यते।
7. अयमूर्ध्वनिर्दिष्टस्य पण्डितखड्गनाथमिश्रस्य ग्रामीणः दायादश्च।
8. अयं हि मधुबनीमण्डलतः दशक्रोशमिते दूरे पूर्वस्यां दिशि साडी ब्रह्मपुरग्रामे लब्धजन्मा विद्यते।
9. अयमुजानवासी पण्डितरूपनाथझानैयायिकस्य भागिनेयः। अस्य पितृकुलं मातृकुलं च नैयायिकैश्चिरकालादेव विद्यते विभूषितम्।
10. अयं मधुबनीमण्डलस्य बिट्ठोग्रामवासी कृष्णमाधवझाशर्मतनूजः।
11. अयं दरभंगामण्डलान्तर्गत उजानग्रामवासी इदानीं दिवङ्गतो विद्यते।
12. अयं दरभंगा मण्डलान्तर्गत सिंहवारग्रामवासी इदानीं दिवङ्गतः।
13. अयं वैशालीमण्डलान्तर्गत कुमरवाजितपुरग्रामवासी इदानीं दिवङ्गतः।
14. अयं पूर्णियां मण्डलान्तर्गत सुखसेनाग्रामवासी विद्यते।

●

History IN 'VIRUDAVALI' OF Lal Das

Prof. Ratneshwar Mishra

The Khandvala rulers Lakshmishwar Singh (1879–1898) and his brother and successor Rameshwar Singh (1898–1929) of Raj Darbhanga Played prominent part in public affairs and patronised poets and scholars noted for their deep knowledge of Sanskrit, but theirs was also a period of regeneration of Maithili language and literature. A well known court poet of Rameshwar Singh was Lal Das. The patron honoured the poet by offering him a dhoti (a loin cloth worn in India) and the title of **Pandit** (a learned person) and often addressed him as **Kayastharshi**[1]. No full scale and independent biography of Rameshwar Singh or history of his time is available so far. The nearest thing in this regard is a book of Stephen Henninghan,[2] Which portrays the time and achievements of the ruler on the basis of his speeches[3] and some archival materials, but doesn't show any awareness of the works of Lal Das or others, who were contemporaries and who wrote in Maithili. A well known contemporary was Parmeshwar Jha who wrote his famous **Mithila Tatva Vimarsh**,[4] a traditional historical treatise. Although Jha devotes only last five pages of his book in describing the exploits of his patron and Das inspite of his full book of eighty five pages hardly ever tries to be either a biographer or a historian in any sense of the terms. Yet both of them deserve to be consulted in preparing an authentic history of Rameshwar Singh's reign. **Virudavali**[5] of Lal Das in particular throws light on some of its aspects which may profitably be used for constructing a fuller account of Rameshwar Singh, his time as well as some institutions that existed then.

Virudavali is a panegyrical narrative in verse and Lal Das is perhaps the earliest known literateur of Maithili in Modern times to have attempted this genre of writing. Later Raj deo Sa with his **Darbhanga Varnan** and **Barhi Varnan** and Kashi Kant Mishra Madhup with his **Kohbar Geet** emulated his example but these narrative poetries were hardly encouraging and by their very nature proved to be of topical interest only.[6] Nevertheless, they contain historically quite significant information which may be used for coroborating or supplementing the information available elsewhere. **Virudavali** was published from the Darbhanga Raj Press in 1921 and is devoted to euloging the life and rein of Ramshwer Singh but in the process it also traces the earlier history of the Khandvala dynasty.[7]

As the very title of the book suggests, it is a totality of laudatory attributes or a panegyric. Obvious consequence of it is that the retrogressive disposition of Rameshwar Singh to such social reforms as promoting Hindu–Muslim amity, helping widow–remarriage and women–education, ameliorating the condition of the peasantry and

supporting the anti–British Indian nationalsim are not mentioned by the poet even whisperingly while elsewhere these are spoken of rather loudly.[8] He also mentions only passingly such events of the early part of his life as his success at the Enrance Examination only at the age of twelve, learning Sanskrit and Persian, becoming magistrate at Darbhanga, Chapra and Bhagalpur and his clash with his brother and obtaining Bachhaur Pargana for his upkeep.[9] Being beneficiaries of Rameshwar Singh's liberality neither Lal Das nor Parmeshwar Jha highlights his differences with his brother, though the latter mentions that thes differences between the two brothers had acquired such proportions that the Lt. Governor of Bengal Ashley Eden had to intervene which led to conferring of Pargana Bacchaur and a cash of Rs. three lakhs on his brother by Lakshmishwar Singh.[10] It is also suggested elsewhere that Rameshwar Singh has resented his growth under the shadow of his brother during the early part of his life presumably because at school he had shown greater intelligence than the latter.[11] Be that as it may, Rameshwar Singh after taking over the reins of the Raj conducted himself in a manner that gave him the image of a pro–British Hindu Chauvinist whose concern for the welfare of his people was only marginal and also confined mostly to religious activities.

The major part of **Virudavali** is devoted to describing Rameshwar Singh's religious achievements particularly his extensive tours to almost all the known pilgrimage centres of India, viz. Gaya, Kamakhya, Kashi, Ayodhya, Vindhyachal, Prayag. Kurukshetra, Thaneshwar, Jalandhar, Kotkangra, Mathura, Vrindavan, Puskhar, Dwarka, Prabhaskshetra, Sholapur, Kishkindha, Madurai, Rameshwaram, Kanchipuram, Sahyadri, Panchvati, Nasik, Avanti, Ajmer, Naimisharanya, Haridwar, Kankhal, Chitrakut, Vaidynath, Asansol, Calcutta, Puri etc. He visited many of these places more than once and spent lavishly on offerings to different deities and temples and feeding the Brahman's and the poor.[12] The poet depicts at length the mythological significance of most of these places and the whole narrative reads like a tourist guidebook for a religious itinerant. Similarly Lal Das also describes Rameshwar Singh's journey to Badrikashram and such other adjoining religious seats as Uttarkashi, Renukatrirth, Gangotri, Yamnotri, Kedarnath, Gaurikund, Kalimath, Ushimath, Hanumanchatti, Tungnath, Rakeshwari, Nandprayag, Garurganga etc. This journey was performed seperately after the previous extensive one and he visited most of these places several times.[13] Here it may be interesting to point out that the poet had a life time desire to go on pilgrimage which was fulfilled when he entered into the service of Rameshwar singh at the age of twentyfive and the **Virudavali** was composed by him out of sheer gratefulness.[14]

A particularly revealing information contained in the book is that on his return from the pilgrimage to his Zamindari, Rameshwar Singh received some sort of a letter from his

brother, Maharaja Lakshmishwar Singh, conveying him to take care of the Raj as he was in bad shape physically.[15] It is a well known fact that before his death due to a heart attack in 1898, the Maharaja suffered for several years from Bright's disease, a debilitating kidney ailment, but this is perhaps for the first time that a mention is made of a letter written by him, which could possibly be something like his will. It is gathered from some other sources that the Maharaja had fallen ill twice earlier also, once when he had gone to puna and a second time at Darbhanga itself, and on both the occasions he summoned the future ruler and confidentially told him certain things which might he of help to him in the proper management of the estate.[16]

On becoming Maharaja, Rameshwar Singh is depicted by Lal Das to have pursued a Brahminical daily routine which necessarily included Gayatri–Jap[17] and Samdhya–Vandan.[18] Not only did he follow the routine himself but caused the Brahmans to follow it unwaveringly and enthused them to propagate it amongst others also. He kept himself busied all the time in discharging religious duties, supporting the cows and the Brahmans and opening ashram (hermitage) for vedic studies. He reintroduced the well known practice of honouring men of letters with dhotis, prevalent in former years. He opened a number of Ayurvedic hospitals and English schools. These were perhaps the only public welfare activities of the new Maharaja beyond which nothing could be recounted even by a panegyrist. He was given the title of Maharaja Bahadur immediately after his accession and the hereditary one of Maharajadhiraj later on. He was bestowed with such decorative titles as K.C.I.E., G.C.I.E. and K.B.E.[19] Thus, the new Maharaja was far from being generous and the observation of stephen Henningham deserves to be quoted here. He writes "Neither did Maharaja Rameshwar Singh display humanitarian concern by spending more than a small portion of the massive profits of the estate on development initiatives or on the welfare of the common people .... consistent with the tradition of dispensing charity to reinforce the prestige of the Darbhanga raj and its owners, and to win British favour, the money was dispersed widely, both within Bihar and across India ...."[20].

His Charitable spending obviously seems meagre in comparison with the sum of over a crore of rupees which Rameshwar Singh later lavished on the building of a new seat for the Darbhanga Raj at Rajnager. As a matter of fact the major part of the narrative by Lal Das confirms the Maharaja's image of a staunch supporter of the traditional Brahminic Hindu religion, but in the process he also emerges as a builder. He got big ponds excavated at Madhubani and Pilakhawar. He constructed new temples of Kankali at Bhaur, Gauri and Shiv at Dokhar and Kali at Quilaghat in Darbhanga. A temple at Rohar and a Tara temple and another Kali temple at Madhweshwar in Darbhanga were built by him on the sites where the dead bodies of his father Maheshwar Singh, brother Lakshmiswhar singh and

grandfather Rudra Singh respectively were consigned to flames. He also got renovated the temple of Ram built by Rudra Singh at Nargona in Darbhanga. He built several temples at far off places in purnia, Khadgpur, Patna, Kashi, Kamakhya etc. special mention may be made of the elegant Kali temple and a palace buit by him on the banks of the Ganges in Patna where the various post graduate departments of Patna University are pesently being run. The crowning glory of his building abilities was, however, the new capital at Rajnagar on the eastern bank of the river Kamala where a palace at a cost of fifty lakhs of rupees and many number of smaller buildings, temples and gardens were laid out. He also spent lavishly on religious festivities and ceremonies. He is said to have performed putreshti Yajna[21] for begetting a son. This incident does not find a mention in other available sources; not even in Mithila Tatva Vimarsh. Lal Das goes on to describe that in due course the Maharaja was blessed with two sons and on the occasion of the sacred thread ceremony of his sons such big invitees as kings of Hathwa, Dumraon and sheohar and notables from puri, Prayag, Drupad, Bombay, Delhi and many places in Bihar flocked to Darbhanga. He, however, refers to a particular event that brought about some gloom on the occasion but does not speak about it in any worthwhile detail, nor is it mentioned in any other source.[22]

An event of enduring significance that took place during the time of Rameshwar Singh and the result of which seems to pester Mithila till today was the third congregation of Maithil Brahmans and Kayasthas in an attempt to restore to Mithila her pristine verve and glory.[23] Prior to narrating the happenings of the third one, Lal Das briefly traces the history of earlier congregations also; the first of which was held during the time of Hari Singh of Karnat dynasty and the second during that of Mahesh Thakur of Oinwar dynasty. According to him the Brahmans hailing from Kanyakubj and Kayasthas from Karnatak bearing different titles of Upadhyay, Ojha, Singh, Chaudhary, Pathak, Mishra etc. and of Das, Dutt, Kantha, Mallik etc. respectively upheld the dignity of householder's life by observing devout austerity and penance and engaging themselves in learned pursuits. Nevertheless, with the passage of time deterioration set in among them and it required a great effort on the part of Harisingh to introduce geneological registration to streamline the marriage relations of Brahmans and Kayasthas within their respective castes in such way as could ensure their marriages only outside prohibited degrees. Those who maintained these registers were knwon as Panjikars and were greatly honoured in the society.[24] According to Lal Das other castes were not found fit to get benefit of this system.[25] He asserts that it was on account of this system that the Brahmans and the Kayashtas of Mithila produced a galaxy of distinguished persons in different branches of learning viz. Mandan, Udayan, Vachaspati, Shankar, Mahesh Thakur, Vidyapati, Sahebram, Govind Thakur, Kalidas, Deonath Thakur, Gangeswhar, Gokulnath, Madan Upadhyay and others among the Brahmans and keshav das, Bodhidas, Dhirdas, Ghananand, Amikar Das, Prajapti Das and

others among the Kayasthas. But with the growth of population the Panjikars experienced difficulty in maintaining the geneologies and therefore, by convening a second congregation Mahesh Thakur helped to find a solution to the problem of introducing Shakha Panji or branch geneology based on root villages.[26]

It is, however, the third congregation, held at the instance of Rameshwar Singh that engages the attention of Lal Das most. Accordingly to him the King was the very inearnation of Vishnu and had descended on earth to lift Mithila out of the morass of ignorance, poverty and irreligious, unethical and indolent disposition of its people. It was with this view that he first started the journal Mithila Mahir and later convened a congregation of Brahmans and Kayasthas at Madhubani, Tulapati Singh, a scion of the Raj family and Vindhyanath Jha were asked to oversee the arrangements of the three day conference which was attended by people from Darbhanga, Madhubani, Samastipur, Bhagalpur, Muzaffarpur, Maldah, Alwar, Kashi, Puri, Jabalpur, Kanpur, Katihar, Purnea, Munger, Deoghar, Vindhyachal and elsewhere. Kapileshwar Mishra was made its secretary and parameshwer Jha, Harinandan Das and Advocate Bunni Lal its other functionaries. Some other persons like Arknath Babu, Keshi Mishra, Shrinath Mishra, Suresh Mishra, Ramnath Thakur, Kali Jha, Ramkrishna Jha, Sukhdeo Lal Das, Kunj Bihari Lal Das, Raghunath Das, Ras Bihari and many others were the members of the reception and other committees. The poet describes in great detail the arrangements of the conference which was attended by over fifty thousand Brahmans and Kayasthas and also others. Prominent among the participants were Kalanand Singh and Kirtyanand Singh of Champanagar, the overlord of Rajaura, Kalikanand Singh of Shrinagar. Amarindra Singh and his son Taranandji, shivji Babu, Babu Yadunandanji, Mahanth Banshidas of Pacharhi, Mahanth Devdas of Mirzapur, Harikant Choudhary of Pindaruchh, Rambhadra Jha, Harinarayan Jha, Jaideo Mishra, Harinandan Das etc.[27]

Seven main objects of the conference, knwon as Maithil Mahasabha, have been described by Lal Das as promotion of virtuous conduct, spread of eduction, proper expenditure, pursuit of considered profession, foresaking mutual antagonism, development of agriculture and avoidance of disorderly marriage. Resoulations on each of these were adopted. Kashi Mishra propsed the publication of a book in Maithili to highlight the achievements of the Maithils in by gone days and presumably it was as a follow up of this suggestion that Parmeshwar Jha wrote his famous **Mithila Tatva Vimarsh.** Rameshwar Singh himself called upon the Maithils to acquire ability and qualification and he assured to offer jobs to others only when qualified maithils were not forthcoming. He also gave rupees ten thousands and following him the Mahanth of Pancharhi one thousad, the ruler of Shrinager two thousands, other Brahman Zamindars a total of eight thousands, and the Kayasthas four thousends as donation for the maintenance of the Mahasabha, the meetings

of which continued to be held in future at different palces, viz. Madhubani, Darbhanga, Samastipur, Muzaffarpur, Betiah, Begusarai, Baunsi, Purnea, Supaul etc.[28] Unfortunately the Mahasabha remained confined to only two castes and did little to inculcate a wider sense of identity in the entire Maithili speaking region and population. The Yadavas of the region, for example, sought to join it but were rebuffed.[29]

The book ends with the observation that with the influence of Rameshwar Singh, the traditional Sanatan Dharm was saved.[30] Indeed Shri Bharat Dharam Mahamandal, Maithil Mahasabha, All India Hindu Dharmik Sabha etc. made him their life president. As early as in 1914 the title of Dharmratnakar had been bestowed on him at Jagannathpuri by a body of the representatives of all religions.[31]

To conclude, it may be said that Lal Das composed Virudavali for his own satisfaction and by way of thanks, giving to his patron but in the process he has given an eye witness account of an important period of the History of Mithila. A properly trained historian may call out useful details for preparing an authentic history albeit the book is otherwise only a piece of Maithili literature.

END NOTES.

1. Lal Das, **Rameshwarcharit Mithila Ramayan**, Kharaua, Darbhanga, 1954. p. jn.
2. Stephen Henningham, **A great Estate and its landlords in colonial India : Darbhanga 1860–1942** oup, 1990.
3. Rameshwar Singh, **speeches of the Honourable sir Rameshwar Singh, G.C.I.E., K.B.E., D.Litt., Maharajadhiraj of Darbhanga,** Calcutta, no date.
4. Parmeshwar Jha, **Mithila Tatva Vimarsh,** Patna, 1977.
5. Lal Das, **Virudavali**, Darbhanga, 1921.
6. Jaikant Mishra, **Maithili Sahityak Itihas,** Delhi, 1988, pp. 294–95.
7. **Virudavali**, pp. 1–5.
8. **A Great Estate**, pp. 96–127.
9. **Virudavali**, pp. 7-8.
10. Mithila Tatva Vimarsh, pp. 195–196.
11. Chester Menaughaten to Major J. Burn, Darbhanga Raj Manager, 17 Dec. 1870 in Govt. of Bengal Land Revenue Proceedings. November 1871.
12. **Virudavali**, p. 8–22
13. Ibid, pp. 23–41.
14. Ibid., preface, p.1.

15. Ibid, P. 41.
'Rajapath sabh del bhay kan likhal patra kamniyan'
16. **A Great Estate**, pp. 93–94.
17. Gayatri–Jap means adoration by repeating the encantation dedicated to the Hindu deity named Gayatri.
18. Samdhya – Vandan means selected Vedic hymns recited in the morning and evening prayers.
19. **Virudavali**, pp. 41–44.
20. **A great Estate,** p. 108.
21. Putreshti yajna means a sacrifice for the sake of begetting a son.
22. Virdudavali, pp. 44–60.
23. Ibid, p. 70.

Jehne Chhal Vidyak Samunnati Sabh Prakar Mithila mein
Tehne Se Sithila Bhay Geli Ati Jad Jnan Kala Mein

24. See Ugranath Jha, **Geneologies and Geneologists of Mithila,** Varanasi, 1980.
25. **Virudavali,** p. 69.

Mithilavani katek Jati mein bhalmanush dui Jati
Brahman Maithil Karn Kriya Yut bujhal gela samghati
Tain Harisingh deo duhu jatik kayalani bandh supanji
Apar jati mein Yogya na paol tanikar panjee bhanji

26. Ibid, pp. 61–69.
27. Ibid. , pp. 72–78.
28. Ibid, pp. 78–84.
29. Rabindra Roy, The indianization of the Maithila; Allahabad, Project Report no. 29, Govind Ballabh Pant Social Science Institute. 1987.
30. **Virudavali**, P. 85.

Shri Mithileshak pratap saun, bachal sanatan Dharam
Karathi lok tehividh kriya, jani sukarmmak marmm

31. **Mithila Tatva Vimarsha** pp. 199–200.



क्या कुमारिल मैथिल थे ?

डॉ. उदयनाथझा 'अशोक'

मूर्द्धन्य मीमांसक होते हुए भी यही एक थे, जिन्होंने शंकराचार्य के अद्वैतमत के प्रसारण से पहले ही समाज में क्षेत्र तैयार किया तथा जिसके कारण ही आचार्य शंकर को वेद-विरोधियों के उन्मूलन एवं राष्ट्रीय किंवा सांस्कृतिक ऐक्य निर्माण करने में सहयोग प्राप्त हुआ।

वस्तुतः शंकराचार्य के अद्वैत के प्रचार-प्रसार से पहले ही कुमारिल ने वैदिक-भूमिका का निर्माण कर लिया था। कुमारिल ने जिस धरा पर एक भव्य भवन की नींव रक्खी थी, उसी नींव से शंकर ने अद्वैत मन्दिर की प्रतिष्ठापना की। शायद यही कारण था कि शंकर भगवत्पाद ने उस महामनीषी जड़ाजर्जर काया कुमारिल को अपने भाष्य दिखाने हेतु उत्तर की यात्रा की। जिस समय शंकर कुमारिल के पास पहुँचे, वे प्रयाग क्षेत्र में स्वयं चिता निर्माण कर उसमें प्रवेश कर चुके थे। कुमारिल ने शंकर से कहा– 'अब देर हो चुकी, समय शेष नहीं है। तुम द्रुत गति से, भले आकाशमार्ग का अवलम्बन लेकर ही क्यों न हो, मिथिला जाओ। जीवन का कोई भरोसा नहीं। वहाँ हमारे शिष्य और मनीषी मण्डन मिश्र, विश्वरूप मिश्र आदि होंगे, उन्हें अपने भाष्य का अवलोकन कराना तथा उन्हीं लोगों से आपकी अभिलाषा[3] पूर्ति भी हो सकेगी।[4]'

प्रज्वलित चिता पर बैठे कुमारिल अपने उपस्थित शिष्यों से यह कहना न भूले कि– ''इनका अभिवादन करो, इन्हें अर्घ्यपाद दो। ये सन्यासी हैं, इनकी पूजा करो और इन्हें सादर भिक्षा दो।'' तभी वे प्रयाग के त्रिवेणी तट पर कुमारिल के शिष्यों द्वारा पूजे गए और उन्हें भिक्षा दी गई। जिस समय शंकर त्रिवेणी तट पर पूजे जा रहे थे, उधर कुमारिल तुषानल की चिता में हँसते-खेलते, मधुर मुस्कान लिए विलीन हो रहे थे।

जब आद्य शंकराचार्य ने कुमारिल से यह जिज्ञासा की कि आपने ऐसा मरणव्रत क्यों कर रक्खा, जबकि आपके सदृश महात्मा पुरुष पर कोई भी व्यक्ति अनैतिकता का आरोप लगा नहीं सकता, तो कुमारिल का क्या जवाब था, मननीय है– ''नहीं, पाप तो मुझसे ही हुआ है। एक तो मैंने सभी लोगों के सामने वेद विरोधी गुरु को शास्त्रार्थ के लिये ललकारा, जबकि मैंने उनके मन का ग्रन्थ उन्हीं के मुख से पढ़ा था। दूसरा जैमिनि दर्शन के मण्डन के समय मैंने कई-एक स्थानों पर ईश्वरीय सत्ता को नकारा है। फलतः यह प्रायश्चित्त भी मेरे अन्तःकरण के निष्पक्ष निर्णय के अनुकूल ही है।

जिस गुरु से धर्मविशेष का अध्ययन किया, उन्हें ही वंचन देकर शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दिया- बस इतनी सी बात को लेकर इस तरह अपने प्रायश्चित को पूरा करना कि जीवित शरीर को ही एक ऐसी आग में दग्ध करना जो बहुत धीरे-धीरे भयंकर कष्ट के साथ जलाये - दूसरों से बन पाना कठिन है। तुषानल की चिता में जलना ही यातना के साथ मरना है। आज यदि कुमारिल न होते तो इस तरह की यातना भरी मृत्यु की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

हुआ यह कि एक दिन कुमारिल वेदविरोधी तर्कों को जानने के लिए छद्मवेष धारण कर बौद्धाचार्यों के पास शिष्य बनकर चले गये। कुछ दिनों बाद जब अध्यापन के समय गुरुजी वेद की आलोचना कर रहे थे, तो कुमारिल की आँखों से अविरल जलधारा आ पड़ी। लड़कों ने गुरूजी को इनके रोने की सूचना दी, गुरूजी को विश्वास हो गया कि यह वेदमार्गी है, तब गुरूजी ने इन्हें वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी। पर, यह तो था कुमारिल, जो जाने के बजाय गुरू जी को ही शास्त्रार्थ के लिए ललकार बैठा। प्रायः कुमारिल के इसी अपराध का फल था कि उन्हें अपना ही शिष्य प्रभाकर भी सैद्धान्तिक दृष्टि से इनका कभी साथ नहीं दिया।

जो हो, कुमारिल देश-दुःख के कारण एक निर्लिप्त, निष्काम योगी की भाँति पूरा जीवन अलख जगाते रहे। वे

क्या उत्तर, क्या दक्षिण, क्या पूरब, क्या पश्चिम; सर्वत्र एक वैचारिक क्रान्ति के लिए, सांस्कृतिक युग-प्रवर्त्तन के लिये घूमते रहे। यहाँ तक कि नालन्दा विश्वविद्यालय के प्रधान पण्डित धर्मपाल का शिष्यत्व भी स्वीकार कर उन्होंने बौद्ध दर्शन को ठेंठ पाली भाषा में पढ़ा, गुना और समझा। ताकि वैदिक मत का युक्तियुक्त किंवा सशक्त मण्डन सम्भव हो सके। फिर भेद खुलने पर कुमारिल वहाँ से एक आँख गँवाकर ही लौटे। मानो देश हित में उन्होंने अपनी तरूणाई में ही एक नेत्र वेद विरोधियों की वेदी पर चढ़ा दिया हो। सुनते हैं कि वेद विरोधी मतों के खण्डन में जब कुमारिल सन्नद्ध होकर इतस्ततः घूम रहे थे, उसी समय वेद विरोधियों ने उनका प्राण लेना चाहा। उन्हें एक अट्टालिका के श्रृंग से नीचे फेंका गया, पर वे बच निकले। कहते हैं फेंकने से पहले इन्होंने शंकालु हृदय से यह कहा था कि यदि वेद सत्य है, यदि वह स्वतः प्रमाण है तो मुझे कुछ भी नहीं होगा-

''पतन्पतन्नसौ धतलान्यरोरुहं यदि प्रमाणं श्रुतयो भवन्ति।
जीवेयमस्मिन्यतितो समस्थले मज्जीवने तच्छ्रुति मानता गतिः।।''

गिरने के बाद उपस्थित जनसमुदाय दंग रह गया। इतनी ऊँचाई से गिरने पर भी कोई व्यक्ति वेद का नाम लेकर जिन्दा रह सकता है क्या? डॉ० नागराजजी भट्ट इसी कथा को राजा सुधन्वा के दरबार की कथा मानते हुए लिखते हैं कि अट्टालिका से गिरने पर कुमारिल ने अपनी एक आँख खो दी। स्वयं कुमारिल ने भी यह स्वीकार किया कि 'यदि मैं वेद को शंकालु दृष्टि से न देखा होता, ''यदि वेदाः प्रमाणं स्युः'' में ''यदि'' पद का व्यवहार न किया होता, तो मुझे बाल भी बाँका न हुआ होता।' कैसा विश्वास था वेद पर, कैसी आस्था थी वैदिक सिद्धान्त पर और क्या कर दिखाया वेद के लिए उन्होंने।

यह सही है कि अपने विचार के प्रचार-प्रसार के लिये वे सुदूर कर्नाटक तक भी गए। क्योंकि वहाँ सर्वत्र वेद विरोधियों का ही वर्चस्व व्याप्त था, वे उपेक्षित और बहिष्कृत थे। वहाँ का राजा सुधन्वा वेदमार्गी होकर भी वेद विरोधियों के आगे निरुपाय था। उसका दरबार वेद विरोधियों से भरा पड़ा था, जबकि उसकी रानी एक जाग्रत महिला थी और राज्य की इस दुःस्थिति से दुःखी थी। एक दिन उसकी यही संचित वेदना जब वह प्रासाद के गवाक्ष में एकाकी बैठी थी, बहिर्गत हो पड़ी, एक दीर्घोच्छ्वास के साथ कि– **''कि करोमि क्व गच्छामि को वेदान् उद्धरिष्यति।''**

क्या करूँ, कहाँ जाऊँ? कौन है जो वेदों को इस अन्धतमिश्रा से, घोर विस्मृति से उद्धार करेगा? योगायोग की बात थी कि तभी उसी समय उस प्रासाद के नीचे से महान् प्रवासी परिव्राजक भट्ट कुमारिल भी इसी चिन्तनधारा से प्रेरित-उद्वेलित अपने रास्ते जा रहे थे कि उन्होंने रानी की ये दुःखसन्तप्त वाणी सुनी। तत्काल ही उस ज्ञानदा स्त्रीरत्न को वे सम्बोधित कर कह उठे– ''मा विषीद वरारोहे भट्टाचार्याऽस्मि भूतले''।

हे देवि! तू चिन्ता क्यों करती हो। मैं कुमारिल भट्ट तो इस भूतल पर विद्यमान हूँ। मैं करूँगा वेदों का इस स्थिति से उद्धार। बदलूँगा देश की इस दशा को और युग परिवर्तन कर डालूँगा। देश की इस महान् विभूति के मुख से यह वाणी निकली ही थी कि आश्वस्त और चमत्कृत, विस्मित हो उठी, महाराज सुधन्वा की वह विदुषी राजमहिषी; जिसे पति का मौन और निष्क्रियता सहन नहीं हो रही थी, और न दरबारियों के, न मन्त्रियों के वेद विरोधी षडयंत्र ही बर्दास्त हो रहे थे।

राजा सुधन्वा को यह स्थिति विरासत में मिली थी। उनका पूरा राज्य ही वाममार्गियों, वामाचारी भ्रष्ट वेद-घातियों से आकीर्ण था। उसी स्थिति में वे पले-बढ़े और राज्यारूढ़ हुए। स्वयं तो कभी अपनी आस्तिकता के कारण वेदों की निन्दा न कर सके, पर अपनी कायरता और भीरुता के कारण मंत्री परिषद द्वारा हो रहे खुले आम वेद-बहिष्कार को मूक और अन्ध होकर ढोते भी चले जा रहे थे। ऐसे में वेदों का नामलेवा घृणा और तिरस्कार का शिकार बनता

था। अपने प्रवासकाल में कुमारिल ने जब यह दारुण स्थिति अपनी आँखों देखी, तो एक दिन भरे दरबार में डंके की चोट पर कह ही दिया–

''मलिनैश्चेन्न संगस्ते नीचैः काककुलैः पिकः।
श्रुतिदूषक निहलदैः श्लाघनीयस्तदा भवेः।।''[5]

''अरी कोकिले! काश, यदि तुम्हारा साथ इन नीच, मलिन, श्रुति (वेद एवं कान) दूषक काक (वेददूषक एवं कौवे) से न होता, तो अवश्य ही तेरी सराहना होती।'' सुनते ही उपस्थित वेदघाती समुदाय बहुत कुपित हुआ, किन्तु अकेला कुमारिल न केवल निर्भय अडिग खड़ा रहा, बल्कि अंगद के समान पाँव रोपकर दूसरा प्रहार भी कर दिया– ''जिसने माँ का दूध पीया हो, सामने आकर अपनी मनीषा का मुकाबला भी कर ले।'' कोई भी माँ का लाल सामने न आया, सब के सब दाँत पीसते रह गये, हाथ मलते रह गये और होंठ दबा के रह गये। कुमारिल का यह गर्वोक्तिपूर्ण ललकार राजा को बुड़ी न लगी, अपितु जैसे सोते से सहसा जाग उठे हों; उनकी तन्द्रा भंग हुई। उन्होंने सोचा, यह सत्पुरुष जो भी कह रहा है, सच है, यथार्थ है, मुझे न केवल दुष्टों का परित्याग कर देना चाहिए, बल्कि वैदिक धर्म की उद्घोषणा भी कर ही देना चाहिए। उन्हें बीच मझधार में सहारा मिला, भटकते को मार्ग दिखा। तत्काल ही उन्होंने वेदविरोधियों से मंत्रीपरिषद को मुक्त कर दिया और घोषणा कर दी कि वैदिक धर्म ही राजधर्म है, भले स्वेच्छा से कोई भी व्यक्ति वाममार्ग का आश्रय ले या फिर अन्य मत और सम्प्रदाय की उपासना करे। लेकिन राजधर्म वैदिक ही होगा, जिसे किसी भी अन्य धर्म और सम्प्रदाय से द्वेष या विरोध नहीं।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ''कृण्वन्तो स्वयमार्यः'' एक आवश्यक आधार है। राजा सुधन्वा ने इसे प्राप्त कर एक आदर्श परम्परा की स्थापना की, जिसका श्रेय आचार्य कुमारिल को ही जाता है। इनका सिद्धान्त ही कुछ यों था कि सभा में प्रविष्ट होकर जो व्यक्ति न्याय की बात नहीं कहता या फिर अन्याय का पक्ष लेता है, वह निःसन्देह ही पाप का भागी बनता है। कुमारिल पाप का भागी बनना नहीं चाहते, वे पाप करनेवालों से पाप सहनेवालों को कहीं अधिक पापी समझते थे।

तीन सहस्त्र अण्ठानवे श्लोकों वाला श्लोकवार्तिक, तंत्रवार्तिक, टुप्टीका, वृहद्टीका, मध्यमटीका और मानव कल्पसूत्र पर की गई टीका - कुमारिल की अनुपम रचनायें हैं। इनमें मीमांसा दर्शन के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के श्लोकबद्ध प्रथम भागात्मक टीका को म.म. पार्थसारथि मिश्र ने व्याख्या करके सरल कर दिया है। द्वितीय भाग में मीमांसा दर्शन का अग्रिम अंश सहित तृतीय अध्याय के अन्त तक ही व्याख्या हुई है; जबकि शेष भाग की व्याख्या टुप्टीका के नाम से प्रसिद्ध है। इनके श्लोकवार्तिक पर उम्बेक मिश्र कृत तात्पर्य दीपिका, सुचरित मिश्र की काशिका, पार्थसारथि मिश्र की न्यायरत्नाकर टीका जहाँ सुप्रसिद्ध हैं; वहीं तंत्रवार्तिक के टीकाकारों में सोमेश्वर भट्ट, नारायण भट्ट और अन्नम्भट्ट मुख्य हैं। ऐसे ही टुप्टीका के व्याख्याकारों में पार्थसारथि मिश्र, वेंकट दीक्षित आदि उल्लेखनीय एवं अन्यतम हैं।

कुमारिल के आगे उद्दिश्य प्रमाण वचनों से यह स्पष्ट होता है कि कुमारिल से पहले शाबरभाष्य की न्यूनातिन्यून छः व्याख्यायें लिखी जा चुकी थीं, जिससे सिद्ध होता है कि शाबरभाष्यकार शबरस्वामी कुमारिल से बहुत पहले ही स्थित थे।

परन्तु कैसी विडम्बना है कि ऐसी महान् विभूति के विषय में जानकारी के लिए हमें तिब्बती लेखक लामा तारानाथ पर निर्भर होना पड़ता है, जिनके ग्रन्थ 'चोसव्युंग'' से कुमारिल विषयक जानकारी को कई-एक देशी और तिब्बती ग्रन्थकारों ने उद्धृत की है। 'हिष्ट्री ऑफ इण्डियन लाजिक'[6] नामक ग्रन्थ में तिब्बती मतानुसार भट्ट कुमारिल का परिचय प्राप्त होता है। परन्तु इसे न तो परिपूर्ण कहा जा सकता और न ही भ्रामक, तथ्यविहीन ही। तिब्बती विद्वान

तारानाथ इन्हें जहाँ दाक्षिणात्य कहते हुए चूड़ामणि राज्य के त्रिमलय नामक नगर का वासी मानते हैं; वहीं, शंकर दिग्विजय, ग्रन्थ के रचयिता दाक्षिणात्य पं० आनन्द गिरि ने अपने ग्रन्थ में इन्हें उत्तर के किसी अज्ञात स्थान का स्वीकार किया है। लामा तारानाथ के कथनानुसार इनके पिता कोरुदण्ड (कोरूनन्द?) वेद विरोधी फक्कड़ किस्म के आदमी थे तथा तिब्बती ग्रन्थ ''अउअचसुङ्'' एवं 'चोसव्युंग'' के अनुसार कुमारिल सद्गृहस्थ थे, जिनके पास सैकड़ों एकड़ जमीन, 500 सेवक तथा उतनी ही सेविकायें उनकी सेवा में सतत् समुद्यत रहा करती थीं। तत्कालीन राजे-महाराजे भी उनकी अभ्यर्थना में लगे रहते थे। इतने बड़े धनाढ्य और वैभवविलास से युक्त कुमारिल के ही चाचा थे परमाचार्य बौद्ध दार्शनिक धर्मकीर्त्ति, जिन्हें महान् दार्शनिक एवं सुप्रसिद्ध विद्वान् शालिकनाथ मिश्र ने ''पौर्वात्याः'' कहकर पूरब का माना है।

इनका समय विद्वानों ने छठी - सातवीं शताब्दी का मध्य बतलाया है और कहा है कि कुमारिल आद्य शंकराचार्य के समकालीन थे। यहाँ मुझे थोड़ी सी विमति है कि कुमारिल जब वयोवृद्ध थे, तब शंकराचार्य यौवन की वेदी पर आसीन थे। शंकर कुमारिल के शिष्यों से भी कम आयु के थे। यहाँ कुछ लोगों ने शंकर को कुमारिल से मात्र 48[7] या 58 वर्ष न्यून माना है, जो अनुसन्धेय है। यह बात सही है कि कुमारिल द्वारा उद्धृत होने से सुन्दर पाण्ड्य एवं समन्तभद्र दोनों इनके पूर्ववर्ती थे। परन्तु इस बात का कहीं भी यह अर्थ नहीं निकल सकता कि ये आचार्यद्वय कुमारिल से कितने वर्ष प्राचीन हैं अथवा दोनों में कितनी अवधि का अन्तर था।

किसी ने ''जिन विजय'' नामक ग्रन्थ का उद्धरण देते हुए पं० युधिष्ठिर मीमांसकजी को यह लिखा था कि कुमारिल भट्ट आन्ध्रोत्कल देश के संगम पर महानदी के किनारे स्थित जयमंगल नामक ग्राम के वासी थे। कृष्ण यजुर्वेद शाखा से सम्बन्धित आन्ध्र जातीय विप्र प० यज्ञेश्वर, कुमारिल के पिता एवं चन्द्रगुणा माता थी–

''आन्ध्रोत्कलानां संयोगे पवित्रे जयमङ्गले।
ग्रामे तस्मिन्महानद्यां भट्टाचार्य कुमारकः।।
आन्ध्रजातिस्तैत्तिरीयो माताचन्द्रगुणा सती।
यज्ञेश्वरः पिता यस्य...........।।
महावादिर्महान्योरः श्रुतीनां चाभिमानवान्।
जिनानामन्तकः साक्षात् गुरू द्वेष्यातिपापवान्।।

इनका जन्म जैन युधिष्ठिर संवत् के 2077 वर्ष व्यतीत होने पर हुआ था। जैन युधिष्ठिर संवत् का आरम्भ 2577 वि०पू० बनता है, जिससे कुमारिल का जन्म 2577–2077=500 वि०पू० सिद्ध होता है।

''ऋषिवारस्तथापूर्ण मत्स्याक्षौ वाममेलनात्।
एकीकृत्य लभेताङ्कः क्रोधी स्यात्तत्रवत्सरः।।
भट्टाचार्य कुमारस्य कर्मकाण्ड वादिनः।
ज्ञेयः प्रादुर्भवस्तस्मिन् वर्ष यौधिष्ठिरे शके।।''

अर्थात् 2109 जैन युधिष्ठिर शक में कुमारिल को परास्त किया गया, जबकि उसका पराभाव 468 वि०पू० में हुआ था–

''नन्दाः पूर्णभूश्च नेत्रे मनुजानां च वामतः।
मेलने वत्सरो धाता युधिष्ठिर शकस्य वै।।

भट्टाचार्य कुमारस्य कर्मकाण्डस्य वादिनः।

जातः पराभवस्तस्मिन् विज्ञेयो वत्सरे शुभे।।''

16 वर्ष की अवस्था में शंकर कुमारिल से मिले, ऐसी 'जिन विजय' ग्रन्थ की मान्यता है–

''पश्चात् पंचदशे वर्षे शंकरस्यगते सति।

भट्टाचार्य कुमारस्य दर्शनं कृतवान् शिवः।।''

इतना ही नहीं, यहाँ यह भी बताया गया है कि शंकराचार्य का परलोक गमन 2157 जैन युधिष्ठिर शक यानि 420 वि०पू० में हुआ था–

''ऋषिर्बाणस्तथा भूमि मत्स्याक्षौ वाममेलनात्।

एकत्वेन लभेताङ्क ताम्राक्षस्तत्र वत्सरः।।''

'पंचश्लोकी मंजरी' में भी शंकर के परलोक गमन का यही काल बताया गया है–

''महेशांशाज्जातो मधुरमुपदिष्टा द्वय नयो

महामोहध्वान्त, प्रशमनरविः षण्मतः गुरुः।

फले स्वस्मिन् स्वायुष्यपि शरचराब्देऽपि च कले

विलिल्ये स्वताक्षिण्यधिवृषमितैकादशि परे।।''

'जिन विजय' वाले इन उद्धरणों को जैमिनीय मीमांसा भाष्य की भूमिका में उद्धृत करते हुए आचार्य युधिष्ठिर मीमांसकजी यह स्पष्ट बताते हैं कि– ''जिन विजय जाली भी हो सकता है।''[8] यदि ऐसी बात हो तो 'जिन विजय' के नाम से प्राप्त कुमारिल का सारा परिचय प्रमाणाभाव में कपोलकल्पित ही सिद्ध होगा।

एक लेख के अनुसार कुमारिल के पिता का नाम कणाद और पितृव्य का नाम धर्मकीर्ति था।[9] उक्त लेख में कुमारिल को असम प्रान्तीय प्रमाणित किया गया है तथा उनके विषयक असमीय लोक प्रवादों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। जबकि उसमें यह भी बताया गया है कि कुमारिल अपने पितृव्य धर्मभट्ट (जो बाद में बौद्ध बनकर ''धर्मकीर्ति'' नाम से प्रसिद्ध हुए) से सांगवेदाध्ययन करके उन्हीं से बाद में शास्त्रार्थ भी किये थे। धर्मकीर्ति के बौद्ध परिव्राजक बनने की कथा के साथ-साथ उक्त प्रबन्ध में यह भी कहा गया है कि राजा भाष्कर वर्मा के आदेश से कुमारिल मगध आकर बौद्ध दार्शनिक धर्मकीर्त्ति से शास्त्रार्थ में पराजित हुआ था। बौद्ध दर्शन में निपुणता न होने के कारण कुमारिल भट्ट बौद्ध दर्शन के रहस्यों को जानने के लिये बौद्ध विद्यार्थी का छद्मवेष धारण कर अनुनय-विनय एवं शुश्रूषा से दूसरे[10] गुरु को प्रसन्न कर निरवशेष बौद्ध दर्शन के रहस्य को प्राप्त किया। तत्पश्चात् उस लेख में बौद्ध छात्रों के बीच कुमारिल का पहचाना जाना, पर्वत शिखर से गिरना आदि कथा वर्णित है। इसी क्रम में असमीय लोकगीतों का, जिनमें कुमारिल की अनुश्रुति प्राप्त होती हैं– संस्कृत अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है।

मिथिला की लोककथायें एवं सैकड़ों वर्ष पूर्व का 'पंजीप्रबन्ध'' यह सिद्ध करता है कि कुमारिल भट्ट न केवल मैथिल थे, अपितु मड़रय मूलक मैथिल ब्राह्मणों के बीजी पुरुष भी थे। महान् दार्शनिक और मीमांसक जय मिश्र इन्हीं कुमारिल के पुत्र थे, जिन्होंने अपनी सारी विद्यायें पिताश्री से ही प्राप्त की थी। मीमांसक मूर्द्धन्य मण्डन मिश्र, प्रभाकर मिश्र, विश्वरूप मिश्र, विभाकर मिश्र, विद्याकर मिश्र (प्राचीन), विद्यानन्द मिश्र आदि सारे समकालीन मैथिल मीमांसक, आचार्य कुमारिल के ही शिष्य थे। जिन (कुमारिल) का निवास स्थान या ग्राम अधुना दरभंगा जिलान्तर्गत मनीगाछी (एन०ई०आर० रेलवे स्टेशन) के पास ''भट्टपुरा'' नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर स्थित 'कुमारिल कानन' आज भी उनकी याद दिला रहा है। जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्दजी महाराज ने भी अपने एक

संस्मरण में कहा है कि ''कुमारिल भट्ट महोदय की जन्मभूमि भी शंकर मिश्र महोदय की जन्मभूमि के पास में ही है।''[11] इनके अनुसार, महामीमांसकाचार्य म०म० मण्डन मिश्र जहाँ ब्रह्मा जी के अवतार थे, वहीं कुमारिल भट्ट कार्तिकेय स्वामी के। ये दोनों गुरू-शिष्य द्वैती-अद्वैती सब कुछ थे। बस, केवल लीला करने के लिए ही तो अपने आपको इस जगत में लाये और प्रखर मीमांसक के रूप में प्रस्तुत किये। जबकि ये वस्तुतः समग्र शास्त्रों में, दर्शनों में निष्णात थे।'[12]

कुछ लोग कुमारिल को भवभूति के भी गुरू मानते हैं। इनके मत में भवभूति ही उम्बेक थे। इसका आधार 'मालती माधव' के कुछ संस्करण अथवा पाण्डुलिपि को कहा जाता है, जिसमें लिखा है कि– ''इति श्री भट्ट कुमारिल शिष्य कृते मालती माधवे तृतीयोऽङ्कः'' तथा - ''इति श्री कुमारिल स्वामि प्रसाद प्राप्तवाग्वैभव श्रीमदुम्बेकाचार्य विरचिते मालतीमाधवे षष्ठोऽङ्कः।'' इन उद्धरणों से यह सिद्ध होता है कि भवभूति और उम्बेक न केवल एक थे, बल्कि कुमारिलस्वामी के शिष्य भी थे। 'नयन प्रसादिनी' व्याख्या में भी 'उम्बेको भवभूतिः' करके दोनों को अभिन्न माना गया है, परन्तु ये उद्धरण किंवा संस्करण कितने प्रामाणिक हैं, कहना कठिन है। तभी तो के०टी० तैलंग, बुहलकर, वेलवल्कर आदि विद्वान इन बातों से सहमत नहीं दिखते। जहाँ ये सभी विद्वान् आचार्य उम्बेक मिश्र को कुमारिल का शिष्य मानते हैं, वहीं उन्हें भवभूति से सर्वथा भिन्न भी। जबक कुछ लोग भवभूति, उम्बेक, मण्डन और सुरेश्वर सभी को परस्पर एक प्रतिपादित करते हैं।[13] डॉ० भट्टाचार्य के अनुसार माधव कृत वृहच्छंकर - विजय में भी मण्डन का दूसरा नाम उम्बेक ही लिखा है।[14] परन्तु हमारी धारणा इन सब के विपरीत जाती है, क्योंकि हमने यह पाया है कि मण्डन - विश्वरूप - उम्बेक सभी भिन्न हैं तथा इन सभी से भवभूति सर्वथा भिन्न। ''सुरेश्वर'' नामधारी आचार्य तो विश्वरूप हुए, जो आदि शंकराचार्य से पराजित हुए माने जाते हैं। इति –

संदर्भ :

1. मधुर लोक - 28/7 वचनेश त्रिपाठी का लेख ''वैचारिक क्रान्ति का उद्गाता कुमारिल भट्ट''
2. कहते हैं शंकराचार्य कुमारिल से अपने भाष्य पर वार्तिक लिखबाने गये थे - 'उज्जीवयामि करजाम्बुकणोक्षणेन, भाष्येऽपि मे रचय वार्तिकमङ्ग दिव्यम् (भव्यम्)।'' 'शंकर दिग्विजय, माधवाचार्य)।
3. शंकरभाष्य पर व्याख्या लिखबाने की इच्छा।
4. ``.......सर्वासुशास्त्रसरणीषु च विश्वरूपो मत्तोधिकः प्रियतमः समदाश्रवेषु..........।''
5. शंकर दिग्विजय - 1/65
6. पृ० 305
7. वृहच्छङ्कर विजय - चित्सुखाचार्य
8. परमार्थ सुधा - काशी - 1/3, 4/1
9. जैमिनीय मीमांसा शाबरभाष्य - III, पृ० 8-15
10. धर्मपाल (?)
11. वाचस्पति मिश्रः एक संस्मरण - सम्पादक पं० सहदेव झा, अन्धरा ठाढ़ी, मधुबनी, 1995, पृ० - 12,
12. वही, पृ० 21-22
13. आइ०एच०एस० 7, डी०सी० भट्टाचार्य एवं एच०सी०एस०एल०, पृ० 620, एम० कृष्णमाचारियर
14. वहीं, पृष्ठ - 113-116

परिशिष्ट

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कैँ समर्पित अभिनन्दन-पत्र एवं प्रशास्ति-पत्र

मैथिल विद्वज्जन समिति, काशी

श्रीः

मैथिलीकविताकाननकमनीयकोल्लासनकोकिलानामभिनवभाववैभवविभूषितसत्काव्यनिर्माणनिपुणानां ''श्रीचन्द्रनाथमिश्राणाम्'' अमर इत्याख्यप्रख्यापितानां प्रथितयशसां सम्मानसंवर्धनाय **''कविरत्नम्''** इत्युपाधिदानावसरे समर्पितोऽयं–

पद्यप्रसूनाञ्जलिः

(1)

यस्याः पदन्यसननूपुरमञ्जुरावै-रावर्जितोऽस्ति भगवानपि रामचन्द्रः।
सालङ्कृता गुणवती रसभावभव्या श्रीमैथिली चिरमुदेतु मुदे बुधानाम्।।

(2)

नृत्यत्पदस्फुरणताललयानुसारि-मञ्जीर-झङ्कृत-विजृम्भितनादलीला।
कर्णे सुधां सुमनसां भृशमुद्गिरन्ती सम्मोदयत्यमरसूक्तिसरस्वती ते।।

(3)

वीचीचयेन रससम्भृतवैभवेन तीव्रप्रवाहभर-निर्भर-सुन्दरेण।
सुस्रोतसा विमलशीतल-जीवनेन निःष्यन्दते सहृदयाय सरस्वती ते।।

(4)

कर्णोत्सवानि रुचिराणि रसायनानि काव्यानि सद्गुणमयानि निपीय तुष्टा।
तुभ्यं समर्प्य **'कविरत्न'**-मुपाधिमद्य माद्यत्यमन्दमिह मैथिलविज्ञसंसत्।।

(5)

यच्चार्पणीयमधुमुग्धफलानि भुक्त्वा तृप्तिं प्रयाति नितरां विकलोऽपि लोकः।
तत्केवलं न भवतोऽमर! सत्क्रियेयं किन्त्वर्चनास्ति वचसोऽपि कवीश्वराणाम्।।

(6)

ज्ञानोष्मणातिविरसीकृतचित्तभूमिमास्वादनीयरसवर्षिघनः कवीन्द्रः।
आर्द्रां विधाय सुकुमारमनोऽभिरामान् भावान् समङ्कुरयतादवनीतलेऽद्य।।

(7)

अन्योन्यमत्सरमलीमसमानसानां त्वद्भारती भवतु भद्रफलाय शश्वत्।
चेतश्चमत्कृतकरी च सचेतसां स्यादित्याशिषं दिशति ''मैथिलविज्ञसंसत्।।''

उपहारकाः

काशी-मैथिल-विद्वज्जन-समिति-सदस्याः

सभापतिः–जयानन्द मिश्रः

मंत्री–कृ. मो. ठाकुरः

दिनाङ्क : 28-3-69 ई.

2. साहित्य अकादेमी पुरस्कार

मैथिली

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास

चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

1983

विनायक कृष्ण गोकाक्

2. आजीवनं मातृभाषासेवासंलग्नप्रहरिषु

सरस्वती विद्यालयस्य कण्ठाभरणेषु, अन्ततः स्वाभिमानसंरक्षणतत्परेषु,

छात्र-शिक्षक-वृन्द-वृन्दावन-वन्दितेषु

श्रीमत्सु पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र, अमरजी कविवरेषु

विद्यालयतः विसर्जनवेलायां रजरप्पासिद्धपीठ प्रसादभूतमिदं

मंगलमयं सादरमभिनन्दनम्

नयनाभिरामं रमणीयरूपं स्मिताननं चन्दनपूतमालम्।
श्यामाम्बुदाभं सरसं शुभेक्षणं मनोहरं हास्यरसावतारम्।।

ऋषिस्वरूपं ऋषिवंशजातं पादप्रणामे रतछात्रवृन्दम्।
किमद्भुतं त्वत्यमकानुमिश्रितं मनोरमं प्रत्युत्पन्नधीत्वम्।।

सुशिक्षकं संततशिक्षणे रतं विद्यालयस्यास्य यशोनिधानम्।
गुरोः **सुरेन्द्रस्य** सुसेवकं प्रियं 'स्वदेश' सेवार्थसमर्पितश्रमम्।।

सरस्वतीयं मुदिता-विभूषिता लब्ध्वा **अमरजी** सदृशं सुतं कविम्।
अहो! त्वदीयेन कवित्वकर्मणा कृतं मकारत्रितयं यशस्यम्।।

'जय मैथिली' मन्त्र सदा जपन्तं ईषद्-हसन्तं नतमस्तकं मुदा।
आत्मीयभावं परिदर्शयन्तं तं **चन्द्रनाथं** प्रणमामि सर्वदा।।

समर्पकः

शोभा कान्त मिश्रः

संस्कृत विभागाध्यक्षः

एम० एल० एकेडमी, लहेरियासराय

दिनांक 7-4-83

गुरुवासरे

4. चेतना-समिति

विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग

पटना

ई

अभिनन्दन-पत्र

साहित्य-अकादेमी पुरस्कार प्राप्तिक उपलक्ष मे

पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र ''अमर''

कैं

सादर समर्पित करैत अछि

मिथिलाक तबधल धरती कैं अपन रसवृष्टि सँ पटाए
सत्य-शिव-सुन्दरक सृष्टि करैत रहलाह अछि;

घसमोड़ि कैं सूतल मैथिल समाज कैं ''गुद्‌गुदी'' लगाए
जगओलनि आ चेतनाक ''युगचक्र'' प्रवर्तित कएलनि;

तीक्ष्णतम व्यंग्य-बाण सँ कलियुगी मारीच लोकनिक प्राण
उड़ओलनि आ पाखंड कैं खंड-पखंड कएलनि;

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हितार्थ ठानल गेल महायज्ञ मे
आहुति दैत सदा गगनभेदी हुंकार भरैत रहलाह अछि;

मैथिली आन्दोलनक कर्ता-धर्ता एवं स्रष्टा-द्रष्टा
रहलाह अछि तथा एहि आन्दोलनक अद्वितीय इतिवृत्तज्ञक रूपमे मान्य छथि;

तथा

अपन कवि-यशः-प्रभासँ मिथिलाक गाम-गाम घर-घर कैं आलोकित उद्‌भासित कयने छथि

पटना
दिनांक 26-8-84

सुरेन्द्र नारायण चौधरी
सचिव
चेतना समिति

तारा कान्त झा
अध्यक्ष
चेतना समिति

5. अभिनन्दन-पत्र

मैथिली साहित्यक तेजोद्दीप्त नक्षत्र, भाषा-आन्दोलनक सेना-नायक,
सुविख्यात शिक्षक, कविसम्मेलनक गौरवस्तम्भ, चिन्तनशील-कर्मवीर विद्वर

कविवर पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क

कर-कमलमे

साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ सम्मानित होयबाक उपलक्ष्यमे सादर, सविनय समर्पित

मान्यवर!

आइ संक्रान्ति थिक–तिलासंक्रान्ति। मातृभाषा सेहो आइ युगसन्धिपर ठाढ़ अछि– स्तब्ध, अकबकायल, ठकुआयल। एक दिस अपन समाजक चिर शिथिलस्वभाव, दोसर दिस सरकारक घोर उपेक्षा-भाव। बीचमे माय मैथिली, हाथमे तिल लेने, अपन कोटि-कोटि सन्तानसँ अपने अस्तित्व-रक्षाक भिक्षा मङैत। मुदा ओम्हर तकनिहार पात्र के? विचारिकऽ देखने दू-चारि जन मात्र। ताहिमे अपने आइसँ नहि, चालिस-बियालिस वर्षसँ, मातृ-तिलक 'सैरियत', हुनक उभय पक्षीय अस्तित्व-रक्षा लेल, साहित्यक कठोर साधनो करैत आ आन्दोलनक आह्वान शंखो फुकैत, अपन तिल-तिल गला रहल छी, से हमरेलोकनिटाकेँ नहि, अपितु आबऽबला अनेक युगक युवक-हृदयकेँ स्पन्दित-आन्दोलित करैत रहत।

आइ चारि दशकसँ लाख-लाख मैथिल-मानसमे अपनेक जे कवि-छवि चमकि रहल अछि, अपनेक तीख-चोख मुदा चहटगर 'कथा' केँ मैथिल चेतना लगातार कान दैत आबि रहल अछि, ताहि लोक-समुद्रक किलकिलाइत स्नेह कल्लोलक आगाँ आन सम्मान की? दोसर पुरस्कार की? अतिरिक्त पारितोषिक की? अपनेक कविताकेँ कोनो संस्था वा अकादेमी की सम्मानित करैत?–मर्करी लाइट लग दिबारी की नेसैत? तेँ, दिल्लीक केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, सर्वथा उचिते, अपनेक अन्वेषी मेधाक दमकैत मणि 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' केँ एहि वर्ष पुरस्कृत कऽ इतिहासक पन्नापर एहितथ्यक मोहर मारि देलक अछि जे ने केवल पहिले 'चन्द्र'मे सर्जना ओ अनुसन्धानक उभय प्रतिभा दुधारी तरुआरि जकाँ एक रंग चमकैत छलनि, अपितु वर्तमानो 'चन्द्र'मे तेहने कमनीय कला छनि, हिनकोमे तहिना मैथिलीकेँ दुनू तरहेँ सनाथ करबाक अप्रतिम क्षमता छनि।

आइ अपन 'अमर' सुपुत्रक एहि सारस्वत सम्मानकेँ देखि, पुरस्कृत होइत परेखि, संक्रान्ति-ग्रस्त रहितो, माय मैथिली अवश्य पुलकित-रोमाञ्चित होइत होयतीह। एम्हर, कोटि-कोटिक वाणीकेँ अबोध नेनाक ठोरपर चढ़यबाक लेल कसमसाइत, मुदा अन्हरियोमे टोइया-टापर दैत, हमरालोकनिकेँ तेँ अमर 'चन्द्र'क अमल प्रकाशे भेटि गेल अछि मानू।

आब संक्रमण-कालक अन्त सन्निकट लगैछ। मैथिलीक संकट सेहो कटतनि आब अबस्से। भावी पीढ़ीकेँ मातृभाषाक लगन लगयबाक लेल, प्राथमिक वर्गमे मैथिलीकेँ माध्यमक रूपमे व्यवहृत करयबाक हेतु हमसभ जे सन्नद्ध छी, ताहिमे, एहि सम्मान-प्राप्तिक गौरवमय अवसर पर अपनेक हार्दिक अभिनन्दन करैत, अपनेसँ सारस्वत नेतृत्वक डोर पकड़बाक साञ्जलि प्रार्थना अछि।

समस्त मंगलकामनाक संग,

हमरालोकनि छी
अपनेक
महाविद्यालय परिवारक सदस्यगण
महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल महाविद्यालय

दरभंगा
तिलासंक्रान्ति
14 जनवरी, 1984 ई०
रचना : भीमनाथ झा

6. अभिनन्दन पत्र

पण्डितप्रवर श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक

कर कमल मे

श्रद्धा सहित समर्पित

पंडित प्रवर प्रखर स्वर मुखरित
मैथिलीक प्रति अर्पित।
श्री सुरभित नित शिक्षक भूषण
साहित्य साधना जल्पित।।
चरण-पंक्ति सुश्लोक प्रणेता
हास्य व्यंग्य उद्गायक।
द्रवित क्षणहिमंह शील जनिक थिक
तीनू कालक नायक।।
सद्यस्फुरण विलक्षण लक्षण
सुमधुर कंठ सुगीत।
गौरव सरिपहुँ मिथिला भूमिक
स्मरण जगाबए प्रीत।।
कागत केर अदना टुकरी पर
लीखल जे किछु आखर।।
मात्र साक्ष्य थिक हृदय भाव केर
सैह समर्पित कविवर।।

साहित्य परिषद् रामपट्टी, मधुबनी

7. राजभाषा विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

राजभाषा विभाग

प्रशस्ति

मैथिली साहित्य के स्वनामधन्य हस्ताक्षर **श्री चन्द्रनाथ मिश्र** 'अमर' की लेखनी में विदेह भूमि का पांडित्य विद्यमान है। काव्य, नाटक, कथा एवं समीक्षा-साहित्य के अतिरिक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में इन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से मैथिली भाषा और साहित्य को न केवल एक नया आयाम दिया है, बल्कि इसके भंडार को भी समृद्ध किया है। मैथिली काव्य में अपने उत्कृष्ट हास्य एवं व्यंग्य के लिए ये सदैव स्मरणीय रहेंगे।

मिथिलांचल की संस्कृति एवं परम्परा को अपने सृजनात्मक लेखन से जीवन्त करने के इनके महत्वपूर्ण अवदान को रेखांकित करते हुए इन्हें वर्ष 1998-99 के **विद्यापति पुरस्कार** से सम्मानित किया जाता है तथा पन्द्रह हजार रुपये की सम्मान राशि सादर अर्पित की जाती है।

शालीग्राम सिंह
निदेशक

रूप नारायण झा
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

राबड़ी देवी
मुख्यमंत्री

8. मिथिला विभूति परिषद्, दरभंगा

मिथिला विभूति परिषद्

स्व. रमानाथ झा स्मृति-सम्मान

1990

श्री चन्द्रनाथ मिश्र ''अमर''कैँ साहित्य क्षेत्र मे अविस्मरणीय योगदान हेतु

9. चेतना समिति, पटना

चेतना समिति

पटना

संस्कृत एवं मैथिली साहित्यक रससिद्ध विद्वान्, लब्ध प्रतिष्ठ शिक्षक, मैथिली आन्दोलनक सेनानी, मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक प्रणेता, अपन लेख, कथा एवं कविता मे हास्य-व्यंग्यक चमत्कार देखओनिहार, मैथलीकेँ सर्वतोभावेन समृद्ध करबा में प्रयत्नशील, साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कविवर पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क करकमलमे ई ताम्रपत्र सम्मान पुरस्सर समर्पित।

दिनांक 15-11-1992

जगदानन्द झा
सचिव

श्री उपेन्द्रनाथ झा ''व्यास''
अध्यक्ष

श्री त्रिलोकनाथ जयकला देवी
(घोघररडीहा निवासी)

मैथिली साहित्य पुरस्कार (मुंबई)

प्रशस्ति पत्र

मान्यवर,

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

अपने जे मातृभाषा मैथिलीक अपूर्व सेवा कएल ताहि उपलक्ष्य मे पुरस्कार समिति श्री त्रिलोकनाथ जयकलादेवी मैथिली साहित्य पुरस्कार सँ अपनेकेँ सम्मानित कऽगर्वक अनुभव कऽ रहल अछि।

दिनांक
6-12-1996
स्थल—घोघरडीहा

अध्यक्ष, पुरस्कार समिति
डॉ० सुधीर चन्द्र झा

11. सम्मान-पत्र

पाटलिपुत्र (बिहार) में समायोजित

संस्कार भारती

के

त्रयोदश राष्ट्रीय कला-साधक संगम

के अवसर पर

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मैथिली साहित्य

को

अपने जीवन के उत्तमांश का कला और साहित्य

की सुदीर्घ साधना में समर्पित करने के निमित्त यह

सम्मान-पत्र

सादर प्रदान किया जाता है।

पटना; कार्त्तिक शुक्ल दशमी, वि० सं० 2051; 12 नवम्बर, 1994 ई०, शनिवार

आपकी महार्घ कला-साधना के प्रति नतशीर्ष

सुरेश राव केतकर	**(डॉ.) बिन्देश्वर पाठक**	**शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव**
राष्ट्रीय मार्गदर्शक	समारोह-स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय अध्यक्ष

12. अभिनन्दन-पत्र

सांस्कृतिक चेतनाक अमर गायक, स्वराष्ट्र-स्वभाषाक
उन्नायक, लब्ध उभय साहित्य अकादेमीक सम्मान, मैथिली
मंचक दिनमान, प्रतिष्ठित सम्पादक एवं सिद्धहस्त अनुवादक
पं० श्रीमान् चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक
कर कमल मे
सादर समर्पित

मान्यवर,

मैथिलीक उपवन मे कतउक पुष्प भरल अछि
कत सुरभित, कत श्याम, धवल कतउक रङल अछि
किन्तु 'अमर' ई पुष्प जकर छै सुरभि अलौकिक
सभदिन रहय बसन्त 'ऋतुप्रिया' कुहकय नित पिंक

'विविध गीत' सँ 'आशा-दिशा' देखाओल अपने
देल 'अमर संगीत' 'स्वातंत्र्य स्वर' जोड़ल अपने
फूकल अपने 'विजय शंख' छै जागल मिथिलावासी
पौती निज अधिकार मैथिली बनत न अनकर दासी

जागि गेल छथि मातृभक्त सभ जे 'द्रोहाग्नि' पसरल
देखि प्रचण्ड ज्वाल अबइत अरिदल झट सँ ससरल
''इतिहास पत्रकारिता'' केर पाओल मैथिली जहिये
'वीर कन्या' ल' कृपाण छाथि आगू बढ़ली तहिये

'विद्यापति केर नीति तरंगिणी' अपने घर-घर बाँचल
स्वस्थ होथि जन जीवन एहि ले चूर्ण 'त्रिफला' बाँटल
'पद्य प्रसून' निस्सरित भेलै ''विद्यापति केर देश मे''
'समाधान' अपनहि सँ पाओल 'चाणक्य'क एहि वेश में

हे गुरूवर, मिथिला मिहिर! शिष्य सेना अपनेक विराटे
सभ जनैत जे अपने मैथिली मंचक कवि सम्राटे
'जल समाधि' छी लेल अपन भाषा साहित्य बढ़ाओल
नमन करू स्वीकार पत्र, पुष्पे, फल तोय चढ़ा ओल

विद्यापति-स्मृति-पर्व
10 अप्रैल, 1999
रचना-कृष्ण कान्त झा

हमरा लोकनि छी
सदस्यगण
विद्यापति समिति धनबाद

13. मैथिली भाषा-साहित्यक सर्वोच्च शिखर पर विराजमान,
साहित्य अकादेमीक मूल ओ अनुवाद पुरस्कारक संग संप्राप्त
विविध सम्मान, मैथिली काव्य-गगनक निदग्ग चान,
सफल हास्य-व्यंग्य प्रयोक्ता
मातृभाषानुरागी

पण्डित-प्रवर श्रीमान् चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क

कर-कमलमे सादर समर्पित

अभिन्दन-पत्र

मैथिलीक हे शीर्ष-पुरुष शुचि डण्टी लागल पान अहाँ छी
ठाँव कयल अरिपनपर डालामे दूर्वा-दल धान अहाँ छी
अनुशासन-प्रतिमूर्ति अहाँ छी
साहित्याकाशक ध्रुवतारा
'युगचक्र'क द्रष्टा अपने सन
विधि नहि गढ़लनि फेर दोबारा
'आशा दिशा'-दिशामे अनुखन प्रगतिक नवल विहान अहाँ छी
राष्ट्रभूमिकेर नयन नोर लखि
अरि समूहकेँ दी ललकारा
सदिखन चिन्ता भू-संस्कृति केर
लगबी देश प्रेमकेर नारा
बलिदानी वीरक यश-गाथासँ परिपूरित तान अहाँ छी
हास्य-धनुषपर व्यंग्य-वाण लऽ
निशिवासर वाणी-पद सेवी
'जल समाधि' लऽ लेथि देखि
अपनेकेँ सासु-सताउनि देवी
नव-निर्माणक 'विजयशंख' ध्वनिसँ निःसृत अभिमान अहाँछी
काल चकित पर्यन्त देखि
नित नियमबद्ध जीवनकेर धाही
'उनटापाल' परेखि लगै छनि
आइ विपक्षी-बुद्धि पसाही
बिद्ध क्रौंचकेर क्रौंची-कण्ठक फूटल करुणा गान अहाँ छी
ठाँव कयल अरिपनपर डालामे दूर्वा-दल धान अहाँछी

मैथिली दिवस
जानकी नवमी
24 अप्रैल, 1999 इ०
रचना : अमलेन्दु शेखर पाठक

हमरा लोकनि छी
सदस्य वृन्द
विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा

14. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार

भारतीय साहित्य के अनुवाद में
विशिष्ट योगदान के लिए

साहित्य अकादेमी

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' को
उनके द्वारा मैथिली में अनूदित
परशुरामक बीछल-बेरायल कथा
पर दस हजार रुपये के

राष्ट्रीय अनुवाद पुरस्कार 1998

से सम्मानित करती है
जो राजशेखर बसु 'परशुराम' की
चुनी हुई बाङ्ला कहानियों
का अनुवाद है

18 अगस्त, 1999
नई दिल्ली

रमाकान्त रथ
अध्यक्ष
साहित्य अकादेमी

15. कामेश्वरसिंह-दरभङ्गा-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य साहाय्येन

प्रायोजितः संस्कृतवर्षसमारोहः।

राष्ट्रे

जागृयाम

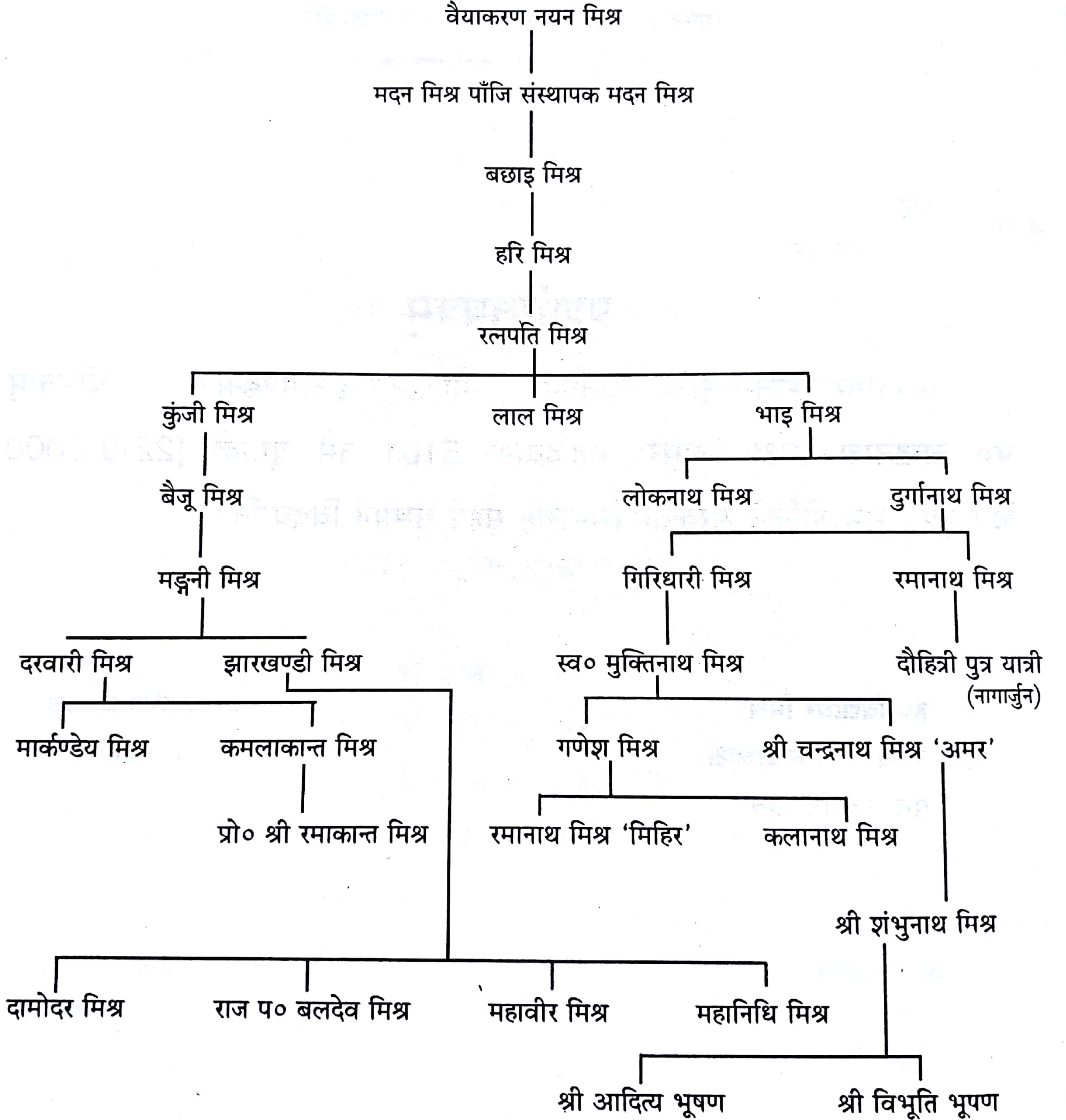
प्रशस्तिपत्रम्

भारतीयसंस्कृतिसंस्कृतसेवाव्रतानां पण्डितमण्डलीमण्डनानां श्रीमताम् **प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'** महोदयानां 5101 तमे युगाब्दे [22-9-2000 दिनाङ्के] समायोजिते संस्कृतवर्षसमारोहे सहर्षं सम्मानं विदधाति।

ह० विद्याधर मिश्र
छात्र कल्याण संकायाध्यक्षः
समारोहसचिवश्च

ह० काशीनाथ मिश्र
कुलपतिः

प० चन्द्रनाथ मिश्रक वंश-परिचय



प० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क रचनावली

(क) कविता

1. गुदगुदी 1946
2. युगचक्र 1952
3. ऋतु प्रिया 1963
4. उनटा पाल 1972
5. आशा दिशा 1975
6. अमर संगीत (हिन्दी) 1970
7. विविध गीत 1988
8. ढाँहि-पढाँहि 2001

(ख) उपन्यास ओ कथा

8. वीर कन्या 1950
9. बिदागरी 1963
10. जल समाधि 1972

(ग) विनिबन्ध

11. म. म. मुरलीधर झा 1980
12. काशीकान्त मिश्र 'मधुप' 1994
13. दीनानाथ पाठक बन्धु 1999

(घ) निबन्ध समीक्षा

14. मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण 1962
15. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास 1981

(ङ) विविध

16. त्रिफला 1948
17. मुहावरा ओ लोकोक्ति 1953
18. समाधान (एकांकी) 1955

(च) अनुवाद

19. विद्यापति नीति तरंगिणी 1973
20. हरिनारायण आप्टे 1985
21. वंकिम चन्द्र चटर्जी 1990
22. परशु रामक बीछल बेरायल कथा 1995

(छ) सम्पादित

23. प्रतिनिधि एकांकी
24. कविवर जीवन झा 1980
25. स्वातंत्र्य स्वर 1994
26. कथा किसलय 1999
27. श्री सुमन साहित्य सौरभ 1994
28. विद्यापतिसूक्ति तरंगिणी 1970

(ज) इतिहास

29. मैथिली साहित्य परिषद 1969
30. मैथिल महासभा 1999

●

सारस्वत सहयोगी

1. डॉ० अमरनाथ झा
ग्राम–गंगौली, पो. सरिसब पाही
मधुबनी–847424

2. डॉ० अविनाश चन्द्र मिश्र
नागमन्दिर सँ पूब
मिश्रटोला, दरभंगा–846004

3. डॉ० अरुण कुमार कर्ण
मैथिली विभाग, महिला कॉलेज, समस्तीपुर

4. डॉ० अरुण कुमार सिंह
ग्राम-पोस्ट–अर्राहा
माया–मठाही
जिला–मधेपुरा–852121

5. श्री अशोक कुमार ठाकुर
इंजीनियर प्रेस लेन
स्टेशन रोड
दरभंगा–846004

6. प्रो० अशोक कुमार मेहता
मिल्लत कॉलेज, दरभंगा

7. डॉ० आर० के० 'रमण'
ग्राम-पोस्ट–रामपट्टी
जिला–मधुबनी

8. श्री आदित्यभूषण मिश्र
मिश्र टोला, मिर्जापुर, दरभंगा

9. डा० इन्दिरा झा
बिहार स्टोर्स
नारायण मार्केट, लंगरटोली, पटना

10. डॉ० उदयनाथ झा 'अशोक'
श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत
विद्यापीठ, पुरी, उड़ीशा

11. श्री उमेश चन्द्र झा
सुमित्रा निवास, चीनी गोदाम
पो० लालबाग, दरभंगा

12. डॉ० कमलकान्त झा
मैथिली विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर
जिला–मधुबनी

13. डॉ० कालिकादत्त झा
लक्ष्मी सागर, दरभंगा

14. श्रीमती कविता कुमारी
केयर/डॉ० रामदेव झा
कबिलपुर, लहेरिया सराय
दरभंगा–846001

15. डॉ० किशोरनाथ झा
रीडर, गंगानाथ झा केन्द्रीय
संस्कृत विद्यापीठ
चन्द्रशेखर आजाद पार्क, इलाहाबाद

16. डॉ० कृष्ण चन्द्र झा 'मयंक'
हिन्दी विभाग
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा

17. प० श्री गंगाधर मिश्र
लालबाग, दरभंगा

18. श्री गोविन्द चौधरी
ग्राम-पोस्ट–पिंडारुछ
जिला–दरभंगा

19. प० श्री गोविन्द झा
रोड नं० 9 पटेल नगर
शास्त्री नगर, पटना–23

20. डॉ० गोपाल जी का 'गोपेश'
प्रभा-निकेतन, जानकी नगर
कंकड़ बाग, पटना–800020

21. श्रीचन्द्र भानु सिंह
ग्राम-पो०–नदिआमी
माया–बिरौल
जिला–दरभंगा

22. डॉ० चण्डेश्वर झा
पूर्व अध्यक्ष, संगीत एवं नाट्य
विभाग, ल. ना. मि. वि.
मिर्जापुर, दरभंगा
23. आचार्य डॉ० जयमंत मिश्र
(पूर्व कुलपति)
हनुमान नगर, मिश्रटोला
दरभंगा
24. श्री जगदानन्द मिश्र
ग्राम–ढ़ंगा हरिपुर
पोस्ट–ढ़ंगा
माया–कलुआही
जिला–मधुबनी
25. श्री जगदीश प्रसाद कर्ण
बलभद्रपुर, लहेरिया सराय
दरभंगा
26. डॉ० जगदीश मिश्र
ग्राम–नवटोल
सरिसब–पाही
जिला–मधुबनी
27. डॉ० जटेश्वर झा 'जटिल'
मैथिली विभाग
सी० एम० कॉलेज, दरभंगा
28. डॉ० जय प्रकाश चौधरी 'जनक'
ग्राम-पोस्ट–कोर्थु
जिला–दरभंगा
29. डॉ० जयानन्द मिश्र
भूगोल विभाग
चन्द्रमुखी भोला महाविद्यालय
ड्योढ़, घोघरडीहा
जिला–मधुबनी
30. डॉ० त्रिलोकनाथ झा
पोलिटेकनिक चौक
बेला गार्डेन
दरभंगा
31. डॉ० दमन कुमार झा
मैथिली विभाग
जे० एन० कॉलेज, मधुबनी
32. डॉ० देवेन्द्र झा, अध्यक्ष
स्नात्कोत्तर मैथिली विभाग
बी० आर० अम्बेदकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
33. डॉ० देवकान्त झा
देवगंगम्
1/20, न्यू पुनाइचक (हनुमान नगर)
पटना–800023
34. डॉ० देवनारायण झा
रीडर, स्नात्कोत्तर साहित्य विभाग
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर दरभंगा
35. डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र
मैथिली विभागाध्यक्ष
सी० एम० कॉलेज,
दरभंगा
36. डॉ० नीता झा
मैथिली स्नात्कोत्तर विभाग
ल० ना० मि० विश्वविद्यालय,
दरभंगा
37. डॉ० नीरजा 'रेणु'
751/632 कर्नलगंज, इलाहाबाद
38. डॉ० नवोनाथ झा
मैथिली विभाग
एम० एल० एस० एम० कॉलेज, दरभंगा
39. डॉ० नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला'
आर० के० कॉलेज, मधुबनी
40. श्री पूर्णेन्दु चौधरी
मिश्रटोला
दरभंगा–846004
41. डॉ० प्रभाकर पाठक
हिन्दी विभाग
सी० एम० कॉलेज, दरभंगा

42. डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'
प्रोफेसर कॉलोनी, महनार
वैशाली–844506
43. डॉ० प्रेमशंकर सिंह,
मैथिली विभागाध्यक्ष
तिलका मांझी विश्वविद्यालय, भागलपुर
44. श्री प्रवासी साहित्यालंकार
ग्राम-पोस्ट–गजहारा
जिला–मधुबनी
45. श्री फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'
लक्ष्मी सागर, दरभंगा
46. डॉ० फूल चन्द्र मिश्र 'रमण'
हरखू झा मकान
लक्ष्मी सागर, दरभंगा
47. डॉ० भाग्य नारायण झा
ग्राम–कबिलपुर,
लहेरिया सराय, दरभंगा
48. डॉ० भीमनाथ झा
मैथिली विभाग
ल०ना०मि० विश्वविद्यालय, दरभंगा
49. डॉ० मदनेश्वर मिश्र (पूर्वकुलपति)
नरगौना, कामेश्वर नगर, दरभंगा
50. डॉ० मायानन्द मिश्र
विद्यापति नगर, सहरसा
51. डॉ० महेन्द्र
मिशन कम्पाउंड सहरसा–842201
52. डॉ० मनमोहन झा
विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग
सी० एम० कॉलेज, दरभंगा
53. माघवेन्द्र का 'करुण'
'मैथिली-मंदिर'
राजकुमार गंज
दरभंगा–846004
54. श्री मित्रनाथ झा
मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा
55. डॉ० योगानन्द झा,
कबिलपुर, लहेरिया सराय
दरभंगा–846001
56. डॉ० रामजी ठाकुर
ग्राम–धर्मपुर
पोस्ट–लोहना रोड
जिला–दरभंगा
57. डॉ० रामदेव झा
कबिलपुर, लहेरिया सराय
दरभंगा–846001
58. श्री राधानन्दन झा
1 ए, मैकडोनल रोड
पटना–800001
59. श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी
सचिव, कामेश्वरी प्रियापुअर
होम, दरभंगा
60. स्व. रमानाथ मिश्र 'मिहिर'
मिश्र टोला
दरभंगा
61. श्री रमाकान्त झा
ग्राम–सोहराय
पोस्ट–पंडौल
जिला–मधुबनी
62. डॉ० रत्नेश्वर मिश्र
नरगौना, कामेश्वर नगर, दरभंगा
63. डॉ० रमण झा
मैथिली विभाग, ल० ना० मि०
विश्वविद्यालय, दरभंगा
64. डॉ० रमानन्द झा 'रमण'
13, रिजर्व बैंक स्टाफ क्वार्टर
राजेन्द्र नगर, पटना–16
65. डॉ० राजाराम प्रसाद
मैथिली विभाग
सहरसा कॉलेज
सहरसा

66. श्री राम चरित्र पाण्डेय 'अणु'
ग्राम–लक्ष्मीपुर सोहराय
पोस्ट–पंडौल
जिला–मधुबनी
67. डॉ० राजेन्द्र झा
सीताधाम, नया गंगासागर
दरभंगा
68. डॉ० रामचन्द्र झा
विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग
का०सि०द० सं० विश्वविद्यालय, दरभंगा
69. डॉ० लक्ष्मण चौधरी 'ललित'
मैथिली विभागाध्यक्ष,
ल० ना० मि० विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा
70. डॉ० विद्यानाथ झा 'विदित'
प्रधानाचार्य
एस० पी० दुमका कॉलेज, दुमका
71. डॉ० विभूति आनन्द
अध्यक्ष, मैथिली विभाग
आर० एन० कॉलेज, पंडौल
जिला–मधुबनी
72. आचार्य शोभाकांत जयदेव झा
श्री शोभा-सदन
राजकुमार गंज
दरभंगा–846004
73. डॉ० शांतिनाथ ठाकुर
एम० एल० एस० एम० कॉलेज, दरभंगा
74. डॉ० शशिनाथ झा
व्याकरण विभाग
का० सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
75. स्व० डॉ० शिवशंकर झा 'कान्त'
लक्ष्मी सागर, दरभंगा
76. कविवर स्व० सीताराम झा
बहेड़ा
जिला–दरभंगा
77. आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'
मैथिली मन्दिर
राजकुमार गंज, दरभंगा–846004
78. श्री सीताराम झा
सी-211 'मिथिला'
गुजैनी, कानपुर–22
79. श्री समरेन्द्र नारायण चौधरी
ग्राम–बल्लीपुर
जिला–समस्तीपुर
80. डॉ० सुरेश्वर झा
रंभा संदन
2/बी० राजकुमार गंज
दरभंगा–846004
81. श्री सतीश चन्द्र झा
ग्राम-पोस्ट–राँटी
उतरबारि टोल
मधुबनी–847211
82. श्री हरिश्चन्द्र झा 'हरित'
ग्राम-पोस्ट–माउँबेहट
जिला–दरभंगा
83. प्रो० हरेकृष्ण झा 'हरि'
हिन्दी विभाग
जे० एन० कॉलेज, मधुबनी

प्रकाशन पूर्व सहयोग

1.	श्री कामदेव झा, बसुन्धरा, राजकुमार गंज, दरभंगा–846004	7,500=00
2.	आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा–846004	5001=00
3.	श्री शंभुनाथ मिश्र, मिश्र टोला, दरभंगा	5001=00
4.	डॉ० रामदेव झा, कबिलपुर, लहेरिया सराय	5001=00
5.	डॉ० रामभद्र झा, 6-पैलेस रोड DL68113, एस्टन, अंडर लाइन लेन्स, मैन चेस्टर	5000=00
6.	श्री महेन्द्र झा, बलभद्र पुर लहेरिया सराय, दरभंगा	2500=00
7.	डॉ० विद्यानाथ झा 'विदित' प्रधानाचार्य, दुमका कॉलेज	2500=00
8.	इं. श्री सुरेश मिश्र, कटहलवाड़ी, दरभंगा	1,101=00
9.	श्री रमेश मिश्र, सागर दर्शन, टाबर-वन सेक्टर-18, न्यू बंबै	1,000=00
10.	डॉ० जयमन्त मिश्र, मिश्र टोला, दरभंगा	1001=00
11.	श्री रघुनन्दन मिश्र (हीरा बाबू) एडभोकेट, मधुबनी	1001=00
12.	श्री नीलाम्बर चौधरी, एम०एल०सी०, आर ब्लॉक, रोड नं० 8, पटना - 800001	1001=00
13.	डॉ० रामनारायण झा, बेता, लहेरिया सराय, दरभंगा	751=00
14.	डॉ० भीमनाथ झा, धर्मपुर, लक्ष्मीसागर, दरभंगा	501=00
15.	इं. अशोक कुमार ठाकुर, स्टेशन रोड, दरभंगा	501=00
16.	डॉ० सुरेश्वर झा, राजकुमार गंज, दरभंगा	501=00
17.	डॉ० चन्द्रमोहन झा, बेता, लहेरिया सराय, दरभंगा	501=00
18.	डॉ० लुटेश्वर झा, प्रधानाचार्य, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी	501=00
19.	डॉ० सुवर्ण शेखर झा, राजकुमार गंज, दरभंगा	501=00
20.	इं० मिथिलेश्वर झा, राजकुमार गंज, दरभंगा	501=00
21.	डॉ० मोहन मिश्र बंगाली टोला, लहेरिया सराय, दरभंगा	501=00
22.	प्रो० जटेश्वर झा 'जटिल' सी० एम० कॉलेज, दरभंगा	501=00
23.	डॉ० कालीकान्त मिश्र, तुमौल, पुतई, दरभंगा	501=00
24.	प्रो० श्रीमती वीणा ठाकुर, सी० एम० कॉलेज, दरभंगा	501=00
25.	श्री बुचरु पासवान प्रधानाचार्य, राज हाईस्कूल, दरभंगा	501=00
26.	श्री समरेन्द्र ना० चौधरी, बल्लीपुर, समस्तीपुर	501=00
27.	इं० श्री रामनारायण झा, अधीक्षण अभियंता, राष्ट्रीय उच्चपथ अंचल, दरभंगा	501-00
28.	डा० दुर्गानन्द झा, एम० डी० प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, औषधि विभाग दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय, दरभंगा	500=00

29. डॉ० यू० सी० झा, एम० डी० औषधि विभाग, दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय, दरभंगा 500=00
30. इं० राम स्वारथ सिंह, कार्यपालक अभियंता, प० नि० वि०, पथ प्रमंडल, मधुबनी, दरभंगा 500=00
31. श्री जगन्नाथ झा, विनोदानन्द झा कोलोनी, मधुबनी 501=00
32. डॉ० इन्दिरझा, बिहार स्टोर्स, नारायण मार्केट, लंगरटोली, पटना–800004 501=00
33. संजय कुमार मिश्र, मदर डेयरी के पीछे, सेक्टर-56 जी-242, नयोडा, नई दिल्ली 501=00
34. श्री चतुरानन मिश्र, बाकरगंज, लहेरिया सराय, दरभंगा 251=00
35. श्री शंभुनाथ झा, एडवोकेट, अपनडेरा, राजकुमार गंज, दरभंगा 251=00
36. श्री हरिश्चन्द्र झा 'हरित', लक्ष्मी सागर, दरभंगा 251=00
37. श्री फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' लक्ष्मीसागर, दरभंगा 251=00
38. इं० रामनिहोरा प्राद सिंह, कार्यपालक, अभियंता, गा० अ० सं० कार्य प्रमंडल 251=00
39. इ० रमानन्द झा, सहायक अभियंता, प० नि० वि० पथअंचल, दरभंगा 251=00
40. श्री गिरीन्द्र नारायण ठाकुर, क्षेत्रीय विकास पदाधिकारी, दरभंगा प्रमंडल, दरभंगा 251=00
41. इ० नवल किशोर प्रसाद कार्यपालक अभियंता, ग्रा० अ० सं० प्रमण्डल, दरभंगा 251=00
42. इ० कृष्ण चन्द्र मिश्र, कार्यपालक अभियंता, दरभंगा 251=00
43. डॉ० (प्रो) नन्द नन्दन झा, मैथिली विभागाध्यक्ष, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी 251=00
44. श्री सीतानाथ झा, संरक्षक आकांक्षा, एम० आर० एम० कॉलेज गेट, दरभंगा 251=00
45. श्री राजमोहन झा, सावित्री कुटीर, घग्घा घाट रोड, महेन्दू, पटना–800006 251=00
46. श्री हितनाथ झा, मारखम कॉलेजके नजदीक जय प्रभानगर, हजारीबाग–825301 251=00
47. श्री उमेश चन्द्र झा, चीनी गोदाम, लाल बाग, दरभंगा 275=00
48. श्री योगानन्द झा, कबिल पुर, लहेरिया सराय, दरभंगा 251=00
49. डॉ० फुलेश्वरी कुमारी, कोइलख, मधुबनी 251=00
50. श्री गणेश चौधरी, कोइलख, मधुबनी 251=00
51. प्रो० लक्ष्मण चौधरी 'ललित' मिश्र टोला, दरभंगा 251=00
52. प्रो० नीता झा, मैथिली विभाग, ल० ना० मि० वि०, दरभंगा 251=00
53. श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी, सचिव, पुअर होम, दरभंगा 251=00
54. डॉ० रमण झा, मैथिली विभाग, ल० ना० मि० वि०, दरभंगा 251=00
55. प्रो० सर्वनारायण झा, सी० एम० कॉलेज, दरभंगा 251=00
56. श्री शुभकान्त झा, मिथिला क्षेत्रीय विद्युत बोर्ड, दरभंगा 251=00
57. प्रो० लालन झा, मिश्र टोला, दरभंगा 251=00
58. डॉ० नगेन्द्र नारायण झा, मै० विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी 251=00
59. डॉ० इन्दिरा झा, एम० आर० एम० कॉलेज, दरभंगा 251=00

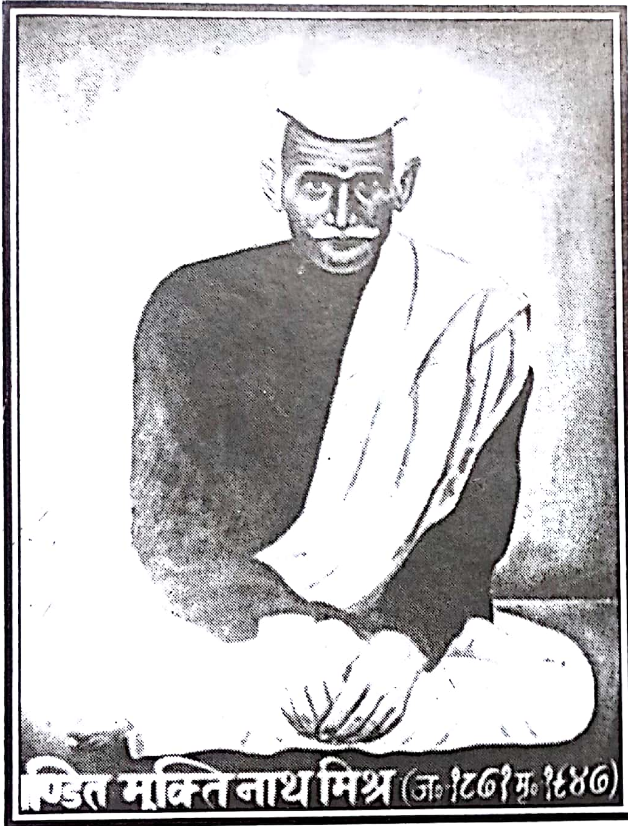
60.	डॉ० प्रीती आ, एम० आर० एम० कॉलेज, दरभंगा	251=00
61.	श्री कीर्ति नारायण मिश्र, शोकहरा, बरौनी, जिला बेगूसराय	201=00
62.	श्री पवन कुमार झा, ग्राम-पोस्ट-दलदलि, जिला मधुबनी	251=00
63.	प्रो० देवीदत्त पोद्दार, टाउनहॉल के नजदीक, दरभंगा	251=00
64.	प्रिंसपल रमाकान्त झा, ग्राम-सोहराय, पोस्ट-पंडौल, जिला-मधुबनी	251=00
65.	डॉ० अशोक कुमार झा, जवाहर लाल नेहरु कॉलेज, पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश–971103	251=00
66.	डॉ० इन्द्रमोहन लाल दास, भौतिकी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय	251=00
67.	श्री भारतेन्दु कुमार झा, ग्राम-पोस्ट-सवास, जि० मुजफ्फरपुर	251=00
68.	श्री सतीश कुमार झा, (पी०जी०टी०), जवाहर नवोदय विद्यालय, लटेहार	251=00
69.	डॉ० देवकान्त झा, न्यू पुनाईचक, पटना–23	251=00
70.	डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र, विभागाध्यक्ष, मैथिली विभाग, सी०एम० कॉलेज, दरभंगा	251=00
71.	डॉ० शंभुनाथ जा, खोजपुर	201=00
72.	प्रिंसपल सुदिष्टट मिश्र, मिश्रटोला, दरभंगा	251=00
73.	डॉ० भूपेन्द्र कुमार चौधरी, चीनी गोदाम, दरभंगा	251=00
74.	डॉ० गोपीकान्त झा, पश्चिम दिग्घी, दरभंगा	251=00
75.	प्रो० गंगाराम झा, हिन्दी विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी	251=00
76.	प्रो० हरेकृष्ण आ 'हरि' हिन्दी विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी	251=00
77.	प्रो० चन्द्रकान्त झा, नया गंगासागर, दरभंगा	151=00
78.	प्रो० राजेन्द्र झा, सीताधाम, नया गंगासागर, दरभंगा	151=00
79.	श्रीकृष्ण कान्त झा, एडवोकेट, लहेरिया सराय, दरभंगा	151=00
80.	बाबू भक्तिधारी सिंह, मधुबनी	151=00
81.	डॉ० किशोरनाथ झा, गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद	151=00
82.	डॉ० वेदनाथ झा, नाहर भगवतीपुर, मधुबनी	151=00
83.	डॉ० अमरनाथ झा, शुभंकरपुर ड्योढ़ी, दरभंगा	151=00
84.	श्री तारा नन्द झा 'तरुण' मलाढ़, भाया-थरभिट्टा, जिला० सुपौल	151=00
85.	श्री सुरेन्द्र नाथ, ग्राम, पोस्ट भद्रेश्वर, भाया–फारबिसगंज, जिला अररिया	151=00
86.	श्री केदारकानन, किसुन कुटीर, सुपौल	151=00
87.	डॉ० अरुण कुमार कर्ण, दिलावर पुर (नयाटोला), पो० मिल्की चक, दरभंगा	151=00
88.	डॉ० कुलधारी सिंह, मधुबनी ड्योढ़ी, मधुबनी	151=00
89.	श्री पूर्णेन्द्र चौधरी, मिश्रटोला, दरभंगा	151=00
90.	श्रीमती अंजू ठाकुर, C/O श्री गजेन्द्र मोहन ठाकुर, अभियंता कॉलोनी A/8 पटना–25	151=00

91.	डॉ० विनोद मिश्र, ग्राम-नवटोल, सरिसब-पाही, मधुबनी	151=00
92.	श्री जितेन्द्र नारायण झा, ग्राम-राजे, दरभंगा	151=00
93.	प्रो० मुक्तिनाथ, ग्राम-बिट्टो, सरिसब पाही, मधुबनी	151=00
94.	प्रो० सदन मिश्र, ग्राम-पाहीटोल, मधुबनी	151=00
95.	डॉ० शान्ति नाथ झा, ग्राम-सरिसब, मधुबनी	151=00
96.	डॉ० यशोदानाथ झा, ग्राम-पाहीटोल, मधुबनी	151=00
97.	श्री इन्दुनाथ झा, ग्राम-हाटी	151=00
98.	प्रो० कुमुदनाथ झा, ग्राम-नवटोल, मधुबनी	151=00
99.	प्रो० प्रबोध झा, ग्राम-रुपौली	151=00
100.	डॉ० जगदीश मिश्र, ग्राम-नवटोल, मधुबनी	151=00
101.	डॉ० विजय चन्द्र झा, सरिसब, मधुबनी	151=00
102.	डॉ० ललितकर झा, सरिसब, मधुबनी	151=00
103.	प्रो० घनानन्द सिंह, सरिसब, मधुबनी	151=00
104.	डॉ० मिहिर कुमार ठाकुर, प्रधानाचार्य, एम० एल० एस० कॉलेज, सरिसब-पाही, मधुबनी	151=00
105.	श्री भवनाथ मिश्र, सरिसब पाही	151=00
106.	डॉ० मिश्रनाथ मिश्र, भट्टपुरा, मधुबनी	151=00
107.	डॉ० कृपनाथ मिश्र, पाहीटोल, मधुबनी	151=00
108.	प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय, धकजरी, मधुबनी	151=00
109.	डॉ० मायानन्द मिश्र, विद्यापति नगर, सहरसा	151=00
110.	डॉ० संजय मिश्रा, रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा	151=00
111.	डॉ० माधुरी झा, प्रधानाचार्य, रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा	151=00
112.	डॉ० देवनारायण साह, मैथिली विभाग, सहरसा कॉलेज, सहरसा	151=00
113.	डॉ० महेन्द्र झा, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, सहरसा कॉलेज, सहरसा	151=00
114.	प्रो० रामनरेश सिंह, पी० जी० केन्द्र, सहरसा	151=00
115.	डॉ० श्रीमती लालपरी देवी, मैथिली विभाग, रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा	151=00
116.	डॉ० देवेन्द्र झा, मैथिली विभागाध्यक्ष, अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर	151=00
117.	डॉ० फूलो पासवान, मैथिली विभाग, एल० एन० टी० कॉलेज, मुजफ्फरपुर	151=00
118.	डॉ० गिरिजा किशोर झा, मैथिली विभाग, लंगत सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर	151=00
119.	डॉ० कमलाचौधरी, एम० डी० डी० एम० कॉलेज, मुजफ्फरपुर	151=00
120.	श्री जगन्नाथ लालदास, चर्च रोड, चन्दवारा, मुजफ्फरपुर	151=00
121.	श्री विनय कुमार झा, जवाहर सर्विस स्टेशन, भगवान पुर चौक, मुजफ्फरपुर	151=00

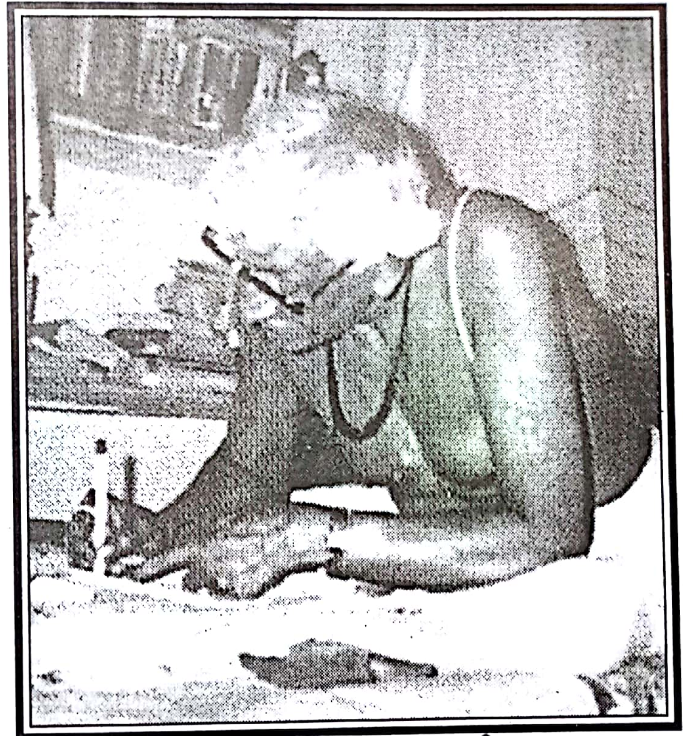
122.	श्री नर्मदेश्वर झा, गुडविल मेडिकल एजेंसी, मुजफ्फरपुर	151=00
123.	डॉ० कृष्णमोहन चौधरी, मैथिली विभाग, वाणिज्य महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर	151=00
124.	श्री पवन कुमार झा, जवाहर सिनेमा, आमगोला रोड, मुजफ्फरपुर	151=00
125.	प्रो० विनोद नारायण ठाकुर, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, ल०ना० तिरहुत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर	151=00
126.	श्री चन्द्रेश, मनमीत कुटीर, राजपूत कॉलनी, मौलागंज, दरभंगा	151=00
127.	श्री राजेन्द्र झा, पोहद्दी, माया-बेनीपुर, दरभंगा	151=00
128.	श्री महेश चन्द्र झा, स्टेट बैंक, दरभंगा	151=00
129.	डॉ० ललिता झा, c/o शिवचन्द्र झा, अधिवक्ता, बलभद्रपुर, लहेरिया सराय	151=00
130.	श्री निरंजन कुमार झा, ग्राम-पोस्ट–दहौड़ा, भायासकरी, दरभंगा	151=00
131.	श्री जगन्नाथ राय, निबंधक, परिवहन विभाग, बिहार, पटना	151=00
132.	श्री विद्याधर मिश्र, प्रधानाचार्य, रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा	151=00
133.	प्रो० दयाकान्त मिश्र आर० एन० ए० आर० कॉलेज, समस्तीपुर	151=00
134.	श्री दिलीप कुमार झा 'लुटन' महिनाम पोहद्दी, बेनीपुर, दरभंगा	151=00
135.	डॉ० नन्द किशोर मिश्र, आयुक्त कार्यालय, दरभंगा	151=00
136.	इ० श्री सुनील कुमार झा, सीनियर डिविजनल इंजीनियर, इस्टर्न रेलवे, कोलकाता	151=00
137.	इ० प्रदीप कुमार, सेन्ट्रल एक्साइज, बलसार, गुजरात	151=00
138.	प्रो० सर्वनारायण मिश्र, अर्थशास्त्र विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी	151=00
139.	डॉ० विनयानन्द झा, एम० डी० औषधि विभाग, दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय, दरभंगा	151=00
140.	इ० दिलीप कुमार, सीनियर इंजीनियर, सालोरिया एसोसिएट, वारंगल	151=00

●

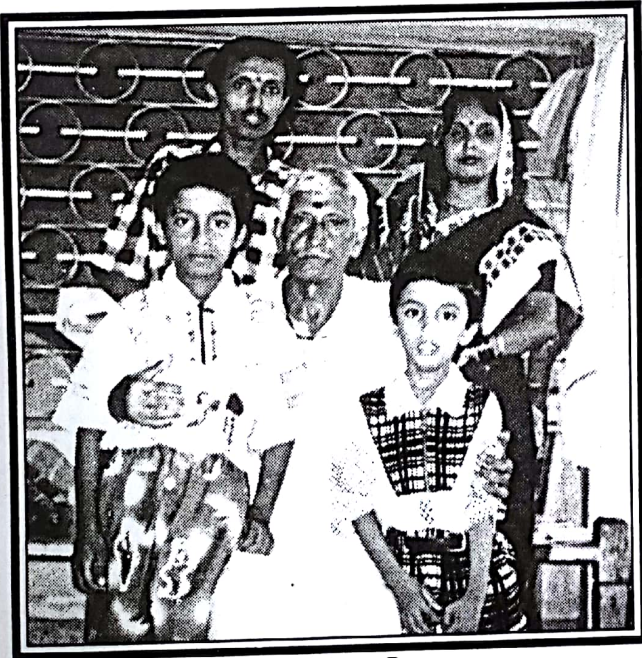
चित्रावली



पिता - पण्डित मुक्तिनाथ मिश्र
1871 इ0 - 1947 इ0



अमरजी रचनाक मुद्रामे



परिवारक चित्र
पाछू पुत्र श्री शंभुनाथ मिश्र, पुत्रवधू अपर्णा, कोरामे
श्री आदित्य भूषणओ श्री विभूति भूषण पौत्र।



अमरजी दैनिक पूजाक आसनपर



साहित्य आकदेमी एवार्ड 1983

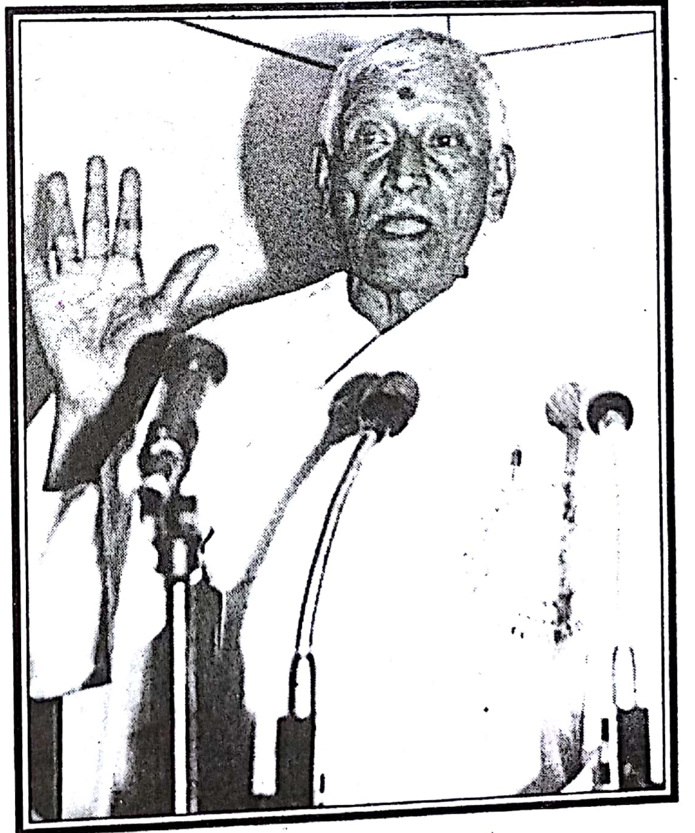
बामसँ दहिन : श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', अज्ञात, डॉ0 र0 श0 केलकर (सचिव साहित्य अकादेमी), प्रो0 विनायक कृष्ण गोकाक (अध्यक्ष, सा0अ0), डॉ0 वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य (उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी)



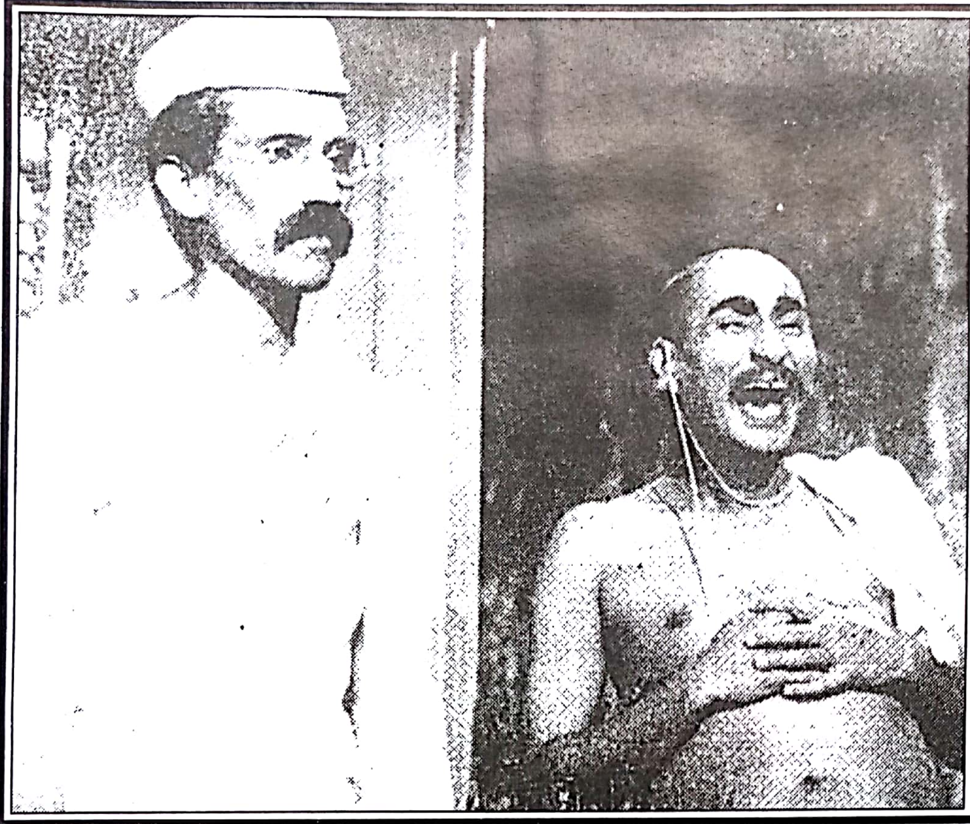
प0 चन्द्रनाथ मिश्र अमर साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष प्रो0 विनायक कृष्ण गोकक सँ पुरस्कार ग्रहण करैत।



साहित्य अकादेमीक 1998 इ0 क अनुवाद पुरस्कार अकादेमीक अध्यक्ष श्री रमाकान्तरथसँ ग्रहण करैत।



अनुवाद पुरस्कार प्राप्तिक अवसर पर 20 अगस्त, 1999 इ0 कैं भाषण करैत अमरजी



मैथली-फिल्म 'कन्यादान' मे अमरजी लालककाक भूमिकामे। दहिन भाग ब्रजकिशोर (झारखंडी)



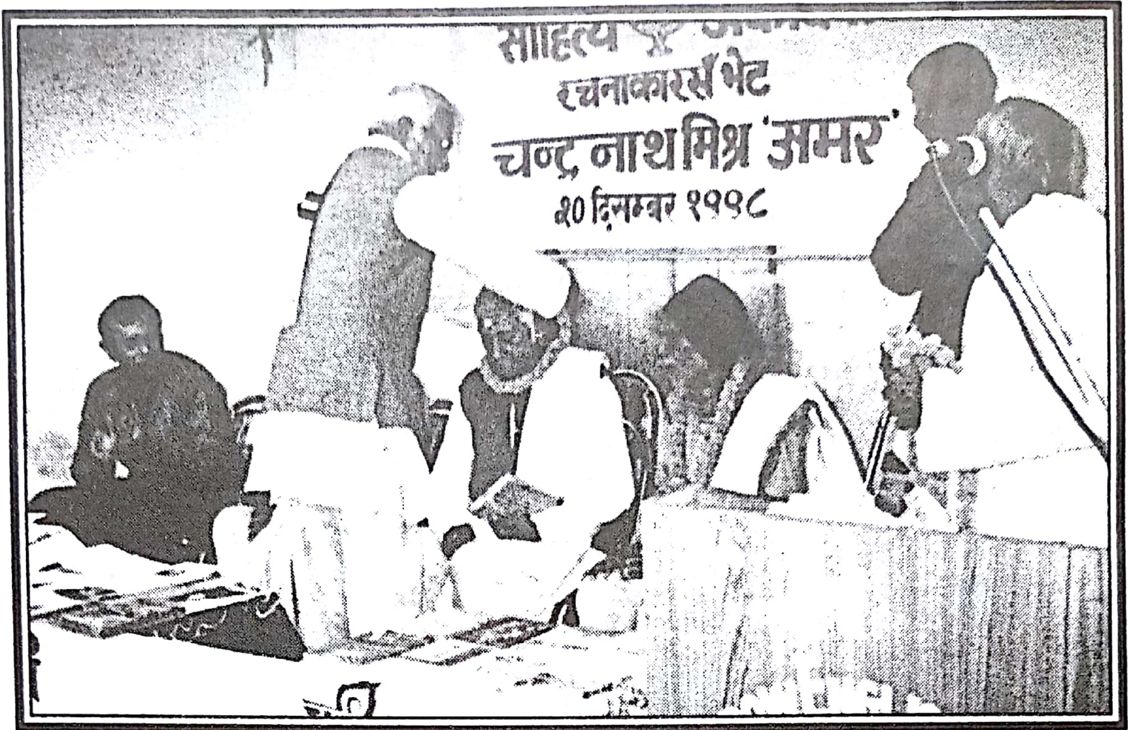
'कन्यादान' फिल्म सेट पर बामसँ दहिन : प्रो0 हरिमोहन झा (कन्यादानक लेखक), पद्मा चटर्जी (लाल काकी), रत्नेश (फिल्म यूनिट), सुभद्रा झा (लेखकक पत्नी), अमरजी (संवाद, निर्देशक एवं लालकका), लतासिन्हा (बुच्चीदाइ), फणिमजुमदार (निर्देशक), रत्ना (बिलटी), दुलारी (द्गुनमुन काकी) तथा रामायण तिवारी।



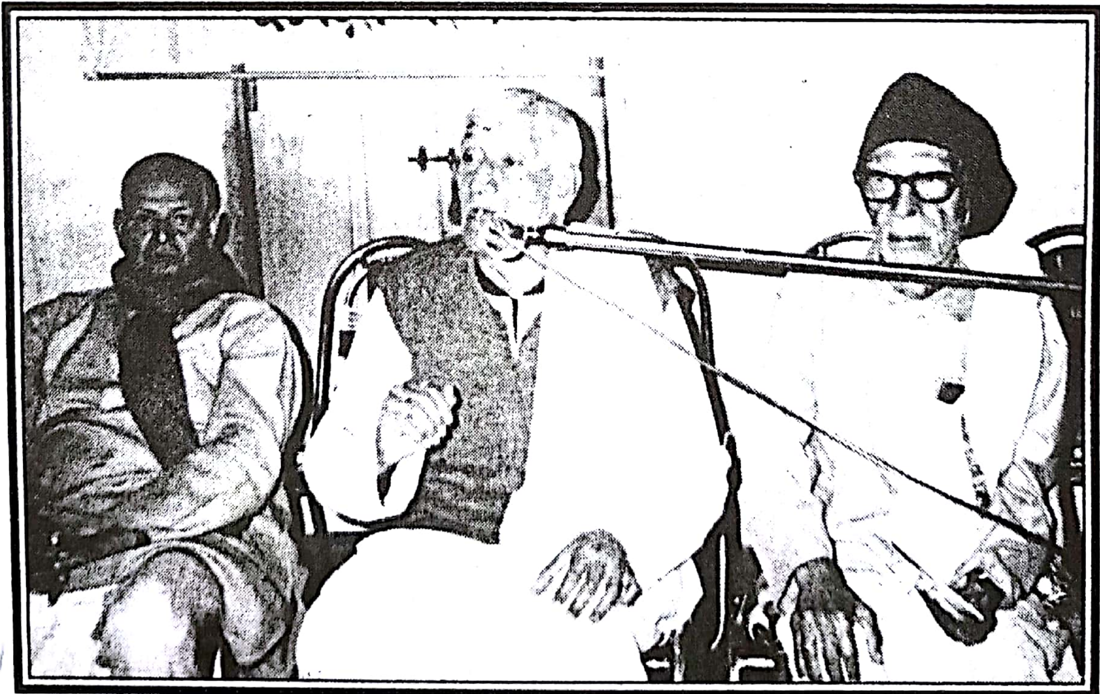
डॉ0 रामदेव झा तथा डॉ0 सुरेश्वरझाक संग 1994 मे कोचिनमे आयोजित 'मानसोत्सव'क अवसर पर



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क द्वितीय दौहित्री कविता कुमारी ओ जामाता सतीस कुमार झा



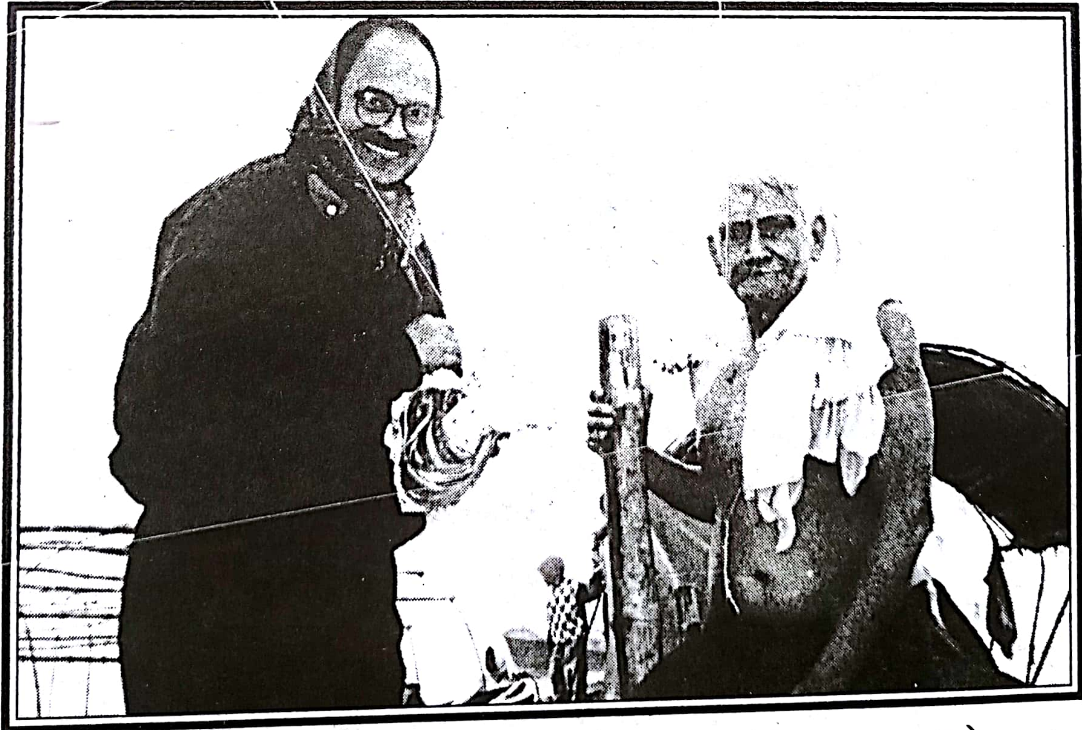
रचनाकारसँ भेटक अवसरपर बाम भाग सँ बैसल श्री रामकुमार (अकादेमीक पदाधिकारी), अमरजी, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ डॉ0 रामदेव झा आयोजक - संयोजक डॉ0 सुरेश्वर झा माल्यार्पण करैत।



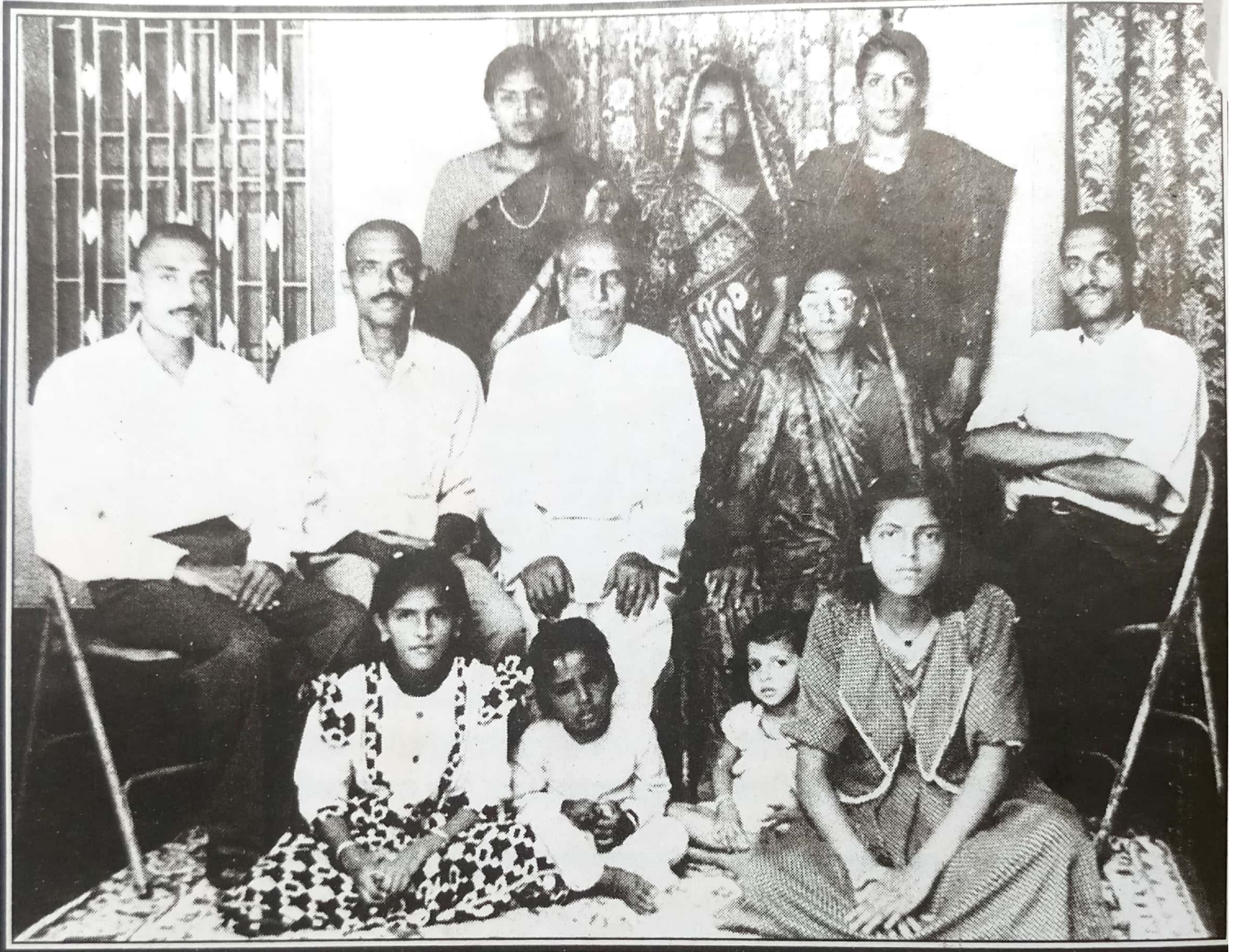
रचनाकारसँ भेटक अवसर पर भाषण करैत अमरजी, दुनू कात बैसल क्रमशः डॉ0 मदनेश्वर मिश्र आ आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'।



पटनामे अनुग्रहनारायण इंस्टीट्यूट मे 8, 9 नवम्बर, 2000 इ0 मे आयोजित मैथिली नाट्क विकास संगोष्ठीमे आधुनिक नाटकपर बीज भाषण करैत।



त्रिवेणी स्नान - साक्षी डॉ0 इन्द्र मोहन लाल दास (26-12-1998)



श्री अमरजीक जेठ जमाय डॉ० श्रीरामदेवझाक परिवार
पाछू ठाढ़ वामसँ दहिन
श्रीमती ममता झा पहिल कन्या, मध्यमे पुत्रवधु श्रीमती नीतू झा कल्पना कुमारी तेसर कन्या
कुर्सी पर
सर्व श्री शंकर देव, कृष्णदेव, (पुत्र) डॉ० रामदेव झा, डॉ० श्रीमती योगमाया झा (पत्नी) विजयदेव (तृतीय पुत्र)
भूमि पर बैसल
सुश्री तूलिका (दौहित्री) श्री प्रशान्त (पौत्र) प्राची, शिल्पी (दौहित्री)

